लेखक
राहुल सांकृत्यायन
प्रकाशक
किताब महल, इलाहाबाद
सुद्रक
राम प्रिटिंग प्रेस
इलाहाबाद

प्राक्कथन

नवीन मानव-समांबंके विधाता कार्ल मान्सेक जीवन श्रीर सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें हिन्दीमें छोटी-मोटी पुस्तकोका विरुद्धल श्रमाय नहीं है, लेकिन जिसमें पर्याप्त रूपसे मार्क्सकी जीवनी, सिद्धान्त श्रीर प्रयोग मौजूद हो, ऐसी पुस्तकका श्रमाव जरूर खटक रहा था, केवल इसीकी पूर्तिके लिये यह पुस्तक लिखी गई। यह मेरिंगकी पुस्तक "कार्ल मार्क्स" पर श्राधारित है, इसके श्रातिरिक्त कुछ श्रीर पुस्तकों से भी मैंने सहायता ली है। सुक्ते संतोष होगा, यदि इस प्रयाससे मार्क्स समक्तेने समक्तनेमें हिन्दी पाठकोंको सहायता मिले।

यह पुस्तक, उन चार जीवनियोंमें है, जिनको मैंने इस साल (१६५२ ई० मे) लिखनेका सकल्प किया था। "स्तालिन", "लेनिन" और "कार्ल मार्क्स" के समाप्त करनेके बाद अब चौथी पुस्तक "माश्रो-चे तुंग" ही बाकी थी, जिसे जुलाई में समाप्त कर दिया।

लिखनेमें डा॰ महादेव साहा, साथी रमेश सिनहा और साथी सन्चिदानन्द शर्मान पुत्तकों के जुधनेमें बड़ी मेहनत की । श्री मंगलिंह परियारने टाइप करके कामको हल्का किया, एतद्र्य इन समी माइयोंका श्रामार मानते हुये घन्यवाद देता हूँ ।

राहुल साकृत्यायन

विषय-सूची

A	छषु
श्राच्याय विषय	8
१विषय-प्रवेश	8
२बाल्य घुौर स्कूती जीवन (१८१८-३४ ई०)	
३युनिवर्सिटी-जीवन (१८३४-४१ ई०)	٤
१—प्रेम	3
२—वर्लिन युनिवर्सिटीमे (१⊏३६-४१ ई०)	१२
३हेगलका दर्शन	१७
४कार्ल कोपेन	२०
५.—ब्रनो बावर	२२
६—पी॰एच॰ डी॰ का निवन्म (१८४१ ई॰)	२६
(१) एपिकुर (३४१-२७० ई० पू०)	२७
(२) स्तोइक दर्शन	75
४—प्रथम कर्मचेत्र (१८४२ ई०)	३३
१"राइनिशे जाइटुंग"	३३
२रेनिश डीट (राइन संसद्)	३५
३संघर्षके पॉच मास	३७
४—फ्वारवा लके सम्पर्कमें	88
५ —विवाह (१८४३ ईं०)	४५
४—पेरिसमे (१८४३-४४ ई०)	88
१"वर्मन-फ्रेंच-वर्षपत्र"	38
२—दो लेख	प्र
(१) वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा	77
(२) "यहूदी-समस्या"	37
३फ्रेच सम्यता	યુષ્

(?)

•	
त्र्यस्याय विषय	वृष्ट
४पेरिसके श्रन्तिम मास त्रौर निष्कासन	६०
(१) प्रथम संतान	>>
(२) "मोरवेड्र्चं"	६१
(३) सर्वहाराका पत्त्रपात	>>
६—फ्रीडरिख एंगेन्स	ं ६६
१—नाल्य, शिचा	६६
२—इंगलैंडमें	७१
३—''पवित्र परिवार''	હયૂ
४— इंगलैंडके म जूर	૭દ
∞— नुरोल्समें निर्वासित (१ ५४३-४ ५ ई०)	5 ?
१—"जमेन विचारधारा" (१८४५-४८ ई॰)	5
२''सच्चा समाजवाद'' (१८४५-४६ ई०)	58
३—किव श्रीर स्वप्नद्रष्टा	. ८६
(१) वाइटलिंग	>>
(२) पूषों	50
(३) "ऐतिहासिक भौतिकवाद"	<u>⊏£</u>
४—"ड्वारो ब्रूसेलेर जाइटुंग" (१८४७ ई०)	६६
५—ऋम्युनिस्ट लीग (१८४७-४८ ई०)	ध्य
१लीगका काम	33
२—''कम्युनिस्ट घोपणापत्र''	808
ध-—क्रान्ति स्त्रीर प्रतिक्रान्ति (१८४८ ई०)	११६.
१—-फ्रेंच-फ़ान्ति (१८४८ ई०)	११६
२—जर्मनीमें क्रान्ति ('१८४८-४६)	११८
३कोलोन जनतांत्रिकता	१२४
४दो साधी	१२८

(३)

श्रध्याय विषय	छन्
(१) फर्डिनाड फाइलिय्रथ	१२८
(२) फर्डिनाड लाजेल	398
५—प्रतिक्रान्ति	१३४
१०—तन्दनमें निर्वासित जीवन (१८४६ ई०)	१३८
१—विदा जन्मभूमि	880
२—"नोधे गइतिशे जाइटुंग"	ं१४१
३—िक्षेकेल काग्रड	१४३
४—कम्युनिस्ट लीगमें फूट	888
५—ऋार्थिक कठिनाइयाँ	१४८
६—-'ग्रठारहवॉ वर्ष''	१५५
७—कोलोनमें कम्युनिस्ट मुकदमा	१५६
११मार्क्स श्रौर एंगेल्स	१६४
१ —-श्रद्भुत प्रतिमा	१६६
२—ग्रनुपम मित्रता	१७१
३—मारतप्र मा र्क ी	१७८
(१) प्रामीया गगुराज्यका स्वरूप	"
(२) ग्राम गण्राज्यके कारण् अकर्मण्यता	१८०
(३) सामाजिक परिवर्तनका श्रारम्म	रदर
(क) त्राक्रमणोंकी क्रीडाभूमि,	>>
(ख) ऋग्रेन विजेतास्रोकी विशेषता	१८२
(ग) श्रंग्रेजी शासनका परिणाम सामाजिक का	ते १८३
(घ) ध्वसात्मक काम जरूरी	77
(४) मारतीय समानकी निर्वेलताये	255
(क) ऋग्रेजी शासनके दो काम	१⊏द
(ख) स्वार्थसे मनबूर	१८७

न्त्रध्याय विषय	पृष्ठ
(५) भविष्य उज्ज्वल	१८८
१२ युरोपीय स्थिति (१८४३-४८ ई०)	१८६
१चार्टिस	838
२—परिवार श्रौर मित्रमंडली	१९६
३१८५५ ई० का स्त्रार्थिक संकट	200
४"राजनीतिक ग्रर्थशास्त्रकी ग्रालोचना"	२०४
(१८५६-६६ ई०) ग्रंथ-संचेप	
१३मतभेद	२०६ -
१—लाजेलसे भगड़ा	२०६
२—"'डास-फोल्क''	२१०
३—"हेर फोग्ट"	२११
४—घरेलू स्थिति	२१६
५लाजेल-स्रान्दोलनके काम	२२२
१४प्रथम इन्टर्नेशनल (१८६४ ई०)	२२६
१—इन्टर्नेशनलकी स्थापना	२२६
२प्रथम कार्क्सेस (लन्दन)	२३७
३ग्रास्ट्रिया-प्रशिया-युद्ध (१८६५ ई०)	२४०
४जेनेवा कांग्रेस (१८६६ ई०)	२४५
१४—"डास कपिटाल" (१८६६-७८ ई०)	२४०
१प्रसव-वेदना	२५०
२प्रथम जिल्द	रप्प
(१) पूँजीका त्र्रारंम	२५६
(२) त्र्रातिरिक्त-मूल्य	२५६
(३) पूँजी-संचयन	२६४
(४) सर्वेहारा	२६६

ग्रध्याय विषय	पृष्ठ
३—द्वितीय और तृतीय जिल्द	२६८
(१) द्वितीय जिल्द	२७०
(२) तृतीय जिल्द	२७२
४—"कपिटाल" का स्वागत	२७३
१६—इन्टर्नेशनतका मध्यान्ह	२७५
१पश्चिमी यूरोपमें	२७८
२—मध्य यूरोपमें	२८२
३—वकुनिन	रन्ध
४—चौथी कांग्रेस (१८६९ ई॰)	२६०
५—न्त्रायलैंड न्त्रीर फ्रास	रहम
१७पेरिस कम्यून	२६७
१—सेदॉकी पराजय (१८७० ई॰)	२६७
. २—फासमें यह-युद्ध	३०३
३कम्यूनकी स्थापना	308
४इन्टर्नेशनल श्रीर पेरिस कम्यून	३१०
१५—इन्टर्नेशनल की श्रवनति	388
१श्रवसाद	388
२हेग-काग्रेस (१८७२ ई०)	३१५
३—इन्टर्नेशनलका स्रन्त	३१८
१६—जीवन संध्या	३२१
१—चीमारी	३२१
२मित्रों की इष्टिमें मार्क्ष	३२३
(१) लाफार्गकी दृष्टिमें मार्क्स	> 7
(२) लोनवनेस्टकी दृष्टिमें	३२६
३विरोधी	३३२

म्रप्याय विषय	पृष्ठ
४पत्नी-वियोग (१८८१ ई०)	्३३८
४—पर्वानयना (२५५२ ६०) ५—मार्क्सका निघन (१८८३ ६०)	३४३
६—ग्रन्तिम विश्रामस्थान	३४८
	३५३
७हेलेन देमुथ ८पार्क्तने सम्बन्धमें	३५६
	325
२०एंगेल्स (१८५०-६५ ई०)	३५८
१—योग्य सहकर्मी	
२—मेन्चेस्टरमें (१८५० ईं०)	રૂપ્રદ
३—पिताके स्थानपर (१⊂३० ईै०)	३६०
४—चिंखिक मनमुटाव (१८६३ ई॰)	३६४
५—मित्रके पास	३६५
(१) सामविक लेख	३६६
(२) ''ह्रिंग-खंडन'' (१८७५ ईं॰)	३६७
६मार्स्के बाद (१८८३-६५ ई०)	३७१
(१) "कपिटाल" का सम्पादन	33
(२) "पारिवारकी उत्पत्ति" (१८८४ ई॰)	३७४
(३) फुबारवाल (१८८८ ई॰)	३७६
	३,७७
७—मृत्यु परिशिष्ट	30=358

अध्याय १

विषय-प्रवेश

वर्ग-शासन शुरू हुये हजारों वर्ष हो गये। जिस वर्ग के हाथमें आर्थिक साधन तथा सम्मित्त थी, उसीके हाथमें शासन या और उसने अपनी इसी शिक्त के कल पर निर्वलोका शोषण और उत्पीड़न किया। इन हजारो वर्षों समाजके तरह-तरहके विकास होते भी हमने जनताकी अधिक संख्याको सारे संसारके मरण-पोषणके भार वहन करते, भूख और दीनताकी चक्कीमें पिसते देखा, जब कि उन्हींके अमके बलगर चन्द व्यक्ति वडे सुख और विलासका जीवन बिताते रहे। इन चन्द व्यक्ति वेद सन, स्त्री था स्वतंत्रताके अपहरणके लिये युद्ध घोषित किया और बहुसंख्यक जन मृत्युके मुँहमें पडे। इन चन्द व्यक्तियोंने चनोंके लिये कान्न बनाये—युम्हें इस परिस्थितिमें यह काम करना होगा, तुम्हें अमके लिये इस तरहसे बेतन निलेगा, तुम्हें इस तरह सोचना, बोलना और चलना होगा, और वड़ वैसा करते रहे। उन्होंने हालतक, असहा होने पर चन्द खोटी-छोटी वगावतोंको छोड़, चुपचाप सारे अत्याचारोको सहा।

लेकिन, इन हजारों वर्षोंमें बहु-संख्यकों पर होते दाक्ण श्रत्याचारोंके विरुद्ध श्रावाज उठानेवाले, उत्तीडन-श्र्न्य नये समाजका स्वप्न देखनेवाले मी जरूर पैदा हुये, यद्यपि उनकी संख्या कम थी, उनकी श्रावाज जीए थी, किन्तु शोषण, उत्तीडनके वढावके साथ-साथ वह जीए श्राजाव मी ऊँची होती गई। मगर, जन तक वह श्रावाज श्रवास्तविक तथा श्राकाशसे श्राती रही, तव तक उसमें वह ताकत नहीं श्राई, जो कि ठोस पृथ्वी-तलसे उसके धने वायुमंडलमें गूँजने पर पिछली एक शताब्दीके मीतर देखी गई।

मानव-समाजकी आर्थिक विषमतायें ही वह मर्ज है, जिसकें कारण मानव-समाजमें दूसरी विषमतायें और श्रम्रह्म वेदनायें देखी जाती हैं। इन वेदनाओंका अनुभव हर देश-कालमें मानवता-प्रेमियों और महान् विचारकोने दुखकें साथ श्रनुभव किया श्रीर उसके हटानेका यथासंभव प्रयत्न भी किया। भारतमें बुद्ध (भ्रह्व-४८३ ई० पू०), चीनमें मो-ती (४८०-४०० ई० पू०), ईरानमें मज्दक (भ्रह् ई०), तिब्बतमें मुने-चुने पाँ (१८४६-४७), यहूदी संतों में श्रमाँ (८०० ई० पू०), इसैया (७४६-७०० ई० पू०), यूरोपमें श्रमलातूं (४२७-३४७ ई० पू०), सैनेका (ई० पू०-६५ ई०), सबोनरोला (१४५-२६८ ई०), श्रान्द्रेयाये, पीटर चेम्बरलेंड (१६४६ ई०), वोलूतेर (१६४६-१७७८ ई०), टामस स्पेन्स (१७५०-१८२४ ई०), विलियम गाडविन (१७६३ ई०), सेन्ट साइमन (१७६०-१८२५), फूरिये (१७७२-१८३७) पूधो (१८०६-३५ ई०), चार्ल्स हाल (१८०५ ई०) रार्वट श्रावेन (१७७१-१८६०) जैसे श्रनेक विचारक प्रायः टाई सहस्राब्दियों तक उस समाजका स्वप्न देखते रहे, जिसमें मानव समान होंगे, उनमें कोई श्रार्थिक विघमता नहीं होगी, लूट-खस्ट, शोषण-उत्पीड़नसे बर्जित मानव-संसार उस वर्गका रूप धारण करेगा, जिसका लोभ भिन्न-भिन्न धर्म मरनेके वाद देते हैं।

लेकिन, विषमताके ह्याने श्रीर साम्यवादको स्थापित करनेका स्वप्न देखनेवाले उस साधनको नहीं पा सके, न बतला सके, जिसके द्वारा मनुष्यकी सामाजिक विषमता ह्याई जा सके। पूर्वी श्रीर पश्चिमी संतोंने इसका उपाय हृदय
परिवर्त्तनको वतलाया। पुराने युगके लोगोंकी बात छोड़िये, इस २० वीं शताब्दी
में भी गांधीजी जैसे श्रीर बहुत पुरुष हृदय-परिवर्तन द्वारा समानताकी
स्थापना करना चाहते थे, श्रीर गांधी-सम्प्रदायके एक संत विनोन्ना मावे हृदयपरिवर्तन कर लोगोंसे जमीन दानमें ले समानता स्थापित करनेका स्वप्न देखते
गाँव-गाँव पैदल घूम रहे हैं। संतोंकी श्राइमें श्रीपना उल्लू साधनेवाले भी जोरसे
प्रोपेगेंडामें लगे हुये हैं। वह समफते हैं कि कम्युनिष्मसे बचनेका यह बहुत
श्रच्छा उपाय है। उनमेंसे कितने ही यह समफते मी होंगे, कि जिन समस्याश्रों
—रोटी, कपड़े, वासका श्रमाव—के हलको श्रव तक दुनियामें कम्युनिष्मको
छोड़कर किसीने नहीं किया, श्रीर विनोवाका भूदान यश भी उसके हल करनेमें
सहायक नहीं हो सकेगा, लेकिन, वह समफते हैं कि जब तक नैया श्रमी पूरी
तौरसे भरकर समुद्रके गर्भमें चली गई है, तब तक इस प्रोपेगेंडसे लोगोंकी

श्रॉलोमें धूल तो भोकी जा सकती है। श्रपनी महंगी जमीनको दान देने वाले पुराने सामन्तो श्रौर जमीदारोमें भी विरले ही मिलेंगे। "उडता सन्तू पितरोंको" की कहावत को पूरा करनेवाले मले ही मिल जायं। किसानों के संघर्षसे परेशान कुछ लोग श्रपने हाथसे पहले ही निकल सी गई भूमिका दान करके पुण्य खूट रहे हैं, कुछ लोग ऐसी भूमिको दे रहे हैं, जिसका श्राबाद होना श्रसम्भव या श्रत्यन्त व्ययसाध्य है, कुछ लोग नाम कमानेके लिये भूदानकी घोषणा करके फिर उसे श्रपनोमें ही वितरण कर देनेकी श्राधासे वैसा कर कहे हैं। इस तरह की भूमियोको निकाल देने पर कितनी भूमि बच रहती । यदि उसमें कुछ श्रन्छी भूमि है, श्रौर उसे दलित जातिके बेखेतवाले मजूरोको दे दिया जाय, तो यह श्रन्छी बात है, इसे कोई नहीं इन्कार करता। लेकिन भूदान-यश न जमीनके भूखे लोगोकी समस्या हल कर सकता न श्रनाजके भूखे लोगोको। उसी जमीन को एक हाथसे दूसरे हायमें जानेमे कितना छुटाँक श्रिषक श्रनाज पैदा होगा ।

वैज्ञानिक समाजवादके युगसे पहले यदि कोई हृदय-परिवर्तन या भूदान-यज्ञ जैसी वार्तोंको करता, तो कोई बात भी थी, लेकिन श्राज जब साम्यवादका सूर्यः मध्यान्हपर पहुँचकर श्रपनी प्रखर किरयोंको फैला रहा है, उस समय इस तरहः की वार्ते करना या तो निरा बचपन है, या उसके भीतर मारी घोखा छिपाः हुत्रा है।

दाई हजार वर्षोंसे मिन्न-भिन्न स्वप्नहष्टाश्रोने साम्यवादी समाजको लानेके लिये जो भी सोचा-िकया था, उसके लिये मौखिक ही नहीं बहुतोंने फ्रियाके रूप में भी परिण्त करना चाहा श्रौर मारी बिलदानके साथ। ईरानके मब्दकने श्रपनी श्रौर श्रपने लाखों श्रनुयायियों की जाने इसी प्रयत्नमें गॅवाई। लेकिन विषमता हटानेकी समस्या वैसीकी वैसी बनी रही। इस समस्याको हल करने का जिसने वैश्वानिक दग निकाला, जिसने इस रोगका बारीकीके साथ निदान किया, श्रौर उसकी श्रौपिषकों भी परख-परखकर देखा, वह मार्क्स वस्तुत: नये सुगका विधाता है, नये ससारके निर्माताश्रोमें वह प्रथम है, श्रौर उसकी पैनी स्क तथा परख उसे दुनियाका सर्वश्रेष्ठ विचारक सिद्ध करती है।

अध्याय २

बाल्य और स्कूली जीवन (१८१८-३५ ई०)

कार्ल मार्क्का जन्म ५ मई १८१८ ई० को ट्रीर (ट्रेन्स) नगरमें हुन्ना था, जो पश्चिमी जर्मनीके राइनलैंडके वेस्ट्रपालिया इलाकेमें है। श्रीद्योगिक सुगके लिये सभी सामग्री वहाँ मौजूद है, क्योंकि लोहे, कोयले श्रादिकी बड़ी-बड़ी खानें यहीं पर हैं, इसीलिये श्रागे चलकर राइनलैंड जर्मनीका हथियारखाना वन गया। १६चीं सदीके प्रथम पादमें सामन्तवादके भारी प्रभावमें होते भी जर्मनी लोहे, कोयले श्रादिके वारेमें उदासीन कैसे रह सकता था १ इसीलिये राइनलैंड उद्योग-प्रधान होने लगा था, जिसका परिग्णाम था वहाँ पूँजीवाद श्रीर पूँजी-पतियोंकेके प्रभावमें चृद्धि। वर्लिन, लाइ जिंग, कोइनिग्सवर्गके पुराने नगर श्रव कोलोनसे पीछे पढ़ते जा रहे ये, जो श्रीद्योगिक राजधानी होनेसे प्रमुख स्थान ग्रहण करने लगा था। राइनलैंड जहाँ एक श्रोर जर्मनीका हथियारखाना है, यहाँ वह फांसकी सीमापर पढ़ता है, इसीलिये श्रागे लोहे कोयलेकी यह भूमि फांसके साम्राज्यवादियोंके लिये सिर दर्द का कारण वन गई। इस प्रकार श्रमनी झाल्य श्रांखोंसे ही कार्लंको नई पूँजीवादी दुनिया के वातावरग्रमें साँस लेनेका मीका मिला।

कार्ल मार्क्स जातितः यहूदी थे। उनके दादा मार्क्स लेवी ट्रीरके यहूदियों के रन्त्री (स्वामी या पुरोहित) थे, जिनका देहान्त १७६८ ई० में हुन्ना था। कार्लकी दादी इया मार्क्स मोजेज-परिवारमें पेदा हुई थीं, श्रीर वह कार्लके सात वर्प होनेके समय मरी थीं। दादीका वंश एक शातान्दीसे श्रिषकसे रन्त्री होता श्राया था। इस प्रकार कार्लका जन्म ऐसे वंशमें हुन्ना था, जिसे कहरपंथी बाह्यण्का वंश कहा जा सकता है यद्यपि इस कहरतासे कार्लका पाला नहीं पड़ा था। मार्क्स लेवी—पीछे लेवी हटा दिया, श्रीर उसकी संतानोंने केवल मार्क्सने ही श्रयने वंशका नाम रक्खा—के दो पुत्र सामुयेल श्रीर हर्शल तथा दूसरी कितनी ही संतानें हुई, जिनका विद्या से श्रिषक सम्बन्ध हुन्ना। सामुएल कार्लका चन्ना था, जो १७८१ ई०में पैदा होकर १८२६ ई० में—कार्लकी ११ वर्षकी श्रवस्थामें

मरा। वापके मरने पर यही ट्रीरका रज्वी बना था। कार्लका पिता हर्शल मार्क्स १७८२ ई०में पैदा हुन्ना, त्रीर कार्ल वीस वरसमे होनेके समय १८३८ ई०में मरा। मार्क्सके होश संमालते ही (१८२४ ई० मे) हर्शल मार्क्सने यहूदी धर्म छोड़ ईसाई धर्मको स्वीकार किया, त्रीर त्राव उसका नाम हाइनरिख मार्क्स पड़ पीछेके हाइनरिखकी पत्नी हेनरिटा प्रेसकुर्ग (हालैंड)के यहूदीकी लड़की थी, जिसके बाप-दादा एक शताब्दीसे त्रपने यहाँ यहूदी गुरु (रब्बी) होते त्राये थे। हेनरिटा १८६३ ई० मे मरी, त्रार्थात् जब कार्ल मार्क्स ४८ वर्ष के हो कर त्रपने कार्तिकारी काममें पूरी तौरसे जुट गये थे। यद्यपि वह त्रपनी वेसरो-सामानीकी जिन्दगीमे मॉकी उतनी सहायता नहीं कर सकते थे, लेकिन उसके प्रति उनका सदा मारी स्नेह रहा। कार्ल मार्क्सके त्रीर भाई बहनें थीं, जिनमे कार्लके त्रितरिक उनकी तीन बहनों में, साफी मास्ट्रिस्ट मे श्मालहाउजेन नामक वकीलकी पत्नी मई एमिली ट्रीरके कोनराडी इंजीनियरकी पत्नी, जुइसी दिल्लिंग-त्रफ्रिकानमें केपटोनके यूटा नामक व्यापारीकी पत्नीका पता लगता है।

छोटा-बडा व्यापार श्रीर पुरोहिती (स्वीगिरी) श्राम तौरसे यूरोपमे यहूदियोका व्यवसाय रहा है, लेकिन मार्क्सके पिता हाइनस्लि उसे छोड चुके थे।
वह ट्रीकके एक श्रब्छे वकील थे। पिता-माताका जीवन वडा ही शान्ति श्रीर
सुखका था, इस्तिये कार्लका बाल्यक्व वडी स्वतन्त्रता श्रीर निश्चिन्ततामे बीता।
यद्यि माँ शिच्चा-दोच्चा श्रीर शायद बुद्धिमे भी पिछुडी हुई थी—वह जन्ममर
टूटी-फूटी ही जर्मन बोल सकती थी—लेकिन पिता-माताका स्नेह श्रीर घस्की
खुशहाली बालक कार्लको वरासतमें मिली थी। माँ स्वप्न देखा करती थी, कि
मेरा लडका श्रागे चलकर मारी लच्नीपात्र बनेगा, लेकिन पिता लच्नीसे ज्यादा
सरस्वतीके मक्त थे। श्रपने लडकेकी श्रद्भुत प्रतिमाको देखकर उनकी कल्पना
दूसरी ही थी, यद्यपि वह मी यह नहीं चाहते थे कि उनका श्रद्भुत पुत्र युगप्रवर्तक होते हुये भी जीवनमर श्राधिक कच्डोमे पडा प्रतिगामी सरकारों द्वारा
उत्पीडित हो दर-दर मारा फिरे। कार्ल मार्क्सका श्रपने परिवारके लोगों हिस्टे
स्नेह-सम्बन्ध नहीं था, बल्कि श्रपने मात्रकुलके साथ भी वह बहुत घनिष्ठतार
रखते थे, विशेपकर श्रपने मामा फिलिन्स (हार्लेड) के साथ।

उस समय भी जर्मनीमें युरोपकी श्रीर जगहोंकी तरह यहूदियोंकी स्थित चड़ी द्यनीय थी। इस प्रतिभाशाली जातिने कला, ज्ञान-विज्ञानके हरेक चेत्रमें श्रद्भुत प्रतिभात्रोंको जन्म दिया—युरोपीय दर्शनका पिता स्पिनोजा यहूदी चंशमें पैदा हुआ। आधुनिक और भावी संसारका नव-निर्माता कार्ल मार्क्स भी यहूदी माता-पिताका पुत्र था, ग्राधुनिक संसारका सबसे बड़ा विज्ञानवेत्ता श्राइन्स-टाइन भी इसी जातिमें पैदा हुत्रा, लेकिन इतिहासके स्रारम्भसे ही यहूदियोंको श्रळुतकी तरह देश-देशमें श्रधिकार-बंचित श्रीर सम्मानरहित होकर मारे-मारे फिरना पड़ा । यहूदी खेती नहीं कर सकते थे, क्योंकि उन्हें खेत मिल नहीं सकते थे । विद्यालयोंमें भी उनके साथ मेद-भाव रक्खा जाता था, इसलिये बुद्धिजीवी तथा सरकारी नौकरियोंमें जाना उनके लिये सम्भव नहीं था। नीच जाति समभ उनके साथ ब्याह-शादी करना भी लोग बहुत कम पसन्द करते। लेकिन, यहूदी भी श्रपनेको इसाइयोंसे कम नहीं समफते थे, इसलिए हमारे यहाँकी तरह उन्होंने भी श्रपनी श्रलग-श्रलग जात बना ली थी, श्रीर जातसे बाहर शादी करने-षालोंको पारिसयोंकी तरह जाति-बहिष्कृत कर दिया जाता था। दूसरोंके दुर्व्यवहार श्रीर श्रपनी जाति-पाँतकी संकीर्णताने यहूदियोंको केवल नीचा ही नहीं बना दिया था, बल्कि उनके लिये छोटी-मोटी दूकान श्रीर व्यापार छोड़कर जीविकाका कोई रास्ता नहीं छोड़ रखा था। इसी जन्नईस्तीका यह फल हुआ, कि इस जातिने न्यापार त्रौर उद्योगके त्तेत्रमें त्रागे चलकर प्रमुखता हासिल की । पर ऐसी प्रमुखता राय्सचाइल्ड, राकफेलर ऋादि कुछ इने-गिने परिवारोंको ही हो सकती थी, अधिकांश यहूदी पूर्वी और पश्चिमी युरोपके नगरोंके सबसे गरीब मुहल्लों ऋौर कस्बोंमें भारी दरिद्रताकी जिन्दगी विताते रहे | दूकानके साथ वह पहले हीसे सद्दपर रूपया भी लगाते थे, श्रीर सद्दखोरोंके प्रति लोगोंकी जैसी घृणा सभी देशों में देखी जाती है, वही यहू दियों के ऊपर हो गई। इस प्रकार केवल जात-पाँत, सामाजिक त्रिलगान तथा स्ववंशी ईसा मसीहके खूनका अपराध ही युरोपके इसाई जन-साधारणको यहूदियोंके खिलाफ होनेका कारण नहीं बना, बल्कि उनकी सूदलोरी श्रौर वनियावृत्ति भी इसमें प्रधान कारण हुई । पीढ़ियोंसे चले त्राते ऐसे त्रपमानसे मुक्त होनेका एक ही रास्ता था। यहूदी धर्मको छोड़कर

बाल्य श्रौर स्कूली जीवन (१८१८-३५ ई०)

इसाई घर्मको स्वीकार करना । लेकिन, धर्म-परिवर्त्तनका अर्थ था समी सगे-सम्बन्धियोसे हमेशाके लिए विच्छेद, तथा श्रपनी कुलागत परम्पराश्रों श्रीर मान्यतात्र्योंका परित्याग । यह भावनाये कितनी शक्तिशाली हैं, इसे हिन्दू अन्छी तरह समम सकते हैं, ईसाई या मुसलमान होनेपर उनकी क्या गति होती है, इसे वह जानते हैं। यहूदी धर्म छोड़कर इसाई होनेका मतलव केवल यही नहीं था, कि अब एक धर्मके सभी वन्वनासे आदमी मुक्त हो गया, अब वह सम्रारको भी खा सकता है, श्रीर दूसरे कालातीत रीति-रवाजोंका भी पावन्द नहीं, बल्कि इसाई होनेका मतलब या सामाजिक दासतासे मुक्ति- अब वह अपने देशवासी वूसरे ईसाइयोकी तरह अपने वर्गके अनुसार स्थान पानेका अधिकारी था। उधर यहूदी पुरोहित वर्ग और समाज भी इतना जड या, कि धर्म-ग्रंथो और रीति-रनाजोंमे जरा भी ऋविश्वास प्रकट करनेपर जातिच्यत कर दिया करता था। कार्ल मार्क्सके पिताका सम्बन्ध वकील होनेसे अब व्यापारियो और रज्बीके समाजसे भिन्न साघारण जर्मन समाजसे अधिक पडता था। हाहनरिख मार्क्सको यहूदी जातिसे ऋधिक एशियाके प्रति भक्ति थी। वह एशियाके वीरतापूर्ण इतिहास और उसके वीरोको बढी आत्मीयताके साथ देखते थे। यह वह समय था, जब कि कितने ही यहूदी जर्मनीमे अपने वाप-दादोंका धर्म छोड इसाई बन रहे थे। हाइनरिख हाइन (महाकवि), एडवर्ड गांज आदिने भी सामाजिक मुक्ति तथा जन्मभूमिकी साधारण जनतामें मिल जानेके ख्यालसे इसाई धर्मको स्वीकार किया था। इस प्रकार १८२४ ई० मे अपने वेटेकी ६ सालकी उमरमे हाइनिरख मार्क्सका ईसाई बनना विलक्कल नई घटना नहीं थी। राइनलैंडम यहूदियोंकी सद्खोरी श्रीर वनियापनके वारण लोगोंकी जो श्रपार घृणा यहूदियोंके प्रति यी, उससे मुक्त होनेका यही सबसे आसान रास्ता था। कार्ल अभी क-ख सीखने लगा था, जब कि यह परिवर्त्तन परिवारमें हुन्रा। पिता पहले हीसे उदार विचारके थे, उसपर यह धर्म-परिवर्त्तन, फिर यदि मार्क्सको घरमे यहूदी कहरताकी गन्ध भी देखनेको न मिली हो, तो आश्चर्य क्या ? यहूदी धर्म और उसकी कहरताको तो कार्लंसे घरके वापने ही विदा कर दी थी। हाइनरिखने श्रपने प्रतिभाशाली पुत्रकों बहुतसे पत्र लिखे थे, जिनमे कहीं भी यहूदीपनकी

गन्घ नहीं मिलती । मार्क्सको ऋगो बढ़नेके लिये पुराने पच्चपातोंसे उलभने या लड़नेकी जरूरत नहीं थी ।

कार्ल दीरके स्कलमें पढ़ने बैठा दिया गया, शायद उसी समय जबकि परि-वारने ईसाई धर्म स्वीकार किया। २५ अगस्त १६३५ ई० को सत्रह सालकी उम्रमें मार्क्सने ट्रीरके कालेजकी ऋपनी पढ़ाई ख़तम करके प्रमाखपत्र पाया ! इस सन्नह वर्षके जीवनमें कोई ऐसी उल्लेखनीय घटनायें नहीं घटीं, ऋथवा उन्हें जमा करनेका मौका नहीं मिला, इसलिए मार्क्षके इस जीवनके बारेमें बहुत वार्ते ज्ञात नहीं हैं । मार्क्षके स्कूलके सहपाठियोंसे भी इस विषयमें सहा-यता नहीं मिली, जिसका एक कारण यह है, कि लेखकोंने बहुत पीछे, प्राय: मार्क्सकी मृत्युके वाद सामग्री संचय करनेका प्रयत्न किया। द्रीरके विद्यार्थी-धीवनके वारेमें कहा जाता है. ग्रीक श्रीर लातिनके महान् ग्रंथोंके श्रत्यन्त कठिन वाक्योंको लगा देना कार्लका वाएँ हाथका खेल था। लातिन भाषापर विषय श्रीर भाव दोनोंकी दृष्टिसे कार्लका श्रसाधारण श्रधिकार था। धर्म श्रीर इति-हासके प्रति शायद ऋभी कार्लकी उतनी दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उसके जर्मन निबन्धको परीचकोंने दिलचस्य वतलाया था, जिसका विषय था "व्यवसाय चननेसे पहले एक तरुएके विचार" कार्लने अपने विचार इस विषयपर गतातु-गतिक तौरसे नहीं प्रकट किये थे। उसने लिखा था: हम सदा ऐसे पेरोको श्रक्तियार नहीं कर सकते, जिसके बारेमें हम अपनेको योग्य समफते हैं। हम जब इसके बारेके निश्चय करनेकी रियतिमें होते हैं, उससे पहले ही समाजके साथ हमारे सम्बन्ध परिपक्व (रूपान्वरित) होने लगते हैं । समाज श्रीर उसके सम्बन्धोंके बारेमें इस तरहके परिवर्त्तनका ख्याल बतलाता है, कि तरुणाईके न्त्रारंभिक दिनोंमें ही कार्लंका दिमाग कितना दूर तक सोच सकता था।

श्रध्याय ३

यूनिवर्सिटी-जीवन (१८३५-४१ ई०)

वकील पिता ऋपने पुत्रको भी शायद एक सफल बकील बनाना चाहता या, इसलिये ट्रीरकी पदाई समाप्त करनेके बाद पिता की सलाहसे कार्ल मार्क्स १८३५ ई० के शरद्मे बोन युनिवर्सिटीमे दाखिल हुआ, जहाँपर वह एक साल तक कानून पढ़ता रहा। बोनके इस विद्यार्थी-जीवनके बारेमें बहुत कम बाते मालूम हैं। पिताकी चिट्टियोमे इस बातकी शिकायत देखी जाती है, कि कार्ल पैसोंको वरबाद करता है।

१. प्रेम

कार्ल अब अठारह वर्षका था। ऐसे प्रतिमाशाली पुरुषके विचारोका इस अवस्थामें भी अधिक परिपक्व होना स्वामाविक है। मार्क्स आगे चलकर कभी गतानुगतिक नहीं रहा। उसके इस स्वमावका परिचय इन आरंभिक दिनोमें भी लग सकता था। हाइनरिख मार्क्स वकील और द्रीरके सामन्त तथा प्रीवी कौंसिलर जुडविंग फान वेस्टफालेनका आपसमें घनिष्ठ परिचय था। यह परिवार उन कुलीन सामन्तों या प्रशियाके प्रतापी नौकरशाहोसे सम्बन्ध नहीं रखता था, बल्क वह अपनी असैनिक सेवाओंसे आगे बढ़ा था। जुडविंग पहले उन्सविक इयुक फर्डिनाडका असैनिक-सेकेटरी रह चुका था। इयुक पश्चिमी चर्मनीकी ओरसे पन्तहवें जुईके सातसाला युद्धोमें लहा था, जिसमें फिलिपवेस्ट-फालेन इयुकका चीफ-आफ-स्टाफ रहा था। उसकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर इगलेंडके राजाने फिलिपको सम्मानित करते हुये सेनाका अड्जूटेट-जेनरल बनाना चाहा, लेकिन उसने उसे स्वीकार नहीं किया। यह मालूमही है, कि फासकी छेडी लडाइगोंमें इगलेंड और जर्मनी (उस समय संयुक्त जर्मनी अमी दूरका सप्त था) एक दूसरेके साथी थे। इगलेंडके इसी सम्बन्धके कारण फिलिपने एक स्काच बैरनकी लडकीसे व्याह किया था। अपनी सेवाओंके लिये उसे

सामन्ती उपाधि फानवेस्टफालेन मिली थी। फिलिपके पुत्रोंमें एकका नाम छुड-विग फानवेस्टफालेन था, जो पिताकी सफजतात्रोंके कारण श्रव साधारण कुलका न होकर एक छोटा-मोटा सामन्त समक्ता जाने लगा था। यद्यिप छुडविंग धन, प्रभुना श्रीर मानमें दूसरे जर्मन सामन्तोंकी स्थितिमें था, लेकिन मिलमंगे युंकरों-का भी दिमाग जैसे श्रासमानपर रहता है, वह रोग उसे नहीं लगा था। इसी छुडविंगकी लड़की जैनी थी, जो साल्जवेडेलमें १२ फर्वरी १८२४ ई० को— श्रथीत् कार्ल मार्क्सके जन्तसे चार साल पहले-पैदा हुई थी। उस समय जैनीका पिता साल्जवेडलमें लांडराट (मिलस्ट्रेट, श्रीफ) था। दो वर्ष बाद वहाँसे उसकी बदली ट्रीरमें हो गई, श्रीर श्रव वह सरकारका परामर्शदाता था।

राइनलैंड जर्मनीके दूसरे भागोंसे भिन्नता रखता था। वह सामन्तों नहीं, उद्योगपतियोंका प्रदेश वनता जा रहा था। यह जर्मनीके चिरप्रतिद्वंद्वी फ्रांसकी सीमाप्र पड़ता था, इसलिये वहाँ ग्रसाधारण योग्यतावाले ही श्रादमीको शासक बनाकर मेजा जाता था। प्रशियाके महामंत्री हार्डेनवेर्गकी इसीलिये लुडिनग फानवेस्टफालेनपर खास तौरसे नजर पड़ी । लुड़ियम साधारण सामन्तोंसे कितना विलच्छ था, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्स जीवनके ऋन्त तक श्रपने ससुरका नाम बड़े सम्मान श्रीर छतज्ञतापूर्वक लिया करते थे, श्रीर लिखते वक्त उसे प्रिय पितृतुल्य मित्र करके सम्बोधित करते थे । लुडविग सुशिन्तित था, वह होमरकी कवितात्रोंके पृष्ठके पृष्ठ दोहरा सकता था. शेक्सपियरके बहुतसे नाटक उसे कंठस्य ये—ऋँग्रेजी श्रीर जर्मन दोनोंमें। लडिवगके घरमें विद्या श्रीर साहित्यका बड़ा ही सुन्दर वातावररा था। उसके पास पुस्तकोंका ऋच्छा संग्रह था। कार्ल जैसे प्रतिमाशाली तरुएकी जिज्ञासात्रोंकी पृतिके लिये वह साधन-सम्पन्न या । ऐसी ग्रावस्थामें यदि बचपनसे ही कार्ल मार्स्सका लगाव वेस्टफालेन परिवारसे हो जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं । लुडविय इस मेधावी बच्चेको बहुत प्यार करता था। उसकी पुत्री जैनी ग्रीर कार्ल बचपनसेही साथ खेला करते थे। उन्हें पता नहीं लगा कि कब बचपनका वह रनेह दो तरुए-हृदयोंके प्रेममें परि-वर्तित हो गया । जेनी एक ग्रसाधारण सुन्दरी लड़की थी, लेकिन उसका स्वभाव द्सरी सामन्त-कुमारियोंसे त्रिल्कुल ग्रलग था। उसके चाहनेवाले बहुतसे थे।

वह स्रपने पिताके कुल श्रीर दर्जेके प्रमावसे किती धनी श्रीर प्रभावशाली सामन्त-कुमारसे व्याह करके सुख श्रीर विलासका जीवन बिताती। जेनीने यदि अपने ऐसे बालापनके साथी के साथ अपने जीवनका गठवंघन किया, जिसका मविष्य 'खतरेसे मरा श्रीर श्रनिश्चित' (मार्न्सके पिताके शब्दोमे) था, तो इसे यही कहना चाहिये कि जेनी बिल्कुल दूसरी ही तरहकी लडकी थी। मार्क्सका पिता उसके लिये "देव कृत्या जादूगरनी" जैसे शब्द इस्तेमाल करता था स्रीर साथ ही वह उसके प्रेमको इतना पक्का समस्तता था कि कोई राजकुमार भी उसे कार्ल से छीन नहीं सकता था। पिताने मार्क्सके जीवनको जिस तरहका खतरेसे भरा श्रीर श्रनिश्चित समस्ता या, वह उसके सामने कुछ भी नहीं या, जैसा कि जेनीको भुगतना पड़ा। लेकिन जेनीको इस ऋद्मुत पुरुषका ऋखंड प्रेम मिला था, जिसे वह बहुमूल्य समभती थी। मार्क्स-जेनीके वाल्य-प्रेम ऋीर उसके परिनारको पैंतालीस वर्ष (१८६३ ई०) की उमरमे भी ऋत्यन्त मधुर शब्दोमें याद करता था। वह उस साल ऋपनी मॉकी ऋन्त्येष्टिके लिये ट्रीर गया था, जनकि लिखा था: प्रतिदिन मैं पुराने वस्टफालेन मवन (रोमेर स्ट्रार्स) की तीर्थ-यात्रा करने जाता था । वह सारे रोमन ध्वंसावशेपोंसे मी ऋषिक मेरे लिये मनोहर मालूम होता था, क्योंकि वह मुक्ते श्रपनी तरुणाईके मुखमय दिनोकी याद दिलाता था, श्रौर इसीने मेरी निधिको एक समय श्रपने मीतर सुरिच्चत रक्खा था। प्रतिदिन दाहिने-वार्येसे सुमासे लोग ट्रीरकी ग्रत्यन्त सुन्दरी लढ़की, 'रृत्यकी रानी' के बारेमें पूछते थे। एक श्रादमीके लिये यह श्रत्यन्त प्रसन्नता-की नात है, कि उसकी पत्नी सारे नगरकी स्मृतिमें 'नादूगर राजकुमारी' के तौर-पर याद की जाती हो । मृत्युके समय तक मार्क्स अपनेसे पहले ही दुनिया छोड गई जेनी को श्रपार रनेहके साथ याद करता था।

वचपनसे बढ़ते-बढ़ते दोनोका स्नेह तस्वाईके प्रेममें बदल गया था। ऐसी रिथितिमें दोनों तस्वा हदयोको विद्योह ग्रमहा मालूम होता था, लेकिन पढ़ाई तो पूरी करनी थी। मार्क्स पढनेके लिये जब बोन गया उसी समय बिना श्रपने माता-पिताश्रोकी श्रमुमितके दोनोने विचाह-बन्धनसे बॅधनेका संकल्प कर लिया। विकील हाइनरिख मार्क्ससे लुडबिंग फानवेस्ट्रफालेनका दर्जा, कुल श्रीर मर्यादा

बहुत ऊँची थी लेकिन जब उसे मालूम हुआ, तो उसने बड़ी प्रसन्ततासे स्वीकृति देदी। किंतु इसका यह आर्थ नहीं था, कि दोनोंका ब्याह आभी हो गया। जैनीका पीहर पीछे भी जर्मनीमें बहुत प्रभावशाली था। उसका सौतेला बड़ा भाई फार्डिनेंड फानवेस्टफालेन प्रशियाका यह-मन्त्री, सामन्तोंका कट्टर पद्माती था। वह जैनीसे पन्द्रह वर्ष बड़ा था। जैनीका सगा माई एडगर फानवेस्टफालेन था। वह अपने यशस्वी बहनोईके साथ अच्छा सम्बन्ध रखता था, वैयक्तिक ही नहीं राजनीतिक भी। यद्यपि वह पक्का मार्क्सवादी नहीं बन सका, लेकि उसने कम्युनिस्ट घोपस्पापर हस्ताद्यर किये थे। उसके दिलमें अपनी बहन और बहनोईके प्रति सदा तनेह रहा और इसीके उपलक्षमें बहन और बहनोईने अपने लक्ष्में माम एडगर रक्सा था।

२. वर्तिन युनिवर्सिटीमें (१८३६-४१ ई०)

वोन्की पढ़ाई वेटेसे भी अधिक वापको नापसन्द थी। वाप एक प्रशियन देशाभिमानी था और प्रशियाका केन्द्र था वर्लिन। इसलिये, जैसा कि उसने श जलाई १८६६ के पत्रमें लिखा था, अपने पुत्रको वार्लिन युनिवर्सिटीमें राजनीतिक अर्थशाल और कान्त पढ़नेके लिये भेजा। शायद पिताको ऐसा करना इसलिये भी जस्सी समस्त पड़ा, कि सामन्त कुमारीसे न्याह करना टर्टा नहीं है, उसे मुखी राजनेके लिये कार्लको अधिक धन और पदकी आवश्यकता होगी। जिसके लिये प्रशियाकी राजधानीमें जाकर उसकी शिक्ता और परिचय प्राप्त करना अधिक सहायक होगा। मार्क्स अब अपनी प्रेमिकासे दूर जा रहा था, जोकि उसके लिये प्रिय नहीं था। जहाँ तक मार्क्सका सम्बन्ध था यह राइनलैंडको स्थादा पसन्द करता था, अधिक सर्द वर्लिन उसे पसन्द नहीं थी। मार्क्सकी आर्थनापर दोनोके पिता-माताओने जैनीके साथ पत्र-व्यवहार करनेकी उसे अब्दार्मित दे दी थी, तो भी जैनीका पहला पत्र वर्लिनमें उसे तब मिला, जविक वर्ष रहने उसे एक साल हो गये।

मन् १८३७ ई०--जबकि यह उन्नीम धालका हो यया था--से मार्स्स्य विवस्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हमें मिलने समग्री है, जिसमें उसके स्राप्त

पत्र भी सम्मिलित हैं। १० नवम्बर १८३७ को मार्क्सने घरपर एक पत्र मेजा था। उससे उसके साल मरके बर्लिनके जीवनके बारेमें कितनी ही बातें मालूम होती हैं : उसे ज्ञानकी अपार पिपासा थी। वह अपना सारा समय उसीको तृप्त : करनेमें लगाता था। वह अपने उच्च विचारो पर पहुँचनेके लिये अपार मेहनत करनेमें सक्तम होते भी अपनी कडी आलोचना करता था। २२ अक्तूबर १८३६ को कार्लन युनिवर्षियीकी प्रवेशिका परीचा पास की। प्रोफेसरोंके लेक्चरोकी । वह कोई पर्वा नहीं करता था, श्रीर कानूनके अनिवार्य व्याख्यानोमें ही शामिल , होता था। यनिवर्सिटीके प्रोफेसरोमें केवल एडवर्ड गाज ही एक पैसा व्यक्ति ं या, जिसका प्रमाव मार्क्सके मानसिक विकासपर पडा। वह गाज फौजदारी कानूत श्रीर प्रशियाके दीवानी कानूनके व्याख्यानीको सुनने जाता, श्रीर गाज भी ऋपने विद्यार्थीके मेहनती स्वमात्रकी प्रशंसा करता या। लेकिन मार्क्सने कानूनके ऐतिहासिक सम्प्रदायकी जितनी कडी खबर अपने आरिमक लेखोम ली थी, उससे ही मालूम होता है कि कानूनके प्रति उसकी श्रास्था कैसी थी। गाज दर्शनका भी पहित था, वह भी उस सम्प्रदाय का विरोधी था, इस प्रकार सम्ब है कि गाजके ऐसे विचारोंका प्रमाव तरुण मार्क्सके ऊपर पडा था। मार्क्सके कथनानुसार वह इतिहास श्रीर दर्शनके साथ कानूनको केवल सहायक-श्रनुशासनके तौरपर ही पढ़ता या। श्रव उसकी इतिहास श्रीर दर्शनमें बहुत दिलचस्पी थी, लेकिन युनिवर्सिटीके प्रोफेसरोके लेक्चर ऐसे नहीं होते थे, जिनसे मार्क्सके हृदयमें कोई आकर्षण पैदा होता । हेगेलकी गदीपर अवस्थित गवलर-के तर्कशास्त्र-सम्बन्धी व्याख्यानाको ग्रानिवार्य होने हीसे वह सुनने जाता था। गवलरको वह हैगलका ऋत्यन्त निकुष्ट ऋनुयायी मानता था। कार्ल मार्क्स वस्तुतः स्वतत्र विचारका था। उसके दिलमें ज्ञानकी प्यास और लगन मी अरुयधिक थी, लेकिन वहाँके प्रोफेसर उसकी तृष्ति नहीं कर सकते थे। दस वर्षमें युनिवर्सिटी जो उसे नहीं दे सकती थी, वह एक सालके भीतर अपने श्रन्यवसायसे प्राप्त ६ र सकता था।

प्रतिभाशाली तस्याके हृद्यमें एक बार कविता-कामिनीका प्रेम जरूर पैदा होता है। तस्य कार्ल मार्क्स भी उससे बच नहीं सका। उसने तीन कापियाँ श्रपनी किवताश्रोंसे भरली थीं, जिनको मेरी प्यारी श्रीर सदाकी प्रियतमा जेनी फान वेस्टफानको समर्पित किया था। दिसम्बर १८३६ में ये किवतायें जेनीके हाथमें थीं, जिसने मार्क्सकी वहन साफीके लेखानुसार हर्फ, विषादके श्रश्रुश्रों के साथ उनका स्वागत किया था। लेकिन जान पड़ता है तरु प्रेमीका प्रेमिकाके वियोगके प्रथम वर्षने किवताकी श्रोर जो प्रेरणा दी थी, वह श्रागे सूख गया, क्योंकि उसके एक साल बादके पिताको लिखते हुये श्रपने पत्रमें उसने श्रपनी किवताको तीन कौड़ीका वतलाते हुये कहा था: चौरस श्रीर श्राकृतिहीन कल्पना है कोई स्वामाविकता नहीं, सभी वार्ते हवाई, श्रस्ति (है) श्रीर मवित (होता), जो है श्रीर जो होगा दोनोंमें जर्वदस्त विरोध। कभी कल्पनाकी जगह केवल श्रलंकारोंकी प्रतिध्विन। इतने दोषोंके गिनानेके बाद वह इतना स्वीकार करता है किवताकी ज्वालाके लिये श्रनुभृति श्रीर प्रयत्नकी शायद कुछ, लालसा। सभी दोषोंके रहते हुये भी इसमें सन्देह नहीं, मार्क्स श्रलंकारिक भाषाके प्रयोगमें जर्मन साहित्यके महान् निर्माताश्रोंके वरावर पहुँचा था। शायद किवतादेवीकी यह श्रारंभिक श्राराधना ही थी, जिसने उसे श्रपनी गम्मीर लेखनीको कितने ही श्रंशोंमें सुगम बनानेमें सहायता प्रदान की।

मार्क्सने अपने पत्रमें घरको लिखा था: कविताकी श्रोर तो मेरी मामूली सी यों ही दिलचस्पी है, मुक्ते तो दर्शनसे भिड़ना है। वह अब दर्शनकी जो भी पुस्तकें मिलतीं, उनके गम्भीर अध्ययनमें डूबा रहता था।

यूरोपका अदितीय दार्शनिक हेगेल (१७७०-१८३१) की कर्मभूमि जर्म-नीकी यही नगरी वर्लिन थी। अब मी वर्लिन अनिवर्षिटीमें उसकी मेघाकी प्रति-ध्विन सुनाई पड़ती थी, लेकिन जैसा कि ऊपर वतलाया, अब उसकी गदीपर चापलूत तीसरी श्रेणीके आदमी बैठाये गये थे। १८३७-३८ ई० में मार्क्सको कितनी ही बार यह ख्याल आता रहा होगा, यदि मैं छ-सात वर्ष पहले यहाँ आया होता। जर्मन दर्शनके अतिरिक्त वह ग्रीक दर्शनको भी बड़े ध्यानसे पढ़ रहा था। पुस्तकोंके पढ़ते समय उसकी एक आदत यह भी हो गई थी, कि वह उनका सार उतार लेता। मार्क्सने इतिहास, कला और दर्शनकी कितनी ही अपनी।पढ़ी हुई पुस्तकोंका संन्तेप कर लिया था। तैकितसकी सारी गेरमानियाँ को उसने जर्मन भाषामें अनुवाद कर डाला। ग्रीक, लेटिन श्रीर जर्मनको पर्याप्त न सममकर उसी समय उसने अग्रेंग्रेजी श्रीर इतालियन पढ़नेकी भी अवश्यकता सममी श्रीर उसके लिये कुछ प्रयत्न भी किया। उस समयके श्रारंभिक प्रयत्न श्रीर सफलताके बारेमें उसने लिखा था: बहुत सी राते जागते बीती, बहुत सी लड़ाइयाँ लडीं श्रीर बहुतसा भीतरी श्रीर बाहरी प्रेरणाये प्राप्त कीं।

वह जिस तरहसे तन्मय होकर परिश्रम कर रहा था, उसका स्वास्थ्यपर खुरा असर पड़ा और डाक्टरोंकी सलाहसे उसे बर्लिन के पड़ोसके मछुओं के गाँव स्ट्रालाउ में जाकर रहना पड़ा। वहाँ जलदी ही उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। युनिवर्सिटी के दूसरे वर्ष (टर्म) के लिये तैयार होकर वह फिर जुट पड़ा। यद्यपि उसकी जिज्ञासाका च्रेत्र बहुत विस्तृत था, लेकिन घीरे-घीरे उसका ध्यान हेगेलके दर्शनकी ओर विशेष तौरसे केन्द्रित होने लगा। पहले जत्र हेगेलको उठाया, तो वह उसे विलकुल पसन्द नहीं आया। लेकिन अस्वस्थ रहनेके समय उसने फिर उसको पढ़ना शुक्ष किया, और अब उसमे उसे रस आ रहा था। हेगेलके दर्शनकी वारीकियाँ उसे अपनी और खोंच रही थी।

मार्क्सने घर आनेके लिये पिताकी अनुमित माँगी, लेकिन पिता समसता था, कि जेनीके पास रहनेपर लडकेकी पढ़ाईमे बाघा होगी, इसीलिये उसने अगले वर्षकी ईस्टरकी छुट्टियोमे आनेके लिये कहा। पुत्र कितना ही कहता रह गया, कि मुक्ते आपसे कितनी ही बातोपर विचार करना है, लेकिन पिता माननेके लिये तैयार नहीं हुआ। १८३७ ई० में अब पिताका स्वास्थ्य भी उतना अच्छा नहीं था। प्रश्न पूछ्र कर पिताने स्वय मार्क्सकी बर्लिनकी दिनचर्याके बारेमें लिखा था: मगवान् हम बचाये! कोई व्यवस्था नहीं, । विज्ञानके सभी चेत्रोमे धुसना और धूमना तेलके चिरागके मन्द प्रकाशमें सिर मारना। विचार्थियोंके दैसिंग गौनमे बालोंमे विना कंघी किये पाठमे जाना फिर हाथमें वियरका खास लेकर मन परिवर्त्तन करना। सामाजिक मेल-जोल से विमुखता और सभी उचित बातोंका परित्याग, यहाँ तक कि अपने पिताको भी गौण स्थान देना। सामाजिक कलाको एक गन्दी कोठरीमें सीमित करना, जहाँ जेनीके प्रेमपत्र मयकर अस्त-व्यस्त रूपमें पहें हैं तथा जहाँपर पिताके सदाश्वपूर्ण शिक्ता वाले

पत्र, शायद आँसुत्रोंके साथ लिखे गये पिताके पत्र, पाइप जलानेके लिये इस्ते-माल होते हैं इससे कहीं अच्छा है, यदि वह इस अस्त-व्यस्ततामें न पड़ किन्ही तीसरे प्रकारके आदिमियोंके हाथमें पड़ जाते । मार्क्षके पिताको पुत्रकी फजूल-खर्चीकी बड़ी शिकायत थी : मेरा लायक पुत्र प्रतिवर्ष सात सौ थालर खर्च करता है, मानों हम पेसेसे बने हों । और वह सभी हिदायतोंके विरुद्ध तथा सभी खाजरेंके खिलाफ, क्योंकि धनीसे-धनी विद्यार्थीको पाँच सौ थालरसे अधिककी जरूरत नहीं पड़ती । यद्यपि पिता यह भी मानता था, कि कार्ल साधारण अर्थोंमें फजूलखर्च नहीं है, बल्कि हरेक आदिमीका हाथ लूटनेके लिये कार्लकी पाकिट पर रहता है । इसी पत्रमें पिताने घर आनेकी अनुमति न देते हुये लिखा थाः इस वक्त घर आना बेवकूफी होगी । सुक्ते यह अड्डी तरह मालूम है, कि तुम क्लासके व्याख्यानों—जिनके लिये पैसा देना पड़ता है—की कोई पर्वा नहीं करते, तो भी मैं जोर देता हूँ कि तुम्हें शिष्टाचारको पालन करना चाहिये । अन्तमें पिताने ईस्टरके समय घर आनेकी अनुमित देते लिखा था, वह इच्छा होनेपर दस दिन पहले भी आ सकते हो ।

यद्यपि पिता श्रपने पत्रोंमें श्रक्सर पुत्रकी हृद्यहीनताकी शिकायत करता था, लेकिन वस्तुतः मार्क्का यह स्वभाव नहीं था। पिता या किसीके साथ भी वह हृद्यहीन नहीं हो सकता था। श्रपने सम्बन्धियोंके साथ तो श्राजीवन उसका सौहार्द्र रहा। मार्क्स श्रपने पिताको श्रपने पत्रोंमें समक्तानेकी कोशिश करता था। इन पत्रोंकी पंक्तियोंमें उसके नवार्जित ज्ञान श्रौर स्वतंत्र प्रतिभाकी भी श्राप होती थी, लेकिन शायद श्रव पिताके लिये उन पंक्तियोंका समक्ता श्रासान नहीं था। पिताके लिखनेपर उसी साल नहीं, बल्कि श्रगले ईस्टरमें भी ग्रानेका ख्याल मार्क्षने छोड़ दिया। वस्तुतः जेनीको छोड़ देने पर वर्तिनमें श्रव श्रपनी श्रोर खीचनेके लिये जितने श्राकर्षण थे, उतने ट्रीरमें नहीं हो सकते थे। श्रौर यह भी कहना मुश्किल है, कि जेनी श्रौर विद्या दोनोंके श्राकर्पणमें कौन श्रिष्क शक्तिशाली है। मार्क्षने श्रपने निश्चयकी स्वना १० फरवरी १८३८ के पत्र द्वारा दी थी। उस समय श्रभी-श्रभी हाइनरिल मार्क्स पाँच स्वाहकी बीमारीसे उठे थे। लेकिन यह स्वास्थ्य सुधार देर तक

कायम नहीं रहा | पेटकी बीमारी थी, जो फिर बिगड गई छौर तीन महीने बाद १० मई १८३८ को बूढ़ा पिता चल बसा | वह छपने पुत्रको नहीं समक्त सका | उसने विद्यामे तन्मय तथा पैसोंका कोई मूल्य न समक्तनेवाले पुत्रको दृदय-हीन समक्ता था, लेकिन असली बात यह नहीं थी, मार्क्सका स्नेह छपने पिताके प्रति सदा रहा |

३. हेगेलका दर्शन

पिताकी मृत्यके बाद भी तीन वर्ष तक मार्क्सने अपने अध्ययनको बर्लिनमें जारी रखा। हेगेलके दर्शनने उसे अपनी स्रोर इतना खींचा था, कि वह उसके अध्ययनके हरेक साधनको ढूँढनेमे लगा रहता। यद्यपि हेगेलकी गद्दीपर कोई योग्य प्रोफेसर नहीं था, लेकिन वर्लिनमें तक्या हेगलियोका एक गरीह था, जिसने मार्क्सको चल्दी ही श्रपनी श्रोर खींच लिया। उस समय हेगेलका दर्शन प्रशियाका सरकारी दर्शन माना जाता था, श्रीर संस्कृति-मन्त्री श्रल्टेन-स्टाइन श्रीर उसके प्रीवी कौंसिलर (निजी पार्षद) योहानेज शुल्जे का उस श्रोर विशेष ध्यान था। हेगेल राज्यकी वही महिमा गाता था, श्रीर कन्फ्रशींकी वरह व्यक्ति के विरुद्ध राज्यको सर्वोपरि मानना उचित समभता था। ऐसे दार्शनिकका राज्य क्यों न ख्याल करता ? हेगेलने राजतन्त्रको शासनकी सबसे श्रन्छी व्यवस्था वतलाया था, श्रीर यह भी कहता था कि प्रभुताशाली वर्गको शासन करनेमें कुछ अप्रात्यन्त अधिकार मिलने चाहिये, तो भी राजाकी शक्तिको निर्वल नहीं करना चाहिये। वह श्रानकलके संविधानोंकी तरह जनताके प्रति-निधियोकी शासन-समामें बरूरत नहीं सममता था। यद्यपि राजनीतिमे इस तरह वह प्रतिक्रियावादी था, लेकिन जिस द्वन्द्वात्मक दर्शनको वह मानता था, उसकी धारा बिल्कुल दूसरी स्रोर लेका रही थी। हेगेलके दर्शनके स्रनुसार अस्ति (है,भाव) एक चीज है, जिसकी प्रतिद्वद्दी नास्ति है। इन दोनोके विरोधी समागमसे एक तीसरी उच्च धारणा मनति (होती है) निकलती है। उसके अनुसार हरेक चीज उसी एक ही समय "है" भी और "नहीं" भी है न्गोंकि हरेक चीज दीपककी लौकी तरह सदा परिवर्त्तनकी स्थितिमें सदा विकास श्रीर पतनकी स्थितिमें है। इस दर्शनके श्रानुसार विकासकी प्रक्रिया निम्नसे उच्चतर रूपमें निरन्तर परिवर्तित होती रहती है।

हेगेल यद्यपि राजसत्ताका पत्त्पाती था, लेकिन उसने धर्मके प्रति उस तरहके माव नहीं दिखलाये, इसीलिये प्रशियन शोषक धर्मको मुख्य स्थान देनेके लिये तैयार नहीं थे। हेगेलके दर्शनको राजनीतिमें लाकर उसे क्रांतिकारी विचारधाराका रूप देना मार्क्सका काम था, लेकिन उससे पहले ही इस दर्शनने धार्मिक च्लेनमें अपनी तोड़-फोड़की नीति शुरू करदी थी। हेगेलने घोषित किया था कि बाइबलकी कहानियोंको भी वैसी ही मानना चाहिये, जैसी दूसरी आम कहानियोंको। उनके लिये सच्चे ऐतिहासिक आधारकी आवश्यकता नहीं है। इस विचारधाराने डेविड स्ट्रास नामक एक तरुपाको ईसाकी जीवनी लिखनेकी प्रेरणा दी, जो १८३५ ई० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तकके निकलते ही वड़ी खलबली मच गई। उसने ईसाको ऐतिहासिक पुरुष मानते हुये ऐतिहासिक सामग्रीके तौरपर ही इंजीलके कथानकोंकी कसौटीपर रखा। स्ट्रासका इससे कोई भी राजनीतिक उद्देश्य नहीं था, लेकिन वाइबलके विश्वासपर उसे चोट अवश्य पहुँची।

पीढ़ियाँ वहीं नहीं रहना चाहती हैं, जहाँ पर उन्हें पूर्वजोंने ला पहुँचाया। स्ट्रासने यद्यपि अभी धार्मिक क्षेत्रमें ही हेगेल के दृष्टिकोणका उपयोग किया था, लेकिन अब उसे राजनीतिक चेत्रमें भी इस्तेमाल करनेवाले पैदा हो गये थे। तरुण हंगेलियोंने १८३८ ई० में अपने विचारोंके लिये "हालिशे या खुलेर" (हाल वर्ष-पत्र) निकाला। जर्मनीमें ऐसे वर्ष-पत्रोंके प्रकाशित करनेकी प्रणाली सी निकल पड़ी थी, जिनमें अनेक लेखोंको संग्रहीत कर दिया जाता था। उस वक्त वहाँ सेन्सरकी नादिरशाही चल रही थी, किन्तु वह मासिक-साप्ताहिक-दैनिक पत्रोंके लिये ही थी, इसलिये सेन्सरसे बचनेके लिये वर्ष-पत्र निकालने का रास्ता ढूँढ़ निकाला गया था। इस वर्ष पत्रमें साहित्य और दर्शन-सम्बन्धी लेख निकलते थे। पुराण हेगलीय पुराने बनकर अपना "बर्लिनर याखुखेर" निकालते थे, जिसके जवाबमें अर्नालड करने और फ्योडोर एखटेरसेयर ने तहण हेगलियों के इस नये वर्ष-पत्र को निकाला था। १८१५ ई० में—

हेगेलके बीते समय ही—जेनामें "बुरशेन्शाफ्ट" के नामसे बुर्जुश्रा जनतांत्रिक विद्यार्थियोका आन्दोलन शुरू हुआ था, जो बहुत कुछ अपने समकालीन रूसी दिसम्बरियो जैसी विचारधारा रखता था। रूगेने इस स्रान्दोलनमे भाग लिया या और परियामस्वरूप उसे छ वर्ष तक जेलकी हवा खानी पड़ी । आगे चलकर उसके रवैयेमे फर्क हुआ, जब कि व्याहके सम्बन्धते उसे हाले युनिवर्सिटी में प्रोफेसरका स्थान मिल गया। अत्रव वह प्रशियाकी राजव्यवस्था को स्वतंत्र श्लीर न्यायोचित वतलाया था। इससे मालूम है कि रूगेमे न स्वतंत्र विचारोंकी मावना थी, न क्रातिके लिये लगन । लेकिन, लिखनेकी उसमें शक्ति थी, श्रीर श्रपने पाठकोके लिये हर तरहकी सामग्री उपस्थित करने मे वह कुशल था, इसीलिये "हालिशे याखुखेर" धीरे-धीरे तक्या पाठक-मंडलीको ऋपनी छोर खींचनेमें सपल हुस्रा। रूगेके वर्षपत्रमे "ईसाकी जीविनी" के लेखक स्ट्रासकीकी लेखनी का चमत्कार देखनेमें अपने लगा। स्ट्रास बाइबलके निर्भान्त होनेकी कसी श्रालोचना कर रहा था। जब श्रिधिकारियोंका ध्यान इस श्रोर गया, तो रूरोने यह कहकर समाधान करना चाहा, कि हम "हेगलीय ईसाहयत श्रीर हेगलीय पशिया" का प्रचार करते हैं । श्रमी तक रूगेको सरकारकी श्रोरसे प्रोफेसर पदकी स्वीकृत नहीं मिली थी । मन्त्री श्राल्डेनस्टाइनको उसकी वातोपर निश्वास नहीं हुआ, इसलिये उसने स्वीकृत नहीं दी । इससे रूगेकी राजभक्ति पर चोट पहुँची, इसमे सन्देह नही।

काल मार्क्सके जीवनके तीन साल जाँलिनके जिन तरुए हेगलियों में बीते, वह सभी रुगेक वर्षमत्रमें लिखा करते थे। उनकी क्लवमें मुख्यतः अध्यापक, लेखक और युनिवर्धिटीके लेक्चर मेम्बर थे। घटेनबर्ग बाँलिनके सैनिक-विद्यालय में भूगोलका अध्यापक या, जिसका मार्क्सके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। उसे यह कहकर नौकरी से निकाल दिया गया था, कि एक दिन वह शराबमें बेहोश हो मोरीमे पडा था, लेकिन असली बात कुछ और ही थी। उसने पत्रों में कुछ ऐसे लेख लिखे थे, जिसे अधिकारी पसन्द नहीं करते थे। मार्क्स अभी बीस ही सालका था, जब कि वह तरुए हेगलीय क्लबका मेम्बर बना था, और आयुमें उससे बड़े कितने ही मेम्बर उसकी प्रतिमा और लेखनीका लोहा मानते

थे। एडवर्ड मेथेनका सम्बन्ध एक पत्रिकाके साथ था, जो ज्यादा दिन तक जी नहीं सकी। इसी पत्रिका में मार्क्सकी दो कवितायें छुपीं—मार्क्सकी कविताय्रों में सिर्फ यही दो प्रकाशित हो पाईं। क्लबके दो मुख्य मेम्बर थे म्युनिसिपल हाई स्कूलका ऋध्यापक कार्ल फीडिरिख कोप्पेन ग्रीर बर्लिन युनिवर्सिटीका लेक्चरर बूतो बावर। इन दोनोंका मार्क्सके ऊपर बहुत प्रमाव पड़ा ग्रीर दोनों दस वर्ष बड़े होने पर भी ऋपने तहरण मित्रकी प्रतिमाकी श्रेष्ठताको स्वीकार करते थे। मार्क्स वर्ष हीका था, कि १८४० ई० में कोपेनने प्रशियाके राजा महान फीडिरिककी जन्म-शताब्दीके अवसरपर जो लेख लिखा था, उसे "मेरे मित्र द्रीरके कार्ल मार्क्स" को समर्पित किया था, जिससे मालूम होगा, कि मार्क्सकी योग्यता ग्राव स्वीकार की जाने लगी थी।

४ कार्ल फीड्रिक कोपेन

कोपेन वड़ा मेधावी विद्वान था, इतिहासमें उसकी भारी गति थी। वर्षपत्र में छुपे उसके लेखोंको बड़ी चावसे पढ़ा जाता था। कोपेनने ही पहले पहले फांसकी महाकांतिके समयके शासनका ऐतिहासिक तौरसे विवेचन किया था। उसने अपने समसामयिक इतिहास-लेखकोंकी क्रांति-सम्बन्धी गलत धारणाओंका जबंदस्त खंडन किया, और कितने ही नये चेत्रों में ऐतिहासिक खोज की। कोपेन और वावरके घनिष्ठ सम्पर्कमें तरुण मार्क्सको आनेका मौका मिला था, जिससे मार्क्स के विचारोंके आगे बढ़नेमें सहायता मिली थी। इन दोनोंमें भी कोपेन अधिक गम्भीर लेखक और विचारक तथा अपने पथपर इद रहने वाला व्यक्ति था। कोपेनने नोर्डिक (जर्मन) जातियोंकी पौराणिक परम्पराओंकी एक बड़ी सुन्दर साहित्यिक भूमिका लिखी थी। बुद्धके ऊपर उसने जो ग्रंश लिखा था, उसकी शोपनहावेरने भी बड़ी प्रशंसा की थी, यद्यपि यह दार्शनिक पुराने हेगेलियोंके साथ कोई सहानुसूति न रखता था। कोपेनने १८ वीं शताब्दीके बुर्जुआ पुनरुज्जीवन-आन्दोलनको और आगे बढ़ाया। कगेनेर बावर, कोपेन और मार्क्सको इसी आन्दोलनकी उपज बतलाया था। कोपेनने १८ वीं शताब्दी के दर्शनके बारेमें की जाने वाली विरोधियोंको जवाब दिया। पुराण-हेगेलियोंकी

भी कोपेनने विचारोके एकान्तवासी तपस्वी, तर्कशास्त्रके पुराने ब्राह्मणोकी तरह श्रासन मारकर पुनः तीनो पवित्र वेदोको निरन्तर श्रीर एकमात्र जपते रहना, बन-तन मायाकी दुनियाको लोममरी आखोंचे देखना नतलाया था। उसने इन लोगोको दलदलका मेंदक बतलाया, ग्रीर यह भी कि यह ऐसे सरीस्प है जिनका न कोई धर्म है, न कोई पितृमूमि है, न कोई विचारधारा है, न आतमा है, न हृदय है। जो न सर्दी महस्स करते हैं न गर्मी, न सुख न दुख, न प्रेम न घृणा। उनके न ईरवर है न शैतान। ये अमागे प्राणी नर्कके फाटकोकी चारों तरफ मॅडरा रहे हैं, श्रीर श्रत्यन्त नीच होने के कारण उन्हें भीतर जानेकी इजाजत नहीं। फ्रीडरिक महान् जर्मनीका देवता बन गया था, क्योंकि उसने जर्मन सैनिक-शक्तिको सगठित श्रीर सुशिच्तित करनेमें बड़ा काम किया था। कोपेनने उसका "वडा दार्शनिक" के तौरपर ही सन्मान किया। यही नहीं बल्कि उसने यह भी कहा काटसे उलटे हो फ्रीडरिक महान्ने दो प्रकारके तकों को स्वीकार नहीं किया: एक सैद्धान्तिक (परमार्थ) जो सन्देहो, विरोधों तथा प्रतिषोधोंको बिलकुल ईमानदारीके साथ श्रीर भृष्टतापूर्वक सामने लाता है श्रीर दूसरा व्यावहारिक (सावृतिक), जो कि दूसरेके किये हुये पापोकी लीपा-पोती करता है. साथ हो राजा (फ्रीडरिक) दार्शनिक (काट) से मनु पीछे नहीं था।"

कोपेनकी श्राधिक रियति बहुत खराव थी। बर्लिनके जीवन मे वैसे भी कोई श्राकर्षण नहीं था। बर्लिनमे उस शक्तिशाली मेरुदंडका श्रमाव या, जो कि उद्योग-धघोके रूपमें राइनलैंडमे पाया जाता था। वस्तुतः वर्लिन फौजी छावनीवाले एक शहरसे बढकर नहीं था।

मार्क्स कोपेनके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखता था, यह बतला चुके हैं। इसमें शक नहीं, कि आरिभक विचारों निर्माण और लेखन-शैलीमें भी कोपेन से उसे सहायता मिली थी। यद्यपि आगे चलकर दोनों के रास्ते दो हो गये, लेकिन वह सदा आपसमें मित्र बने रहे। बीस वर्ष बाद जब मार्क्स वर्लिन गया, तो उसने कोपेनको "सदा जैसा" पाया। दोनो एक दूसरेसे मिलकर बहुत मसन

हुये स्त्रीर स्त्राप्ती मेल-मुलाकातमें घंटों बिताये। इसके थोड़े ही दिनों बाद १८६३ ई० में कोपनकी मृत्यु हो गई।

४. त्रुतो बाबर

कोपेन कई वातोंमें विशिष्टता रखता था, लेकिन वर्लिनके तरुण हेगलियोंका वास्तविक नेता बावरको समभा जाता था। वावरपर राज्यके संस्कृति-मंत्री श्रल्टेन्सटा की कृपा थी, क्योंकि उसे वह भारी मेधावी तरुण समस्तता था। बूनो बावर त्रावस्वादी नहीं सिद्ध हुत्रा, यद्यपि स्ट्रासने वड़े सम्बन्धोंके कारण इसकी भविष्यद्वाणी की थी। १८३६ ई० के ग्रीष्ममें वावर विरोधी हो गया, जन्निक हेंग्स्टेनवर्गने वाइवलके कठोर ऋौर कोधी यहेवाको इसाइयतका भगनान् वनाना चाहा । ऋल्ट्रन्सटाइनने उसी सालकी शारदमें उसे बोन युनिवर्सिटीमें इस ख्यालसे भेज दिया, कि वर्षके अन्त तक उसको लेक्चररसे प्रोफेसर बना दिया जायगा । लेकिन राज्यका क्रुयापात्र रहनेके लिए उसके पास हृदय श्रीर योग्यता नहीं थी। स्ट्रासने ईसाकी जीवनीमें इंजीलकी कहानियोंमें इतिहास दुँढ़नेकी कोशिशको थी, लेकिन वावरने स्पष्ट कह दिया कि इंजीलकी कहानीमें इति-हासका एक करा भी नहीं है, यह सारी कपोल-कल्पना है। इसाई धर्म ग्रीस-रोमके पुराने संसारपर विश्वधर्मके तौरपर लादा नहीं गया, बल्कि वह दुनियाकी एक स्वामाविक उपज थी । जिस समय इस तरहके विचार बावरके दिमागमें परिपक्च हो रहे थे, उसी समय उससे नौ वर्ष छोटे कार्ल मार्क्स श्रीर वावरका त्ररावरका साथ था, वे च्एा भरके लिए भी एक दूसरेसे। खलग न होनेवाले साथी थे। जोन जानेके बाद बावरकी यह कोशिश थी कि मार्क्स भी वहीं ह्या जाये। बोनका बौद्धिक जीवन उसे निम्न श्रेणीका मालूम होता था, इसलिए वह मार्क्सको बुलाना चाहता था। बाबरके पत्रोंसे मालूम होता है, कि वह काफी क्रान्तिकारी था, लेकिन उसके दिमागमें सदा क्रान्तिसे मतलव था दार्शनिक क्रान्तिका । प्रशियांके होहेंनजोलेर्न राजवंशके प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उसके ख्यालसे इस वंशके उदारमना राजाग्रोंने चार शताब्दियों तक धर्म ग्रौर राज्यके सम्बन्धांको ठीक करनेका प्रयत्न किया। इस चापलूसीका यही फायदा

हुआ, कि प्रशियांके नये राजा वावरके संरद्धक अल्टेन्स्टा इनको हटाकर उसकी जगह आइखहोर्नको राज्य-मंत्री बनाया, जो कि विज्ञान और दर्शन किसी चेत्रमें मी स्वतन्त्रताकी गन्धको वर्दाश्त करनेके लिए तैयार नहीं था। यद्यपि बावर कोपेनसे कहीं अधिक हैगेलीय विनारोका और दर्शनका पडित था, लेकिन उसमें कोपेन जैसी इटता नहीं थी।

ग्रीक दार्शनिक सम्प्रदाय ग्रीक जीवनके राजनीतिक विश्वखलनसे पैदा हुए । सन्देहवादी, भोगवादी एपिकुरीय तथा संयमवादी स्तोइक उसीसे अस्तित्वमें श्राये, बिन्होंने इसाई धर्मके लिये रास्ता साफ किया । ये पीछेके दार्शनिक स्नातीन श्रीर श्ररिस्तातिलके विचारों श्रीर ज्ञानकी गम्भीरता तक नहीं पहुँच सके थे । हेगे-लने उनको बढी तुन्छ दिस्टिसे देखते हुये उपेन्त्रित कर दिया था। इन ग्रीक दार्श-निकोंकी कोशिश थी कि व्यक्तिको उसके वाह्य परिस्थिति श्रीर वातावरगासे अलग करके अन्तर्मुखी कर दिया जाय, जहाँपर कि उनके विचारोके अनुसार शान्तिमे वास्तविक सुख मौजूद है-ऐसी शान्ति, निसका बाल भी वॉका नहीं हो सकता, चाहे सारी बाह्य दुनियामें ध्वंस लीला क्यो न मची हो। यह श्रात्मचेतन, स्वविज्ञानका ग्रीक दर्शन था, जो कि इसाई धर्मके स्वीकार करनेसे पहले रोमके उच्च वर्गमें सर्वत्र सम्मानित था। ग्रीक दर्शनके इस सिद्धान्त (श्रात्मचेतना) ने नातर, कोपेन श्रौर तरुण मार्क्सको श्रपनी श्रोर बहुन श्राकृष्ट किया था। पुराने प्रीक दर्शन (श्रात्मचेतना) ने किसी ऐसे प्रतिभाशाली दार्शनिकको नही पैदा किया, जैसे कि उसके पुराने स्वामाविक दर्शनने देमोकिछ श्रीर हेराक्लित श्रथवा उनसे ऋछ पीछेके स्नातीन श्ररिस्तातिल नैसोको पैदा करके किया था। तो भी इस ब्रात्मचेतना-दर्शनका एक महत्व भी था। इसने जातीय (हेलनिक) श्रीर सामाजिक (दासता-सम्बन्धी) उन सीमाश्रोको तोड दिया, जिनके तोडनेका ख्याल मी आतोन श्रीर अरिस्तातिल नहा कर सकते थे। इस कामने पुराख ईसाई धर्मको आगे बढानेका मौका दिया, जो कि उस समय दलितो श्रीर उत्पीडितोका धर्म था, वह दासो श्रीर कमकरोको श्रपनी श्रीर खींच रहा था। इसमे शक नहीं, जब रोमके उच्च वर्गने भी ईसाई धर्मको स्वीकार कर लिया, तो उसका वह पुराना रूप जाता रहा, श्रीर वह फिर उन्हीं

पुरानी सीमाओं को पुनः स्थापित करनेमें सहायक होने लगा। फिर सामन्त ऐसे धर्मके लिए धर्म-युद्धोंमें तत्परता क्यों न दिखाते १ युरोपके सभी देशोंमें कभीला-शाहीके अनुकूल पुराने धर्मोंको बलपूर्वक नष्ट करके ईसाई धर्मको फैलानेकी क्यों न कोशिश करते १ ईसाइयत इस तरह मारी बन्धनका कारण बन गई। फिर १८वीं सदीके सामन्त-विरोधी बृज्वी पुनरुजीवन-आन्दोलनने ग्रीक दर्शनकी आत्मचेतनाको फिरसे उज्जीवित करना चाहा, जिसमें धर्मके प्रति सन्देहवादियोंके सन्देह, एपिकुरियोंकी वृणाको अपनाया और स्तोइक लोगोंसे गणतन्त्री मावनायें उधार ली गई थीं।

बावर फीडिएक महान्को पुनरुजीवन-ग्रान्दोलनके बड़े नायकोंमेंसे मानता था। जिसमें कोपेन भी उससे सहमत था। मार्क्स ग्रपने दोनों पुराने साथियोंके विचारोंसे इतने ग्रंशमें सहमत था, कि ये तीनों दर्शन ग्रीक जीवनके लिए गम्भीर महत्त्व रखते थे। जो समस्या कोपेन ग्रीर बावरके सामने थी, वह मार्क्स सामने भी ग्राई, लेकिन उसने इसका जवाव दूसरी ही तरहसे दिया। वह मानवी ग्रात्मचेतनाको ही परम भगवान कहता, जिसके सामने यह किसी भगवान्को सहन करनेके लिए तैयार नहीं था, चाहे वह धर्मके विकृतकारी दर्पण द्वारा उपस्थित किया जाता, या दार्शनिक श्रनुभृतिके तौरपर।

त्रपने पिताके जीवनमें ही मार्क्सने निश्चय कर लिया था, कि अपना भावी जीवन स्वतन्त्रतापूर्वक श्रध्ययन-श्रध्यापनमें विताऊँगा। उस समय तक युनिवर्सिटी श्रीर शिद्धा-संस्थान ही ऐसे स्थान थे, जहाँ दर्शन श्रीर साइन्सके सम्बन्धमें स्वतन्त्र विचार रखनेवालोंके लिए स्थान था। १८३६ ई० के शरदमें मार्क्सको वर्लिनमें पढ़ते श्राठ सत्र हो चुके थे। उसे श्रन्तिम परीचा देकर छुट्टी लेनेकी जल्दी नहीं थी। जहाँ तक ज्ञानार्जनका सम्बन्ध था, वह श्रपने प्रयत्नों द्वारा काफी श्रागे बढ़ रहा था। मार्क्समें जीवनके श्रन्तिम च्य्यों तक ज्ञानकी पिपासा श्रीर विद्याके प्रति श्रसाधारण प्रेम था। उसने वर्लिनके जीवनमें ग्रीक दर्शनका बहुत गहराई तक प्रवेश करके सांगोपांग श्रध्ययन किया था, श्रीर श्रात्मचेतनाके तीनों दार्शनिक सम्प्रदायोंको खूब पढ़ा। श्रपनी किसी करननाकों भी वह तुरन्त माननेके लिए तैयार नहीं था, श्रीर श्रात्मश्रालोचनाकी तो सीमा

नहीं थी । जैसे-जैसे विद्याके स्त्रोको पकडते वह श्रीर गहराईमें उतरता जाता था, वैसे ही वैसे नवीन जिज्ञासा उसके हृदयको श्रिधकृत करती जाती थी ।

वावरके बोन चले जाने श्रीर उसके आग्रहपर मार्क्सको भी वहाँ जानेकी इच्छा हुई । लेकिन जल्दी ही मालूम हो गया कि प्रशियामे अन कहीं भी विचार स्वातत्र्यके लिये जगह नहीं है। मई १८४० में ग्रल्टेन्सटाइन मर गया, संस्कृति-मत्रालयको प्रीवी-कौरिलर लाडेनवर्गने सँभाला श्रीर श्रपने पुराने श्रध्यच्नी भावनात्र्योंका काफी ख्याल रखना चाहा। वावरको उसने स्थायी पदपर निद्कतः करनेके लिये लिख भी दिया, लेकिन थोडे ही समय वाद श्राइलहोर्न संस्कृति-मंत्री बना दिया गया। बोनके धर्म-विद्या-विभागने बावरके प्रोफेसरके तौरपर नियुक्तिको माननेसे इन्कार कर दिया। वावर शरद की छुट्टियोमे वर्लिन आया था। वह बोन लौटनेको सोचही रहा था, कि उसको इस घटनाकी खबर लगी। वह निराश न हो इस त्राशासे लड़ने का मन करके लौटा, कि मार्क्सके भी जल्दी श्राजानेसे हम दोनो मिलकर कुछ कर सकेंगे। लेकिन यह श्राशा सफल नहीं हुई। मार्क्स समभता था, कि वावरके मित्र श्रीर सहायक होनेके कारण बोनकी गुट-बन्दी मुक्ते पैर जमाने नहीं देगी. श्रीर जहाँ तक ऊपरका सम्बन्ध था, वह श्राइ-खहान या लाडैनवर्गकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये अपनेको अयोग्य समस्ता था। जहाँ मी उदार विचारोंकी सम्मावना थी, वहाँ आ्राइखहोर्न रुदिवादियोंकी नियुक्ति करता जा रहा था। शेलिंगको उसने वर्लिनका रैक्टर (कुलपित)-नियुक्त किया, जोकि बुद्धापेमे श्रलहाम (मगवान्की श्रोरसे दिये जानेवाले ज्ञान) पर विश्वास करने लगा था, श्रीर स्ट्रासको हाल युनिवर्सिटीमे प्रोफेसर बनानेकी भी कोशिशकी।

ऐसी स्थितिमें मार्क्स जैसे तरुण हेगेलीयको क्या आशा हो सकती थी। उसे यह भी विश्वास नही था, कि बर्लिन युनिवर्सिटी उसे परीचामे सफल होने देगी, इसीलिये बर्लिनका ख्याल छोडकर उसने किसी दूसरी छोटी युनिवर्सिटीमे पी० एच० डी० (दर्शनाचार्य) का निवन्ध पेश करनेका निश्चय किया। अभी मी उसके हृदयमे प्रोफेसर वननेकी आकाचा थी, इसीलिये वावरके साथ मिल-

कर पत्रिका निकालनेका ख्याल छोड़ दिया, क्योंकि पत्रिकामें अपने उम्र विचारोंके , कारण प्रकट हो जानेके बाद उसे प्रोफेसरी नहीं मिल सकती थी।

६. पी० एच० डी० का निबन्ध (१८४१ ई०)

मार्क्सने अपना पी० एच० डी० का निबन्ध जैना युनिवर्सिटीमें दिया, जिसपर १५ अप्रैल (१८४१ ई०) को उसे डाक्टरकी उपाधि मिली। निबन्धका विषय था दैमोकितीय और एपीकुरीय स्वामाविक दर्शनके भेद। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि यह निबन्ध केवल डिग्रीके लिये अध्ययनका परिणाम नहीं था, बिक इसके लिये जो परिश्रम मार्क्सने किया था, वह स्वयं उसके तीत्र जिज्ञासाका फल था और उसके द्वारा स्वयं उसके भीतर परिवर्चन होता रहा था। ग्रीक दर्शनके गंभीर अध्ययनकी यह भूमिका मात्र थी। मार्क्सको अपिक दर्शन और उसके एपिकुरीय, स्तोइक तथा संदेहवादी दर्शनोंके सम्बन्धके चारेमें विस्तृत ग्रंथ लिखने की इच्छा थी। इस निबन्धमें उसने पुगण कल्पना मूलक दर्शनके सम्बन्धमें सिर्फ एक ही उदाहरणका आधार लिया था।

मार्क्सके इस निबन्धकी कुछ वातें निम्न प्रकार हैं :

पुराने ग्रीक स्वामाविक दार्शनिकोंमें दैमोक्षेत्रही ऐसा था, जो कि मौतिकवादसे बहुत घनिष्ठ समीपता रखता था। उसका कहना था ग्रामावसे कोई वरत
नहीं निकल सकती (न मावो विद्यतेऽमायात्) ग्रीर किसी वरत् (माव) का
ध्वंस भी नहीं हो सकता। दुनियाके सारे परिवर्त्तन भिन्न-भिन्न परमासुन्नोंके
संयोग ग्रीर विभाग मात्र हैं। कोई वस्तु या घटना ग्राकस्मात् नहीं पैदा होती,
हरेक घटना किसी कारस्य या ग्रावश्यकतासे होती है। उसके विचारसे परमासु
ग्रीर शून्य ग्राकाश छोड़कर दुनियामें ग्रीर कोई चीज ग्रास्तित्व नहीं रखती, वह
केवल कल्पना मात्र है। परमासु ग्रासंख्य ग्रीर ग्रानन्त रूपमें ग्रानन्त प्रकारके
हैं। वह ग्रानन्त ग्राकाशमें निरन्तर गिरते रहते हैं। बड़े परमासुके पतनका
चेग ग्रापेचाइत ग्राधिक होता है, इसिलये वह गिरते वक्त ग्रापने ग्रापेचाइत
कम गित रखनेवाले छोटे परमासुसे टकराते हैं। इस संयोगके कारस्य जो मौतिक
गाति ग्रीर चक्कर शुरू होता है, उसीसे संसारकी सुष्टि ग्रारम्भ होती है। पर-

माणुश्रोंके इस तरहके सयोग-वियोगके श्रसंख्य जगत् एक साथ या वारी-त्रारीसे चनते श्रीर लुप्त होते हैं।

(१) एपिकुर (३४१-२७० ई० पू०)---एपिकुरुने देमोकित्के परमाखु-वादी दर्शनको लेकर उसमें थोडासा परिवर्त्तन किया। खास तौरका परिवर्त्तन यही था, कि एपिकुर परमाणुत्रोंके पतनको सीधी रेखामे न मान चक्करदार मानता था। एपिकुरी-दर्शन पुराने जगत्का वडी ही उन्नत मौतिकवाद था, जिसकी रचा करके उसे लुकरेतियुकी कविता दे रेक्म नतुराने हमारे पास पहुँ-चाया । कारने एपिकुरके परमासुत्र्योंकी कल्पनाका उपहास किया, लेकिन तत्र भी उसने उसे ऐन्द्रियक दार्शनिकोंमें उसी तरह सर्वोत्तम माना, जैसेकि नौद्धिक दार्श-निकोंमें प्लातोनको । इस प्रकार देमोक्रेत् श्रीर एपिकुर दो महान् भौतिकवाटी दार्शनिक थे। मार्क्सने एपिकुक्की बातोंकी श्रालोचना करते हुये भी इस वातका उल्लेख किया, कि एपिकुर केवल इन्द्रियोंके प्रत्यक्तको ही प्रभाग मानता था ! देमोक्रितुके लिये जो लच्य या, वह एपिकुरुके लच्यका एक साघन मात्र था। एपिकुर प्रकृतिका बॉध प्राप्त करना नहीं चाहता था, बल्कि प्रकृतिके सम्बन्धमें ऐसे दृष्टिको एको खोजना चाहता था, जोकि उसके दर्शनका समर्थन करे। यह बतला चुके हैं, कि प्लातोनके बादके ग्रीसमें तीनोही प्रधान दार्शनिक सम्प्रदाय श्रात्मचेतनावादी थे। हेगेलके श्रनुसार एपिक्र्रीय दर्शन श्रात्माकी वैयक्तिक चैतनाका निराकार सार था। स्तोइक दर्शन उसीका निराकार समध्यात चेतना हैं। दोनों ही एकागी (एकात) कल्पना मात्र हैं, जिनके इसी एकातवादके कारण संदेहवादी उनके विरुद्ध थे।

यह बहुत कुछ भारतीय दर्शनमे सौत्रान्तिकोंके ब्रह्मार्थवाद, योगाचारोंके विज्ञानवाद पर नागार्जुनके शून्यवादकी तरह दो ब्रान्तों श्रीर दोनोंपर सन्देह उत्पादन करते हुये तीसरे वादकी सृष्टि थी।

(२) स्तोइक-दर्शन—एलियातिक जैनो (४९०-४३० ई० पू०) श्रीर साइप्रेसी (कुप्री) जैनो (३०४ ई० पू०)। इस दर्शनके बडे-बड़े श्राचार्य थे। स्तौश्रा पौइक्लि (नुकीली ग्रयारीमे) द्वितीय जैनोने श्रपना विद्यालय स्थापित किया था, इसीलिये इस सम्प्रदायका नाम स्तौइक पढा। यद्यपि एपिकुरीय श्रीर स्तोइक दोनोंका लच्च एक था, लेकिन जहाँ एपिकुरीय परमाग्रुवादी श्रीर व्यक्ति वादींथे, वहाँ स्तोइक सामान्य (श्रवयवोंको) सर्वोंपरि मानते हुए । कहते थे : श्रवयव श्रवयवीके सर्वथा श्रर्थान है । इस प्रकार उनका दर्शन नियति-भाग्यवादकी श्रोर ले जाता था । राजनीतिक तौरसे वह गण्तंत्रके पच्पाती थे श्रीर धार्मिक तौरसे पुराने मिथ्या-विश्वातों श्रीर रहस्यवादसे श्रपनेको मुक्त नहीं कर सके थे । वह दार्शनिक हेराक्तितु (५३५-४७५ ई० प्०)के दर्शनको श्रपनाते थे, जोकि बुद्धका समकालीन श्रीरहीं विचारोंमें कितनीही समानता रखता था । जैसे एपिकुरीय देमोकित्का श्रन्धा-धुन्ध श्रनुगमन करनेके लिये तैयार नहीं थे, उसी तरह स्तोइक भी हैराक्तित्का श्रम्धा-धुन्ध श्रनुगमन करनेके लिये तैयार नहीं थे, उसी तरह स्तोइक भी हैराक्तित्क पृथक् होनेके सिद्धान्तके कारण एपिकुरीय दर्शन नियतिवादसे मुक्त हो प्रत्येक व्यक्तिके इच्छा-स्वातंत्र्यको मानता था श्रीर दार्शनिक तौरसे प्रत्येक व्यक्तिको धैर्य-धारी दुखिया स्वीकार करता था । श्रपने ऊरर शासन करनेवाले श्रिधकारियोंका श्रनुत्वरण करो, इसको कहते हुये भी एपिकुकने धर्मके वन्धनींसे स्वतंत्र होनेकी घोपणा की थी ।

मार्क्सने इसके बाद दोनों प्राकृतिक दर्शनोंके भेदकी व्याख्याकी। देमीकित् केवल परमाणुश्रोंसे भौतिक श्रस्तित्व तकही श्रपनेको सीमित रखना चाहता था, लेकिन एपिकुर उससे श्रागे बढ़कर कल्पना, श्राकृति तथा उपादानसामग्री, सार श्रीर श्रास्तित्वके तौरपर भी परमाणुपर विचार करता था। एपिकुर बाह्य संसारका केवल मौतिक श्राधार ही परमाणुको नहीं मानता था, बल्कि
यह भी कि परमाणु पृथक्भृत व्यक्तिका प्रतीक, तथा निराकार व्यक्ति (श्रात्मचेतना)का साकार नियम भी है। देमोक्रेत्ने परमाणुके सरल रेखामें नीचे
पतनसे सभी घटनाश्रोंका होना सिद्ध किया, जबिक एपिकुरुने परमाणुश्रोंको
सरल रेखा छोड़ चक्कर काटते गिरते हुये मानकर नियतिवाद् से मुक्ति प्राप्तिको
जैसाकि एपिकुरीय दर्शनके सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार जुकरेतियूने बतलाया है: यदि
परमाणुश्रोंकी चक्करदार गति न होती, तो विचार-स्वातंत्र्यकी कहाँ गुंबाइश
रहती १ स्टिट श्रीर कल्पना-सम्बन्धी परमाणुके विचारोंके बीचमें जो विरोध
देखा जाता है, वह सारे एपिकुरीय दर्शनमें मिलता है। तोभी एपिकुरीय प्राकृ

तिक दर्शनने मौतिक जडताको त्याग कर दिया। एपिकुक्को मार्क्सने "सर्वश्रेष्ठ श्रीक विचारक माना है, जिसने धर्मकी स्वेच्छाचारितासे मनुष्यको मुक्त करनेका प्रयत्न किया। मार्क्सने एपिकुरीय मूल विचारधाराको उससे भी श्रधिक श्रागे श्रीर सफ्टताके साथ विकसित किया, जितना कि स्वयं एपिकुक्ते किया था। हेगेलने एपिकुरीय दर्शनको सिद्धान्तके तौरपर विचारहीन वतलाया था: इसमें शक नहीं कि एपिकुक् स्वनिर्मित पुक्त था, वह अपने विचारोको जनसाधारस्यकी मापामें रखना चाहता था। मार्क्सने एपिकुक्ते दर्शनको इतनी हल्की नजरसे नहीं देखा, बल्कि उसने कहा, कि एपिकुक् श्रपने द्वंद्वादी शैलीको बड़े श्रिषकारपूर्वक इस्तेमाल करता है। हेगेलके शिष्य मार्क्सकी भाषा इस निवन्धमें बडी परिपुष्ट मालूम होती है। वह द्वद्वादी शैलीको श्रपनी इस कृतिमे वड़े श्रिषकारपूर्वक इस्तेमाल करता है, श्रीर जहाँ तक इसका सम्बन्ध है, हेगेलके दूसरे श्रनुयायियोसे वह कहीं बढ़कर श्रपने गुक्की नपी-तुली श्रीर मावां भरी भाषाका उत्योग करता है।

इस समय (१८४६ ई०) तक यद्यपि मार्क्स स्वतन्त्र विचारकके तौरपर कुछ त्रागे बद्धा था लेकिन हेगेलीय दर्शनका विज्ञानवादी आधार अब भी उस-पर पूरा छाया हुआ था, जिसका एक परिणाम था देमोक्रित्के विपत्तमे उसकी सम्मिति। परमाणुवादको उसने बाहरी तजर्वेका परिणाम बतलाकर एपिकुरीयकी प्रशास करते हुये उसे परमाणुवादके साइन्सका संस्थापक माना। यद्यपि वास्त-विकता यह है, कि परमाणुवादके प्रथम प्रतिष्ठापक देमोक्रित था, निक एपिकुर । हेगेलके विज्ञानवादका प्रमावही उससे ऐसा करा रहा था। मार्क्सके अपने विचार थे: जीवनका मतलब कर्म करना और कर्म करनेका मतलब सर्घर्ष है। समर्थ करनेके लिये शक्ति देनेवाले तत्वकी आवश्यकता थी, जिसे मार्क्स एपिकुरके दर्शनमें पा रहा था। उसने धर्मके बन्धनोको तोडनेके लिये विद्रोह करनेका प्रचार किया: न विजलीकी कडक-चमकसे न देवताओके मयसे, न द्यौके नज्रोंकी गरगराहरसे मयमीत हो।

अपने निवन्धके प्राक्कथनको जिसेकि मार्क्स अपने निवन्धके साथ प्रका-

शित करना चाहता था—उसने श्रपने समुरको बड़े भावकतापूर्ण शब्दोंमें समर्पित किया था।

मार्क्सके इस निबन्धकी श्रन्तिम पंक्तियों से उसके भविष्यके कर्मच्लेतकी भी कुछ-कुछ भलक मालूम होती है। उसने लिखा थाः जब तक कि विश्वविषयी श्रीर श्रपराजित हृदयमें एक भी बूँद हरकत कर रही है, तब तक बह एपिकुरुके इन शब्दों से शत्रुश्चोंकी सदा श्रवहेलना करता रहेगाः 'वह श्रनीश्वरवादी नहीं है, जो कि पामर जन-समूहके देवताश्रोंकी श्रवमानना करता है, बल्कि श्रनीश्वरवादी वह है, जो कि जन-समूहके देवताश्रोंके सम्बन्धी रायोंको स्वीकार करता है। प्रोमेथियोंके कथनानुसार: सीधा सत्य यह है, कि मैं सभी देवताश्रोंके प्रति घृणा रखता हूँ। तथा प्रोमेथियोंने देवताश्रोंके चाकर हेरमीको जैसा उत्तर दिया था, उन्हीं शब्दोंमें:

निश्चित रहो, तुम्हारी निकृष्ट दासतासे, मैं त्रपने दुःखोंको कमी नहीं बदलुँगा।

प्रोमेथियो दार्शनिक जगतका सर्वश्रेष्ठ संत श्रीर शहीद है। मार्क्स इन विचारोंको पढ़कर उसके मित्र बावरको भी बहुत भय लगने खगा। इस द्वितीय प्रोमेथियोके लिये भला श्रव प्रशिया-राज्यकी युनिवर्सिटीमें जगह कैसे मिल सकती थी १ प्रशियनशाही तो हर जगह विचार-स्वातंत्र्यको खतम कर रही थी। १८४१ ई० के वसंतमें श्राइकहोर्नने बूनो बावरके विरुद्ध बोनके धर्म-विद्याविभागको इसलिये निर्लाज्जतापूर्वक खड़ा किया, कि बावरने इंजीलकी श्रालोचना की थी। प्रशियाका नया राजा विल्हेल्म श्रपनेको स्वतंत्र प्रेस श्रीर स्वतंत्र विचारोंका समर्थक कहता था। उसने सेन्सर करनेमें दिलाई करनेका श्रादेश निकाला। लेकिन यह विल्कुल दिखावेकी बात मालूम हुई, जब कि १८४१ ई० के ग्रीष्ममें रूगेको श्रपनी पत्रिकाको सेन्सर करानेका हुकुम मिला। इससे बचनेके लिये रूगेको १ जुलाई १८४१ ई० से श्रपनी पत्रिका ख्वारो याखुखेर (जर्मन वर्षपत्र) को डेस्डेनसे निकालना पड़ा। इस कड़ाईने मार्क्स श्रीर बावरको बतला दिया, कि श्रपना पत्र निकालनेकी जगह यही बेहतर है, कि रूगेके पत्रोंमें ही लेख दिया जाय।

यद्यपि डाक्टरका निबन्ध युनिवर्सिटीमें स्वीकृत हो गया, लेनिन मार्क्सने शायद प्रेसकी इन्ही कठिनाइयोंके कारण उसे प्रकाशित करनेका ख्याल छोड़ दिया, या कम से कम उसकी जल्दी नहीं समस्की, श्रौर श्रागेके कामोकी तत्परताने फिर उसे वैसा श्रवसर पानेका मौका नहीं दिया।

इसी साजके नवम्बरमे वीगंडने एपिकुक्ही नहीं हेगेलको भी पक्का अनीरवर-वादी वतलाते हुये एक पुस्तक नास्तिक, खीस्ट-विरोधी हेगेलके विरुद्ध न्यायका अन्तिम ट्रम्प प्रकाशित किया। एक गुप्त लेखकके तौरपर वीगंडने अन्तिम ट्रम्प मे त्रपनेको पक्का घर्मविश्वाधी दिखलाते हुये हेगेलकी नास्तिकतापर बाइबलकी मविष्यद्वाणियोंको उद्धर करते हुये अफसोस प्रकट किया। भाषा और शैली इतनी सुन्दर थी, ाक एक वार पठित जनतामें इस पुस्तिकाने वढी सन-सनी फैला दी, और कितने ही धर्मविश्वासी तो सचसुच घोखा खा गये । प्रका-शक वीगेड या, लेकिन पुस्तिकाका गुमनाम लेखक ब्रूनो बावर था। देर नहीं लगी. ऋन्तिम रम्प के खिलाफ निषेधाज्ञा निकल गई | वीगेडके लिये उसका श्रीर प्रकाशित करना कठिन हो गया। इसी समय मार्क्स बीमार हो गया, श्रीर उसके ससर लुडविंग फान वेस्ट फालेनकी भी तीन महीना बीमार रहकर ३ मार्च १८४२ को मृत्यु हो गई। ऐसी स्थितिमे मार्क्स कुछ नहीं कर सका। १० फरवरीको उसने एक मामूली लेख सबसे नई राजाज्ञाके बारेमे लिखा। यद्यपि यह लेख सेन्सरकी कठिनाईको हलका करनेके ख्यालसे लिखा गया था. श्रीर उसका उस समय कोई महत्व नहो समका गया, लेकिन वस्तुत: इसी लेखके द्वारा मार्क्सने राजनीतिक जीवनमे प्रवेश किया। मार्क्सने उस लेखके साथकी चिद्रीमे लिखा था, यदि सेन्सर मेरे लेखका सेन्स्युर (खडन) न करे तो इस लेखको जितना जर्ल्या हो सके छाप दे। मार्क्सका अनुमान ठीक निकला। २५ फरवरीको रूगेने लिखा कि ड्वार्श याखुखेरको सेन्सरके कारण हदसे श्रिषिक कठिनाई हो रही है, इसलिये तुम्हारे लेखका छपना असम्भव है। रूगेने यह भी लिखा, कि सेन्सरने जिस सामग्रीको रद्द कर दिया है, उसमेसे कई युन्दर चीजे मैंने जमा कर ली हैं, जिन्हें अनेक्डोटा फिलोसोफिका दार्शनिक उपाख्यानके नामसे देशसे बाहर स्त्रीजलैंडमे छपवाना चाहता हूँ। मार्क्सने

श्रपने ५ मार्चके पत्रमें इसका बड़े उत्साहके साथ स्वागत किया, क्योंकि इसी समय खिस्तानी कलाके ऊपर लिखे गये उसके निक्यके छुपनेमें सक्सनी प्रदेशके सेन्सरने इकावट डाल दी थी। यह लेख 'श्रन्तिम ट्रम्प' के द्वितीय मागके तौरपर निकाला जानेवाला था। मार्क्सने लेखको फिर दोहराया श्रीर उसे हेगेलीय प्राकृतिक नियमकी श्रालोचनाके साथ श्रनेक्डोटामें छुप देनेके लिये लिखा। हेगेलने प्राकृतिक नियम कहकर राजतन्त्रका समर्थन किया था। उसीका खंडन करते मार्क्सने संवैधानिक राजतंत्रपर श्राच्चेप करते हुये लिखा था, यह पूर्णत्या परस्पर-विरोधी श्रीर वर्णसंकरी विचार-धारा है। रूगेने उसे लेना स्वीकार किया था, लेकिन सेन्सर-सम्बन्धी लेखको छोड़कर दूसरा उसे कोई नहीं मिला।

२० मार्चको मार्क्सने वतलाया कि मैं श्रपने क्रिस्तानी-कला-सम्बन्धी निवंधको "ग्रन्तिम ट्रम्" की शैली, तथा हेगेलीय परिभाषात्रोंकी वेकारकी सीमात्रोंसे युक्त करके अधिक स्वतन्त्र श्रीर व्यापक चाहता हूँ। इस कामको उसने श्राप्रैलके मध्य तक खतम कर देनेका वचन दे दिया था। २७ ऋप्रैलको निवन्ध प्रायः समास -कर चुका था, श्रीर उसने रूगेसे कुछ दिन श्रीर ठहरनेकी प्रार्थना करते, यह भी कहा था, कि मैं उसका संदोप ही भेज सकुँगा, क्योंकि अब निबन्ध बढ़ते-बढ़ते एक पुस्तकका रूप ले चुका है। २१ अबदूबरको रूगेने सूचित किया था, कि -ग्रनेक्डोटा तैयार हो गया है, ग्रीर यह जूरिच (स्वीजलैंडमें) 'लितेरारिश्चेस्क कोत्तोर' द्वारा प्रकाशित किया जायगा। उसने अभी भी मार्क्सके निबन्धके लिए जगह छोड़ रक्खी थी; लेकिन वह यह भी जानता था, कि मार्क्स जब किसी काममें लग जाता है, तो उसे आधेपर छोड़ना नहीं चाहता । रूगे मार्क्सरे सोलह वर्ष बड़ा था, लेकिन वह बाबर और कोपेनकी तरह ही उंसकी प्रतिमा न्ग्रीर योग्यताका जबर्दस्त समर्थक था । रूगे वेचारा प्रतीक्वा ही करता रह गया । इसी समय मार्क्सने ऋपनी दिलचरपी दर्शनसे भी ज्यादा एक दूसरे चेत्रमें दिखलाई, जिससे रूगे संतुष्ट हुन्ना। सेन्सर-सम्बन्धी लेख द्वारा राजनीतिके चेत्रमें प्रवेश करनेके बाद मार्क्स अनेस्डोटामें दर्शनके ताने-बाने बुननेकी जगह अव न्त्रपने जीवनके मूल कर्मचेत्र राजनीतिमें प्रवेश करनेके लिये तैयार था ।

अध्याय ४

प्रथम कर्मचेत्र (१८४२ ई०)

१. राइनिश जाइटुंग

राइनलैंड जर्मनीका उद्योग-प्रघान प्रदेश था, जहाँ श्रव्ज्वाजी एक नया वर्ग पैदा हो चुका था। वह सामन्ती निरंकुश शासनको वैसे मी पसन्द करनेके लिये तैयार नहीं था. ऊपरसे फासकी सीमापर होनेसे फ्रेंच-क्रातिका प्रमाव उसपर पढना जरूरी था। १७८६ ई०की फ्रेंच-महाक्रांति श्रीर १८३० ई०की पटनात्रोने फ्रांचमे सामन्तवादको खतम कर पूँजीवादी शासनको स्थापित कर दिया या। पड़ोसी वुर्ज्या वर्गकी तरह राहन-उपत्यकाके जर्मन भी सड़ी सामन्ती व्यवस्थाका विरोध करनेके लिये तैयार हो गये । ग्राम तौरसे निहित स्वार्थवाले वर्गोंका जैसा रवैया है वैसे ही यहाँके कुछ लोगोंने पहले सरकार-समर्थक एक पत्र निकालनेका ख्याल किया, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली । सरकारी समर्थक 'कोलनिशे जाइटुंग' वहाँके पत्रोंके च्वित्रमें अपनेको इजारेदार समस्तता था, श्रीर उसे वर्लिनकी सरकार का समर्थन प्राप्त था। इस इनारेदारीको हटानेके लिये कई पत्रोंने कोशिश की, लेकिन उन्हें ऋकालमें ही कालके गालमे पड़ना पडा। कई मतेवे ग्रसफल होनेके बाद श्रव कुछ धनी-मानी नागरिकोने पूँचीका प्रवन्य करके नये त्राधारपर एक पत्र निकालनेका निश्चय किया । राइनिश त्रलोमाइन जाइटुंग (१६३६ ई०में स्थापित) को 'राइनिश जाइटुंग' के नामसे निकालनेकी सरकारसे अनुमति मिल गई। कोलोनके बूर्ज्वा पशिया-सरकारको दिक करनेकी इच्छा नहीं रखते थे, यद्यपि राइनलैंडके लोग प्रशियनोंको विदेशी जैसा ही मानते ये श्रीर कितनी ही मर्तवे वह प्रशियाकी श्रमेचा फासके साथ श्रपनी सहानुभृति दिखलाते ये । लेकिन श्रव उद्योग-धघेमें वडी तेजीसे विकास हो रहा था, भ्रौर प्रशियन भी राइनलैंडकोके साथ कुछ रियायत करनेके लिये तैयार थे। राइनवालोंकी मॉग यी-राजकीय कोषका मितव्ययताके साथ प्रबन्ध, रेलवेका विस्तार, कोर्ट-फीस और स्टाम्प-करोंमें कमी करना आदि।

कालोनमें १ जनवरी १८४२ में राइनिश ज़ाइट्ंग (राइन समाचार) को विरोधी पत्रके तौरपर ही निकालना पड़ा। जल्दी ही पत्रकी ग्राहक-संख्या श्राठ हुजार तक पहुँच गई, श्रौर उसके प्रमावसे सरकार भी श्राशंकित हो पड़ी। राइनलैंडके कैथलिक पादरियोंको प्रोटेस्टेंट जर्मन, सरकार दबाना चाहती थी । नये पत्रने उनका पत्त् लिया, जो ऋधिकतर व्यावसायिक दृष्टिसे ही। नये पत्रके सम्पादक-मंडलमें थे तक्ण बैरिस्टर जार्ज युंग, तक्ण असेसर डागोवर्ट श्रोपेनहाइन । श्रोपेनहाइन मोजेज इसके प्रभावमें श्राकर फ्रेंच समाजवादसे परिचित हो गया था। दोनों सम्पादक तरुए हेगेलियोंसे प्रमावित थे। उनके लिये यह स्वाभाविक था, कि ऋपने समान विचारके तक्लोंसे लेख लिखवायें। ग्रपने जनमप्रदेशका पत्र होनेके कारण भी मार्क्सका ग्रारम्म हीसे राइनिश ज़ाइटंग के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। मार्चके अन्तमें ट्रीरसे कलोन जाना चाहता था, लेकिन वहाँका जीवन मार्क्सको ऋधिक ऋशांत मालूम होता था। इस समय तक बावर बोनसे हट चुका था, लेकिन मार्क्स नहीं चाहता था, कि प्रतिक्रियावादी वहाँ चैनकी बंसी बजावें, इसलिये उसने बोनमें रहते कोलोनके नये पत्रके लिये उन लेखोंको लिखना शुरू किया, जिन्हें जल्दी ही सभी लेखोंसे श्रेष्ठ माना जाने लगा।

यद्यपि तरुण हेगेलियोके लेखोंको पत्रमें स्थान देना सम्पादकद्वयके कारण्या, लेकिन यह निश्चित ही है, कि जिना भागीदारोंकी अनुमितके ऐसे उम्र लेख पत्रमें नहीं छापे जा सकते थे। भागीदार सममते थे, कि उनके जैसे प्रतिभाशाली सम्पादक और लेखक जर्मनीमें दूसरे नहीं मिल सकते। मार्क्की सिफारिशपर स्टेनबर्गको भी सम्पादकीय-विभागमें लिया गया, जिसे बर्लिन सरकार भयंकर कांतिकारी सममती थी और उसपर बराबर खुफिया-विभागकी निगाह रहती थी। मार्च १८४८ में फीडरिक विलियम (विल्हेल्म) चतुर्थ यह समम्कर काँप गया, कि उस सालकी कांतिका वास्तविक प्रेरक स्टेनबर्ग था। यद्यपि बर्लिन सरकार असंतुष्ट थी लेकिन तो भी वह नहीं चाहती थी,

कि कोलिनेशे जाइगको राइनलैंडमें एकच्छ्रत्र राज्य करनेके लिये छोड़ दियाः जाय। इस प्रकार राइनिश जाइटुंग जल्दी श्रकाल कवित नहीं हो सका। पहले लेखके कुछ ही महीने बाद १८४२ ई० में मार्क्सको पत्रका सम्पादक बना दिया गया। इसीसे मालूम होगा, कि पत्रकारिताके पहले ही प्रयासमें उसने श्रपनी प्रतिमामे कितना चमत्कार दिखलावा था? उसने मी इसे सीमान्य की बात समसी, क्योंकि श्रव उसके हाथमें जबदैस्त लेखनीके साथ-साथ एक जबदैस्त पत्र भी श्रा गया था।

२. रेनिश बीट (राइन संसद्)

राइनलैंडमे एक अलग प्रादेशिक डीट (डाइट, संसद्) थी । १८४१ ई० में नौ सप्ताह तक उसका अभिवेशन इसेलडोर्फोर्मे होता रहा। मार्क्सने इसकी कार्यवाइयोपर पाँच लम्बे निवन्ध लिखकर बतलाया कि प्रादेशिक ससदें नपुंसक नकली प्रतिनिधि-सस्याये हैं, जिन्हें प्रशियांके राजाने १८१५ ई० में सविधान प्रदान करनेवाली प्रतिज्ञाके भगको छिपानेके लिये कायम किया है। इन परिषदों-की बैठकें बन्द कमरेमें होती, श्रीर श्रीक से श्रिषिक छोटी-छोटी साम्प्रदायिक बातो पर ही बहस करने की उन्हें स्वतंत्रता थी। १८३७ ई० में कोलोन श्रीस पोजेनमें केथलिक चर्चंसे क्तगड़ा हो जानेके बाद से संसद्का श्रिविशन नहीं हुआ था। इन संसदोंके सदस्य वहीं होते थे, जो जमींदार थे। देहातसे आदि मेम्बर लिये जाते थे, शहरी जमींदारोके एक-तिहाई श्रीर हर जमींदारोंके एक-चौथाई। साथ ही यह भी शर्त थी, कि कोई भी निर्याय बिना दो-तिहाई बहुमतके वैघ नहीं माना बायेगा । ऐसी संसदोंके प्रति लोगोंकी घृष्ण क्यों न होती, लेकिन श्रपनी गद्दीपर बैठनेके बाद १८४१ ई० में फ्रेडरिक विलियम चतुर्थने संसदोंका श्रिधिवेशन करवाया, इस प्रकार वह कर्ज लेनेमे सुमीता प्राप्त करना चाहता था। लेकिन वन्द कमरेमें श्रिधिवेशन होना नागरिकोंको पसन्द नहीं था। कीलोनके हजारों निवासियोंने हत्ताक्तर करके त्रावेदनपत्र मेज कर कहा, कि ससद्के अधिवेशनमें साधारण जनताको मी जानेका अधिकार हो, उसकी कार्य-वाई रोज प्रकाशित की जाय, विना काटे-क्लॉटे सारी रिपोर्ट ससद्की कार्यवाइयों के

स्त्रापी जायँ। संसद और सभी प्रादेशिक बातों पर प्रेसमें बहस करनेका अधिकार हो, और सेन्सरको, हटाकर एक निश्चित प्रेस-कानून बनाया जाय। संसद्ने नागरिकोंकी माँगोंका समर्थन करनेमें अच्चम हो राजासे केवल यही प्रार्थना की, कि अपने अभिलेखोंमें वक्ताओंके नामों को प्रकाशित करनेकी आजा दी जाय, और मनमानी हटाकर सेन्सर करनेका एक कानून बना दिया जाय। राजाने उनकी विनम्र प्रार्थनाको भी ठुकरा दिया। संसद्के सदस्य कितने प्रतिक्रियावादी थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि संसद् सभी प्रतिगामी बातोंका समर्थन करती थी। हाँ, कोलोन और राइनलैंडके आर्थिक ढाँचेमें कितने ही परिवर्तनों के कारण वह ऐसी बातोंको मानना पसन्द करती थी, जो कि नये बूर्जा वर्गके अपनुकूल हो। सरकारने भू-सम्पत्ति के बटवारेमें एक सीमा निश्चित करनेका प्रस्ताव रक्ता था, जिसमें कि शक्तिशाली किसान-वर्ग कायम रहें! संसद्ने आठा वोटोंके विरुद्ध ४६ वोटोंसे उसे अस्वीकार कर दिया।

मार्क्सने श्रपने लेखोंमें संसद्की बड़ी कड़ी श्रालोचना की: संसद् दिनके उजालेमें मुँह नहीं दिखा सकती। श्रपनी मंडलीकी गोपनीयता उसके लिए बहुत श्रमुक्ल है। मार्क्सने उसे बकलोल संसद कहा था। मार्क्सने श्रपने लेखोंमें श्रपनी जन्मभूमि राइनलैंडके जलवायु श्रीर भूमागका बड़ी मानुकताके साथ नाम लिया था। उन लेखोंमें श्राज भी राइन तटके द्राचाउद्यानों श्रीर सुखद धूपका श्रानन्द श्रीर गर्मी मिलती है। इसी समय मार्क्सने लेखकके धर्मके सम्बन्धमें लिखा था: एक लेखकको जीवित रहनेके लिये पैसा कमानेके ख्यालसे लिखना चाहिये, लेकिन उसे पैसा कमानेके लिये जीना श्रीर लिखना नहीं चाहिये।...प्रेसकी पहली स्वतंत्रता यह है, कि उसे व्यापारसे मुक्त करना। जो लेखक प्रेसको केवल धन कमानेका साधन बना छोड़ता है, उसे इस श्रांतरिक दासताका दण्ड मिलना उचित है, बाहरी दासता श्रर्थात् सेन्सरकी रोक...उसके लिये दंड है। मार्क्सने श्रपने जीवन मर लेखकके इस धर्मका पालन किया।

मार्क्सने कोलोनके कैथलिक लार्ड पादरीकी गिरफ्तारीको गैर-कानूनी बतलाकर उसकी कड़ी ख्रालोचना की। ख्रमी भी वह मार्क्सके विचार जितने कानून और न्यायकी दृष्टिसे थे, उतने ख्रार्थिक कारणों पर निर्भर नहीं करते थे। त्रमी भी वह कानून श्रीर राज्यके सम्बन्धमें हेगेलीय दर्शनकी सीमासे बाहर नहीं निकल सका था।

३. संघर्षके पाँच मास

"राइनिश बाइट्रंग" बर्मनीके उद्योगप्रधान प्रदेशका पत्र या। यद्यि पहले उसका उद्देश्य वह नहीं या, लेकिन वह जनताकी सहायतासे ही फूल-फ्ल सकता था, इसलिये जनप्रिय वननेके लिये आवश्यक था, कि वह कुछ गर्म-गर्म भी चीचे दे, इसीलिये उस सालकी गर्मियोमें पत्रमे सम्मवतः मोजेज हेसकी प्रेरणासे, चर्लिनमें ऋावासोंकी कठिनाइयोके बारेमे एक या दी लेख निकले, जिनमेसे एक ,वाइटलिंगके लेखका उद्धरण था, दूसरा स्ट्रासनुर्गके पंडित काग्रेसकी रिपोर्टके तौरपर था, जिसमे समाजनादी समस्यात्रोका जिक्र करते हुए कहा गया था, कि हीन वर्ग जो मध्यम वर्गकी सम्पत्तिकी श्रोर ईर्ष्या-की दृष्टिसे देख रहा है, उसकी तुलना १७८६ ई० की फ्रेंच-क्रांतिमें सामन्तोंके विरुद्ध मध्य वर्गके संघर्षसे किया जा सकता है, फर्क इतना ही है कि इस समय समस्याका हल शान्तिपूर्वक हो सकता है। लेखमे कोई ऐसी उग्र क्रान्तिकारी बातः नहीं थी, लेकिन इसके कारण 'राइनिश जाइटुंगपर' कम्युनिज्म (सम्यनाद) की श्रोर मुक्तनेका श्राच्चेप किया गया। श्राम्बर्गिके 'श्रल्गेमाइन जाइटंगने' अपने राइनके सहयोगीकी कड़े शब्दोंमें आलोचना की-धनी-मानी व्यापारियोके पुत्र, इस बातका जरा भी ख्याल किये विना-कि हम इस प्रकार ऋपने घनमें क्लोनके गिजोंमें काम करनेवाले ब्रादिमयों या जहाजी कुलियोके सहमागी वना रहे हैं-समाजवादी विचारोंसे बच्चोंकी ।तरह श्रागके साथ खेल रहे हैं । 'राइनिश जाइदुङ्गकी' बातको लड़कपन कहते हुए लिखा, कि जर्मनी जैसे श्रार्थिक तौरसे पिछड़े हुये देशमे मध्य-वर्गकी १७८६ ई० के फासके सामन्तोंके भाग्यसे तुलना करना निरो मूर्खता है। भार्क्सका पहला सम्पादकीय कर्त्तव्या था, इस तरहके श्राचेपोका जवाब देना । यद्यपि तथाकथित समाजवादी विचारोके ऊपर हुये प्रहारके जवाबमें कलम उठानेकी उसकी इच्छा नही होती थी, तो भी उसने कुछ लिखना जरूरी समभा और सविस्तार आलोचनाके लिये अधिकः श्रध्ययनके बाद लिखनेका वादा किया।

मार्क्सने उस समय जो लिखा, उससे उसे सन्तोष नहीं हुन्ना। वह बड़ी उत्सुकतापूर्वक ऐसे त्रावसरकी प्रतीक्षा करने लगा, जब कि वह फिर ऋध्ययनमें खाग सकेगा। लेकिन इस समय तो वह 'राइनिश जाइटुङ्गमें' दिलोजानसे। इतना लगा था, कि ऋपने विलेनके पुराने साथियोंसे सम्बन्ध तोड़नेके लिये भी तैयार था। बर्लिनमें ऋव हेगेलीय क्लबके उसके साथी ऋव 'मुक्त मानव' समाजवालोंके रूपमें बदल गये थे। मार्क्सको उनकी यह बात पसन्द नहीं ऋाई, न्यांकि उसमें इसे ग्रात्म-विज्ञापन श्रीर ग्रहम्मन्यताकी यू ग्राती थी। तब भी अभी नावरपर उसका विश्वास था। बिलनिके उसके पुराने साथी श्रव ऐसे लेख मेजते थे, जिनमें कुछको सम्पादक श्रीर कुछको सेन्सर काट देते थे। श्रभी तक रूटेनबर्गका विलेनके तरुण लेखकोंके साथ जैसा वर्ताव था, उससे वह समक्तते थे कि 'राइनिश जाइद्रक्त' हमारे विचारोंका वाहक है: लेकिन ग्रव सम्पादककी कुर्सीपर मार्क्स बैठा था। मार्क्स श्रीर वर्लिनके पुराने साथियोंका सम्बन्ध-विच्छेद जनम्बर १८४२में हुन्रा। इस समय हेरवेग ग्रीर हुने बर्लिन गये। हेरवेग उस समय श्रपनी सफलतापर फूला नहीं समाता था। क्लोन जानेपर बड़ी जल्दी वह मार्क्सका मित्र बन गया था। ड्रेसडेनमें रूगेसे उसकी मुलाकात हुई, जिसके साथ वह बर्लिन पहुँचा। 'स्वतन्त्र मानव' की कलावाजियाँ उसकी बिल्कुल प्तीकी श्रीर वेकार मालूम हुई। रूगे श्रपने सहयोगी ब्रूनो बावरसे खासकर ⁴स्वतन्त्र मानवके¹ इस विचारपर उल्लम्भ पड़ा । व्यावहारिकं पहेलूपर बिना विचार किये हुये राज्य, वैयक्तिक-सम्पत्ति श्रीर परिवारको उठा देने जैसी बात वेहूदी है-हरवेगने जब इस तरहकी नुकाचीनीकी, तो उसके विरोधियोंने भी छिद्र ढुँद्रते राजासे उसकी मुलाकात एवं एक धनी लड़कीसे मँगनीकी बात लेकर श्चात्तेप किया। श्रन्तमें दोनों पत्तोंने 'राइनिश जाइटुङ्गका' सहारा लिया। रूपेकी सहमतिसे हेरवेगने एक वक्तव्य लिखकर कहा, कि 'स्वतन्त्र मानव' च्यक्तिके तौरपर बहुत भले श्राद्ममी हैं, लेकिन श्रात्म-विज्ञापनके लिये उनका राजनीतिक रूमानीपन (रोमांचकता) स्रादि उनके लक्य स्रोर स्वतन्त्रताके पच्नको नुकसान पहुँचाता है। मार्क्सने इस वक्तव्यको छाप दिया, इसपर मेंथेनने **५**स्वतन्त्र मानवकी' तरफसे खूब कड़े लेख लिखे । पहले मार्क्सने इनका जवान बडी नमींसे दिया श्रीर कोशिशकी कि 'स्वतन्त्र मानवका' उपयोगी सहयोगी बना रहे-मैं चाहता हूँ, कि शिकायतोंमें इतनी श्रधिक अस्पष्टता न हो, शब्दाडवर, श्रात्म-प्रशंसा कम श्रीर पतेकी बाते ज्यादा हो, वास्तविक स्थितियोका सविस्तर वर्णन हो श्रीर कथनीय विषयके सम्बन्धमें व्यावहारिक ज्ञानका श्रिषिक परिचय दिया जाय । मेरी रायमें यह ठीक नहीं है, बल्कि इसे नैतिकताके विचद मी कहा जा सकता है, कि साधारणसी आलोचना आदिमे संसारको एक विल्कुल नई दृष्टिसे देखनेवाले कम्युनिस्ट श्रीर सोशालिस्ट मतवादोको खामखा डाला नाय । श्रगर कम्युनिक्मपर वहस करनी ही है, तो उसे विस्तारपूर्वक श्रीर एक बिल्कुल दूसरे दंगसे करना चाहिये। मैने उनसे कहा कि अगर धर्मका खरडन करना है तो उसे दूसरी तरह नहीं वाल्क राजनीतिक स्थितिके साथ खरडन करना चाहिये, क्योंकि ऐसा करना एक समाचारपत्रके ऋषिक ऋतुरूप होगा और इससे हमारी जनताकी ज्ञान-वृद्धि होगी। धर्म अपने आतरिक विल्कुल खूसे स्वर्गके सहारे नहीं, बल्कि पृथ्वीके सहारे जीता है। वह अपने आप जुस हो जायगा, जत्र वह उल्टी वास्तविकता एक बार विलीन हो जायेगी, जिसके विचारांका वह प्रतिनिधित्व करता है। अन्तमें मैने उनसे यह भी कहा, कि अगर वह दर्शनके सम्बन्धमें कुछ कहना चाहते हैं, तो नास्तिकवादके विचारांके साथ खेलना कम करें--उनका ऐसा करना उन बच्चोकी याद दिलाता है, जो सुननेके लिये तैयार हो। किसी आदमीसे बड़े ऊँचे स्वरसे कहते हैं, कि हम भूतसे नहीं डरते । मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा कि अपने सम्पादकके फर्जको ग्रदा करते हुये वह किस नियमपर चलता था।

मार्क्स उपरोक्त शब्दोंको स्वतत्र मानव क्यों पसन्द करने लगे ! उनके प्रतिनिधि मेथेनने बहुत दिठाईके साथ एक पत्र मार्क्सको लिखा जिसपर मार्क्सने रूगेको लिखा था: यह सत्र एक हद दर्जेकी ऋहम्मन्यताको दिखलाता है। वह इस वातको नहीं ऋनुमन करते, कि एक राजनीतिक मुखपत्रकी रज्ञाके लिये हमे वर्लिनकी, इस तरहकी बहकोको छोडना होगा, को कि ऋपनी गुहको, छोडकर श्रीर किसी बातसे सम्बन्ध नहीं रखती।...रोज—रोज सेन्सरकी जुद्रता, मित्रयोके पत्रो, प्रादेशिक गर्वनरकी शिकायतो, डीट (ससद्) की हाय-तोवा,

शेर-होल्डरों (भागीदारों) के विरोधों आदि-आदिसे काम पड़ रहा है। इसपर भी मैं अपने स्थान को इसीलिये पकड़े हुये हूँ, क्योंकि जहाँ तक हो सके, स्वेच्छाचारियों के इरादोंको निष्फल करना मैं अपना कर्त्तव्य समभता हूँ। तुम समभ सकते हो, कि इस पत्रसे मैं भल्ला उठा, और मेयेनको एक काफी कड़ा जवाब दिया।

श्रवसे मार्क्सका सदाके लिये स्वतंत्र मानव से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। स्वतंत्र मानव में सबकी गति श्रन्तमें स्वतंत्रताके मार्गसे अष्ट होनेमें ही हुई। बावर श्रौर एडवर्ड मेयेन ऐसे पत्रोंके सम्पादक बने, जिनमें उन्हें मालिकोंकी हाँमें हाँ मिलाते हुये ही कुछ लिखनेका श्रवसर मिलता था।

१८४२ ई० के शरद्में रूटेनवेर्ग, को अब भी सरकार भयंकर आदमी समभती थी। त्रीर उसने राइनिश जाइटंगसे उसे हटानेकी माँग की। सारी गर्मियोंमें सरकार पत्रके लिये कठिनाइयाँ पैदा करती रही, जिनसे वह समभती थी, कि वह अपने आप मर जायेगा। 🗅 अगस्तको राइनलैंडके गर्वनर फान शापरने ऊपर सरकारको लिखा था, कि पत्रके ८८५ ग्राहक हैं। १५ त्र्यक्तूबरको मार्क्सने सम्पादक पदको सँभाला था। १० नवम्बरको शापरने श्रपनी रिपोर्टमें स्वीकार किया, कि गाहकोंकी संख्या लगातार बढ़ रही है, जो श्रव १८२० तक पहुँच गई है, पत्रकी नीति सरकारके सम्बन्धमें विरोधी श्रीर धृष्टतापूर्श है। सरकारकी कोपाग्निमें घीका काम करनेके लिये इसी समय राइनिश जाइटंगने एक ग्रत्यन्त प्रतिक्रियावादी ढंगके विवाह-त्रिल (विधेयक) की कापी प्राप्त करके उसे श्रधिकारियोंकी इच्छाके विरुद्ध छाप दिया । इसके कारण प्रशियाके राजाको बहुत गुस्सा श्राया श्रीर उसने माँग की, कि उक्त मसौदा निससे मिला, उसका नाम प्रकट किया जाय, नहीं तो पत्रको तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा। लेकिन राजाके मंत्री राइनिश जाइटुंगको इस प्रकार शहीद बनाना नहीं पसन्द करते थे, इसलिये उन्होंने सिर्फ यही माँग की, कि रूटेनवर्गको हटा कर कोई जिम्मेवार सम्पादक नियुक्त किया जाय । साथ ही डोलेशालकी जगह वीटहाउसको उन्होंने सेन्सर नियुक्त किया। मार्त्सने, जैसा कि ३० नवम्बरके ऋपने पत्रमें, उसने रूरोको लिखा था, रूटेनवेर्गको खतरनाक त्रादमी नहीं समझता था। बर्लिनके

स्तित्र मानव से जो विरोध चल रहा था, वह इस स्थितिमें श्रीर भी उत्र हो चला।

गवर्नर शापरने रूटेन्वेर्गंको हटाकर दूसरे सम्पादकको नियुक्त करनेके लिये १२ दिसम्बर तककी मियाद दी। इसी समय ऋापसी फुटके नये कारण पैदा हो गये। वेर्नेकारटेलके एक संवाददाताने मोजेलके किसानोंकी गरीबी श्रीर वकलीफोंके बारेमें दो लेख लिखे, जिनके संबंधमे शापरने, दो संशोधन मेजे । संशोधन निलक्कल मद्दे और हल्के थे. लेकिन तब भी पत्रने उन्हें कुछ प्रशंसाके साथ ही प्रकाशित किया । इस बीच काफी सामग्री जमा कर जनवरीके मध्यसे पत्रने पॉच लेख छापे, जिसमें प्रमाणके सिंहत बतलाया कि सरकारने मोजेलके किसानोकी शिकायतोको बड़ी पाशविक कबाईके साथ दवा दिया। गवर्नरको इससे संतोष हुन्ना कि २१ जनवरी १८४३ को मंत्रिमंडलने राजाकी उपस्थितिमे पत्रको दवा देनेका निश्चय कर लिया है। शेयर होल्डरोंका रुपया लगा हुन्ना था, श्रीर वैयक्तिक सम्पत्ति शोषकों के राज्यमें पवित्र थाती मानी जाती है, इसलिये पत्रको तिमाहीके अन्त तक जारी रखनेकी इजाजत मिली। सरकार द्वारा इस तरह जबर्दस्ती अपने प्रदेशके निर्मीक पत्रका दबाया जाना राइन निवासियोंने पसन्द नही किया । उन्होने एक श्रोर आहकोकी संख्याको एकाएक २२०० तक पहुँचाकर अपनी सहानुसृति प्रकट की॰ स्रौर दूसरी तरफ हजारोने हस्ताच् र करके श्रपने पत्रकी जान बचानेके लिये राजधानीमे श्रजी मेजी। शेयरहोल्डरोंका प्रतिनिधिमंडल भी राजांसे मिलने वर्लिन गया, लेकिन उनको इजाजत नहीं दी गई, श्रौर जनताके हस्तान्त्रसे मेजे गये श्रावेदन पत्रोंको रहीकी टोकरी में फेंक दिया गया। शेयर होल्डरोंको अपनी पूँजीका ख्याल था, कहीं वह हूच न जाये, इसलिये उन्होंने पत्रसे ऋधिक नर्मी वरतनेकी माँग की, जिसपर १७ मार्चको मार्क्सने इस्तीफा दे दिया । इस्तीफा देनेसे पहले उसने सरकारी सेन्सरको काफी परेशान भी किया।

नया चेन्सर सेन्ट्रपाल एक चेक (वोहिमियन) तरुण या। मार्क्सके नैतिक बल, चुद्धि, प्रतिमाका उसपर बड़ा प्रमाव पडा था। २ मार्चको उसने राजधा-नीमें रिपोर्ट मेजी कि वर्तमान परिस्थितिमें मार्क्सने "गृहनिश जाइटुंगसे" चन्वन्य तोड़ने, श्रीर प्रशियाको छोड़नेका निरुच्य क्या है। १८ मार्चको सेन्ट पालने रिपोर्ट मेची: डाक्टर मार्क्स निरिच्त तौरसे वल सम्पादक पदसे हट नाया श्रीर उसकी चगह एक मामूली तथा नमें विचारोंवाले श्रादनी श्रोपेन हाइमने सम्पादक पदको सँमाल लिया। मुक्ते इससे बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि ऋाज लेखोंके सेन्सर करनेमें सुक्ते मुश्किलसे चौथाई समय लगाना पड़ा। सेन्सरने श्रपने श्राकाश्रोंसे सिफारिश की, कि माक्सीके हट जानेपर श्रव पत्रको चालू रखनेकी इजाजत दी जाय।

"राइनिश जाइटुंग" के दवानेके २५ जनवरीके सरकारी निएचयका जैसे ही पता लगा, मार्क्सने रूगेको लिखा था: "मुक्ते इसके लिये त्राश्चर्य नहीं हुत्रा। श्रारम्मसे ही सेन्सरकी हिदायतोंके वारेमें मेरी क्या राय थी, यह तुम जानते हो। जो कुछ हो रहा है, उसे में स्वामाविक परिणाम ही समभता हूँ। "राइनिश जाइटुंग" का दवाया जाना मेरी रायमें राजनीतिक चेतनाकी प्रगतिकी स्चना है। में श्रय इस्तीफा दे रहा हूँ। जो भी हो, वातावरण मेरे लिये वड़ा ही पीड़ाकर था। बन्धनमें रहते काम करना हुरी वात है, श्रीर स्वतंत्रताके लिये भी तलवारकी जगह सुईसे लड़ना बुरी वात है। में श्राधिकारियोंकी के पालंड, मूर्जता श्रीर पशुता श्रीर श्रपनी श्राजानुवर्तिता...से ऊब गया हूँ। श्रव जब कि सरकारने मुक्ते मेरी स्वतंत्रता लोटा दी...जमेनीमें मेरे लिये करनेको कुछ नहीं है। श्रादमी को यहाँ रहकर खोटा बनना पड़ता है।

इस प्रकार मार्क्के राजनीतिक जीवनका पहला भाग खतम हुन्या, जब कि न्युमी वह त्रपने पन्चीसर्वे वर्षमें था।

४ फ्वारवाखके सम्पर्कमें

मान्तर्ने रूनेको लिखे उक्त पत्रमें अपनी पहली छुपी पुत्तकके प्राप्ति-स्वीकारके वारेमें लिखा था। यह उसके लेखोंका संग्रह अनेकडोटा छुर नो एरटेन ड्वाशेन "फ़िलोसोफ़ी उंट पुत्र्लिझिस्टिक" (दो जिल्टोंमें) मार्च १८४३ के आरम्ममें जूरिच (स्वीट्जलैंड) में छुपा। छुलियस फोबेलने जर्मन सेन्सर द्वारा पीड़ित लेखकोंकी कृतियोंको लिटेसिरेश कोंन्टोर नामसे प्रकाशित करनेका प्रवन्य किया था। इस सप्रहमें तरुण हेगेलियोंके कितने ही लेख सम्मिलित थे, जिनमें लुड्विग् फ्वारताख़का नाम सबसे पहले था। फ्वारताख़ने हैगेलके सारे दर्शनको रदीकी टोकरीमें फेंकते घोषित किया था, कि यह निष्पाण विचार है, इसमें धर्म-विद्याकी रोगी श्रातमाके सिवा श्रीर कुछ नही है। दर्शन-सुधारपर प्रारमिक निवन्ध में फ्वारवाख़ने श्रपने जिन विचारीकी प्रकट किया था, मार्क्सको बिल्कुल नयेसे मालूम हुये। एंगेल्सने पीछे स्वीकार किया, कि मार्क्सके बौद्धिक विकासमे फ्वारवाख़की श्रमर कृति ईसाइयत-सार (१८४१ ई॰ में प्रकाशित)ने बढ़ा प्रमाव डाला था। एंगेल्सने भी इस ग्रंथके मुक्तिदायक प्रभावके वारेमे लिखा था: सर्वत्र उत्साह था। हम सभी तुरन्त फ्वारनाख़के अनुयायी बन गये । लेकिन "राइनिशे जाइट्ंगके" लेखोंमें इसका जरा भी चिन्ह नहीं मिलता, कि उस वक्त मार्क्सके ऊपर फुबारबाख़का कोई प्रभाव था। तो भी मार्क्सने वड़े उत्लाहके साथ फ्वारवाख़ के नये विचारो-का स्वागत किया था। फर्वरी १८४४ मे इवाश-फ्रॉबोशिशे याखुखेर (जर्मन-फ्रेंच वर्ष-पत्र) के निकलनेके समय मार्क्सपर जरूर फ्वारबाख़के विचारोंके प्रमाव को देखा गया। प्रारमिक निबन्घ में फ्वारश्राखके ईसाइयत-सार के विचार स्ट्रम रूपमें पाये जाते हैं, शायद इसीलिये एंगल्सको भ्रम हुन्ना श्रीर उन्होंने तुरन्त श्रनुयायी बननेकी बात कही । लुडविंग फ्वारबाख़ (१८०४-३२ ई॰) हेगेलका शिष्य या। हेगेलके बाद उसका दर्शन दो शालास्त्रोंमे वट गया, जिनमें दूरिंग जैसे लोग मौतिकवादके कट्टर विरोधी और हेगेलीय विज्ञान-वादको लेकर प्रतिकियावादी दर्शनकी घारा चलाने लगे। दूसरी शाखा हेगेल-के दर्शनको रहस्यवाद श्रीर विज्ञानवादसे लुखा उसके वास्तविक लच्य इन्डा-त्मक भौतिकवादकी त्र्रोर लेजा रही थी। इस दलका त्रागुवा फ्वारवाख्न था। इस प्रकार मार्क्सका हेगेलीय दर्शनके इस विशिष्ट रूपके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेमें फुनारनाख़का हाथ या इसमें सन्देह नही। फुनारनाख़को दीहातका एकान्त जीवन पसन्द था, लेकिन तत्र भी वह हथियार डालनेवाला निकम्ना , पुरुष नहीं, वल्कि सच्चाईके लिये लडनेवाला योदा था। वह गलेलियोकी वरह नगरको कल्यनाशील दिमागोका जेलखाना मानता था, जब कि देहाती जीवनकी स्वतंत्रताको प्रकृतिके खुले ग्रंथको पढ़नेका सुन्दर ग्रवसर देनेवाला मानता था। फुवारबाख़ जैसे विचारकके लिये नगरके शोर-गुलसे भरे वाता-वरणसे ऋलग शान्त स्थानमें रहना शायद इसीलिये पसन्द था, कि उसके एकाप्रतापूर्ण स्वभावके वह ऋषिक ऋनुकृल था। एकान्तवासी होते हुये मी फ्वारवाख़ अपने समयके वड़े-वड़े संघर्षोंमें अगली पाँतीमें रहता था। ईसाइयत, सार में उसने लिखा था, मनुष्य धर्मको बनाता है, धर्म मनुष्यको नहीं । श्रीर मनुष्यकी कल्पना जिस उच्चतम सत्ताको बनाती है, वह उसकी स्रापनी सत्ताका कल्पित प्रतिनिम्न छोड़ ऋौर कुछ नहीं है। जिस समय उसकी यह पुस्तक प्रकाशित हुई, मार्क्सका ध्यान उसी समय राजनीतिक संधर्षकी ऋोर गया था। इसने मार्क्सके संघर्षमय जीवनमें हद्तापूर्वक पैर रखनेमें सहायता की, इसमें शक नहीं । प्रारंभिक निजन्घ ने हेगेलीय दर्शनके प्रतिक्रियावादी रूपको विल्कुल नंगा श्रीर वेकार कर दिया, श्रीर श्रव उसका द्वन्द्वात्मक दृष्टिकीए भौतिकवाद श्रीर समाजवादकी सेवाके लिये तैयार था। "प्रारम्भिक निवन्ध" ने मार्क्सके ऊपर भारी प्रमाव डाला। १३ मार्च १८४३ ई० को रूरोको पत्र लिखते समय मार्क्सने घोषित किया था: फ्वारत्राख़की सिर्फ एक वात सुके पसन्द नहीं है, वह यही कि वह यद्वतिकी बहुत अधिक पर्वा करता है और राजनीतिसे बहुत कम, यद्यपि राजनीतिसे मित्रता स्थापित करके ही समसामयिक दर्शन सच्चा बन सकता है। लेकिन में मानता हूँ, कि इसे वैसा ही होना पड़ेगा जैसा कि सोलहवीं शताब्दीमें प्रकृतिके उत्साही मक्तोंको राज्यके उत्साही मक्तोंके साथ लोहा लेकर करना पड़ा था। मार्क्सका कहना त्रिल्कुल ठीक था, क्योंकि "पारम्भिक निवन्ध" में फ्वारवाख़ने सिर्फ एक ही बार राजनीतिका नाम लिया है, सो भी गौए। रूपसे । मार्क्सने अब हेगेलके विधान-दर्शनकी और राज्य-दर्शनकी पूरी तौरसे परीचा करनेका निश्चय किया, जैसे कि फ्वारवाखने उसके प्रकृति-धर्म-द्रशनकी परीचा की थी। उसी पत्रमें लिखे दूसरे वाक्यसे भी मार्क्सके ऊपर पड़े फ्वारवाख़के प्रभावको देखा जा सकता है।

प्रशियन सेन्सरके कारण प्रशियामें रहते हुये कुछ लिखना सम्मव नहीं है, इसीलिये मार्क्सने जर्मनी छोड़नेका निश्चय किया।

४. विवाह (१८४३ ई०)

लेकिन जर्मनीको वह बिना जेनीको लिये छोड़ना नहीं चाहता था। २५ जनवरीको उसने रूगेसे पूछा था, कि हेरवेग द्वारा जूरिचसे मविष्यमें निकाले जानेवाले ड्वाशेरबोटे में कोई काम मिल सकता है या नहीं। पर हेरवेगको स्वय जूरिचसे निकलनेके लिये मजबूर किया गया, जिसके कारण वह वहाँसे पत्र नहीं निकाल सका। इसपर दोनोंके संयुक्त सम्पादकत्वमें यारबुखेर (वर्ष पत्र) के नामसे एक पत्र निकालनेका सुकान रूगेने रक्खा श्रीर कोलनी छोडने-के बाद लाइपनिगर्मे त्राकर वात करनेके लिये बलाया । उस समय जर्मनीमें पत्र-पत्रिकाश्चांके ऊपर सेन्सरका बहुत जोर था, उससे बचनेके लिये वर्षपत्र निकाले जाते थे, जिनमें मिन्न-भिन्न लेखोंका संग्रह रहता, श्रीर पत्र-पत्रिकाश्रोमे न सम्मिलित होनेके कारण उसे सेन्सर कराके छपानेकी आवश्यकता नहीं थी। लेकिन मार्क्स जैसे विचार रखनेवाले लेखकोंके लेख वर्षपत्र में भी त्रासानीसे प्रकाशित होने पाते, इसमें सन्देह था। १३ मार्चंके अपने पत्रमे रूरोको मार्क्सने लिखा था: यदि इवाशे यारबुखेर को फिर प्रकाशित होनेकी इजाजत मिल जाय, तो अधिकसे अधिक विगत कामोका ही हम हल्का सा अनुकरण कर सकेंगे, जो कि वर्तमानके लिये पर्याप्त नहीं है। पर "ड्वाश-फ्रॉज़ोशिशे याखुकेर" (जर्मन-फ्रेच वर्षेपत्र) एक सिद्धान्तकी चीज होगी, एक महत्त्वपूर्ण घटना श्रीर ऐसा श्रध्यवसाय होगा, जो कि हमे उत्साहित करेगा। मार्क्सने इस प्रकार जर्मनीके मीतर जर्मन वर्षपत्र न निकाल बाहरसे "जर्मन-फ्रेंच वर्ष-पत्र" निकालनेका प्रस्ताव रस्ता, जिसे १६ मार्चके ऋपने पत्रमे रूगेने स्वीकार किया।

पिताके मरने श्रीर डाक्टरकी डिग्री प्राप्त करनेके बाद जिस समय मार्क्सने श्रपने राजनीतिक संघर्षमय जीवनको श्रारम्म किया था, उसी वक्त उसके सामने कितनी ही घरेलू कठिनाइयाँ भी उपस्थित हुई थीं, लेकिन मार्क्स उनको कोई महत्त्व नहीं देता था। वह मानवजातिके सारे समाजके दुःखोंके हटानेकी चिन्तामें था, जिसके सामने घरेलू कठिनाइयाँ उसके लिये नगएय सी थीं।

उसने इन कठिनाइयोंका शायद ही कभी जिक्र किया। पहली बार तुन्छ निजी मामले कहते उसके वाक्य उस पत्र द्वारा हमारे पास पहुँचे हैं, जिसे कि ६ जुलाई १८४२ को रूपेको लिखा था: 'ग्रानेकडोटा' के लिये लिखनेका वचन दे कर भी मैं क्यों नहीं कुछ कर सका, "मेरा श्रवशिष्ट समय श्रात्यन्त श्रविकर पारिवारिक भगड़ोंके कारण वरवाद श्रीर वेकार गया। यद्यपि वह काफी श्रच्छी हालतमें है, तो भी मेरे परिवारने मेरे रास्तेमें ऐसी कठिनाई डाली, जिसने मुक्ते कुछ समयके लिये ग्रत्यन्त परेशान करनेवाली रिथतियोंमें डाल दिया। शायद में तुम्हें इन तुन्छ निजी मामलोंका वर्णन करके परेशान करना नहीं चाहुँगा। यह वस्तुतः सौमाग्यकी बात है, कि हमारे सार्वजनिक मामले किसी नैतिक बल वाले पुरुवको घरेलु कठिनाइयों द्वारा परेशान नहीं कर सकते । इन शब्दोंसे मार्क्षके दृद चरित्रजलका पता लगता है, जो कि उसके कंटकाकीर्ण दीर्घ जीवन पथके लिये हमेशा बहुत बड़ा संबल रहा। उसकी क्या घरेल कठिनाइयाँ थीं. इसका विवरण कहीं नहीं मिलता है। रूगेको उसने लिखा था: जैसे ही हमारी सारी योजनायें ठीक रूप ले लेंगी, मैं क्रीज्नाख़ जाऊँगा, जहाँ जेनीकी माँ श्रपने पतिके मरनेके वाद जाकर रहती थी। व्याह करके मार्क्स श्रपनी सासके घरमें कुछ समय विताना चाहता था। मार्क्सके शब्दोंमें ''जिसमें कि हमारे काम शुरू करनेसे पहले हमारे पास कुछ सामग्री रहे ।... त्रिना किसी भावुकताके में तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कि मैं प्रेममें गम्भीरताके साथ पूरी तरह हुना। हुन्ना हूँ । हम दोनों कुछ त्राधिक सात वर्षसे मँगनी किये हुये हैं। मेरी भावी पत्नीको मेरे कारण अपने धर्मभी इसामन्ती सम्बन्धियों से संघर्ष करना पड़ा. त्रपने उन धर्मभीर सामन्ती सम्बन्धियोंके साथ, जो कि स्वर्गमें पिता श्रौर वर्लिनमें सरकारको समान रूपेए। पूज्य समभते हैं, श्रीर कुछ मेरे श्रपने परि-वारके साथ, जिसपर पुरोहित लोगों तथा मेरे दूसरे शतुत्रोंने प्रभाव कायम कर रखा है । इन संघर्षोंने उसके स्वास्थ्यको प्रायः खतरेमें डाल दिया । इसीलिये वर्षों तक मैं और मेरी भावी पत्नी अनावश्यक परेशान करने वाले फराड़ों में पड़नेके लिये मजबूर हुये।

यहाँ घरेलू कठिनाइयोंकी कुछ भनक मिलती है। अत्र मार्क्स देश छोड़नेके

लिये तैयार था श्रीर ब्याह करके अपने मविष्यका भी कोई प्रश्नम करना चाहता था। यह प्रश्नम आसानीसे हो गया, श्रीर मार्क्को लाइपिन्नग जानेकी जरूरत भी नहीं पढी। रूगे श्रच्छा खासा पैसेवाला श्रादमी था, उसने लिटेरारिशे कोन्टोरके छ हजार थालर (६ हजार पौंड) का शेयर लेना स्वीकार किया। फोबेलने प्रकाशनका काम अपने ऊपर लिया। यह निश्चय हुआ, कि मार्क्को सम्पादनके कामके लिये ५०० थालर वार्षिक वेतन दिया जाय।

१६ जून १८४३ के स्मरणीय दिनको जेनीसे ब्याह किया । जेनी विचारोमे पति से अभिन्नता रखती थी, उसका सारा जीवन पुराणवर्णित किसी परम वपस्विनी सती जैसा मालूम पड़ता है।

जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र को छापनेके लिये तीन जगहें सामने थी, बुशेल्स (बेल्जियम) पेरिस (फास) और स्ट्रासचुर्ग (अलसरकी राजधानी)। मार्क्स दम्पती स्ट्रासचुर्गको अधिक पसन्द नरते, लेकिन रूगे और फ्रोबेलके पेरिस और बुशेल्स के देख आनेके बाद पैरिसको ही अधिक अनुकूल समका गया। यद्यपि बुशेल्समें पैरिसकी अपेन्सा कानूनी कडाइयाँ कम थी, लेकिन पैरिस जर्मन जीवनके नज-दीक पडता था, और रूगेने यह भी लिखा कि वहाँपर मार्क्स तीन हजार फ्रांक या कुछ कममें भी आरामसे रह सकता है।

मार्क्स में में में में सिताने के लिये कुछ महीने मिले, जिन्हें उसने अपनी सास-के घरमें बिताया। फिर रूप वर्षके मार्क्स और रह वर्षकी जेनीने वहाँसे उठकर पैरिसमें हेरा डाला। जर्मनीके इस जीवनके सम्बन्धमें मार्क्सका आखिरी लेख जो मिलता है, वह रह अक्तूबर १८४३ को फ्वारबाखके नाम लिखा एक पत्र है, जिसमें उसने जर्मन किव शेर्लिंगकी आलोचनाके सम्बन्धमें अपने वर्ष पत्रके प्रथम अकके लिये एक लेख माँगा था। फ्वारबाखने ईसाइयतसारके दूसरे संस्करसमें जो भूमिका लिखी थी, उसे पदकर मार्क्सको स्याल आया, कि फ्वारबाख शायद इस कामके लिये अपनी कलम उठाये। उसने पत्रमें लिखा था हेरशेलिंगने कितनी चतुराईसे फासीसियोंको ठगा: पहले दिल और दिमागके निर्वल कृजिनको और वादमें चमत्कारी लालको। पियर लाल और उसके सहकारी अब भी शेर्लिंगको एक ऐसा आदमी समस्ते हैं, जिसने अतिलौकिक विज्ञान-

चादके स्थानपर बुध्यनुसारी यथार्थवाद, निराकार विचारोंकी जगहपर रक्त-मांसके विचारोंको बाहरी दर्शनकी जगह विश्वदर्शनको स्थापित किया।... इसलिए ग्राप हमारे प्रकाशन तथा सत्यकी भारी सेवा करेंगे. ग्रगर ग्राप हमारे प्रथम श्रंकके लिये शेलिंगकी रूपरेखाको प्रदान करें। श्राप ही इस कामके लिये उचित पुरुष हैं, क्योंकि त्राप शेलिंगसे बिल्कल उलटे हैं। जहाँ तक शेलिंगका सम्बन्ध है, श्रपनी तक्साईके ईमानदार विचारोंके कारण वह हमारा सबसे अच्छा प्रतिद्वन्द्वी कहा जा सकता है। अपने इन विचारोंके लिये उसके पास कत्पना छोड़ कोई दूसरे साधन नहीं, ब्राहम्मन्यता छोड़ कोई दूसरी शक्ति नहीं, अभीम छोड़ कोई प्रेरणादायक वल नहीं, स्त्रैण गहणचमता के अनुक्सपनके सिवा कोई ज्ञान-साधन नहीं। उसके पास न्तरुगाईके स्वप्नसे बदुकर कभी कुछ नहीं थे, लेकिन तुम्हारे भीतर वह सत्य, वास्तविकता श्रीर पौरुषपूर्णं गभ्भीरता वन गये...इसीलिये में श्रापको प्रकृति श्रीर इतिहासकी यमल राक्तियों द्वारा नियुक्त रोलिंगका आवश्यक अीर स्वामाविक प्रतिद्वन्द्वी मानता हूँ । इन पंक्तियोंसे प्वारबाखके प्रति मार्क्सके उस समयके भाव प्रकट होते हैं। लेकिन फ्वारबंखिन मार्क्सकी प्रार्थनाको स्वीकार करनेमें श्रानाकानी की । उसने पहले रूरोको सहायता करनेका वचन दिया था, लेकिन पीछे इन्कार कर दिया। इसका यह ऋर्थ नहीं समक्कना चाहिये. कि फ्वारबाख पलायनचृत्तिवाला त्रादमी था। लेकिन, इस समय उसके पास काफी हिस्मत नहीं थी, कि जर्मनीके घोर प्रतिक्रियापूर्ण वातावरखमें फिर श्रपनी लौह लेखनी लेकर लड़नेके लिये तैयार हो जाता । उसने मार्क्सको यद्यपि बड़े सौहार्द्रपूर्ण श्राव्दोंमें जवान दिया, लेकिन, वह इन्कार छोड़ श्रीर कुछ नहीं था।

श्रध्याय ५

पैरिसमें (१८४३-४५ ई०)

१. "जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र"

मार्क्सने वडे उत्साहके साथ वर्षपत्रके सम्पादनको अपने हाथमे लिया, लेकिन पत्रका केवल एकही ऋंक दोहरी जिल्दोंसे फरवरी १८४४ ई० के ऋन्तसे प्रकाशितहो सका । यही उसका श्रादिम श्रौर श्रन्तिम श्रंक था । जैसा कि नामसे मालूम होता है, इस पत्र द्वारा फास और जर्मनी दोनो देशोंके मनीषियोंके नौदिक सहयोगकी स्राशाकी गई थी। जर्मनीकी विशेषता थी उसका हेगेलीय दर्शन, जोकि फ्रांसीसियोको केवल विज्ञानवादकी धुन्धर्मे मटकनेको प्रोत्साहन दे सकता था, श्रीर फ्रांसकी जर्मनीको विशेष देन हेगेलीय दर्शन के तीच्ए तरकी ग्रौर कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह निश्चयही श्रष्यातम श्रौर रहस्य-वादकी मरुभूमिमें भटकानेमें सहायक होता । रूगेने फासके तत्कालीन मनीषियों लामारतीन लामेने, लुई ब्लाकं, लारू, पूघोसे इसके बारेमें बातचीत की थी। केवल लारू और पूर्वो जर्मन दर्शनके बारेमें कुछ जानकारी रखते थे, उनमें मी एक पैरिससे बाहर रहता था, और दूसरेने लीनोटाइए मशीनके आविष्कारमें दिमागको खपाते श्रपनी लेखनीको विश्राम दे रखा था। श्रराजकतावादी लुई ब्लाक स्त्रीर दूसरोंने किसी तरहके सहयोग देनेसे इन्कार कर दिया । इस प्रकार जहाँ तक फ्रेंच लेखकोका सम्बन्ध था, वर्षपत्रको निराश होना पड़ा। लेकिन जर्मन लेखकोंके सहयोगमें जरूर सफलता मिली। सम्पादकोंके श्रतिरिक कवि हाइने, हेरवेग, श्रीर योहान याकोवी जैसे प्रथम श्रेणीके लेखकोंने श्रपने लेख मेने, द्वितीय श्रेखीके लेखकोंमें मोनेज-हेस, पलाटिनेटके तरुण वकील फ॰ सी॰ वैनेंज, तथा सबसे तब्स लेखक फ्रेडरिक (फ्रीडरिख) एगेल्स जैसोंके सुन्दर लेख मिले । एंगेल्सने नई तरहके लेखनचेत्रमें घूमते हुये अन प्रथम नार पूरा हिथियारतन्द होकर राजनीतिक चेत्रमें पैर रक्खा था। यद्यपि वर्षपत्रका उद्देश्य क्रांतिकारी विचारधाराका समर्थन करना था, लेकिन अब भी वह हेगेलीय दर्शन की कचामें ही घूमना चाहता था।

प्रथमग्रास मिल्कापातः हुआ, वर्षपत्रके युगल नम्बरके निकलते देर नही हुई, कि भगड़ेका बीजारोपए हो गया। वर्षपत्रमें पत्र-व्यवहार छुपा था, जो क्रो, प्वेरबाख, बकुनिनके पत्र-व्यवहार युग्र था। बकुनिन तरुए रूपी आंतिकारी था, जो ड्रेसडेनमें रूगेके साथ आकर रहने लगा था। पत्र-व्यवहारमें आठ चिट्ठियाँ थीं, जिनमें लेखकोंके हत्ताब्रर-संकेत दर्ज थे, जिनसे मालूम होता है कि उनमेंसे तीन-तीन पत्र मार्क्य और रूगेके थे और बकुनिन तथा फ्वेरबाखतके एक-एक। पीछे रूगेने दावा किया, कि पत्र-व्यवहार सारा मेरा लिखा हुआ है और केवल जहाँ-तहाँ ही वास्तविक पत्रोंसे उद्धरए लिये गये हैं: लेकिन वस्तुत: पत्र उन्होंके लिखे हुये थे, जिनके हस्ताब्रर-संकेत उनपर मिलते हैं।

वर्षपत्रके सम्बन्धमें कुछ उत्साहवर्डक सन्देश भी मिले थे, लेकिन उनका स्वागत वैसा नहीं हुआ। पहले तो फ्रेंच मनीषियोंका सहयोग न होनेसे उतका जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र नाम ही उचित नहीं मालूम होता। मार्क्सने तब भी कहा था, "इसमें कुछ उल्लेखनीय नातें हैं, जो कि जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।" लेकिन सनसनी पैदा करनेसे पहला काम यह हुआ, कि संचित निधि जल्दीही खतम हो गई। फ्रोवलने साफ कह दिया, कि जब तक और पैसा नहीं मिलता, में कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद वर्षपत्रके प्रकाशित होतेही प्रशियाकी सरकारने उसके विरुद्ध जहाद बोल दी। उसने बाहरके राज्योंपर भी दबाव डालना चाहा, लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई। फिर अपने सभी प्रदेशोंके गर्वनरोंको स्म अप्रताधवाली बातें हैं; साथही गर्वनरोंको यह भी हुक्म दिया, कि बिना हल्लागुल्ला किये जैसे ही प्रशियाकी सीमाके भीतर आवें उनके कागज-पत्रोंको जब्द करके रूने, मार्क्स, हाइने और हुनींको गिरफ्तार कर लिया जाय। सीमान्तपर भी सावधानी खलेके लिये राजाका निकाली गई और जैसेही वर्षपत्र भीतर च्याया, उसे जब्द कर लिया गया। राइन नदीके एक स्क्रीमरसे वर्षपत्रकी सी

कापियाँ जन्तकी गईं श्रीर वेर्गजावेर्नंके पास फ्रांसीसी सीमान्तपर दो सौसे श्रिधिक कापियाँ हाथ लगीं। यह श्रार्थिक चपत सीमित साधनोवाले प्रकाशकोंके वर्दाश्तसे बाहरकी बात थी।

पहले ही रूगेने मार्क्सको लिखा था: यारबुखेर मर गया श्रौर हेगेलीय दर्शन अब अतीतकी चीज है। आश्रो पैरिसमें ऐसे एक पत्रका प्रबन्ध करें. जिसमें हम पूर्ण स्वतंत्र श्रीर निर्मीक हो, ईमानदारीके साथ श्रपनी श्रीर जर्मनी की पूर्णतया त्र्रालोचना कर सके। लेकिन मार्क्सही वर्षपत्र जैसे प्रयत्नके मुख्य केन्द्र थे । सोचनेवाले स्वतंत्र दिमागोके लिये एक नये केन्द्रकी आवश्यकता वह मानते थे। यद्यपि अतीतके बारेमें सन्देहकी गुंजाइश नही थी, लेकिन वही बात मविष्यके बारेमें नहीं कही जा सकती थी । मार्क्सके शब्दोंमे : सुघारकोंमें श्राम श्रराजकता श्रीर फूट पडी है। वह समी यह स्वीकार करनेके लिये मजबूर हैं, कि मविष्यके बारेमें उनके पास कोई यथार्थ विचार नहीं है। तो भी नये श्रान्दोलनको यही एक बड़ा सुभीता है, कि हम नई दुनियाको रूदिवश पहलेसे कल्पित करना नहीं, बल्कि उसे पुराणकी आलोचनामें खोजना चाहते हैं। अब तक पहेलियोंके हलको दार्शनिक अपने लिखनेकी मेजपर तैयार रक्खे पाते थे, सारी बाहरी मूर्ल दुनियाको बस यही करना था, कि आँखोंको मूद ले, और पकी-पकाई परम-साइन्सकी पूड़ीको लेनेके लिये मुँह खोल दे। फिलासफीने श्रपनेको वाद-निष्पच्च कर लिया है, जिसका सबसे बड़ा सुबूत यही है, कि दार्श-निक चेतनाने सिर्फ ऊपरी तौरसे नहीं, बल्कि पूरी तौरसे युद्धकी ज्वालामे अपने-को डाल दिया है। हमारा कार्य यह नहीं है, कि पहले हीसे मविष्यको निर्माण करे और सभी समयकी सभी समस्यात्रोका हल तैयार करें; बल्कि निश्चय ही हमारा काम है साथ ही वर्तमान दुनियाकी निष्ठुरतापूर्वक आलोचना करना भी। निष्ठरतासे मेरा मतलब यही है, कि न हम अपने निष्कर्षींसेही लोहा लेनेमें भय खाये श्रीर न वर्तमान राज्य-शक्तियों लोहा लेनेमें।

यहाँ मार्क्सका वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपने मिविष्यके कृत्योंके बारेमें स्पष्ट है। वह कावेत, देजामी श्रीर वाइटर्लिंगकी तरह पहलेसे पके-पकाये साम्यवाद (कम्युनिष्म) की तरहके किसी वादका मंडा फहरानेकी इच्छा नहीं रखते। ऐसे सोशालिस्टोंकी विचारधारा मार्क्सको बिल्कुल पसन्द नहीं थी, जोिक सामयिक राजनीतिक प्रश्नोंको तुच्छ समस्ते थे। वह मानते थे कि राज्यके पारस्परिक
विरोध श्रादर्श श्रीर व्यावहारिक कल्पनाश्रोंके संघर्ष द्वारा सब कहीं सामाजिक
सत्यको खोज निकाला जा सकता है। इसलिये हमें राजनीतिकी श्रालोचना—
राजनीतिके वास्तविक संघर्षमें-भाग लेने से श्रपनेको रोकना नहीं चाहिये। इस
तरीके से हम दुनियाके सामने सिद्धान्तशास्त्रीके रूपमें पेश होने से श्रपनेको बचा
सकेंगे। 'यह सत्य है, सिर नधाश्रो श्रीर इसकी पूजा करो' कहते एक नये
सिद्धान्तको दुनियाके सामने उपस्थित करने से हम श्रपनेको बचा सकेंगे। हमें
दुनियाके लिये नये सिद्धान्त (नियम) उसके पुराने सिद्धान्तों निकालकर
विकसित करने होंगे। हमें दुनियाको यह नहीं कहना है: 'श्रपने कगड़ोंको
छोड़ो, वह मूर्खतापूर्ण हैं। हमारी बात सुनो, क्योंकि हमारे पास वास्तविक सत्य
है।' इसकी जगह हमें दुनियाको यह दिखलाना है, कि क्यों तुम्हें संघर्ष करना
पड़ता है, इस तरहकी चेतनाको चाहे दुनिया पसन्द करे या न करे उसे प्राप्त
करना होगा। संचेत्रमें मार्क्सने श्रपने नये पत्रके सामने प्रोग्राम रक्खा था:
संघर्षों श्रीर श्राकांचाश्रोंको श्रनुमय करनेमें युगको सहायता देना।

मार्क्स इस बातको अनुभव करने लगे थे, लेकिन रूगे अभी वहाँ नहीं पहुँचा था। मार्क्स वस्तुत: चालक थे और रूगे चालित, वर्षपत्रके निकालनेके समय यही बात साफ देखी गई। रूगे वैसे भी पैरिसमें पहुँचनेके बाद बीमार हो जानेसे सम्पादकीय कार्मोमें अधिक भाग नहीं ले सका, और सारा काम मार्क्सके ऊपर पड़ा। रूगे वर्षपत्रके बारेमें उन बातोंको नहीं कर सका, जिन्हें उसने सोच रक्ला था, तो भी उसने प्रथम अंकसे असंतुष्ट होकर कहा "कुछ उल्लेखनीय बातें इसमें हैं जो जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।"

पैसोंके अभावके कारण वर्षपत्रको आगे निकालना सम्मव नहीं था। रूगे आरे मार्क्समें मतमेद हों जानेके समय पैसेकी बात आई। पैसोंके सम्बन्धमें मार्क्सकी सदा उपेचा रही, जबकि रूगे एक-एक पैसेके लिये मरता था। उसने मार्क्सके वेतनमें पैसेकी जगह वर्षपत्रकी कापियाँ देनी चाही, लेकिन मार्क्सको

उस व्यापारका कोई श्रमुमव नहीं था। मार्क्सने रूगेको व्यर्थ ही समक्ताना चाहा, कि पहलीही श्रसफलतापर हथियार छोड बैठना नहीं चाहिये।

स्लोके श्रनुधार इस मागडेका तुरन्त कारण या हेरवर्गके वारेमे मार्क्सका विशेष पद्मपाती स्लो उसे वदमाश कहता था, जब कि मार्क्स उसे वहा होनहार समभते थे। स्लोके विचार श्रागे चलकर अधिक सत्य सावित हुये। तो भी इसका यह अर्थ नहीं, कि मार्क्स हेरवेगसे पूर्णतया प्रस्त थे। कुछ भी हो, ज्यादातर पैसे श्रीर वर्षपत्रकी असफलताने स्लो श्रीर मार्क्सको सदाके लिये एक वृस्रेसे अलग कर दिया।

२. दो लेख

मार्क्सने 'जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्रमें' श्रपने दो लेख प्रकाशित किये थे, जिनमें एक था 'हिगेलीय विघान-दर्शनकी श्रालोचनाकी भूमिका' श्रीर दूसरा या यहूदी समस्यापर श्रूनो वावर द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकोंपर टिप्पची। यह दोनो ही लेख मार्क्सके जीवनके उपाकालकी प्रगतिशील विचार-घारापर प्रकाश डालते हैं।

- (१) वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा—मार्क्षके पहले लेखमे धर्वहारा वर्ग-सघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा पेश की गई है, जब कि दूसरे लेखमे समाजवादी समाजकी दार्शनिक रूपरेखा दी गई है। मार्क्षने वतलाया, कि दर्शनका मौतिक हियार धर्वहारा है, उसी तरहसे धर्वहाराका वौद्धिक हियार दर्शन है—यहाँ दर्शनसे मार्क्षका मतलव है दन्द्रात्मक मौतिकवादी दर्शन। जनसाधारएमें जब इस दर्शनकी गहरी जह जम जायेगी, तो जर्मनोकी मानवके रूपमें मुक्ति होगी। जर्मनोकी मुक्ति मनुष्यकी मुक्ति होगी। जर्मनोकी मुक्ति मनुष्यकी मुक्ति होगी। जर्मनोकी नहीं विना नहीं हो सकती और धर्वहारा विना दर्शनकी अनुभूतिके अपनेको समाप्त नहीं कर सकता। तरुषा मार्क्षका यह लेख महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि दर्शनपर उनका काफी जोर है, जिसका अर्थ है हेगेलका प्रभाव अभी पूरी तौरसे ह्या नहीं है।
- (२) यहूदी समस्या—जर्मन-प्रेच वर्षपत्रमें ब्रूनो बावरकी इस विपयकी दो पुस्तकोंके सम्बन्धमें यह लेख मार्क्सने लिखा, जिसमें इस समस्याको इन्दात्मक

दृष्टिसे देखनेकी कोशिश की गई है। मार्क्सने कहा, कि विशेष ऋर्थिक स्थितिमें पड़े रहनेके कारण यहूदी लोग सद्खोर श्रीर वनिये वननेके लिये मजबूर हुये। फ्रीडरिक महान्ने ईसाई वेंकरों (महाजनों) को प्राप्त सुविधायें पैसेवाले यह-दियोंको दीं, जिन्होंने पैसा पैदा कर उससे अपने मेहरबान राजाकी सहायता की। यहूदी बड़े खुश थे, जब नई रोशनीके लोगोंने ईसाई धर्मकी स्नालोचना करनी शुरू की, क्योंकि यहूदी हमेशा ईसा और उसके धर्मको अच्छी नजरसे नहीं देखते थे । विचारस्वातंत्र्यकी उनकी माँग केवल दूसरोंके लिये थी, जहाँ तक श्रपना सम्बन्ध था, वह यहूदी मनोवृत्तिको छोड़नेके लिये तैयार थे । लेकिन तरुण हेगेलियोने ईसाई धर्म तक ही अपनी आलोचनाको सीमित नहीं रक्खा। भवारवाखने यहूदी धर्मको ब्रहंताका धर्म बतलाया-यहूदी ब्रपनी खास विशेष-तात्रोंको त्राज तक कायम रखे हुये हैं। उनका सिद्धान्त, उनका ईश्वर संसारका व्यानहारिक सिद्धान्त है, अर्थात् धर्मके रूपमें अहंता । अहंता मनुष्यको अपने भीतर केन्द्रित रखती है, साथ ही वह उसके सैद्धान्तिक दृष्टिकोग्एको सीमित कर देती है, क्योंकि जो भी चीज उसके श्रपने हितसे सीघे सम्बन्ध नहीं रखती, उसके प्रति वह उदासीन रहता है । बावर यहूदी समस्याको केवल धर्म-विद्याके चरमेसे देखना चाहता था। वह कहता था, कि इसाइयोंकी तरह ही श्रपने धर्मको बराबर यहूदी भी स्वतन्त्रता प्राप्त करते हैं। बावरकी रायमें यहूदियोंको पहले इसाइयत और हेगेलीय दर्शनका अध्ययन करना चाहिये, फिर स्वतन्त्र होनेकी बात सोचनी चाहियें। मार्क्स बावरके इस विश्लेषणको दोषपूर्ण समभते थे। ं उनका कहना था-यहदियों, ईसाइयों या सभी धार्मिक मृतुष्योंकी राजनीतिक मुक्तिका ऋर्थ है राज्यको यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और सभी धर्मोंसे मुक्ति, राज्यके तौरपर वैयक्तिक सम्पत्तिका प्रतिषेध करना। उत्तरी अमेरिकाके राज्योंकी तरह जहाँ मतदानमें धनकी योग्यताको उठा दिया गया है--- उसका यही ऋर्थ हो सकता है, कि राज्यने जन्म, सामाजिक स्थिति, शिद्धा श्रीर पेशेके भेदभावको छोड़, सार्वजनिक मताधिकार देकर वैयक्तिक सम्पत्ति श्रादिको हटा दिया है, लेकिन तो भी वह वैयक्तिक सम्पत्ति रखनेकी इजाजत देता है। शिक्षा श्रीर पेशेको भी उसने वैर्याक्तक सम्पत्ति, वैयक्तिक शिद्धा श्रीर वैयक्तिक पेशेके तौरपर कायम

रक्ला है। इन मेदोंको हटानेकी बात तो ऋलग राज्यका ऋस्तित्व पहले हीसे इन्हें मान लेता है। बुर्जा सम्यमें जिसे पूर्णतया विकसित राजनीतिक राज्य कहते हैं, उसका भी प्रमाव भौतिक जीवनमें विरोधके साथ मानवजातिके सामा-जिक जीवन तक ही सीमित रहता है। राज्यके चेत्रसे बाहर श्रव्हंता भरे इस जीवनकी सारी बाते बूर्ज्वां-समाजके गुयोंके रूपमे वनी रहती हैं। राजनीतिक राज्यका सम्त्रन्य श्रपनी कल्पनाश्रोके साय-चाहे वह कल्पनाये (सिद्धान्त) मौतिक तत्त्वों सम्बन्धी हों, जैसे कि वैयक्तिक सम्पत्ति, स्रथवा विचारिक तत्त्वो सम्बन्धी जैसे कि धर्म वस्ततः सार्वजनिक और वैयक्तिक हितोके बीचका विरोध ही है। श्रपने राज्यकी नागरिकताके साथ मनुष्य किसी खास धर्मके श्रनुयायी होनेके कारण एक निशेष सम्प्रदाय या धर्मके श्रनुयायीके तौरपर दूसरे स्रादिमयोसे जो विरोध रखता है, वह राजनीतिक राज्य श्रीर बूर्ज्वा-समाजके बीचका मेद भर है। बूर्ज़ा-समाज श्रानकलके राज्यका श्राधार है, जैसे कि प्राचीन समाजका त्राधार तत्कालीन दास-प्रथा थी। त्राधुनिक राज्य त्रस्तित्त्वमे त्रानेके साथ मनुष्यके श्राम श्रिषकारोकी घोषणा करता है, जिनके भोगनेके लिये यहूदियोको मी उतना ही श्रिषिकार है, जितना दूसरोको । मनुष्यके श्राम श्रिषिकारकी यह स्वीकृति ऋहंतापूर्ण बूर्जा-व्यक्ति श्रीर वौद्धिक तथा भौतिक तत्वोंकी अनाध गतिको स्त्रीकार करता है। यही बौद्धिक श्रीर भौतिक तत्त्व समसामयिक बूर्जी-समानके साथ उसके जीवनके सार हैं। वह मनुष्यको धर्मसे मुक्त नहीं करते, विल्क उसे धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं; वह मानवको सम्पत्तिसे स्वतन्त्र नहीं करते, विलक सम्पत्ति रखनेकी स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं। वह उसे व्यापारकी चुड़तासे स्वतन्त्र नहीं करते, बल्कि उसे व्यापारकी स्वतन्त्रता देते हैं। राजनीतिक क्रान्तिने सामन्तवादी व्यवस्था, तथा समी शिल्पी सघों, सभाश्रों, परिषदोंके--जो कि जनताके विल्गावके भिन्न भिन्न वाह्य रूप ये-पेवन्दोको नष्ट करके बूर्जा समाजको पैदा किया ।

मार्क्स उपसहारमें लिखता है—राजनीतिक मुक्तिका श्रर्थ है मानवको वृज्वी-समाजके एक मेम्बरके रूपमें परिण्व करना, उसे एक श्रीर श्रहंतापूर्ण स्वतन्त्र व्यक्ति तथा दूसरी श्रीर राज्यका नागरिक—एक नैतिक प्राणीके—रूपमें परिखत करना । मानवता तमी पूर्णातया. मुक्त हो सकेगी, जब कि वास्तिवक, वैयक्तिक मानवके रूपमें राज्यका निराकार नागरिक बदल जायेगा और अपने प्रायोगिक जीवनमें वैयक्तिक मानव, अपने वैयक्तिक काम, अपनी वैयक्तिक सिंधतियोंमें एक सामाजिक प्राची वन जायेगा, जब कि मनुष्य सामाजिक शक्तिकें तौरपर अपनी निजी शक्तियोंको स्वीकार और संगठित करेगा, जिसके कारण सामाजिक शक्तिको राजनीतिक शक्तिके रूपमें अपनेसे अलग नहीं रखेगा।

. यहदियोंके बारेमें मार्क्स पूछते हैं---यहदी धर्मका धर्म-निरपेच कौन सा · श्राघार है १ व्यावहारिक श्रावश्यकता, स्वार्थ । यहदियोंका धर्म-निरपेद्ध कौन-सा सम्प्रदाय है ! खरीदना और वेचना । उसका धर्म-निरपेच कौन सा ईश्वर है ! पैसा। इसके बाद मार्क्स कहते हैं—तो बहुत अच्छा—बेचने-खरीदनेसे पैसेसे मुक्ति अर्थात् व्यावहारिक, वास्तविक यहदियतसे मुक्ति हमारे समयमें है यहदियोंकी त्रात्म-मुक्ति । समाजका जो संगठन बेचने-खरीदनेकी त्रावश्यक स्थितियों अर्थात् वेचने-खरीदनेकी सम्मावनाको उठा देगा, वही यह दीपनको श्रसम्भव कर देगा। मार्क्का यहदियतके बारेमें विचार था, कि ऐतिहासिक विकार तथा स्वयं यहदियोंके उत्साहपूर्ण सहयोगके कारण साधारण यहदियतका सामयिक समाज-विरोधी तस्व ब्राजकी ऊँचाई तक पहुँचा। इस ऊँचाईपर उसे श्रवस्य श्रपनेको समाप्त करना होगा । मार्क्सने श्रपने इस लेखमें वतलाया. कि श्राजकी धार्मिक समस्याएँ सामाजिक विशेष समस्यासे श्राधिक कुछ नहीं हैं। उन्होंने यहदियतके विकासको धार्मिक कल्पनाओं श्रीर मतवादमें नहीं, बल्कि श्रीद्योगिक श्रीर न्यापारिक सेन्नमें दिखलाया. जिसका विचित्र प्रतिबिग्न यहुदी धर्ममें पाया जाता है। यद्यपि मार्क्षने इस लेखमें सामाजिक श्रीर व्यावहारिक कारखोंको बतलाकर नीचे उतरनेकी कोशिश की है, लेकिन अभी भी वह दार्शनिक चेत्रके सेर करनेसे बाज नहीं आये। मेरिंगके शब्दोंमें जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्रमें मार्क्ष अभी भी दार्शनिक खेतको बोत रहे हैं, लेकिन उनके हल्के-पैने फालके जो हराई बनी है, उसका पहला अंकर है इतिहासकी भौतिक धारणा, जो कि फ्रेंच सम्यताके उन्सा सूर्यके नीचे जल्दी हैं, फ़लने लगा ।#

^{*} Mehring, p. 73.

३ फ्रेंच्च सभ्यता

जर्मनी दर्शन विज्ञानवादी दर्शनकी भूमि समभी जाती थी क्योंकि उसने काट और हेगेल जैसे एकसे एक महान दार्शनिक पैदा किये। उसी तरह फ्रांस सामाजिक क्रान्ति, समाजवाद श्रीर भौतिकवादी दर्शनकी भूमि समका जाता था। मार्क्स और एगेल्सने हेगेलके दर्शनसे द्वन्द्वात्मकताको लिया और फाससे मौतिकवाद श्रौर समाजवादको । इसलिये फ्रांसकी राजधानीमें पहुँचकर मार्क्सका श्रीर भी इस श्रोर ध्यान जाना स्वामाविक था। महान् फ्रेंच-क्रान्तिने फ्रासमें समाजवादकी स्थापना नहीं की, लेकिन तब भी उसने सामन्तवादको खतम कर उसकी जगह बुर्ज्वावाद या पूँजीवादकी स्थापना करके समाजवादके लिये सम्माव-नाये जरूर पैदा कर दीं । विचार-बेत्रमें तो इस क्रान्तिने ऋौर मी जबर्दस्त प्रमाव डाला । जिस समय मार्क्स पेरिसमें पहुँचे, उस समय पूँजीवादी (बूर्ज्वा) सम्यताकी अगुत्रा सचमुच ही पैरिस थी। यद्यपि १७८६ ई० में ही बूर्जी-वर्गत्रिषिकारा-रूढ होने लगा या, लेकिन उसे पूर्ण सफलता १८३० ई० की जुलाईवाली कातिमें हुई । अधिकार प्राप्त कर अब बूज्वी-वर्ग आरामके साथ विश्राम ले रहा था। जब वहाँ नौद्धिक (विचारो)का समर्थ श्रनवरत चल रहा था, उसी समय जर्मनीमे बौद्धिक मृत्युकी नीरवता दिखाई पड़वी थी। मार्क्सके बारेमें १८४४ ई० में रूगेने फ्वारवालको सूचित किया था: वह बहुत मारी परिमाख्में प्रथोको पढता घोर परिश्रम कर रहा है। मार्क्यने सचसुच ही अपने दूसरे कामोको छोड़-कर बार-बार किताबोंके अनन्त समुद्रमें डुबकी लेनी शुरू की थी। कमी-कमी तीन-तीन, चार-चार रात वह चारपाईका सहारा नहीं लेते श्रीर लगातार श्रध्ययन में लगे रहते । ऐसे समय उनके स्वमावमें चिड़चिड़ापन पाया जाना श्रचरजकी बात नही थी । हेगेलके दर्शनकी आलोचना मार्क्स लिखना चाहते थे, लेकिन फेच महाकातिके ऐतिहासिक महत्वोके भीतर जितना ही वह भीतर धुसते जाते थे, उतना ही उसकी त्रोरसे उनकी उपेचा होती गईं। फ्रेंच क्रांतिके श्रथ्ययनके बाद वह बूर्बो-वशकी पुनःस्थापना-सम्बन्धी साहित्यके ऊपर पहें। फ्रासके इतिहासको पीछेकी स्रोर ११ वीं शताब्दी तक पढ़नेके बाद उन्होंने देखा, कि

फोंच इतिहास लगातार होते वर्ग-संघर्षीका एक प्रवाह है। इसके बाद वर्गीके श्रार्थिक दाँचेका अध्ययन किया. जिसमें रिकादोंकी श्रोर उन्होंने निशेष तौरसे श्यान दिया । त्राज कम्युनिस्टों मार्क्षवादियोंको वर्ग-संघर्षके सिद्धान्तका त्रारंभक माना जाता है, जिसका अर्थ है, कि यह मार्क्सका आविष्कार था। लेकिन, मार्क्सने इसका श्रेय लेनेसे हमेशा इन्कार किया। हाँ, मार्क्सने यह जरूर किया, कि वर्ग-संवर्षके लिये ऐतिहासिक प्रमाण जमा करके उसे ऋकाट्य बना दिया। मार्क्सने पता लगाया कि 'फ्रेंच तृतीय राज्य'ने १८ वीं शताब्दीमें शासक-वर्गके विरुद्ध जिस जबर्दस्त हथियारोंको सुबसे ज्यादा इस्तेमाल किया; वह भौतिक-चादका दर्शन था। मार्क्सने पेरिसमें रहते समय इस दर्शनका विशेष तौरसे न्त्रध्ययन किया, हेलवेसियो, होलवाखने किस तरह भौतिकवादको सामाजिक जीवनके साथं जोड़ा श्रीर मानव बुद्धियोंकी स्वामाविक समानता, बुद्धि श्रीर उद्योगकी प्रगतिके बीच ऋनिवार्य एकता, मानवताकी स्वामाविक मले होने श्रीर शिचाकी सर्वशक्तिमत्ताका तत्व समकाया । मार्क्सने उनकी शिचाको वास्तविक मानवताबाद कहा, जैसाकि उन्होंने फ्वेरवालके दर्शनके बारेमें कहा था। मेद इतना ही था, कि हेलवेसियो श्रीर होलवाशका भौतिकवाद साम्यवादका सामा-जिक त्राधार बन गया, जबिक फुवरबालके दर्शनमें यह क्षमता नहीं थी।

पेरिसमें मार्क्सको साम्यवाद श्रीर समाजवादके श्रध्ययनके लिये सभी तरहके सुमीते प्राप्त थे। वहाँ एकसे एक प्रतिभाशाली पुरुष उस वक्त मौजूद थे, उसका वातावरण समाजवादके कीटागुश्रोंसे भरा हुआ था। लेकिन जो अनेक तरहके समाजवाद पेरिसमें लोगोंको अपनी श्रोर खींचते देखे जाते थे, उनमें सबसे बड़ा दोष यह था, कि वह अपनी सफत्रताके लिये सम्पत्तिवाले वगोंकी शुभेच्छा श्रीर अपनी युक्तिप्रवीणतापर विश्वास करते थे। वहाँके समाजवादी विचारक अपने सामाजिक सुधारों या क्रांतिको सफलताके लिये शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा स्वामियोंको मनवा लेना भर पर्याप्त समक्तते थे। क्रांतिकर-करके भी सफलताका मुँह न देख अब वह वस्तुतः निराश से हो गये थे, श्रीर नहीं समक्तते थे, कि फिर उस तरहका कदम उठानेसे कुछ हाथ लगेगा। वह दुखोत्पीड़ित जनसाधारणकी सहायता करना चाहते थे, क्योंकि जनता अपने आप अपनेको उवारनेके लिये

कुळु करनेमें श्रसमर्थ थी। १८३० ई० में कमकरोंके विद्रोहके श्रसफल होनेसे उनके नेता सामाजिक क्रातिके लिये कोई सफल साघन नहीं देख पा रहे थे।

लेकिन, मजूर-श्रान्दोलन श्रौर भी तेजीसे बढता ही गया, कभी जर्मन कवि हाइनरिख हाइनेके शब्दोंमें : फासमें सम्मानके योग्य केवल कम्युनिस्ट ही एक दल है। मैं वही माव सेंट-साइमनके अवशिष्ट अनुयायियों...या फ़रियेवादयोंके बारेमें भी रखता हूं।-फ़्रिये अब भी जीवित तथा सिक्रय है। लेकिन यह लोग केवल शब्दसेही प्रेरित होते हैं...यह परम विश्वात्मा द्वारा नियतित्रद गुलाम उसके विराट निर्गायोंको पूरा करनेवाले दास नहीं हैं। देर या जल्दीमे चेंट साइमनकी सारी विखरी सेना श्रीर फूरियेवादियोंका सारा जेनरल-स्टाफ साम्य-वादकी बढ़ती हुई सेनाकी त्र्योर चला जायगा । हाइनेने उसी साल इन पंक्तियों-को लिखा था, जिस साल कि मार्क्स पेरिसमें पहुँचे। राइनिशे जाइटंग का सम्पादन करते समयही मार्क्स फासके दो प्रसिद्ध विचारकों लारू श्रीर पूधीसे परिचित थे, ये दोनों ही मजूरवर्गके श्रादमी थे। उसी वक्त मार्क्सने उनकी कृतियों को ऋच्छी तरह पदनेका निश्चय कर लिया था। दोनो लेखक इसलिये भी मार्क्स को अपनी ओर आकृष्ट करनेमें समर्थ हुये, क्योंकि वह जर्मन दर्शनको अपने उद्देश्योंके साथ सम्मिलित करना चाहते थे, यद्यपि उन्हें जर्मन भाषामेंही मौजूद उस दर्शनको पदनेमे बहुत कठिनाइयाँ थी । मार्क्सने हेरोलीय दर्शनका परिचय करानेके लिये पूर्वोके साथ घटो बिताये। कमी-कमी दोनों विचारमे एक-दूसरेके साथ हो जाते, लेकिन फिर जल्दी ही मतमेद हो जाता। प्रघोके मरनेके बाद मार्स्सने स्वीकार किया, कि प्रधोने मजूर-ब्रान्दोलनको जवर्दस्त प्रेरणा दी, श्रीर उसके द्वारा स्त्रयं मार्क्सको भी उसने प्रमावित किया । पृघोंकी पहली कृतिको मार्क्सने श्राधुनिक सर्वहाराकी प्रथम वैज्ञानिक घोषणा (मेनिफेस्टो) वतलाया। मार्क्सने फ्रेंच-क्रांति और उतके पीछेकी विचारधाराका अध्ययन किया। फ्रेंच समाजवादका ऊहापोह किया, फिर उन्होने सर्वहाराका ऋध्ययन ग्रारम्म किया।

इस प्रकार फ्रेंच सम्यताका श्रध्ययन मार्क्सने हल्के दिलासे नहीं, बल्कि वड़ी तत्परता, गम्भीरता के साथ सारी शक्ति लगाकर किया !

४ पेरिसके अन्तिम मास और निष्कासन

(१) प्रथम सन्तान-पैरिसमें रहते समय मार्क्स श्रीर जेनीकी पहली सन्तान पैदा हुई, जिसे अपने सम्बन्धियोंको दिखलाने वह जर्मनी गये। कोलोन-के पुराने मित्रोंका त्राव भी मार्क्षके साथ वैसा ही घनिष्ठ श्रीर सुन्दर सम्बन्ध था। उनके लिए एक हजार थालरोंके कारण मार्क्सको मेरिसमें निश्चिन्त रहकर श्रध्ययन करनेका बहुत सुभीता हुश्रा। हाइनिरख हाइनेसे मार्क्सका घनिष्ठ सम्बन्ध था। १८४४ ई० में मार्क्सेसे जो प्रेरणा हुई, उससे प्रभावित हो कविने जर्मन निरंकुश शासकोंके व्यंगके रूपमें ऋपनी महत्वपूर्ण कृति हेमन्ती कहा-नियाँ, जुलाहोंको गीत लिखी। यद्यपि देर तक दोनों एक साथ नहीं रहे, लेकिन मार्क्स हमेशा हाइनेके समर्थक रहे। मार्क्सने स्वयं तरुणाईमें कवि बननेकी चेष्टा की थी, यद्यपि जल्दी ही त्र्रापने त्तेत्रसे बाहर समम्कर उस प्रयासको छोड़ ही नहीं दिया, बल्कि अपनी उन रचनाओंको भी नष्ट होने दिया; लेकिन मार्क्सकी सहातुभृति त्र्याजन्म कवियोंके साथ रही। वह मानते थे, कि कवि एक विशेष प्रकारके मृतुष्य हैं, जिन्हें साधारण मृतुष्योंके गजसे नहीं नापना चाहिये । श्रुगर हम उनसे गीत चाहते हैं उन्हें कड़ी श्रालोचनासे परास्त करना नहीं बल्कि उनकी चाद्रकारिता करनी होगी। लेकिन जहाँ तक हाइनेका सम्बन्ध था, उसे मार्क्स कविसे ऋौर भी ऋधिक समम्रते थे। हाइने प्रतिमा-शाली कविके साथ-साथ योद्धा था; दीनों, दुखियों, सर्वहारोंके पच्चमें वह प्रभु-त्रोंसे लोहा लेनेके लिये तैयार या, ऐसे सोनेमें सुगन्ध नाले कविके साथ मार्क्सकी घनिष्ठता क्यों न होती ? १८३४ ई० में ही—जब कि मार्क्स ऋभी सोलह वर्षके विद्यार्थी थे-हाइनेने घोषित किया था, "हंमारे शिष्ट (क्लासिकल) साहित्यमें जो स्वतंत्रताकी भावना व्याप्त है, वह हमारे विद्धानों, कवियों श्रीर साहित्यिक पुरुषोंमें उससे कहीं कम सिक्रय है, जितनी कि हमारे शिल्पियों श्रीर कमकरोंकी साधारण जनतामें। मार्क्स दस साल बाद जिस वक्त पेरिसमें थे, हाइनेने फिर कहा थाः वर्तमान स्थितिके विरुद्ध संघर्ष करनेमें सर्वहारा प्रगति-शील स्नात्मात्रों, महान् दार्शनिकोंको अपने नेताके तौरपर पानेकी माँग कर

सकते हैं। मार्क्स श्रीर हाइनेकी श्रापसमें घितष्ठ बनानेके लिये कारण ये जर्मन दर्शन, फ्रेंच समाजवाद, श्रीर वह घृणा जो कि उस सूठे ट्यूटनवादके प्रति थी, जो कि जर्मन वेवकूफीके पुराने चोगेको उप्रवादी वाक्यों द्वारा नवीन बनाना चाहता था।

- (२) फोरवेड्स-न्य्रारम्पमें रूसी सामन्ती वर्गका मिखाइल बकुनिन स्तोका कृपापत्र या। जन मार्क्स श्लीर स्तोमें मतमेद पैदा हुआ, तो उसने मार्क्सका पद्म लिया। १८४४ ई० के नववर्षि फोरवेड्र्स के नामसे एक ऋर्घ-साप्ताहिक पत्र पेरिससे निकलने लगा था। "जर्मन फ्रेंच वर्षपत्र" के निकलने-का स्वागत "फोरवेड्स" ने गालियों किया, इसीसे मालूम हो सकता है, कि उसकी नीति क्या थी। इस पत्रने प्रशियन सरकारके ऋपापात्र बननेकी बडी कोशिश की, लेकिन अपने अन्धेपनके कारण सरकारने पत्रकी विक्री देशमे निषिद्ध कर दी थी। पत्रको भी रुख बंदलना पड़ा। वेर्नेज नामके एक तरुए लेखकने ऋपना एक गर्मागर्म लेख मेजा। इसका इतना स्वागत हुआ, कि कुछ समय बाद वेर्नेज सम्पादक बना दिया गया। इसी पत्रमें एक प्रशियन के नामसे रूगेने प्रशियन सरकार के खिलाफ शराबी राजा श्रीर लॅगडी रानी जैसे शब्दोंका उपयोग करते कई कड़े लेख लिखे। रूगे प्रशियन नहीं था, वह ब्रेस्डेन नगर परिषद्का एक सदस्य या, श्रीर ववेरियावासी वेनेंब--राइन-लैंड-वेस्टफालियारे आया था। दूसरा लेखक बोर्न्सटाइन इम्बर्गका था। ऐसी परि रिथितिमें फोरवेहर्स के इस लेखके लेखक मार्क्स ही समक्ते जा सकते थे। रूगेका सम्बन्ध मार्क्ससे कितना खराव हो गया या, यह उसके मार्क्सके प्रति इस्तेमाल किये पूरी तौरसे दुष्ट, दीठ यहूदी जैसे शब्दोंसे ही मालूम होगा। दो साल बाद उसने प्रशियाके गृह-मन्त्रीके पास ज्ञाम-प्रार्थना करते हुये पेरिसके अपने निर्वासित साथियोंके का मेद खोलकर विश्वासघात किया था, इसीलिये विल्कुल सम्मव है, कि रूगेने जान-वूमकर लेखको मार्क्सको बदनाम करनेके लिये पशियन के नामसे छपवाया हो।
 - (३) सर्वेहाराका पत्तपात—१८४४ ई० में सिलेसियाके बुनकरोंने विद्रोह कर दिया। मार्क्स सर्वेहाराको ही क्रांतिका ऋसली वाहक समम्तते

थे, इसलिये वह सर्वहाराकेकिसी संघर्षको महत्त्व दिये बिना नहीं रह सकते थे। लेकिन, रूगे कोई महत्त्व नहीं देता था। उसका कहना था: इसमें कोई राजनीतिक आत्मा नहीं है, और बिना राजनीतिक आत्माके कोई सामाजिक क्रांति सम्भव नहीं है। मार्क्सने बतलाया कि बूर्ज्व श्रौर सर्वहाराकी मुक्तिमें गहरा भेद है। बूर्ज़ि-मुक्ति सामाजिक कल्यास्की भावनासे उत्पन्न होती है, जब कि सर्वहाराकी मुक्ति सामाजिक वेदनात्रोंके कारण पैदा होती है। बुर्ज्वा-क्रांति राजनीतिक राज्य श्रीर कामनवेल्य (समान राज) से श्रलग रहकर होती है, जब कि सर्वहारा क्रांति मानवता श्रीर मानवताके वास्तविक कामनवेल्थ (समान राज्य) से त्रिलगावके कारण होती है। मानवतासे बिलगाव उससे कहीं अधिक गहरा, कहीं अधिक असहा, कहीं ऋधिक भयंकर ऋौर कहीं ऋधिक सहज विरोधी है, जितना कि राजनीतिक कामनवेल्य से विलगाव, ग्रीर इसीलिये इस विलगावको खतम करने की भावना चाहे श्रांशिक रूपसे ही क्यों न हो, सिलेसियाके बुनकरोंके बिद्रोह में है, श्रवएव वह कहीं अधिक जबर्दस्त घटनां है। इस प्रकार रूगेसे मार्क्सके दृष्टिकोणका भेद होना स्वामाविक है। मार्क्सके शब्दोंमें : ब्रनकरोंके केवल गीतको ले लो। कैसे विलद्धाग, जबर्दस्त, निष्ठुर श्रीर शक्तिशाली तरीकेसे सर्वहारा वैयक्तिक सम्पत्तिवाले समाजके प्रति अपने विरोधके नारेको पेश करता है। सिलेसीय विद्रोह वहाँ त्रारभ्भ होता है, जहाँ फ्रेंच त्रीर त्रंग्रेज विद्रोह (क्रांतियाँ) खतम हुई: वहींसे एक वर्गके तौरपर सर्वहारा-चेतनाके साथ सिलेसियाके बुनकरोंका विद्रोह त्रारम्म होता है। इसकी सारी कार्रवाई इस विशेषताको रखती है। इन विदोहियोंने केवल मशीनों और कमकरोंके प्रतिद्वनिद्वयोंको ही नहीं नष्ट किया, विलक व्यापारियोंके वहीखातों श्रीर उनके सम्पत्तिके दस्तावेजोंको भी नष्ट कर दियां । कमसे कम त्रारम्ममें सभी दूसरे त्रान्दोलन केवल उद्योगपतियों, दिखाई देनेवाले शत्रत्रोंके विरुद्ध हुये, लेकिन यह त्रान्दोलन ब्रहश्य शत्रु बैंकरोंके विरुद्ध भी है। अन्ततः सबसे बड़ी बात यह है, कि कोई भी अंग्रेजी विद्रोह इतनी हिम्मत, इतनी दृढ़ता श्रीर इतनी लगनके साथ नहीं किया गया था। इसी सम्बन्धमें मार्क्सने वाइटलिंगके चमत्कारपूर्ण लेखोंका भी जिक्र किया, को कि श्रपने दैदात्विक विचारों प्रश्नींस मी बद्द-चद्रकर था, यद्यापि जहाँ तक क्रियाका सम्बन्ध है, वह उससे पीछे, रहा। मार्क्सने कहा: श्रपने दार्शनिको श्रीर लेखकोको लेते क्या चूर्व्चाकी श्रपनी मुक्ति, राजनीतिक मुक्तिने सम्बन्धमें कोई ऐसी कृति पेश कर सकती है, जिसकी जुलना वाइटर्लिंगके हारमनी (स्वरस्ता) श्रीर स्वतंत्रताकी गार्रिट्यों से की जा सके १ इस जर्मन कमकरकी सराहना करते हुये मार्क्सने बतलाया, कि इसके सामने दूसरा जर्मन राजनीतिक साहित्य विल्कुल दिख् सा मालूम होता है, श्रीर यह मी, कि युरोपीय सर्वहारोंमें जर्मन सर्वहारा उसी तरह सिद्धान्तवादी है, जैसे कि श्रेमेंज सर्वहारा श्रर्थशास्त्री श्रीर फ्रेंच सर्वहारा राजनीतिक। मार्क्सका सिलेसियाके बुनकरोंके विद्रोहका मूल्यांकन श्राति रंजित कहा जा सकता है, लेकिन इसमें तो शक नहीं, कि वह उस शक्ति-स्रोतको पकडनेमे समर्थ हुये थे, जो कि श्रन्तसें वास्तविक सामाजिक क्राति करके समाजवादकी स्थापना करनेमें समर्थ होगा। समाजवादी दिमाग श्रीर सर्वहाराके शरतवलपर हुई रूसी क्रातिने इसी बातको प्रमाणित किया।

पेरिसमें "न्यायी सघ" (लीग आफ दी जस्ट) के नामसे कुछ कमकरोंने अपना एक संग्र स्थापित किया था, जो कि १८३० ई० के बादवाले सालोंमें उनके १८३६ ई० में अन्तिम पराजयके बाद फासीसी गुप्त समाओंसे पैदा हुआ या । संगठनके लिये यह पराजय अच्छी सावित हुई, क्योंकि उसके बाद संघके मेम्बर अपने विचारोंके लिये पेरिस ही नही इगलैंड और स्वीट्जलैंडके दूसरे केन्द्रोंमें बिखर गये, जहाँ पर उन्होंने अपनी शाखार्ये कायम कीं । पैरिसके संगठनका नेता डिजग-निवासी हेरमान इवेरबेक था । वह कैवेतके उटोपियन सिद्धान्तोंके जालमे फेंसा था, जिनका उसने जर्मन मालामें अनुवाद भी किया था । वाइटलिंग स्वीट्जलैंडमें आत्दोलनका नेता या और वह इवेरबेकसे बुद्धि-में कहीं बढ़-चढ़कर था । लीगकी लन्दन-शाखाके नेता ये घड़ीसाज जोजेफ मोल, मोची हाइनस्थि बावर और भूतपूर्व जंगलातका विद्यार्थी काले शापर, जो कि जन्दनमें प्रेसमें कम्पोनीटर और कभी मालाओका शिच्छ रहकर अपनी जीविका चलाता था । मार्क्सन इन तीनों "वास्तविक मनुष्यों" के बारेमें एंगेल्ससे सुना, जब कि इगलैंड जाते समय सितम्बर १८४४ मे पेरिसमें वह मार्क्सने मिले,

श्रीर उन तीनोंका जिक बड़े श्रादरसे किया। उस बार एंगेल्स दस दिन तक पैरिसमें रहे, श्रीर उन्होंने श्रपना सारा समय मार्क्क साथ बिताया। दोनोंने श्रपनी समान विचारधारा पर बहुत देर तक विचार किया श्रीर विचारोंमें दूर तककी एकता स्थापित करनेमें सफल हुये। इसी समय उनका पुराना मित्र खूनो वावरने मार्क्क श्रीर एंगेल्सके नये विचारोंका जबदंस्त समालोचक बन उस पर एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसी समय पता लगने पर दोनोंने जवाब देनेका निश्चय किया। एंगेल्सने तुरन्त बैठकर उसके बारेमें लिख डाला। मार्क्कने उस काममें हाथ लगा, श्रपने स्वमावसे मजबूर होकर श्रीर गहराईमें गये बिना नहीं रह सकते थे, इसलिये कई महीना लगाकर उन्होंने तीन सी पृष्टोंका एक ग्रंथ लिख डाला, जिसकी समाप्ति जनवरी १८४५ ई० में हुई, श्रीर उसीके साथ मार्क्कन पेरिसका निवास भी समाप्त हो गया।

फोरबेड्संसे रुघ्ट होकर बर्लिनकी सरकारने फांसकी सरकारसे पत्रको दवानेके किये कहा, लेकिन मंत्री गुइजो उसे माननेके लिये तैयार नहीं था। प्रशियन निरंकुशता श्रक्खड़ श्रीर श्रसंस्कृत थी, जब कि फांसके बूर्ज्वा-शासक काफी सम्य श्रीर संस्कृत थे, इसलिये गुइजोने बर्लिनको संतुष्ट करनेके लिये ऐसा कोई कदम उठाना पसन्द नहीं किया। लेकिन, जब मैयरं श्चेखने तत्कालीन प्रशियन राजा फ्रेडिरिक विलियम चतुर्थके ऊपर जुलाई १८४४ ई० में हत्याके उद्देश्यसे हमला किया, जिसके लिये स्टोरकोके मेयेर हाइनरिख लुडविंग श्चेखको उसी साल फाँसी पर चढ़ाया गया, तो जर्मन निर्वासितोंकी कार्रवाइयाँ उपेचापूर्वक नहीं देखी जा सकती थीं। गुइजोके मंत्रिमंडलने निश्चय किया, कि "फोरवेड्सं" के खिलाफ दो कामोंके लिये कार्रवाई की जाय: जिम्मेवार सम्पादक पर पर्याप गैसा श्रिकारियोंके पास न जमा करनेके श्रीर राजाकी हत्याके लिये मड़कानेके श्रपराधमें मुकदमा चलाया जाय।

बेर्नेजको जमानत न जमा करनेके लिये दो महीनेकी सजा श्रीर २०० फांकका जुरमाना हुआ, लेकिन तुरन्त ही "फोरवेड्से" ने घोषित कर दिया, कि भविष्यमें श्रव वह पत्र मासिक निकला करेगा। श्रव उस पर जमानतका कार्त लागू नहीं हो सकता था। वर्लिन फिर मी पेरिस पर दबाव डालती रही श्रीर

श्रालमें गुइनोको उक्त पत्रके सम्मादकों श्रीर लेखकोंको फांससे निष्कासित करने-की बात माननी पढी। एंगेल्सने जेनी मार्क्स श्रायोंके समय जो भाषण दिया या, उसमें बतलाया था, कि गुइनोने श्रालेक्जेडर फान हमनोल्टकी वातमें पढकर ऐसा किया था, निस्का कि न्याह द्वारा प्रशियाके वैदेशिक मत्रीके साथ सम्बन्ध या। बर्लिन सरकार हाइनेसे खास तीरसे नाराज हुई थी, क्योंकि कनिने प्रशिया-की स्थिति पर खास करके उसके राजाके ऊपर बहुत कड़े ग्यारह न्यगपूर्ण लेख लिसे थे। हाइने सारे युरोपमें प्रसिद्ध किन था। फ्रेंच लोग भी उसे करीज-करीज एक राष्ट्रीय किनके तौर पर मानते थे। ऐसे श्रादमीके साथ गुइनो— जो कि स्वयं भी साहित्यमें दखल रखता था—वर्लिनके श्रादेशके श्रनुसार वर्ताव नहीं कर सकता था, इसलिये किन पत्रके सम्मादकीय विभागका सदस्य नहीं है, यह कहकर उसने छुटी ले ली।

हाइनेको यद्यपि छुटी मिल गई। ११ जनवरी १८४५ को "फोरवेट्से" से सम्बन्ध रखनेके सन्देहमें कितने ही निर्वासितोंको देश निष्कासनका हुकुम मिला, जिनमें मान्से, रूपो, वकुनिन, बोर्नस्टाइन और वेनेंज भी थे। बोर्नस्टाइनने "फोरवेट्से" के प्रकाशनको बन्द कर देनेका बचन देकर छुटी ले ली। रूपे अपनेको राजमक सावित करनेकी कोशिश करता रहा। मार्क्स ऐसा कुछ भी करनेके लिथे तैयार नहीं था, क्योंकि समाजवाद, सर्वहाराकी मुक्ति और सामाजिक क्रांतिकी सेवाका संकल्प उन्होंने हलके दिलसे नहीं किया था। इस प्रकार एक सालसे कुछ अधिक पेरिसमें रहनेके बाद मार्क्सने असेलस जानेकी तैयारी की। यह अवसर मार्क्स लिथे और समाजवादके लिथे बडा महत्वपूर्ण सावित हुआ। इससे उनके अनुमव और ज्ञानकी वडी दृद्धि हुई। इस समयका उन्होंने पूरा उपयोग किया, इसमें शक नहीं। साथ ही उन्होंने इसी समय अपने कितने ही आजन्म साथियोंको प्राप्त करनेमें भी सफलता पाई।

अध्याय ६

फीडरिख एंगेन्स

मार्क्स श्रीर एंगेल्सका पारस्परिक सम्बन्ध—वैयक्तिक श्रीर क्रांतिकारी जीवन-दोनों का ही—श्रसाधारण था। एंगेल्स मार्क्स दो वर्ष बाद २८ नवम्बर १८३० को जर्मनीके वर्मेन शहरमें पैदा हुये थे, लेकिन वह जमल भाईसे भी वहकर थे। विचारोंमें, भावोंमें श्रीर पारस्परिक स्नेहमें इतना मेल श्रीर एकता दुनियामें शायद ह कमी दिखाई पड़ता हो। मार्क्सकी सारी जीवनीमें एंगेल्स साथ-साथ श्राते हैं। यहाँ एंगेल्सके श्रव तकके जीवनके वारेमें हम कुछ कह देना चाहते हैं।

१. बाल्य शिच्या—एंगेल्सका पिता धनी श्रीर एक कारखानेका मालिक था, इसलिये मार्क्स भी श्रन्छी हालतमें बाल्य-जीवनके वितानेके लिये वहाँ सारे साधन मौजूद थे। मार्क्सके पिताकी तरह उदार विचारोंके वातावरणमें पलनेका एंगेल्सको मौका नहीं मिला, इसलिये धार्मिक संस्कारोंसे श्रपनेको मुक्त करनेमें एंगेल्सको काफी मेहनत करनी पड़ी। साधारण पढ़ाईके बाद एंगेल्स एल्वरफेल्टके कालेजमें दाखिल हुए, जहाँ एक वर्ष रहकर श्रपनी पढ़ाई खतम करके वह पिताके कारबारमें शामिल हो गये। बहुत वर्षों तक लगे रहे, लेकिन उसमें उनका मन लग नहीं सकता था, क्योंकि वह सर्वहाराके मुक्तिका रास्ता ढूँद रहे थे। एंगेल्सके १८ वर्षकी उमरमें लिखे पत्रसे मालूम होता है, कि वह शराबको पसन्द करते थे श्रीर शराबका प्रेम उनका श्राजीवन रहा, यद्यपि वह हाईनेकी तरह पीकर बदमस्त हो गाने नहीं लगते थे।

मार्क्सकी तरह एंगेल्सने मी तरुणाईमें कविता-सरस्वतीकी आराधना शुरू की, लेकिन अपने ज्येष्ठ साथीकी तरह उन्हें भी जल्दी ही मालूम हो गया, कि वह अधिकारसे वाहरकी चीज हैं। जर्मन महाकवि गोथेकी तरह तरुण कवियों की सलाहको एंगेल्सने पसन्द किया, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ थीं: तस्य लिखनीचन्द, ध्यान दो उन च्च्यों में, जब द्वदय श्रीर श्रात्मा दोनों हर्षोत्फुक्स हैं, कि सरस्वती हो सकता है तुम्हारे साथ जाये, लेकिन वह कमी तुम्हारी पथ-प्रदर्शिका नहीं होगी।

एंगेल्सने गोथेकी सीख मिनष्यके लिये मन मान ली, लेकिन अपनी एक किताको प्रकाशित किये बिना नहीं रहे, क्योंकि दूसरे पट्टे, जो कि मुक्त जैसे या अधिक बड़े गदहे (ऐसा करते) हैं इस तरह मैं जर्मन साहित्यके तलको न उठा सकता हूँ, न गिरा सकता हूँ। फिर अपनी किताको प्रकाशित करनेमें क्या हर्ज १ एंगेल्सने खिस्तान पुराया के नामसे चार सगोंमें अपनी किताको उसी समय प्रकाशित किया था, जिस समय कि बूनों नानरको प्रोफेसरीसे निकाला गया। यह व्यंगपूर्य खड काव्य खिस्तान पुराया जूरिचके पास नो मुन्स्टर (स्वीट्जलैंड) में प्रकाशित किया गया। इसकी कुछ पिक्योंमें एगेल्सने अपने और मार्क्षक बारेमें भी लिखा है। उस समय तक अभी मार्क्षके साथ एंगेल्सका साज्ञात परिचय नहीं हुआ था:

किन्तु जो लम्बी टाँगवाला बायें बहुत दूर तक नान्तता है,
वह श्रोसवाल्ड है जिसकी कोट मटमैली श्रौर बीचस् काली मिर्चेके रंगकी है,
मिर्च बाहर श्रौर मिर्च मीतर घोटनाटवाला श्रोसवाल्ड ।
खोपडीसे एडी तक पूरा श्रत्यंत उप्रवादी,
वह एक हथियार छोड़ता है, जो गिलोटिन है,
श्रौर उसके तारों पर वह कवाटीन गाता ।
सदा नारकीय गीत बजाता, रुककर चिल्लाता
बनान्नो तुम बटालियन ।
कौन बैपवां हो श्रपने रास्तेपर श्राक्रमस् करता है ?
ट्रीरका एक काली मौंवाला, एक पक्का टट्ट्,
जो न चलता न फुदकता, बल्कि ऐड़ी लगानेपर कूदता है,
श्रौर श्रपने हाथोंको हवामें ऊपर तानता है,
मानों उसका गुस्सा तुरंत पकड लेगा,

स्वर्गके प्रतापी खेमेको श्रौर उसे धरतीपर फाड़ फेंकेगा मुट्टी बाँधे भयदायक मुक्केसे वह बिना रुके धमकाता है, मानों दस हजार शैतान उसकी छापीपर नाच रहे हों।

१० जनवरी १८३६ के एक पत्रसे मालूम होता है, कि १६ वर्षकी उमरमें अत्र यह प्रतिमाशाली तरुए " तरुए जर्मनी" के उथले साहित्यसे ऊन गया था। उसने उस समयके फैशनेन्नल किवयों श्रीर साहित्यकारोंका मजाक उड़ाते हुये कहा था: यह पट्टा थ्योडोर मंडट सुन्दरी तेगलियोंनके नारेमें कूड़ा— करकट काफी परिमाएमें लिपिनद्धकर रहा है, जो कि गोथेकी किवताकी न्याख्याके रूपमें नृत्य करती है। वह श्रपनेको गोथे, हाइने, राहेल श्रीर स्टीगलिट्जसे उधार लिये हुये सूक्त पत्तोंसे श्रलंकृत करता है। बुटिनाके वारेमें वड़ी कीमती मूर्खताश्रोंको लिखता है। श्रीर हाइनरिख लीने। यह पट्टा एकके बाद एक श्रविद्यमान पात्र श्रीर ऐसी यात्राकी कहानियाँ लिखता है जो कि यात्राकहानियाँ नहीं हैं, मूर्खता के ऊपर मूर्खताको निलोता जा रहा है। यह भयंकर है।

वर्मीन धर्मभीक्ताका गढ़ है, इसलिये एंगेल्सको उसके फन्देसे निकलनेमें काफी मेहनत करनी पड़ी, जैसा कि तरुए एंगेल्सके एक पत्रके निम्न उद्धरणोंसे मालूम होता है: मैं प्रतिदिन, बल्कि प्रतिदिन, बल्कि प्रायः सारे दिनभर सत्यके लिये प्रार्थना करता हूँ, और यह तबसे बराबर करता आ रहा हूँ, जबसे कि मेरे भीतर सन्देह उत्पन्न होने लगा, लेकिन तब भी भगवान मैं तुम्हारे विश्वासकी ओर लौट नहीं सकता ।.. इन पंक्तियोंके लिखते समय आँस् निकल रहे हैं। मेरे हृदयमें गहरा मन्थन हो रहा है, लेकिन मैं अनुभव करता हूँ, कि मैं खोया नहीं गया हूँ। मैं जरूर उस भगवानका रास्ता पाऊँगा, जिसको कि मैं आपने सम्पूर्ण हृदयसे चाहता हूँ।

एंगेल्सके मनमें जब इस तरहके संघर्ष चल रहे थे, उसी समय अपने सन्देहोंको दूर करनेके लिये वह धार्मिक नेताओंकी पुस्तकोंको पढ़ने लगे, जिससे वह डेविड स्ट्रॉसके विचारों तक पहुँचे। स्ट्रासने जरूर प्रभाव डाला। दलदलसे निकलनेकी पहली स्चना उनके एक पत्रसे मिलती है: "मैं अब हेगेलीय होने वाला हूँ | मुक्ते नहीं मालूम, मै वह हो सकूँगा यह नहीं, लेकिन स्ट्रॉसने मेरे लिये हेगेलपर प्रकाश डाला है । वह बहुत युक्तियुक्त मालूम होता है । पट्टेका इतिहास-दर्शन जो भी हो, मुक्ते वह विलकुल अपने हृदयके अनुकूल मालूम होता है ।"

इस प्रकार स्ट्रॉसने एगेल्सको धार्मिक नास्तिकतामें लाकर छोड़ दिया, लेकिन फिर एगेल्सको राजनीतिक नास्तिकतामें घुसनेमे देर नहीं हुई। वह राजतंत्र ग्रौर प्रशियाके राजाके सम्बन्धमें भी नास्तिक हो चले, जैसा कि उन्होंने प्रशियाके राजाकी प्रशसा करते हुये किसीको सुनकर कहा था: "मै केवल उसी राजासे कुछ मशी चीज की ग्राशा रखता हूँ, जिसका दिमाग ग्रमनी जनताके घूसेसे भायल हो गया ग्रौर जिसके महलके जंगले कातिके पत्थरों मेर महराकर गिर रहे हैं।"

अन्त्वर १८४१ से अन्त्वर १८४२ तक एक साल में एंगेल्स वर्लिनमें वोपलानेमें सैनिक सेवा करते कुप्फरप्रावेनकी वारिकोमे रहते थे, जो उस घरसे नातिवूर था, जिसमें कभी हेगेल रहता श्रीर वह अन्तमे मरा। वहाँसे कितनी ही बार एगेल्सने "ढ्वाशे या खुखेर" (जर्मन वर्षपत्र) स्त्रीर "राइनिशे जाइद्धना" में लेख मेजे। फीजी वर्दीमें वह खुलकर अपना नाम कैसे दे सकते थे ! इसलिये यह लेख फ्रीडरिख श्रोसवाल्डके नाम से छुपे थे । ६ दिसम्बर १८४२ को एगेल्सकी कही आलोचनाके पात्र एक लेखकके साथ सहानुभूति दिखलाते हुये गुजकोफने लिखा या: "फ्र० स्रोचनाल्डको साहित्यसेत्रमें प्रवेश करनेकी कुसेवाकी जिम्मेवारी दुर्माग्यसे मेरे ऊपर है। सालों गुनरे, जबकि एगेल्स नामक एक तक्या न्यापारीने ब्रेमेनसे वृप्पेर्ल्जंटनकी स्थितिके बारेम पत्र मेजे थे। मैंने उसको शुद्ध किया, बहुत ज्यादा मडकानेवाली पंक्तियोंको काटकर उसे छाप दिया। इसके बाद उसने और भी मामूली चीने मेनीं, निन्हें भुक्ते सदा फिरसे लिखना पडता। फिर एकाएक उसने संशोधन करनेसे मना कर दिया। हेगेलको पढने श्रीर दूसरे पत्रोंमें श्रपने लेख मेजने लगा। तुम्हारी श्रालोचना जत्र निकली, उससे योडे ही पहले मैंने वर्लिनमें उसके पास पन्द्रह थालर (पौंड) मेजे थे। हमेशा इन जवान पट्टोंका दंग है: सोचने श्रीर

लिखनेको सीखना हमारी मददसे फिर उनका पहला स्वतंत्र काम होता है बौद्धिक पितृहत्या। निश्चय ही, वह बुराई इतना ऋषिक नहीं फूल-फल सकती थी, यदि राइनिश जाइटुंग और रूगेका यत्र उसके लिये न होते।"

एंगेल्स त्राफिसमें व्यापार के सम्बन्धमें एक योग्य कर्मी थे, श्रीर बैरकमें भी षह एक योग्य सैनिक रहे । उस दिनसे अपने जीवनके अन्त तक सैनिक विज्ञान का ऋष्ययन एंगेल्सका दिलचस्प विषय था। वर्लिनके सैनिक सेवावाले समयमें एंगेल्सका सम्बन्ध ''स्वतंत्र मानवों'' से हुत्रा। ग्रमी स्वतंत्र मानव उतने ज्यादा फ़ुद्रमग्ज नहीं बने थे। उनके विवादोंमें एंगेल्सने भी एक दो लेख लिखे थे। श्रमैल १८४२ में (२२ वर्षकी उमरमें) एंगेल्सकी एक ५५ पृष्ठोंकी पुस्तिका "लाइपजिग" में लेखकके नामके त्रिना प्रकाशित हुई, जिसका नाम था, "शेलिंग श्रीर भगवद्-ज्ञान"। कवि शेलिंगको बुढ़ापेमें पैगम्बर बननेका शौक चरीया था, ग्रीर उसे भगवान्की श्रोरसे प्रेरणा तथा ज्ञान मिलने लगा था। शेलिंगने स्वतंत्र दर्शनपर स्त्राच्चेप करते हुये पुरानी वातोंका समर्थन करना शुरू किया या। वह चाहता था. कि वर्लिनमें युनिवर्सिटीसे हेगेलीय दर्शन हटे श्रीर उसकी जगह मेरे सम्बन्धी विश्वासोंको पढ़ाया जाय । एंगेल्सकी पुस्तिकाको रूगेने चक्किनिनकी समभा था श्रीर उसने होनहार तरुएकी प्रशंसा भी की थी। इसी समय बनो बावरको प्रोफेसरीसे हटाया गया, जिसपर एंगेल्सने "खस्तान पुराण्" के नामसे चार सर्गका खंड-काव्य लिखा, जिसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं।

सालभरकी सैनिक सेवा खतम हो जानेके बाद १८४२ के सितम्बरके अन्त में एंगेल्स अपने घर लौटे, लेकिन दो महीनेके बाद ही वह इंगलैंडके लिये खाना गये, हो एरमेन और एंगेल्स नामक कताई मिलमें क्लर्कका काम करने लगे— इस मिलमें उनके पिता भागीदार थे और पिताके कारबारको सँमालनेका यह आरम्भ था। १८४२ ई० में इसी यात्राके समय वह कोलोनमें जाकर पहले पहल मार्क्षके साज्ञात सम्पर्कमें आये। वैसे "राइनिश जाइट्रुग" में उनके लेख पहले निकले थे। मार्क्स कठोर यथार्थवादी दिमागके पुरुष थे। वह सहसा किसी की लम्बी-चीड़ी बातोंमें नहीं आते थे, विशेषकर मध्यवर्गके ऊपर उनकी आस्था बहुत कम थी। इसीलिये इस पहली मुलाकातमें मार्क्सने भावी सारे जन्मके साथी के साथ उत्साह नहीं दिखलाया। मार्क्स अन "स्वतंत्र मानवों" से ऊन नुके थे और उनसे सम्बन्धविन्छेद करने वाले थे और बावर-बन्धुओं के पत्रोंके कारण एगेल्सके प्रति अन्छे मान नहीं रखते थे।

२ इंगलैंडमे

इगलैंडमें २२ वर्षके तरुण एंगेल्सने पहली बार २१ मास बिताये। इस प्रवासका एंगेल्सके जीवन श्रीर विचारोपर वैसा ही प्रभाव पड़ा, जैसा कि मार्क्स-पर पेरिसके निवासका । पेरिस यदि भौतिकवादी दर्शन श्रीर फ्रेच-क्रातिकी भूमि थी, तो इगलैंडने भी जबर्दस्त श्रीद्योगिक काति की थी, जिसके कारण कूर्जा-वर्गके आरम और विकासका वहाँ अच्छी तरह अध्ययन किया जा सकता था। इगलैंडने ग्रीबोगिक-काति फ्रेंच-क्रातिसे एक शताब्दी पहलेकी थी, जिसके कारण उसे समानकी ऋल्य-विकसित अवस्थामें ही अपनी क्रांति करनी पढी थी। यदि श्रिधिक विकसित स्थितियों में क्रामवेलके नेतृत्वमें सामतवादी व्यवस्थापर प्रहार हुआ होता, तो शायद यहाँ मी सामन्तवादके अवशेष न रह जाते । समय से पहले होने के कारण इगलैंडके बूर्जा-वर्गने सामन्तो श्रीर उनके मुखिया -राजासे समम्मौता किया था। श्रंग्रेज मध्यमवर्गको राजा श्रीर सामन्तासे उतना तीव और लम्बा संघर्ष नहीं करना पड़ा जैसा कि फ्रासमें "तृतीय राज्य" को करना पडा। "तृतीय राज्य" का संघर्ष वर्ग-संघर्ष या-यह फ्रेंच ऐतिहासिको को बहुत पीछे पता लगा, लेकिन इंगलैंडमें वर्ग-संघर्षके विचारोका ख्याल तब हुआ, जब कि सर्वहाराने १८३२ ई० के सुधारविषेयक (बिल) के समय शासकवर्ग से संघर्ष छेडा।

एगेल्सने अब हेगेलीय दर्शन और द्वन्दात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण्के अध्ययन के बाद इस स्थितिमे थे, कि इंगलैंडकी औद्योगिक-क्रान्तिके इति-हासके मीतर छिपे तत्वोको समम् सकते। इंगलैंड और फ्रान्समें से एकमें गगा-जमुनी सामन्तवादी-पूँजीवादी ढाँचा रहना और दूसरेमें सामन्तवादी प्र माबसे मुक्त शुद्ध पूँजीवादी व्यवस्थाका कायम होना अवस्थ किन्हीं कारणों से था। इसका एक कारण यह था, कि इंगलैंडमें बड़े पैमानेके उद्योगका विस्तार उससे कहीं अधिक गहराईके साथ हुआ था, जितना कि फ्रान्समें । अपने उद्योगका विकास करते समय इंगलैंडने पुराने वर्गों—सामन्तों-जमींदारों—को नष्ट करके उनकी जगह नये वर्ग की स्ष्टि की । आधुनिक चूर्जा-समाजका भीतरी दाँचा जितना इंगलैंडमें स्पष्ट दिखाई देता था, उतना फ्रांसमें नहीं । एंगेल्सने इंगलैंडके उद्योगके स्वरूप और इतिहासका अध्ययन करते हुये जाना, कि आर्थिक तथ्य ही वहाँ निर्णायक ऐतिहासिक शक्ति थे, जिनके आधारपर वर्त्तमान वर्ग विदेष विकसित हुआ । वहे पैमानेके उद्योगके विकासके कारण राजनीतिक दलों और राजनीतिक संघर्षोंका विकास हुआ, इस प्रकार आर्थिक तथ्य ही इंगलैंडके सारे राजनीतिक इतिहासके आधार ठहरे ।

एंगेल्सका इंगलेंडकी श्रौद्योगिक विकासके श्रध्ययनकी श्रोर दिलचस्पीका एक कारण यह भी था, कि वह स्वयं ऋपने बापके मिलमें काम करते समय नजदीकसे उद्योगको देख रहे थे। "जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र"में मार्क्सने जहाँ विधान-के दर्शनकी त्रालोचना की थी, वहाँ एंगेल्सने त्रपने लेखमें राष्ट्रीय ऋर्थ-नीतिकी त्रालोचना की थी। यद्यपि वह लेख ऋभी २३-२४ वर्षके तरु एकी लेखनीसे निकला था, लेकिन उसमें श्रपरिपक्वता नहीं दिखाई पड़ती थी। जर्मन कुछ वड़ी नाकवाले लेखक इस लेखको बिल्कुल विश्वंखलित श्रीर ग्रस्त-व्यस्त कहते थे, तो मार्क्सने उसे चमत्कारिक रेखांकन घोषित किया था। रेखांकन मात्र तो या ही, क्योंकि एंगेल्स अपने इस लेखमें राष्ट्रीय अर्थनीतिके वारेमें बहुत विस्तार श्रीर गहराईमें नहीं जा सके थे। बुर्ज्वा-ग्रर्थशास्त्रके विरो-घोंका असली कारण वैयक्तिक सम्पति है, इसे बतलाते हुये तरुण एंगेल्स पूर्घोंसे भी त्रागे बढ़ गये थे। पूधों वैयक्तिक सम्पत्तिसे उसकी त्रपनी भूमिपर लड़ते रहे । एंगेल्सने अपने इसे लेखमें पूँजीवादी होड़के अमानुषिक परिणामों, माल-थसकी की जनसंख्याकी थ्योरी (वाद) पूँजीवादी उत्पादनके सदा बढ़ते प्रवाह, भोंक, व्यापारिक-संकट, मजूरी-कानून, साइन्सकी प्रगतिकी विवेचना की। साइन्सके बारेमें उन्होंने कहा, कि वैयक्तिक सम्पत्तिके शासनसे मानवताकी मुक्ति त्र्यादिके साधन होनेकी जगह वह मानवताकी दासताकी कड़ियांको मजबूत करने-

का साधन बन गया है। उनके इसी लेखमें वैज्ञानिक साम्यवाद का बीज आर्थिक चेत्रमें देला गया। साम्यवादको ठोस स्त्राधिक त्राधार प्रस्तुत करने सम्बन्धी प्रथम प्रयत्नका श्रेय एंगेल्एको दिया जाना चाहिये। लेकिन एंगेल्ए श्रपने ज्येष्ठसे इतने प्रमावित श्रीर उनके प्रति इतने श्रनुरक्त ये, कि उन्होने श्रपनी महान् देनोंका कोई ख्याल नहीं किया। वह घोषित करते : मेरे ग्रार्थिक लेखोको अन्तिम आकार देनेका श्रेय मार्क्सको है, कभी लिखते : "मार्क्स अधिक महान् श्रीर श्रिषिक दूर तक देखनेवाले थे। वह हम सर्वोसे श्रिषिक जल्दी तत्वों को देख लेते थे, और कहीं बची-खुची अपनी देनको मी यह कहकर नगएय कर देते : इमने जिसे पता लगाया, उसे मार्क्स भी पता लगा लिये होते । लेकिन वास्तविकता यह है, कि श्रार्थिक चेत्रमें वैज्ञानिक साम्यवादकी प्रथम भूमि तैयार करनेवाले एंगेल्स थे। यह हमें माल्म ही है, कि पुराने समाज-वादियों श्रीर साम्यवादियोंकी यही निर्वलता थी, कि वह साम्यवादकी स्थापना दिमागी सघर्ष त्रीर हृदय-परिवर्त्तन द्वारा करना चाहते थे। मार्क्टके वैज्ञानिक समाजवादने उस निर्वल नीवको छोड आर्थिक शोषराके आधारपर प्रहार करते संघर्ष करनेका रास्ता निकाला। श्रार्थिक शोषसके कारस जब कुछ मुद्री भर शोषकोंको छोड जनताका सबसे अधिक माग अपनी रोटी, जीविका और मविष्यकी चिन्तामें चौबीस घटे परेशान रहता हो, तो वह संपर्ध मानुकतापूर्य सोडेकी बातलकी उफानकी तरह चिएक नहीं हो सकता, उस सप्वकी प्रत्येक असफलता उसके मानी नेग और शक्तिको बढानेनाली तथा प्रत्येक असफलतासे शिचा लेनेका अवसर देनेवाली होती है। एगेल्सने जिस तत्वको बीजरूपेण अपने इस लेखमें दिखलाया था, इसमें शक नहीं, उसे चरम सीमा तक विक-सित करना मार्क्सका काम था। इसमें सन्देह नहीं, कि मार्क्स एंगेल्सकी अपेद्धाः अधिक दार्शनिक गति रखते ये, मार्क्सका दिमाग इन गहन तत्त्रोंके भीतर धुसकर परिगामपर पहुँचनेके लिये अधिक अशिन्तित और न्नमता रखता था।

वर्षपत्रमें छुपे एगेल्सके दूसरे लेखमें मी अभी पुराने दार्शीनक इष्टिकोसा का प्रमाव दिखाई पडता है कि उन्होंने इंगलैडकी परिस्थित पर विवेचना करते हुये घोषित किया, कि सारे वर्षकी साहित्यिक प्रसलमें यही पढ़ने लायक

है। फ्रांस की साहित्यिक समृद्धिके मुकाबिलेमें एंगेल्सने अंग्रेजी साहित्यको बहुत दिख् बतलाया । ऋंग्रेज उस समय तक हिन्दुस्तानके राजा हो चुके थे । १८५७ ई॰ के स्वतंत्रता-युद्धमें ग्रामी वारह-तेरह वर्षोंकी देरी थी। उस वंक्तके शिक्ति ऋंग्रेजोंका मुल्यांकन करते हुये एंगेल्सने ऋपना विचार प्रकट किया था : वह सारी दुनियामें ऋत्यन्त घृणास्पद दास हैं, ऋौर पच्चपातों, विशेषकर धार्मिक व्हिष्कि पच्चपातोंसे भरे हुये हैं: "श्रंग्रेज समाज का केवल एक ही भद्र भाग है, जिसे युरोपमें मजूर कहते हैं, श्रीर जो इंगलैंडका परिया (श्रछत) गरीव है, चाहे वह उसमें कितना ही मोटा-फोटा और भीर हो। इंगलैंडको मुक्तिकी आशा इन्होंसे हो सकती है। वह अशिक्ति हैं, लेकिन उनमें पक्षात नहीं है, शिक्ता के वह अब्छे पात्र हैं। उनमें अब भी एक वड़े राष्ट्रीय आन्दोलनके लिये पर्याप्त जीवट है, उनके पास अब भी भविष्य है।" एंगेल्सने शिच्चित ऋंग्रेजोंकी कूड़-मग्जीकी वानगी दिखलाते हुये लिखा था, कि स्ट्रांसके ईसाके जीवन को किसी भद्र अनुवादकने अंग्रेजीमें ग्रन्वादित करनेकी हिम्मत नहीं की. ग्रीर न किसी प्रसिद्ध प्रकाशकी उसे प्रकाशित करनेका साहस दिया । एक समाजवादी लेक्चरर ने उसका अनुवाद किया है। लन्दन, वर्मिक्सम और मेन्चेस्टरके मजदरोंमें वह विक रही है।

इंगलैंडका शिक्ति-वर्ग जहाँ इस तरह मृहतामें पड़ा हुआ था, वहाँ जर्मनी में प्वारवाल कहता था: "अब तक सदा यही सवाल उठाया जाता था, कि भगवान क्या है! जर्मन-दर्शनने हमें उत्तर दिया है: भगवान मनुष्य है, मनुष्यको अपने आपका सालात्कार, अपने आपके प्रति जीवनकी सभी स्थितियोंका नापना, अपने स्वरूपके अनुसार उनके बारेमें फैसला करना, अपने निजी स्वभावकी माँगों के अनुसार पूरी तौरसे मानवी फेशनमें दुनियाको बनाना है, बस उसने हमारे युगकी पहेली हल कर दी।" मार्क्यने तुरन्त फूबारवालके "मानव" की मनुष्य, राज्य, समाजके तौरपर व्याख्या की, और एंगेल्सने मनुष्यके स्वभावकी उसके इतिहासके रूपमें समभा।

मार्क्स त्रौर एंगेल्सकी विचारधारात्रोंमें त्रसाधारण समानता थी। कमी-कमी एक ही विचार दोनोंके दिमागमें काम करते थे, इसमें हेगेलीय द्वन्द्वात्मक दर्शन

श्रीर समाजवादी दृष्टिकोण मुख्य कारण या, इसमें कोई सन्देह नहीं। इन्हीं साधनोंसे सम्पन्न होकर मार्क्स फ्रेंच-काित श्रीर वहाँ मे मौतिकवाद के गम्मीर समुद्रमें गोता लगा रहे थे श्रीर एगेल्स श्रग्रेजी उद्योग-धन्चेके विकास श्रीर नये श्राधिक सम्बन्धकी विवेचनामें संलग्न थे। मार्क्सने मानवके श्रधिकारोंके श्राधार पर यह निष्कर्ष निकाला, कि वृद्धां-समाजका स्वमाव श्रराजकतापूर्ण, व्यवस्था-हीन है। एगेल्सने प्रतियोगिता (होड) के वारे मे कहा: "यह श्रर्थशास्त्रियों-का मुख्य पदार्थ, उसकी प्रिय कन्या है।...ऐसे कानूनके वारेमें हम क्या सोचे, जो कि व्यापारिक संकटोंसे समय-समयपर होनेवाली क्रांतियोंके परिणामस्वरूप हो काम करता है १ यह सीधा-सादा स्वामाविक कानून है, जो कि श्रपने सम्बन्धित द्यांके श्रात्मचेतनाहीन श्रवस्थापर श्राधारित है।"

३. "पवित्र परिवार"

मान्से श्रीर एगेल्सने मिलकर सबसे जिस पहली कृतिको लिखा, वह यही पुस्तिका थी। बूनो बावर श्रीर उसके दो माइयो एडगर श्रीर एगेवर्टने दिसम्बर १८४३ मे श्रपने ऐसे दार्शनिक विचारोंको प्रकाशित किया, जो श्रव मार्क्स श्रीर एगेल्सकी दृष्टिसे प्रतिगामी थे। बूनो बावर श्रपनेको दार्शनिक श्राकाशमें विचरण करनेवाला गर्द्ड समस्ता था, मार्क्स राजनीतिमे प्रवेश श्रीर उसके सम्बन्धमें क्रांतिकारी विचारोंसे उसकी कोई सहानुभूति नहीं थी। बावरके विचारसे मुक्तिका रास्ता केवल शुद्ध दर्शन, शुद्ध ख्योरी (वाद) श्रीर शुद्ध समालोचना है। जिस जनताके ऊपर मार्क्स श्रीर एगेल्सका पूर्ण विश्वास था, वह समस्तते ये कि मुक्तिका युद्ध सफलतापूर्वक इन्होंके द्वारा लडा जा सकता है; उसके बारेमें बूनो वावरके विचार थे: "श्रव तक इतिहासके सभी बड़े-बड़े श्रान्दोलन पथ-भ्रष्ट श्रीर प्रारम्म हीसे श्रसफल होनेके लिये मजजूर थे; क्योंकि जनसाधारण उसमें दिलचस्पी रखते या वड़े उत्साहके साथ उसके पद्धमें थे; श्रयवा वह इस्तिये बडी बुरी तरह खतम हो गये, क्योंकि जिस विचारपर वह केन्द्रित थे, उसके लिये विल्कुल ऊपरी समस्त-वूक्तसे श्रिक्त की श्रावश्यकता नहीं थी, श्रीर इसीलिये जनसाधारण उसके वारेमें श्रमा हर्ष प्रकट कर सकता था। बुद्धि

1

न्नीर जनसाधारण इन दोनोंका विवाद वावरके दिमागको परेशान किये हुये था। ज्ञानके लिये वावरके वही विचार थे, जो कि रूढ़िवादी गीताके निम्न शब्दों में मिलता है:

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"

वावरकी तरह की धारणा हमारे यहाँके ज्ञानवादी स्त्राज भी रखते हैं। सभी जन-स्रान्दोलनोंको बावर घृणाकी दृष्टिसे देखता था, चाहे वह इसाइयत, यहूदी धर्म जैसे धार्मिक चेत्रोंमें हो, चाहे समाजवाद, फ़ेंच-फ़ांति या श्रंग्रेजी श्रीद्योगिक क्रान्तिके रूपमें सामाजिक च्लेत्रमें हो । ज्ञानको पवित्रतम माननेवाले स्त्रभी भी हमारे वहाँ श्ररविन्दों, रमण महर्षि या किसी दूसरे रूपमें सन्त श्रीर भगवान् वनकर पूजे जाते हैं, ऋौर कितने ही दर्शनके प्रोफेसर उनकी चरण-धृलि ललाटमें लगाकर अपनेको घन्य समभते हैं। लेकिन, ज्ञान (विज्ञान) वादी हेगेलीय दर्शन श्रीर उसके श्रनुयायियोंकी श्रालोचना करते हुये एंगेल्सने बहुत नर्मी दिखलाते हुये भी, त्राजसे १०६ वर्ष पहले लिखा था: इस (ज्ञानवाद) का सङा-गला हैंगेलीय दर्शन उस बृद्धी डाइन जैसा है, जिसका शरीर सूलकर अपने पहले रूपसे घृणाजनक ढाँचेके रूपमें बदल गया है, लेकिन वह अब मी श्रपनेको श्राभृषित श्रीर श्रलंकृत करती प्रेमी पानेकी श्राशासे चक्कर लगाती है। जब हेरोलने घोषित किया, कि परमविज्ञान सृजनात्मक दुनिया विश्वात्मा हैं जो पीछे केवल दार्शनिकमें ही सचेतन हुआ, तो उसका अर्थ यही था, कि परमिवज्ञानने त्र्रापाततः कल्पनामें इतिहास बनाया । उसने स्पष्ट तौरसे इस गलतीको पहले ही कह दिया, कि दार्शनिक व्यक्ति स्वयं ही परंमविज्ञान है।

मार्क्स श्रीर एंगेल्सने वावरकी श्रालोचनाका नाम "श्रालोचनात्मक श्रालोचनाकी श्रालोचना" नाम रक्खा था, लेकिन पीछे प्रकाशक के सुक्ताव-पर उसे पवित्र परिवार नाम दिया गया। मार्क्स निक्तार श्रीर गम्भीरतामें जाने के स्वभाव के कारण यह पुस्तक भी ३०० पृष्ठि श्रीधक की हो गई। लेख कोंने समक्ता था, कि इसके श्रीधक में साधारण जनताकी उतनी दिलचरपी नहीं होगी। लेकिन उनका यह ख्याल ठीक नहीं सावित हुआ। इस ग्रंथमें समालोचना संबन्धी सूद्म बुद्धिका ही परिचय नहीं मिलता, बल्कि लेखकोंकी श्रद्भुत प्रतिमा

शैलीपर पूर्ण त्रिषिकार श्रीर माषाकी श्रति सुसंत्रद्धता पाई जाती है, जिसके कारण मार्क्सकी कृतियों मे यह श्रेष्ठ मानी जा सकती है।

बावरने लिखा था, कि यह राज्य ही है, जो कि वूर्जी-समाजके श्रालग-श्रालग कर्यों को इकट्ठा करके रक्खे हुये हैं। मार्क्सने इसका जवाब दिया: वह इसलिये इकट्ठा पकड़कर रक्खे हुये हैं, क्योंकि वह कर्या केवल दिमागमें है, श्रापनी दिमागी उद्यानके स्वर्गमें है। किन्तु वस्तुत: वह कर्योंसे मारी मेद रखते हैं, श्रार्थात् वह दिव्य श्राहंतावादी नहीं, बल्कि हंवावाले मानव-प्राणी हैं। "श्राज केवल राजनीतिक महामूद ही यह कल्पना कर सकते हैं, कि बूर्जी-जीवनको राज्य एकताबद्ध करता है।" बावर ऐतिहासिक ज्ञानमें उद्योग श्रीर प्रकृतिको महत्व देनेपर नाक-मौं सिकोइता था, जब कि मार्क्स उनके बिना ऐतिहासिक ज्ञानको भ्रान्त घारणा मात्र मानता था, जब तक कि ऐतिहासिक ज्ञान मनुष्यके प्रकृति, प्राकृतिक विज्ञान श्रीर उद्योगके प्रति श्रान्ने सद्धान्तिक श्रीर व्यावहारिक मनोमावको ऐतिहासिक श्रान्दोलनसे श्रालग करता रहेगा:

"ज्ञावर नैसोंका ऐतिहासिक विचार नैसे अनुभूतिसे चिंतनको, शरीरसे आत्माको अलग करता है, वैसे ही वह इतिहासको प्राञ्चितक विज्ञान और उद्योग-धन्चेसे अलग करता है, इतिहासकी जन्मस्थान पृथिवीकी मौतिक उपज करने मालकी अपेद्धा स्वर्गके अस्पष्ट बादलोकी बनाचटोंको मानता है।"

जिस प्रकार मान्स्वेन स्त्रालोचनात्मक स्त्रालोचनाका खंडन करते हुये फँच-फ्रांतिका समर्थन किया, वैसे ही फौरोरके विचारोंको खंडन करते हुये एंगेल्सने इंगलिश इतिहासका समर्थन किया स्त्रीर श्रौद्योगिक-फ्रांतिने वहाँ जिन नई व्यवस्थात्रोंको लानेका प्रयत्न किया, उनके ऐतिहासिक श्रौचित्यका समर्थन किया।

पिनत्र परिनारके लिखनेके समय (१८४४ ई०) अभी मार्क्स और एंगेल्स पुरानी दार्शनिक विचारघारासे पूर्णतया मुक्त नहीं हो सके थे। अभी भी वह क्षेत्रवालकी देनोंको जरूरतसे ज्यादा महत्व देते थे। "पिनत्र परिनार" में क्षिरियेकी उटोपियन विचारधाराका मी प्रमान देखा जाता है। क्ष्रिरियेने ऐति-हासिक विकास और स्वतत्र मजदूर-आन्दोलनके महत्व पर जोर दिया था।

एडगर बावरेके तर्कका जवाब देते हुये एंगेल्सने कहा था: "त्रालोचनात्मक त्रालोचना" कुछ नहीं निर्माण कर सकती, जब कि मजूर सब कुछ निर्माण करते हैं।... त्रांगेज त्रीर फेंच मजूर इसके प्रमाण हैं। एडगर बावरने प्रूधोंके विचारों पर त्रालेप किया था, इसपर मार्क्सने प्रूधोंका जबर्दस्त समर्थन किया था, यद्यपि कुछ सालों बाद मार्क्सने प्रूधोंकी कड़ी त्रालोचना भी की। मार्क्सने त्राधिक चेत्रमें प्रूधोंके प्रारंमिक प्रयत्न त्रीर सफलताकी सराहना की, त्रीर उसकी त्रप्र्णताको मानते हुये बतलाया, कि यह वैसी ही त्रप्र्णता है, जैसी कि चूनों बावरकी धर्मविद्या-सम्बन्धी त्रप्र्णतायें।

"पवित्र परिवार"का ऋधिकतर सम्बन्ध यद्यपि दर्शन श्रीर दार्शनिक तत्वोंसे है, लेकिन मार्क्सने यहाँ अपने मौतिकवादी विचारों ख्रौर वैज्ञानिक समाजवाद के सम्बन्धमें भी कितनी ही बातें कही हैं। फ्रेंच समाजवादी पूधों बूज्निके श्रार्थिक-व्यवस्थाके श्रान्तरिक विरोधके श्राधार पर सम्पत्तिकी व्यवस्था करता है. जब कि मार्क्सने घोषित किया: वैयक्तिक सम्पत्ति धनके तौर पर त्रापनी सत्ता रखते हुये त्रपने विरोधी सर्वहाराको कायम रखनेके लिये मजबूर है। यह विरोधका घनात्मक पद्म है। वैयक्तिक सम्पत्ति अपने आपमें पर्याप्त है। लेकिन सर्वहाराके तौरपर वह अपनेको कायम रखने नहीं बल्कि खतम करनेके लिये मजबूर है, श्रौर उसी समय श्रपने प्रतिरोधीको भी, जो कि उसे सर्वहारा बनाता है। सर्वहारा उस विरोधका ऋणात्मक (ऋमावात्मक) पद्म उसका ध्वंसमान पद्म है, जो कि नष्ट होता है श्रीर स्वयं नष्ट होते हुये वैयक्तिक सम्पत्तिका भी विलोप करता है। त्र्रातएव इस विरोधके भीतर सम्पत्तिका स्वामी स्थिति-स्थापक है क्रौर सर्वेहारा ध्वंसकः एकका काम है विरोधको कायम रखना श्रीर दूसरेका उसे नष्ट करना । अपनी आर्थिक गतिमें वैयक्तिक सम्पत्ति अपने ध्वंसकी ओर बढ़ती है।...जत्र सर्वहारा विजयी होता है, तो वह समाजका ऋखंड (परम) पद्म नहीं बन जाता, क्योंकि वह तभी विजयी हो सकता है, जब कि वह अपने और अपने प्रतिनिधि दोनोंको विलोप कर दे । इसके साथ सर्वहारा केवल अपने हीको नहीं, बल्कि त्रपने प्रतिरोधी-वैयक्तिक सम्पत्तिको मी विल्लप्त करता है।

मार्क्सने ऋपने सर्वहारा प्रेमको उसके प्रति देवता श्रों जैसी भक्तिके रूपमें

नहीं दिखलाना चाहा, बल्कि छर्वहाराके छारे दोषोंके रहते हुये भी उसकी दुर्दम्य क्रांतिकारिया श्रीर खननात्मक शक्तिको देखकर ही उनमें यह पच्चपाक पैदा हुआ।

४. इंगलेखके मजूर

१८४४ ई॰ में एंगेल्सने अपने अय "इंगलेडमें मजूर वर्गकी स्थिति" को समाप्त किया, जो कि १८४५ ई० के ग्रीव्ममें लाइपजिगमें विगाट द्वारा पका-शित हुआ । विगाट ही "ड्वाशे याखुखेर" (जर्मन-वर्षपत्र) का भी प्रकाशक था। एगेल्सकी यह पुस्तक एक मौलिक समाजवादी कृति है। इस पुस्तकमें एगेल्सने अपने प्रत्यवेद्ध्य और स्फाके अनुसार अप्रेज मज्रोकी दयनीय दशाका वर्णन करते बतलाया है कि उत्पादनके पूँजीनादी ढंगने किस तरह वहाँ घीर दिखताको फैलाई । मजूरोंकी दुरवस्थाका वर्णन कितने ही श्रग्रेच लेखक कर चुके थे, जिन्हें एगेल्सने जगह-जगह उद्भुत किया है। असहा दिखताका वर्णन करके पाठकोंके हृदयमे शोषकोंके प्रति क्रोध श्रौर शोषितोंके प्रति सहानुसूति पैदा की जा सकती है, लेकिन भावकताचे उस दुखका निवारण नहीं हो सकता। इसी-लिये एगेल्स्ने दुखके निदानकी स्रोर विशेष तौरसे ध्यान दिया है। २४ वर्षके तस्य लेखकने अपने इस प्रथ द्वारा दिखलाया कि उत्पादनके पूँजीवादी दगकी श्रात्माको वह कितना श्रन्छी तरह समक्ता है। उसने केवल जूजांके उत्पादक ही नहीं, बल्कि उसके पतनकी, सर्वहाराके दुखकी ही नहीं, बल्कि उसकी मुक्तिकी मी सफलतापूर्वक व्याख्या की है । बतलाया है, कि कैसे बड़े पैमानेके उद्योगने श्राष्ट्रनिक मजूर-वर्गको पैदा किया, शरीरसे जीर्थ-शीर्थ बुद्धिसे श्रष्ट श्रीर चरित्र-बलमें पशुताके नजदीक पहुँचे अमानवीकृत आधुनिक मजूर-वर्गको पैदा किया. श्रीर कैसे ऐतिहासिक इन्द्रवाद—जिसके कानूनोको एगेल्सने विस्तारपूर्वक यहाँ खोलकर दिखलाया है--की प्रक्रियाकी सहायतासे मज्द-वर्ग विकसित हो रहा है श्रीर वह श्रानिवार्यतया वहाँ तक विकसित होगा, वत्र कि वह श्रापने विधाता ﴿ पूँचीवादी उत्पादन व्यवस्था) को उखाङ फेकेगा । एगेल्सने बतलाया कि इगलेडमें सर्वहाराका शासन मजूर-म्रान्दोलनके समाजवादके साथ विलयनके

परिणामस्वरूप होगा । एंगेल्सकी यह पुस्तक समाजवादकी दृढ़ श्राधारशिला बनी। इसकी शैली श्रीर गम्भीरताको देखकर कुछ लम्बी नाकवाले पंडितोंने भावोद्रेकमें घोषित किया, कि इस पुस्तकने समाजवादको युनिवर्सिटीके योग्य बना दिया। इतिहासकी प्रगतिको द्वन्दात्मक कार्य-कारण प्रक्रियासे विश्लेषण करते हुये मार्क्स श्रीर एंगेल्स भविष्यकी श्रोर भी दूर तक देख सकते थे। यह कोई ज्योतिषियों श्रीर योगियोंकी मविष्यवाणी मविष्यदृद्दिः नहीं थी, यदि वह भविष्यके बारेमें भी कुछ, कहते थे। उनका अनुसन्धान और दृष्टि कभी गलती नहीं देखी गई, लेकिन कालके बारेमें वह भविष्यद्वाणियाँ कितनी ही बार गलत सावित हुई। एंगेल्सके कथनानुसार इंग्लेंडमें सामाजिक क्रान्ति तुरन्त तो क्या ग्रमी तक नहीं हुई । इसे एंगेल्सने अपनी पुस्तकके लिखनेके पचास वर्ष बाद स्वयं त्तरुणाईका उत्साह कहा था । एंगेल्सकी इस कृतिको पूर्ण श्रीर प्रकाशित हुन्ना देखनेके लिये मार्क्स बहुत ऋघीर थे। उन्होंने ऋपने एक पत्रमें जोर देते हुये लिखा था : अपनी अर्थशास्त्रीय कृतिको अन्ततः पूरा कर ही डालो, चाहे द्वम उससे पूरी तरह संतुष्ट न हो। इसकी कोई पर्वा नहीं। लोगोंके दिमाग इस-वक्त तैयार हैं। हमें इसी समय प्रहार करना चाहिये, जब कि लोहा गरम है।...समय जोर दे रहा है, इसलिये ऐसी कोशिश करो कि अप्रेल तक तुम उसे समाप्त कर सको। वहीं करो जैसा कि मैं करता हूँ: एक ऐसी तारीख निश्चित करलो, जब कि तुम अवश्य उसे समाप्त कर दोगे, फिर इसकी कोशिश करो, कि जितना हो सके उतना जल्दी छुप जाये। अगर वहाँ वह नहीं छप सकती; तो मान्हाइम डर्मस्टाट या श्रीर कहीं कोशिश करो, लेकिन सत्रसे बड़ी चीज यह है, कि वह जल्दी प्रकाशित हो।

मार्क्स जिस तरह एंगेल्सकी कृतियोंकी अधीर होकर प्रतीचा करते थे, वहीं चात मार्क्सके बारे में एंगेल्सकी भी थी। दोनों मित्रोंकी इस तरह पत्र द्वारा चातचीत हो रही थी, इसी समय वर्मेंनमें खत्रर आई कि मार्क्सको पेरिससे निष्का-सित कर दिया गया। एंगेल्सने तुरन्त पैसा जमा करना शुरू किया और मार्क्सको सूचित करते इसमें सफलता होगी कहते वतलाया: मैं नहीं जानता, कि यह पैसा तुम्हारे बुसेल्स-निवासको ठीकठाक करनेके लिये पर्याप्त होगा। लेकिन,

मैं साथही इस बातका उल्लेख करना चाहता हूँ, कि मेरी पहली अंग्रेजी किताबसे जल्दी ही जो पारिश्रमिक मिलनेवाला है, उसे मैं बड़ी खुशीसे कमसे कम अंशतः आपके कामके लिये रखता हूँ। जो मी हो वर्तमानमे मुक्ते उसकी आवश्यकता नहीं,...शत्रु अपने दुष्कृत्योंके परिशामस्वरूप आपको पैसेकी कठिनाइयाँ पैदा करनेकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकेंगे।" एंगेल्सने एक पीढ़ी तक इसीलिये अथक परिश्रम किया, कि शत्रु मार्क्सको पैसोकी परेशानीमे डालकर खुशी न मनाये।

ब्रशेल्समें निर्वासित (१८४५-४८ ई०)

११ जनवरी १८४५ को फ्रांसकी सरकारने जर्मन क्रांतिकारियोंको देशसे निकल जानेका हुकुम दिया, जिनमें मार्क्स भी थे। मार्क्सने पेरिस छोड़ परिवार-को ले बुशोल्सका रास्ता लिया। एंगेल्सको शंका थी कि बेल्जियममें भी मार्क्सको चैनसे रहने नहीं दिया जायेगा । जल्दी ही यह त्राशंका सत्य सिद्ध हुई । हाइने-को लिखे त्रपने पत्रमें मार्क्सने बतलाया था, कि ब्रुशेल्स पहुँचनेके तुरन्त ही बाद मुमे बुलाकर इस शर्त पर हस्ताचर करनेके लिये कहा गया, कि मैं बेल्जियमकी राजनीतिपर कोई बात नहीं छापूँगा । मार्क्वने इस शर्तको स्वीकार कर लिया, क्योंकि वैसे किसी काम करनेकी उनकी न इच्छा थी श्रीर न सम्मावना थी। लेकिन प्रशियन सरकार बेलिजयम सरकारके ऊपर मार्क्सको निष्कासित करनेके लिये दबाव डाल रही थी। मार्क्स ऋब भी प्रशियांके नागरिक थे। इस दबावसे बचनेके लिये उन्होंने यही अञ्छा समभा और १ दिसम्बर १८४५ को प्रशियन नागरिकताका परित्याग कर दिया। उस समय श्रीर उसके बादमें भी मार्क्स किसी देशके नागरिक नहीं बने, यद्यपि १८४८ ई० के वसन्तमें फ्रेंच गण्राज्यकी श्रस्थायी सरकारने उन्हें बड़े सम्मानके साथ फ्रेंच नागरिकता प्रदान की थीं। लेकिन वह सरकार स्वयं अधिक दिनों तक टिक नहीं सकी । फ्राइलिग्राथ, कुछ दूसरोंके पीछे मार्क्षको भी इंगलैंडमें निर्वासित जीवन बिताते समय वहाँके स्वामाविक निवासी होनेके दस्तावेजको लेनेमें एतराज नहीं हुआ।

१८४५ ई० के वसन्तमें ही एंगेल्स बुशेल्स आये। फिर दोनों मित्र साथ ही अध्ययनके उद्देश्यसे छ हफ्तेके लिये इंगलैंड गये। पेरिसमें रहते समय मेक-क्लोच (Macculloch) और रिकाडोंके अर्थशास्त्रका मार्क्सने अध्ययन किया था। अत्र उसने इंगलैंडके अर्थशास्त्रीय साहित्यमें गहरी डुबकी लगाई, यद्यपि इस समय अभी वह उन्हीं पुस्तकोंको देख सके, जो कि एंगेल्सके निवास- स्थान मेन्वेस्टरमे मिल सकती थी, तथा जिनके नोट एंगेल्सने ले रक्खे थे। अपने इंगलैंडके प्रथम निवासके समय एंगेल्सने राजर्ट अप्रोवेन (१७७१-१८६० ई०) के एत्र The New Moral World (नव नैतिक विश्व) तथा चार्टिस्टोके पत्र (The Northern Star) (उत्तरी तारा) में लेख लिखे थे। दोनों मित्रोने अवकी यात्रामे इंगलैंडके चार्टिस्टों और समाजवादियोसे नये सम्पर्क स्थापित किये।

१. "जर्मन-विचारघारा" (१८४४-४८ ई०)

हेगेलके दर्शनके तौरपर अभी भी जर्म न-विचारधारा दोनों वन्धुअभेका पीछा कर रही थी। इस यात्रासे लौटनेके बाद मार्क्सने अपनी एक नई सम्म-लित कृतिके आरम्म करनेके वारेमें लिखा था: "हमने एक साथ मिलकर जर्मन दर्शनकी सम्मतियों श्रीर विचारधाराश्रोके विरुद्ध श्रपने निजी दृष्टि-कीया पर काम करनेका निश्चय किया। वस्तुतः यह ऋपनी पहलेकी दार्शनिक चेतनासे लोहा लेना था। हमने इसे पीछेके हेगेलीय दर्शनकी समालोचनाके रूपमें किया। अक्टेव आकारकी दो बडी-बडी जिल्दोमें पुस्तक्की हस्तलिप वेस्टफालियाके एक प्रकाशकके हाथमे दी जा चुकी थी, जनकि हमें सूचना मिली, कि वदलों हुई परिस्थितिके कारण उसका प्रकाशित करना समव नहीं है। इसपर हमने अपने हस्तलेखको चूहोंके कुतरनेकी आलोचनाके लिये त्याग दिया। ऐसा करनेमे हमे कोई अफ़सोस नहीं हुआ, क्योंकि हमारा जो मुख्य उद्देश्य था, वह सफल हो गया था-श्रपने साथ हमारा समभौता हो गया था।" मार्क्को बात ठीक थी, क्यांकि हस्तलेखपर चूहोने सचमुच ही अपने दॉत साफ किये, श्रीर जो कुछ उसका बचा-खुचा माग रह गया, उससे पता लग जाता है, कि क्यो प्रथकर्ना-युगल हस्तलेखके इस प्रकार नष्ट होनेसे उदास नहीं हुये। यह दोनों जिल्दे वडे आकारके ८०० एछोमें थीं, जिनके दर्शनके साथ, उसीके हिथयारों द्वारा लोहा लिया गया था। पुस्तकका नाम था "नर्मन विचारधारा, अाधुनिक जर्मन दर्शन श्रीर उसके प्रतिनिधियो फ्वेरबाख, बूर्नो बावर श्रीर

^{*} श्रोवेनके वारेमें देखो लेखक का "मानव समाच" तृतीय संस्कृरण् ए॰ ३८७-४१०

स्टर्नरकी श्रालोचना एवं जर्मन समाजवाद श्रीर उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरीकी श्रालोचना।" एंगेल्सने पीछे श्रपनी स्मृतिसे कहा था, कि स्टर्नरका खंडन उसकी श्रपनी पुस्तकसे कम बड़ा नहीं था। पवेरवाख द्वारा हेगेलीय दर्शनका प्रमाव श्रमी तक मार्क्सके ऊपर काफी चला श्राया था, लेकिन श्रव वह उससे मुक्त थे। मार्क्सने पवेरवाख सम्बन्धी एक-दो सूत्र १८४५ ई० में नोट किये थे, जिन्हें कुछ दशाब्दियों बाद एंगेल्सने प्रकाशित किया था। मार्क्सने पवेरवाखके मौतिकवादमें एक कमी जो पाई थी, वह थी "शक्तिदायक तत्व" का श्रमाव। श्रपने डाक्टरेटकी थेसिस (निजन्ध) में देमोकित्के दर्शनके श्ररेमें भी मार्क्सकी यही शिकायत थी। मार्क्स श्रीर एंगेल्सने इस बातकी कोशिश की, कि पवेरवाख श्रपने भौतिकवादी दर्शनमें कुछ श्रीर श्रागे बढ़े, ताकि उसकी विचारधारामें "शक्तिदायक" तत्व प्रविच्ट हो। लेकिन पवेरवाखके लिये श्रव वैसा करना सम्मव नहीं रह गया था। उसके शिष्य श्रीगेने यद्यपि श्रटलान्टिक पार कम्युनिस्ट प्रचार करनेमें हाथ बँटाया था, लेकिन न्यूयार्कमें उसने कम्युनिस्टोंके भीतर गड़बड़ी पैदा करनेमें ही सफलता पाई।

२. ''सच्चा-समाजवाद" (१८४४-४६ ई०)

उसी ग्रंथमें जर्मन समाजवाद श्रीर उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंकी भी खबर लेनेकी योजना बनाई थी। इसमें उन्होंने मोजेज हेस, कार्ल ग्रन, श्रोटो लूनिंग, हेरमान पुटमान श्रादि लेखकोंकी श्रालोचना की थी, जिन्होंने कि पत्र-पत्रिकाशों में छुपे श्रपने लेखों द्वारा समाजवादक संबंधी एक श्रच्छा साहित्य तैयार किया था। कार्ल गुनने इस समाजवादको "सच्चा समाजवाद" नाम दिया था, जिसे भाक्त श्रीर एंगेल्सने व्यंगके तौरपर इस्तेमाल किया। इतने मेहनतसे ताना- खुना गया "सच्चा समाजवाद" बहुत मंगुर साबित हुश्रा, श्रीर १८४८ ई० तक लोग इसे मूल भी गये, यद्यपि वह १८४५ श्रीर १८४६ ई० में ही श्रिधिकतर तैयार हुश्रा था। मार्क्सके बौद्धिक विकासमें इसका कोई हाथ नहीं था। कम्यु- निस्ट घोषणामें उन्होंने इसकी कड़ी श्रालोचना की। एंगेल्सका इस समाजवादके प्रति श्रीर भी कठोर विचार था। हेसके साथ मार्क्स श्रीर एंगेल्सका श्रपने लेखों द्वारा सहयोग रहा, ब्रूशेल्सके निवासके समय भी उनका सम्बन्ध बना रहा

श्रीर कुछ समय तो ऐसा मालूम होता था, कि हैसने दोनोंके विचारोंको स्वीकार कर लिया। मार्क्स श्रीर एगेल्सने "वेस्टफालिशे उम्फूब्ट्" (१८४५ ई० में प्रकाशित) पत्रमें अपने कई लेख दिये थे। इसी पत्रमें जर्मन किचारघाराका दूसरा अनुच्छेद प्रकाशित हुआ था, इस प्रकार इस ग्रंथ का यही अंश चूहोंके कुतरनेसे बच गया। मार्क्स श्रीर एगेल्स भी हेगेलीय दर्शनसे श्रागे प्रगति करके श्रपने वैज्ञानिक समाजवाद तक पहुँचे थे श्रीर नवीन समाजवाद वाले भी हेगेलीय दर्शन की ही श्रागेकी उपज थे। लेकिन, दोनोंमें श्रन्तर यह था, कि मार्क्स श्रीर एंगेल्सने फ्रेच-काति श्रीर श्रंग्रेजी उद्योगके इतिहासके गम्भीर श्रम्थयनसे श्रपने निष्कर्षपर पहुँचे थे, जब कि "सन्चे समाजवादी" समाजवादी स्त्रों श्रीर नारोंके श्राधारपर दिमागी कल्पनासे इस विचारघाराको तैयार करनेमे सफल हुये थे। मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी कसीटी थी सर्वहारा श्रीर जनसाधारएके हित श्रीर च्याता, जबकि "सन्चे समाजवादी" उनसे दूर रह कर समाजवादी समाजवी सुध्ट करना चाहते थे।

"सन्चे समाजवादियां" की ईमानदारीके बारेमें सन्देह करनेकी बहुत कम गुजाइश है। जर्मनीमें कातिके फेल होनेके बाद जो मीवर्ण श्रातक मचा था, उसमें कोई ऐसा कमजोर सन्चा समाजवादी नहीं मिला, जो शत्रकी श्रोर चला गया हो। साथ ही उनके दिलमें मार्क्स श्रीर एंगेल्सके विषयमें मारी सम्मान था। जब "सन्चा समाजवादी" उनकी दिलमें गिर गया था, तब मी सन्चे समाजवादी श्रपने साहित्यको बडी खुशीसे दोनों मिश्रोंको दिया करते थे। वस्तुतः मतमेदका कारण कोई छिपी दुर्मावना नहीं थी, बल्कि सन्चे समाजवादी श्रपनी पुरानी घारणाश्रोंको छोड़नेकी समक्त नहीं रखते थे, सादे तौरसे उनके दिलोंमें बावर, रूगे श्रीर स्टर्नरके प्रति खास कोमल मान थे। लेकिन इनमें से कुछ मार्क्सके दिन्में लोकिन श्रपनों समर्थ हुये, जिनमें जोजेफ वेडेमेयर भी था। वेडेमेयर लूनिंगका सम्बन्धी था। वह प्रशियन तोपलानेमें लफ्टनेट था, लेकिन श्रपने राजनीतिक विचारोंके कारण उसने सेनाकी नौकरी त्याग दी। फिर वह "ट्रीरशे बाइटुंग" का उप-सम्पादक बना, जहाँ कार्ल गुनके प्रभावमें श्राकर सन्चा समाजवादी हो गया। १८४६ ई० के बसन्तमें वह बुसेल्स गया, बहाँ उसकी

मार्क्स श्रीर एंगेल्ससे मुलाकात हुई, ग्रीर जल्दी ही वह उनका श्रनुयायी जन गया। वेडेमेयर कमी एक ग्रमाघारण लेखक नहीं वन सका। जर्मनी लौटने पर उसने रेलवेकी सर्वेयरकी नौकरी करली, फिर वाकी समयमें 'वेस्प्रालिशे डम्पब्र्'के सम्पादनमें सहयोग देता रहा। वेडेमेयरने मार्क्स ग्रंथोंके प्रकाशनके लिये बहुत कोशिश की थी, ग्रीर "जर्मन विचारधारा" उसीके प्रयत्नसे प्रकाशकके पास पहुँची थी, जिसका ग्रवसान किस प्रकार हुन्ना, उसके वारेमें हम वतला चुके हैं।

३. कवि और स्वप्नद्रष्टा

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि तीस वर्षकी उमर तक पहुँचते-पहुँचते मान्सेंके परिचितोंकी संख्या भी बहुत ग्रिधिक हो गई थी। उनके प्रभावमें जितने लोग आये, वह सभी बरावरके साथी नहीं हो गये। तरुणाईमें आदमीमें आसिक कम और अपने आदर्शों के प्रति उत्साह अधिक रहता है। उमरके उलनेके बाद दुनिया और परिवारकी दूसरी चीजें उसको-वेर लेती हैं, और अक्सर तरुणाईके क्रांतिकारी यदि पयभ्रष्ट नहीं होते, तो शिथिल तो जरूर हो जाते हैं। मार्क्षके जीवनमें हम ऐसे बहुतसे लोगोंको पाते हैं। लेकिन जिनकी नियतमें कोई दोष नहीं, और जिनका काम एक हद तक आदर्शके अनुरूप रहा, उनके लिये मार्क्षके दिलमें भी सन्द्रावना रही।

(१) वाइटर्लिंग—वाइटर्लिंग सर्वहारा वर्गमें पैदा हु या था। प्रतिभा ख्रीर नैतिकवल दोनोंमें बहुत मजबूत था। सम्मान और साधन प्राप्त करने पर भी वह अपने वर्गके हितसे उसी तरह विचलित नहीं हुआ था, जिस तरह फेंच समाजवादका आचार्य पूचो। दोनों ही शरीरसे बहुत हट्टे-कट्टे, कर्मठ और आगे चलकर जीवनके सभी अच्छी चीजोंको पानेमें समर्थ हुये थे, लेकिन उन्होंने सुखका मार्ग छोड़ दुखका मार्ग अपनाया और दुख भी पराकाष्टा का। वाइटर्लिंगकी कोठरीमें कभी-कमी तीन आदमी रहते, एक मामूली खाट पड़ी थी, एक लड़कीका तस्ता लिखनेकी मेजका काम देवा था। जब-तव काली काफीका प्याला वह पी लेवा था। वह ऐसा जीवन उस समय विता रहा था, जब कि दुनियाकी विभूतियाँ उसकी आवाज सुनकर काँपती थीं। पूधों भी पैरिसमें इसी

तरह रहता या, जिस तरह वाहर्यलंग। देहमें मोटे ऊनका बुना जाकेट श्रीर पैर्रोमे लकड़ीके वलेका खरखराता चप्पल । वाइरिलग एक फ्रांसीसी अफसरका लंबका था। काफी उमर हो जानेपर उसने पैरिसमे फेंच समाजवादका गम्भीर श्रध्ययन किया । समाजवादका श्रान्दोलन करने वह स्वीजलैंड पहुँचा। उसके वाद १८४६ ई० के आरम्भमे बुशेल्समे था। लेकिन वहाँ भी उसे श्रिधिकारियोने चैनसे रहने नहीं दिया श्रीर वह लन्दन चला श्राया, वहाँ न्यायी लीगके सदस्योंसे उसकी नहीं पटी। यद्यपि उस समय इगलैंडमे चार्टिस्ट-स्रान्दोलन बड़े जोरोंपर था, लेकिन निराश सा वाइटलिंग स्रव दूसरी ही धुनमे बगा था। वह एक विश्व-भाषाके निर्माणका प्रयन्न कर रहा था, जिसके लिये कि उसके पास नौद्धिक साधन नहीं थे। एक स्त्रीर स्त्रपने वर्गसे विच्छेद हो जानेसे उसकी शक्तिका स्रोत टूट गया था, श्रीर दूसरी श्रोर यह निरर्थक प्रयास । श्रन्छा ही किया, जो वह ब्रुशेल्ससे लन्दन चला श्राया, क्योंकि मार्क्स मी वहाँ पर थे। मार्क्सने उसका बडे प्रेमसे स्वातन किया, श्रीर कोशिश की कि उसकी प्रतिमाका उपयोग किया जाय। ३० मार्च १८४६ को बुशेल्समे कम्युनिस्टोंकी एक नैठकमें दोनोंका उग्र मतमेद हो गया। वाइटलिंग मार्क्को बहुत चिढने दिया । उसने निराधार ही मार्क्सपर श्राचिप किया, कि उन्होंने मरे श्रामदनीके रास्ते—अनुवाद कार्य में भाँजी मारी। पर मार्क्सने जहाँ तक हुआ वाइटलिंगकी सहायता करनेसे हाथ नहीं खोंचा।

(२) प्रूघों — प्रूघों फान्सके उस स्त्रतंत्र वरगडी प्रदेशमे पैदा हुन्ना, जिसे चौदहवें छुईने अपने राज्यमें मिला लिया। उसके साथी कहा करते थे, कि वह जर्मनो जैसा मोटे सिरवाला है। जो भी हो, उद्बुद्ध प्रूघोंको जर्मन दर्शनने अपनी ओर खीचा। वाइटलियकी तरह वह जर्मन दार्शनिकाको धुंघ फैलानेवाला नहीं मानता था। वाइटलिय स्वष्न उटोपियन (स्वप्रहच्टा) समाजवादी लेखकोको बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखता था, लेकिन उनके प्रति प्रूषोकी जरा भी आस्था नहीं थी। दोनो ही इस बातके संबूत थे, कि प्रतिमा और कर्मठता केवल उच्च और मध्यन वर्गकी वरीती नहीं है, बल्कि सर्वहारा वर्ग भी उसको पैदा कर सकता है। मार्क्षका सर्वहारा वर्ग के प्रति आसाधारण

विश्वास ग्रीर श्रसीम पत्तपात था, इसलिये इन दोनों प्रतिभाशाली फ्रेंच विचारकोंके प्रति अपने कार्यके आरम्भमें केवल प्रशंसाके ही शब्द थे। सब कुछ होने पर भी वाइटलिंग एक जर्मन कारीगरसे ऋघिक विकसित नहीं हो सका ऋौर न पूधों फ़ेंच निम्न-मध्यमवर्गीय पुरुषसे ऋधिक। दोनोंको मार्क्ससे विचार-विनिमयका काफी मौका मिला था, लेकिन आयुके अनुसार जब एक मर्तवे ब्रादमीकी धारणा पक्की हो जाती है, तो उसे छोड़ना उसके लिये मुश्किल हो जाता है। मई १८४६ में पूर्धोंका मार्क्सके साथ विलगाव नजदीक श्रा गया। इस समय कम्युनिस्ट विचारधाराको फैलानेके लिये कई देशोंमें मार्क्सने पत्र-व्यवहारके केन्द्र बताये थे। क्रीगको इसी कामके लिये अमेरिका मेजा, जहाँ वह २० वीं सदीके भारतीय स्वामियोंकी तरह अपनी महंती जमाने-का प्रयत्न करने लगा, जिसका मार्क्सको विरोध करना पड़ा। पैरिसमें प्रधोंको इस कार्यमें सहयोग देनेके लिये मार्क्सने लिखा था। १७ मई १८४६ की पूर्घोंने लियोंसे जवाब देते हुये मार्क्षके प्रस्तावको स्वीकार किया था, लेकिन साथ ही यह भी कहा था, कि मुक्तेसे अधिक लिखना-पदना नहीं हो सकेगा। इसी पत्रमें उसने मार्क्सको एक उपदेश भी दे डाला था, जिससे पता लग गया कि दोनोंके मतमेदकी खाइयाँ सँकरी होनेकी जगह ऋौर बढ गई हैं। मार्क्स विचारोंकी गड़बड़ीको नहीं पसन्द करते थे, इसलिये वह सहिष्णुता श्रीर लीपा-पोती द्वारा उसको भुला देनेको कार्यके लिये बाधक समभते थे। प्रधी इस विषयमें उदारता दिखलाना चाहता था। उसने मार्क्सको उपदेश देते हुये लिखा या : "हमें एक नई गड़वड़ी पैदा करके मानवजातिको नया कार्य नहीं देना चाहिये। हमें मानव जातिको बुद्धिमत्ता श्रीर दुरदर्शितावाली सिंहज्याताका उदाहरए पेश करना चाहिये। चाहे वह तर्क श्रीर बुद्धिका ही धर्म क्यों न हो, लेकिन हमें एक नये धर्मके प्रचारकका पार्ट नहीं ऋदा करना चाहिये।" इस प्रकार सन्चे समाजवादियोंकी तरह पृघों भी सहिष्णाता श्रीर उदारताके पथका पथिक वन गया था । लेकिन सर्वहारा-श्रान्दोलन श्रीर क्रान्ति हवाई संघर्ष नहीं है। उनमें ठोस घरतीके परस्पर-विरोधी हितोंको लेकर संघर्ष करना पड़ता है, जहाँ पर विचारोंकी इस लीपा-पोतीसे काम नहीं चल सकता।

इसीलिये मार्क्स सम्यवादके वास्तविक प्रचारके लिये विचारोंकी गड़बड़ीको खतम करना सबसे त्रावश्यक समस्तते थे ! क्रान्तिका पच्चाती प्रूघो विचारोंमें ऋब ज्ञान मार्गी बनकर कहता था: "मेरी रायमे फ्रान्सके हमारे सर्वहारोंको ज्ञानकी इतनी प्यास है, कि यदि हम खून छोडकर और कुछ पीनेके लिये नहीं देते, तो हमारा स्वागत बुरी तौरसे होगा।" प्रूघोके व्यवहारसे मालूम हो गया, कि पैरिसके काम को उसके ऊपर छोडा नहीं वा सकना, इसलिये अगस्त १८४६ मे वहाँका तमाम काम समालनेके लिये एगेल्सको पैरिस जाना पडा। महा-क्रान्ति जैसी अनेक क्रान्तियों की भूमि और यूरोपीय सम्यताका सबसे बडा केन्द्र होनेके कारण सम्यवादी प्रचारके लिये भी पैरिसका बडा महत्व था। आरम्भमे एंगेल्सने वहाँसे जो रिपोर्ट मेजी, वह काफी आशाजनक थी, लेकिन वादमें कुछ नहीं बना।

(३) ऐतिहासिक भौतिकवाद — मूधोंका दिमाग अब दूसरी अमेर सुझ गया था। उसने सहिष्णुता अर्थात् हृदय-परिवर्त्तनके दर्शनकी ओर मुँह फेर लिया था, फिर दिख्ताके प्रति भी उसके हिष्टकोयामे परिवर्त्तन होना जरूरी था। उसने आर्थिक विरोधोकी व्यवस्थाके नामसे एक पुस्तक लिखी, जिसका दूसरा नाम "दिख्ताका दर्शन" भी था। क्ष्मूघोंका प्राप्तके सर्वहारों पर बहुत प्रमाव था, इसलिये वह जो कुछ भी कल-जलूल लिखता, उसका प्रमाव उन पर पडे बिना नहीं रहता। मार्क्सने "दिख्ताका दर्शन" के खंडनमे अपनी पुस्तक "दर्शनकी दिख्ता" फेच भाषामे लिखी, जिसका उद्देश्य था कि पूधो स्वयं अपने विचारोंकी आलोचना अच्छी तरह देख सके तथा उसके फेच अनु-यायियोंको भी अपनी कमजोरीका पता लगे। लेकिन, पूधोंका प्रभाव हटानेमें मार्क्सको सफलता नहीं मिली। तो भी पुस्तकका मूल्य समय बीतनेके साथ सभी देशोंके लिये बढ़ता गया। इसी पुस्तक द्वारा पहले पहल मार्क्सने ऐतिहासिक मौतिकवादको वैज्ञानिक ढंगसे विकसित किया। ऐतिहासिक मौतिकवादके विचार मार्क्सके पहले अंथोर्मे भी जब-तब छिट-फुट आये थे, लेकिन उन्होंने यहाँ सुस्यविध्यत ढंगसे उसका प्रतिपादन किया। ऐतिहासिक मौतिकवाद

^{* &}quot;Systeme des contradictions economiques on philosophic de la misere" (Caris 1846)

मार्क्सकी सबसे बड़ी देन इतिहास सम्बन्धी विज्ञानोंमें उसी तरह है, जिस त्तरह प्राकृतिक विज्ञानोंमें डारविनका विकासवाद। इस पुस्तक के लिखनेमें एंगेल्सने भी सहायता की थी, यद्यपि श्रपनी स्वामाविक विनम्रताके कारण वह उसमें अपना अंश बहुत कम करके बतलाना चाहते हैं। एंगेल्सने इस महान् सिद्धान्तके जन्म लेनेके समयका वर्णन करते हुये लिखा है: जब में १८४५ ई॰ के वसन्तमें बुशेल्स गया, तो मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवाद-के मूल विचारोंको अन्तिम विकसित रूपमें मेरे सामने रक्खा जो थे: प्रत्येक ऐतिहासिक युगमें ऋार्थिक उत्पादन ऋौर उसका ऋवश्य ऋनुगामी सामाजिक ढाँचा उस युगके राजनीतिक और बीदिक इतिहासके त्राधार होते हैं, श्रौर इसीलिये सारा इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास रहा है-सम-साम-यिक विकासकी भिन्न-भिन्न मंजिलोंमें शोषितों श्रीर शोषकोंके बीच, शासितों श्रीर शासकवर्गोंके बीचका संघर्ष । यह संघर्ष अब ऐसे स्थानपर पहुँच गये हैं, जहाँ-पर शोषित श्रौर उत्पीड़ित वर्ग-सर्वहारा, शोषक श्रौर उत्पीड़क वर्ग-बृर्व्वाजी (प्ँजीपित)-- से श्रपनेको तब तक मुक्त नहीं कर सकता, जब तक कि साथ ही सारे समाजको सदाके लिये शोषण श्रीर उत्पीड़नसे मुक्त नहीं कर देता। मूधोंके विचारोंको खंडन करते दख्तिताके दर्शनकी धुंघको दूर करते समय मार्क्स-का दिमाग इस गम्भीर सत्यपर पहुँचा, जिसके आधारपर उन्होंने प्रधोंके दर्शनकी -दंखिता को दिखलाते हुये दिखताके वास्तविक निदान श्रीर उपायको बतलाया। पुस्तककी शैली वहुत ही स्पष्ट श्रीर गम्भीर है। इसमें पाठकोंके दिमागको थका देनेवाली शैलीका पता नहीं लगता, जो कि बावर और स्टर्नरके जवाबमें लिखते वक्त मार्क्सने इस्तेमाल किया था। वहाँ दर्शनका जवाब दर्शनकी भूमिपर उसीकी भाषामें मार्क्सने दिया था, जब कि यहाँ ऐतिहासिक भौतिकवादके दर्शनको सर्वहाराकी सबसे अधिक संख्याके लिये सुगम बनाना था। इस पुस्तकके दो . भाग हैं : पहले भागमें मार्क्स अपनेको समाजवादी अर्थात् अर्थशास्त्रीके रूपमें दिखलाते हैं, श्रौर दूसरे मागमें अर्थशास्त्री हेगेलके रूपमें । मार्क्सने सामाजिक विकासका वर्णन करते हुये लिखा है: "सन्यताके आरम्भके साथ उत्पादन, च्यवसाय, सामाजिक स्थिति स्थीर प्रतियोगिता (विरोध), एवं स्थन्तमें संचित

श्रीर प्रत्यच् श्रमके प्रतियोगोंके ऊपर निर्मित होने लगा। बिना प्रतियोगके प्रगति नहीं हो एकती: सम्यताने शुरूसे लेकर आज तक इस कानूनको माना है। श्राज तक उत्पादक-शक्तियोंका विकास वर्ग-विरोधकी प्रधानताके आधारपर हुआ है।" मार्क्सने आगे प्रधाके विचाराका खंडन करनेके वाद बतलाया, कि उत्पादक शक्तियोंका विकास (जिसने कि अग्रेज मज्रोंको १७७० ई० की अपेचा १८४० ई० में स्वाईस शुनेसे मी अधिक उत्पादन बढ़ानेमें समर्थ बनाया) वर्ग विरोधा पर आधारित ऐतिहासिक स्थितियों के ऊगर अवलम्बित है: वैयक्तिक पूँजीका जमा होना, आधुनिक श्रम-विभाग, अराजकतापूर्ण होड़ और मज्री व्यवस्था। अतिरिक्त श्रमके उत्पादनके लिये एक ऐसे वर्ग की आवश्यकता है, जो कि लाम प्राप्त करे और दूसरा वृगके लामको हायसे खोये।

साम्यवादके अन्तिम लच्यकी स्त्रोर संकेत करते हुथे मार्क्सने वतलाया था, कि माँग और पूर्विके बीच ठीक तौरचे चंत्रलन उसी समय सम्भव हो सकता था, जब कि उत्पादनके साधन सीमित थे, जब कि निनिमय बहुत थोडी सी सीमाके भीतर होता था, जनकि पूर्ति मॉगपर ऋवलंबित थी, श्रीर उत्पादन उपभोगपर। बहे पैमानेके उग्रोग-धवेके विकासके साथ ऐसा होना असम्भव हो गया, क्योंकि वहें पैमानेका उद्योग केवल हथियारोंके कारण ही इसके लिये मजबूर हुआ, कि मॉगकी प्रतीचा किये बिना बराबर बढ़ते हुये परिमाणमे उत्पादन करता जाये, जिसके कारण उसे अनिवार्यतया आवश्यक और इसके बाद एक लगातार समृद्धि श्रीर त्रवसाद, संकट श्रीर त्रवरोघ, नई समृद्धि इत्यादिका सामना पड़ेगा। श्राजके समाजमें, जब कि उद्योग वैयक्तिक विनिमय, उत्पादन-सम्बन्धी श्रराज-कता—जो कि बहुत सी बुराइयोंके स्रोत हैं—पर आधारित होते हुये साथ ही समी प्रगतियोंका कारण है, इसीलिये उसके सामने विकल्प हैं : त्रादमीको हमारे श्रपने समयके उत्पादन-साधनों द्वारा पहली शतान्दियोके ठीक श्रनुपानमें प्राप्त करनेकी कोशिश करना, ऐसा सोच करनेवाला प्रतिगामी श्रीर उटोपियन (स्वप्नचारी) दोनों है; अयवा उसे अराजकताको हटाकर प्रगति करनेका प्रयत्न करना होगा। "ऐसी ग्रवस्थामे उत्पादक राक्तियोको कायम रखनेके लिये वैयक्तिक विनिमयको छोडना पड़ेगा।"

मार्क्सने एक जगह लिखा है: "मेशिये पूधों ज्ञात्म-प्रशंसा करते समभते हैं, कि मैंने अर्थशास्त्र और साम्यवाद दोनोंका खंडन कर दिया, लेकिन वस्तुतः वह दोनोंसे बहुत नीचे रहा: अर्थशास्त्रियोंसे नीचे इसिलये रहा, क्योंकि एक दार्शनिकके तौरपर अपने पाकेटमें जादूका मन्तर रक्खे हुये वह सोचने लगा, कि मुक्ते अर्थशास्त्रमें विस्तारके साथ जानेकी आवश्यकता नहीं। समाजवादियोंसे नीचे इसिलये, कि उनके पास न पर्याप्त अन्तहिंद है और न उसके लिये पर्याप्त हिम्मत है, कि अपनेको ब्रूड्जी चितिजके ऊपर कल्पनाके चेत्रमें उठा सके। वह दोनोंका संवाद करना चाहता है, लेकिन वस्तुतः वह सिम्मिलित प्रमादके सिवा और कुछ नहीं कर पाये। वह एक साइन्सवेत्ताके तौरपर ब्रूड्जी और सर्वहारा दोनोंके ऊपर मँडरानेकी इच्छा रखता है, लेकिन वस्तुतः वह निम्न मध्यमवर्गके व्यक्तिके सिवा और कुछ नहीं हैं, जो कि यहाँ-वहाँ पूँजी और अमके बीच अर्थशास्त्र और समाजवादके बीच छुदकते दिखाई देते हैं।" मार्क्सी इस कड़ी आलोचनासे यह न समभना चाहिये, कि वह प्रधोंकी च्मता अस्वीकार करते थे। उन्हें इस बातका अफसोस था, कि प्रधों निम्न मध्यम वर्गीय समाजकी सीमासे आगो क्यों नहीं बढ़ता।

मार्क्सने समस्याको साफ तौरपर रखते हुये लिखा है: "श्रगर सामन्तवादी उत्पादन का ठीक तौरसे मूल्यांकन करना है, तो उसे विरोधपर श्राधारित उत्पादनके ढंगके तौरपर समफना होगा; यह देखना होगा, कि कैसे इस विरोधके मीतर धन-धैभव पैदा किये गये, किस तरह उत्पादक शक्तियाँ वर्गोंके संघर्षके साथ-साथ विकसित हुई, श्रौर किस तरह तब तक इन वर्गोंमें बुरा पक्त सामाजिक बुराई-लगातार उन मौतिक स्थितियोंमें पढ़ता गया, जब तक कि उसकी मुक्तिके लिये मौतिक स्थितियाँ परिपक्व नहीं हो गईं।" इसी तरह मार्क्सने बूर्व्याजी (पूँजीवादी) व्यवस्थामें भी उत्पादनके विकासको दिखलाते हुये वल बतलाया। जिन उत्पादन सम्बन्धोंमें ग्रव यह विकास होने लगा, उनका स्वरूप सीधा-सादा श्रौर एक-सा नहीं, बल्कि दोहरा है—उन्हीं स्थितियोंमें, जिनमें कि वैभव पैदा होता है दरिद्रता भी होती है, जैसे-जैसे पूँजीवादका विकास होता है, वैसे डी वैसे उसी परिमाग्रमें सर्वहारकी भी बृद्धि होती है, जिसके परिग्रामस्वरूप

इन दोनों वर्गोंमें संघर्ष होता है। ऋर्थशास्त्री पूँजीवादियोंके शास्त्रकार हैं ऋौर कम्युनिस्ट तथा सोशलिस्ट सर्वहाराके। वह कम्युनिस्ट-सोशलिस्ट उटोपियन (स्वप्नचारी-अव्यावहारिक) हैं, जो कि उत्पीड़ित वर्गीकी आवश्यकताओको पूरा करनेके लिये चिकित्सा-विज्ञानको ढूँढने तथा शास्त्रप्रणालियोको तैयार करते हैं। लेकिन यह तभी नक, जब तक कि सर्वहारा स्वयं एक वर्गके रूपमें काफी तौरसे विकित नहीं हो जाती, श्रीर बूज्वी समाजकी उत्पादक शक्तियाँ जब तक इतनी पर्याप्त विकसित नहीं हो जातीं कि वह सर्वहाराकी मुक्ति श्रीर नये समाजके निर्माखके लिये त्रावश्यक भौतिक स्थितियोंको प्रकट कर दे। लेकिन जितने परिमाण्में इतिहास और उसके साथ सर्वहाराका समर्थ आगे बढ़ता है, उतने परिमाण्में उनके लिये ऋावश्यक नहीं रहता, कि ऋपने दिमागमे साइंसको दुँढे । तत्र उन्हें बस सिर्फ यही करनेकी त्रावश्यकता होती है, कि जो कुछ उनकी श्रॉखोंके सामने हो रहा है, उसका लेखा-जोखा लगाये, श्रीर श्रपनेको उसका हथियार बनाये। जब तक वह ऋभी ऋपने दिमागमें साइसकी खोज करते शास्त्रोकी रूपरेखा बना रहे हैं, जब तक वह अपने सघर्षके केवल आरम्भमें ही हैं, तत्र तक वह केवल दुःख (दिखता) ही देखते हैं श्रीर उन्हें उस दुःखका वह क्रातिकारी पहलू नहीं दिखाई पड़ेगा, जो कि पुराने समाजको उखाड फेकेगा । इस द्वाग्से साइंस ऐतिहासिक आ्रान्दोलन (गति) की सचेतन उपज हो जाता है। यह श्रव शास्त्र श्रौर वाद न रहकर क्रांतिकारी वन जाता है।

मार्क्यने अर्थशास्त्रीय तत्त्वोको सामाजिक सम्बन्द्योका ही निराकार अथवा शास्त्रीय नाम बतलाते हुये कहा है—'हमारे सामाजिक सम्बन्द्य उत्पादक शक्तियों- के साथ धनिष्टतया सम्बद्ध हैं। नई उत्पादक शक्तियोंके पा लेनेके बाद मानव-जाति अपने उत्पादनके तर्राकेको बदल देती है। जिस तर्राकेसे मानवजाति अपनी जीविकाको प्राप्त करती है, उसीके अनुसार वह उसके अपने सामाजिक सम्बन्ध बदल देती है।...'

मार्क्सके अनुसार अमका विमाग प्रृथोंके कथनानुसार अर्थशास्त्रीय तत्त्व नहीं है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक तत्त्व है, जो कि इतिहासके मिन्न-मिन्न रूप लेता रहा है। बूर्जी अर्थशास्त्रके अनुसार फैक्टरी पूँजीवादके अस्तित्वका कारण है, लेकिन फैक्टरी-मजदूरोंके बीच मित्रतापूर्ण समभौतेके आधारपर अथवा पुराने शिल्पी-संघोंकी गोदमें नहीं पैदा हुई। आजकलकी फैक्टरियोंके मालिक पुराने शिल्पी-संघोंके स्वामी नहीं बने, बिल्क व्यापारियोंने उन्हें उद्योगपित बन करके सँभाला। इसी तरह होड़ और इजारेदार भी प्राक्तिक नहीं, बिल्क सामा-जिक तत्त्व हैं। होड़ औद्योगिक महत्वाकांत्राके कारण नहीं, बिल्क व्यापारिक महत्वाकांत्राके कारण होती हैं। इसका सम्बन्ध उत्पादनसे नहीं, बिल्क लाम-शुमसे हैं। यह मानवकी आत्माके लिये आवश्यक नहीं है, जैसा कि पूधों मानते हैं, बिल्क यह १८ शताबदीमें उत्पन्न होनेवाली ऐतिहासिक आवश्यकताका परिणाम है, जो कि ऐतिहासिक कारणोंसे १६ वीं सदीमें जुन्त भी हो सकती है।

पूर्षोंकी तरह विचार रखनेवालोंका ख्याल था, कि भू-सम्पत्तिका श्रारम्म ऐतिहासिक नहीं बल्कि वह मनोवैज्ञानिक श्रीर नैतिक विचारोंपर श्राधारित है, धनके उत्पादनसे उसका बहुत दूरका सम्बन्ध है। जमीनकी लगान प्रकृतिके साथ श्रिषक घनिष्ठताके साथ मनुष्यको जोड़ती है। इसका खंडन करते हुये मार्क्सने कहा—'हरेक युगमें सम्पत्तिका विकास भिन्न-भिन्न तरह तथा भिन्न-भिन्न समाजिक सम्बन्धोंके श्रमुसार होता है। इसीलिए बूर्ज्ञा-सम्पत्तिकी व्याख्या इसके सिवां श्रीर कोई नहीं है, कि बूर्ज्ञा-उत्पादनके सभी सामाजिक सम्बन्धोंकी व्याख्या की जाय।' भूमिकी लगान पूँजीके लामकी प्रचलित दर श्रीर पूँजीके सहको लेते हुए उत्पादनके व्ययके काट देनेके बाद कृषिकी उपजका श्रितिरिक्त मूल्य निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके बीच श्रारम्भ हुश्रा श्रीर वह केवल उन्हीं निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके मीतर ही श्रारम्भ हो सकता था। खेतकी लगान बूर्जा रूपमें जमींदारी है, श्रर्थात् बूर्जा उत्पादनकी रिथतियोंके श्रधीन सामन्ती सम्पत्ति है।

श्रन्तमें मार्क्स मज्रूर-संबों श्रीर हड़तालोंके ऐतिहासिक महत्त्वको सिद्ध करते हैं, जिन्हें कि पूर्वा माननेसे इन्कार करता है। श्रूज्वी श्रर्थशास्त्री श्रीर समाज-वादी भी यद्यपि भिन्न-भिन्न कारणोंसे मज्रूर-संघों श्रीर हड़तालों जैसे हथियारोंको इस्तेमाल करनेका विरोध करते हैं, लेकिन मज्रूर-संघ श्रीर हड़तालें बड़े पैमाने के उद्योगके विकासके साथ-साथ श्रीर समानान्तर श्रवश्य श्रागे बढ़ती रहेंगी।

होड़के कारण अपने हितोंमे विलगाव रखते भी, समी मजदूरोको अपनी मजदूरी कायम रखना एक सा जरूरी है; जिसपर, कोई भी चोट पहुँचनेपर उन सबके भीतर प्रतिरोधकी भावना पैदा होती है। इसके कारण वह अपनी मजूर-सभाग्नोमे सगठित होते हैं; जो भावी संघर्षके लिए उपयोगी सभी गुणोंको ऋपने भीतर रखती है, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि सामन्ती राजाम्रो और ठाकुरोके विरुद्ध पूँजीवादियो (बूर्जाजी) ने एक वर्गके तौरपर ऋपनेको संगठित किया या श्रीर जिसके बलपर उन्होंने सामन्तवादी समाजको पूँजीवादी बूर्जी समाजमे रूपान्तरित किया। बूर्ब्वां और सर्वहाराके वीचका विरोध एक वर्गका दूसरे वर्गके सायका संघर्ष है-ऐसा संघर्ष, जो कि अपने चरम उत्कर्षपर पहुँचकर पूर्ण क्रान्तिका रूप लेगा । सामाजिक श्रान्दोलन श्रपनेसे राजनीतिक श्रान्दोलनको श्रलग नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी ऐसा राजनीतिक आन्दोलन नहीं है, जो कि साथ ही साथ सामाजिक आ्रान्दोलन न हो। राजनीतिक आन्दोलनके परिखामस्वरूप पुरानी सामाजिक व्यवस्था दूरती है, यह ऋाज हम भारतवर्षकी रियासवोंमें देख रहे हैं, जहाँ सामन्तवादी स्वार्थोंको-जागीरोके निरंकुश शासन, निलास-को उठाकर अब सेठोंकी सरकार अपना आधिपत्य कायम कर रही है, जिसके फल-स्वरूत सामन्तोका ही रूपरंग नहीं खतम हो रहा है, बल्कि उनके पीछे जीनेवाले लाखों लग्गू-मन्तुश्रोमे जदर्दस्त सामाजिक परिवर्त्तन हो रहा है। रानियाँ श्रीर ठकुरानियाँ ऋव पुराने विचारोको रखते मी पुराने जीवनको चालू नही रख सकती । एक समयके परमस्वतन्त्र श्रन्नदार्ता श्रव ग्राम पंचायतोके सरपंच बनकर दूसरे पचोके साथ दरियोपर बैठ रहे हैं। मार्क्सने वतलाया कि उसी समाजका सामाजिक विकास राजनीतिक क्रान्ति नही रहेगा, जिसमें वर्गपद नही है। जब तक वर्गहीन समाज त्रा उपस्थित नहीं होता, तब तक सभी त्राम सामाजिक परिवर्त्तनोके समय सामाजिक साइंसका नारा होगा-'विजय या मृत्यु। खूनी युद्ध या कुछ नहीं । यही समस्याका निर्दय कर है।' मार्क्सने जार्जरैंडके इन शन्दोंको उद्धृत करते हुए प्रधोंके उत्तरको समाप्त किया।

मार्क्सने इस पुस्तकमें अनेक दृष्टियोंसे ऐतिहासिक भौतिकवादकी विवे-चना और विकास किया और साथ ही वह जर्मन-दर्शनकी भी खत्रर लेते हुये हेगेल तक पहुँचकर भवारवाखरे ग्रागे वढ़ गये। उन्होंने वतलाया कि हेगेलीय सम्प्रदाय ग्रव निश्चय ही दिवालिया वन गया है। भवारवाखके दर्शनमें 'शक्तिदावक सिद्धान्त' के ग्रमावकी उन्होंने फिर शिकायत की।

मार्क्सने अपने इस अंथमें यह वतलाया कि हम उक्त निष्कर्षपर 'शुद्ध चिन्तन' द्वारा नहीं पहुँचते (विल्क धर्मकीचिके शब्दोंमें 'यदिदं स्वयमर्थानां रोचते तत्र के वयम्'—(जब पदार्थों और वास्तविकताका निष्टुर फैसला यही है, तो हम उससे इन्कार करनेवाले कौन !) इस प्रकार मार्क्सने भौतिकवादको ऐति- हासिक इन्द्रात्मक शैली प्रदान की, और साथ ही एक 'शक्तिदायक सिद्धान्त' को भी चो कि समाजकी केवल व्याख्या कर खुट्टी नहीं ले लेता, विल्क सर्वहाराकी नई शक्ति द्वारा उसके रूपांतरित करनेका रास्ता दिखलाता है।

४ 'ड्वारो त्रूसेलेर ताइटुङ्ग' (१६४७ ई०)

श्रपने इस महत्वपूर्ण श्रन्थको प्रकाशित करनेम मार्क्सको कम किटनाइयोंका सामना नहीं करना पड़ा। बूशेल्स श्रीर पेरिस दोनोंमें किसी प्रकाशक ने तैयार होनेपर छ्पाईका दाम उन्हें श्रपनी पाकिटसे देना पड़ा। १८४७ ई० की गर्मियों (वर्षा) में जब पुस्तक प्रकाशित हुई, तब 'ड्वाशे ब्रुसेलेर जाइटुझ' नामका एक पत्र भी निकाला, जिसके द्वारा वह श्रपने विचारोंको लोगोंके सामने रख सकते थे। १८४७ ई० के श्रारम्भमें श्रडेलवेर्ट फान-बोर्मस्टेटके सम्पादकत्वमें यह पत्र सप्ताहमें दो बार निकलने लगा। बोर्नस्टेट पहले पेरिसमें 'फोरवार्ड्स' का सम्पादन करता था श्रीर बाइरसे उसका रूप चाहे राजनीतिक निर्वासितका था, लेकिन वह श्रास्ट्रिया श्रीर प्रशिया दोनोंकी सरकारोंके लिए खुफियाका काम करता था, जिसका पता बहुत पीछे बर्लिन श्रीर वीनाके श्रभिलेख-संग्रहोंसे लगा, यद्यपि श्रमी भी वह स्पष्ट नहीं हो सका, कि ब्रुशेल्समें रहते हुए भी वह इस कामको कर रहा था या नहीं। ब्रुशेल्समें रहनेवाले प्रशियांक राजदूतने उसके पत्रकी निन्दा वेलिजयम सरकारसे की, इससे कमसे कम इस कालमें उसके खुफिया होनेमें सन्देह पैदा हो जाता है। लेकिन यह लोगोंकी श्रांखोंमें धूल भोंकनेके लिए भी हो सकता था। लोगोंको सन्देह था, पर जो उपयोगी काम

वह उस वक्त कर रहा था, उसके कारण मार्क्स इस सन्देहको महत्व नहीं देता था। इस पत्रमें मार्क्स ऋौर एगेल्सके कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहे। भारतमें भी हिन्दू या मुसलमान समाजवादके गीत गानेवालोका अमाव नही है। उनका यह प्रयत्न समाजवादके हित नहीं, ऋहितके लिए ही जाने या ऋनजाने होता है। कोलोदसे निकलनेवाले 'राइनिशर व्योवाख्तेर' पत्रने भी ईसाई समाज-चादका गुन गाते हुये साम्यवाद (कम्युनिज्म) को स्त्रनावश्यक बतलाया था, बिसका जनान देते हुए मार्क्सने लिखा था—'ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्तोंके प्रयोग के लिए अठारह सौ वर्ष मिले थे, जिनमें उन्हें विकसित किया जा सकता था, ऋव उन्हें प्रशियन धार्मिक-कमिश्नरोके हाथो ऋागे विकसित होनेकी श्रावश्यकता नहीं है। ईसाइयत (हिन्दू धर्म श्रीर इस्लामको भी ले लीजिये) के सामाजिक सिद्धान्त पुराने युगमे दास-प्रथाको उचित बतलाते थे. मध्ययुगमे वह किसानोंकी ऋर्घदासताकी प्रशासा करते थे और आवश्यकता पडनेपर आज भी वह सर्वहाराके उत्पीड़नको उचित कहनेके लिये बिल्क्रल तैयार हैं।...ईसा-इयतके सामाजिक सिद्धान्त शासक और उत्पीहित वर्गको कायम रहना आवश्यक बतलाते हैं. श्रीर उत्पीडित वर्गको वह जो कुछ दे सकते हैं वह यही कि शासक वर्गको उनके प्रति दया दिखलानी चाहिये। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त समी पापोंकी च्विपूर्विको स्वर्गराज्यमे स्थानातरित करते हैं, श्रीर इस प्रकार प्रस्वीपर इन पापोंके बने रहनेको उचित बतलाते है। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त घोषित करते हैं, कि उत्पीडितोके विरुद्ध उत्पीड़कोंके सारे आततायी कृत्य या तो मूल या किसी दूसरे पापके उचित दड हैं, या ईश्वर अपनी श्रंगम बुद्धिसे वैसा दुःख देना पसन्द करता है। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त कायरता, कमीनेपन, त्याग, ब्रात्मसमर्पण श्रीर वशंबदता—संद्वेपमे श्राततायीके सभी गर्गोका उपदेश करते हैं, लेकिन सर्वहारा आततायीके वौरपर अपने साथ व्यवहार होने देनेके लिए तैयार नहीं हैं, श्रीर उसे श्रपनी राजकी रोटीसे भी श्रिधिक साहस, श्रात्म-विश्वास, स्वाभिमान श्रीर स्वतन्त्रताकी श्रावश्यकता है। ईसाइयतका सामाजिक सिद्धान्त वचना स्त्रीर पालएडसे मरे हुए हैं, जन्न कि सर्वहारा क्रान्तिकारी है।

अध्याय ८

कम्युनिस्ट लीग (१८४७-४८ ई०)

१८४७ ई० में व्रशेल्समें कम्युनिस्टोंकी संख्या काफी हो गई थी, यद्यपि यह कहनेकी त्रावश्यकता नहीं, कि मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी तुलनामें वहाँका कोई नेता नहीं आ सकता था। मोजेज हेस, त्रीर विलहेल्म वोल्फ इस समय वहीं रहते थे और उनके लेख भी "ड्वाशे बुसेलेर जाइटुंग" में निकला करते थे। हेस त्रापने पुराने दर्शनके जालसे बाहर नहीं निकल पाया था, श्रीर "कम्युनिस्ट घोषणा पत्र" के निकलनेके समय तक वह मार्क्स बिल्कुल दूर हो गया था। विलहिल्म वोल्फ १८४६ के वसन्तमें ब्रुशेल्स आया। इस प्रकार उसकी मार्क्स-एंगेल्ससे मित्रता बहुत पीछे शुरू हुई, लेकिन वह उसके मरनेके समय तक धैसी ही बनी रही। वोल्फ स्वतंत्र-चेता नहीं था, लेकिन लोकप्रिय शैलीमें लिखनेवाला वह एक सिद्धहस्त लेखक था। वह सिलेसियाके किसानोंमें पैदा हुत्रा था, श्रीर वड़ी कठिनाइयोंसे संघर्ष करते युनिवर्सिटी में पहुँचा थां, जहाँ उसे ग्रपने वर्गके उत्पीड़कोंके प्रति ग्रपार घृणा पैदा हो गई, जिसमें महान् विचारकों श्रीर कवियोंकी कृतियाँ भी सम्मिलित थीं। कितने ही वर्षों तक वह सिलेसियाके एक गढ़ीसे दूसरी गड़ीमें घसीटा जाता रहा। फिर वह किसीके यहाँ घरेलू. अध्यापक वन गया, लेकिन उस समय भी वह नौकरशाही तथा सेन्सरके लिलाफ छिट-फुट संघर्ष करता रहा। ग्रन्तमें जब उसे फँसाकर प्रशियाके जेलमें सड़नेकी नौवत आई, तो वह देश छोड़नेके लिये मजबूर हुआ। ब्रेस्ला (सिलेसिया) में रहते समय लासलके साथ उसकी मित्रता हो गई थी। वोल्फ वहे सुन्दर स्वभावका पुरुप था। उसे कोई भी प्रलोमन नहीं था, वह श्राजीवन एक निःस्वार्थ निर्भीक क्रांतिकारी योद्धा रहा।

त्रु शेल्समें मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी मंडलीमें फर्डिनेंड बोल्फ भी था, यद्यपि उसके साथ दूसरे बोल्फ जैसी मार्क्सकी, घनिष्ठता नहीं थी। इसी तरह एन्स्टें होके, जार्ज वीर्थ भी थे। वीर्थ एक वास्तिविक किया। वह तरुणाईमें ही मर गया। उसके गीतोंको किसीने जमा नहीं किया, जिनमें लड़ाकू सर्वहारा की आत्मा बोल रही थी। बुसेल्स पूँजीवादी बेल्जियमकी राजधानी थी, जहाँका राजतत्र भी बूर्ज्या था। इस वक्त अन्तरांष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये युरोपमें वह सबसे उपयुक्त स्थान था, क्योंकि पैरिसमें प्रतिक्रियावादने अपना आधिपत्य जमा रक्खा था। बेल्जियमकी १८३० ई० वाली क्रांतिमें भाग लेनेवालोंके साथ मार्क्स और एगेल्सका अच्छा सम्बन्ध था। जर्मनीमें खास कोलोन में भी मार्क्स नये और प्रगेल्सका अच्छा सम्बन्ध था। जर्मनीमें खास कोलोन में भी मार्क्स नये और प्रराने मित्र काम कर रहे थे। पेरिसमें एगेल्सने जनतात्रिक समाजवादी पार्टोंसे, विशेषकर उसके साहित्यकार छुई ब्लाक और फर्दिनान्द फूलोंकोनसे सम्बन्ध स्थापित किया था—फूलोंकोन पार्टोंके मुखपत्र "रिफार्म" (सुधार) का सम्पादक था। इगलैंडके चार्टिस्ट-आन्दोलनके कार्यकर्चांके खुलियन हर्न (नार्दन स्टार सम्पादक) और एनेंस्ट जान्स से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था।

१. लीग का काम

जनवरी १८४७ ई० में कम्युनिस्ट लीगने एक श्रीर महत्वपूर्ण कदम श्रागे बदाया, जब कि उसने बिखरे हुये लोगों श्रीर संगठनोंको श्रिषक सुव्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया। "न्यायी लीग" के बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, जिसकी नीतिको मार्क्स पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने घटनाश्रोंके दस वर्ष बाद "न्यायी लीग" के बारेमें कहा था: "एंग्लो-फ्रेंच समाजवाद तथा जर्मन-दर्शन की माजून (सिम्मश्रम्) के खिलाफ हमने कितने ही छुपे या लिथोग्राफ किये पम्फ्लेटों को निकालकर लीगकी नीतिकी निष्ठुर श्रालोचना की। श्रीर, उसकी जगह एकमात्र स्थायी श्राधारके तौरपर बूर्व्या श्राधिक ढाँचेके मीतर वैज्ञानिक श्रन्तिहिंच रखते लोगोंके लिये उसकी सुगम शैलीमें व्याख्या की श्रीर यह समस्ताया, कि उटोपियन व्यवस्थाके लिये काम करनेकी श्रावश्यकता नहीं है, बिक हमारी श्राखोंके सामने सामाजिक परिवर्त्तनकी जो प्रक्रिया हो रही है, उसीमें सजग होकर हाथ बॅटाना चाहिये।"

जनवरी १८४७ ई० में लीगने अपनी केन्द्रीय कमेटीके एक सदस्य घड़ी-साज जोजेफ मालको बुशेल्स मेजकर मार्क्स और एंगेल्ससे प्रार्थना की, कि स्राप हमारे संगठनमें शामिल हों, क्योंकि हम आपके विचारोंको स्वीकार करना चाहते हैं। मार्क्सने इसे उन्हीं पम्फ्लेटोंका प्रमाव समक्ता था, जिनमेंसे आज कोई भी कालकी गतिसे बचकर हमारे पास नहीं पहुँचा। सरल माषा और शैलीमें लिखे होनेसे मार्क्सके इन पम्फ्लेटोंका महत्व उसी समय नहीं, बल्कि आजके लिये भी हो सकता था। "न्यायी लीग" की शाखायें इंगलेंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई देशोंमें थीं, जिनमें लन्दनकी लीग ज्यादा सजीव और सचेष्ट थी। ज्रिच और पेरिसके वातावरणमें उसको उतनी सफलता नहीं मिली थी। "न्यायो लीग" की स्थापना यद्यपि मिन्न-मिन्न देशोंमें विखरे जर्मन कमकरोंके लिये हुई थी, लेकिन लन्दनमें इसने और जातियोंके कमकरोंसे मिलकर अन्त-राष्ट्रीय रूप ले लिया था। सभी देशोंके राजनीतिक निर्वासितोंसे इसका सम्बन्ध था। शानर, बावर और मोल जैसे पुराने नेताओंके अतिरिक्त सूक्प चित्रकार कार्ल पफांडर हाइलबोन और शुरिंगिया का दर्जी जार्ज एकारियस भी इसमें शामिल थे।

मोलने लीगकी श्रोर श्रपने उद्देश्योंकी घोषणा तैयार करनेके लिये बुशेल्स जाकर मार्क्सको श्रीर पीछे पेरिसमें जा एंगेल्सको श्रिधकार दिया। यह श्रिधकार २० जनवरी १८४७ में शापेरके हाथों लिखा गया था। इसमें मोलको सभी महत्वपूर्ण विषयोंपर सविस्तार स्वना देने तथा लीगकी स्थित बतलानेके बारेमें कहा गया था, लेकिन मोल वह नहीं कर सका। उसने मार्क्स यही प्रार्थना की, कि श्राप लीगमें शामिल हों, श्रीर उनके पहलेके श्राचेपोंको हराते हुये यह स्वित किया, कि लीगकी काँग्रेस मार्क्स श्रीर एंगेल्सके श्रालोचनात्मक विचारों को स्थीकार करने श्रीर उसे लीगके सिद्धान्तोंके तौर पर एक सार्वजनिक घोषणाके स्पमें सिमिलित करनेके ख्यालसे लन्दनमें होने जा रही है। उसने मार्क्स श्रीर एंगेल्सको जोर देकर लीगमें शामिल होनेके लिये कहा, कि इसीसे पुराने विचारोंको हराया जा सकता है। लीगकी पार्यना स्त्रीकार कर मार्क्स श्रीर एंगेल्स उसमें शामिल हो गये। १८४७ ई० के श्रीक्ममें लीगकी जो काँग्रेस हुई वह

गुप्त रीतिसे काम करनेके लिये मजबूर एक जनतात्रिक संगठनसे अधिक कुछ नहीं थी। यद्यपि उसने समी तरह के षड्यंत्रोंकी भावना छोड़ दिया था। लीगका संगठन कमूनों (संगतों) पर आधारित था, जो कमसे कम तीन और अधिक से अधिक दस सदस्योंके चक्करों, मुख्य-चक्करों, केन्द्रीय नेतृत्व और कॉंग्रेसके रूपमें संगठित थी। इसका लक्ष्य था बूर्ज्जाजीको खतम करना, सर्वहारा के शासनको स्थापित करना, वर्ग-विरोधोंपर आधारित पुराने समाजको नष्ट करना और बिना वर्ग और बिना वैयक्तिक सम्पत्तिवाले एक नये समाजका निर्माण करना।

श्रवसे "न्यायी" लीगका नाम कम्युनिस्ट लीग हो गया। उसके नियमों-उप-नियमोंको प्रत्येक कम्यूनके पास पहिले वाद-विवादके लिये मेजा गया, जिसका श्रान्तिम निर्णंय द्वितीय कॉग्रेसके ऊपर छोड़ा गया, जो कि उसी सालके श्रन्तिमें बुलाई जानेवाली थी, श्रीर जिसे ही लीगके नये प्रोग्रामपर विचार करना था। प्रथम कांग्रेसमे मार्क्स मौजूद नहीं थे, लेकिन पेरिसके कम्युनिस्टोंके प्रति-निधिके तौरपर एगेल्स श्रीर बुशेल्सके प्रतिनिधिके तौरपर विलहेल्म वोल्फ उसमें शामिल हुये थे।

लीगने सबसे पहले बुशेल्समें जर्मन कमकरोंकी शिच्या समाये कायम कीं, क्योंकि इसके द्वारा खुली तौरसे प्रचार करने का श्रवसर मिलता श्रौर साथ ही वहाँसे कामके लिये श्रागे कार्यकर्ता मिलते। इन समाश्रोंके काम करनेका ढंग था: हफ्तेमे एक दिन वाद-विवादके लिये था, श्रौर दूसरा दिन सामाजिक मेल-मिलापके लिये, जिसमें गायन, किवता-पाठ श्रादि होते थे। समाश्रोंने सब जगह पुस्तकालय खोले थे, जहाँपर कि कमकरों कम्युनिच्म (साम्यवाद) के प्रारंभिक सिद्धान्तोंकी शिद्धा भी दी जाती थी।

इसी योजनाके अनुसार उस साल अगस्तके अन्तमें ब्रुशेल्समें जर्मन-कमकर समा कायम की गई। मोजेज हेस और वालो इसके दो अध्यक्त ये और विल. हैल्म ओल्फ सेक्रेटरी। जल्दी ही इसके एक सौसे अधिक सदस्य हो गये और बुध और शनिवारकी शामको उसकी बैठके हुआ करतीं: बुधको सर्वहाराके हित सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर बहस होती और शनिवारको वोल्फ स्प्ताहकी घट- नात्रोंकी राजनीतिक त्रालोचना करता। २७ सितम्बर (१८४७ ई०) की समा ने दूनरे देशोंके मजदूरीके साथ अपने माईचारेके मावोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय दावत दी । उस समय सार्वजनिक समार्श्रामें पुलिसके हस्तचेनका डर रहता था. विष्ठचे वचनेके लिये इस तरहकी दावतें दी जाती थीं । लेकिन, उक्त दावतका विशेष उद्देश्य था मार्क्त श्रीर एगेल्सके प्रभावको कम करना । उसी समय एंगेल्स ब्र्शेल्समें मौजूद ये, जिसके कारण दावतके संग-ठक्रोंको अपने उद्देश्यमें सफलता नहीं मिली। एंगेल्डको समाने अपने दो उप-समारतिवोंमेंसे एक निर्वाचित दिया। १३२ त्रतिथि इस दावतमें शामिल हुये थे, जो जातिके तौरपर वेल्जियम, जर्मन, त्यिस, फ्रेंच, पोल, इतालियन श्रीर एक रूसी मी था। दावतमें कितने ही भाषण हुये श्रीर निरूचय हुस्रा कि लन्दन क निरादरी जनतांत्रिकों (Fraternal Democrats) की तरह चेल्जियम सुधार-नित्र-संघ बनाया जाय । संगठनके लिये जो कमीशन नियुक्त हुत्रा, उसमें एंगेल्स भी चुने गये, लेकिन उन्हें जल्दी ही बुशोल्स छोड़ना पड़ा, जिसपर उन्होंने वोट्रेंडचे विफारिश की, कि मेरी वगह मार्क्को ले लिया जाय श्रीर यह भी वतलाया कि अगर २७ सितम्बरकी समामें मार्क्स मीजूद होते, तो निस्तन्देह उन्हें निर्याचित किया गया होता : "इसिलये ऐसा करनेका मतलव यह नहीं होगा, कि क्मीरानमें मेरा स्थान मार्क्स ले रहे हैं, बल्कि इसके विरुद्ध असली नात यह है, कि समामें वह उनका प्रतिनिधित्वकर रहा था।" श्रन्तमें जब सार्व-देशिक एकताके लिये जनतांत्रिक समा ७-१५ नयम्बरको बनाई गई, तो इम्बेर्ट श्रीर नार्क्स उर-सनापति चुने गये, नेलिनेट ग्रानरैरी समापति श्रीर जोट्रेड कार्य-कारी नमापति । तमाकी नियमावलीपर वेलिनयन, नर्मन, फ्रेंच ग्रौर पोल सव मिलाकर करीत्र ६० त्रादिनियोंके हत्ताक्र थे । जर्मन हत्ताक्र करनेवालोंमें मार्क्ट मोनेन हेस, जार्ज वार्थ, दोनों वोलक, स्थितन वोर्न ख्रीर बोर्नस्टेट भी थे ।

नई लमा (एसोिनयेशन) ने सबने पहली जो बड़ी मीटिंग २६ नवम्बर (१८४७ ई०) को पोल-क्रांतिके वार्षिकोत्त्वव मनानेके लिये की । जर्मन सदस्यों की त्रांत्से फेन बोर्नने भागए दिया, जिसपर लोगोने बड़ी हपेध्विन की । मार्क्स उस समय वहाँ मौजूद नहीं थे, वह विसदर्श जनतांत्रिक सभाके प्रतिनिधिके तीरपर लन्दन गये हुये थे, जहाँपर भी पोल-क्रांति मनानेके लिये ही समा हो रही थी। इस समय जो व्याख्यान उन्होंने दिया था, उसमे उन्होंने सर्वहाराकी जात श्रीर क्रांतिकारी स्वरमें कहा था: "प्राचीन पोलेंड छुप्त हो गया श्रीर हम उसके पुन: लीट श्रानेकी इच्छा नहीं रखते। किन्तु यह केवल पुराने पोलेंडकी ही वात नहीं, विक्त पुराने जर्मनी, पुराने फ्रांस श्रीर पुराने इगलेंड वस्तुत: सभी पुराने छुप्त तमाजके लिये यही वात है। तो भी पुराने समाजका छुप्त होना उनके लिये कोई श्रर्थ नहीं रखता, जिनका उसके साथ कुछ छुप्त नहीं होता, श्रीर सभी देशोंके लोगोंकी बहुसखाकी यहीं स्थिति है। मार्क्सने इस व्याख्यानमें बतजाया, कि ब्र्वांबांके उत्पर सर्वंहाराकी विजय होनेपर सभी उत्पीदित जातियोंको स्वतत्रता मिलेगी। श्रंग्रेज सर्वंहाराकी श्रग्रेज सूर्वांबीपर विजय सभी उत्पीदितोंकी विजय होगी। पोलेंड पोलेखिमें मुक्त नहीं होगा, चिक्त इगलेंडमें। श्रगर चार्टिस्ट श्रपने देशमें श्रपने शत्रुश्लोंको हरा सके, तो वह सारे चूर्वां समाजको हरायेगे।

जो श्रमिमाष्या पार्क्सने विरादराना जनतात्रिकां के हाथमें दिया था, उसका स्वागत भी उसी तरह हुआ था: "श्रापके प्रतिनिधि, हमारे मित्र श्रीर माई मार्क्स श्रापको बतलायेगे, कि हमने पढे जानेपर उसका कितने उत्पाहके साथ स्वागत किया। सभी श्रॉले श्रानन्दसे चमकने लगीं, सभी कठ स्वागतके लिये जोल उठे, श्रीर श्रापके प्रतिनिधिकी श्रोर विरादराना तौरसे सभी हाय श्रागे बढ़े।...राजाश्रोके षड्यत्रोंका जवाव हमें लोगोंके षड्यत्र द्वारा देना होगा। .. हमारा हट त्रिश्वास है, कि श्रव हमे वास्तिविक जनता, सर्वहाराको सम्बंधित करना है—उन मनुष्योंको जो कि रात-दिन वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाके मारके नीचे दबे खून-पर्शना एक कर रहे हैं—श्रगर हम श्राम श्रातृत्व पैदा करना चाहते हैं। . हम जल्दी ही देखेगे, बल्कि इसी वक्त देख रहे हैं, कि माईचारेके कडावरदार, मानवजातिके मनोनीत वीर इसी सब्क द्वारा मोपदो, मिस्रीखानो, हलों, श्रहरेनो श्रीर फैक्टरियोंसे श्रा रहे हैं। इसके वाद विरादराना जनतात्रिकोंने सितम्बर १८४८ में बुरोल्समे एक श्राम जनतात्रिक काग्रेस करनेका प्रस्ताव किया —िसतस्वर १८४७ में वहां पर पूँजीपतियोंने श्रपनी सक्त व्यापर काग्रेस की थी।

इस समाके अतिरिक्त मार्क्सके लन्दन जानेका एक और भी उद्देश्य था। जिस हालमें पौल-क्रांतिका वार्षिकोत्सव मनाया गया था, उसीमें कम्युनिस्ट-कम-कर-शिचा-लीगका हेडक्वार्टर था, जिसे १८४० ई० में शापर, वाबर, मोलने स्थापित किया था। पोल-क्रांति वार्षिकोत्सवकी बैठकके बाद इसी जगह कम्यु-निस्ट लीगकी दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें नई नियमावलोंको निश्चित तौरसे स्वीकार करके नये प्रोग्रामपर बहस करनी थी। एंगेल्स भी इस कांग्रेसमें मौजूद थे। २७ नवम्बरको उन्होंने पैरिस छोड़ा और बैल्जियमके बन्दरगाह ग्रोस्टेंडमें मावसंस्र मिलकर दोनों साथ खाड़ी पार कर इंगलैंड गये। कांग्रेसमें दस दिनों तक वाद-विवाद और विचार-विनिमय होता रहा। इसके बाद मार्क्स और एंगेल्सको कम्युनिच्म (साम्यवाद) के मौलिक सिद्धान्तोंको एक सार्वजनिक घोषणा पत्रके तौरपर तैयार करनेका काम सौंपा गया।

२. कम्युनिस्ट घोषणा पत्र

कम्युनिस्ट लीग की द्वितीय कांग्रेसने इस प्रकार उस ग्रमर घोषणाकी तैयार करने का निश्चय किया, जो सर्वहाराकी ग्रन्तिम विजय तक पथ-प्रदर्शनका काम देता रहा ग्रीर रहेगा, तथा साथ ही जिसमें भविष्यके नव-निर्माणका मार्ग भी निर्दिष्ट है। दिसम्बरके भध्यमें मार्क्स ग्रुशेल्स लीट ग्राये ग्रीर एंगेल्स बुशेल्स होते पेरिस चले गये। दोनों ही घोषणा तैयार करनेमें जल्दीका ख्याल नहीं कर रहे थे, उनके पास दूसरे काम भी थे; लेकिन, कम्युनिस्ट लीगकी केन्द्रीय कमेटी देर करनेके लिये तैयार नहीं थी। उसने २४ जनवरी १८४८ को बुशेल्सको जिला कमेटीको कर्ड़ाईके साथ सावधान करते हुये कहा, कि हम नागरिक मार्क्सके खिलाफ कदम उठानेके लिये मजबूर होंगे, यदि उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टीके घोषणा पत्रको—जिसे तैयार करनेकी जिम्मेवारी उन्होंने ग्रुपने ऊपर ली है—१ फरवरी तक तैयार करके केन्द्रीय कमेटीके हाथमें नहीं दे देते। लेकिन सारी धमकीके बाद भी घोषणापत्र एक महीनेमें तैयार नहीं हो सका। देर होनेका कारण मार्क्सका स्वभाव हो सकता था, क्योंकि वह किसी कामको ग्राघे दिलसे करना नहीं जानते थे। यह भी हो सकता है, कि एंगेल्स उस समय

उनके पास नहीं थे। लेकिन, उधर लन्दनमें केन्द्रीय कमेटी अधीर हो गई, जब उसने सुना कि मार्क्स बुशेल्समें प्रचारमें बड़े जोर-शोरके साथ लगे हुये हैं।

ह जनवरी १८४८ को जनतात्रिक समामें मार्क्सने मुक्त व्यापारपर एक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यानको वह ब्रुसेल्सकी मुक्त-व्यापार-काग्रेसमें देना चाहते थे, लेकिन उनको बोलनेका ग्रवसर नही दिया गया। उन्होंने मुक्त व्यापारियोंकी घोखे-घडीका पर्दाफाश किया, जो कि कमकरोंके हितकी बात मौके-बेमौके किया करते हैं। मार्क्सने बतलाया कि मुक्त व्यापार कमकरोंकी नहीं, बिल्कि पूँजीकी मुक्ति है, जो कि राष्ट्रोंकी इस सीमात्रोंको तोड फेकना चाहती है, क्योंकि वह उसकी शक्तियोंको स्वेच्छापूर्वक काम करनेमें वाधा देती हैं। मुक्त व्यापार राष्ट्रोंका ध्वंस करता है, ऋौर ब्रूब्वांजी तथा सर्वहारा (प्रोलैतारियत) के बीचके विरोधको छोर तीव्र बनाता है, ऋौर इस प्रकार वह सामाजिक क्रातिकी गतिको त्रंज करता है। इस क्रातिकारी ऋर्यमें मार्क्स मुक्त व्यापारके पद्तमें थे। एंगेल्स-की तरह मार्क्स रिच्त व्यापारके विरुद्ध मुक्त व्यापारके पश्नको छुद्ध क्रातिकारी हथिसे देखते थे। मार्क्सके इस माष्याका जनतात्रिक समाके सदस्योंने बडा स्वागत किया और उन्होंने उसे फेच छौर फ्लैमिश माषाओंमें ऋपनी श्रोरसे छापनेका निश्चय किया।

उक्त व्याख्यानसे मी अधिक तथा सदाके महत्वका एक व्याख्यान, उसी समय जर्मन-कमकर-समामें मार्क्सने दिया था, जिसमें मज़्री-अम और पूंजीकी व्याख्या की थी। इस माष्यामें मार्क्सने वतलाया कि मज़्री अपने द्वारा उत्पा-दित मालमें मज़्रोंका हिस्सा नहीं है, बल्कि वह उस वक्त भी वर्तमान मालोका वह हिस्सा है, जिससे कि पूंजीपति उत्पादक अम-शक्तिकी कुछ मात्राको खरी-दता है। उन्होने समक्ताया, कि अम-शक्तिका दाम दूसरे पख्योंके दामकी तरह इस बातपर निर्भर करता है, कि उसके उत्पादनमें कितना खर्च हुआ। मामूली अम-शक्तिके उत्पादनका खर्च है: अपने अस्तित्वको कायम रखने तथा अपनी जाति (सन्तान) को जारी रखनेमें समर्थ होनेके लिये आवश्यक साधनोको कमकरोंके लिये प्रस्तुत करनेपर जो खर्च आता है। इन्हीं खर्चोंका दाम है मज़्री। दूसरे सभी पख्यों (सौदों) के दामोकी तरह यह दाम भी बाजारकी त्तरह प्रतियोगिताके उतार-चढ़ावके अनुसार खर्चसे कभी ऊँचा कभी नीचा होता है। लेकिन इन उतार-चढ़ावोंकी सीमाके भीतर रहते यह प्राय: निम्नतम मजूरी के करीब होता है।

इसके बाद मार्क्सने पूँजीको लिया। बूर्जा अर्थशास्त्री कहते हैं, कि पूँजी संचित-श्रमका ही नाम है। मार्क्सने पूछा: "एक (हन्सी) दास क्या है १ रंगनाली जातिका एक मानव । एक व्याख्या उतनी ही ऋच्छी है, जितनी दूसरी । नीयो एक नीग्रो है, लेकिन कुछ परिस्थितियों में वह दास बन सकता है। कपास कातनेवाली मशीन कपास कातने के लिये एक मशीन है, वह निश्चित स्थितियों .में ही पूँजीका रूप लेती है। बिना उन परिस्थितियोंके वह उसी तरह पूँजी नहीं चन सकती, जिस तरह कि सोना सिक्का या चीनी-चीनीका दाम।" "पूँजी एक सामाजिक उत्पादक साधन, बूड्वी समाजका एक उत्पादक सम्बन्ध है। सीदेकी एक मात्रा, विनिमय मूल्यकी मात्राका एक परिमाण पँजीका रूप लेता है, जबकि वह स्वतंत्र सामाजिक शक्तिके रूपमें प्रकट होता है। अर्थात् जब समाजके एक भागके तौरपर प्रकट होता है, श्रीर सीघे सजीव श्रम-शक्तिके साथ विनिमय द्धारा अपनेको बढ़ाता है।" पुँजीके अस्तित्वके लिये एक ऐसे वर्गका वहाँ मौजूद होना त्रावश्यक है, जिसके पास अम (मेहनत) करनेकी च्रमताके सिवा श्रीर कोई चीज न हो । सीघे सजीव श्रम-शक्तिके ऊपर संचित, त्रातीत, वहिस्थापित श्रमकी शक्ति पहले पहल पँजीके रूपमें श्रमको इकट्टा करती है। पूँजी इसे नहीं कहते, कि संचित श्रम ग्रागे ग्रीर उत्पादन करनेके लिये साधनके तौरपर सजीव श्रम-शक्तिकी सेवा-सहायता करता है। पूँजी इस रूपमें है, कि संचित श्रमके विनिमय-मूल्यको कायम रखने ऋौर बढ़ानेक साधनके रूपमें उसकी सजीव अम-शक्ति सेवा-सहायता करती है। पूँजी ग्रीर श्रम-शक्ति एक दूसरेपर श्रवलंबित, एक दूसरेको परस्पर उत्पादित करती है।

मार्क्सने पूँजीवादी अर्थशास्त्रियोंकी इस बातको भी गलत बतलाया, कि पूँजीके, विस्तार और विकासके साथ मज्योंकी भी हालत बेहतर होती है। उन्होंने कहा कि यह कोई आवश्यक नहीं है, कि पूँजीके साथ मज्यी भी जरूर बढ़े। यह कहना सच नहीं है, कि पूँजी जितनो ही मोटी-तगड़ी होती जायगी, वह

अपने दासको भी उसी तरह खूब खिलाये-पिलायेगी। उत्पादक पूँजीकी चुद्धिसे पूँजीका संचयन श्रीर केन्द्रीकरण बढ़ता है। उसके केन्द्रीकरण द्वारा श्रमका श्रीर भी विमाजन होता है और भी अधिक मशीनोंका इस्तेमाल बढ़ता है। अमका विभाजन जितना ही अधिक होता है, उतना ही अधिक कमकरोका अपना त्रिशेष कीशल अनावश्यक होकर नष्ट हो जाता है। जब इस विशेष कौशलके स्थानपर अमको यह मशीन द्वारा ऐसे रूपमे पेश किया है, जिसमे कि कोई भी ब्राइमी उस कामको आसानीसे कर सकता है, तो इसके कारण कमकरोमें होड बढ़ जाती है। यह होड और भी जोर पकड़ती है, जब कि अम-विभाजन एक मजदूरको पहले तीन मजदूरों जितना काम करने योग्य बना देता है। मशीन इस वातकी श्रीर श्रिषक इस परिणामको पैदा करती जाती है। उत्पादक पूँजीकी शृद्धि श्रीद्यो-गिक पूँजीपितयोंको इसके लिए मजबर करती है, कि वह और अधिक विकसित यन्त्र-साधनोंसे काम ले । त्रापने इस काम द्वारा वह छोटे-छोटे उद्योगपितयोको दिवाला निकालनेके लिए मजबूर कर उन्हें सर्वहारोकी जमातके भीतर फेंक देते हैं। पूँजीका सचयन जितना ही श्रिधिक बढता जाता है, उतनी ही सूक्की दर गिरती जाती है, जिसके कारण छोटे-छोटे शेयर-होल्डर (भागीदार) अपने मिलनेवाले सद्दपर जीवित नहीं रह सकते श्रीर वह काम हॅंद्रनेके लिये उद्योग-पितयोंके पास जानेके लिए मजबूर होते हैं। इस प्रकार ये शेयर-होल्डर मां सर्वहाराकी जमातको बदाते हैं।

श्रन्तमें मार्क्सने वतलाया, कि उत्पादक पूँची जितनी श्रिषिक वढ़ती है, उतनी ही श्रपने पैदा किये हुये मालके लिये ऐसा वाजार कायन करनेको मजबूर होती है, जिसकी श्रावश्यकताश्रोका उसे पता नहीं। फिर उपन मॉगसे श्रागे चढ नाती है, पूर्ति मॉगको मजबूर करनेकी कोशिश करती है, लेकिन नव उममे सफल नहीं होती, श्रर्थात् मालकी उपन मॉगसे कही श्रिषक हो नाती है, तव श्रर्थ-संकट (वाजारकी मन्दी) पैदा हो जाता है, जो वह श्रीहोगिक भूकम्प है, जिसमें श्रपनी उपनके एक मागकी विल नही, विल्क स्वय उत्पादक शक्तियोंके मी एक मागकी विल पाताल लोकके काले देवताश्रोंको चढ़ा व्यापार नगत् श्रपनेको वचानेकी कोशिश करता है। ये मूकम्प श्रागे श्रीर वार-वार श्रीर मयंकर होते

जाते हैं। पूँजी केवल अमपर ही जीवन घारण नहीं करती, बल्कि एक सामन्त या वर्बर सरदारकी तरह वह अपने दासोंकी लाशोंको भी अपने साथ कब्रमें घसीट ले जाती है—पूँजीके इस भूकम्पमें बहुतसे कमकर भी वेकार हो भूखें और बरबाद होते हैं। निष्कर्ष निकालते हुये मार्क्सने कहा—'अगर पूँजी वेगके साथ बदती है, तो मजदूरोंके बीचमें होड़ और तेजीके साथ बदती है, अर्थात् मजूरोंके जीवन और काम-काजके साधन अपेद्धाकृत कम हो जाते हैं। तो भी, पूँजीकी तेजीके साथ बृद्धि मजूरी-अमके लिये अत्यन्त अनुकूल स्थिति है।

मार्क्सने बुशेल्समें जर्मन मजूरोंके सामने जो व्यवस्था दिया था, उसका अपूर्ण अंश ही हमारे पास तक पहुँचा। लेकिन इससे यह पता लग जाता है, कि मार्क्स किस तरह प्रचार कर रहे थे। उनका व्याख्यान च्रिणिक आवेश और उत्साह पैदा करनेके लिए नहीं होता था, विलक्ष वह वैज्ञानिक तथ्योंको रखकर हरेक चीजकी तहमें पहुँचनेके लिए पथ-प्रदर्शनका काम देता था। लेकिन मार्क्सके व्याख्यानों और उनके महत्वको समक्तनेके लिए मार्क्सय हिस्की आव- श्यकता थी, नहीं तो उन्हें आसानीसे अरएयरोदन कहा जा सकता है।

ऐसी क्रान्तिकारी बक्कानिनने पोल-क्रान्तिके वार्षिकोत्सवपर व्याख्यान दिया था, जिसके कारण उसे फ्रांससे निकल जानेका हुकुम हुन्ना श्रोर वह उसी समय बुरोल्स पहुँचा था, जब कि मार्क्सने मजूर-अम श्रोर पूँजीके ऊपर उक्त कई लेक्चर दिये थे। बकुनिनने रू दिसम्बर १८४७ को श्रपने एक रूसी मित्रको लिखा था—'मार्क्स श्रव मी श्रपनी उन्हीं पुरानी फजूलकी कार्यवाइयोंमें लगा हुन्ना है, श्रोर उसके द्वारा मजूरोंमेंसे तर्क-बूकनेवाले बनाकर उन्हें खराब कर रहा है। यह वही पुरानी पागलपनका सिद्धान्त छोड़ना श्रोर श्रतुष्ट श्रात्मतुष्टि है। विक्तन पीछे जार-मक्त वना, उसने वह सभी पाप किये, जो कि पतित भूतपूर्व क्रान्तिकारी किया करते हैं। लेकिन श्रपने इस तरहके विचारोंसे वह मार्क्सके स्थानपर श्रपने देशका पथ-प्रदर्शक श्रीर निर्माता कैसे वन सकता था ९ उसने हरवेगको पत्र लिखते हुए मार्क्स श्रीर एंगेल्सके ऊपर श्रीर भी कठोर बाग्वाख फेंकते हुए कहा था—'संचेपमें कूठ श्रीर मूर्खता, मूर्खता श्रीर सूठ। उनके साथ रहते हुए स्वतन्त्र वायुमंडलमें साँस लेना श्रसम्भव है। मैं उनसे

त्रालग रहता हूं त्रीर मैंने उन्हें निल्कुल साफ तौरसे कह दिया है कि मैं तुम्हारे कम्युनिस्ट शिल्पकार समूहमें शामिल नहीं हूंगा, मुक्ते उससे कुछ लेना-देना नहीं है।

'कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र' जैसी ऋमर सजीव कृतिके ऋस्तित्वमें श्राना जो संचेपमें है-मार्क्स श्रीर एंगेल्सने बुशेल्समे पहुँचकर 'कमकर शिचा लीग' की स्थापना की । फिर बुशेल्ससे उन्होंने जर्मनी, लन्दन, पेरिस श्रौर स्वीजलैंडके कम्युनिस्ट हलकोके साथ सम्बन्ध स्थापित किया, जहाँपर उनके श्रीर उनके सहायकों द्वारा संचालित 'पन-व्यवहार कमेटियाँ' ननाई गई । इसी सम्बन्धमें मार्क्सने प्रूषोंको मी लिखा था। १८४६ ई० मे केन्द्रीय पत्र-व्यवहार व्यूरो ब्र्शेल्समे या, जहाँ मार्क्स स्वय उसका नेतृत्व करते थे। पेरिसके न्यूरोके सञ्चालक एगेल्स ऋौर लन्दनके व्यूरोके सञ्चालक वावर, शापेर ऋौर मोल थे। २० जनवरी १८४३ को मोलने लन्दन पत्र-व्यवहार कमेटीके प्रतिनिधिके तौरपर आकर न्यूरोके वारेमें रिपोर्ट दी। इसी मुलाकातका परियाम लन्दनमे एक ऋन्तर्राष्ट्रीय कॉंग्रेस बुलानेके रूपमें हुआ। इसी काँग्रेसमे कम्युनिस्ट लीग कायम की गई, निसमें ब्रुशेल्सके सङ्गठनके प्रतिनिधिके तौरपर विलहेल्म वॉल्फ शामिल हुआ या। जैसा कि पहले वतलाया, मार्क्स पहली काँग्रेसमें शामिल नहीं थे। वह नवम्त्रर १८४७ की दूसरी कॉंग्रेसमें भी नहीं उपस्थित हो सके। कम्युनिस्ट लीगकी काँग्रेसके निश्चयानुसार कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके तैयार करनेका काम उनको सौंपा गया, जो कि १८४८ के फरवरीके उत्तरार्धमें प्रकाशित हुम्रा-यह स्मरण रखनेकी बात है, कि पहले दो संस्करणोर्ने इस घोषणका नाम 'कम्युनिस्ट पार्टीका घोषणा-पत्र' था। इससे यह मालूम होगा कि यह घोषणा-पत्र यों ही दिमागसे नहीं निकला, विलक्ष उसके पहले कम्युनिस्ट सङ्गठन ऋस्तित्वमे आ चुके थे, जिनके पथ-प्रदर्शनके लिए इसे तैयार करनेकी जरूरत पड़ी।

कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके मसौदेको तैयार करनेमें मार्क्स श्रौर एंगेल्सके श्रितिरिक्त मोजेज हेसने मी हाथ वॅटाया था। प्रारम्भिक मसौदेका रूप कैसा था, इसे मार्क्सको लिखे एगेल्सके २४ नवम्बर १८४७ (द्वितीय कॉंग्रेससे कुछ ही समय पहले) के पत्रसे मालूम होता है—'विश्वास-स्वीकारके ऊपर जरा सा

विचारो । मैं समभता हूँ कि सिद्धान्त प्रश्नोत्तरीके ढंगको छोड़कर इसे कम्यनिस्ट घोषणा-पत्र कहना अञ्जा होगा। चूँकि कुछ इतिहासकी बातें भी इसमें लानी हैं, इसलिए मैं समक्तता हूँ, इसका वर्तमान रूप ठीक नहीं होगा। जो कुछ मैंने इसके बारेमें किया है, इसे मैं अपने साथ लाया हूँ। यह एक सीधे-सादे वर्णनात्मक ढंगमें है, लेकिन बड़ी बुरी तरहसे सम्पादित है। मैंने ऋत्यन्त जल्दी-जल्दीमें इसे तैयार किया है।' एंगेल्सने ग्रापने इस पत्रमें यह भी सूचित किया था. कि मैंने मसौदेको पेरिसकी शाखात्रोंके सामने पेश नहीं किया है। लेकिन मुफे त्राशा है, कि एक-दो छोटी-मोटी बातोंके सिवा इसे स्वीकार कर लिया जायगा। एंगेल्सने पहला मसौदा पञ्चीस प्रश्नों श्रीर उनके उत्तरोंके रूपमें तैयार किया । लेकिन, उन्हें प्रश्नोत्तरीका ढंग नहीं पसन्द त्राया, श्रीर चिरस्थायी महत्व देनेके लिये उस शैलीमें करनेका सुभाव रक्खा, जिसमें कि घोषणापत्र हमारे सामने त्राज मौजूद है। घोषणापत्र एक बिल्कुल स्वतन्त्र श्रीर मौलिक कृति है, लेकिन जहाँ तक विचारोंका सम्बन्ध है, उसमें कोई ऐसे विचार नहीं, जिसके ऊपर मार्क्स श्रीर एंगेल्सने पहले न लिखा हो। जहाँ तक शैलीका सम्बन्ध है, उसका ऋन्तिम रूप देनेमें सबसे ऋधिक हाथ मार्क्सका है, लेकिन जिन समस्यात्रोंका वर्णन इसमें स्राया है, उसमें एंगेल्सका भी मार्क्ससे कम हाथ नहीं है। जिस समय घोषणापत्र तैयार हुन्ना वह समय था। जन कि यूरोपीय प्रतिक्रियानादका चरम सबसे नड़ा समर्थक रूस कर रहा था। यह वह समय था, जन्न कि यूरोपीय सर्वहाराके फाजिल स्रादिमयोंको युक्तराष्ट्र ग्रमेरिका ग्रपने भीतर हजम कर रहा था। श्रमेरिका श्रीर रूप दोनों ही देश यूरोपको कच्चा माल देते थे, श्रीर बदलेमें वह यूरोपकी श्रीद्योगिक उपजकी बाजार वने हुए थे। इस प्रकार दोनों ही यूरोपीय सामाजिक व्यवस्थाके उस समय ऋंग नहीं थे।

कम्युनिस्ट घोपग्गपत्रमें १८४७ ई० तकके ऐतिहासिक विकासको ही लिया गया था, लेकिन उसमें जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, वह सदाके लिए एकसे हैं। 'दुनियाके सर्वहारो, एक हो जान्त्रो।' इस मन्त्रने तबसे न जाने कितनी विजयोंके नारेका रूप लिया। १८४८ ई० के आरंभमें घोषणापत्र जर्मन मूल और फ्रेंच अनुवादके रूपमें प्रकाशित हुआ। अंग्रेजीमें उसका अनुवाद दो साल बाद १८५० ई० में छुपा। प्रथम विश्वयुद्धके समय तुर्की भाषामे जब घोषणा प्रकाशित हुई, तो सुल्तानकी पुलिसने कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स नामक राजद्रोहियोंको गिरफ्तार करनेका वारट निकाला था। मानव-इतिहासके सारे राजनीतिक निबन्धोम यह घोषणा सबसे महान्, सबसे स्पष्ट, सबसे व्यापक अर्थ और प्रेरणावाली कृति है। इसके चारों मागो का साराश है:

(१) पहले मागमे पूँचीपित श्रीर सर्वहारा (प्रोलेतारी) इन दोनों वर्गोंके उत्थान श्रीर विकासका संचिप्त विवरण है। पूँजीपित सामाजिक-सामूहिक रूपसे होते उत्पादनके साधनों—कलकारखानों—का स्वामी है। सर्वहाराके पास उत्पादनके श्रपने साधन नहीं है। काम करके जीनेके लिये मजदूरी पर श्रपना श्रम वेचनेके सिवाय उसके वास्ते कोई चारा नहीं है।

दुनियाका लिखित इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास है । दासता तथा सामन्तशाही युगमें उत्पीडक श्रीर उत्पीडितके बीच ये संघर्ष, कभी छिपे, कभी प्रकट चलते रहे। इनका श्रन्त या तो समाजके क्रान्तिकारी पुनर्निर्माणके रूपमे हुन्ना, या दोनो प्रतिद्वन्द्वी वर्गोंके नाशके साथ।

श्रमेरिकाके श्राविष्कार, एसियाके द्वारके खुलने श्रौर इनके साथ संसारके बाबारके विस्तारसे पूँजीवादका प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद बाजारकी माँगोको पूरा करने श्रौर श्रिषिकसे श्रिधिक लाम उठाने के लिये मापसे चलनेवाले कल-कारखानो, यातायातके लिये मापकी रेलों श्रौर जहाजोका प्रचार हुआ।

पूँजीवादके बढनेके साथ सामन्तशाहीसे उसकी टक्कर हुई श्रीर श्रन्तमें उसने सामन्तशाहीको परास्त कर श्रपनी प्रधानता स्थापित की। उत्पादनकी शक्तियोको उसने इतना बढ़ाया, जितना उससे पहिले कोई ख्यालमे भी नहीं ला सकता था। पूँजीवादने एक श्रीर काम किया—कच्चे श्रीर तैयार मालके दान-श्रादान द्वारा उसने संसारको एक दूसरेके श्राश्रित कर दिया। पहले उत्पादन विखरे हुये थे। उन्हें इसने केन्द्रित किया। पूँजीवादियोकी शक्ति बढती ही गई श्रीर शासन-यन्त्रपर भी उनका श्रिषकार बढा।

सामन्तशाही समाजने उत्पादनकी वह शक्तियाँ पैदा कीं, जिनपर उनका नियंत्रण नहीं हो सकता था। व्यापारको बढ़ा कल-कारखानोंको प्रारम्भ कर उसने पूँजीवादको जन्म दिया। पूँजीने उत्पादनके जबर्दस्त साधन तैयार किये। उसके वितरण और विनिमयके तरीके भी कम आश्चर्यकारी नहीं हैं। लेकिन उसने उत्पादन और वितरणका सामंजस्य नहीं कर पाया। उत्पादन ज्यादा, किन्तु उसे खरीदनेके लिये जो पैसा चाहिये, उसमें अतिरिक्त-मूल्यके बहाने कटौती की गई। जिससे सभी पर्ण्यांके खरीदनेके लिये पैसा नहीं रहा। इसका हि परिणाम है, समय-समयपर होती रहनेवाली मन्दियाँ, उत्पादित धनका जान- वूसकर संहार। इस प्रकार उसके अपने नाशके लिये हिथयार आ मौजूद हुआ।

पूँजीवादने अपने मारनेके लिये हथियार ही नहीं तैयार किया, बल्कि वह आदमी भी तैयार किये, जो हथियारको इस्तेमाल कर सकते हैं, यह हैं उनके अपने कारखानेके मजदूर—सर्वहारा।

मध्यम वर्ग—व्यापारी, शिल्पकार, किसान धीरे-धीरे नीचे गिरते जा रहे हैं। इन्हींमेंसे सर्वहारा फीजके रंगस्ट भरती हो रहे हैं। ख्रात्मरचा—जीवका-रचा—के लिये मजदूर संगठित हो रहे हैं, और उनके हितोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये उनका राजनीतिक दल—मज़दूर पार्टी वन रही है। दूसरी श्रेखियोंमें भी सर्वहारापन बढ़ रहा है, किन्तु मजदूर ही वह श्रेखी है, जो क्रान्ति लानेकी चमता रखती है। दूसरे पीड़ित-वर्ग अपने वर्तमान नहीं, भविष्यमें मिलनेवाले स्वत्वके लिये लड़ना चाहते हैं, किन्तु सर्वहारा वर्तमानके लिये लड़ रहे हैं। मजदूर-आन्दोलन अल्पमतोंका नहीं, इतिहासमें पहले-पहल एक मारी बहुसंख्या-का आन्दोलन है। मजदूरोंकी हालत दिनपर दिन गिरती जा रही है, मजदूरीमें कमी के साथ वेकारी बढ़ती जा रही है।

पूँजीवादी खुद अपनी कब खोदनेवाले इन मजदूरोंको तैयार कर चुके हैं।
(२) घोषणा पत्रके दूसरे भागके एक अधिकरणमें मजदूरोंका कमूनिस्तोंके साथ क्या सम्बन्ध है, इसे बतलाया गया है। कमूनिस्ट मजदूर वर्गके अग हैं, इसलिये उससे अलग-थलग रहने का ख्याल बहुत बुरा है। "(१) मजदूर-वर्गकी दूसरी पार्टियोंके खिलाफ कमूनिस्टोंकी कोई अलग पार्टी नहीं है। (२)

सर्वहारा वर्गके सारे स्वायों से श्रालग उनका श्रापना कोई स्वार्थ नहीं है। (३) सर्वहारा श्रान्दोलनको खास रूपमें दालनेके लिये वह श्रापना कोई मतवाद नहीं इस्तेमाल करना चाहते।"

"कमूनिस्त प्रत्येक देशके मजदूर-वर्गका वहुत ही अग्रगामी श्रीर टढ़मनस्क भाग है। यह वह भाग है, जो दूसरोको श्रागेकी श्रोर ढकेलता ले जाता है। दूसरी श्रोर, विद्वान्त समझनेमें, सर्वहारा भारी जनसमूहसे वह इस वातमें विशेषता रखता है, कि वह कूचके रास्ते, सर्वहारा-श्रान्दोलनके श्रन्तिम साधा-रख परिखाम श्रीर स्थितियोंको साफ तौरपर समस्ता है।...कमूनिस्तोंका नज-दीकका उद्देश्य है—सर्वहारा को एक वर्गमे बद्ध करना, पूँजीवादी प्रधानताको उत्तरना श्रीर सर्वहारा द्वारा शासन-शक्तिपर श्रिधिकार जमाना।"

कमूनिस्तोंका सिद्धान्त (निष्कर्ष) किसी विश्व-सुधारकके आविष्कृत विचारोंपर नहीं, बल्कि इमारी आँखोंके सामने चलते ऐतिहासिक आन्दोलनपर आधारित है।

दूसरे मागके वाकी अंशमें कमूनिस्तों के उपर किये गये आसेपोंका उत्तर दिया गया है। साम्यवाद किसी आदमीको समाजके द्वारा उत्पादित पदायों के उपमोग करने के अधिकारसे वंचित नहीं करना चाहता। वह सिर्फ इतना ही चाहता है, कि इस तरहके उपमोग द्वारा दूसरे अमपर काबू पानेकी कोशिश न की जाय। पूँजीवादी हायतोवा मचाते हैं, कि मजदूरों के रावसे संस्कृतिका खातमा हो जायगा, किन्तु पूँजीवादियोंकी संस्कृति आदमीको मशीन-की तरह काम करने की शिखां अप्रतिरिक्त है ही क्या श कमूनिस्त स्त्रियोंपर साम्का अधिकार नहीं चाहते, वह सिर्फ इतना ही कहते हैं, कि स्त्रियोंकी अर्ध-दासता खतम होनी चाहिये, पुन्त और प्रकट सब तरहकी वेश्यादृति वन्द होनी चाहिये और स्त्रीको समाजमे हर तरहसे समान स्थान मिलना चाहिये।

कमूनिस्त स्वदेश और राष्ट्रीयताके भावको मियाना चाहते हैं, इस आर्त्तेप-का उत्तर यह है, कि "मजदूरका अपना कोई देश नहीं। जो उनके पास है ही नहीं, उसे हम उनसे छीनेगे कैंसे ! सर्वहाराको राजनीतिक प्रधानता प्राप्त करनी है, राष्ट्रका मुख्य वर्ग बनना है, यह खुद एक राष्ट्रीय काम है। "लेकिन जिस वूर्जा राष्ट्रीयताका भतलव है, एक राष्ट्रका दूसरे राष्ट्रके उत्तर सम्पद्दा मारना, लगातार लड़नेकी तैयारी करते रहना, वैसी राष्ट्रीयता जरूर कमूनिस्त नहीं चाहते। वर्गोंके आपसके विरोध जितनी ही मात्रामें खतम होंगे, उतनी ही मात्रामें एक जातिका दूसरी जातिसे वैमनस्य भी खुप्त होगा।

कमूनिस्त-प्रोग्रामके बारेमें कहा गया है—"क्रान्तिमें पहिला काम जो मजदूर-वर्गको करना है, वह है अपनेको शासक-वर्गके रूपमें परिएत करना, जनतंत्रता के युद्धको जीतना। सर्वहारा अपनी प्रभुताको इस्तेमाल करेंगे...बूर्ज्या वर्गसे सभी पूँजीको अपने हाथमें ले लेनेके लिये, उत्पादनके सभी साधनोंको केन्द्रित करने, राज्य—शासक वर्गके तौरपर संगठित सर्वहारा (प्रोलेतारी)—को हाथमें लेने और सम्पूर्ण उत्पादन-शक्तियोंको जितनी शीधतासे हो सके, उतनी शीधता से बढ़ानेके लिये।"

नजदीकके प्रोग्राम हैं: ज़मीनकी मिल्कियतको उठा देना तथा सभी तरहके जमीनसे लिये जानेवाले करोंका सार्वजनिक कामके लिये ज्यय करना। एक भारी श्रीर श्रामदनीके श्रनुसार बढ़ते हुये इन्कम-टैक्स द्वारा वरासतके सभी श्रिषकारोंका बन्द करना। भगोज़ें श्रीर विद्रोहियोंकी सम्पत्तिको जन्त करना। राज्यकी पूँजी लगाकर राज्द्रीय यातायातके साधनोंको राज्यके हाथमें केन्द्रित करना। राज्यके द्वारा उत्पादनके साधनों श्रीर फैक्टरियोंको बढ़ाना। परती जमीनको जोतमें लाना श्रीर सम्मिलित योजनाके श्रनुसार जमीनके साधारण उपजाऊ-पनको बढ़ाना। श्रमके लिये सबको जिम्मेवार बनाना, श्रीशोगिक सेनाको स्थापित करना—खासकर खेतीके लिये। खेतीकी कल-कारखानेके उद्योगसे धनिष्ठता स्थापित करना। देशमें श्रिष्ठकाधिक समान वितरण करके दीहात श्रीर शहरंके श्रन्तरको उठा देना। सार्वजनिक पाठशालाश्रोमें सभी बच्चोंकी निःशुल्क शिचा, श्राजके जैसे लड़कोंका फैक्टरीमें काम करना बन्द करना, शिचा श्रीर श्रीशोगिक उत्पादनको एक दूसरेसे मिलाना, श्रादि।

मजदूर-वर्ग खुद अपनी प्रधानताको अन्तमें उठा देगा। जब विकासके पथ-पर चलते-चलते वर्ग-मेद मिट जायगा और सारा उत्पादन सारे राष्ट्रके विशाल संगठनके हाथमें जमा हो जायगा, तो राजनीतिक शक्ति (राज्य) अपने राज-नीतिक रूपको खो देगी। राजनीतिक शक्ति, वस्तुतः एक वर्गकी दूसरे वर्गके उत्पीड़नके लिये संगठित की हुई शक्ति मात्र है। "सर्वहारा की राज-शक्तिके द्वारा सारे उत्पादनको अपने द्वायमे ले शोषक वर्गका अन्त कर देगा श्रीर वर्ग विदेषके मावोको हटा एक वर्ग बना, एक वर्गके तौरपर प्राप्त की गई अपनी प्रधानताको छोड देगा। अब पुराने बूर्जि-समाज, उसके वर्गों और वर्ग-विरोधो की जगह एक ऐसा सगठन होगा, जिसमें सबके विकासके साथ-साथ प्रत्येकका स्वतंत्र विकास होगा।"

- (३) तीसरे मागमे दूसरे समाजवादोंका खंडन है। "वर्तमान समाजके प्रत्येक कायदे-कानृत पर उटोपियन समाजवादियोंका प्रहार मजदूरवर्गकी आँख खोलनेके लिये अत्यन्त मूल्यवान् चीज थी।" लेकिन समी वर्गोंको और शासकवर्गको खास तौरसे, इदय-परिवर्त्तनकी उनकी अपील गलत चीज थी। जब लोगोने वर्ग-स्वार्थपर सगठित समाजकी बुराइयोंको देख लिया, तो वह उस वर्ग-युक्त समाजको कैसे वाछ्ननीय समक्त सकते हैं ? समकाने-बुकानेसे शासकवर्गके हृदय-परिवर्त्तनका यह विश्वास ही था, जिसने उटोपियनोको समी तरहकी राजनीतिक जदोजहद—खासकर क्रान्तिकारो कार्रवाहयो—के खिलाफ कर दिया। वह अपने उद्देश्यको शान्तिमय तरीकेसे पूरा करनेकी चाह रखते थे और अवश्य असफल होनेवाले छोटे-छोटे प्रयोगो द्वारा नये सामाजिक सिद्धान्तकी सच्चाई साजित करना चाहते थे।
- (४) कमूनिस्त सभी जगह वर्त्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध होनेवाले प्रत्येक क्रान्तिकारी ब्रान्दोलनकी सहायता करते हैं। "सभी जगह वह सभी देशोंकी जनतात्रिक पार्टियोकी एकता और मेल-मिलापके लिये कोशिश करते हैं।"

"कमूनिस्त श्रपने विचारां श्रीर उद्देश्योंके छिपानेको बुरा समभते हैं। वह साफ तौरसे घोषित करते हैं, कि हमारा उद्देश्य सभी वर्त्तमान सामाजिक श्रव-स्याश्रोंको बलपूर्वक उठा फेंकनेसे ही पूरा हो सकता है। शासक-वर्गको साम्य-वादी क्रान्तिसे कॉपते रहने दो। सिवाय श्रपनी वेडियोंके, सर्वद्वारांके पास खानेके लिये है ही क्या १ श्रीर पानेके लिये एक संसार है।"

सभी देशोंके सर्वहारो एक हो जास्रो।

अध्याय ६

क्रांति और प्रतिक्रांति (१८४८ ई०)

कम्युनिस्ट घोषणा पत्रके प्रकाशित होते ही मार्क्स श्रीर युरोपके जीवनमें एक संघर्षमय जीवन श्रारम्भ हुआ। जगह-जगह क्रान्तियाँ शुरू हुई श्रीर मार्क्स को उनमें भाग लेने का फिर उत्साह होने लगा। इस समय मार्क्स तीस साल के थे।

१. फ्रोंच-क्रांति (१८४८ ई०)

१७८६ ई० की फ्रेंच-फ्रान्ति यद्यपि सामन्ती-व्यवस्थाको कितने ही श्रंशोंमें उखाइनेमें सफल हुई, लेकिन वहाँ वूज्वीजीको पूरी तौरसे शक्ति हाथमें करनेमें चालीस वर्ष लगे । यद्यपि फ्रांससे राजतंत्र फिरसे स्थापित हो गया, किन्तु यह कहनेकी त्रावश्यकता नहीं, कि वह वृद्धांजीकी छत्रछायामें ही। शोषण त्रीर उत्पीड़नने ग्रव सामन्ती रूपकी जगह पँजीवादी रूप ले लिया। शोषित ग्रीर उत्पीड़ित कब तक चुप रहते ? २४ फरवरी १८४८ को वृज्वी राजतन्त्रको उखाड़ फेंका गया। पैरिसकी इस सफल क्रांतिकी प्रतिध्वनि युरोपके स्त्रौर देशोंमें भी हये विना नहीं २६ सकती थी। सबसे पहिले फ्रेंच राजा वोनापार्त के दामाद नेल्जियमके राजा लियोपोल्दपर बीतनेको हुई, लेकिन लियोपोल्द अपने ससुरसे कहीं श्रिषिक चतुर या। उसने तुरन्त घोषित किया, कि यदि राष्ट्र चाहता है, तो में तुरन्त सिंहासन छोड़नेके लिए तैयार हूँ। वह लोगोंको फँसाने-मुलवानेमें सफल हुन्रा । वूर्ज्या राजनीतिज्ञ उदारवादी मन्त्री देपुती (पार्लियामेंट सदस्य) श्रीर नगरोंके मेयर उसके पत्तमें हो गये श्रीर उन्होंने विद्रोहकी मावनाश्रोंको तुरन्त दशा दिया । राजाने श्रव उत्साहित हो सार्वजनिक सभाश्रोंको छिन्न-भिन्न करनेके लिए सैनिकोंको इस्तेमाल करना शुरू किया श्रीर परदेशी निर्वासितोंको सत्रकी जड़ समम्फकर पुलिसको उनके पीछे लगा दिया। मार्क्क साथ खास सौरसे बुरा वर्ताव किया गया । सिर्फ उर्न्हींको नहीं, वल्कि उनकी वीवीको भी पुलिस गिरफ्तार कर ले गईं—जेनी मार्क्सको एक रात बन्दीखानेमें साधारण वेश्यात्रोंके साथ रहना पढा। पीछे जिम्मेनार पुलिस अफसरको उसके पदसे हटा दिया गया। गिरफ्तारीका हुकुम भी लौटा लिया गया, यद्यपि देश-निकालनेकी आजा नहीं हटाई गई। यह जिल्कुल कमीनापन था। क्योंकि मार्क्स बुशेल्स छोड़ पेरिस जाने ही वाले थे।

क्रातिके फूट निकलनेके तुरन्त बाद ही लन्दनमें कम्युनिस्ट लीगके केन्द्रीय पदाधिकारियोंने अपने कार्यालयको ब्रुशेल्सके जिला-प्रतिनिधियोंके हाथमें परिवर्तितः कर दिया था, लेकिन ऋव बुशेल्सकी ऋवस्था मी खराब हो गई। वहाँ मार्शल-ला जारी हो गया था। इसलिये ब्रशेल्सके पदाधिकारियोंने इस अधिकारको मार्क्सके हाथमें इस हिदायतके साथ सौप दिया, कि वह पेरिसमे नया केन्द्रीय नेतृत्व बनाये। पेरिसमें क्रातिके सफल होते ही वहाँकी अस्थायी सरकारने मार्क्सको बहुत सम्मानके साथ अपने यहाँ आनेके लिए निमंत्रित करते हुये सरकारके एक मुख्य सदस्य फ्लोपाके (१ मार्च) पत्र द्वारा मार्क्सको लिखा था : "वीर श्रीर ईमानदार मार्क्स ! फ्रेच गण्राज्यकी भूमि सभी स्वतन्त्रताप्रेमियोंके लिए शरण-स्थान है। श्रत्याचारियोंने तुम्हें निर्वाषित किया, लेकिन स्वतन्त्र फ्रांस तुम्हारे लिए अपना दरवाजा खोलता है-तुम्हारे श्रीर उन समीके लिए, जो कि सभी जातियोंके माईचारेके पवित्र उद्देश्यके लिए लड़ते रहे हैं। फ्रेंच सरकारका हरेक अफसर इस अभिप्रायके लिए अपने कर्त्तव्यको समके । पेरिसमें पहॅचकर मार्क्सने कम्युनिस्ट लीगके कितने ही सदस्योको इकट्रा किया। जर्मन निर्वासितोकी एक बडी समार्से ६ मार्च १८४८ को माबी प्रोग्रामके बारेसे बतलाते हये उन साथियोंका जबर्दस्त विरोध किया. जो कि सशस्त्र आदिमयोको लेकर जर्मनीमें क्रांति करनेके लिये जाना चाहते थे। इस योजनाका बनानेवाला बोर्नस्टेट या, जिसने हेरवेगको भी ऋपनी ऋोर करनेमें सफलता पाई थी। वक्रिनन भी इस योजनाके पद्धमें था, लेकिन पीछे उसने उसके लिए अपसीस जाहिर किया । फ्रासकी ग्रस्थायी सरकार भी योजनाका समर्थन करनेके लिए तैयार थी, लेकिन उसका उद्देश्य दूसरा ही था-वह बहुत से परदेशी कमकरोंसे इस वेकारीके जमानेमें पिंड छुडाना चाहती थी। उसने जर्मन-कातिकारियोंको

श्रपनी बारकें दे दीं श्रीर जब तक सीमांत तक नहीं पहुँच जाते तब तक पचास सांतीम (श्राधा फ्रांक) रोजाना भी दिया।

२. जर्मनी में क्रांति (१८४८-४६ ई०)

मार्क्सने इस नेवक्फी और दुस्साहसका विरोध किया। इसी समय १३ मार्चको चीनामें ग्रीर १८ मार्चको वर्लिनमें क्रान्ति हो गई। क्रान्तिकी शक्तियों-को ठीक तरहसे संगठित करके काम करनेके लिये पेरिसमें मार्क्सने एक नया नेतृत्व स्थापित किया, जिसमें वह स्वयं, एंगेल्स ऋौर बुशेल्ससे वोल्फ एवं लन्दनसे बाबर-मोल तथा शापर सम्मिलित थे। इस संगठनने जर्मन सर्वहारा, निम्न मध्यमवर्ग और किसानोंके हितके लिये सत्रह माँगें रक्खी, जिनमें कुछ थीं: जर्मनीको एक अविभाज्य गण्राज्य घोषित करना, लोगोंको हथियारवन्द करना, राजात्रों त्रौर सामन्तोंकी तालुकदारियों-जमींदारियोंका राष्ट्रीकरण करना, खानों यातायातोंका राष्ट्रीकरण, राष्ट्रीय मिस्त्रीखानोंकी स्थापना, राज्यके खर्चसे ग्रनि-षार्य शिक्ताका आम प्रवन्ध करना, इत्यादि । ये माँगें पूरी की जानेवाली नहीं थीं, यह मार्क्स भी जानते थे, लेकिन प्रचारके लिये इनका महत्व था। कम्यु-निस्त लीग उस समय कमजोर हो चुकी थी, लेकिन मजूर वर्गके पास क्रांतिके दूसरे साधन थे। इसी समय मार्क्सने पेरिसमें एक जर्मन कम्युनिस्ट क्लव कायम की और उसके सदस्योंको उन्होंने जोर देकर कहा, कि हेखेगके गुरिल्लोंसे श्रलग रहकर क्रांतिकारी आन्दोलनको बढ़ानेके लिये जर्मनीमें अकेले-अकेले जायँ । इस प्रकार सैकड़ों जर्मन मजूर जर्मनीके भीतर दाखिल होनेमें सफल हुये, फ्रेंच ग्रस्थायी सरकारने इसमें मार्क्सकी मदद की। कम्युनिस्ट लीगके ऋधिकांश सदस्य अत्र जर्मनीके मीतर चले गये थे और उन्होंने जो काम वहाँ किया, उसने वतला दिया, कि कम्युनिस्ट लीगने कितना क्रांति स्कूलका काम क्रिया था । जहाँ-कहीं भी त्रान्दोलनमें गर्मी दिखलाई पड़ती, वहीं लीगके सदस्य संग-ठन श्रीर नेतृत्वके लिये तैयार मिलते। शापर नसावमें था, वोल्फ ब्रेस्लोमें, स्टिफेन बोर्न नर्लिनमें । बोर्नने मार्क्सको चिट्ठी लिखते हुये ठीक ही कहा था : "लीगका श्रस्तित्व नहीं रहा, लेकिन तो भी उसका श्रस्तित्व सर्वत्र है।"

इसी समय मार्क्स अपने घनिष्ठ साथियोके साथ राइनलैंडमें पहुँचे, बोकि उद्योग-धन्दे तथा नेपोलियन कानून# के श्रधीन होनेके कारण जर्मनोका सबसे प्रगतिशील माग था। वर्लिनमें प्रशियन दीवानी-संहिता (जान्ता दीवानी) चलती थी। कोलोन शहरमें जनतात्रियो और कम्युनिस्टोंने एक दैनिक पत्र निकालनेकी तैयारी की. तद्यपि यह काम आसानीसे नहीं हुआ। पत्रके लिये शेयर बेचनेकी कोशिश की गई। एंगेल्स उस समय वर्मेनमें थे, जहाँसे २५ त्रप्रेल १८४८ ई॰ को लिखे पत्रमें उन्होंने मार्क्सको कोलीनमें लिखा था : "यहाँ शेयरोके वेंचनेकी कोई आशा नहीं !...लोग सामाजिक प्रश्नोंके वारेमे वात-चीत करनेसे प्लेगकी तरह कतराते हैं, वह इसे मडकाना कहते हैं।...मेरे बूढे भद्रपुरुवसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं। वह समसता है, कि कोलिनिशे जाइ-टुंग' मडकानेके लिये चरम साधन होगा, श्रीर वह मदद देनेके लिये एक हजार थालर देनेकी जगह हमें खतम करनेके वास्ते एक हजार गोलियाँ देना ज्यादा पसन्द करेगा।" यह लिखनेके बाद भी एगेल्स पन्द्रह शेयर वेचनेमें सफल हुये। १ जन १८४८ को "नौये राइनिशे जाइटंग" (नवीन राइन पत्र) का पहला श्रंक निकला । इसके मुख्य सम्पादक मार्क्स तथा सम्पादकीय विभागमे एंगेल्स होन्के वीयर्थ श्रीर दोनों वोल्फ थे।

मार्क्सने फिर अपने पत्र द्वारा जनताकी मुख्य शक्तियोका सगठन श्रीर पय-प्रदर्शन करना शुरू किया। पत्रको जनतात्रिकताका मुख्यत्र कहा गया था, लेकिन उसका अर्थ नरम उगकी जनतंत्रता ही था। उसने घोषित किया, कि गया-राज्यकी स्थापनाके बाद हमारा वास्तविक विरोधीपत्तीय काम शुरू होगा। मार्चमें बीनामें जो सफलता मिली थी, उसका आधार जूनमें हाथसे चला गया, क्योंकि वहाँ वर्ग-विरोध अभी उतना विकसित नहीं हुआ था। वित्तनमें बूर्ज्जा हस बातकी फिकरमें थी, कि किस तरह क्रांतिको सर्वहाराके हाथमें जानेसे वचाया जाय। अनेक बढी-छोटी रियासतोंमें वंटी जर्मनीमें उदारवादी मन्त्री अपने पूर्वा-धिकारी सामन्त्रोसे कोई मेद नहीं रखते थे। वह उसी तरह अपने राजाओंके

[#] Code Napoleon.

सामने घुटने टेककर सम्मान प्रदर्शित करते थे। १८ मईको फ्रांकफुर्त (माइनपर) राष्ट्रीय समाका पहला अधिवेशन हुआ। इसका काम था अपने सर्वप्रभुत्व-सम्पन्न होनेके कारण जर्मन एकताको स्थापित करना। लेकिन वह भी वात वनानेसे आगे नहीं बढ़ सकी। पहले ही अंकमें मार्क्सके पत्रने इसकी बड़ी श्रालोचना की। जिसपर पत्रके बहतसे शेयर-होल्डर साथ छोड़कर भाग गये, यद्यपि पत्रने कोई बहुत बढ़-चढ़ कर राजनीतिक माँगें नही पेश की थीं। फांक-फुर्तकी राष्ट्रीय सभाके फेडरल गणराज्यकी त्र्रालोचना करते हुये मार्क्सने लिखा था, कि छोटी-छोटी रियासतोंके एक गणराजी सरकारके ऋधीन बननेको संयुक्त जर्मनीके अन्तिम संविधानके तौरफर नहीं माना जा सकता : "हम कोई उटो-पियन (अव्यावहारिक, स्वप्नचारी) श्रीर अविभाज्य एक जर्मन गण्राज्यके तरन्त स्थापित करनेकी माँग नहीं पेश करते हैं, लेकिन यह माँग जरूर करते हैं, कि तथाकथित उग्रवादी जनतांत्रिक पार्टी संघर्ष श्रीर क्रान्तिकारी श्रान्दोलन-की प्रथम मंजिलको अपना अन्तिम लच्य समस्तेनकी गलती न करे। जर्मन-एकता और जर्मन-संविधान केवल उसी आन्दोलनके परिणामस्वरूप प्राप्त होगा. जो कि घरेलू इन्द्रों श्रीर पूर्व (रूस) के साथ युद्धके परिणामस्वरूप एक निर्णय पर पहुँचनेके लिये मजबूर हो। एक निश्चित संविधानकी घोषणा नहीं की जाती, बल्कि वह उस त्र्यान्दोलनके परिणामस्वरूप पैदा होगा जिसका कि तजर्जा नहीं हुआ। इसलिये यहाँ इस या उस राजनीतिक विचारके पूरा करने या इस श्रीर उस रायको पकड़ रखनेका सवाल नहीं है, बल्कि सवाल है विकासके श्राम मुकावको समम्तनेका । राष्ट्रीय समाको तुरन्त सम्भव व्यावहारिक कदम उठाने चाहिये।"

लेकिन राष्ट्रीय समाने दूसरा ही कदम उठाया। उसने आस्ट्रियन आर्कंड्यूक योहानको राइख़ (राज्य) का रीजेंट निर्वाचित किया, जिसका अर्थ था राजाओं-के हाथमें खेलना। फ्रांकफुर्त संयुक्त जर्मनीकी राजधानी होनेका सपना देख रहा था, जहाँपर राष्ट्रीय समा हो रही थी, लेकिन वर्लिनकी घटनायें उससे कहीं महत्त्व रखती थीं। जर्मनीके भीतर क्रान्तिका सबसे खतरनाक शत्रु प्रशियन राज्य था। १८ मार्चको क्रान्तिने प्रशियन राज्यको उत्तट दिया, लेकिन उसका फल पहले

बूर्जाजीके हाथमें पढा और वूर्जाजीने कातिके साथ तुरन्त विश्वासघात करना शुरू किया। जिन शक्तियोंको क्रान्तिने मुक्त कर दिया था, उनकी बादको रोकना जरूरी था श्रीर उसके लिये सबसे श्रच्छा उपाय यही था कि उन्हें मीठी लोरियों मुनाकर मुला दिया जाय । काम्पहाउजेन हांजेमानके मत्रिमगडलने संयुक्त-डीट (संसद्) की बैठक बुलाकर उसे एक बूज्वी संविधान बनानेका काम सौंपनेका निश्चय किया। प्रशियाकी संयुक्त-डीट सामन्तोंसे भरी हुई थी। उससे किसी बूर्जा-सविधानकी भी आशा नहीं हो सकती थी। पर बूर्ज्जानीको डर लग रहा था, कि यदि कमकरोंको स्त्रीर स्त्रागे बढ़नेका मौका मिला, तो सामन्तींके हितोके साथ-साथ कहीं हमारे हितोंका भी सर्वनाश न हो जाय। संयुक्त-डीटने ६ श्रीर 🖛 अप्रैलको दो कानून (विधान) पास किये, जिनके द्वारा नये, संविधानके आधार पर मिन्नमिन्न बूर्ज्या-ग्राचिकार स्थापित किये गये श्रीर सार्वजनिक ग्रुप्त श्रीर अप्रत्यन्त मताधिकारके अनुसार निर्वाचित एक नई विघान-समाके बनानेका निश्चय किया निसका काम था मुकुट (राजा) की सम्मतिसे एक संविधान बनाना । राजा सामन्तोंके सामन्त राजाको अपनी जगहपर अन्तुरुण रहने दिया गया, ऋौर यह क्रान्तिके एक ही महीने वाद । १८ मार्चको प्रशियन गारदको हराकर बर्लिनके सर्वहारोंने जो विजय प्राप्त की थी, उसका फल इस प्रकार सर्वहारा के हायोंसे छीन लिया गया । सविधान-समाकी बातको जब तक मुकुट न स्वीकार करे, तब तक वह कोई संविधान नहीं बना सकती थी। अब जब तक एक दूसरी क्रान्ति न हो जाये, कोई आशा नहीं थी और दूसरी क्रान्ति न होने देनेके लिये काम्पहाउजेन-हाजेमान मत्रिमएडल हर तरहसे कोशिश कर रहा था। २२ मईको समा बैठी । कहीं राजतन्त्रको हटाकर गणराज्य न कायम कर दिया जाय, इसलिये उसने नेताहीन क्रान्ति-विरोधियोंको इगलेंडसे बुला प्रशिया-राजकुमारोंको नेता प्रदान किया । प्रशियाका युवरान १८ मार्चकी क्रान्तिमें मागकर इंगलेड चला गया था। लेकिन १४ जूनको फिर वर्लिनके जनसाधारणाने ज्योग हाउन (उन्टेर हेन लिडेन सहकपर अवस्थित सैनिक इमारत) को हमला करके ले लिया श्रीर मुक्टके प्रति इस प्रकार श्रपने विरोधी मावोंको प्रकट किया। इस पर काम्पहाउजेनने इस्तीफा दे दिया, लेकिन हाजेमान अत्र मी अपने पदसे चिपका

रहा । काम्पहाउज़ेन श्रपेचाकृत श्रिघक प्रगतिशील ब्र्जी-विचारधारा रखता था, जन कि हांजेमान बर्जाजीके हितोंके लिए निलंजतापूर्वक नंगा नाचनेके लिए तैयार था। वह इसके लिये राजा और युंकरों (सामन्तां) की हर तरहकी खुशामद करके सभाके लोगोंको घूस-रिश्वत या जैसे भी हो ऋपने पद्धमें रखने त्तथा जनसाधारणको ऋषिक ऋौर ऋषिक उत्पीड़नके लिये तैयार था। "नोवे राइनिश जाइट्रंग" ने इस भयंकर स्थितिको रोकनेकी बड़ी कोशिश की । उसने चतलाया कि काम्पहाउजेन ब्रूचीजीके हितके लिये प्रतिक्रियाका बीज बो रहा रहा है, लेकिन इसका फायदा सामन्ती दल उठायेगा। उसने हांजेमान-मंत्रि-मण्डलके बड़े बुरे अन्तकी भविष्यद्वाणी भी की और वतलाया—''बिना सारी जनताको अस्थायी तौरसे अपना सहायक बनाये श्रीर कम या बेसी जनतान्त्रिक भावोंको स्वीकार किये बिना बूर्जाजी ऋपने प्रमुत्वको स्थापित नहीं कर सकती।" ...ংদেশ ई॰ की बूर्जीजी (पूँजीपति वर्ग), निर्लंज्जता श्रीर बेहज्जतीके साथ किसानोंके साथ विश्वासघात कर रही है, यदापि किसान उसके स्वामाविक सह-योगी, उसके त्रपने मांस त्रीर खुन हैं, त्रीर बिना किसानोंके समर्थनके वह सामन्त-वर्गके विरुद्ध कुछ भी करनेमें असमर्थ है।" मार्क्सने कहा कि १८४८ ई० की जर्मन-क्रान्ति १७६८ ई॰की फ्रेंच-क्रान्तिकी सूठी नकल है।

जिस समय बर्लिनमें हांजमेन-मंत्रिमंडल इस प्रकार अपनी जहें खोद रहा या, उसी समय सभी बूर्जी वर्गों और पार्टियोंने मिलकर पेरिस की सड़कोंमें चार दिनकी भयंकर लड़ाइयोंके बाद वहाँके सर्वहारोंको हरा दिया।

जर्मनीमें जो घटनायें घट रही थीं, उनके बारेमें अपने पत्रमें लिखते हुए मार्क्सने बतलाया कि वृज्बीजी और सर्वहाराके बीच होनेवाले वर्ग-संघर्षमें जन-तन्त्रताको किसका पत्त लेना चाहिए—'वह हमसे पूछेंगे, कि क्या हमारे पास राष्ट्रीय गारद, चल-गारद, गण्राजी गारद और लाइनकी पल्टनोंके उन शहीदोंके लिए आँस, हाय या अफसोसके शब्द नहीं हैं, जिन्होंने कि जनताके कोधके सामने प्राण् गँवाये। राज्यकी ओरसे उनकी विधवाओं और अनाथ बच्चोंका ध्यान रक्खा जायेगा। उनके यशोगानके लिए बड़ी मड़कीली घोषणायें घोषित-की जायेंगी, और उनके शरीरावशेषोंको बड़े संयत और नम्र जलूसों द्वारा किन-

स्तानमें पहुँचाया जायगा। सरकारी प्रेस उन्हें अप्रार घोषित करेगा, श्रीर पूर्वसे-पश्चिम तकके युरोपीय प्रतिगामी उनकी प्रशंसा करते नहीं थकेंगे। लेकिन दूसरी ओर जनतान्त्रिक प्रेसका यह खास हक है, कि वह गरीबोंकी उन सुकी हुई गर्दनों- के ऊपर अपनी पूजाकी माला रखें, जो कि मूखसे पीड़ित हैं, सरकारी प्रेस जिनके प्रति घृषा प्रकट करता है, डाक्टर जिनकी सुध लेनेके लिये तैयार नहीं हैं; समी इज्जतदार नागरिक, जिनको चोर, बदमाश और कमीना कहकर गाली देते हैं, जिनकी स्त्रियाँ और वन्चे और भी अधिक कष्टमें डाले जा रहे हैं और जिनके चचे हुये लोगोमें से सबसे अन्झे व्यक्ति समुद्रपार निर्वासित हो चुके हैं।

इस लेखके लिखनेके बाद पत्रके बचे-खुचे शेयर-होल्डरोंमें से भी कितने ही साथ छोडकर माग गये।

हाजेमान-मंत्रिमंडलको सभी प्रतिगामियोंकी तरह कानून श्रीर व्यवस्थाका सबसे अधिक ख्याल था, क्योंकि सर्वहाराके गुस्सेसे उन्हें अपनी यैलियोंके लिए हमेशा मय लगा रहता था। कानून और व्यवस्था कायम रखनेके लिए 'अराज-कताकी शक्तियों' के विरुद्ध 'राज्यशक्ति' को मजबत करनेकी जरूरत थी, जिसके लिये उन्हें पुराने प्रशियन सेना, पुलित श्रीर नौकरशाहीके हाथमें खेलना जरूरी था। सर्वहारा द्वारा धुटने टेकनेके लिए मजबूत हुई प्रतिगामी शक्तियाँ श्रव फिर सिर उठानेकी तैयारी करने लगीं। वर्लिन सभा (एसेम्वली) को यह श्रीर मंत्रिमएडल द्वारा वर्लिनके पास सेना जमा करनेकी वार्वे खतरेसे खाली नहीं मालूम हुई । उसने साहसपूर्वक युद्ध-मंत्रीसे मॉग की, कि वह समी सैनिक अफ सरोंको प्रतिकियावादी कार्रवाहियोंमें माग न लेनेका जबर्दस्त आदेश दे, और जिन अप्रपर्रोंको यह मंजूर न हो, उन्हें इस्तीफ़ा देनेके लिए कहो। मंत्रीके ऐसा करनेका भी वहाँ क्या प्रमाव होनेवाला था ? पुरानी और नई दो ही शक्तियाँ थीं, बीचकी वृज्जी नपुंसकता कुछ करनेमें असमर्थ थी। यदि जनताकी शक्तिसे मय खाकर उसे दवाना है, तो प्रशियन सामन्तवादके हाथमें खेलना छोड़ श्रीर कल नहीं हो सकता था। परियाम यही हुआ, कि हाजेमानके वृज्जी मंत्रिमंडलको वेइव्तती-के साथ इस्तीफा देना पटा श्रीर उसकी जगह जेनरल पुत्रयेलने एक शुद्ध नौकर-शाही मंत्रिमडल स्थापित किया । वर्लिनकी विधान-सभाकी भी वही गति हुई।

३. कोलोन जनतांत्रिकता—सितम्बरमें बर्लिन श्रीर फ्रांकफुर्तमें जो कुछ हुत्रा, उसका जबर्दस्त प्रमाव कोलोनपर भी पड़ना जरूरी था। राइनलैंड मज्रों का गढ़ था। हाथमें रखने के लिये उसे पूर्वी प्रदेशों में मरती किये गये सैनिकों-से भर दिया गया। एक तिहाई प्रशियन सेनाको राइनलैंड श्रीर वेस्टफालियामें रक्ला गया। ऐसी स्थितिमें छोटा-मोटा विद्रोह बेकार था। इस वक्त जरूरत थी सारी जनतांत्रिक शक्तियोंको संगठित श्रीर श्रन्छी तरह श्रनुशासनबद्ध करने की।

इससे पहले ही जूनमें फ्रांकफ़र्तमें ८८ संगठनोंने एक काँग्रेस की, जिसमें जनतांत्रिक संगठनोंको मजबूत करनेका निश्चय किया। लेकिन, निश्चय के श्रनुसार सब जगह काम नहीं हो सका, केवल कोलोनमें ही उसकी मजबूत नींव पड़ी। शेष जर्मनीमें जहाँ-तहाँ छिटफर काम होता रहा। कोलोनकी जनतां-त्रिकताकी तीन बड़ी-बड़ी समार्थे थीं, जिनमेंसे हरेकके हजारों मेम्बर थे: (१) जनतांत्रिक एसोसियेशन. जिसके नेता मार्क्स श्रीर एडवोकेट स्नाइडर थे. (२) कमकर एसोसियेशन जिसके नेता मोल श्रीर शापर थे, श्रीर (३) मालिक नौकर एसोसियेशन, जिसका नेता तच्या बैरिस्टर हेरमान बेकर था। जब फांक-फ़र्तकी कांग्रेसने कोलोनको राइनलैंड और वेस्टफालियाका केन्द्र निश्चित किया. तो इन एसेसियेशनोंने अपनी एक संयुक्त केन्द्रीय कमेटी बनाई, जिसने राइन-लैंड-वेस्पालियाके सभी जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी कांग्रेस त्र्यास्तके मध्यमें कोलोनमें बुलाई । इस कांग्रेसमें सत्रह एसोसियेशनोंके ४० प्रांतनिधि सम्मिलित ' हुये श्रौर उन्होंने कोलोनके तीन जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी संयुक्त केन्द्रीय कमेटियों को राइनलैंड-वेस्ट-फालियाकी प्रदेश-कमेटी मान लिया। इस संगठनके बौद्धिक नेता मार्क्स थे। उनमें नेतृत्वके गुण जितने ऊँचे परिमाणमें मौजूद थे. इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता था, लेकिन कुछ नीच-भावनावाले जनतांत्रिक नहीं चाहते थे, कि सारा नेतृत्व मार्क्सके हाथमें चला जाय।

१६ वर्षीय विद्यार्थी कार्ल शुर्जने पहली वार मार्क्सको कोलोन-कांग्रेसमें देखा था। पीछे उसने श्रपनी स्मृतिसे इस महापुरुषके वारेमें लिखा था: "उस समय मार्क्स तीस सालका था, श्रीर समाजवादी विचारघाराका नेता माना जा चुका था। उसका शरीर गठीला, ललाट प्रशस्त श्रीर श्राँखें काली तथा चमकीली थीं। उसके कोयले जैसे काले बाल और धनी दादी तरन्त लोगोंका ध्यान भ्रपनी श्रोर श्राकर्षित करती थी। श्रपने चेत्रमें बहुत बड़े विद्वान् होनेकी उसकी प्रसिद्धि थी, श्रीर सचमुच वह जो कुछ कहता, वह तर्कसम्मत, वजनदार श्रीर सफ्ट वात होती लेकिन अपने जीवनमें मैंने कभी ऐसे किसी आदमी को नहीं देखा, जिसका बर्ताव इस तरहका चोट पहुँचानेवाला तथा श्रमहा श्रभिमान का हो।" मार्क्स के मुँहसे "बुर्जा" शब्द ऐसे निकलते थे, जैसे कि वह धृणाके साथ उसपर शूक रहा हो । मार्क्षको उनके पिताने भी "हृदयहीन" कहा था, लेकिन उस हृदयमें कितना स्नेह भरा था, इसे जाननेवाले लोगोंकी कमी नही थी। जब वह पूर्ण एकामतासे किसी बड़े काममें लगे होते, उस समय अपने हृदयको बात-बातमे खोलकर दिखाते रहना ऋपने काममें वाचा पैदा करनेके सिवाय श्रीर कुछ नहीं हो सकता था। इसी तरह फजूलकी वाता श्रीर श्रादिमयोंके लिये समय वरबाद करनेके वास्ते भी उनके पास समय नहीं था. जिसके कारण कितने ही जब-तब मिलनेवाले उन्हें रूखे स्वमावका समभते थे। कोलोनके कुछ वधौँ बाद लफ्टनेट वेचोफने मार्क्स वार्तालाप करनेके बाद लिखा था: "मार्क्सकी सिर्फ अपनी साधारण बौद्धिक श्रेष्ठताने ही नहीं, बल्कि उसके काफी वहे व्यक्तित्वने भी मुभा-पर ग्रसर हाला। ग्रगर उसका हृदय उतना ही वहा होता, जितना उसका दिमाग, उसका प्रेम उतना ही वहा होता, जितनी उसकी पूर्णा, तो मैं उसके साथ आग-पानी में कूदनेके लिये तैयार रहता । यद्यपि उसने कई बार मेरे बारेमें वुच्छ राय प्रकट की और अन्तमें बिल्कुल साफ-साफ कह भी दिया। किंद्र, वह हमारे बीच पहला ऋौर ऋकेला व्यक्ति है, जिसमें महत्वहीन विवरणोमें बिना न्त्रपनेको खोये किसी वड़ी परिस्थितिपर ऋषिकार प्राप्त करनेकी योग्यता है।"

१८४८ ई० में फूरियेका अमेरिकन शिष्य अलवर्ट विस्वेन "न्यूयार्क-टिक्यून" का संवाददाता बनकर कोलोन आया । उसके साथ पत्र-प्रकाशक चार्लस डाना मी था । ब्रिस्वेनकी राय मार्क्सके वारेमे दूसरी ही थी : "मैंने चन-आन्दोलनके नेता कार्ल मार्क्सको देखा । उस वक्त उसका खितारा अभी-अभी ऊपर उठ रहा था । वह करीब तीस वर्षका आदमी था । शरीरसे हट्टा-कट्टा चेहरा अच्छा, और घने काले बाल । उसके चेहरेसे बडी शक्तिका पता लगता था और उसकी

नरमी तथा संजीदगीके पीछे साहसपूर्ण त्रात्माकी जन्नर्दस्त स्नाग जलती दीख पड़ती थी।"

राइनलैंडकी उस स्थितिमें कोई सशस्त्र कार्रवाई वेकार होती, इसलिये मार्क्यने वैसा करनेको रोका था। लेकिन, प्रशियन सरकार चाहती थी, कि लोग कुछ
ऐसी वेवक्षी करें, जिससे खूनकी नदी बहानेका मौका मिले और वह इस
प्रकार लोगोंके जोशको दवा दे। खूनी कार्रवाईका मौका न मिलनेपर अत्र उसने
जनतांत्रिक प्रदेश-कमेटीके मेम्बरों और "नोये राइनिशे जाइटुंग" के सम्पादकोंके
खिलाफ कान्ती और पुलिसकी कार्रवाई शुरू की। लेकिन, उसके लिये भी
सब्त नहीं मिल सका। मार्क्सने ग्रपने लोगों तथा राज्यको भी सावधान करते
हुये लिखा था: इस समय कोई ऐसा बड़ा सवाल नहीं है, जो कि सारी जनताको संघर्ष करनेके लिये मजबूर करे, इसलिये बलवेका कोई भी प्रयत्न असफल
होगा। इस समय कोई विद्रोह करना व्यर्थसे भी बुरी बात होगी, क्योंकि आसन्न
भिष्यमें हो सकता है, बड़ी घटनायें घटें। इसलिये जनतंत्रियों को चाहिये, कि
युद्धके दिन आनेसे पहले अपनेको निहत्या न बनायें। मुकुट (राजा) अगर
कांति-विरोधको संगटित करनेकी हिम्मत करेगा, तो जनताकी खोरसे एक नई
कान्तिकी घड़ी आ मौजूद होगी।"

सन-कुछ सावधानी रखने पर भी कुछ मामूली भगड़े हुये ही, जब कि २५. सितम्बरको वेकेर, मोल, शापर और विल्हेल्म वोल्फ गिरफ्तार किये गये। जब खबर उड़ी कि सेना एक सार्वजनिक सभा को भंग करनेके लिये आ रही है, तो लोगोंने सहकोंपर मोर्चे बाँच लिये। लेकिन, अभी प्रशियन सेनाको इतनी हिम्पत कहाँ थी १ जब लोगोंका जांश अधिक ठंडा हो गया, तो सैनिक कमान्डरने कोलोनमें मार्शल-ला घोषित कर दिया। उसने "नोये राइनिशे जाइटुंग" को बन्द करनेका हुकुम निकाला और २७ सितम्बरसे वह बन्द हो गया। एफुयेल-मंत्रिमंडलने कुछ दिनों बाद मार्शल ला उठा दिया, लेकिन "राइनिशे जाईटुज्न" को इतनी जर्बदस्त चोट लगी थी, कि वह १२ अक्टूबरसे ही फिर निकलनेमें समर्थ हुआ।

पत्रके सम्पादकमंडलके बहुत से सदस्योंके ऊपर गिरफ्तारीके वारंट थे,

इसलिये उन्हें जेलमें बन्द होनेसे बचनेके लिये सीमा पार माग जाना पड़ा : डोंके श्रीर एंगेल्स वेल्जियम चले गये श्रीर विलहेल्म नोल्फ पलाटिनेको । उन्हें वहाँसे लीटनेमे कुछ देर लगी । १८४६ की जनवरीके श्रारंममें एंगेल्स श्रमी मी वेर्न (स्वीजलेंड) में ये । वह वेल्जियमसे फ्रांस होते वहाँ पहुँचे थे, जिसमें बहुत सा राता उन्होंने पैदल तै किया था । एक श्रोर पत्रके लिये श्रादमियोंकी कमी यी, दूसरी तरफ श्राधिक दशा भी खराव थी । शेयर-होल्डरोंके छोड़कर माग जानेपर, पत्र श्रपने वढ़े हुये ग्राहकोंके वलपर जीता रहा, लेकिन मार्शललाके हमलेसे श्रव वह इवने ही वाला था । इसी समय मार्क्सने पितासे दायमागमें मिली जो कुछ थोड़ी-बहुत सम्पत्ति थी, उसे उसमे लगा दिया । मार्क्सने इसके वारेमें कभी एक भी शब्द किसी से नहीं कहा, लेकिन वीवीके पत्रों श्रीर उनके मित्रों ने जो वातें वतलाई, उससे मालूम है, कि मार्क्सने सात हजार यालेर (७ हजार गिन्नियाँ या प्रायः १ लाख रुपया) पत्रको जीवित रखनेके लिये लगाया था । यहाँ पैसेके परिमायाका उतना महत्व नहीं है, जितना कि इस वातका कि मार्क्सने फंडेको कॅचा रखने के लिये श्रपने सर्वस्वका त्याग किया ।

मार्क्सने प्रशियन नागरिकताको त्याग दिया था। इस वक्त वह कोलोनमें नागरिकताके श्रिष्ठकारों वंचित होकर रह रहे थे, जिसके कारण उन्हें श्रासानी- से बाहर निकल जानेका हुकुम दिया जा सकता था। इससे बचने को एक ही उपाय था, कि वह नागरिकताके श्रिष्ठकारको फिरसे मास करते। श्रुप्रैल १८४८ में मार्क्सने कोलोनकी नगर-परिषद्को इसके लिये श्रुजीं दी। जब मार्क्सने कहा, कि बिना इसके में श्रुपने परिवारको ट्रीरसे कोलोन नहीं ला सकता तो वहाँ के पुलिस-श्रफ्तर सुलेरने श्रासाके श्रुनुरूप जवाब भी दिया। इसी बीच "नोये राइनिशे जाइडुक्न" फिर निकलने लगा था, श्रीर उसके लेलोंसे श्रूसंतुष्ट हो पुलिस प्रेसीडेंट गेजरने श्रुपने ३ श्रुगस्तके पत्रमें सूचित किया: श्रुमी कोई निश्चय नहीं किया जा सकता, मार्क्सको श्रुपने लिये विदेशी समक्तना चाहिये। २२ श्रुगस्तको एह-मंत्रीके पास मार्क्सने श्रुपले की, लेकिन उसने भी उसे खारिज कर दिया। मविष्य श्रुनिश्चित गा, लेकिन मार्क्सका श्रुपनी पत्नी श्रीर

चन्चोंके साथ श्रसाधारण प्रेम था, इसलिये वह परिवारको कोलोन ले श्राये। 'परिवारकी संख्या भी श्रव काफी बढ़ गई थीं। पहली लड़की मई १८४४ में पैदा हुई थी, जिसका नाम माँके ऊपर जेनी रक्खा गया था। उसके बाद दूसरी लड़की लौरा सितम्बर १८४५ में पैदा हुई श्रीर उसके बाद एकमात्र पुत्र एडगर पैदा हुत्रा, जो भी माता-पिताको श्रधिक दिनों तक प्रसन्न रखनेके लिये नहीं श्राया था। प्रथम पेरिसके निवासके समयमें भी ही मार्क्षके परिवारमें हेलेन डेमुथ सिमिलित हो गई थी, जो कि श्राजीवन परिवारके सभी दुःखों श्रीर कच्टोंमें साथ रही। मार्क्षके स्वभावमें नहीं था, कि वह हरेक नये परिचित को तुरन्त भाई या मित्र घोषित कर दें। लेकिन, श्रपने मित्रोंके साथ उनका सम्बन्ध बहुत स्थायी श्रीर हढ़ होता था।

४. दो साथी

एंगेल्सको मार्क्सका न साथी कह सकते हैं, न मित्र ही। वह तो उनकी युगल श्रात्माके थे। निर्वासनके समय ही मार्क्सको दो श्रीर ऐसे साथियोंसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका अवसर मिला, जिनकी मित्रता बराबर एकरस न रहते भी श्रन्त तक कायम रही।

(१) फर्डीनंड फ्राइलीप्रथक्ष

यह जर्मन किव मार्क्स आठ वर्ष बड़ा था। बुशेल्सके निर्वासनके दिनों में फ्राइलीग्रथका परिचय मार्क्स हुआ। परिचयके आरिम दिनों मार्क्सने उसके बारेमें लिखा था: "भला आदमी है, अन्छा पट्टा, बर्तावमें दिलचस्प और सादा।" १८४८ ई० के राइनके संवर्षों के समय यह परिचय घनिष्ठ मित्रतामें परिखत हो गया। एक पत्रमें मार्क्सने फ्राइलीग्रथके बारेमें वेडेमेयरको लिखा था: "वह वास्तविक क्रान्तिकारी और पूरी तौरसे ईमानदार आदमी है। इस तरहके प्रशंसाके शब्द में बहुत कम आदिमियोंके लिथे कह सकता हूँ।" साथ ही मार्क्सने वेडेमेयरको लिखा था: किवको जरा श्लाघा भी देनी चाहये, सभी किव-योंको इसकी आवश्यकता पड़ती है, तभी वह अपनी बिद्रया क्रतियोंको प्रदान कर

^{*} Freiligrath.

सकते हैं। मार्क्स उन श्रादिमयों में नहीं थे, जो कि जरा मी गलतफहमीसे श्रादमीके शुण श्रीर कार्यच्रमताको भूल जाते हैं। उन्होंने एक समय किको लिखा था: "मै तुमसे साफ कहना चाहता हूँ, कि कुछ मामूली गलतफहमियों के कारण मै ऐसे एक मित्रको खोनेके लिये तैयार नहीं हूँ, जिसेकि सन्चे श्रथों में मित्र कहा जा सकता है।" एंगेल्सको छोड़कर फाइलीग्रथ जैसे मार्क्सका पक्का दोस्त सबसे जर्बदस्त किनाइयों के समय कोई नही था। फाइलीग्रथ कान्तिकारी बना था श्रपनी नैसर्गिक स्फ श्रीर किनकी माननासे। वह वैज्ञानिक विचारों द्वारा क्रान्तिकारी नहीं बना था। वह मार्क्सको क्रान्तिका श्राग्रदूत श्रीर कम्युनिस्ट लीगको क्रान्तिकारी हरावल मानता था, लेकिन कम्युनिस्ट-घोषणापत्रमें जो ऐतिहासिक युक्तियाँ दी गई थीं, वह उसे कमी समक्तमे नहीं श्राई। वह इन वारीकियों धुसकर माथापच्ची करनेके लिये तैयार नहीं था।

(२) फर्डिनेंड लाजेल क्ष—लाजेल मार्क्से सात वर्ष छोटा था। वह एक तरुण वकील के तौरपर पितके छुरे वर्तांव श्रीर श्रपमी जातिके विश्वासघातसे वचनेके लिये कौटेस (ठाकरानी) हुट जफेल्टकी दर्दनाक स्थितिको देखकर दिलो-जानसे छुट गया। इस मुकद्में उसने इतनी योग्यताका परिचय दिया, कि वह एक प्रसिद्ध वकील बन गया। फर्नेरी १८४८ में उसको इसलिये गिरिफ्तार किया गया, कि उसने कौटेसकी एक डीड-वक्स (दस्तावेजकी पेटी) को चुरानेकी प्रेरणा दी थी। लेकिन, ११ श्रगस्तको कोलोनकी जूरीने उसे इस श्रपराघसे मुक्त करके छोड दिया। इस समय मी तरुण लाजेल ने श्रपनी श्रनुपम तर्क-शक्तिका परिचय दिया था। इसके बाद वह क्रान्तिकारी संघर्षोंमें श्रपना श्रधिक श्रीर श्रांक समय देने लगा। इसी समय वह मार्क्क प्रमावमें श्राया। मार्क्क तरु लाजेल ने भी हेगेलीय दार्शनिक विचारघाराका श्रच्छी तरह श्रध्ययन किया था। श्रपनी पेरिसकी एक यात्रामें उसे फ्रेंच-समाजवादसे परिचय प्राप्त करनेका मौका मिला। मार्क्की तरह लाजेल भी यहूदी सन्तान था। उसके माता-पिता धर्मसे यहूदी होनेके कारण उसके मनमें स्वतंत्र विचारोंके श्रकुरित

^{*} Ferdinand Lassalle.

होनेमें बाधा उपस्थित करते रहते थे। लाजेलमें फाइलीयथ जैसी सादगी श्रीर विनम्नता नहीं थी। सात वर्ष बाद मार्क्सने उसके बारेमें कहा था: लाजेल अपनेको विश्वविजयी समक्तता है, क्योंकि उसने एक वैयक्तिक जंजालमें निष्ठुरतापूर्वक सफलता प्राप्त की थी। मानो इस तरहके महत्त्वहीन काममें अपने जीवनके दस सालोंकी बलि दे देना आदमीमें वास्तविक नैतिकवल पैदा कर सकता है। कई शताब्दियों बाद एंगेल्सने कहा था, कि लाजेलके प्रति मार्क्सके मनमें सदा विरोधी मावना बनी रही। मार्क्सकी इस भावनामें एंगेल्स श्रीर फाइलीयंथ भी शामिल थे। लेकिल यह सब होते हुये भी मार्क्स लाजेलके ग्रुणों श्रीर योग्यताके महत्त्वको कम नहीं करते थे।

१२ श्रक्तूवर (१८४८ ई०) में जब "नोये राइनिशे ज़ाइटंग" फिर निकलने लगा, तो उसके सम्पादकमंडलमें फ्राइलीग्रंथ भी शामिल हो गये। ६ ग्रक्तूबर-को बीनामें फिर फ़ान्ति हो गई। मार्क्स स्वयं २८ श्रगस्तसे ७ सितम्बर तक लोगोंमें प्रचार करनेके लिये बीना जा कर रहे थे. जिसमें उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली थी, क्योंकि अभी ऐतिहासिक भौतिकवादकी सन्चाइयों तक पहुँचना वीनाके कमकरोंके वससे वाहरकी बात थी। हुंगरीकी क्रान्तिको दबानेके लिये जब वीनासे सेनायें भेजीजाने लगीं, तो कमकरोंने अपनी क्रान्तिकारी नैसर्गिक बुद्धिके कारण उसका विरोध किया। इसके लिये सेनाकी गोलियाँ हंगरीके सामन्तोंके खिलाफ खर्च होनेकी जगह कमकरोंपर पड़ीं। लेकिन, हंगरीके सा-मन्त इसके लिये क्यों कतज्ञ होने लगे ? क्रान्ति-विरोधियोंने वीनाको चारों त्र्योर-से घेर लिया । त्राक्तूबरके त्रांतमें वर्लिनमें जनतांत्रिक कांग्रेस हुई । उसने वीनाके कमकरोंके पच्चमें एक अपील निकाली, जो आँसू बहाने और उपदेश देनेसे बढ़-कर कुछ नहीं थीं। लेकिन, वीनाके घिरे हुये कमकरोंके पद्धारें एक जबर्दस्त लेख मार्क्सने गद्यमें श्रीर फ्राइलीप्रथने बड़े सुन्दर श्रीर शक्तिशाली पद्यमें निकाल-कर वतलाया, कि वीनाके कमकरोंकी सच्ची सहायताका केवल एक ही उपाय है. श्रीर वह है जर्मनीके क्रान्ति-विरोधियोंका खातमा करना । वीनाकी क्रान्ति केवल कमकरोंके बलपर सफल नहीं हो सकती थी। यद्यपि कमकरोंने, विद्यार्थियों ग्रीर निम्न मध्यमवर्गके एक भागको साथ करके वड़ी वीरताके साथ लड़ाई लड़ी. किन्तु बूर्जाजी और किसान उनके साथ घोला देनेके लिये तैयार थे। इस प्रकार ३१ श्रक्त्वरकी शामको सेना नगरमे धुसनेमे उफल हुई, और १ नवम्बर को सेंट स्टिफन गिर्जाके मीनार-पर क्रान्ति-विरोधियोंका काला-पीला मंडा फहराने लगा।

युरोपके एक मागमें सफल हुये क्रांति-विरोधियोंका प्रमाव दूसरी जगह पड़ना जरूरी था। विलंनमें एफुयेलका नौकरशाही मंत्रिमंडल टूटा श्रीर उसनी जगह युद्ध सामन्तशाही ब्रांडेनवर्ग-मंत्रिमएडल श्राया, जिसने विलंन-एसेम्ब्लीको ब्रांडेनवर्गके कस्वेमें जाने श्रीर जेनरल रेंगलको गारदकी सेनाओंके साथ व्यक्तिपर कूच करनेका हुकुम दिया। हो हेनजोलने वंशका श्रवैच पुत्र ब्रांडेनवर्ग श्रीममान में फूला नहीं समाता था श्रीर समसता था, कि में वह हाथी हूँ, जो कि क्रान्तिको अपने पैरोंतले रौंदकर चूर्य-चूर्य कर सकता है। "नोथे राइनिशे जाइट्रंग" ने इस पर कहा था: "दोनो श्रादमी 'ब्रान्डेनवर्ग श्रीर रेंगल' विना सिर, विना हुद्दय श्रीर विना सिद्धान्तके हैं। वह भड़कीली मूख्रोंके सिवाय श्रीर दुख नहीं हैं।"

प्रशियन सामन्तवादने अन क्रान्तिकारी शक्तियोंको पूरी तौरसे द्वानेका निश्चय कर लिया। उसने नागरिकोंके गारदको खतम कर, मार्शल-ला घोषित कर दिया। विलेनमें जिस वक्त इस तरह तानाशाही नंगा नाच कर रही थी, उस समम "नोये राइनिशे जाइटुंग" का मुंह खुला था। उसने घोषित किया: "वह घड़ी आ गई है, जबिक प्रति-क्रान्तिको द्वितीय क्रान्तिसे मुकाबिला करना होगा। जनताको चाहिये, कि सरकारकी हिसाका विरोध हर तरहसे संभव हिसात्मक तरीकोसे करे। निष्किय-प्रतिरोध को अपने आधारके तौरपर सिक्तय-प्रतिरोधको आवश्यकता है, नहीं तो वह कसाईके सामने मेडके संधर्षकी तरह विल्कुल वेकार साबित होगा: प्रशियन-मुकुट पूरी तौरसे अपने अधिकारके भीतर है, जबिक वह अपनी परमप्रमुत्वको एसेग्वली (विधान-समा) के ऊपर इस्तेमाल करता है, और एसेग्वली गलत रास्तेपर है, क्योंकि वह मुकुटके प्रति एक परम-प्रमुत्व सम्पन्न एसेग्वलीके तौरपर काम नहीं करती।... पुरानी नौकरशाही वूर्ज्वां वीका सेवक वननेकी इच्छा नहीं रखती, क्योंकि अप तक वह बूर्ज्वां कि लिये निरंकुश स्कूज-मास्टर रही है। चानन्ती-दल वुर्ज्वां वीकी वेदी-पर अपने हितों

श्रीर विशेषाधिकारोंकी बिल चढ़ाना नहीं चाहता। श्रीर श्रन्तत: मुकुट (राजा) श्रपने वास्तविक श्रीर जन्मजात सामाजिक श्राधारको पुराने सामन्तीं समाजके तत्वोंमें पाता है, जिस समाजका कि सर्वोच्च रूप मुकुट (राजा) के रूपमें मौजूद है। साथ ही वह बूर्ज्वाजीको एक विदेशी श्रीर कृत्रिम श्राधार समभता है, जो कि स्वयं जीर्ण-शीर्ण होनेपर ही मुकुटको बर्दाश्त कर सकती है"।

(३) मार्क्सपर् मुक्दमा—वर्लिन-एसेम्बलीने सामन्तोंके स्वेच्छाचारका जवाव टैन्स उगाहनेके अधिकारसे सरकारको वंचित करके दिया। उस समय . कोलोनमें जनतांत्रिक प्रदेश-कमेटीने मार्क्स, शापर श्रौर स्नाइडरके हस्ताद्धर द्वारा १८ नवम्बरको एक ऋषील निकालकर माँग की, कि राइनलेंडके जनता-न्त्रिक एसोसियेशनोंको तुरन्त निम्न कामोंको हाथमें लेना चाहिये : श्रिधिकारी श्चगर वलपूर्वक पर उगाहनेका कोई प्रयत्न करें, तो सभी संभव उपायसे उसका मुकाबिला करना चाहिये, दुशमनसे मुकाबिला करनेके लिये सब जगह तुरन्त नाग-रिक गारद संगठित किये जाने चाहिये। म्युनिसिपेलिटीके कोष श्रीर चन्दोंके धैसोंसे हथिपार श्रीर गोला-जारूद खरीद उसे गरीबोंमें बाँट देना चाहिये। यदि स्रकार एसेम्बलीके निर्ण्योंको माननेसे इन्कार करे, तो सब जगह सार्वजनिक सुरत्वा कमेटियाँ निर्वाचितकी जायें, जहाँ संभव हो, यह काम म्युनिसिपेलिटीकी सम्मतिसे किया जाय। जो म्युनिसिपेलिटियाँ एसेम्ब्रलीका विरोध करे, उन्हें सार्वजनिक वोटोंसे पुनः निर्वाचित किया जाये । राइनलेंडके जनतान्त्रिक एसो-सियेशनने जो काम किया, यदि वह काम वर्लिन एसेम्बलीने किया होता, तो समी सामन्तशाहीके होश उड़ गये होते, लेकिन, बर्लिन-एसेम्ब्रलीके वचन बहा-दुरोंमें इतनी हिम्मत कहाँ थी ! उन्हें ऋपनी सम्पत्तिका डर लगने लगा, और ब्रह भाग-भागकर श्रपने चेत्रोंमें जा एसेम्ब्रलीके निर्णयको काममें न लानेके श्लिये प्रयत्न करने लगे । उनकी इस निर्वलताको देखकर सरकारको हिम्मत हुई, न्ग्रौर उत्तने ५ दिसम्बरको एसेम्बली तोड़ एक नये मताधिकारको लोगोंपर लादा।

इस प्रकार वर्लिन-एसेम्वलीके विश्वासघातके कारण राजधानीसे निश्चिन्त ही त्र्रव सरकारका ध्यान राइनलेंडकी त्र्रोर गया। वहाँ उसने मारी संख्यामें स्रेनायें मेर्जी। २२ नवम्बरको लाजेल डुजेलडोर्फमें गिरफ्तार हुन्रा—लाजेलने

कोलोनकी श्रपीलका स्वागत किवा था, लेकिन कोलोनमें गिरफतार वरनेकी हिम्मत नहीं हुई । सरकारी वकीलने अभियोग चलाया । ८ फरवरीको अपीलपर हस्ताचर करनेवाले कोलोनकी जूरीके सामने पेश हुये । उनपर सरकारके विरुद्ध, श्रीर राजाकी सेनाके विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध करनेका इल्जाम लगाया गया। मार्क्सने एक जबर्दस्त माष्या द्वारा सरकारी वकीलके वयानके चियडे-चिथड़े उड़ा दिये : जिन्होने सफलतापूर्वक क्रान्ति की थी, उनके लिये यही युक्ति-युक्त था, कि वह अपने विरोधियोको फॉसीपर चढ़ा देते, न कि उन्हें अपने ऊपर जब वनाकर नैठाते । तुम अपने पराजित शत्रुश्रोसे इस तरह पिंड ह्युड़ा सकते हो, लेकिन उनपर अपराधीके तौरपर मुकदमा नहीं चला सकते। एसेम्बलीने ठीक किया या मुकुट (राजा) ने यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है, जिसका फैसला नेवल इतिहास ही दे सकता है जूरी नहीं। मार्क्सने साथ ही ६ श्रीर 🗕 ऋप्रैलके कानूनोंको माननेसे इन्कार करते हुये वतलाया, कि मुकुटको-जिसने कि मार्चके संघर्षोंमें अपनी पराजय स्वीकार की थी-बचाने के लिये जिस संयुक्त डीटने उन्हें गदा था, वह आधुनिक वृज्यां-समाजका प्रति निधित्व करनेवाली समा थी। सामन्तवादी सभाके कानुना द्वारा उसका निर्धिय नहीं किया जा सकता। यह सिद्धान्त नहीं निरीध कातूनी गए है, कि समाज कानूनपर आधारित है। इसके विरुद्ध वस्तुतः कानून समाजके ऊपर आधारित है : मेरे हाथमे कोड नेपोलियन (नेपोलियन विधान संहिता) है। यह बूर्जी-समाजको नहीं उत्पन्न करती, वल्कि इसके विरुद्ध इसे वुक्री-समाजने पैदा किया है, जिसने कि अठारह शताब्दीमें विकसित होते इस कोड (विधान-सहिता) के रूपमें अपना कानूनी स्वरूप प्रकट किया; इसके सिवाय यह श्रीर कुछ नहीं है। जैसे ही यह कोड सामाजिक सम्बन्धोंको सच्चाईके साथ प्रकट करनेमे असफल हुई, वैसे ही वह एक रद्दीके दुकडेसे अधिक हैसियत नहीं रखेगी। तुम पुराने कानूनोको नये समाजका आधार उसी तरह नहीं बना सकते, जैसे कि पुराने कानूनोंको पुराने समाजका बनाया जा सकता है।"

वर्लिन-एसेम्बलीने गैर-कातूनी तौरसे कोई काम नहीं किया, अगर उसने करोंके उगाहनेसे इन्कार कर दिया, यह बतलाते हुये मार्क्सने कहा: "अगर

करोंका उगाहनां गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, तो यह मेरा कर्तव्य हो जाता है, कि इस गैर-कानूनी कार्रवाईको कार्यरूपमें परिएत करनेके लिये जो भी प्रयत्न किया जाय, उसका विरोध करूँ, जरूरत पड़नेपर बलपूर्वक भी।" यद्यपि जिन लोगोंने टैक्स श्रदा करनेसे इन्कार करनेकी घोषणा की, उन्होंने श्रपने चमड़ेको बचानेके लिये क्रान्तिकारी पथ ग्रहण करनेसे इन्कार कर दिया, लेंकिन जनसाधारण इस मीषणाको कार्यरूपमें परिगत करनेके लिये मजबूर है। एसे-म्त्रलीका नर्ताव जनताके लिये निर्णायक नहीं है। "एसेम्नलीका स्रपना कोई निजी अधिकार नहीं है, जनताने सिर्फ अपने अधिकारों की प्रतिरचाका कार्य एसेम्ब्रलीको सौंपा था। जब एसेम्ब्रली इस कार्यको पूरा करनेमें असफल हुई, तो उसके अधिकार खतम हो गये और तत्र जनता अपने निजी अधिकारोंसे सीधी कार्रवाई करनेके लिये ग्राखाड़ेमें उतरी । ग्रागर मुकुट (राजा) प्रतिक्रान्ति संगठित करता है, तो नई क्रान्ति द्वारा उसका जवात्र देना जनताको उचित है। मानर्धने अपने भाषण्को समाप्त करते हुये बतलाया, कि श्रभी नाटकका पहला ही अंक खेला गया है, अन्तिम अंक इसका या तो होगा प्रति-क्रांतिकी पूर्ण विजय, या श्रीर नई विजयी क्रांति, यद्यपि विजयी क्रांति प्रति-क्रांतिकी पूरी विजय हो लेनेके बाद ही शायद सम्मव होगी | निर्मीक क्रांतिकारी मापरणको सुननेके बाद ज्रीने सभी श्रपराधियोंको मुक्त कर दिया श्रीर ज्रीके मुखियाने मार्क्सको शिचादायक माष्याके लिये धन्यवाद दिया।

४ प्रति-क्रान्ति

वीना श्रीर वर्लिनमें प्रति-क्रान्तिकी विजयने फैसला कर दिया, कि जर्मनीमें क्रान्तिने जो भी सफलतायें प्राप्त की थीं, वह हाथसे जाती रहेगी। उसके चिन्ह-स्वरूप श्रव फ्रांकफ़र्त एसेम्बली—सारी जर्मनीकी संयुक्त पार्लीमेन्ट—बच रही थी, लेकिन, उसका राजनीतिक महत्य कबका खतम हो गया था श्रीर श्रव वह कागजी-संविधानके वहस-मुवाहिसेमें पड़ी हुई थी। उसका श्रन्त वस या तो प्रशियाकी संगीनोंसे होनेवाला था, या श्रास्ट्रियाकी।

इंगलैंडमें चार्टिस्ट-श्रान्दोलन श्रव शक्तिशाली नहीं रह गया, इसलिये

वहाँकी वृज्यी-सरकार कहीं भी अपने घातक शत्रुत्रो -- मजदूरीके विद्रोहको दवाने के लिये मुक्त थी। जून (१८४८ ई०) के सवर्षों में फ्रेंच-मजदूरोंको इतनी चोटें लगी थीं, कि वह श्रमी किसी नये विद्रोह करनेके योग्य नहीं थे। प्रति-क्रान्तिने पेरिससे ऋब क्रान्तिके दूसरे स्थानोपर घावा बोलना शुरू किया या। वहाँसे वह फाकफुर्त, वीना होते बर्लिन पहुँची। यूरोपकी क्रान्तिकी लहरोंके दवनेकी सूचनाके रूपमें १० दिसम्बर (१८४८ ई०) को फ्रेंच गएराज्यका राष्ट्रपति नकली-त्रोनापार्ट निर्वासित किया गया। केवल हुगरीमें श्रमी भी क्रान्ति-की ज्यं ति जग रही थी। एगेल्स इसी बीच कोलोन लौट आये थे। जर्मन राइख (राज्य) की घोषणाश्चोंने प्रेसका गला घोट दिया था, इसलिए "नोये राइनिश जाइटुझ" का पथ कंटकाकीर्ण हो गया था। समर्षके समयमे भी इस पत्रने जर्मन कमकरोंकी कार्रवाइयोंको विस्तारपूर्वक नहीं छापा या, लेकिन उसका यह ऋर्थ नहीं कि उसका भाग उसमें नगएय था। उसने सारे जर्मनीमें श्रपना हाथ फैलाया था, जिसमें पूर्वके एलवियन युंकरोंकी भूमि मी सम्मिलिव थी---जहाँ सामन्तवाद नंगा नाचता स्त्राया था। मजूरोकी स्त्रपनी कॉग्रेसे, त्रपने सगठन, ग्रपने श्रखबार थे, स्टिफन बोर्न जैसा योग्य नेता उनके पास था, जो पेरिस श्रीर ब्रुशेल्सके मार्क्स श्रीर एगेल्स साथ मित्रताका भाव रखता या श्रीर बर्लिन तथा लाइपिनगरे "नीये राइनिश जाइटुङ्ग" में लेख लिखा करता था। बोर्न कम्युनिस्ट घोषणापत्रको अच्छी तरह सममता या, लेकिन जर्मनीके अधिकाश भागके वर्ग-चेतनामें पिछुड़े हुये सर्वहारोंके ऊपर घोषणापत्रके प्रोग्राम श्रीर सिद्धान्तों-का लागू करना उसके वसकी बात नहीं थी।

१८४६ ई०के वसन्तमें मार्क्स श्रीर एगेल्सने कमकर-श्रान्दोलनकी दिशामें पहला कदम उठाया था। "नोये राइनिश जाइटुक्न" पहले कमकरोंके श्रान्दोलन श्रीर कार्रवाइयोंके वारेमें जो श्रीषक ध्यान नहीं देता था, इसका कारण यही था, कि उनका कोलोन-कमकर-एसोसियेशनके नामसे श्रपना एक संगठन था, जिसकी श्रोरसे वह श्रपना श्रार्थ-सासाहिक पत्र मोल श्रीर शापरके सम्पादकत्वमें निकालते थे। इसके श्रितिरक्त यह भी वात थी, कि "नोये राइनिश जाइटुक्न" जनतान्त्रिकताका मुखपत्र था, इसलिए वह सामन्तवाद श्रीर निरकुशताके विश्वस

सर्वेहारा तथा बूर्ज्ञांज़ीके सम्मिलित हितोंकी वकालत करता या, जो उस समय जरूरी भी था। क्रान्तिके विफल और प्रति-क्रान्तिके सफल होनेपर जनतान्त्रिकता-का बूब्बीजी श्रंग बहुत भयभीत हो, जल्दी ही युद्धचेत्रसे भाग गया। जब जन-तान्त्रिक सङ्गठन अब निराशाबाद और सममौताबादी नीतिका अनुसरण कर रहा था, वहाँ रहना बेकार था। इसलिये मार्क्स, विलहेल्म वोल्फ, शापर श्रीर हेरमान वेकेरने जनतान्त्रिक प्रदेश-कमेटीसे १५ मईको इस्तीफा दे दिया। इसी समय कोलोन-कमकर-एसोसियेशनने भी रेनिश जनतान्त्रिक सङ्गठनोंके एसी-सियेशनोंसे ऋपना नाम हटा लिया ऋौर सभी मजूरवर्गीय ऋौर दूसरे सङ्गठनोंकी निमन्त्रित किया, कि समाजवादी जनतान्त्रिकताके सिद्धान्तोंकी रचा करनेवाले मजूरवर्गीय और दूसरे सङ्गठनोंके प्रतिनिधियोंको ६ मई (१८४६ ई०) की, होनेवाली प्रादेशिक काँग्रेसमें भेजें। २० मार्चि "नोये राहनिश जाहदुङ्ग" ने िक्लेसियाके करोड़पतियोंके विरुद्ध विलहिल्म वोल्फके लेख छापने शुरू किये, जिनसे दीहाती सर्वहारोंके भीतर वड़ी सनसनी फैली । ५ ऋप्रैक्से पत्रने बुशेल्समें मार्क्सके दिये हुये भाषण्—मन्र-अम श्रीर पूँची—को छापना शुरू किया। मान्सेने १८४८ ई०के जबर्दस्त जन-संघर्षका हवाला देते हुए बतलाय,ा कि चाहे प्रत्येक क्रान्तिकारी विद्रोह फैला हो, चाहे वर्ग-संघर्षसे उसका उद्देश्य कितना ही अलग हो, किन्तु मज्र वर्ग विजयी होगा। अखवारने आर्थिक सम्बन्धोंकी समस्यापर रोशनी डालते हुये कहा, कि बूड्जीजी स्त्रीर कमकरोंकी दासता इन्हीं ऋार्थिक सम्बन्धोंपर ऋाधारित हैं।

त्रान्दोलनको ठंडा पड़ते देख कायर सरकारोंकी हिम्मत त्रीर बढ़ जाती है। उसीके त्रानुसार अब जर्मन-सरकारने भी कदम उठाया त्रीर "नोचे राइनिश्च जाइटुक्क" का गला घोंटनेका निश्चय किया। वह राइनलैंडमें मार्शल-ला भी घोषित करना चाहती थी, लेकिन वहाँकी फीजके कमायडेन्टकी हिम्मत टूट गई त्रीर उसने मार्शल-ला (फीजी-कानून) घोषित करनेकी जगह "खतरनाक त्रादमी" कहकर पुलिस द्वारा मार्स्सको निर्वासित करनेकी निश्चय किया। लेकिन पुलिस भी ऐसा करनेकी घवराती थी। उसने इसके बारेमें प्रादेशिक गवर्नरसे पूछा, जिसने यह-मन्त्री मन्टोफेलसेके पास लिखा। १० मार्चको प्रादेशिक

सरकारने बर्लिनको स्चित किया कि मार्क्स अब भी कोलोनमें हैं, यद्यपि विदेशी होनेके कारण पुलिसकी आजा न होनेसे उसे वहाँ रहनेका अधिकार नहीं है। यहाँ रहते बल्कि अपने अख़शर द्वारा वह अपनी उप्र कार्रवाइयोंको भी जारी रखे हुए हैं, वह लोगोंको वर्त्तमान संविधानके विरुद्ध मडकाता, एक सामा- जिक गण्राज्य स्थापित करनेका प्रचार करता है, और मानवता जिन जातोंकी इज्जत करती, जिनके प्रति प्रेम दिखलाती है, उनका वह उपहास करता है। पत्रकी ग्राहक-संख्या भी बढती जा रही है। पुलिसकी रिपोर्टको पाकर यह-मत्रीने राइन प्रदेशके प्रेसीबेन्ट आइख़मानसे राय पूछी। २६ मार्चको (१८४६ ई०) आइख़मानने वतलाया, कि मार्क्का निर्वासन उचित है, लेकिन ऐसा करनेमें तब तक कठिनाई है, जब तक कि वह और अपराधोंके लिये जिम्मेवार नहीं हो जाता। ७ अप्रैलके अपने आदेश-पत्रमें मन्टोफेलने प्रादेशिक सरकारको स्वित किया, कि मै निर्वासनके विरुद्ध नही हूं, लेकिन किस समय और कैसी परिस्थिति- में इसे करना चाहिये, यह प्रादेशिक सरकारके जिम्मे है। मेरी रायमे निर्वासन का आदेश उसी समय निकालना चाहिये, जब कि किसी खास अपराधसे उसका सम्बन्ध जोडा जा सके।

लेकिन कोई खास अपराध न पा मार्क्स द्वारा सम्पादित पत्रकी "खतरनाक रुकान" के कारण ही मार्क्सको निर्वासनका आदेश ११ मईको दिया गया। १९ मार्च और ७ अप्रैल तक अभी प्रशियन सरकारको ऐसा कदम उठानेकी हिम्मत नहीं थी, लेकिन मईके मध्यमें पहुँचते-पहुँचते वह अपनेको काफी मज- बूत सममती थी। इस निर्वासनके तुरन्त ही बाद कि फाइलिप्रथने निम्म पंक्तियाँ लिखी थीं:

''ईमानदारीके युद्धमें एक यह ईमानदार प्रहार नहीं, बल्कि ईर्ष्यां श्रीर घोखेंकी चाल है, सुमे गिराया गुप्त कलंकने, कमीने पाश्चात्य कलमकके ।"

ऋध्याय १०

लन्दनमें निर्वासित जीवन (१८४६ ई०)

सचमुच ही प्रशियन सरकारकी कायरता श्रीर भी नंगी दीखने लगती है, जन हम यह जानते हैं कि त्रादेश-पत्र उस समय निकाला गया, जन कि मार्क्स कोलोनमें मौजूद नहीं थे। "नोये राइनिश जाइटुक्न" के बाहकों स्त्रीर अनु-आहकोंकी संख्या यद्यपि बढ़ती जा रही थी, इस वक्त उसके छः हजार आहक थे, कि उस शताब्दीके जर्मन पत्रोंके लिए कम नहीं समकी जाती थी, लेकिन ग्रार्थिक-कठिनाइयाँ उसकी कम नहीं हुई थीं। १८४६ ई० में हाम नगरके दो पूँ जीपतियोंने एक कम्युनिस्ट प्रकाशन-गृह स्थापित करनेके लिये पैसा देना चाहा था। उनमेंसे एक रेम्फेलसे उसी सिलसिलेमें बात करनेके लिए मार्क्स हाम गये हुये थे । रेम्फेलने ग्रपनी थैली न खोली किसी दूसरे त्रादमी मृतपूर्व लफटे-नेन्ट हैज़ेका नाम वतलाया, जिसने मार्क्सकी वैयक्तिक जिम्मेवारी पर तीन सौ थालर फर्जके रूपमें दिये। हेज़ पीछे पुलिसका गुप्तचर साबित हुन्ना, लेकिन उस समय पुलिस उसपर मुकदमा चला रही थी। उसके साथ मार्क्स जब कोलोन पहुँचे, तो निर्वासनका हुकुमनामा वहाँ मौजूद मिला। श्रव "नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग" के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था। उसके दूसरे सम्पादकों में से भी बहुतसे मार्क्सकी तरह ही प्रशियन कानूनकी दृष्टिमें "विदेशी" थे, ग्रीर जो वच रहे ये उनपर मुकदमा चलाया जा रहा था। १९ मईको पत्रका ऋन्तिम ऋंक निकला, जिसमें निदाईका सन्देश देते हुये मार्क्सने सरकारके ऊपर जबर्दस्त प्रहार किये : "ग्रपने मूर्खतापूर्ण सूठों, ग्रपने बनावटी वाक्योंके फेरमें क्यों पढ़ते हो ! हम स्वयं निष्ठुर हैं । हम तुमसे दयाकी भित्ता नहीं माँगते । जब हमारी त्रारी त्रायेगी, तो हम। त्रपने त्रातंकवादको काममें लानेमें चरा भी नहीं हिचिकिचारेंगे, लेकिन राजसी आतंकवादी, भगवान्की दया और कानूनके ग्राधिकारवाले ग्रातंकत्रादी व्यवहारतः पशु, घृणित श्रीर कमीने हैं, विद्धान्त में चार श्रीर 'मनस्यन्यद् वचस्यन्यद्वाले हैं। व्यवहार श्रीर विद्वान्त दोनोंमें उन्हें इज्जत-प्रतिष्ठा छू नहीं गई है।" पत्रने चलते-चलते कमकरोंको सावधान किया, कि इस समय कोई भी सशस्त्र कार्रवाई करना वेकार ही नहीं खतरनाक श्रीर मूर्खतापूर्ण मी होगी। लेखके समाप्तमे हुआ था: "कमकर-वर्गकी मुक्ति" के साथ।

मार्क्स केवल सिद्धान्तवादी श्रीर जवर्दस्त व्यावहारिक क्रांतिकारी ही नहीं थे, विल्क उनका हृदय उच्च श्राटर्शवाद श्रीर त्यागसे मरा हुश्रा था। समय-समय पर उनके रूखे वर्तावोंसे उनके पिताके शब्दो "हृदयहीनके शब्द हृदयहीन" को दूसरे भी दोहरा सकते थे, लेकिन उस श्रसाधारण पुरुषके हृदयमें श्रसाधारण उदार श्रीर त्याग का भाव भरा हुश्रा था। यदि उस महापुरुषके केवल ऐसे ही जीवनके पहलुश्रोंको लिया जाय, तो वह पुराणो श्रीर जातकोंके किसी भी सर्वस्वत्यागी पुरुषसे पीछे नहीं दिखलाई पडते। लेकिन केवल स्वार्थत्याग श्रीर विल्वानसे एक ठोस श्राधिक ढाँचेको हटाकर उसकी जगह सर्व कल्याणकारी नया दाँचा नहीं कायम किया जा सकता, हजारो वर्षोंसे चले श्राते शोषण श्रीर उत्पीदनको हटाकर मुक्त मानवके सुली श्रीर समृद्ध समाजको स्थापित नहीं किया जा सकता। उसके लिये जिस चीन की श्रावश्यकता मानवताको थी, वह था उनका सिद्धान्त श्रीर व्यवहारका परम ज्ञान। जब तक दुनियामें वर्गहीन समाज स्थापित नहीं हो जाता, तब तक मार्क्सके जीवनके इन्हीं दोनों पहलुश्रो की श्रोर सबसे श्रिषक ध्यान देनेकी श्रावश्यकता है।

"नीये राइनिशे जाइदुङ्ग" अब अस्त होने जा रहा था, लेकिन मार्क्स पत्रको अपनी वैयक्तिक जिम्मेवारी समम्तते थे, इसिलये उसके प्रति अपने दूसरे कर्त्तव्योंको भी पालन करना उन्हें आवश्यक जान पढ़ा । तीन सौ थालर हेजैसे थे, पन्द्रह सौ थालर प्राहकोंसे मिले थे । प्रेस, दूसरी चीको तथा इन पैसोंसे मार्क्सने मुद्रकों, काराजके व्यापारियो, क्लकों, सम्पादको, सवाददाताओ—सबका पैसा-पैसा चुकाया । मार्क्सने अपनी बीबीके चाँदीके वर्तनोंको ही केवल अपने पास रक्खा, बाकी सबको वैंचकर एक-एक पैसा वेबाक किया । जेनीके इन चाँदीके वर्तनों को फाकफुर्तमें बन्धक रखनेवालोंके हाथमें दे, कुछ सौ गिल्डर मिले । यही अब मार्क्स-परिवारका एकमात्र अवलम्ब रह गया ।

१. विदा जन्मभूमि !

फांकफुर्तसे मार्क्स एंगेल्सके साथ वाडेन ग्रीर क्षाटिनाटमें हुये विद्रोहके स्थानोंको देखने गये। पहले वह कार्ल्सकहे पहुँचे फिर काइजरस्लाउटेर्न, जहाँ क्रान्तिकारियोंकी श्रस्थायी सरकारके प्राण् डा॰ ईस्टरसे मिले। डा॰ ईस्टरने मार्क्सको पेरिसमें होनेवाली राष्ट्रीय एसेम्बलीमें जर्मन क्रान्तिकारी पार्टीका प्रतिनिधित्व करनेके लिये कहा। यह राष्ट्रीय एसेम्बली नकली बोनापार्ट ग्रीर उसके दल "कानून ग्रीर व्यवत्था" की पार्टियोंके विरुद्ध प्रहार करनेके लिये तैयारी कर रही थी। लौटते समय हेसियन सेनाने सन्देहपर दोनोंको गिरफ्तार कर लिया, लेकिन श्रन्तमें छोड़ दिया। मार्क्स ७ जूनसे पहिले पेरिस चले गये श्रीर एंगेल्स काइलरस्लाउटेर्न लौट एक भूतपूर्व प्रशियन लेफ्टनेंट विलिच द्वारा संगठित स्वयंसेवक सेनामें श्रद्धजुटेंट वन गये।

पैरिसमें भी भला मार्क्सको कैसे चैनसे रहने दिया जाता। १६ जुलाईको पुलिसके अधिकारी (प्रिफेक्ट) ने मार्क्सके पास ग्रह-मन्त्रीका हुकुम पहुँचाया, कि तुम्हें देपार्तमाँ मोरविन्नाँ "(Department Morbihan)" में रहना होगा। इस जिलेके बारेमें फ्राइलियथने मार्क्सको लिखा था: "दानियाल कहता है, कि मोरवियां फ्रांसका सबसे अधिक अस्वास्थ्यकर जिला है, वद दलदली है, बुखारका घर है।" मार्क्सने तुरन्त इस आज्ञाको मान नहीं लिया, बल्कि गृह-मन्त्रीसे ऋपील करके ऋाज्ञाको स्थगित करवाया। इस समय मार्क्सकी ऋार्थिक श्रवस्या वहत खराव थी। फ्राइलियय श्रीर लाजेल दोनोंने 'सहायताके लिये पैसा जमा करनेकी अपील की। फ्राइलियथने लाजलेके पैसा जमा करनेके तरीकेकी शिकायत की। इसपर मार्क्सने बहुत चुन्ध होकर ३० जुलाईको कविको पत्र लिखते हुये कहा था: "सार्वजनिक भीख माँगनेकी अपेक्षा बड़ीसे बड़ी श्रार्थिक कठिनाइयाँ मुक्ते ज्यादा पसन्द हैं, श्रीर मैंने ऐसा उसे लिख दिया। उसकी इस कार्रवाईसे मैं वड़ा चुन्य हुआ हूँ"। लेकिन लाजेलने पीछे समभाकर मार्क्सके दिलसे इस भावको हटा दिया। २३ त्रगस्तको मार्क्सने एंगेल्सको स्चित किया, कि मैं फ्रांस छोड़ रहा हूँ। ५ सितम्बर (१८४८ ई०) को मार्क्स ने कविको लिखा, कि इसके बाद १५ सितम्बरको मेरी बीबी भी आ जायेगी, यद्यपि मैं यह नहीं जानता कि उसकी यात्रा श्रीर फिर कहीं सिर रखनेके लिये पैसा कहाँसे श्रायेगा।

२. नोये राइनिशे रिब्यु-पैरिससे मार्क्सने ऋन्तिम पत्रमे एंगेल्सको लिखा था. कि लन्दनसे एक पत्र निकालनेकी संमावना है, श्रीर इसके लिये कुछ पैसा भी मिलनेवाला है। इसी पत्रमें एंगेलसको यहभी लिखा कि द्वम दुरन्त लन्दन चले जाओ । एगेल्स बाडेन श्रीर प्लाटिनाटके विद्रोहके विफन्न होनेके बाद स्वीटजलैंड राजनीतिक शरगार्थी थे, जब कि इन्हें यह पत्र मिला। वह गेनोवासे जहाज द्वारा इंगलैंड पहुँचे। जो पैसा पत्रके लिये मिला था, वह बहुत योदा था, इसमे सन्देह नहीं । मार्क्सने ग्राने सम्पादकत्वमे नीये राइनिशे रिन्यू के नामसे एक राजनी तक-स्त्रार्थिक पत्रिका निकालनेका निरुचय करते हुये १ जनवरी १८५० को पत्रिकाके शेयरका विवरण प्रकाशित किया, जिसमें बतलाया गया था, कि दक्खिनी जर्मनी और पेरिसके क्रान्तिकारी त्रान्दोलनोंमें भाग लेने के बाद नीये राइनिशे के सम्पादक पिछली गर्मियोमे लन्दन पहुँचे। यहाँसे उन्होंने पत्रको निकालनेका निश्चय किया। पहिले यह २८ पन्नोंकी एक मासिक पत्रिकाके तौरपर निकलेगा, लेकिन जैसे ही आर्थिक अवस्था बेहतर होगी. यह श्रर्घ-मासिक श्रीर फिर उसी दगपर शायद साप्ताहिक बन जायेगा जैसे कि इंगलेड और अमेरिकाके साप्ताहिक निकलते हैं। जैसे ही जर्मनी लौटनेका अव-सर मिलेगा, पत्र फिर पहलेकी तरह दैनिक रूपमे निकलने लगेगा। अन्तमें पाठकोसे पचास फाकवाले शेयरोंके लेनेके लिये प्रार्थना की गई थी। शायद बहुत ग्रिधिक शेयर बिके नहीं।

पत्रिका हाम्बुर्गमे छापी जाती, जहाँके एक बुक्सेल्रने ५० प्रति सैकडा कमी-रानपर उसके प्रश्नीशित करने श्रीर वॉटनेकी जिम्मेवारी ली यी। इसका तिमाही चन्दा था २५ चादीका प्रोशेन। बुक्सेलरने बहुत कोशिश नहीं कर पाई, क्यों-कि प्रशियन सेना उस वक्त हामबुर्गमे पडी हुई थी। लाजेलने झ्लेल्डोफेंसे पचास प्राहक दिये थे, वेडेमेयरने फ्रांकफुतमें वेचनेके लिये सौ कापियांका त्रार्डर दिया था, लेकिन छ महीनेके बाद वह केवल ५१ गिल्डर पा सका: मैंने लोगोंपर बहुत दबाव दिया, लेकिन कोई पैसा देनेकी जल्दीमें नहीं है। "जेनी

मार्क्सको सबसे ज्यादा श्रार्थिक श्रमावकी चोट सहनी पड़ती थी, इसलिये वह इस प्रबन्ध-संबन्धी दुर्च्यवस्थापर ऋसंतुष्ट थीं। पत्रिकाके कुल छ ऋंक निकले यद्यपि व्यवसायके तौरपर वह बिलकुल श्रसफल ही नहीं, विलक मार्क्सी ऋार्थिक कठिनाइयोंको ख्रोर बढ़ानेवाला था, लेकिन उसमें जो चीजें निकलीं, वे ऋपना स्थायी मूल्य रखनेवाली थीं। मार्क्सकी उस समयकी स्थितिके वारेमें जेनीने लिखा था: " उनकी सारी शक्ति, स्वभावकी सभी शान्ति, संचित शक्ति प्रतिदिन श्रीर प्रतिघंटा विपत्तियोंसे घिरी हुई है। दोनों मित्र श्रपनी जवानीसे ही जब मार्क्स स्रोर एंगेल्स एक जगह नहीं रहते, तो बरावर पत्रों द्वारा एक दुसरेके पास सारी जानकारी मेजा करते थे। ऐसे पत्रोंकी संख्या हजारों थी। यह ऐतिहासिक पत्र ग्राज भी मार्क्सके दीर्घ जीजनके ग्रानेक पहलुत्र्योंपर स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। मार्क्षके लिखे अनुसार एंगेल्स इंगलैंड पहुंच पत्रिकाके सम्पादनमें हाथ बँटा रहे थे। मार्क्सका ज्ञान श्रीर तजर्जा श्रगांघ था, लेकिन वह अपनी आलोचना करनेमें बड़े निष्ठुर थे। वह और एंगेल्स आत्मवंचनाको बहुत हुरा समभते थे श्रीर हर वक्त श्रपनी गलतियोंको देखनेके लिथे तैयार रहते। १८४६ ई० के संघर्षमय जीवन और यूरोपके अनेक देशोंमें क्रान्तियोंके निष्फल होनेके बारेमें मार्क्सने अपने विचार नई पत्रिकाके तीन अंकोंमें प्रकट किये। एक जगह त्र्रालोचना करते हुये मार्क्सने संचिप्त किन्तु त्र्रात्यन्त सार-गर्मित शब्दोंनें कहा है: " जूनके दिनोंसे पहले संविधानका जो पहला मसौदा तैयार किया गया था, उसमें काम पानेके ऋघिकारकी माँग भी सम्मिलित थी। यह सर्वहाराकी क्रान्तिकारी त्राकांचात्रोंका पहला मोटा सा रूप था। पीछे इसे सार्व-जिनक समर्थन प्राप्त करनेसे श्रिधिकारके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया, लेकिन उसे कौन सा आधुनिक राज्य है, जो ऋपने भिखमंगोंके लिये किसी न किसी रूपमें नहीं समर्थन करता है ? बुड़वी दृष्टिको एसे काम पानेका अधिकार एक फज्ल, दयनीय श्रीर मनके लडड़ हैं, लेकिन काम पानेके अधिकारके पीछे पुँजी पर ग्रिधिकारकी माँग खड़ी है, जिसके पीछे उत्पादन-साधनोंके जन्त करने, श्रीर उसपर सम्मिलित मजूर वर्गका श्राधिपत्य खड़ा है, जिसका श्रर्थ है मजूर-श्रम, श्रौर पुँजी तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धोंका मनसूल करना।

३. किकेल-कायड

चौथे ऋंक (ऋषेल १८५०) में पहुँचते-पहुँचते पत्रिकाका पैर लडखडाने लगा या। इस अक्रमें मार्क्सका एक छोटा लेख निकला, जिसमें बताया गया था. कि यह लेख भावुक जूझाचोरो श्रीर जनतात्रिक भड़ामसिंहोंमें बड़ा ह्योग प्रकट करेगा। इस छोटे से लेखमें अपनी सपाईमे दिये हुये गोट्रफीड किंकलके ७ श्रगस्त १८४६ के भाषणकी तीव श्रालोचना थी। किंकल विद्रोहमे पेकड़ा गया। रासटाटमे उसपर फौजी कानूनसे मुकद्मा चलाया जा रहा था। किंकलके दिये हुये भाषणको अप्रैल १८५० में वर्लिनके किसी पत्रने छापा था। किंकल राइख़-संविधानके संघर्षके समय विलिचकी स्वयंसेवक सेनामें शामिल था, जिसमें एगेल्स और मोल भी थे। लडते समय उसने वड़ी वहाद्री दिखलाई थी। मुर्गमे जिस समय मोल शहीद हुन्ना, उसी समय किंकल भी सिरमें धायल होकर बन्दी बना। फौजी श्रदालतने उसे किलोमे श्राजनम कैद करनेकी सजा टी। किंकलने अपने भाषयों में चापलूधी करते हुये "तत्र महान् श्री राजकुमार हमारे विहासनके उत्तराधिकारी का वाक्य प्रयोग किया था, लेकिन तत्र महान् उसकी इस चापलुसीसे जरा भी नहीं प्रभावित हुआ। उसने राजासे कहा कि किंकेल के दराइको मनसूख कर उसपर फिरसे मुकदमा चलाया जाय, क्योंकि उसे मृत्यु-दराड मिलना चाहिये था। लेकिन तत्र महान्की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। किंकेल स्पन्डोके जेलखानेमें मई १८५० को स्थानातरित किया गया, जहाँ उसके साथ बहुत कडाईका वर्ताव नहीं किया जाता या और वह "तू" की जगह अब तुम से सम्बोधित करने योग्य कैदी माना जाने लगा था । उसकी बीबी इस बातकी कोशिश कर रही थी, कि उसके पतिको अमेरिका चले जानेके लिये जेलसे मुक्त कर दिया जाय | दूसरे प्रभावशाली लोग भी कोशिश कर रहे थे | किंकेल जैसे कमनोर दिलके श्रादमीकी नेलम सासत किये नानेकी वातको लेकर शिक्तित लोगोमें बहुत हाय-तोबा मचाई जा रही थी। कहा जाता था, ऐसे शिक्तित-सम्भ्रान्त व्यक्ति के साथ ऐसा वर्ताव श्रत्यन्त श्रनुचित है। मार्क्सने श्रपने लेखमे लिखा था, कि आगस्ट रोक्नेल जैसे और मी कितने ही उतने ही शिचित-ं सम्म्रान्त व्यक्ति जेलमे पडे बारह वर्षोंचे श्रिधिकारियों द्वारा श्रमहा पीडासे सताये

चा रहे हैं। लेकिन उन्होंने चमा की बात भी मुँहपर लानेसे इन्कार कर दिया। राकेलने जब सरकारके भीषण अत्याचारोंको सहते उसके इशारेपर भी माफी माँगके बाहर जानेसे इंकार कर दिया, तो सरकारको निर्लंड्ज होकर उसे जर्बदस्ती जेलसे बाहर करना पड़ा। राकेल जैसे कितने ही स्वतंत्रता-प्रेमी बीर जेलमें सड़ रहे हैं। किंकेलने तो पहिले मुकदमेके समय ही अपना प्रायश्चित कर लिया था। मार्क्सके इस आचेपको कितनों ही ने बुरा समका। बूब्वांजीने अपनी थैली खोल दी, और नवम्बर १८५० को रिश्वत देकर कार्ल शुर्जने स्पन्डी जेलसे किंकेलको भगानेमें सफलता प्राप्त की। किंकेलने सरकारको बचन दिया था, कि में अमेरिका चला जाऊँगा और फिर कभी राजनीतिमें भाग नहीं लूँगा। लेकिन, अब वह मुक्त होकर बीर बन चुका था, इसलिये सरकारके खिलाफ फिर आन्दोलन करनेको तैयार था।

४. ऋम्युनिस्ट लीगमें फूट

किंकेलको लेकर लन्दनके कितने ही शरणार्थियोंमें मार्क्स और एंगेल्सके प्रति जो भाव पैदा हुआ या, उसका प्रमाय कम्युनिस्ट लीगंपर भी पढ़ना जरूरी था। लन्दन आनेपर मार्क्स और एंगेल्स पित्रकाके संचालनके अतिरिक्त एक और काममें लगे हुये थे। क्रान्तिके विफल होनेके वाद बहुतसे शरणार्थी विपन्ना वस्थामें लन्दन पहुँचे हुये थे, उनकी सहायता करना इस समय जरूरी या इसलिये उन्होंने बावेर, प्फान्डर और विचिलकी सहायतासे एक शरणार्थी सहायता-कमेटी संगटित की थी। स्वांबर्लंडने भी इस समय उदारतासे काम लेना छोड़ दिया था, इसलिये इंगलेंडमें भागकर आनेवाले शरणार्थियोंकी संख्या अधिक हो गई थी। मार्क्स और एंगेल्स इस समय कम्युनिस्ट लीगको पुनः स्थानित करनेकी आवश्यकता महस्स करने लगे थे। १८४६ ई०के शरद्से ही कम्युनिस्ट-लीगके पुराने बहुतसे मेम्बर लन्दनमें आ चुके थे। केवल मोल नहीं आया, क्योंकि वह दुश्मनोंसे लड़ते हुये शहीद हुआ था। शापर १८५० ई०के आप्ममें आया और वर्षके अन्तमें स्वीजलैंडसे विलहेल्म वोल्फ भी पहुँच गया था। पुराने मेम्बरेंके अतिरिक्त नये मेम्बरेंको भी लीगमें लिया गया, जिनमें

श्रगस्त विलिच भी था। एंगेल्स उसके ब्राड्जुटेन्ट रह चुके थे। उसने विद्रोहर्में स्वयंसेवक सेनाका सुन्दर रीतिसे संचालन किया या । वैसे वह वहे ही कामका श्रादमी था, लेकिन सिद्धान्तोके संबंधमें वह वहुत स्पष्ट विचार नहीं रखता था। नये लिये हुये तहणोंमें थे : व्यापारी कोनड्राड शम्म, स्कूल-मास्टर विलहेल्म पीपर ग्रौर विलहेल्म लीबक्नेरन्ट । लीबक्नेरन्टने जर्मन विश्वविद्यालयमें ऋध्ययन किया । त्रान्तमे-बार्डनके विद्रोहमें उसने माग लिया स्रीर फिर स्वीजलैंड भाग गया । श्रगले जीवनमें यह तस्या मार्क्षके घनिष्ठ सम्बन्धमें श्राया । वह तो श्राजीवन मार्क्सका परमभक्त शिष्य बना रहा । कोनड्राड शम्म तमेदिकसे जवानी ही में मर गया। उसके लिये मार्क्सके दिलमें काफी स्नेह था। पीपर मार्क्सके **अनुसार एक अञ्जा लडका (वों गारसां) था ।" गौटिंगेनके एडनोकेट योहानेस** निकेलका मार्क्ससे परिचय हुत्रा। वह कम्युनिस्ट लीगमे शामिल हुत्रा, लेकिन श्चन्तमें पीपरकी तरह वह भी नरमदली बन गया। मार्क्स कठोर यथार्थवादी थे। किसी बातका फैसला वह भाषुकतासे नहीं करते थे। गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टि श्रीर व्यापक तजर्वेने उन्हें बतला दिया था. कि उर्वेहारा क्रान्ति-निसे ही वस्तुतः कान्तिका नाम दिया जा सकता है-कमी मध्यवर्गके व्यक्तियोंपर विश्वास नहीं कर सकती, क्योंकि वह बालुकी मीत हैं: जिस वक्त चारो तरफ सफलता श्रीर वाहवाही दिखलाई पटती है, वह घोर क्रान्तिकारी श्रीर कम्युनिस्ट बन जाते हैं; लेकिन जैसे ही परिस्थिति बदलती है, वह दुम दवाकर माग खड़े होते हैं, ऋथवा छिपकर पार्टी और उसके उद्देश्योको नुकसान पहुँचानेकी कोशिश करते हैं। श्राज १०३ वर्ष बाद भी हम सत्यको किसी भी देश श्रीर प्रदेशमें देख सकते हैं।

कम्युनिस्ट लीगके पुनः स्थापित करनेके वाद मार्च १८५० मे लीगकी केन्द्रीय कमेटीकी श्रोरसे मार्क्स श्रीर एंगेल्स द्वारा तैयार किया सरकुलर (परिपत्र) निकाला गया, जिसमें लिखा गया था: "क्रान्तिकारी कमकर पार्टी निम्न-मध्यम-वर्गीय जनतन्त्रतावादियोंके साथ उस शत्रुसे लडनेमें सहयोग करेगी, जिसको दोनों हटाना चाहते हैं। लेकिन, जहाँ उसका श्रपना हित माँग करेगा, वहाँ वह उसका विरोध भी करेगी।" निम्न-मध्यवर्गकी श्रविश्वसनीयताके बारेमें वतलाते हुये परिपत्रमें कहा गया था, कि यह वर्ग सफल क्रांतिको पूँजीवादी समाजके सुधार- में इस्तेमाल करेगा, जिसमें कि उसके लिए जीवन अधिक आसान श्रीर सुलमय हो, कुछ हद तक कमकरोंके लिए भी इस्तेमाल करेगा। लेकिन सर्वहारा इससे इतनेसे सन्तुष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि जनवन्त्रतावादी निम्न-मध्यमवर्गकी माँगें बहुत सीमित हैं। जब वह प्राप्त हो जायेंगी, तो फिर वह जल्दी ही क्रान्ति से अपनी आँखें फेर लेगा। इसके विरुद्ध कमकरोंको क्रांतिको तब तक चालू रखना होगा, "जब तक कि सम्पत्तिवाले वर्गसे सभी छोटी या बड़ी राजशक्ति छीन नहीं ली जाती, श्रीर शासन सर्वहारा तथा कमकरोंके सङ्गठन हाथमें नहीं श्रा जाता— यह केवल एक ही देशमें नहीं, बल्कि सारी दुनियाके अधिकांश महत्वपूर्ण देशोंमें श्रीर क्रान्ति इतनी दूर तक सफल नहीं हो जाती, जिसमें कि उन देशोंके कमकरोंके बीच प्रतियोगिता बन्द न हो जाये श्रीर कमसे कम उत्पादनके श्रत्यंत महत्वपूर्ण साधन उनके हाथमें नहीं श्रा जायें।"

सरकलरमें कमकरोंको सावधान किया गया था कि निम्न-मध्यमवर्गके शान्ति श्रीर समभौतेके उपदेशोंसे घोखा न खार्ये श्रथमा बूज्वी जनतान्त्रिकताके लग्गू-भगा न बन जायँ। 'संधर्षके दौरानमें श्रीर उसके तुरन्त बाद कमकरोंको सबसे श्रिधिक श्रीर यथासम्भव बुर्जा-वर्गके शान्तिके सभी प्रयत्नोंका विरोध करना होगा. श्रीर जनतान्त्रिकतावादियोंको श्रपने आतंकवादी शब्दोंको कार्यरूपमें परि-एत करनेके लिये बाध्य करना होगा ।...' राष्ट्रीय एसेम्बलीके चुनावमें मजदूरींको सन जगह अपना उम्मीदवार खड़ा करना चाहिये, चाहे सफलताकी आशा भी न हो । इससे जनतन्त्रतावादियों श्रीर सरकारपरस्तोंकी पोल खोलनेका श्रच्छा मौका मिलेगा। सरकुलरमें यह भी वतलाया गया था कि सामन्ती जमींदारियों के उठा देनेमें जब क्रान्ति सफल हो जाये, तब भी महान् फ्रेंच-क्रान्तिका अनुकरण करते हुए इन जमींदारियोंको छोटे-छोटे दुकड़ोंमें करके किसानोंकी वैयक्तिक सम्पत्तिके रूपमें नहीं बाँटना चाहिये, क्योंकि इससे दीहाती सर्वहाराकी श्रेणी बनी रहेगी श्रौर किसानोंकी निम्न-सध्यमवर्गीय मनोवृत्ति जमींदारोंको पैदा करेगी। कमकरोंको माँग करनी होगी, कि सामन्ती इलाकोंको जन्त करके उन्हें सरकारके हाथमें देना चाहिये, जो उन्हें कमकर-उपनिवेशोंके रूपमें परिख्त करे न्त्रीर इस सम्मिलित भूमिको सर्वहारा बड़े पैमानेकी खेतीमें लगायें । इस प्रकार ब्र्बो सम्पत्ति-सम्बन्धोमें ञ्जिब-भिन्न होते समय सम्मिलित मिलकियतको एक मज-बृत आधारपर कायम किया जा सकेगा।

इस सरकुलरको लेकर बावर जर्मनी गया। उसे अपने काममें वही सफलता हुई। उसने वहाँ कम्युनिस्ट लीगके टूटे हुये सम्बन्धोको पुनः स्थापित किया और कितने ही नये सम्बन्ध कायम किये। कमकरो, किसानों, दैनिक मजूरों एवं खेल-क्दकी समाओं के ऊरर भी उसने प्रमाव डाला। स्टेफन बोर्न द्वारा स्थापित कमकर-विरादरीके अत्यन्त प्रमावशाली सदस्य भी लीगमें शामिल हो गये। जून १८५० की केन्द्रीय कमेटीके कागज-पत्रोसे पता लगता है कि जर्मनीके कितने ही शहरों में लीगके फिर पैर जम गये और कई जगह कमेटियां भी कायम हो गई: हम्बुर्ग, श्वेरिन, मेकलेनबुर्ग, बेस्ला (सिलेसिया), लाइपिज्य, सेक्सनी, बर्लिन, नूरेम्बर्ग (बनारिया) और कोलोन (शइनलेड-वेस्टफालिया) में उन प्रदेशोके संचालनके लिए कमेटियां भी कायम हो गई। यह भी पता लगता है कि लोगका सबसे जबर्दरत प्रमाव लन्दनमें था।

लन्दनके शरणार्थियोंको बहुत विश्वास था कि जर्मनीमें क्रान्ति फिर शुरू हो जायेगी और हमें स्वदेश लौटनेका मौका मिलेगा। लेकिन उसमें उन्हें १८५० ई०के ग्रीब्म तक निराश होना पड़ा। और देशोंमे भी क्रान्तिकी सम्मान्वना नहीं दीख पड़ी। इस सबका प्रमाव लीगके ऊपर बहुत बुरा पड़ा। आपसमें मतमेद और खटपट शुरू हो गई, जिससे केन्द्रीय कमेटी भी नहीं बच सकी। १५५ सितम्बर १८५० को केन्द्रीय कमेटीका जो अधिवेशन हुआ, उसमें साफ दों दल हो गये—एक दलमें छः सदस्य और दूसरेमे चार। मानर्स, एगेल्स, वावर, एकेरियस, फाडेर जैसे लीगके पुराने नेता कोनड़ाड शम्मके साथ एक ओर हुये और विलिच, शारर, फ्रेकेंग्र और लेमान दूसरी ओर—जिनमें शापर ही पुराने कम्युनिस्टोंमें से था। बहुमत दलने लीगकी रच्चा करनेके लिये केन्द्रीय नेतृत्वकों कोलोनमें स्थानान्तरित करनेका विचार किया। कोलोन जिला कमेटीने इस सुमावको स्वीकार कर एक नई केन्द्रीय कमेटी निर्वाचित भी कर ली, लेकिन' अहन मतने बहुमतके विचारको अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह लन्दनमें अपनेको अधिक इद समभता था।

"नीये रेनिश रिल्यू" के पाँचवें श्रीर छठवें श्रंकोंमें मार्क्स श्रीर एंगेल्सने श्रपने दृष्टिकोण को रस्ला था। यह दोनों श्रंक इकट्ठा नवम्बर १८५० में निकले थे, जिसके साथ पत्रिकाने अपनी जीवन-लीला समाप्त की। इस जोड़े अंकर्मे मार्क्सने एक लेखमें १५२५ ई०के किसान संग्रामका ऐतिहासिक मौतिकवादी दृष्टिकोयसे विश्लेषया किया था। इस लेखमें मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ लिखा था: "सर्वहारा सङ्ककी मोर्चाबन्दियोंवाले युद्धोंको लड़नेसे पहले अपने शासनके आगमनको कितनी ही बौद्धिक विजयों द्वारा घोषित करता है। मार्क्स श्रीर एंगेल्सने इस महत्वपूर्ण श्रन्तिम श्रंकमें राजनीतिक क्रान्ति श्रीर प्रति-मान्तिके आर्थिक कारणोंकी बड़ी सुन्दर विवेचना करते हुये बतलाया कि क्रान्ति श्रार्थिक संकटसे पैदा हुई थी, जब कि प्रतिक्रान्तिका श्राधार है उत्पादनमें एक नया बढ़ाव : "चारों श्रोर जो श्राम समृद्धि इस वक्त फैली हुई है श्रीर जिसके कारण बूर्वा-समाजकी उत्पादक शक्तियाँ—बूर्वी समाजके ढाँचेके अन्दर जहाँ तक सम्मव है, उतनी तेजीसे बढ़ रही हैं, उसमें किसी वास्तविक क्रान्तिका प्रश्न नहीं उठ सकता। ऐसी क्रान्ति केवल उसी कालमें सम्मन है, जब कि दो बातें श्रापसमें मिड़ जायँ, जब कि श्राधुनिक उत्पादक शक्तियोंकी बूर्जा उत्पादनके ढंगचे भिड़न्त हो जाये ।... एक नये संकटके परिशामस्वरूप ही एक नई क्रांति सम्भव है। लेकिन यह उतनी ही निश्चित है, जितना कि स्वयं ऋार्थिक संकटका ह्याना ।"

१ नवम्बर १८५० को पत्रिकाका श्रांतिम श्रंक लिखा गया श्रीर उसके साथ चह खतम हो गई। उसके साथ ही दो शताब्दियोंके लिए उसके दोनों लेखोंका सीधा श्रीर तुरन्तका सहयोग खतम हो गया। एंगेल्स श्रपने बापके फर्म एरमेन श्रीर एंगेल्समें काम करने चले गये श्रीर मार्क्सने लन्दनमें रहकर श्रपना सारा समय श्रीर शक्ति वैज्ञानिक श्रध्ययन तथा श्रपनी महान् कृतियोंकी तैयारीमें लगा दिया।

४. श्रार्थिक कठिनाइयाँ

नवम्बर १८५० ई० में मार्क्स अपने जीवनका आधा खतम कर चुके थे,

वह श्रव ३२ वर्षके ये । फरवरी १८५१ में मार्क्सको पत्र लिखते हुये एंगेल्सने कहा था: "श्रादमी इसे श्रीर भली तरह देख सकता है, कि निर्वासन एक ऐसा जीवन है. जिसमें हरेक ब्रादमी अवश्य बेवकफ, गदहा, कमीना, नीच श्रीर पानी बन जाता है। श्रगर वह अपनेको उससे पूर्णतया अलग नहीं कर एक स्वतन्त्र लेखक बननेमें सन्तोष नहीं करता, अपने दिमागको किसी बातके लिये. यहाँ तक कि तथाकथिक क्रान्तिकारी पार्टीके लिए भी परेशान नहीं करता।" इसके जवाबमें मार्क्षने लिखा था: "मैं सार्वजनिक तौरसे इस ग्रलग-ग्रलग रहनेको-जिसमे कि हम दोनो अपनेको पा रहे है-बहुत पसन्द करता है। यह बिल्कल हमारे मनोमाव और सिद्धान्तोंके अनुसार है। पारस्परिक समफौता-बाजी दिखावेके लिए ऋषकचरे कामको सहन करनेका ढंग और जनसाधारसाकी श्रॉखोंमें उन सभी गदहोके साथ जिस्मेवारीमे हिस्सेदार वननेकी श्रावश्यकता. श्रव खतम हो गई है।" इसपर एंगेल्सने लिखा था: "हमे श्रव फिर एक बार बहुत दिनोंके बाद पहली बार यह दिखलानेका अवसर मिला है. कि हमे जन-ख्यातिकी त्रावश्यकता नहीं, श्रीर न किसी देशकी किसी पार्टीसे समर्थन प्राप्त करनेकी त्रावश्यकता है। इन छोटी-छोटी बातोंसे हमारी स्थिति त्रिल्कुल स्वतन्त्र है। अबसे हम अपने आपके प्रति जिम्मेदार है। .. वर्षों तक हम ऐसे कार्यरत रहे, कि मानो क्रेथी श्रीर प्लेथी हमारी पार्टी है, यद्यपि हमारी कोई पार्टी श्रीर लोग नहीं थे, जिन्हें कि हम श्रपने दल, कमसे कम कायदेके तौरपर मानते, श्रौर जो हमारे उद्देश्यके प्रारम्भिक नियमोंको भी समकते।"

इसके बाद मार्क्स श्रीर एगेल्स अब अलग रहने लगे। लेकिन इस अवस्था में भी वह पूर्णतथा एकान्तवासी हो गये थे, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इंगलैंडके चार्टिस्ट पत्रोंमे वह लेख लिखा करते थे। वह यह भी चाहते थे, कि "नोये राइनिश रिच्यू" सदाके लिए न मर जाय, इसके लिए बार्जल (स्त्रीजलैंड) के प्रकाशक शोवेलित्जने जिम्मेवारी भी ली, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसी तरह श्रीर जगहोंपर भी किया प्रयत्न सफल नहीं रहा। कोलोनके पत्र "वेस्ट-डाशे जाइटुंग" के सम्पादक हैरमान बेकरने इच्छा पकट की, कि मार्क्सकी कृतियोंकी एक ग्रंथाविल प्रकाशित की जाय, लेकिन मई १८५१ में बेकर गिरफ्तार कर लिया गया और मार्क्सकी "संचित ग्रंथावलि" की एक छोटी सी पुस्तक ही निकल पाईं। चार-चारसी पृष्ठोंकी दो जिल्दोंमें ग्रंथाविल निकालनेकी योजना थी। वह दस भागोंमें निकलने वाली थी श्रीर १५ मुई तक प्राहक वन जानेवालोंको प्रत्येक भागका दाम त्राठ (चाँदीका) प्रोशेन निश्चित किया गया था। वैसे ग्राम विक्रीका दाम एक थालेर श्रीर पन्द्रह (चाँदी) ग्रोशेन प्रति जिल्द रक्खा गया था। पहला भाग निकलते ही बिक गया या। योजना बनाते हुये मार्क्सको केवल अपनी क्रतियोंको संग्रहीत कर देनेका ही ख्याल नहीं था, बल्कि उस वक्त उनके लिए जीविकाका भी भारी प्रश्न था। मार्क्स-परिवार भारी दरिहतामें पड़ा हुन्ना था। नवम्बर १८४६ में मार्क्स-द्रमतीका चौथा बच्चा (पुत्र) गीडो पैदा हुन्ना जिसपर उसकी माँने लिखा था: "वेचारा छोटा सा फरिस्ता इतनी तकलीफों त्रौर चिन्तात्रोंमें पाला गया, जिससे वह सदा वीमार ग्रीर रात-दिन भीषण यंत्रणामें पड़ा रहता था। जबसे वह दुनियामें आया, एक रात भी वह ठीकसे नहीं सो सका और सोया भी सो एक समय दो या तीन धंटेसे ऋधिक नहीं।" जन्मके एक वर्ष बाद यह लड़का मर गया | वह गरीबीपर बलिदान हम्रा. इसे माता-पिता जानते थे | दुनियाको गरीत्रीके जीवनसे निकालकर सखी बनानेके प्रयत्न करनेवालेको स्वयं त्रपने कंपेपर गरीत्रीका भार उठाना ग्रावश्यक था।

श्रम परिवारमें दाने-दानेके लाले पड़ रहे थे, चीकें बन्धक रख या वेंचकर श्रम्नका दो दाना मुँहमें डालनेकी भी कितनी बार नौयत नहीं थी। चेल्सियामें जिस घरमें पहले पहल मार्क्स-परिवार रहने लगा था, उसके मालिकने उन्हें श्रायम्त निष्ठुरता श्रीर वर्षरतापूर्वक घरसे निकलवा दिया, यद्यपि मार्क्सने वस्तुतः किराया वाकी नहीं रक्खा था। उन्होंने मूल किरायादारको किराया दे दिया था, लेकिन उसने भूमिपतिको उसे श्रदा नहीं किया। बहुत दौड़-धूप करनेपर लीसेस्टर-स्वायरके पास लीसेस्टर-स्ट्रीटमें एक जमेन होटलमें उन्हें कुछ समयके लिए शरण मिली, फिर वहाँसे गरीबोंके मोहल्ले सोहो-स्वायरकी २८ डीन स्ट्रीटमें चले गये। श्रगले छः वर्षोंके लिये डीन स्ट्रीटके ये दो कमरे परिवारको सर्दी-गर्मीसे बचाते रहे। मार्क्स केवल श्रपने श्रादर्श श्रीर विचारोंके लिये गारे-

मारे फिरते रहे; लेकिन उन्होंने इसके लिये कभी अफ़सोस नहीं किया। वह बानते थे कि यह मूल्य हमें अदा करना ही होगा, सबँहाराके सगे माई-बन्द बननेके लिये इस बीयनकी आवश्यकता है।

सिरके ऊपर छत तो मिल गई, लेकिन श्रार्थिक विपत्तियाँ बढती ही गई। श्रक्टूबर १८५० के अन्तमें मार्क्सने वेडेमेयरके पास फ्रांकफोर्ट (माइन) मे लिखकर कहा कि वहाँ खानदानके चाँदीके वर्तन श्रीर दूसरी चीजे जो बन्धक रक्ली हुई हैं, उन्हें अञ्झी कीमतपर बेच दो, केवल छोटी जेनीके चम्मच श्रादिकी एक छोटी सी सन्दकचीको रख छोडो । इस समय मेरी स्थिति ऐसी है, कि सुके जैसे भी हो पैसा प्राप्त करना चाहिये, जिसमें कि मैं अपने कामको जारी रख सकें । श्रीर काम क्या था सर्वहाराके लिये "कपिटाल" (पूँजी) जैसे श्रमर श्रनमोल रतनके लिखनेके लिये सामग्री-संचय करना । इसी समय श्रपने बन्धकी इस स्थितिको देखकर एगेल्सने भी निश्चय कर लिया कि चाहे नरकमें जाना पड़े, लेकिन मार्क्सकी आर्थिक सहायताके लिए मुक्ते अब कुछ करना जरूर है। वह अब तक अपने पिताके कपडेकी मिलके व्यवसायको एक आदर्शवादी साम्यवादीके तौरपर बडी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, लेकिन अब उन्होंने उस घुणाको घोलकर पी लिया श्रीर उस "नरक व्यवसाय" में पढनेके लिए वह मान्चेस्टरके लिए चल पड़े । इस निपत्तिमे एगेल्स छोडकर दूसरे सहायता देनेवाले मित्र बहुत कम मिले । १८५० ई० में जेनीने वेडेमेयरको लिखा था : "जो चीज मुम्मपर सबसे श्रिधिक चीट पहुँचाती है, मेरे हृदयको बेघकर लहुलोहान कर देती है, वह यही है कि मेरा पति कितनी ही छोटी-छोटी कठिनाइयोंके लिए परेशान है। उसकी सहायताके लिये थोडी सी चीज मी पर्याप्त है, लेकिन जो दूसरोंकी हमेशा खुले दिलसे सहायता करता रहा, वह अब स्वयं असहाय छोड दिया गया है। कृपया हेर वेडेमेयर, तुम यह न सोचो कि हम किसीसे कुछ माँग रहे हैं, लेकिन कमसे कम मेरे पतिने जिनको इतने विचार श्रीर समयपर सहायता दी है, उन्हें उनकी पत्रिकामे कुछ ग्राधिक व्यावसायिक उत्साह ग्रीर दिलचस्पी तो दिलानी चाहिये !.. इससे मेरा दिल दुलता है, लेकिन मेरा पति श्रौर ही तरह सोचता है। उसका विश्वास भविष्यके प्रति कभी भी-सबसे भयकर सर्गोमें

भी—नहीं उठा, वह हमेशा सुमन रहता है श्रीर बहुत श्रानन्द श्रनुभव करता है, जब कि मुसे प्रसन्न श्रीर हमारे प्यारे बच्चोंको मेरे साथ मचलते देखता है।" जैनीके यह कष्ट कुछ च्यों, कुछ घड़ियों, कुछ दिनोंके नहीं ये बल्कि वर्षों उस तपस्विनीने इसी तरह परिवारके कष्टोंमें घुलते हुये बिताया। चार-चार बजे रात तक जागकर लिखा-पढ़ी करनेवाले पित श्रीर श्रपने विचारोंके कारण उसके सोनेके संसारको मिट्टी करनेवाले पितके लिये उसे कभी भी पछतावा नहीं हुआ। वह हमेशा कोशिश करती रही, कि मार्क्स श्रपने महान् कालको निरावाध रूपसे पूरा करें। सारे मित्र जिस वक्त हाथ छोड़ बैठे थे, उस वक्त भी जेनी छायाकी तरह श्रपने पितके दुःखों श्रीर चिन्ताश्रोंके श्रधिक मागको श्रपने सिरपर बहन करती थी, जब शत्रु मार्क्सको चारों श्रीरसे प्रहार करके जर्जर करते, उस वक्त भी वह पितकी ढाल बनती।

श्रगस्त १८५१ में मार्क्सने फिर वेडेमेयरको लिखा था: "तुम्हें मालूम होगा कि मेरी स्थिति कितनी निराशापूर्ण है। यदि यही श्रवस्था देर तक रही, तो मेरी स्त्रीकी हालत बहुत बुरी हो जायेगी। श्रपनी श्रनिवार्य श्रावश्यकताश्रोंको पूरा करने के लिये दिन-प्रतिदिन जिन संघर्षों श्रीर कठिनाइयोंका सामना लगा-तार करना पढ़ रहा है, उसके कारण वह कृश श्रीर निर्वल होती जा रही है। इस सबके ऊपर मेरे विरोधियोंकी नीचता श्रपना प्रभाव श्रलग डाल रही है। वह मेरे ऊपर किसी सच्चाईसे श्राक्रमण करनेका प्रयत्न नहीं करते, बल्कि श्रपनी श्रज्मताके कारण मेरे प्रति सन्देह पैदा करते, मेरे बारेमें बड़े ही श्रवर्णनीय कलंकोंको फैलाते बदला लेनेकी कोशिश करते हैं।... जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इन सारी वातोंपर हँस सकता हूँ, उनसे मैं श्रपने काममें जरा भी बाघा नहीं पड़ने देता। लेकिन तुम सोच सकते हो कि इससे मेरी स्त्रीका भार हलका नहीं होगा। वह बीमार है। उसके ज्ञानतन्तु दुर्वल हो गये हैं, वह सबेरेसे शाम तक भयंकर दिखतासे लोहा लेनेके लिये मजबूर है।"

इसके कुछ महीने पहले (मार्चमें) मार्क्सको एक लड़की—फ्रांजिस्का— पैदा हुई। यद्यपि प्रसवमें कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन प्रस्ता बहुत बीमार थी— *'शारीरिक कारणोंसे उतना नहीं, जितना कि मानसिक कारणोंसे।" मार्क्सने विकल हो बडी खित्नताके साथ उस दिन एंगेल्सको लिखा था कि घरमें एक पैसा भी नहीं है।

इन कठिनाइयो श्रौर चिन्ताश्रोका मार मार्क्स जैसे स्वस्य पुरुषके लिये भी बर्दाश्तसे बाहरकी चीज हो जाता, यदि वैज्ञानिक श्राध्ययन श्रीर मिवष्यकी शुभाशाये उन्हें समाहित न करती। वह रोज ६ वजे सवेरे उस समयकी दुनिया के सबसे बड़े पुस्तकालय श्रीर संग्रहालय—ब्रिटिश म्युजियम—में जा बैठते श्रीर ७ को शामको ही उठते । इन दस घंटोमें सचमुच हो पुस्तक-पाठके श्रतिरिक्त गला तर करनेकी कोई चीज उनको नहीं मिलती होगी, इसे आसानीसे समका जा सकता है। किकेल, विलिच जैसे कितने ही उस समय श्रीर श्राजके भी क्रान्तिकारी समाजवादी थे श्रीर हो सकते हैं, जो कि श्रपने ज्ञानको गहरा करने के लिये कोई मत्थापच्ची करना नहीं चाहते। मार्क्सने वर्षों तक इस गम्भीर श्रम्ययनको जारी रखते हुये ऐसे लोगोके बारेमें लिखा था-'यह स्वामाविक है कि जनवान्त्रिकतावादी बुद्ध्योंको इस तरहकी किसी चीजकी श्रावश्यकवा नहीं, क्वोंकि उनको प्रेरणा 'ऊपरसे' से आती है। इन वेन्वारोंको अर्थशास्त्र और इतिहाससे माथापच्ची करनेकी क्या त्रावश्यकता १ जैसा कि योग्य विलिच सुमसे कहा करता था--समी वार्ते इतनी श्रासान हैं। शायद यह उनके गड़बडघोटाले-वाले दिमागोमे, क्योंकि वे वस्तुतः महान् बुद्धू हैं।' इस समय मार्क्स अपने 'राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना' को कुछ सप्ताहोंमें समाप्त कर देनेकी आशा रखते थे श्रीर उसके लिये किसी प्रकाशकको टूंद रहे थे, जिसमें उन्हें निराश होना पडा।

मई १८५१ में मार्क्का पूर्ण विश्वासपात्र और सच्चा मित्र फर्डिनांड फाइलियथ लन्दन आया। अगले कुछ वर्षों तक दोनों एक दूसरेके घनिष्ठ सम्पर्कमें
रहे, लेकिन फिर एकके बाद एक बुरे समाचार आने लगे। १० मईको लाइपजिगमे कम्युनिस्ट लीगके प्रतिनिधिके तौरपर आन्दोलनके लिये गया दर्जी
नययुंग पकड़ा गया। उसके पास जो कागज-पत्र मिले, उनसे पुलिसको लीगके
विद्यमान होनेका मेद मिल गया और योड़े ही समय बाद कोलोनमें केन्द्रीय
कमेटीके मेम्बर एकड लिये गये। इसी समय कवि फाइलियय वहाँसे माग्र

निकला। जब वह लन्दनमें आया, तो जर्मन निर्वासितों के भिन्न-भिन्न दलोंने उसे अपनी तरफ खींचनेके लिये एड़ीसे चोटी तकका जोर लगाया। वह समभते थे, कि प्रसिद्ध कविको अपनेमें शाकर हमें बहुत फायदा रहेगा । लेकिन कविने उनको साफ कह दिया, कि मैं तो मार्क्स श्रीर उनकी मंडलीका हूँ। १४ जुलाई को (१८५१) त्रापसी भगड़ेके मिटानेके लिये जो सभा हुई थी, उसमें भी कविने शामिल होनेसे इन्कार कर दिया। इस असफलताने कितने ही और भी नये मतमेद पैदा कर दिये । २० जुलाईको रूगेके बौद्धिक नेतृत्वमें स्नान्दोलन क्लब स्थापित हुई, श्रीर २७ जुलाईको किंकलके वौद्धिक नेतृत्वमें प्रवासी क्लब जनाई गई। यह दोनों क्लवें जल्दी ही जर्मन-ग्रमेरिकन पत्रोंके कालमोंमें त्रापसमें गुत्थमगुत्था करने लगीं। मार्क्स इस मेंडक श्रीर मृषके युद्ध को घृणा-की दृष्टिसे देखते, यह स्वामाविक था। मार्क्स किंकलकी करत्तोंको बड़े ध्यानसे देख रहे थे। सन्डोके जेलसे मागनेके बाद किंकलने लन्दनमें क्रान्ति वीरका पार्ट श्रदा करना श्ररू किया था। कवि मजाक करते हुये उसके बारेमें कहता था: कभी पत्र (मद्रीखाना) ग्रीर कभी क्लबमें । किंकलने विलिचकी सहायतासे एक भारी जालका ताना बाना तैयार किया। १४ सितम्बर (१८५१) की किंकल जर्मन राष्ट्रीय कर्ज जमा करनेके उद्देश्यचे न्यूयार्कमें उतरा। जर्मनीमें गराराजी कान्ति करनेके लिये पहले वह बीस हजार थालर एकत्रित करना चाहता था। कर्जके उगाहनेके लिये प्रचार करते समय दोनों गुरू-चेले उत्तरी राज्योंमें दासता के विरुद्ध और दक्तिणी राज्योंमें उसके पत्तमें उपदेश देते रहे। जिस समय र्किकल अमेरिकाकी सोनेकी खानोंमें लूटके लिये पहुँचा था, उसी समय मार्क्सका अमेरिकाके साथ दूसरी तरहसे आयका सम्बन्ध स्थापित हुआ था। न्यूयार्क टिव्यून उत्तरी राज्योंमें उस वक्त सबसे अधिक छपनेवाला दैनिक था, जिसके प्रकाशक डानासे मार्क्सका कोलोनमें परिचय हो गया था। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने -मार्क्सको बराबर लेख देनेके लिये नियमित पारिश्रमिक देनेका निश्चय किया। अभी मार्क्सकी अंग्रेजी अञ्ची नहीं थी, इसलिये जर्मनीमें क्रान्ति और प्रतिकान्तिके चारेमें मार्क्सने जो लेख लिखे, उनकी श्रंग्रेजी टीक करनेका काम एंगेल्सने श्रपने ऊपर लिया । कई साल तक मार्क्स ग्रपने लेखोंको न्यूयार्क ट्रिन्यून में देते रहे ।

६. अठारहवाँ वर्षे

मार्क्सका पुराना मित्र बुरोल्सका योजेफ वेडेमेयर सारे क्रान्तिके वर्षीमें फ्रांकफोर्ट-ग्राम-मैनमें एक जनतंत्रतावादी श्रखबारके सम्पादकके तौरपर बडी हिम्मतके साथ संघ करता रहा। लाइपजिगमें जो कागज मिले थे, उनसे पता लग गया, कि वेडेमेयर भी कम्युनिस्ट लीगका सक्रिय सदस्य है। इसपर खुफिया पुलिस उसके पीछे पड़ी । पहले वेडेमेयरने साखजेन हाउजेन नामक एक छोटी एकान्त सरायमें शरण ली, समका कुछ दिनोंमें तुफान उतर जायेगा। इस समय वह राजनीतिक अर्थशास्त्रपर एक सरल पुस्तक लिखनेमें लगा हुआ था। लेकिन तुफान दबनेकी जगह श्रीर जोर पकडता गया। वेडेमेयर दो छोटे-छोटे बच्चोंका बाप था। उसने स्वीजलैंड या लन्दनमे जीविका कमानेकी आशा न होनेसे अमेरिका जानेका निश्चय किया । मार्क्स और एंगेल्स दोनो ऐसे मित्रको हाथसे खोना नहीं चाहते थे। मार्क्सने बहुत सोचा कि कहीं उसे काम इवीनियर रेलवेके सर्वेयर या श्रीर कोई नौकरी मिल जाय। लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई । जब वेडेमेयर के अमेरिका जानेको छोडकर और कोई रास्ता नहीं रहा. तो एगेल्सने कहा : धमें न्यूयार्कम एक विश्वासपात्र आदमीकी आवश्यकता है। श्राखिर, न्यूयार्क भी दुनियांसे बाहर नहीं है श्रीर हम यह जानते हैं कि जब भ्रावश्यकता होगी. तो वेडेमेयर तैयार रहेगा । वेडेमेयर १९ सितम्बरको हाबेसे जहाजपर बैठा श्रीर चालीस दिनो वाद तुफानी समुद्र में होते उसका जहाज न्यूयार्क पहुँचा । ३१ श्रक्त बरको मार्क्सने चिट्ठी लिखकर वेडेमेयरसे कहा, कि न्यूयार्कर्मे पुस्तक-विक्रेता ब्रीर प्रकाशकका काम शुरू करो, श्रीर नोये राइनिशे जाइटंग तथा नोये राइनिशे रिज्यू से अन्छे-अन्छे लेखोको जमा करके उन्हें प्रकाशित करो । वेडेमेयरने अपने शुरुके सुक्तावको स्वीकार करते हुये लिखा, कि यद्यपि बनियापनका मनोमाव जितना श्रिधिक श्रमेरिकामें है, उससे मुक्ते इस व्यवसायसे घुणा होती है; तो भी मुक्ते त्राशा है कि जनवरी (१८५२ ई०) से एक साप्ताहिक डी रिवोल्य्शन (क्रान्ति) के नामसे निकालना चाहता हूं.

[#] The Eighteenth Brumeire.

उसके लिये जितना जल्दी हो सके ग्राप लेख मेजें। मार्सने सभी ग्रपने लेखक मित्रोंको प्रेरित किया। एंगेल्सने भी लेख लिखे। प्रता फ्रांइलिप्रथने एक किता तैयार की, एकेरियस, वीर्थ ग्रीर दोनों बोल्फोंने भी कलम चलाई। स्वयं ग्रपने लिखनेके लिये मार्क्सने लुई बोनापार्त का १८ वीं ब्र्मेर ग्रार्थात् २ दिसम्बरकों हुये बोनापार्ती क्र्प-दे-ता (राजविराजी) पर लेख लिखनेका निश्चय किया। इस राजविराजीपर फ्रांसके प्रसिद्ध लेखक विक्तर हूगो ग्रीर पूधोंने भी कलम चलाई थी; लेकिन वह उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सके थे।

मार्क्सकी इस पुस्तककी भाषा ऋत्यन्त सजीव है। इतिहासकी ऋपनी भौतिक-वादी दृष्टिके कारण वह इस समसामयिक घटनाकी तह तक पहुँचने में सफल हुये। जैसी ही इसकी भाषा चमत्कारपूर्ण है, वैसा ही विषय भी सुन्दर श्रीर श्रानबर्द्धक है। पहले अध्यायमें तुलना करते हुये उन्होंने लिखा है: अठारहवीं शताब्दी जैसी बूर्जा-क्रान्तियाँ एकके बाद एक सफलतायें प्राप्त करते नये किले दखल करती आगे बढ़ती गई। उनका नाटकीय प्रमाव एक दूसरेसे बढ़-चढ़कर है। मनुष्य ग्रीर चीजें ज्वालाकी जगमगाहट में जड़ी हुई सी मालूम होती हैं। प्रतिदिन श्रीर सर्वत्र श्रात्मविमोरता सी फैली दिखाई पड़ती है, लेकिन चिश्क ही। जल्दी ही वह अपने मध्याह्नपर पहुँचती है, फिर अपनी तूफानी कारवाइयों-के परिणामोंको विचारपूर्वक ब्रात्मसात कैसे करें इसे सीखनेके पहले समाजमें एक दीर्घन्यापी अवसाद आ पड़ता है। किन्तु १६ वीं शताब्दीकी किन्तु सर्वहारा क्रान्तियाँ लगातार श्रपनी त्रालोचना करती हैं, श्रपने रास्तेमें बराबर श्रपनेको रोकती रहती हैं, जो पहले ही पूरा किया जा चुका है, मानो उसे फिरसे शुरू करनेके लिये पुनः उसी जगह लौट त्राती हैं। पहिले प्रयत्नोंमें त्रपनी बेमनता, निर्बलता स्रौर हीनता दिखलानेकी पूरी निष्ठुरताके साथ निन्दा करती हैं। जान पड़ता है, वह अपने शत्रुको इसीलिये धरतीपर पटकती हैं, कि वह पृथिवीसे नई शक्ति प्राप्त करके और अधिक शक्तिशाली बन उनके सामने खड़ा होकर फिर मिइन्त करे श्रीर श्रपने निजी उद्देश्योंके श्रनिश्चित श्रीर जबर्दस्त स्वरूपके कारण तव तक पुनः श्रौर पुनः मिड़न्त करे, जब तक कि वह ऐसी स्थिति न पैदा कर दे, जब कि पीछे हटना असम्भव हो जाय और परिस्थितियाँ चिल्ला कर कहने लगें: चाहे जो कुछ ! Hic Rhodus, hic Sapta.,.. श्रगर सम्राज्ञी चादर छुई बोनापातके कन्घोपर पड़ी तो नेपोलियनकी कॉसेकी मूर्ति वाँदोमके खम्मेसे गिरकर चूर-चूर हो जायेगी।

यह श्रद्शुत पुस्तक मार्क्षने उस समय लिखी थी, जब कि पैसेकी कमीके कारण वेडेमेयरको अपना साप्ताहिक बन्द करनेके लिये मजबूर होना पड़ाः "शरदके श्रारम्मसे ही जो मीषण वेकारी यहाँ फैली हुई है, उसके कारण! कोई मीं नया अध्यवसाय श्रारम्म करना वहुत कठिन है। इसके ऊपर हालमें कम-करोंको मिन्न-मिन्न तरीकेसे लूटा गया है, पहले किकलने ऐसा किया फिर कौसुत (हुंगेरियन) ने। दुर्माग्यसे श्राधकाश मजूर अपने विरोधी प्रचारके लिये एक डालर दे सकते हैं, जब कि अपने हितोंकी रज्ञांके लिये एक सेन्ट। श्रमेरिकाकी स्थितियाँ लोगोंपर श्रसाधारण बुरा आष्टाचारिक प्रमाव डालती हैं, श्रीर उसके साथ ही इस श्रहंकारको भी पैदा करती हैं, कि पुरानी दुनियाके उनके साथियोसे श्रमेरिकन वेहतर हालतमें हैं" तब भी वेडेमेयरने श्रमी हिम्मत नहीं छोडी, श्रीर दो सौ डालर हाथमे श्रा जानेपर वह एक मासिक निकालनेकी फिकरमें पड़ा।

इस तरह अवस्था निराशापूर्ण थी, जब कि मार्क्स लेखनी अठारहवीं 'बुमेर' लिख रही थी। इसी समय जनवरीके आरंममे मार्क्स वीमार हो गये। वह बढी मुश्किलसे कलन चला सकते थे: "वर्षोंसे मुक्ते किसी चीजने इतना बुरी तौरसे नहीं पख्लाड़ा जैसा कि यह अभागी ववासीर, इतना तो भीषण फेंच असफतताके समय भी नहीं हुआ था।" २७ फ्वेरीको उन्होंने लिखा थाः "मेरी स्थित अब उस स्थानपर पहुँच चुकी है, जब कि मैं घरसे वाहर नहीं निकल सकता, क्योंकि मेरे कपड़े बन्धक रक्खे हुये हैं और साख न रह जाने के कारण मैं मास नहीं खा सकता।" तो भी २५ मार्चको वह अपनी पुस्तकके इस्तलेखके आन्तिम मागको वेडमेयरके पास मेजनेमें सफत हुये, साथही वेडमेयर के नये पुत्रके जन्मके बारेमें मार्कने अधिनंदन करते हुये लिखा, वह ऐसे समय आया: "जिस च्याको छोडकर और अच्छा समय दुनिया में आनेके लिये प्राप्त करना असम्भव है। (वह समय आने वाला है) जबकि लन्दनसे कल-

कत्ता सात दिनमें पहुँचना सम्भव होगा, जब कि हमारे सिर कट चुके होंगे या वह बुढ़ापेके कारण काँपते रहेंगे। आस्ट्रेलिया, कलिफोर्निया और प्रशान्त महा-सागर ! नई दुनियाके नागरिक यह समम्तनेमें असमर्थ होंगे, कि हमारी दुनिया कितनी छोटी है।" अपनी भीषण कठिनाइयोंके बीचमें भी मार्क्स अपने सिरको पानीसे ऊपर रखने का प्रयत्न करते थे। उनके हृदय श्रीर दिमागमें भन्य भविष्यके प्रति पूर्ण श्रास्था थी, श्रीर मानव विकास की श्रपार संभावनायें उनके कब्रमें लिटाया गया। विल्हेल्म बोल्फने उस वक्त लिखा था: "प्राय: हमारे सारे ही मित्र दुर्मांग्यके सताये और भीष्या संकटसे दवे हुये हैं।" यह ईस्टरका त्यौहारका दिन था, जब कि एक ही वर्ष पहले पैदा हुई मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की मर गई । जैनीने उस समयके भीषण दृश्यका बड़ा ही मार्मिक वर्णन ग्रपनी डायरीमें किया है: "१८५२ ई० के ईस्टरमें हमारी छोटी सी बिटिया फ्रांजिस्का फेफ़ड़ेकी स्जनसे जबर्दस्त बीमार पड़ गई। तीन दिनों तक वेचारी वच्ची मृत्युसे लड़ते अपार यंत्रणा सहती रही। उसका छोटा सा निष्प्राण शरीर हमारे पीछेवाले छोटे से कमरेमें रक्खा था, जब कि हम सब सामनेवाले कमरेमें चले गये । रात आई, तो हमने धरतीपर अपना बिस्तरा बिछाया । तीन बचे हुये बन्चे (सभी लड़कियाँ) हमारे साथ लेटे थे, श्रीर हम उस वेचारी छोटी सी फरिस्तेके लिये रो रहे थे, जो कि दूसरे कमरेमें ठंडी श्रीर निर्जीव पड़ी थी। में पड़ोसी फ्रेंच शरखायींके पास गई, जो कि कुछ पहले हमारे घर त्राया था। उसने वहें सौहार्द, श्रीर सहानुभूतिके साथ वर्ताव किया श्रीर दो पौंड दिया। इस पैसेसे हमने उस शवाधानी का दाम चुकाया; जिसने मेरी बच्ची शान्तिपूर्वक विश्राम करेगी । पैदा होने पर उसे हिंडोला नहीं मिला, श्रीर श्रन्तिम छोटीसी सन्द्रकची भी काफी समय तक उसे सुयस्सर नहीं हुई। हमारे लिये वह भीषण् घड़ी थी, जब कि -छोटी सी शवाधानी अपने अन्तिम विश्रामस्थानपर ले जाई गई।" उसी दिन वेडेमेयरका निराशापूर्ण पत्र मार्क्को मिला था।

इन्हीं दु:खकी घड़ियोंमें समुन्दरपारसे एक नया पत्र आया, जिसपर ६ अप्रैलकी तिथि लिखी हुई थी: "अप्रतीित्ति सहायताने अन्तमें उन कठिनाइयों

को दूर कर दिया, जिनके कारण कुछ पम्पलेटोंका प्रकाशन ६का हुआ था। पिछली चिट्ठी मेज देनेके बाद फाकफुतसे आये हमारे एक कमकरसे मेंट हुई। वह दर्जी है, और हमारी ही तरह गर्मियोंमे यहाँ आया। उसने अपने बचे हुये सारे पैसे—चालीस डालर—मेरे हाथमे दे दिये।" यदि इस सर्वहाराने अपना प्रविस्त त्याग नहीं किया होता, तो बहुत संमय है "अठारहवी ब्रूमिये" प्रकाशित न हो पाई होती। उस महानत्यागी का नाम लिखना भी वेडेमेयर भूल गया। लेकिन नाम से क्या? सर्वहारा अपनी वर्गचेतना से प्रेरित होकर क्या-क्या कुर्जिन नहीं कर सकता? वह क्रांतिकी बलिबेदीपर हॅसते-हॅसते अपने प्राणोंकी बलि देना जानता है।

वेडेमेयरने अब अपने मासिक "रेवोल्यूशन" (क्रांति) को प्रकाशित करना शुरू किया, जिसके पहले अकमें मार्क्स यह अपर कृति निकली। दूसरे तथा अन्तिम अंक में फाइलियथकी दो कविताये वेडेमेयरके पास चिट्ठीके रूपमें छुपीं, जिनमें बड़े व्यग और चमत्कार शब्दोंमें किंकलके जर्मन राष्ट्रीय अप्रुख उगाहनेके प्रयत्नका उपहास किया गया था। वेडेमेयर "अठारहवीं ब्रूमियर" की एक हजार कापियाँ छुपी थीं, जिनमेसे एक-तिहाई युरोपमें मित्रो और सहानुभूतिकारोमें बॉटनेके लिये मेजी गई। उप्रवादी पुस्तक-विक्र ताओंने मी उसे वेचनेमे हाथ नहीं लगाया। पीपर द्वारा अनुवादित और एंगेल्स द्वारा पालिश की गई उसके अनुवादको छुपनेके लिये कोई अग्रेज प्रकाशक नहीं मिला।

इसी समय कोलोनमें पकड़े गये कम्युनिस्टोपर श्रिमियोग चलाया जाने लगा था।

७. मोलोंन का कम्युनिस्ट-मुकदमा

मई १८५१ में कोलोनमें कम्युनिस्ट साथियोकी गिरफ्तारीके समयसे ही मार्क्सकी आर्खे वहाँ होती सारी कार्यवाइयोंकी ओर लगी हुई थीं। पुलिस कोई पक्का सबूत नहीं पा रही थी, इसिलये मुकदमा रुका पडा था। उनके बारेमें जो सबूत मिल सका था, उससे यही साबित किया जा सकता था, कि वह एक

शुप्त प्रचारक संस्थाके मेम्बर हैं, लेकिन फीजदारी कानूनमें उसके लिये कोई द्राड नहीं था। प्रशियाके राजाने अपने आदमी स्टीनेरको इस मुकदमेंपर लगाना चाहा । वह जैसे भी हो, सबूत जमा करने लगा। उसके एक चरने विलिचके संगठनके एक आदमी श्रोजवाल्ड डीट्जके लिखनेके डेस्कका ताला नोड़कर कागज चुराये। उन कागजों तथा फ्रेंच श्रिधकारियोंकी सहायतासे स्टी-वेरने "फ्रेंच-जर्मन षड्यन्त्र" गढ़ा श्रीर फ्वेरी १८५२ में पेरिसकी श्रदालतोंने कितने ही श्रमागे जर्मन कमकरोंको मिन्न-मिन्न मियादकी सजायें दी। लेकिन स्टीबर त्रब भी पेरिस-षड्यन्त्रको कोलोन के त्राभियुक्तोंके साथ जोड़नेमें त्रासमर्थ था । पेरिसके पड्यन्त्र कोलोनके मुकदमेमें सहायता देनेवाली कोई चीज हाय नहीं लगी । इसी समय "मार्क्स पार्टी" श्रीर "विलिच-शापर पार्टी" के मतभेद ग्रीर उम्र हो गये। विलिचने ग्रमेरिकासे लौटनेके बाद किंकलसे मिलकर जो कार्यवाई करनी शुरू की, उसके कारण १८५२ के श्रीष्ममें दोनों दलोंका विरोध न्त्रीर भी। उग्र हो गया। यद्यपि किंकल दो लाख थालर जमा करनेमें सफल नहीं हुआ, लेकिन तो भी उसे एक लाख यालरके करीव हाथ लगा। उसके सामने यह एक समस्या थी, कि पैसेको कैसे खर्च किया जाय । साथ ही रुपए की गन्ध पाकर श्रव उसके साथियों में भी लार टपकने लगी। श्रन्तमें किंकलने एक हजार पींड प्रथम ग्रस्थाई सरकारके नामसे वेस्टमिन्स्टर वैंकमें जमा कर दिया श्रीर चाकी सारी करीब दो लाखकी रकम सैर-सपट्टे ऋौर प्रबन्ध में खर्च की। बैंकमें जमा की हुई रकम पन्द्रह बरस बाद जर्मन समाजवादी जनतंत्रताका पत्र निका-लनेमें सहायक हुई।

कोलोनमें सरकारी श्रिषकारीने सनूत जुटानेके लिये काफी समय तक मुकदमेको बन्द रक्खा। श्रन्तमें श्रक्त्वर १८५२ को नाटक श्रारंभ हुआ। फ्रांच-जर्मन षड्यन्त्रके साथ श्रमियुक्तोंका सम्बन्ध किसी तरह भी नहीं स्थापित किया जा सकता था। जिस पार्टीके षड्यन्त्रके साथ पुलिस सम्बन्ध जोड़ना चाहती थी, श्रिमियुक्त उसके मेम्बर ही नहीं थे, यही नहीं, बल्कि वह उस दलके विरोधी थे। श्रन्तमें स्टीबरने "मार्क्स पार्टी" की मूल कार्यवाही-बही पेश की, जिसमें मार्क्स श्रीर उनके साथियोंकी उन मीटिंगोंकी कार्यवाही दर्ज थी, जिनमें

उन्होने विश्व-क्रान्तिकी योजनापर विचार प्रकट किया था। यह "कार्यवाही बही" सरकारी एजेंट चार्ल्स फ्लोरी और विल्हेल्म हर्श द्वारा पुलिस-अफसर ब्राइफकी देख-रेखमे जाली बनाई गई थी। स्टीबरको बहुत विश्यास था, कि मैंने मैदान मार लिया: लेकिन, मार्क्सने उसके विरुद्ध जो सबूत सचित कर दिये थे, उसके कारण स्टीवरको सफलताकी आशा कम हो गई। जिस समय मार्क्स कोलोनके श्रपने साथियोंके श्रमियोगमें दत्तचित श्रीर परेशान थे, उस समय उनके घरकी हालत कितनी बुरी थी, यह एंगेल्सके नाम लिखे उनके 🖛 सितम्बरके पत्रसे मालूम होगा। "मेरी स्त्री बीमार है, नन्हीं जेनी बीमार है: लैनचेनको एक तरह का स्नायविक बुखार है, श्रीर मैं डाक्टर नहीं बुला सकता, क्योंकि मेरे पास फीस के लिये पैसा नहीं है। करीब आठ या दस दिनसे अब तक हम रोटी और श्रालूपर गुजारा कर रहे हैं, और अब इसमें भी सन्देह है कि वह हमें मिल सकेगा। मैने डानाके लिये कुछ नहीं लिखा, क्योंकि मेरे पास श्रखवारोंके खरीदनेके लिये पैसा नहीं है। ऋव सबसे बढिया बात यही हो सकती है. कि घरकी मालकिन अपने घरसे हमें बाहर निकाल दे. क्योंकि ऐसी अवस्थामें काया किरायेके बाईस पौडका बोक्त मेरे दिमागसे उतर जायेगा: लेकिन, मुक्ते इसकी उम्मीद नही है, कि वह इतनी दयावान् होगी। इसके ऊपर रोटीवाले, दूघवाले मोदी, सागवाले और गोश्तवालेके भी हम कर्जदार हैं । कैसे इस शैतानी आफत-'से मै वाहर निकल सकता हूं ? पिछले सप्ताह...मैंने कमकरोंसे कुछ शिलिंग क्या कुछ पेन्स तक उधार लिए हैं। यह मेरे लिए भयकर कृत्य था, लेकिन ऐसा करना अनिवार्य था, नहीं तो हम सब भूखे मरते।" इस स्थितिमें भी अपने कोट तकको वेंचकर कोलोनके अभियक्तोकी सहायता करनेके लिए मार्क्स प्रयत्न कर रहे थे।

श्रमी श्रनुक्ल फैसलेके बारेमें कोई निश्चय नही या, इसी समय फाउ मार्क्स (श्रीमती जेनी मार्क्स) ने एक श्रमेरिकन मित्रको लिखा था: "जाल-साजीके सारे सबूत यहाँसे तैयार करके मेजने हैं, जिसके लिए मेरे पितको सारे दिन श्रीर रातमें भी बहुत देर तक काम करना पडता है। फिर इस लिखी हुई सामग्रीकी छु: या सात कापियाँ हमे करनी पड़ती हैं, जिन्हें मिन्न-मिन्न तरीकोसे फ्रांकफोर्त श्रादिके रास्ते अर्मनी मेजना पड़ता है; क्योंकि मेरे पितके पास श्राने-वाले तथा उनके जर्मनीके लिये मेजे जानेवाले सारे पत्र खोलकर जब्त कर लिए जाते हैं। श्रव सारा मामला पुलिस श्रीर मेरे पितके बीच संघर्षके रूपमें पिरण्त हो गया है, श्रीर मेरा पित हरेक बातके लिए, मुकदमेकी पैरवीके लिये भी जवाबदेह बनाया गया है। मेरी घबराहटके लिये द्वम माफ करना, क्योंकि इस मामलेमें मेरा भी कुछ भाग है। मैं तब तक कापी करती रहती हूँ, जब तक कि मेरी श्रंगुलियाँ दुखने नहीं लगतीं।...हमारा घर एक बाकायदा श्राफिस बन गया है। दो या तीन श्रादमी लिखते, दूसरे सन्देश लेकर दौड़ते, श्रीर वाकी पैसे-पैसे जुटा रहे हैं, जिसमें कि हम जीवित रह सकें श्रीर दुनियाके श्रत्यन्त लज्जाजनक सरकारी दुराचारके खिलाफ सबूत तैयार कर सकें। इस सारे समय मेरी तीनों जिन्दादिल बन्चियाँ गातीं श्रीर सीटी बजाती रहती हैं, जिसके लिये उन्हें कभी-कभी श्रपने बापकी कड़ी फटकार भी खानी पड़ती है। कैसा जीवन!"

श्रन्तमें स्टीबरकी जालसाजीका मंडाफोड़ हो गया, श्रीर मार्क्स विजयी हुये। जाली "कार्यवाही बही को सरकारी वकीलने छोड़ दिया, लेकिन यदि श्रिमि- युक्तोंको सजा नहीं दी जाती।तो प्रशियन सरकारका मुँह काला होता, इसलिये उसकी सहायताके लिये जूरीवाले भी ईमानदारी खोनेके लिये तैयार थे। ११ मेंसे ७ श्रिमियुक्तोंको देशद्रोहके प्रयत्नका श्रपराधी माना गया। सिगार बनानेवाले रोजेर, लेखक बुरगेर्स्क श्रीर फेरीवाले दर्जी नोथयुंगको किलेमें सात सालकी कैदकी सजा हुई। श्रीर कमकर राइख रसायनिक श्रीटो श्रीर भूतपूर्व बैरिस्टर बेकरको किलेमें पाँच सालकी कैदकी सजा हुई, फेरीवाले दर्जी लेसनरको तीन- सालकी सजा। क्लर्क एरहार्ट श्रीर तीन डाक्टर डानियल्स याकोधी श्रीर क्ला इन छोड़ दिये गये। डानियलको श्रटारह महीनेके हवालाती जीवनमें तपेदिक लग गई, जिसके कारण वह कुछ वर्षों बाद मर गया। मार्क्सने उसकी मृत्युपर जो सहानुभूतिपूर्ण पत्र उसकी बीबीको मेजे थे, उनके लिये उसकी विधवाने बड़े करुण शब्दोंमें देते हुये धन्यवाद दिया था।

इन अभियुक्तों में से कितने ही पीछे अपने अतीतको छोड़ पथभ्रष्ट हो गये। बुरगेर्स राइखस्टाग (पार्लियामेंट) का मेम्बर चुना गया, वेकर पीछे कोलौन म्युनिसिपैलिटीका लार्ड मेयर श्रीर प्रशियन पार्लियामेटके उन्च-सदनका सदस्य वना । नोथयुंग श्रीर रोजेर श्रपने पथपर श्रचल रहे । लेसनेर मार्क्स श्रीर एंगेहसके मरनेके बाद भी निर्वासित जीवन विताते हुये श्रन्तिम समय तक उनका परममक्त बना रहा ।

कोलोन-कम्युनिस्ट अभियोगके वाद कम्युनिस्ट-लीगने अपनेको खतम कर दिया, जिसका अनुसरण विलिचके संगठनने भी किया। पीछे विलिच अमेदिका प्रवासी हो गया, जहाँ उसने गृह-युद्धके समय उत्तरी सेनाके एक जैनरलके
वीरपर काफी प्रसिद्धि हासिल की। शापर पश्चाचाप करके फिर अपने पुराने
हसीयियोके साथ आ गया।

इस सफलताके बाद भी मार्क्स प्रशियन-सरकारको चैन लेने देनेके लिये वियार नहीं थे। उन्होंने इस अभियोगके बारेमे पुस्तक लिखकर उसे स्वीजलैंड - 'और सम्भव हो तो अमेरिकामे प्रकाशित, करनेका निश्चय किया था: "इस क्ष्मिक्तें विनोदी अंशको, मैं समभता हूँ तुम और अञ्झी तरहसे समभ क्षामित्रों, यदि मैं बतला हूँ, कि उसका लेखक अपने पैरों और पीठको पर्याप्त न ढॉक सकनेके कारण विल्कुल घरमे बन्द सा है। इसके ऊपरसे उसका परिवार पहले और अब भी मयंकर तकलीफसे संवस्त है। यह भी अभियोगकी कार्रवाइयोंका ही एक आंशिक परिणाम है, क्योंकि जिन पॉच सप्ताहोंमें सरकार की चालोंके विरुद्ध पार्टी की बचावके लिये मैं अपनी सारी शक्ति लगानेके लिये पजबूर था; उस समय मैंने जीविका कमानेके लिये कुछ नहीं किया। यही नहीं, इस सुकदमेने जर्मन पुस्तक-विकेताओंको पूरी तौरसे मेरे खिलाफ कर दिया है, बेनसे कि राजनीतिक अर्थशास्त्रपर अपनी पुस्तकके प्रकाशन का प्रवन्ध करनेकी आशा रखता था।

जो भी हो ११ दिसम्बरको शावेशित्वके लडकेने — बिसने कि अपने पिता-के कारवारको अपने हाथमें सँभाल लिया था—वाजेल (स्वीजलैंड) से मार्क्सके ॥स लिखा, कि मैं कितावकी पहली गोलियोको देख रहा हूँ: "सुके विश्वास है कि यह पुस्तक जर्बदस्त सनसनी पैदा करेगी, क्योंकि यह एक मास्टरपीस ।" शावेलित्वने प्रस्ताव किया कि पुस्तककी दो हवार कापियाँ छापी जायें ग्रीर दाम चाँदीका दस ग्रीशन रक्खा जाय, क्योंकि कितनी ही पुस्तकें सरकार प्रकड़कर जन्त करनेमें जरूर सफल होगी। दुर्माग्य समिक्रिये, गुप्त रीतिसे मेजनेके लिये वाडेनके एक सीमान्ती गाँवमें पुस्तकें मेजाकर छः हफ्ते तक ग्रवसरकी तलाशमें पड़ी थी, वहीं इस संस्करणकी सारी प्रतियाँ सरकार के हाथोंमें पड़कर जन्त कर ली गई।

कितनी दुश्चिन्ता श्रीर दुर्भाग्यकी बात थी "विषद् विषदमनुसरित" का कितना निष्ठुर उदाहरण था। जब १० मार्चको यह बुरी खबर एंगेल्सको मिली, तो उन्होंने बहुत दुःखी होकर लिखा: "इस तरहका दुर्भाग्य फिर श्रागे लिखनेके उत्साहको श्रादमीसे छीन लेना चाहता है। क्या हम सदा प्रशियाके राजाके लिये काम करते रहें। इसी चिन्तामें पड़े हुये थे कि तीन महीने बाद शावेलिलाके मागीदार श्रम्वेरगेरने ४२४ फ्रांक छपाईका मार्क्स मार्गा, जिससे उनकी परेशानी श्रीर बद गई।

स्वीजलैंडकी ग्रसफलताका कष्ट कुछ हलका तब हो पाया, जब ग्रमेरिकामें कुछ सफलता कुछ दीख पड़ी। "नो-इंगलैंड जाइटुंग" बोस्टनसे प्रकाशित होता था। उसने कोलोन वाले पम्फ्लेटको छापा। एंगेल्सने ग्रपने खर्चपर उसकी ४४० कापियाँ ग्रलग छपवा लीं। लाजेलकी सहायतासे उन्होंने इन्हें राइन प्रदेशमें वॅटवानेका प्रस्ताव किया। फाउ मार्क्स (जेनी) ने लाजेलके पास इसके बारेमें लिखा। लाजेलने उत्साह भी दिखलाया, लेकिन पता नहीं काममें कहाँ तक सफलता हुई। कोलोन-श्रमियोगके रहस्योद्धाटक पम्फ्लेटकी ग्रमेरिका-के जर्मन-पत्रोंमें काफी चर्चा रही, विशेषकर विलिचने उसके खिलाफ खूब लिखा। इसपर छोटा सा जवाव मार्क्सने उच्च हृदयका वीर के नामसे लिखा।

कम्युनिस्ट-लीग खतम हो गई थी। जर्मनीके सार्वजनिक जीवनसे नाता. -रखनेके तार टूट चुके थे। ग्रव मार्क्सका निर्वासित वर ही सदाके लिये उनका चर हो गया।

श्रध्याय ११

मार्क्स और एंगेल्स

मार्क्स युगप्रवर्त्तक पुरुष थे, श्रव इससे विरोधी भी इन्कार नहीं कर सकते। इतिहासमें किसी एक पुरुषको एक समयमे मानवताकी इतनी संख्या और इतने प्रतिशतने स्रपना मार्गप्रदर्शक नहीं माना । मार्क्सका जीवन वडी गहरी श्रीर तीब्र वैद्धिकता-पुराने शब्दोमें ज्ञानमार्ग का था। उसके साथ दूसरी ज्ञानको व्यवहारमे लानेकी स्रोर भी उनको उतना ही ऋघिक जोर था, जिसे पुरानी परिमाषाके अनुसार ज्ञान और कर्मका समन्वय कह सकते हैं। साथ ही दोनो बन्धुस्रोमें त्रादर्शनाद स्रीर त्यागकी वह मावना देखी जाती है, जो कि केवल जातककी कहानियोंमें ही हमें मिलती हैं। लेकिन जातकोमे भी त्याग दु:खकी जडके उच्छेदके लिये उतना नहीं देखा जाता, जितना कि मार्क्स श्रीर एंगेल्स-में । मार्क्सने स्वेच्छापूर्वक कष्टका जैसा जीवन त्रिताया, शायद ही धर्मके पैग-म्बरो श्रीर श्रनुवायियोंमे किसीने उतना दुःख उठाया हो । श्रलकारिक भाषामे हम कह सकते हैं, कि मानवताके दु:खोसे मुक्त करनेके लिये उन्होंने स्वयं मानवकी सिहिष्युता-शक्तिसे परेके दुःखोंको सहा। ईसा किसीके पापोको अपने सिरपर उठानेके लिये सुलीपर नहीं चढे, यह तो केवल उनके अनुयायियोका पचार भर है, अधिक उनके लिये यही कह सकते हैं, कि वह गरीबी देखकर द्रवित हो जाते थे। बुद्धमें यह मावना ईसासे कहीं बढ़-चढ करके थी, श्रीर वह मृद्ध मक्तिके नहीं, बल्कि अपने समयके प्रखर बुद्धिवादके प्रवर्त्तक थे। किन्तु मार्क्स के सर्वथा मानव-जीवनके इस पहलुको ही श्रगर लेकर जीवनी लिखी जाय, तो वह किसी महान् तपरवी और पेराम्बरके जीवनसे कम मधुर श्रीर करुणारस प्लावित नहीं होगी। खैर, श्रमी अन तक कि सारी दुनिया मार्क्सकी चिकित्सा द्वारा स्वस्थ नहीं हो जाती, ऋाधी बची हुई मानवता मार्क्सके पथपर श्रारुद्ध होकर सुख-सतोष, निश्चिन्तता श्रीर सस्कृति-कलायुक्त जीवन

विताने नहीं लगती, तब तक उसके लिये मार्क्सका ज्ञान श्रीर व्यवहार (कर्म) ही श्रत्यन्त प्रिय श्रीर हितका होना चाहिये। भावी पीढ़ियाँ सारे विश्वमें मार्क्स के बनाये मार्गपर श्रारू हो सुखी जीवन विताते मार्क्स जीवनके इस तीसरे पहलूकी श्रीर विशेष ध्यान देगी, तब वह मार्क्सके करण्यसपूर्ण काव्यमय किन्तु वास्तविक जीवनको बड़े प्रेमसे पहुंगी।

१. ऋद्भुत प्रतिभा

मार्क्सने अपने आधे जीवनको इंगलैंडकी राजधानी लन्दनमें विताया। इंगलैंड लोभी और कंज्स विनयों का राज्य था, और जर्मनी, फांस और वेलिज-यम उसकी विनयाशाहीकी अपेद्धा अधिक उदार सामन्तशाही देश थे, लेकिन इन विनयोंने मार्क्सके प्रति अधिक मानवोचित वर्ताव किया था। दूसरी सरकारें मार्क्सके प्राणोंकी गाहक बन गई थीं। उन्हें कितने समय तक एक देशसे दूसरे देशमें मारा-मारा फिरना पड़ा। इंगलैंडकी बनियाशाही सरकारसे भी अधिक वहाँकी जनताको इसका अप देना चाहिये, क्योंकि यदि वह इतने उदार न होते, तो लन्दनकी विनया-सरकार शायद कुछ अनिष्ट करनेके लिये तैयार हो जाती। आगे हम देखेंगे, कि मार्क्सने इंगलैंडकी पूँजीशाहीकी निर्मींक आलो-चना करनेमें हिचिकिचाहट नहीं की दुनियाके बाजारोंकी लूट मालामाल इंगलैंडके में पूँजीरतियों और उनकी पत्तल चाटनेवाले मजदूर-नेताओंसे उनको कम आशा थी, कि वहाँ अदूर मविष्यमें क्रांति होनेवाली है, इसीलिये तुरन्त क्रांति लाने की हिस्से उन्होंने इंगलैंडमें काम नहीं किया। यह भी एक कारण था, जिससे इंगलैंडको सरकारको तुरन्त वैद्या कोई बहाना नहीं मिल सकत। था, जिससे वह मार्क्षको वहाँसे मगानेके लिये उतारू हो जाती।

प्रतिभात्रोंकी त्रवहेलना वर्गसमाजमें हमेशा ही होती त्राई है, विशेषकर उस प्रतिभाकी तो वहाँ कोई पूछ नहीं हो सकती, जो वर्गमेदकी जड़ कारनेके लिये त्रसत्ती हथियारोंका त्राविष्कार करती है। फाँस्ट्रके शब्दोंमें:

> जिन थोड़ोंने देखा समका और फिर, श्रज्ञानतासे श्रपने हृदयको पूरा खोल दिया,

श्रौर जनगयाको श्रपनी भावनाये दिखलाई, वह हमेशा बलिखंटे या सलेवपर मरे।

श्रपनी श्रात्माको बेचनेवाली या श्रपने चारों तरफ होते श्रांतिचारों श्रौर श्रत्याचारों के प्रति श्रॉख मूँदनेवाली प्रतिमाश्रोके लिये जीवन कंटकाकी महीं या। शासकवर्ग उन्हें सिरपर उठाने के लिये तैयार था। लेकिन, क्रान्तिकारी प्रतिमाय उनकी कृपा ही नहीं सहिष्णुतासे भी बचित थीं। १६ वीं शताब्दी ही नहीं, विल्क सारे इतिहासमें कार्ल मार्क्स जैसी प्रतिमा बहुत ही कम पैदा हुई। उन्हें कार्य-चेत्रमें पैर रखने के बाद एक दशाब्दी तक दूसरे संघर्षों के साथ गरीबी-से भी संघर्ष करना पडा। जब वह लन्दनमें निर्वासित जीवन विताने के लिये सपरिवार श्राये, तो जीवनकी वह कठोर विपत्तियाँ सामने श्राईं, जिनमे सबसे पहले मार्क्स श्रीर जेनीको श्रपनी कई सन्तानोंको बिल देनी पडी। साल मरकी कच्चीके मरनेकी घटना हम देख चुके हैं। वह केवल गरीबीकी बिल हुई, इसमें सन्देह नहीं। श्रसहा शारीरिक श्रीर मानसिक पीड़ाश्रोसे मरे जीवनको बिताते हुये मार्क्सन कैसे श्रपने श्रध्ययन, श्रनुसन्धान श्रीर श्राविक्कारोको जारी रक्खा, यह सोचकर श्राश्चर्य होता है।

मार्क्स चतुरस महापुरुष थे, बुद्धिके च्रेत्रमें भी एकागिता इनमें ख्रू नहीं गई थी। कितनी ही प्रतिभाये होती हैं, जिनकी महानतामें कोई सन्देह नहीं, लेकिन उनमे निरंतर काम करनेकी लगन और उत्साह नहीं होता, जिसके कारण वह मानवताके लिये वहुत काम नहीं कर पातीं। पर, मार्क्स जितने ही प्रतिमाशाली थे, उतने ही कठोर परिश्रमी भी। दिन ही नहीं रातसे मिनसार तक बैठे काम करना, दिसयों वरस तक दस-दस घंटे रोज ब्रिटिश म्युजियममें देश-विदेशके मानव-जीवनके हरेक पहलुत्रोपर लिखे गये अनमोल रेकाडोंकी घूलियोंको पोंछकर उन्हें तन्मय होकर अध्ययन करना विल्कुल अनहोनी सी वात मालूम होती है। लेकिन, मार्क्षके लिये वह अनहोनी वात नहीं थी। वह मानवताके सक्से अधिक उत्पीडित और सबसे अधिक सख्यावाले जनगणको बन्धनसे मुक्त करना चाहते थे। इस महान् कामके महत्वको बडी तीव्रतासे वह अनुमव करते और उससे भी कहीं खेदके साथ देखते थे। एक जीवन क्या

श्रगर उन्हें सौ जीवन भी मिलता. तो वह इसी काममें लगाते । मार्क्की प्रतिभा श्रीर तपस्या विफल नहीं गई, बल्कि कह सकते हैं, वह वहत जल्दी सफल हई. जब कि उनकी आँखोंके मँदनेसे चौंतीस साल बाद ही उनका ऋतुयायी वन पृथिवीके छठे भागने युगोंकी दासतासे मुक्ति पाई, श्रीर दो शताब्दियोंसे कुछ श्रीर श्रधिक बीतनेपर श्राधी मानवताने पुराने नर्कको ढाकर नये स्वर्गकी भव्य इमारत निर्माण करनी शुरू की । मार्क्का जीवन कर्ममय था । उन्होंने स्वयं कहा था, कि कम करनेकी अन्तमता किसी ऐसे मानवके लिये मृत्युदंड है, जो कि सचमुच पशु नहीं है। एक बार कई सप्ताह तक बीमार रहनेके समय उन्हों-ने एंगेल्सको लिखा था: यद्यपि मैं काम करनेके लिये जिल्कल असमर्थ हैं. नेकिन मैंने कारपेन्टरकी "फिजियालोजी" (शरीर शास्त्र) कोलिकेरकी "नेवेबेलेर" रपुर्जहाइमकी "ग्रानटोमी डेज हर्न्स उंड नेखेनसिस्टम" ग्रीर श्वान एवं श्लाइडेन-की "उइवेर डी जेलेन्श्मीरे" पढी । उनका मस्तिष्क शरीरके ऋस्वस्थ रहनेपर भी गम्भीर ग्रध्ययनको छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। वह इतना काम करनेमें इस-लिये भी समर्थ हुये, क्योंकि उनका शरीर लोहेका था, तभी तो वह इतने परिश्रम श्रीर विपदाश्रोंके वोक्तको बर्दास्त कर सका था। शरीर श्रीर बुद्धि दोनों-से इतने मजबूत पुरुष बहुत कम मिलते हैं।

लन्दनके इस समयके जीवनमें १८५१ ई० से करीव दस साल तक अमेरिकन पत्र "न्यूपार्क ट्रिन्यून" का पारिअमिक उनके लिये सबसे बड़ा सहारा था ।
आज तो पत्रोंकी आहक-संख्या आधे-आवे करोड़ तक पहुँचती है, इसलिये
ट्रिन्यूनकी उस समयकी दो लाखकी आहक-संख्या आजके लिये कोई असाधारण
वात नहीं । किन्तु, उस समय युक्तराष्ट्र अमेरिकाका वह सबसे बड़ा और शिक्तशाली अखवार था । उसके मालिकोंका फूरियेके समाजवादके साथ कुछ सहानुमृति भी थी, जिसमें कुछ कारण पत्रके अधिक जनप्रिय होने एवं अधिक पैसा
कमानेका ख्याल भी था । पत्र-मालिकोंने मार्क्यके साथ समभौता किया था,
कि वह प्रति-सप्ताह दो लेख लिख दिया करेंगे और ट्रिन्यून प्रत्येक लेखका दो
पोंड दिया करेगा । इस प्रकार उन्हें दो सी पोंड वार्षिककी आमदनीका एक
रास्ता निकल आया था । इसे कहनेकी तो आवश्यकता नहीं, कि उस समयके

मापदृष्टसे भी जिस तरहके लेख मार्क्स ट्रिब्यूनमें भेजा करते थे, उनके लिये यह पारिश्रमिक श्राय्यत श्रायांप्त था। पत्रका प्रकाशक डाना अपनेको फ्रिरेयेके समाजवादका अनुयायी मानता था, लेकिन एंगेल्सके अनुसार डानाका समाजवाद लोभ तथा निम्न-मध्यमवर्गकी ठारीसे बढ़कर कुछ नहीं था। वह मार्क्सके लेखोके मूल्यको जानता था, लेकिन मालिक होनेके कारण अपने वेतनभोगी सेवकको शोषित करनेसे अपनेको कैसे रोक सकता था। सबसे बुरी बात जो मार्क्सको असह्य थी, वह थी उनके लेखोंकी मनमाना कतर-ब्योत, श्रीर पसन्दान आने पर उन्हें रद्दीकी टोकरीमे फेक देना। पत्रकी ग्राहक-संख्याके कम होनेकी जरा भी संमावना होने पर डानाने पारिश्रमिक कम करनेमे भी श्रानाकानी नहीं की। जो देता भी था, वह भी सिर्फ उन्हीं लेखोंके लिये, जिन्हें वह छापता था। रदीकी टोकरीमें फेके उन लेखोंकी कोई कीमत नहों थी, जिनके लिखनेमे मार्क्सको ब्रिटिश म्युजियमकी पुस्तकों श्रीर दूसरी सामग्रीके श्रध्ययनमें दिनो लग जाते थे। एक बार तो तीन सप्ताह तक श्रीर कभी-कभी छ सप्ताह तक, जो भी लेख मार्क्स मेजते रहे, उन्हे रद्दीकी टोकरीमें फेका जाता रहा। "डी प्रेस" (वीना) जैसे जर्मन श्रस्वारोंका भी वर्ताव इससे बेहतर नही था।

१८५३ ई० में मार्क्स कुछ महीनोंकी शान्ति पानेकी वही लालसा रखते थे, जिसमें कि निश्चित हो वह अपने वैज्ञानिक अध्ययनको जारी रख सके: पर मालूम होता है, मुक्ते वह नहीं मिलनेवाली है। अखबारोंके लिये यह लगातार गांडूयोंको छ्रांटना मेरे लिये दुर्मर हो गया। चाहे तुम कितने स्वतन्त्र विचारोंके हो, लेकिन लेख तो अन्तमें अखबार और उसके पाठकोंके पास जाना है।... ऐसी स्थितमें ग्रुद्ध वैज्ञानिक कार्य करना बिल्कुल कठिन है। कुछ सालों तक डानाके लिये काम करनेके बाद एक बार उन्होंने लिखा या: "यह विल्कुल जुगु-प्सनीय है, कि ऐसे दिखकी मेहरबानीका नाज उठाया जाय, जोकि कुपा करके अपनी डोगीमे बैठानेके लिये सहमत है। दिखालयके मिखमंगोकी तरह हड्डी पीसकर उसका सूप बनाना जैसा ऐसे पत्रके लिये राजनीतिक लेख लिखना है, तो भी मुक्ते उसे परे परिमाण्यें करना पड़ता है।" मार्क्सने केवल सर्वहाराके दुःखों और चिन्ताओंका ही कालकूट बूंट दीर्घ काल तक नहीं पिया, विल्क आधुनिक

सर्वहाराकी तरह ही उनका भी मालिकों द्वारा शोषण होता रहा । उन्होंने कितना क्रष्ट सहा, यह एंगेल्स के नाम लिखे हुये उनके पत्रोंसे मालूम होता है: एक समय वह घरके भीतर बन्द रहनेके लिये मजबूर हुये, क्योंकि उनके पास बाहर जानेके लिये न कोट था न जूता। दूसरे समय उनके पास इतना पैसा नहीं था, कि लिखनेका कागज या ऋखतार खरीद सकें। फिर एक समय ऋपने लेखको प्रकाशकके पास भेजनेके लिये डाकके टिकटोंके वास्ते अपने परिचितोंके पास न्हाथ पसारे दौड़ना पड़ा । मोदी, सन्जीवाले, रोटीवालेका दाम ठीक समयपर चुकता न होनेसे उनकी भिड़क भी खानी पड़ती थी। उससे भी श्रमहा था, घरके मालिकका बर्ताव-जरा भी किराया बाकी रहता, कि वह उनको निकालकर सङ्कपर पटकनेके लिये तैयार हो जाता। ऐसी स्थितिमें यदि घरमें कमी थोड़ी कड़वाहट त्रा जाय, तो कोई ऋस्वामाविक वात नहीं थी। लेकिन, मार्क्षको चूसरे विद्वानोंकी तरह "कटही" बीबी नहीं बल्कि जेनी जैसी श्रनुपम देवी मिली थी, जो शायद ही कभी खीजती थी, श्रीर खीजनेपर भी तुरन्त श्रपनेको दोषी मान पतिको शान्त और संतुष्ट करनेकी हर प्रकारसे कोशिश करती थी। लेकिन, गरीबीमें परिवारका बोक्त बहुत मारी होता है, इसीलिये मार्क्सने अपनी नाय दी थी: जो लोग मानवताकी सेवा एकान्त मनसे करना चाहते हैं, उनके लिये विवाहसे बढ़कर कोई वेवकूफी नहीं हो सकती, क्योंकि इसके कारण उन्हें न्वैयक्तिक जीवनकी छोटी-छोटी चीजोंके लिये मरना-खपना पड़ता है। घरके श्रमानोंके लिये जेनी कभी शिकायत करती, तो मार्क्स हमेशा उसके पत्तका -समर्थन करते कहते, कि मेरी अपेन्ना तुम्हें अधिक कष्ट और अवर्णनीय न्त्रपमान, चिन्ता ग्रीर ग्राशंकाका सामना करना पड़ता है। मार्क्स तो दस-दस घंटे ब्रिटिश म्युनियममें गुजार देते ये, कभी श्रीर जगह भी जाकर मनबहलाव कर सकते थे, लेकिन जेनी तो कई बच्चोंकी माँ थी, जिनके भोलेभाले सूखे चेह--रोंको देखकर उसका कलेजा फटता रहता था। उसका भी अपना बचपन था। कितनी निश्चिन्तता ग्रीर श्रानन्दसे उसने उसे विताया था ? लेकिन अब वह न्त्रपने वन्चोंको उनसे सर्वथा वंचित देखती थी। दूसरे कितने ही राजनीतिक कमियोंकी तरह मार्क्स भी चाहते, तो स्रपनी इज्जतपर विना घटना लगाये बूर्जी-

लोगोंके कामोमें से एकको अपना सकते थे। लेकिन मार्क्सका कहना था: "चाहे जो मी हो, मुक्ते अपने लच्चका अनुसरण करना है। मै अपनेको वूर्जी-समाजकी पैसा कमानेवाली मशीन बनने नहीं दूँगा।"

वह सर्वथा मानव ये श्रीर जीवनके कर्ष्टोंको एक मानव-हृदयके तौरपर ही महसूस करते थे। श्रपने जिस पत्रमें श्रपने मित्र एंगेल्सको तुरन्त सिरपर पहें दुःखके पहाडके बोमका बहाँ वर्णन करते होते, उसी पत्रमें श्रागे चलकर वह उसे विल्कुल भूल जाते, जबिक वह श्रपने श्रनुसन्धान श्रीर जीवनके लच्यके बारेमें वर्णन करने लगते। श्रपने ५० वे वर्षको पूरा करते समय उन्होंने कहा या: "श्राधी शताब्दीका बोम्क मेरी पीठपर है श्रीर श्रब भी मैं श्रकिचन हूं!" एक जगह वह लिखते हैं, कि इस तरहके जीवनसे हजार पोरसा समुद्रके नीचे जाना वेहतर है, श्रीर दूसरे समय कहते हैं: मै श्रपने सबसे मयंकर शत्रके लिये भी नहीं चाहूँगा, कि वह ऐसा जीवन विताये। एक समय जीवनकी छोटी-छोटी चिन्ताश्रोने उन्हें इतना पीस दिया था, कि वह श्राठ सप्ताह तक श्रपना बीहिक कार्य करने लायक नहीं रह गये।

यह था पारितोषिक, जिसे जीवनमें उस श्रद्भुत प्रतिमाको तत्कालीन समाज दे रहा था।

२ श्रजुपम मित्रता

यदि मार्क्स प्रतिभाको लौहमय शरीर मिला था, जो कि असाधारण परिश्रम श्रौर कघ्टोंको सहन कर सकता था, तो उनको समाजमें एक बाहरी शरीर भी एगेल्सके रूपमें मिला था। "एक प्राया दो शरीर" या बहिश्वर प्राया" की कहावत इन दो मित्रोंपर बिल्कुल ठीक घटती है। उनके बौद्धिक कार्यों मे हाथ वॅटानेके लिये एंगेल्स जिस तरह तैयार रहते थे, श्रौर उसके लिये सच्म भी थे; उसी तरह उनके कघ्टोंको वॉटनेमे बढा आनन्द आता। एंगेल्सने एक तरह अपने सारे बौद्धिक और शारीरिक जीवनको इस मित्रतापर विल चढ़ा दी थी। दोनो मित्रोंके वीच लिखे गये हजारों पत्र इसके साची हैं। इतिहासमे इस तरहकी सर्वागीन अमिन्न मित्रता दूसरी कोई भी देखी नहीं जाती। इस

मित्रतामें किसी तरहके स्वार्थकी भावना न थी। मार्क्सको दुःख होता था, जब सोचते थे, कि एंगेल्स जैसा प्रतिभाशाली पुरुष सिर्फ मेरे लिये मन मारकर, त्रपनी प्रतिभाको वेकार करके व्यापारमें लगा हुआ है।

एंगेल्स कदमें लम्बे-चौड़े ब्लौंड (गौर) केशोंबाल थे। वह हमेशा अपनी पोशाक बिल्कुल बाकायदा पहनते थे। फौजी बारेक तथा आफ्रिसमें उन्होंने जो अनुशासनका जीवन विताया था, उसके कारण वह काममें सदा वहे मुस्तैद रहते थे। उन्होंने एक मर्तवे कहा था कि छ क्लकोंकी मददसे मैं शासन-प्रबन्ध को उससे कहीं अधिक योग्यता और सीधे-साधे ढंगसे चला सकता हूँ, जिसे कि साठ प्रीवी-कौंसिलर (राजामात्य) भी नहीं कर सकते—वह प्रीवी-कौंसिलर, जो ठीकसे लिख भी नहीं सकते, और जिनकी चिन्हारियोंकी सिर-पूँछका कोई पता नहीं लगा सकता। पिताके व्यापारके कारण व्यवसाय चेत्र उनका कार्यचेत्र बना था। वह मान्चेस्टर शेयर-बाजारके एक बहुत ही सम्मानित सदस्य थे। बूर्जि-वर्गके जीवनके ऊपरी वेषमूषाको उन्हें कायम रखना पड़ता था, यहाँ तक कि लोमड़ीके शिकार और बड़े-दिनकी पार्टियोंमें भी वह शामिल होते थे।

श्रिधिक समय नगरसे बाहर एक छोटेसे एकान्त बँगलेमें बीतता था, जहाँ वह ब्र्बी-समाजके घृणित वातावरणसे निकलकर शुद्ध हवामें साँस लेते श्रपने श्रध्ययन, मनन या लेखनमें लगे रहते।

मार्क्स गठीले और मजबूत शरीरके स्नादमी थे। उनका कद साधारणसे स्नाधिक ऊँचा और युरोपियन तुलनामें उन्हें साँबला कहा जा सकता था। उनकी स्नांखें चमकीली तथा काली थीं। इनके साथ घने कोयले जैसे काले बाल बतलाते थे, कि वह सामीय जातिके हैं। वह कपड़े-लत्ते या रहन-सहनमें बड़ी वेपवाही रखते थे, उनकी उन्हें जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि नगरके मद्र-समाजमें सम्मिलित होनेकी उन्हें स्नावश्यकता नहीं थी। उसके लिये समय भी नहीं निकल सकता था, क्योंकि स्नपने वौद्धिक श्रमके बाद मुश्किलसे थोड़ासा समय मिलता था, जब कि वह जल्दी-जल्दी शरीरकी गाड़ी चलानेके लिये कुछ प्रास स्नपने मुँहमें डाल लेते और फिर बहुत रात तक काममें जुट जाते। विचारणा उनके लिये परम स्नानन्दकी वात थी, विचार करते वह थकते नहीं थे। वह थे

भी तो परम विचारकोंकी श्रेणीमें । वह बडी प्रसन्तताके साथ हेगेलके वाक्योंको दोहराते : "एक गुग्छे का अपराधपूर्ण विचार करना स्वर्गके सभी आरचयोंसे कहीं उच्च और भव्य है।" लेकिन मार्क्स जिस विचारको निरन्तर किया करते, वह था कार्यको पूरा करना । छोटी-छोटी वार्तोमें विल्कुल व्यवहारपटु नहीं थे, लेकिन वडी वार्तोमें कहीं अधिक व्यवहारपटु थे । एक छोटेसे परिवारका चलाना उनकी शक्तिसे वाहरकी बात थी, लेनिक एक भारी सेनाको तैयार कर सारी दुनियाके रूपको बदलनेके लिये उसे लेकर आगे बदनेमे उनकी प्रतिमा अद्वितीय थी ।

मार्क्स और एंगेल्स दोनों कलमके घनी थे, दोनो हीकी श्रपनी श्रलग-श्रलग शैली थी, दोनों ही श्रद्भुत माषाविद् थे—उन्होने बहुतसी भाषाश्रों श्रीर बोलियोंपर श्रिषकार प्राप्त किया था। एंगेल्स बल्कि इस विषयमे मार्क्स मी श्रागे बढ़े हुये थे। एंगेल्सकी माषा बड़ी भावपूर्ण और सीघी-सादी होती थी। शब्दाडम्बरको वह पसन्द नहीं करते थे। वह बड़े सुगम श्रीर सुन्दर ढंगसे लिखते थे। उनकी लेखनीमें प्रवाह श्रीर प्रसाद दोनों पूरे रूपमे पाये जाते हैं। जिस तरह वह श्रपनी पोशाकके बारेमे बाकायदगी करते थे, वैसे ही वह लिखने में मी देखे जाते।

लेकिन, मार्क्स लिखनेमें उत्तनी सावधानी नहीं रखते थे। उनके दिमागके मीतरसे गम्मीर विचारोंकी इतनी प्रखर घारा छूटनी रहतो, जिसके कारण उनका लिखना मी सुगमतासे नहीं होता था। अपने पहलेके पत्रोमें, मालूम होता है, वह अपने विचारोंके प्रकट करनेके लिये शब्दोंके दूँदनेका मारी प्रयत्न कर रहे हैं। इगलैंड चले आनेके बादके पत्रोंमें तो उनकी शैली और मी दुरुह हो जाती है। अपने मानोको प्रकट करनेमें जर्मनमें लिखे पत्रोंमें मी वह अंग्रेजी या फेंच शब्दों और मुहाबरोंको वेधडक इस्तेमाल करते हैं। उनकी इतियोंमें आवश्यकतासे अधिक विदेशी शब्दोंकी मरमार देखी जाती हैं—उनमें अंग्रेजी और फेंचकी मात्रा-से बहुत अधिक पुट होती हैं। लेकिन जर्मन माजापर उनका इतना अधिक आविनकार था, कि उनके ग्रंथोंका मूलके मानोंको सुरिहत रखके दूखरी भाषांसे अनुवाद करना बहुत सुरिकल है। मार्क्स जिन ग्रंथोंके अनुवाद हिन्दीमें हुये हैं, वह

म्लतः जर्मनमें थे, उन्हें श्रॅंग्रेजीसे प्रत्यनुवाद किया गया है। दो भाषाश्रोंसे गुजर-कर हुआ अनुवाद मूलसे कितना मेद रखता होगा, इसे सहज समभा जा सकता है। इसके लिये यह जरूरी है, कि मार्क्सके ग्रंथोंका नीचे जर्मन भागासे हमारी भाषात्र्योंमें अनुवाद हो। मार्क्सके अँग्रेजी अनुवादोंके बारेमें एंगेल्सने स्वयं कहा है: जिन ऋनुवादोंकी पालिश स्वयं मार्क्सने बड़े ध्यानसे की थी, उनमें भी मूलकी त्रातमा बहुत विकृत हो गई है। मार्क्स उपमाश्रोंका प्रयोग त्रपनी भाषामें बहुत श्रधिक करते हैं। श्राखिर भाषा भावोंका वास्तविक चित्रण नहीं, वल्कि संकेत मात्र है। यह संकेत उपमा श्रीर उदाहरण द्वारा श्रिधिक तीवताके साथ किये जा सकते हैं, इसीलिये मार्क्स उनका बृहुत सफलतापूर्वक इस्तेमाल करते थे। लेकिन, वही उनके ग्रंथोंके भाषान्तर करनेमें सबसे बड़ी कठिनाई पैदा करते हैं। भाषा श्रीर भाव पुरुष श्रीर स्त्रीका सुखमय विवाह है, यदि विवाह दुखमय हुन्ना, तो जीवन फीका हो जाता है। भाषा श्रीर भावका सामंजस्य न रहनेपर लेखककी कृति कुरूप वन जाती है। मेरिंगने लिखा है: "मार्क्स सदा समस्यात्रोंको इस तरह पेश करते हैं, मानो वह ऋपने पाठकके लिये लाभदायक विचार करनेके लिये भोजन रख देते हैं। उनकी भाषा गहरे नीले सागरके ऊपर लहरोंकी कीडा जैसी मालूम होती है।"

एंगेल्स सदा मार्क्स प्रतिभाको अपनेसे श्रेष्ठ मानते थे, श्रीर सदा उनका अनुयायी रहनेकी इच्छा रखते थे। लेकिन, एंगेल्स मार्क्स केवल सहायक या भावानुवादक नहीं, विल्क उनके स्वतन्त्र सहयोगी थे श्रीर अपनी प्रतिभामें वह मार्क्स जैसे ही तथा योग्य भागीदार थे। अपनी मित्रताके आरम्भमें एंगेल्सने जितना मार्क्स पाया, उससे कहीं अधिक प्रदान किया। वीस सालकी गम्भीर मित्रताके बाद मार्क्सने स्वयं उनको लिखा था: "तुम इसे जानते हो, कि पहले तो मैं किसी तत्वपर धीरे-धीरे पहुँचता हूँ, श्रीर दूसरे यह कि मैं तुम्हारे कदमों-पर चलता हूँ।" इससे मालूम होता है, कि एंगेल्स किसी तत्वकी तहपर बड़ी जल्दी पहुँच जाते थे। मार्क्सको देरसे पहुँचनेका कारण यह था, कि वह द्वारमक दिल्का सर्वतोमावेन उपयोग करते हरेक बातको पद्म-विपन्नकी कसौटीपर कसते श्रागे किसी निष्कर्षको घोषित करनेके लिये तैयार होते थे। मार्क्सने

श्रपने जीवनमें किसी बड़े राजनीतिक निर्ण्यको तब तक नही किया, जब तक कि एगेल्ससे पूछ न लिया। इसीसे मालूम होगा, कि एगेल्स मार्क्की छाया नहीं थे, बल्कि दोनो यमल प्रतिमाये थी, जिनका उदाहरण हमे मार्क्स-एंगेल्सके उत्तराधिकारियों लेनिन श्रीर स्तालिनमे ही मिलती है।

राजनीतिक बार्तोमे खरा एगेल्सकी राय लेते, यद्यपि सैद्धान्तिक प्रश्नोमे वह एगेल्ससे कहीं ऋषिक कान्तदर्शी ये। मार्क्स ऋपने कामोंको कभी जल्दी या फुर्तीसे करनेके विरोधी थे। एगेल्सको इसके लिये अनकुस मालूम होता था। वह समस्ते थे, मार्क्स जो भी लिख देंगे, वह बहुमूल्य होगा और उसके जल्दी प्रकाशित होनेपर फल भी जल्दी प्राप्त होने लगेगा। उन्होने एक बार मार्क्सको लिखा था: "अपनी कृतिके बारेमें इतनी ऋषिक सावधानी मत रखिये। साधा-रण्य जनताके लिये वह हर तरहसे बहुत ही अञ्झी होगी। सबसे बडी बात यह है, कि इसे समाप्त करके प्रकाशित कर दीजिये। उसकी कमियोको जो आप देख सकेंगे, उनका पता गदहे किसी तरह भी नहीं पा सकेंगे। जिस तरह एगेल्स अपनी रायको इस तरह दोहराते रहते, मार्क्स भी उसी तरह उनके माननेसे इन्कार किया करते। दिन-प्रतिदिनके कामके लिये एगेल्स कही अधिक सच्चम ये। मार्क्सने एक बार उनके बारेमे कहा था: "एक बिल्कुल गमीर विश्वकोष्ट दिन या रातके किसी धंटेमे काम करनेके लिये तैयार, लिखनेमे तेज और शैतानकी तरह सकिय।"

१८५० ई० की शरदमें "नोए राइनिशे रिन्यू" के बन्द हो जानेपर लन्दन में दोनों मित्र एक नई योजना बना रहे थे। मार्क्सने दिसम्बर १८५३ में एगेल्स को लिखा: "श्रुगर हमने लन्दनमें श्रुप्रेजी सन्यवहार (पत्र-व्यवहार) का काम ठीक समय पर शुरू कर दिया होता, तो इफ समय तुम्हें मैनचेस्टरमें रहकर व्यवसायके जजालमे न पड़ना पडता श्रीर न मुक्ते कर्जोंके नीचे पिसना पडता।" एगेल्सने बापकी फर्ममें जाना ही पसन्द किया था, यद्यपि यह ख्याल करके कि श्रुत्कृल स्थिति होने पर मैं फिर उस "सारे व्यापार" को सदाके लिए छोडकर लिखने-पढनेके काममें लग जाऊँगा। १८५४ ई० के वसन्तमे एगेल्सने काम छोड़कर लन्दन जानेके लिए विचार मी किया, लेकिन मार्क्सी श्रार्थिक स्थिति-

को देखकर यह निर्ण्य करनेमें जरा भी त्रानाकानी नहीं की, कि मुक्ते त्रपने मित्र त्रीर उनके अनमोल कार्यमें सहायता करनेके लिए इस जूयेको वरावरके लिए त्रपने कन्धेपर रखना होगा। एंगेल्सने इस महान् त्यागका अन्तिम और पक्का संकल्प इसी समय किया।

त्रीग चलकर एंगेल्स श्रपने फर्ममें पार्टनर (भागीदार) वन गये, किन्तु त्रिमी वह फर्मके एक नौकर भर थे और चितना चाहते थे, उतनी मार्क्सकी सहायता नहीं कर पाते थे। लेकिन, पाँच पोंड और दस पोंड के नोट वह बराबर मार्क्सके पास मेजा करते थे। पीछे तो उनकी सहायतायें सी पोंडके नोटोंमें बराबर मैनचेस्टरसे लन्दन श्राया करती थीं। जय दोनों ही एक प्राण श्रीर दो श्रारि थे, तो मार्क्स या जेनीको उनसे श्रपनी स्थिति छिपाये रखनेकी कोई स्त्रावश्यकता नहीं थी। उस समय ये पत्र दिन-प्रतिदिन चलते उनके दुःख श्रीर चिन्ताके बाह्य प्रकाश थे, लेकिन, श्राज वह हमारे लिए सबसे ठोस ऐतिहासिक श्रिभिलेख हैं। मार्क्स जीवनकी छोटी-छोटी बातोंमें व्यवहारपद्ध नहीं थे, यह हम चतला श्राए हैं। इसके कारण भी कष्टोंकी परम्परा कम नहीं हो पाती थी। एक समय मार्क्सने समका, कि हमने परिवारकी स्थितिको ठीकठाक कर लिया, लेकिन वस्तुतः जेनीने चिन्ता न होनेके लिए कुछ उघारोंको छिपा रक्खा था। फिर एकाएक एक दिन, वह सामने चले श्राये, श्रीर फिर चिन्ता वढ़ चली। इसे मार्क्स श्रपने मित्र से कहते "स्त्रियोंकी बेवकूफी" जिन्हें हमेशा एक पगहेकी जरूरत होती है।

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसोंकी ही बिल देनेके लिये तैयार नहीं थे, बिल्क दिनमर के आफिस और शेयर-बाजारके कामसे चूर होकर जब वह शामको घर लौटते, तो फिर रातको बहुत देर तक "ट्रिच्यूनके" लिए मार्क्सके लेखोंको ठीक करते, क्योंकि मार्क्सका अंग्रेजी माथा पर उतना अधिकार नहीं था। सैनिक विज्ञान एंगेल्सका अपना विषय था, माथाओंके अध्ययनकी ओर भी उनकी विशेष रुचि थी, लेकिन वह "विद्या विद्याके लिए" के ख्यालसे नहीं, बिल्क जिस महान् कार्यके लिये उन्होंने अपना जीवन दे रक्खा था, उसमें उनका उपयोग था, इसीलिए वह उनके सदा गम्मीर विद्यार्थी बने रहे। जब उन्होंने

रूरी त्रादि स्लाव माषात्र्योंका पढ़ना त्रारम्म किया था, तो इसका कारण वतलाते हुए कहा था: हममें से कमसे कम एक आदमीको उन जातियोंकी भाषाओं. इतिहास, साहित्य श्रीर सामाजिक संस्थाश्रोका अध्ययन करना चाहिए, जिनसे हमें शायद जल्दी ही काम पड़े । इसी तरह सुदूर पूर्वके कामके लिए उन्होंने श्रारवी श्रीर फारसी पढी । श्रारवीकी चार हजार घातुश्रोंने उन्हें डरा दिया, लेकिन फारसी उनके लिए लड़कोका खेल थी श्रीर उन्होंने उसमे हाथ लगाते ही कह दिया, कि तीन सप्ताहमें मै इसपर अधिकार कर लुंगा। फिर वह जर्मानिक भाषात्रोंके ऊपर पड़े | उन्होंने उस समय लिखा था : "श्रव मै उलिफलस (गाय पादरी) में श्रॉखों तक डूब गया हूं । मुक्ते इस सौरी गाथिकको सचमुच ही बहुत पहले ही खतम कर लेना चाहिये था।...मुक्ते यह देखकर बहा आरचर्य होता है, कि मै इसे उससे कहीं अधिक जानता हूं, जितना कि मैं समभता था। एक श्रुच्छे दोषके सहारे दो हम्ते में सुमे इसके बहुत मीतर पहुँच जाना चाहिए। फिर मैं प्राचीन नार्डिक श्रीर प्राचीन सैक्सनकी श्रीर जाऊँगा, जिनके साथ सदासे ही मेरा कुछ परिचय था।" जन आयर्लैंडका प्रश्न उठ खड़ा हुन्ना, तो उनका ध्यान उसकी भाषा गैलिककी न्नोर गया। इन्टर्ने-शनलके युगमे अधिवेशनोंके उपय भाषात्रोका ज्ञान उन्हे बहा सहायक सिद्ध हुआ । इसीसे कोई कह उठा "एगेल्व वीस माषाएँ हुकता सकता है ।" जब वहत उत्तेजित हो जाते. तो एंगेल्सके त्रोलनेमे योबी-योबी हकलाहट आ जाती थी।

सैनिक विज्ञानके अध्ययन के अति जो उनका शौक था, इसके कारण् लोगोंने उन्हें "जेनरल" का नाम दे दिया था। सैनिकोंकी संयुक्त भावनाके वह प्रशासक नहीं थे और कहते थे, कि मीडका यह बहुत ही जुगुज्सनीय रूप है। उन्होंने यह भी कहा था: "ये सैनिक एक दूसरेसे विषकी तरह घृणा करते हैं, और जरा भी विशेषता होनेपर स्कूली लड़कों की तरह एक दूसरेके साथ ईर्ष्या करते हैं। लेकिन जहाँ तक असैनिकोका सम्बन्ध है, उनके विरुद्ध वह एक आद्मीकी तरह खड़े हो जाते हैं।" सैनिक विज्ञान और सैनिक संगठनका उन्होंने वड़े विस्तारके साथ गम्भीर अध्ययन किया था, सैनिक और नवीनतमसैनिक टेक्नीकको भी हृद्धगत की थी: प्रारम्भिक दाव-पेंच, मोर्चावन्दी, पुल-निर्माण, खाई खोदना, हर तरहके हथियारोंका इस्तेमाल, भिन्न-भिन्न प्रकारके हथियारोंका विवरण, सेनाके लिए सप्लाई (पूर्ति) व्यवस्था, अस्पताल-व्यवस्था तथा दूसरी बहुत सी बातोंका अध्ययन किया था। उन्होंने नेपियर (अंग्रेज) जोमिनी (फ्रेंच), क्लाउजेवित्ज (जर्मन) जैसे महान् सैनिक इतिहासकारोंके ग्रंथोंका भी आह्योपांत पारायण किया था।

इतनी प्रतिमा और योग्यता रखते हुये भी एंगेल्सने अपनेको पीछे रक्खा। वह इसे ही अपना सबसे बड़ा सौभाग्य मानते थे, कि चालीस वधों तक वह अपने प्रिय मित्र मार्क्सके साथ-साथ अभिन्न तौरसे रहे। मार्क्सके बाद एक दशाब्दीसे ऊपर दुनिया के मजदूर-वर्गके आन्दोलनमें उन्होंने अपनी प्रतिभाका पूरा इस्तेमाल किया, और इस वक्त वह विश्वके मजदूरोंके सवोंपिर नेता माने जाते थे।

३. भारत पर मार्क्स

"न्यूयार्क ट्रिट्यून" में मार्क्सने भारतके बारेमें जो लेख लिखे श्रीर एंगेल्स-के लिये लिखे पत्रोंमें भारतका जिस तरह वर्णन किया, उससे पता लगता है, कि मार्क्सका भारत-सम्बन्धी श्रध्ययन कितना गम्भीर था श्रीर भारतकी स्वतन्त्रता से वह कितने खिन्न तथा उसके भविष्यके प्रति कितने श्राशावान थे। इन्हें लिखनेमें मार्क्सने स्याही-कलम श्रीर जहाँ-तहाँसे सुनी-सुनाई बातें पर्याप्त नहीं समभी थी, बल्कि ब्रिटिश म्युजियममें श्रंग्रेजोंने जो सामग्री भारतके बारेमें जमा कर रखी थी, उसका पूरी तौरसे इस्तेमाल किया था।

श्राज भी हमारे यहाँ मौके-बेमौके गाँवके गणराज्य या पंचायती राज्यकी महिमा गाई जाती है, लेकिन उस गणराज्यकी क्या रूप-रेखा थी, इसका हमें पता नहीं है। मार्क्सने श्रपने २५ जून १८५३ के "ट्रिब्यून" में छुपे लेखमें पार्लियामेन्टमें पेश होनेवाली रिपोर्टंपर लिखा था:

(१) प्राम गणराज्य का स्वरूप—"गाँव भौगोलिक तौरपर देखनेपर कुछ सौ या हजार एकड़ श्राबाद या परती जमीनका हुकड़ा है। राजनीतिक तौर से देखनेपर वह कस्त्रा या संगठित नगर-सा मालूम होता है। उसके बाबायदा निम्न नौकर श्रीर श्राप्तसर होते हैं:

पटेल (या गॉनका मुखिया)—गॉनके कामोंका साधारण तत्वावधान इसके कपर रहता है। वह गॉनवालोंके कागड़ोंका फैसला करता, पुलिसकी देख-माल करता, श्रीर गाँनके मीतर कर नस्न करनेका काम करता है। यह काम ऐसा है, जिसे श्रपने वैयक्तिक प्रमान, न्यक्ति तथा परिस्थितिसे सूझम परिचयके कारण वह बहुत श्रच्छी तरहसे करनेकी चमता रखता है।

पटवारी (कर्यम्)---खेतों तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाली हर बातका लेखा रखता है।

चौकीदार—गॉवके जुमों, अपराघोंका सुराग लगाता है, श्रीर जानेवाले यात्रियोंकी रज्ञा करते हुए एक गॉवसे दूसरे गॉवमें पहुँचाता है।

प्रहरीका काम ज्यादातर गाँवके मीतरसे सम्बन्ध रखता है। उसके कामोंमें फसलकी रखवाली श्रौर उसके तौलनेमें सहायता देना है।

सीमापाल गॉवकी सीमाकी रला करता है, श्रीर विवाद होने पर उसके बारेमे गवाही देता है।

जलपाल तालान श्रीर नहरो की देख-माल करता है, श्रीर खेतीके लिथे पानी बॉटता है।

त्राह्मरा गॉवके लिये पूजा करता है। अध्यापक गाँवमें बच्चोको बालूके ऊपर लिखना-पदना सिखाता है। ज्योंतिषी साइत बतलाता है, ऋादि।

श्राम तौरसे ये नौकर श्रौर कर्मचारी हर गॉवके संगठन में मिलते हैं, लेकिन देशके किसी-किसी भागमें इनकी संख्या कम होती है, श्रौर ऊपर वत-लाये कर्जन्यों श्रौर श्रिषकारों में एक से श्रीवक एक ही श्रादमीके ऊपर होते हैं। श्रीर कहीं-कहीं उपरोक्त व्यक्तियों की सख्या श्रौर श्रिषक होती है। इस तरहकी सीधी-सादी सरकारके श्रधीन देशके निवासी श्रश्चात कालसे रहते चले श्राये हैं। गॉवकी सीमा शायद ही कभी बदली हो। यद्यपि कभी-कभी गॉवोंको चोट पहुँची, युद्ध, श्रकाल या महामारीने उन्हें बरबाद किया है, किन्तु वही सीमा, वही स्वार्थ श्रीर विक्त वही परिवार युगोंसे चलते श्रा रहे हैं। राज्योंके टूटने-फूटनेकी ग्रामीखों को कोई पर्वाह नहीं। जन तक गाँव श्रखंड है, तन तक उन्हें

इसकी चिन्ता नहीं, कि वह किस शासकके हाथमें हस्तान्तरित किया गया श्रथवा कौन उसका राजा बना—उसकी आ्रान्तरिक अर्थनीति श्रक्कृती बनी रहती हैं। पटेल श्रव भी गाँववालोंका मुखिया है श्रीर वह श्रव भी गाँवका छोटा मुंसिफ, मजिस्ट्रेट श्रीर कलेक्टर—लगान जमा करनेवाला है।

श्राजसे १०० वर्ष पूर्व, गदरसे चार साल पहिले "मारतमें बृटिश शासन" नामक श्रपने लेखमें "न्यूयार्क-ट्रिक्यून" २५ जून १८५३में उपरोक्त पंक्तियोंको उद्धृत करते हुये मार्क्सने लिखा था—"यह छोटा श्रचल सामाजिक संगठन श्रव बहुत श्रशोंमें नष्ट हो चुका या हो रहा है, किन्तु इसका कारण बृटिश कर-उगाहनेवाले श्रीर बृटिश सिपाही उतने नहीं हैं, जितने कि बृटिश माप-इंजन श्रीर बृटिश मुक्त-व्यापार।"

(२) प्राम गर्याराज्यके कार्या अकर्मण्यता—उसी सन्के १४ जूनके त्रपने एक पत्रमें मार्क्सने भारतके प्राम-संगठनके बारेमें एंगेल्सको लिखा था—

"एसियाके इस भागमें इस तरहकी जो गति-शून्यता—बाहरी राजनीतिक सतहपर जो लच्यरहित कुछ गति सी भले ही दिखलाई पड़ती हो—एक दूसरे पर अवलम्बित दो परिस्थितियोंके कारण है: (१) सार्वजनिक काम (तालाब, नहर आदिका बनाना) केन्द्रीय सरकारके जिम्में था, (२) इसके अतिरिक्त सारा साम्राज्य, कुछ थोड़ेसे शहरोंको छोड़कर, ऐसे गाँवोंसे बना है, जिनका अपना एक बिल्कुल अलग संगठन है, और उनकी अपनी एक खुद छोटी सी दुनिया है:

"ये कान्यमय गराराज्य, जो पड़ोसी गाँगोंसे सिर्फ अपने गाँगकी सीमाओं-की ही तत्परतासे रत्ता करना जानते थे, अन भी हालमें अंग्रेजोंके हाथोंमें आये उत्तरी भारतके कितने ही भागोंमें काफी सुरित्तत रूपमें पाये जाते हैं। मैं नहीं समक्तता, एसियाई निरंकुराताकी गित-सून्यताके मजबूत कारण ढूँढ़नेके लिये किसी और चीजकी जरूरत है।...अंग्रेजों द्वारा इन पुराने अचल रूपोंका तोड़ा जाना भारतके यूरोपीकरणके लिये आवश्यक बात थी। उगाहनेवाला अकेला इसमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता था। गाँवोंके अपने स्वावलम्बी स्वरूपको दूर करनेके लिए उनके पुराने उद्योग-धन्धेका बरबाद होना जरूरी था।" भारतीय मानव-समाजकी सहस्राव्दियोंसे चली आती इस तरहकी निश्चलता, प्रवाह-शून्यता—जो पहिली सदी तक पाई जाती थी—ही वह कारण है, जिससे भारतीय मानव ग्रामभक्तिसे उठकर देशभक्ति तक नहीं पहुँच सका और न सामूहिक तौरसे बाहरी दुश्मनोका मुकाबिला कर सका। इस ग्राम-पंचायतने शिलियोंको सहस्राव्दियों पूर्वके बस्लो रूखानियोंसे, किसानोंको हंसुओं फालोंसे चिपटा रहने दिया। शासकवर्ग जानता था, कि यह ग्राम-संगठन मारतीयका मर्म-स्थान है, वहाँ पर पड़ी चोटको वह सहन नहीं कर सकता, मुकाबिला किये बिना नहीं रह सकता, इसीलिये उसने उसे नहीं छेड़ा, जैसेका-तैसा रहने दिया और इसी पर मारतीय ग्रामीया बोल उठे—

कोउ नृप होइ हमे का हानी।

(वुलसीदास)

यदि वह भारतीय ग्राम्य-गण्राज्य पहले ही ट्रूटकर विस्तृत सगठनमे वद्ध हुन्ना होता, तो निश्चित ही साधारण जनता शासकोंकी निरकुशता का मुकाविला करने की ज्यादा चमता रखती, फिर जिस स्वेच्छाचारिताको हम भारतके पिछले दो हजार वर्षोंके इतिहासमें देखते हैं, क्या वह रह पाती ?

(३) सामाजिक परिवर्त्तनका श्रारम्म

(क) श्राक्रमणोकी क्रीड़ा-भूमि— यहलाव्दियों से भारतीय समाज मुक-प्रवाह नहीं, प्रवाह-श्रत्य नदीका छाड़न हो गया है। श्राक्षमी घार्मिक हिन्दू गगाकी छाड़नमें नहाना बुरा समसता है, वह उसके लिये मुद्दिक साथ स्नान, पुष्य छीननेवाला स्नान है। वैसे भी ऐसे पानीके पाससे गुजरनेपर नाक्षम सद्दिद की बू श्राने लगती है। भारतीय मानव समाज १६ वीं सदी तक ऐसा ही छाड़न या। उसे श्रपने पुराण्यनपर श्रिममान रहा। उसने बहते पानीके समाजमें लाने की श्रोर ध्यान तक नहीं दिया।

मार्क्सके शब्दोमे "सारे यहयुद्ध, विदेशी आक्रमण, क्रान्तियाँ, विजय, अकाल—चाहे जितने ही तीव और नाशकारी रहे हों, पर वह (भारतमें) सतहसे मीतर नहीं धुस सके।" चिस परिवर्तनसे दुनिया बहुत पहिले गुजर जुकी थी, भारतको उसे अपनाने के लिये मजन्र करना अंग्रेजोंका काम था। अंग्रेज उन विजेताओंकी भाँति भारतमें नहीं आये थे, जो भारतमें आकर भारतीय बन भारतके हो गये—वह यूनानियों, शकों, तुकों, मुगलोंकी भाँति हिन्दू नहीं बन गए। अंग्रेजोंमें पहिलेके विजेताओंसे अनेक विशेषतायें थीं। दूसरे विजेता विजेता जरूर थे, किन्तु साथ ही वह सभ्यतामें उस तलपर नहीं पहुँचे हुए थे, जिसपर हिन्दू पहुँच जुके थे; इसलिए इतिहासके सनातन नियमके अनुसार राजनीतिक विजेता विजित जाति की श्रेष्ठ सभ्यता द्वारा पराजित हो गये। अंग्रेज हिन्दू सभ्यतासे कहीं ऊँची सभ्यताके धनी थे, इसलिए हिन्दू विजित जाति उन्हें अपनेमें हजम नहीं कर सकते थे। पीढ़ियों तक वह यही कोशिश कर सकते थे, कि विजेताकी सभ्यतासे दूर-दूर रहे; लेकिन, यह मूढ़ हठ कितने दिनों तक चल सकता था शाज हम देख रहे हैं, भारतका वह पुराण्यन कितना हटता जा रहा है।

(ख) श्रंग्रेज विजेताश्रोंकी विशेषता—एक श्रीर वात भी है, श्रंग्रेज-भारत में श्रंग्रेज राजवंश कायम करने नहीं श्राथे थे। विजय करके भारतके शासनको पहले-पहल श्रपने हाथ-में लेनेवाला कोई राजा या उसका सेनापित नहीं था; वह तो था ऐसे सौदागरोंका गिरोह, जो श्रपनी पूँजीपर श्रधिक सुधिक सुनाफा कमाना चाहते थे। यह त्रिलकुल ही नई तरहकी विजय थी, जिसमें विजेता राजवंश स्थापित नहीं करना चाहता था। ईस्ट इंडिया कम्पनी चाहती थी, श्रीर भारतपर इसलिए शासन कर रही थी, कि वह श्रपने भागीदारोंको श्रधिकसे श्रधिक नफा वाँटे। इससे श्रीर श्रधिक वर्द कोई उसका मतलव था, तो यही कि भारतसे श्रधिकसे श्रधिक श्रंग्रेजोंका मरण-पोषण हो। यह काम सुगलों श्रीर शकोंकी कर उगाहनेकी नीतिसे नहीं हो सकता था। सुगलों-शकोंके श्रपने खर्चके लिए लिया भी रुपया फिर भारतमें ही जीवनोपयोगी चीजोंके खरीदनेमें बँट जाता था, इसलिए वह एक तरहसे देशके भीतर विनिमयके रूपमें चक्कर काटता रहता था। श्रंग्रेजों द्वारा एक बार ली गई सम्पत्ति फिर लीटकर यहाँ श्रानेवाली न थी। इसके लिए जरूरी था, कि श्रंग्रेज स्वदेशी हो गए विजेताश्रोंसे धनका ज्यादा शोषण करें।

संच्चेपमें श्रंग्रेनोंको श्रपने सारे शासकवर्ग-पूँजीपित वर्गके स्वार्थके लिए मारतका दोहन करना था—पहिले व्यापारसे, फिर व्यापार श्रौर शासनसे, फिर व्यापार, शासन श्रौर पूँजीवादीय शोषण् (कच्चे-पक्के मालके क्रय-विक्रय) से । इस मारी शोषण्में ग्रामीण्, गण्राज्य वचाया नहीं जा सकता था; चाहे उसका कवित्वमय रूप तत्कालीन श्रौर श्राधुनिक कितने ही मानुक व्यक्तियोको बहुत श्राकर्षक मालूम होता रहा हो, श्रौर कौन सा श्रतीत है, जो श्राकर्षक नहीं होता !

(ग) अंग्रेजी शासनका परियाम—सामाजिक क्रान्ति—हॉ, वो हचारों वर्षोंके इस मारतीय छाडनके लिये ॲंग्रेजोंने जो सबसे बडा काम किया, वह था उसका वॉघ तोड़ना। उन्होंने भारतीय चर्लेंको तोड डाला, पुराने कर्षेको त्रिदा कराया, ऋपने यहाँ ऋौर यूरोपसे भी पुराने चलाँ-कघाँको निकाल बाहर किया, फिर गगाको उलटी बहाया और मार्क्क शब्दोमे "कपासकी मातृभूमिर्मे कपासके कपडोंकी बाढ़ ला दी। १८१८ से १८३६ ईं० में ग्रेट ब्रिटेनसे मेजा जानेवाला कपटा ५२०० गुना वढ़ गया। १८३० ई० मे भारतमें स्राया ॲप्रेजी मखमल मुश्किलसे दस लाख गज था। लेकिन, इसके साथ ही ढाकाकी श्रावादी डेद लाखसे बीस हजार रह गई । श्रपने शिल्पोंके लिये जगद्विख्यात भारतीय नगर ही नहीं बर्बाद हो गये, बल्कि बृटिश माप श्रीर विज्ञानने सारे हिन्दुस्तान में कृषि श्रौर शिल्प-उद्योगके मेलको जब-मूलसे उखाड फेका ।...भारतके परि-वार-समुदायका आघार था घरेलू उद्योग-हाथकी क्लाई, हाथकी बुनाई, खेती-मे हाथकी जुताई—जिससे वह स्वावलम्बी बना हुआ था। ऋँग्रेजोंके भीतर दखल देनेका क्या फल हुआ ?—उसने कातनेवाले को लंकाशायरमे ला रखा, श्रीर जुलाहेको बगालमे, या हिन्दुस्तानी कमकरो श्रीर जुलाहो दोनो ही का सफाया कर दिया । इन छोटे-छोटे अर्ध-नर्वर, अर्ध-सम्य-समुदायोको उनकी आर्थिक नीवको उडाकर, ध्वस्त कर दिया, श्रीर इस प्रकार सबसे वडी, श्रीर सच पूछिये तो एसियामे कमी भी न सुनी गई, एकमात्र सामाजिक क्रान्तिको पैदा किया।

(घ) ध्वसात्मक काम जरूरी—आज, मनुष्यका हृदय खिल जरूर होगा, जबिक वह इन अगिनत पितृसत्ताक शान्तिपूर्ण सामाजिक संगठनोंको इस प्रकार तितर-वितर हो .. विखरते देखता है, उन्हें कध्येंके समुद्रमें फेंके जाते, श्रीर श्रवयवोंके साथ ही श्रपनी सम्यताके पुराने रूपका खोते देखता है। हमें भूलना नहीं चाहिये, यह काव्यमय ग्राम्य-संगठन, चाहे देखनेमें कितने ही मास्म जान पड़ें, लेकिन यही सदासे पूर्वी स्वेच्छाचारकी ठोस बुनियाद रहे हैं। इन्होंने मानव-मस्तिष्कको छोटे-से-छोटे दायरेमें बन्द रसखा, श्रीर मिथ्या-विश्वासकां चुप-चाप मान लेनेवाला हथियार बना उसे पुराने नियमोंका गुलाम बनाया, श्रौर उसे सभी महान ऐतिहासिक (इतिहासकी प्रगतिसे उत्पन्न) शक्तियोंसे वंचित रक्खा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये, कि एक तुच्छ छोटी सी जमीनकी हुकड़ीमें केन्द्रित वार्वरिक ममता साम्राज्योंके ध्वंस, अकथनीय नृशंसताके नग्न-नृत्य, वहे-वहे शहरोंकी जनताकी हत्याका कारण हुन्ना |.... हमें नहीं भूलना चाहिये, कि इस अपमानजनक, कीड़े-मकोड़ोंके मुद्दी जीवन, निजींवसे। अस्तित्व-ने, ग्रपने विरुद्ध, जंगली, निरुद्देश्य, सत्यानाशी ग्रसीम शक्तियोंको उत्तेजना दी, श्रीर खुद मनुष्य-हत्याको हिन्दुस्तानमें घामिक कृत्य वना दिया। हमें नहीं भूलना चाहिये, कि मारतकी यह छोटी-छोटी जमातें जाति-भेद श्रीर दासताके रोगमें फॅसी हुई थीं । उन्होंने मानवको ऊपर उठा परिस्थितियोंपर विजयी बनने-की जगह बाहरी परिस्थितियोंका गुलाम बनाया. उन्होंने स्वयं विकसित होने-वाली सामाजिक स्थितिको अपरिवर्त्तनशील रख प्रकृतिके हाथकी कठपुतली बना दिया, इस प्रकार प्रकृतिकी पाश्चिक प्रजाको स्थापित किया, और प्रकृतिके राजा मानवका इतना श्रघःपतन कराया, कि वह बानर हनूमान् श्रीर कपिला गायकी पूजामें घटने टेकने लगा।

यह सच है, कि हिन्दुस्तानमें इंगलैंड जो सामाजिक क्रांति ला रहा है, उसके पीछे एक बहुत ही नींच उद्देश्य छिपा हुआ है। किन्तु, सवाल यह नहीं है, सवाल तो है—क्या एसियाकी सामाजिक स्थितिमें क्रांति लाये विना मानवजाति श्रपने ध्येयको पूरा कर सकती है शश्रा नहीं, तो इंगलैंडने चाहे जो भी श्रपराध किया हो, किन्तु उक्त क्रान्तिको लानेमें उसने इतिहासके श्रमजाने हथियारका काम किया।

एक पुरातन जगत्के ट्र-फ़्रकर गिरनेका दर्दनाक नजारा चाहे जितनी भी

कदुता हमारे व्यक्तिगत भावोंमें पैदा करे, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टिसे देखनेपर हमें गोययेके शब्द याद श्राते हैं—

इसका हमें सोच करना क्या लिष्साका स्वमाव ही ऐसा, बढती चले अयास, श्रीर नहीं क्यो तैमूरी तलवार बनाती कोटि जनोंको क्रूर कालका प्रास ?

(४) भारतीय समाजकी निर्धेलताये—११० वर्ष हो गये, जबिक २५ जून १८५३ ई० मार्क्सकी यह पितयों पिहले पहल प्रकाशित हुई। इनकी पढ़नेसे मालूम होता है कि इतनी दूर बैठकर ज्ञानके साधनोंके बहुत श्रभावके होते भी उनकी पैनी दृष्टि भारतीय समाजकी सतहसे मीतर कितनी घुस सकी थी। उन्होंने क्रूरताके साथ हमारे उस छुटते सोनेके गढके लिये दो श्रांस, बहाना काफी नहीं समक्ता, बिक बतलाया कि हमारा उस दयनीय दशाका कारण क्या है। उन्होंने यह भी बतलाया, कि उस पुरानी सामाजिक व्यवस्थाको नष्ट होनेसे बचानेकी जरूरत नहीं है, जैसा कि कुछ पहिले गाँधी श्रीर श्रव गाँधी-वादी मावे श्रीर जयप्रकाश दिलसे या दिखावेके लिये कह रहे हैं, बिक उससे एक प्रवाहशील उन्मुक्त समाजके निर्माणका जो श्रवसर मिला है, उससे हमें लाम उठाना चाहिये।

उपरोक्त लेखसे डेढ महीने बाद, प्रशास्त १८५३ को "न्यूयार्क ट्रिट्यून" में मार्क्यका "मारतमें वृटिश-शासनके होनेवाले परिणाम" नामसे दूसरा लेख छुमा। जिसमें उन्होंने मारतीय समाजके मविष्यपर प्रकाश डाला, यहाँ उसके कुछ, उद्धरण दिये जाते हैं—

क्या बात थी, जिसके कारण भारतपर ऋँग्रेजोका प्रमुत्व स्थापित हुआ ? मुगल स्वेदारोंने मुगल शासन-केन्द्रको तोडा। स्वेदारोंकी ताकतको भराठोने तोड़ा। मराठोंकी ताकतको अफगानोंने तोडा। और जब यह सभी सबके खिलाफ, लड रहे थे, तब ऋँग्रेज दौड़ पड़े, और वह सबको दबानेमें सफल हुये। भारत वह देश है, जो हिन्दू-मुसलमानोंमें ही बॅटा नहीं है, बल्कि वह कबीलों-कबीलों जातों-जातोंमें बॅटा हुआ है। उसके समाजका ढाँचा एक तरहके ऐसे संवुलनपर आधारित था, जो उसके सभी व्यक्तियोंके बीच साधारण विखराव और मनमुखी-पनका परिणाम था। इस तरहका देश, इस तरहका समाज, क्या पराजित होनेके किये ही नहीं बना था ? चाहें हिन्दुस्तानके अतीत इतिहासको हम न भी जानते, किन्तु, क्या यह एक जबर्दस्त अविवादास्पद बात नहीं है, कि इस द्वाण भी भारत अँग्रेजोंकी गुलामीमें भारत-खर्चंपर रखी एक भारतीय सेना द्वारा जकड़ा हुआ है। फिर, मारत पराजित होने से बच कैसे सकता था ? उसका सारा अतीत का इतिहास अगर कोई चीज है, तो लगातार पराजयोंका इतिहास है, जिनसे कि वह गुजरा है। भारतीय इतिहास कम-से-कम ज्ञात इतिहास, कोई इतिहास नहीं है। जिसे हम उसका इतिहास कहते हैं, वह उन्हीं लगातार आनेवाले आक-मण्कारियोंका इतिहास है, जिन्होंने निष्क्रिय अपरिवर्त्तनशील समाजकी निश्चेष्टताकी मददसे अपने साम्राज्य कायम किये...।

(क) श्रॅंगेजी शासनके दो काम—"भारतमें श्रॅंगेजोंको दो काम पूरे करने हैं—एक ध्वंसात्मक, दूसरा पुनरुज्जीवक—पुराने एसियाई समाजका ध्वंस श्रीर एसियामें पाश्चात्य समाजका भौतिक शिलान्यास।

अँग्रेजोंने देशी (ग्राम्य) समाजको तोड़कर, देशी उद्योग-धन्धेको जड़-मूल-'से उलाड़कर देशी समाजमें जो कुछ महान और उच्च था, उसे जमीनके बरा-नर करके, अपने ध्वंसात्मक कामको पूरा किया । ध्वंसोंके ढेरमें पुनरुज्जीवनका काम आज मुश्किलसे दिखलाई पड़ता है, तो भी वह आरम्म हो गया है ।

"त्राज महान् सुगलोंके शासनसे भी ज्यादा संगठित श्रीर विस्तृत भारतकी राजनीतिक एकता पुनरुजीवनके लिये सबसे पहली श्रावश्यक चीज है। श्रियंजी तलवारके द्वारा जबर्दस्ती लादी गई यह एकता श्रव विजलीके टेलीग्राफ द्वारा श्रीर मजबूत तथा चिरस्थायी बनाई जायगी। परेड सिखानेवाले श्रियंज सर्जेन्ट द्वारा संगठित श्रीर शिच्तित देशी सेना भारतकी स्वतः मुक्तिके लिये तथा पहिले ही श्रानेवाले विदेशी श्राक्रमण्कारीका शिकार बननेके लिये श्रावश्यक साधन है। स्वतंत्र प्रेस—जिससे छः एसियाई समाज पहले-पहल परिचित हुश्रा है, श्रीर जिसका प्रवन्ध मुख्यतः हिन्दुश्रों श्रीर यूरोपियनोंकी सम्मिलित सन्तानोंके हाथमें है—पुनर्निर्माण्के वास्ते एक नया श्रीर बहुत ही शक्तिशाली हथियार है।...भारतीयोंमेंसे संख्यामें कम ही सही कलकक्तामें श्रुग्रेजोंकी देख-रेखमें

शिक्षा पाकर एक ताजा वर्ग उत्पन्न हो रहा है, जो कि शासन-संचालनकी कला-में निपुण श्रोर यूरोपीय विज्ञानसे श्रमिज्ञ है। मापने मारतका यूरोपसे यातायात नियमित श्रीर द्रुत कर दिया है, उसके प्रधान बन्दरगाहोंको इंगलैंडके दक्खिन-पूर्वके बन्दरगाहोंके साथ जोड़ दिया है, श्रीर उसकी उस श्रलग-थलगपनकी स्थितिको हटा दिया है, जो कि उसकी प्रवाह-शून्यताका कारण थी। वह समय दूर नहीं, जबकि रेलों श्रीर वाष्पपोतोंकी सम्मिलित सहायतासे इंगलैंड श्रीर भारतके बीचकी समयमें नापी जानेवाली दूरी घटकर श्राठ दिन रह जायेगी, श्रीर जब कि गाथाश्रोंमें सुना जानेवाला यह देश, इस प्रकार यथार्थतः पाश्चास्य जगत्का एक माग बन जायगा।

(ख) स्त्रार्थसे मजबूर—"ग्रेट-बृटेनके शासक्वर्गका अन्न तक भारतकी प्रगतिमें सिर्फ आकृष्टिमक चलता-फिरता एक खास तौरका स्वार्थ था। सामन्तवर्ग भारतको जीतना चाहता था, थैलीशाही उसे लूटना चाहती थी, और मिलशाही सम्बन्धी गलाकष्टी कर रही थी। लेकिन, अन्न अनस्था बदल गई है। अन्न मिलशाही (पूँजीवाद) को पता लग गया है, कि मारतको उत्पादक देशमें परियात करना उसके लिये एक आवश्यक नात है, और इसके लिये यह जरूरी हो गया है, कि मारतके पास सींचने और मीतरी यातायातके साधन प्रस्तुत किये जायें। अन्न मिलशाही सारे भारतमे रेलोंका एक जाल निछाना चाहती है। अग्रेर वह ऐसा करके रहेगी।...

मै जानता हूं, अंग्रेज मिलशाही मारतमें रेले विर्फ इसलिये त्रिद्धाना चाहती है, कि कम खर्चमे कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंके लिये प्राप्त कर सके। लेकिन, जब एक बार ऐसे देशमें मशीनरी तुमने चला दी, जहाँपर लोहा और कोयला है, तो उनके निर्माण (उद्योग) से तुम उसे रोक नहीं सकते।...मारतीयोंकी मानसिक योग्यताके बारेमें केम्बेलको माननेके लिये बाध्य होना पड़ा कि भारतीयोकी वडी-बडी संख्या एक वडी श्रीद्योगिक शक्ति रखती है, वह पूँजी जमा करनेकी ल्मता दिमागमें गणित-जैसी सम्ब्दा, श्राकडों श्रीर पक्के विज्ञानके योग्य विचित्र प्रतिमा रखती है। स्थापित होनेवाले श्राधु-निक हगके उद्योग-धन्से उस खान्दानी अम-विमागको उठा देंगे, जिसके ऊपर

भारतीय जात-पाँत ग्राश्रित है, ग्रौर जो कि भारतीय प्रगतिमें निश्चय ही जन-र्दस्त नाधा है।

श्रॅंग्रेजी बूर्जा (पूँजीवादी), जो कुछ भी करनेके लिये मजबूर होंगे, उससे न जनता मुक्त होगी, श्रौर नहीं वह उसकी सामाजिक श्रवस्थाको श्रार्थिक तौर-से सुधारेगा।...क्या पूँजीवाद (बूर्जाजी) ने कभी भी ऐसी कोई प्रगति होने दी, जिसमें व्यक्तियों श्रौर जनताको खून श्रौर कूड़े-कर्कटमेंसे, कष्ट श्रौर श्रधः-पतनमें से न घसीटा गया हो ?

(४) भविष्य उज्ज्वल—ग्रॅंग्रेज-बूर्जा भारतीयों के बीच समाजके जिन नवीन तत्वों को रहे हैं, उनके फलका उपमोग भारतीय तब तक नहीं कर सकेंगे, जब तक खुद ग्रेट-बूटेनमें श्राजके शासकवर्गको हटाकर कारखानों के सर्वहारा श्रागे न श्रा जायें, श्रथवा हिन्दू खुद ही इतने मजबूत हो जायें, कि श्रॅंग्रेजी जूयेको उतार फेंकें। चाहे कुछ भी हो, कम या बेशी सुदूर कालमें यह जरूर देखनेमें श्रायेगा, जबिक उस महान् श्रीर मनोहर देशका पुनरुज्जीवन होगा... जिसके कोमल प्रकृतिवाले निवासियोंको...श्रधीनता-स्वीकृतिमें भी एक तरहका शान्त स्वाभिमान है, जिन्होंने श्रक्षमैर्यताके रहते भी श्रपनी बहादुरीसे श्रॅंग्रेज श्रप्तरोंको चिकत कर दिया, जिनका देश हमारी जबानों, हमारे धर्मोंका स्रोत रहा, श्रीर जो श्रपने जाटोंमें प्राचीन जर्मनों श्रीर श्रपने बाह्मणोंमें प्राचीन यूनानियोंके प्रतिनिधि हैं।

श्रध्याय १२

यूरोपीय स्थिति (१८५३-५८ ई०)

जिस वक्त मार्क्स विलिचके लडकपन जैसे कामके विरुद्ध लिख रहे थे, उसी समय यूरोपीय राज्योमें एक जबदेंस्त संघर्ष उपस्थित हुन्ना । रूसी जारकी शक्तिसे भयमीत होकर फास और इंगलैयडने अपने भेदभावको भूला जारको खर्व करनेका निश्चय कर लिया। जारशाही काकेश्स, क्रिमिया श्रीर दन्युवकी भूमिमें पैर पसारते हुए तुर्की सूमिको दवा रही थी। क्रिमियाका शासक सुल्तान के ऋघीन था। तुर्की अब इतना निर्वल हो गया था, कि जारशाहीका मुकाबिला नहीं कर सकता था। खतरा पैदा हो गया या, कि कहीं रूसी भालू कालासागरको अपनी भील न बना ले । सुल्तानके हारपर हार खानेको देखकर दोनों पश्चिमी वडी शक्तियोंको सीचे जारशाहीके विरोधमे खडा होना पडा । लेकिन जारशाही केवल पश्चिमी पूँजीवादी राष्ट्रोके लिए खतरेकी ही चीज नहीं थी, बल्कि वह प्रति-कियावादियोंका सबसे वही समर्थक श्रीर पोषक थी। हुंगरीमें क्रान्तिको श्रसफल करानेमें रूसका हाँय या, प्रशिया यंकर भी जारशाही बलपर फ़दक रहे थे। ऐसे सामन्तवादी शक्तिशाली राज्यको यदि सर्वहारा-क्रान्तिके समर्थक मार्क्स श्रीर एंगेल्स फूटी निगाहसे न देखते हों, तो श्राश्चर्य क्या ! सर्वहारा-क्रान्ति किन परिस्थितियोंमें श्रीर कैसे देशमे होगी, इसके बारेमें मार्क्षके विचार बिल्कल ठीक थे, लेकिन उन्हें यह समम्मनेमें गलती हुई, कि उन्हींके सिद्धान्तोंके अनुसार प्ॅजीवादकी कडी सबसे निर्वेत फास और इंगलैंडमे नहीं, विलक रूसमें सिद्ध होगी, श्रीर वहाँके सर्वहारा तथा उनके नेता श्रिषिक कर्मठ श्रीर दूरदर्शी सिद्ध होंगे । मार्क्सको इस वक्त जीविका चलानेके लिए "ट्रिक्यूनको" लेख लिखते रहना पढता था, जिसके लिए विश्वकी किसी महत्वपूर्ण घटनाके तह तक पहुँचनेके लिए उन्हें वृटिश म्युजियमकी पुस्तकों के पन्ने उलटना पड़ता था। ग्रमी हम देख चुके हैं, कि उन्होंने इन पन्नोंके बलपर भारतकी स्थितिके बारेमें

क्या समभा था। जर्मनीमें जो क्रांति और प्रति-क्रांति हुई थी, उसके बारेमें कितने ही लेख ट्रिट्यूनमें मार्क्षके नामसे छुपे थे, लेकिन मार्क्ष श्रीर एंगेल्सके श्रापसी पत्रों द्वारा यह मालूम है, कि उनके लेखक एंगेल्स थे। चार बड़ी जिल्दोंमें छुपे मार्क्स ऋौर एंगेल्सके पत्र-व्यवहार पुस्तकों द्वारा लिखित ऋौर त्रालिखित सामग्रीपर कितना प्रकाश डालते हैं, इसे कहनेकी त्रावर्यकता नहीं। "ट्रिब्यूनके" लिये लिखे गए बहुतसे लेख छुपे नहीं, श्रीर बहुत सी सामग्रीको मार्क्स प्रकाशनार्थ पूरी तौरसे तैयार नहीं कर पाए थे। यह सामग्री तन तक गुमनाम पड़ी रही, जब तक कि मार्क्सवाद दुनियाके छठे हिस्से रूसमें शासक नहीं वन गया, ग्रीर वहाँ "मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठान" के नामसे एक बड़ी संस्थाने इस सारी सामग्रीको कई जिल्दोंमें प्रकाशित नहीं कर दिया। उनके लेख "राइनिशे जाइटुंग", "नोये राइनिशे जाइटुंग", "नोये राइनिशे रिव्यू", "न्यूयार्क द्रिन्यून" आदि एक दर्जनसे अधिक पत्र-पत्रिकाओं में विखरे पहें थे, जिनको मास्कोके उक्त प्रतिष्ठानने सुसम्पादित करके प्रकाशित किया। "नीये राइनिशे जाइट्रंग'' ने श्रपनेको दास बनानेवाली जारशाहीके प्रतिपोलोंके राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्षका समर्थन किया, फिर इतालियन स्त्रीर हुंगेरियनके स्वतंत्रता-त्रान्दोलनमें भी उसी तरह खुलकर उनका पच्च लिया, श्रीर साथ ही यूरोपीय प्रतिक्रांतिके सबसे जबर्दस्त दुर्ग रूसी जारके खिलाफ अपने भावोंको खुलकर कहा । यद्यपि, पीछे जन मालूम हुन्न्रा, कि इंगलैंड सबसे ज्यादा शक्ति-शाली प्रतिक्रियावादी राज्य है, तो उन्होंने इस वातकी घोषणाकी कि इंगलैंडकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेके लिए एक विश्वयुद्धकी ग्रावश्यकता है। विश्वयुद्ध होके रहेगा, इसे वह साम्राजी विस्तारसे जानते थे, ग्रौर वह उनके मावसीके लीलासंवरणके ३१ वर्ष वाद हुन्ना भी । प्रथम विश्वयुद्धके परिणामस्वरूप वृटिश साम्राज्य निर्वल जरूर हो गया, लेकिन उतना नहीं कि वह छिन्न-भिन्न हो जाए । उस समय भारत जैसे उसके दास देश ग्रामी राजनीतिक चेतनामें इतने ऋागे नहीं बढ़े थे, कि वृटिश साम्राज्यकी इस कमजोरीसे फायदा उठा अपनेको स्वतंत्र कर लेते । लेकिन, श्रन्तमें पहले नहीं तो दूसरे विश्वयुद्धने इगलैंडको श्रत्यन्त निर्वल करके उसके राज्यको छिन्न-भिन्न करनेमें सफलता पाई। मार्क्स समयके

बारेमें, वर्षोंके गिननेमें गलती कर सकते थे, लेकिन घटनाश्चोंके निदानमें वहः कभी चूक नहीं करते थे।

क्रिमियाके युद्धके समय मार्क्सने "एंग्लो-रूसी दासता" को सबसे वही दासता श्रीर सर्वहारा-क्रातिके लिए सबसे बडी बाघा कहा था। यूरोपकी प्रति-कातिमे अपनी थूथुन धुसेबकर जारशाहीने जो अपूर्व प्रमुख श्रीर शक्ति प्राप्त की थी, क्रिमियाके युद्धसे उसके कमजोर होनेकी आशा मार्क्स कर रहे थे। लेकिन इसका यह मतलव नहीं, कि जारशाहीके शतुत्रों-फ्रांस श्रीर इगलैंडको वह शक्तिशाली देखना चाहते ये। लाखों आदमी और करोड़ों पौंड इस युद्धमें खर्च हुये, लेकिन जहाँ तक पश्चिमी पॅजीवादी शक्तियोंका सम्बन्ध था, उनकी इस युद्धसे श्रिविक श्रॉच नहीं श्राई, हॉ जारशाहीका मनस्त्रा कुछ दिनोके लिये कुंठित जरूर हो गया । सेवेस्तापोलका दुर्ग महीनों इंगलैंड श्रीर फासके महारको सहता रहा, और जारशाही वदीं पहने रूसी किसान श्रपनी परम्परागत वीरताको दिखलाते अपना खून बहाते रहे। बडी मुश्किलसे श्रीर भारी च्रितिके बाद इगलैड और फासने इस ध्वस्त दुर्गपर ऋघिकार किया, किन्तु उसके बाद ही उन्हें "पराजित रूस" से वहाँसे श्रपनी सेना हटानेके लिये श्राज्ञा लेनी पडी। विजयी होनेके बाद भी दोनों पश्चिमी शक्तियोंने क्यों जारशाहीका और पीछा नहीं किया ? नकली बोनापार्ट अपनी कमजोरियोंके कारण वैसा नहीं कर सकता या. लेकिन इंगलैंडने वैसा क्यों नहीं किया ? इस पहेली का हल मार्क्सने पार्लियामेन्टके वृटिश म्युजियममे वर्षों से समा होती पार्लियामेन्ट रिपोटों, सरकारी नील-पुस्तिकान्त्रों न्त्रीर दूसरे देशोंसे मेजी कूटनीतिज्ञों की रिपोटोंको पढ़कर किया। इन कागजोंके देखनेसे पता लगा, कि १८ वीं सदीके प्रथम पादमें पीतर महानके समयसे ही लेकर क्रिमिया-युद्ध तक पीतर-बुर्ग श्रीर लन्दनके मंत्रालयोंमें घनिष्ट सहयोग रहा । इंगलैंड सममता था, कि जारशाहीको नष्ट करके नहीं, बलिक उसको अपने हायमें रखकर ही हम दुनियामें आगे वद सकते हैं। क्रिमिया-युद्ध-के समय बूटिश-महामन्त्री पामर्स्टनके वारेमें यह भी कहा जाता या, कि जारशाही ने उसे खरीद लिया है, जो चाहे उतना उच न हो, लेकिन पामर्खनको अपने देश में मजद्रोंके चार्टिस्ट-म्रान्टोलन जैसे संघर्षको देखना पडा था। वह समभना तो

या, न जाने किस दिन उद्बुद्ध कमकर श्रापने इंगलैंडके बनिया-राज्यको उखाड़ फेंके। ऐसे गाढ़ के समय यूरोपमें हर जगह जारशाहीने सीधे सैनिक महायता पहुँचाई थी। प्रतिक्रियावादकी इतनी बड़ी सहायक शक्तिका उच्छेद भला इंगलैंड कैसे पसन्द करता ? साधारण लोगों या मजदूर वर्गको भी चाहे इसका न पता हो, लेकिन पूँजीवादी राजनीतिज्ञ भली भाँति समक्रते थे, कि उनका कृष्ण पैदा हो गया है, जो एक दिन कंसको मारे बिना नहीं रहेगा।

मानर्स देख रहे थे, कि अभी भी सम्यतामें वर्वर-स्रवस्थाके स्रवशेषोंके लिए चाल्तिकसे प्रशान्त महासागर तक फैले रूसके विशाल राज्यका हाथ युरोनके सभी मंत्रिमंडलोंमें कितना फैला हुन्ना है। ऐसी श्रवस्थामें वह साफ समक -सकते थे कि पश्चिमी युरोपमें हर क्रान्तिके समय भीतर घुसकर सहायता देनेके ं लिये तैयार जारशाही सर्वहाराका सबसे बड़ा शत्रु है। वह कि आर्थिक विकासके कारण पैदा हुई हर जगहकी उद्बुद्ध शक्तियोंको स्वामाविक परिखामपर पहुँचनेमें बाहरसे स्त्राकर बाधा डालती है। उन्होंने यह साफ कहा था, कि जब तक जार-शाही खतम नहीं होती, तब तक यूरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति असम्भव है। यह चात कितनी सच हुई, यह ब्राज हमें सफ्ट मालूम होती है। जारशाहीने खतम होकर यूरोपके सर्वहाराके लिए मुक्तिका रास्ता खोल दिया श्रीर इसमें शक नहीं यदि जारशाहीसे भी बढकर वर्बर अमेरिकन थैलीशाही यदि रास्तेमें न श्राती, तो स्राज पूर्वी यूरोपकी तरह पश्चिमी यूरोपका सर्वहारा भी स्वतन्त्र होता। अमेरिकन यैलीशाही जारशाही से भी कहीं अधिक वर्बर है, क्या यह हिरोशिमा न्त्रौर नागासाकीके सैनिक दृष्टिसे विल्कुल स्त्रनावश्यक स्त्रग्रुवमोंकी नारकीय लीलासे सिद्ध नहीं है या कोरियामें कीटाग्रु-बमोंको गिरा वहाँ ऋग्रुबम बरसानेकी धमकी देते इन थैलीशाहोंके ऋाचरण्से सफ्ट नहीं है ? १६ वीं सदीके मध्यमें--- ' जिस वक्त कि मार्क्स जारशाहीके वारेमें अपना विचार प्रकट कर रहे थे--- अभी जारके राज्यमें किसानोंकी ऋर्ष-दासता मौजूद थी, वहाँकी प्राचीन पंथिता भी श्रद्धाएए थी। तो भी, केवल श्रपने सैनिक प्रभुत्वको कायम रखनेके लिए भी जारशाहीको ऋाधुनिक विज्ञानसे कितनी ही सहायता लेनेकी ऋावश्यकता पड़ी. जिससे वहाँ साइन्स श्रीर स्वतन्त्र विचारकी ज्योति कुछ मात्रामें पहँच गई।

उपीके प्रभावसे काकेशस, मध्य-एसिया और साइवेरियाकी एसियाई जातियों में भी काफी सास्कृतिक परिवर्तन हो रहा था। पोलोंका समर्थन करते हुये भी मार्क्स स्सके इस पहल्को भूल नहीं सकते थे, इसीलिए १८५१ ई० मे ही एगेल्सने. कहा था—"इतालियनो, पोलो और ढुंगेरियनोको साफ तौरसे कह देना होगा, कि जब श्राधुनिक प्रश्न सामने हो, तो उन्हें अपनी जवान रोक रखनी होगी।" यह भी याद रखना चाहिये कि इस समयकी प्रशिया (जर्मनी) यूरोपीय राजनीतिये कोई महत्व नहीं रखती थी, उसकी रियति एक रूसी प्रदेश जैसी थी—यह हमें मालूम ही है, कि पीतर महान्के मरनेके कुछ ही सालो बादसे रूसी जारके रूपमें जर्मन राजकुमार और राजकुमारियों ही अपने जर्मनके कुमापात्रोंकी सहायतासे रूसका शासन करती थीं। जारवश अपने उन्छित्न होनेके समय (१९१७ ई०) रूसीकी अपेका जर्मन श्राधक था।

मार्च १८५३ ई॰ मे मार्क्स यूरोपीय राजनीतिके ऋवगाहनमें लगे हुर थे। उस समयके एक पत्रमें एगेल्सने लिखा था-"मैं ऋर्कहार्टकी किताबको इस समय पढ़ रहा हूँ । यह कहता है कि पामर्स्टन रूसका वेतनमोगी है । इसकी व्याख्या विलक्कल स्त्रासान है, क्योंकि वह केल्टी ्कॉच है...।" स्रर्कहार्ट दूसरे राष्ट्रवादी स्कॉन्डोकी तरह श्रॅंग्रेनॉका निरोधी था। हेलेनिक संस्कृतिसे प्रमावित होकर वह ग्रीस गया था, फिर तुर्कीमें जाकर कितने ही समय तक रहा। दुर्क रूसियोंके खिलाफ थे, इसलिए वह तुकोंके पक्तमें श्रीर रूसियोंके खिलाफ वन गया। वह तुकाँसे इतना प्रमावित हुआ कि उसने एक बार लिखा था-"यदि मैं कालविनका श्रनुयायी न होता तो केवल मुखलमान ही हो सकता था।" एंगेल्सने कालविनकी पुस्तक पढते हुये यह बात मार्क्सको लिखी थी। मार्क्स श्रीर श्रर्कहार्ट दोनों एक तरह पामर्स्टनके विरोधी थे। इस विरोधमें मार्क्सन "न्यूयार्क ट्रिन्यून" में नो लेख लिखा था, उसे ग्लास्गो (स्काटलैंड) के एक पत्रने छापा था, जिसे पटकर ऋर्कहार्टने फरवरी १८५४ ई॰ में मान्स्से मिलकर उन्हें अभिनन्दन करते हुए कहा था--- देसा लेख था मानो उसे एक तुकीन लिखा हो। लेकिन स्कॉच मारबाबीको जन पता लगा कि मार्क्स क्रांतिवादी है, तो उसे वडी, निराशा हुई।

१. चार्टिस्ट

मार्क्स चार्ट चार्टिस्टोंका समर्थक था और अर्कहार्ट मुक्त व्यापारका समर्थक श्रीर बनिया होनेसे चार्टिस्टोंका विरोधी । अर्कहार्टको तो चार्टिस्ट-श्रान्दोलनमें भी रूसी खबल चमकते दिखलाई पड़ते थे, जैसे कि उसके वंशाजोंको प्रथम विश्वयुद्धके बाद हर जगहकी क्रांति और कमकर-आन्दोलनमें मास्कोके रूबल दिखलाई पड़ते रहे। १० ऋषैल १८४८ ई० की मयङ्कर पराजयके बाद चार्टिस्ट श्रान्दोलन फिर सँभल नहीं सका, लेकिन वह उसी समय खतम नहीं हो गया। चार्टिस्ट-म्रान्दोलनके श्रवशेषोंको मार्क्स ग्रीर एंगेल्सका पूरा समर्थन प्राप्त था। मार्क्स ऋौर एंगेल्स उनके पत्रोंमें मुफ्त ऋपने लेख मेजते थे। जार्ज जुलियन हार्नने "लाल गणतन्त्री" अन्मिसे एक पत्र निकाला, जिसके बाद उसने "लोक मित्र" + श्रीर उसके बाद "जनतांत्रिक श्रालोचना" : निकाली । श्रर्नेस्ट जॉन्सने इसी समय "लोगोंके लिये टिप्पणी"\$, "लोक पत्र" निकाला । "लोक पत्र" नियमपूर्वक १८५१ तक प्रकाशित होता रहा । दोनों पत्र चार्टिस्ट श्रान्दोलनके क्रांतिकारी श्रंगसे सम्बन्ध रखते थे । विरादराना जनतंत्रतावादियोंके श्रन्तर्राष्ट्रीय एसोसियेशनमें भी भाग लेनेवालोंमें हानीं श्रीर जोख सबसे श्रागे थे। हानीं एक नाविकका लड़का और सर्वहारा वातावरणमें पला था। फ्रांसके क्रांतिकारी साहित्यसे उसे प्रेरणा मिली थी श्रीर मरात उसका ख्रादर्श था। उमरमें वह मार्क्ससे एक वर्ष बड़ा था। जिस वक्त मार्क्स "राइनिशे जाइटंग" का सम्पादन कर रहे थे, उस वक्त हानीं चार्टिस्ट मुखपत्र "उत्तरी तारा" के सम्पादकीय विभागमें काम करता था। एंगेल्स १८४३ ई० में उससे मिले थे, जब कि उनके बारेमें हार्नीने लिखा था - "एक पतला तरुण, पट्टा इतना तरुण कि जान पड़ता है लड़का है, लेकिन तत्र भी वह असाधारण तौरसे शुद्ध अँग्रेजी बोलता है। "१८४७ ई० में हानींका मार्क्स परिचय हुन्ना न्नौर वह बड़े

^{* &}quot;The Red Republican", † "The Friends of the People. ‡ "The Democratic Review" \$ "The Notes to the People" § "The People's Paper" § "The Northern Star".

उत्साहसे उनकी मंडलीमें शामिल हो गया। हानींने कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रका अग्रेगेजी अनुवाद अपने पत्र "लाल गणतंत्री" में छापा जिसमें अपने फुट नोटमें उसने यह भीं लिखा था: यह परमकातिकारी कृति है, जो कि आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई। पीछे मार्क्सके साथ उसका मतमेद हो गया। इस समय वह जसींके द्वीपमें जाकर रहने लगा, किन्तु कुछ समय बाद युक्तराष्ट्र अमेरिका चला गया, जहाँ १८८५ ई० में एगेल्सने उससे मुलाकात की थी। इस मुलाकातके कुछ ही दिनो बाद हानीं इगलैंड लीटा, जहाँ काफी बृद्ध होकर मरा।

श्रनेंस्ट जोन्स जर्मनीमे पैदा श्रीर सीख-पढ़कर बड़ा हुश्रा। जर्मनीमें उसका बाप कम्बरलैंडके ड्यूकका सैनिक परामर्शदाता था-यह परम प्रतिक्रियावादी ड्यूक पीछे ह्नोवरके राजा श्रन्स्ट श्रगस्टके नामसे प्रसिद्ध हुआ । ड्यूकने धर्म-पिता बनकर श्रपना नाम जोन्सको दिया था। इस प्रकार श्रनेंस्ट जोन्सका बचपनस्ट ही धनिष्ठ सम्बन्ध उन्च सामन्त परिवारसे रहा, लेकिन बचपनसे ही वह स्वतन्त्र[,] विचार रखता था श्रीर सामन्ती समाजके कुत्सित वातावरसामें पलते हुये भी निलेंप रहा। वह बीस वर्षका था, जबिक इगलैंड लौटा श्रीर पीछे पढ़ाई करके: बैरिस्टर बना । उसने त्रपना सारा भविष्य श्रीर श्रारामके जीवनको तिलाजलिः दे चार्टिस्ट-ब्रान्दोलनमे प्रवेश किया। इसके लिये १८४८ ई० में उसे दो साल-की सजा हुई श्रीर जेलमें मामूली श्रपराघियोंकी तरह रक्खा गया। १८५० ई∞ में जेलसे वह कट्टर क्रान्तिकारी होकर निकला श्रीर उसी सालकी गर्मियों में मार्क्स श्रीर एरोल्सके साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध हुश्रा । तबसे करीब बीस वर्षः तक उसका यह सम्बन्ध कायम रहा, यद्यपि फ्राइलियथका पच्चपाती होनेके कारसः पीछे उसका सम्बन्ध मार्क्सके साथ उतना ऋच्छा नहीं रहा, तो भी मार्क्स श्रीर एगेल्सका उसकी ईमानदारीके कारण उसके प्रति सद्भाव था, यह १८६६ ई० में मेनचैस्टरमे रहते हुये जोन्सके मरनेके समय एरोल्सके इन वाक्योसे मालूमा होता है: "पुराने गारदमेंसे एक श्रीर घरको चला गया।" जिसका जबाक मार्क्सने दिया: "इस खबरसे हम सभीके दिलको बहुत गहरा धक्का लगा, क्योंकि वह हमारे थोड़ेसे पुराने मित्रोमेसे था।"

२. परिवार और मित्रमंडली

यह वह साल थे, जब कि मार्क्स राजनीतिक मंडलियोंसे ऋलग थे ऋौर उनका लोगोंसे सम्पर्क नहींके बराबर था। वह अपना सारा समय अध्ययन श्रीर श्रनसन्धानमं लगा रहे थे, श्रीर बचे-खुचे समयको श्रपने परिवारमें गुजा-रते थे। इसी बीच १८५५ ई० में उनको एक लड़की एलीनोर पैदा हुई। एंगेल्सकी तरह मार्क्सका बच्चोंके साथ बहुत प्रेम था। किताब-कलम छोड़कर चो एक-दो घंटेकी लुट्टी ले पाते, उसे मार्क्स लड़कोंके साथ खेलनेमें विताते । वन्चे भी उनके साथ ग्रसाधारण प्रेम रखते थे, क्योंकि वह वाप जैसे शासनका कभी उपयोग नहीं करते थे। बच्चोंके लिये वह मानो खेलके साथी थे। दूसरी-की अपेद्धा अधिक साँवला तथा कोयले जैसे काले वालोंके कारण वच्चे उन्हें मूर (उत्तरी स्रफ्रीकाके स्ररव) कहते । मार्क्सका वच्चोंके वारेमें दूसरे ही विचार था, वह कहा करते थे: "बच्चोंको ऋपने माँ-वापको शिच्चित करना होगा।" श्रीर सजमन ही मार्क्स बच्चे अपने वापको सिखाते थे। इतवारके दिन उन्होंने मार्क्सको काम करनेकी सख्त मनाही कर रखी थी। उस दिन उन्हें सारा समय वच्चोंके लिये देना पड़ता । मार्क्स-परिवार बाहर दीहातमें या दूसरी जगह घूमने निकलता, रास्तेके किसी सरायमें वह अदरकी बीयर पीते, पनीर श्रीर रोटी खाते । श्रिधिकतर वह हेम्स्टेडहीथ में घूमने जाते । यद्यपि उस समय यह टेकरी नगरसे वाहर थी, किन्तु नगरके वीचमें होनेपर भी उसके कितने ही ग्रंशको प्राकृतिक रूपमें रखनेकी आंज भी कोशिश की गई है, और इतवारकी संध्याको हजारों परिवार वहाँ सैर करनेके लिए जाया करते हैं । लीवुवनेख्टने मार्क्सके इस समयके रूपका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। जेक स्ट्राज पेसलका छोटा-सा उपा-हारालय ऋव भी वहाँ मौजूद है, जिसकी मेजपर मार्क्स ऋक्सर बैठा करते थे। हीयके दिवाण तरफ लन्दनका घना वसा हुन्ना शहर है, जहाँ सेन्ट पालके गिर्जे का गन्धोला श्रीर वेस्टमिनिस्टरके मीनार दूरसे दिखाई पड़ते हैं।

मार्क्सका जीवन आर्थिक तौरसे कष्टमय जरूर था, लेकिन वच्चोंमें पिता-माता अपनी सारी वेदनाओंको मूल जाते। इसी समय १८५५ ई० के गुड-फ्रा इहेके दिन मार्क्सका एक मात्र पुत्र एडगर नौ वर्षकी अवस्थामें चल वसा।

पिता-माताका उसपर-ग्रमाधारण प्रेम था। वह उसे प्यारसे "मुश्" कहकर पुकारा करते थे । इसी अवस्थामें ही उसके "होनहार विरवानके होत चीकने पात" दिख-लाई दे रहे थे। परिवारके लिये यह कितनी दुःस्तह हृदयवेधी घटना थी, यह कवि फाइलियथके जर्मनी मेजे हुये एक पत्रकी निम्न पंक्तियोसे मालूम होगा: "यह इतनी बुरी श्रीर मयंकर चृति है, इसका प्रभाव मेरे ऊपर इतना गहरा पड़ा है, कि उसका मै वर्णन नहीं कर सकता।" मार्क्सन बच्चेकी बीमारी श्रीर मृत्युके बारेमे उसी समय ३० मार्चको एंगेल्सको बड़े करुए शन्दोमें लिखा था : "मेरी स्त्री केवल आशंकाके कारण एक सप्ताहसे बीमार रही, ऐसी बीमार जितना कि वह पहले कभी नहीं हुई थी। मै भी बहुत व्याकुल हूं। मेरा हृदय बोकसे दबा जा रहा है, श्रीर मेरा सिर धूम रहा है, लेकिन वाहरसे मुक्ते श्रपनेको निर्लेप दिखाना है। बन्चा बीमारीके समय भी वैसे ही सुन्दर स्वभावका रहा है।" ६ अप्रैलके एक पत्र में उन्होने फिर लिखा: "वेचारा नन्हा चला गया। आज ५ श्रीर ६ बजेके बीच मेरी गोदमें सो गया। मै इसे कभी भूल नहीं सकता, कि तुम्हारी मित्रताने कैसे इन भयंकर दिनोंसे हमारे भारी वोभको हलका किया। द्यम स्वय समभा सकते हो, कि मेरे लडकेकी मृत्युके बाद मुक्ते कितना दु:ख हो रहा है।" १२ अप्रैलके पत्रमें मार्क्सने लिखा: "लडकेके मरनेके बादसे घर खाली श्रौर सूना सा मालूम होता है। वह इसका **जीवन श्रौर** श्रात्मा था। हर समय उसके श्रमावको हम कितना श्रनुमव करते हैं, इसका वर्णन करना श्रसम्मव है। मैंने श्रनेक प्रकारके दुर्माग्य सहे हैं, लेकिन इस वक्त मैं जानता हूं, कि वास्तविक दुर्माग्य क्या है।... जिन मयंकर आशकाओ और कध्यंमेसे में गुजरा हूं, उनमें मुक्ते तुमने श्रौर तुम्हारी मित्रताके विचारने बहुत शक्ति प्रदान की, श्रीर इस श्राशासे भी कि दुनियामें श्रमी भी कुछ कामकी चीज हम कर सकेंगे।"

मार्क्सको पुत्र-वियोगका घाव भरनेमें काफी समय लगा । लाजेलके सहातु-भृतिकारक पत्र का जवात देते हुये २८ जुलाईको मार्क्सने लिखा था : ''त्राकोका कहना है, कि वास्तविक महापुरुष प्रकृति और दुनियामें इतनी अधिक वार्तोमें दिलचर्यी रखते हैं, इतनी अधिक चीजे उनके ध्यानको अपनी ओर खींचे रहती र्है, कि कोई भी चति उनके लिये बहुत अधिक नहीं मालूम होती। मुक्ते यह 'कहनेमें संकोच नहीं, कि मैं उन महापुरुषोंमें नहीं हूँ। मेरे ऋपने लड़केकी न्मृत्युने मुभे जोरसे भक्भोर दिया है, मैं उसके प्रभावको इतना जबर्दस्त महसूस करता हूँ, कि मानों यह दुर्घटना कल ही घटी है। मेरी वेचारी स्त्री तो इस चोट-के मारे पूरी तौरसे पस्त हो गई है।" अप्रैलमें मरे लड़केके लिये जो दुःख हुआ, चह ग्राठ महीने बाद भी कितना कड़ा था, यह ६ श्रक्त्वरके फ्राइलिग्रथ द्वारा 'मार्क्सको लिखे पत्रसे मालूम होता है: "मुफे इस बातके लिये भारी अपसोस है, कि स्रापकी वह बड़ी च्रति स्त्राज भी इतना जबर्दस्त दुःख दे रही है। दुर्भाग्यसे इसके सम्बन्धमें कुछ करना या समझना एक मित्रकी शक्तिसे बाहर है। मैं ·न्त्रापके दु:खको सम्भता हूँ श्रौर उसको सम्मानकी दृष्टिसे देखता हूँ, लेकिन न्त्रपने ऊपर त्रापको उसपर काबू पानेकी कोशिश करनी चाहिये, यह त्रापके 'र्वप्रय बच्चेकी स्मृतिके प्रति कृतन्नता नहीं होगी।" मार्क्स परिवार कुछ वर्षोंसे -वीमारीका डेरा वन गया था, जिसका ऋन्तिम प्रदर्शन एडगरकी मृत्युके साथ हुआ। पिछले वसन्तमें मार्क्स स्वयं बीमार पड़ गये थे, श्रीर श्रमी वह न्त्रपञ्जी तरह स्वस्थ नहीं हो पाये थे। खास शिकायत थी पेटकी, जिसे कि मार्क्स **म्त्रपने पिताका दायमाग समभते थे । लेकिन इसमें घरकी ऋस्वास्थ्यकर** ऋवस्था -तथा वैसा ही पास-पड़ोस भी कारण था, इसमें शक नहीं | १८५४ ई० की न्गर्मियोंमें वहाँ भारी हैजा फूट निकला, जिससे इतने ब्रादमी मरे, कि उन्हें व्दफ्तानेके लिये १६६५ के भयंकर क्षेग में मरे आदिमियोंकी कब्रोंके ऊपर नई -खाइयाँ खोदी गईं । डाक्टरने मार्क्सको सोहो-स्क्वायरके पास-पड़ोंस छोड़ देनेके ंलिये हिदायत की थी, जिसको कार्यरूपमें परिएत करनेके लिये अब मजबरी हुई। १८५५ ई० के ग्रीष्म की गर्मियों (ग्रीष्म-वर्षा) में जैनी मार्क्स ग्रपनी त्तीनों लड़िकयोंके साथ माँकी बीमारीके कारण उसे देखने ट्रीर चली गई। ग्यारह 'दिनकी वीमारीके बाद जब माँ अपनी आँखोंको मुंद रही थीं, उसी समय वेटी च्यौर नतनियाँ वहाँ पहुँची थीं। माँकी सम्पत्तिमेंसे कुछ सौ थालर फ्राउ मार्स्स-को भी मिले । इसी समय जेनीको अपने स्काच सम्बन्धियोंसे भी कुछ दायभाग भीला। यह दोनों आमदनी इतनी काफी थी, कि १८५६ ई० की शरदमें परि-

वार हेम्स्टेडहीथके पास ६ ग्रेफटेन टेरेस, मेटलेंड पार्क, हेवेरस्टॉक-हिलमें एक छोटा-सा घर किराये पर लेकर वहाँ चला गया, किराया ३६ पौंड वार्षिक या। जेनीने अपने एक पत्रमें इस घरके वारेमें लिखा था: "जिन मॉदोंमें हम अब तक रहते रहे, उनकी तुलनामें यह राजमहल सा मालूम होता है। यद्यपि हमारे पास जो कुछ फर्नींचर (अधिकांश कवाडी का कूड़ा करकट) है, उसका दाम ५४० पौंडसे कुछ ही अधिक होगा, पर आरम्ममें मैंने अपनी नई बैठकमे अपनेको बदा अनुमव किया। सभी मलमलो और पुरानी समृद्धिके दूसरे अव-शेषोंको मामाके हाथसे उन्नारी एक बार फिर मैं आनन्दके साथ अपने पुरानी दिमश्की नेपिकनोंको अपने पास देख रही थी। किन्तु, यह सूठा आनन्द देर तक नहीं रहा, जल्दी ही उनमेंसे एकके बाद एक पौप-शौप (कासेकी तीन घटियोके चिन्हके कारण बन्धक रखनेवाले घरको बच्चे इस नामसे पुकारा करते थे) में पहुँच गये। तो मी, हम बहुत प्रसन्त थे, क्योंकि एक बार फिर हम चूर्जी सुलकर वातावरएमें अपनेको पा रहे थे।"

मृत्युने उस वक्त परिवारके दूसरे मित्रोंके घरोंमे भी फेरा दिया था। दानि-याल १८५५ ई० के शरद्में मरा, वीर्थ हैतीमें रहते जनवरी १८५६ ई० को चल वसा। १८५८ ई० के आरम्भमें जसीं द्वीपमें कोनराइ शाम्म भी साथ छोड़ गया। मार्क्स और एंगेल्सने अपने पुराने सहयोगी मित्रोंके प्रति शोक प्रकट करते हुये छोटी स्चनायें प्रकाशित करानेका असफल प्रयत्न किया। वह बडा अपसीस प्रकट करते थे, कि पुराने क्रान्तिकारी एकके बाद एक चलते जा रहे हैं, और उनकी जगह लेनेवाले नए नहीं आ रहे हैं।

लीवक्नेस्ट इस समय लन्दनमें जब तक डीन स्ट्रीटमें रहा तब तक वह मार्क्स परिवारमें प्रतिदिन जाया करता । उसे भी भीषण गरीबीका समना करना पढ़ रहा था । यही बात कम्युनिस्ट लीगके दूसरे पुराने साथियों—लेस्नेर, लॉख-नेर, इकेरियस और शापरकी थी । दूसरे साथी विखर चुके थे : ड्रोन्के लिवरपुल और पीछे ग्लास्तो में व्यापारी बन गया था, इमान्ट डंडीमें प्रोफेसर था, शिले पैरिसमें एडवोकेट था, जहाँ कवि हाइनेका अन्तिम वर्षोका सेकेटरी राइनहार्ट भी रहता था ।

३. १८४७ ई० का आर्थिक संकट

१८५७ ई० में भारत ऋंग्रेजी गुलामीसे ऋाजाद होनेके लिये प्रयत्न कर रहा था। किसान-पुत्रों ऋौर गरीबोंकी ऋपार कुर्वानियाँ सामन्तोंके ईर्ष्या, लोम श्रीर श्रव्यवस्थापूर्ण नेतृत्वमें श्रसफल रहीं। इसी समय पूँजीवादके श्रीरस पुत्र समयपर होनेवाले ऋार्थिक संकटने युरोपमें ऋपनी मीप्रणता दिखलाई थी। १८५० ई० के शरदमें सार्वजनिक जीवनसे ऋलग होते वक्त मार्क्स श्रीर एंगेल्सने कहा: "नई क्रान्ति एक नये संकटके परिशामस्वरूप ही सम्भव हो सकेगी, श्रीर ऐसे संकटका श्राना भी उसी तरह निश्चित है।" तबसे वह उस नये संकटकी बाट जोह रहे थे। कितनी देरकी प्रतीचाके बाद १८५७ ई० में वह संकट त्रान मौजूद हुन्त्रा। मार्क्सने एंगेल्स द्वारा विलहेल्म वोल्फको कहा था : मैं साबित कर सकता हूँ, कि जिस समय इस संकटको स्त्राना चाहिये था, कुछ कारगोंसे वह उसके दो वर्ष बाद श्राया। संकटके श्राम श्रागमनका पता युक्तराष्ट्रसे मार्क्सको पहले-पहल मिला, जब कि "न्यूयार्क ट्रिट्य्न" ने उनके पारिश्रमिकको आधा कर दिया। यह मारी चोट थी, क्योंकि परिवारका वह एक सबसे बड़ा सहारा था । ग्रेफ्टन टेरेसमें डीन स्ट्रीटकी तरह परिवार श्रपने जीवन-को नहीं बिता सकता था, इसलिये उनकी कठिनाइयाँ और बढ गई थीं। कहींसे श्रामदनीका कोई रास्ता दिखलाई नहीं पड़ता था, श्रीर उधर खर्च कम होनेकी जगह बढ़ता ही जा रहा था। २० जनवरी (१८५७ ई०) को मार्क्सने एंगेल्स-को लिखा था: "मुक्ते कुछ नहीं समक्तमें त्राता, कि इसके बाद क्या करूँ। वस्तुतः मेरी स्थिति उससे कहीं खराब है, जैसी कि पाँच वर्ष पहले थी।" एंगेल्सको यह चिट्ठी वज गिरने जैसी मालूम हुई। वह तुरन्त अपने मित्रकी सहायता करनेमें लग गये श्रीर यह शिकायत करते हुये कि स्थितिके बारेमें मुक्ते पहले क्यों नहीं बतलाया। एंगेल्सने अभी-अभी अपने लिये एक घोड़ा खरीदा था, जिसके लिये उनके पिताने बड़े दिनकी भेंटके तौरपर कुछ पैसे दिये थे। उन्होंने लिखा: "मैं सचमुच ही इसे बहुत बुरा सममता हूँ, कि मैं यहाँ एक घोड़ा वाँघू, जब कि आप और आपका परिवार लन्दनमें ऐसी आफतमें पड़ा है।" एंगेल्सको कुछ महीने बाद यह जानकर वड़ी प्रसन्नता हुई, कि डाना एक

विश्वकोषकी योजनामें मार्क्सकी सहायता लेना चाहता है। उसके पारिश्रमिकसे परिवारकी आर्थिक हालत सुघर जायेगी, यह विश्वास हो चला था, लेकिन अन्तमें वह ख्याल हवाई किला साबित हुआ। दोनों मित्र विश्वकोषके तीसरे अस्त तक थोड़ा-बहुत सहयोग करते रहे, जिनके बाद वह ठप्प हो गया।

१८५७ ई० की गर्मियोंमें गिल्टीकी बीमारीके कारण एंगेल्सको देर तकके लिए समुद्रके किनारे जाकर रहना पड़ा। मार्क्सकी स्थिति मी काफी बुरी थी पेट-की बीमारी फिर उमड़ आई, जिसके कारण बहुत कठिनाईके साथ वह बहुत थोड़ा सा ही काम कर सकते थे। जुलाईमे मार्क्स-पत्नीको एक मृत बच्चा ऐसी स्थितिमें पैदा हुआ, जिससे मार्क्सको बहुत दुःख हुआ। उनके पत्रको पढ़कर एंगेल्सने लिखा था: "आपपर भारी चोट पडी होगी, जभी आप इस तरह लिख रहे हैं।"

इस तरहका वैयक्तिक दुःख और चिन्ता चारों स्रोर घेरे हुये थे, लेकिन जैसे ही शारदमे संकट इगलैंडमें दाखिल हुआ, फिर यूरोपमें फैलने लगा, वैसेही मार्क्स सारी बाते भूल गये श्रीर उन्होने १३ नवम्बरको लिखा: "यद्यपि मैं स्वयं मयंकर आर्थिक कठिनाइयोंमें पड़ा हूँ, लेकिन १८४६ ई० के बाद मैने कभी ऐसा आनन्द अनुमव नहीं किया था, नैसा कि आन इस भूकप्प (आर्थिक , संकट) के समय।" पत्रके उत्तरमें अगले दिन एंगेल्सने लिखा था: "मैं , समभाता हूँ, श्रच्छा यही होगा, कि स्थायी (क्रानिक) संकटमें 'सुधार' कहीं द्वितीय श्रीर निर्णायक प्रहारके पहले ही न होने लग नाय । लोगोंको गरम करने के लिये थोडी देरके वास्ते दीर्घ स्थायी (पुराने) दवावकी आवश्यकता है, तब सर्वहारा स्थितिके बेहतर ज्ञानके साथ एकताबद्ध हो अञ्झी तरह लढेंगे, जिस तरह कि रिसालेका हमला तभी ज्यादा जीवट वाला होता, जब घोड़े दुश्मनपर महार करनेकी जगहसे पहले पाँचसी कदम दौडनेका मौका पाये। मैं ऐसी किसी , चीजको बहुत जल्दी, उस समयसे पहले घटित होना नहीं पसन्द करूँगा, जब तक कि सारा सूरोप इसमें पूरी तौरसे फॅस न जायः क्योंकि तत्र वादका सघर्ष अधिक कठोर, अधिक मुश्किल और अधिक उतार-चढ़ावका होगा। मई और जूनका रुम्य प्राय: बहुत पहलेका होगा। लम्बे अर्चे तक समृद्धके मीतर गुजरते हुये

जनगण बहुत श्लथ हो गया है।...हाँ, मैं भी उसी तरह महसूस करता हूँ जैसे आप। एक बार यदि न्यूयार्कमें घोखा-घड़ीकी इतिश्री हो गई, तो जसींमें मेरे पास एक दुकड़ा भी नहीं रह जायेगा, किन्तु, मैं इस ग्राम इतिश्रीका बहुत सुन्दर श्रमुभव कर रहा हूँ। चाहे पिछले कुछ वर्षोंमें बूज्वों कीचड़ मुभसे भी चिपट गया है, लेकिन श्रव मैं उसे घोकर श्रपनेको नया श्रादमी श्रमुभव करने लगूँगा। समुद्रतट निवास सा ही यह संकट मेरे स्वास्थ्यके लिये लाभदायक होगा, इसे मैं श्रमुभव कर रहा हूँ। १८४८ ई० में हम सोच रहे थे, हमारा समय श्रा रहा है श्रीर कुछ श्रथोंमें वैसा हुश्रा भी, लेकिन, इस समय वह वस्तुत: श्रा रहा है श्रीर सभी चीज दाँवपर है।"

एंगेल्सने अपने पत्रमें दावपर सब चीजोंके रखे होनेकी जो बात कही थी, वह गलत साबित हुई । संकटका प्रभाव उनकी स्फक्ते अनुसार बिल्कुल ही न पड़ा हो, यह बात नहीं लेकिन सर्वहाराके ऊपर जो चरम प्रभाव पड़नेवाला था, और जिसके कारण इस विराट संसारमें प्रलय मच जाने वाली थी वह तब आनेवाला था, जब कि दोनों मित्र सदाके लिए आँखें मूँद चुके होंगे। १८ दिसम्बरके पत्रमें मार्क्सने अपने मित्रको लिला था: 'भैं बहुत जबर्दस्त परिमाणमें काम कर रहा हूँ, ४ वजे सबेरे तक। मेरा काम दो तरहका है: (१) राजनीतिक अर्थ- शास्त्रके मौलिक सिद्धान्तोंकी रूपरेखा...और (२) वर्तमान संकट।

श्रार्थिक संकट में मार्क्सने इस बातका पता लगाया, कि दुनियाके शोषण श्रीर उत्पीड़नके खतम करनेके लिये श्रावश्यक सबसे शक्तिशाली हरावल दस्ता सर्वहारा है। लेकिन, सर्वहारा हर समय इसके लिये पूरी तौरसे तैयार होकर श्रपना जबर्दस्त श्रीर मरणान्तक प्रहार नहीं कर सकता। मरणान्तक श्रीर निर्णायक प्रहारके लिये एकमात्र समय है श्रार्थिक संकटका काल। श्रार्थिक संकटकाल को टालनेके लिये पीछे पूँजीवादियोंने युद्धोंकी शरण ली। श्राज भी हम यह साफ देख रहे हैं, कि पूँजीवादी युद्धसे उतना नहीं जितना शान्तिसे काँपने लगते हैं। कोरियामें शान्तिकी बातचीत करते ही वाल स्ट्रीटके सटोरियोंमें हलचल मच गई, चारों श्रोर उन्हें दिवाला ही दिवाला दिखलाई देने लगा, श्रीर उनके हाथकी कठपुतली श्रमेरिकन सरकार किसी न किसी बहाने शान्तिकी बला-

को टालनेकी कोशिश करने लगी। आर्थिक संकटको आते देख उसे सर्वहारा-क्रान्तिके लिये पुर्य-पर्व समक्त मार्क्षके हृदयमें क्यों न अधिक प्रसन्ता और उत्साह पैदा होता । 🗲 दिसम्बरके अपने पत्रमें जेनी मार्क्सने मरणासन्न कोनराड सम्भक्ते पास नसीमें नो पत्र मेना था, उसकी कुछ पंक्तियाँ मार्क्के इस समयके उत्साहके ऊपर प्रकाश डालती हैं : "यद्यपि हम अमेरिकन संकटको अपने पाकेट पर बुरी तरहसे अनुमन करते हैं, क्योंकि कार्ल 'ट्रिब्यून'के लिये दोकी जगह अन केवल एक लेख लिखता है। ट्रिन्यूनने वयार्ड हेलर और कार्लको छोड़कर अपने समी यूरोपियन संवाददातात्रोको ऋलग कर दिया है। लेकिन, तुम समक सकते हो कि इस समय मूर (मार्क्स) कितना प्रसन है ! उसकी नाम करनेकी स्नमता श्रीर फ़ुर्ती इतनी ताजगी श्रीर वेग के साथ लौट श्राई है, जो कई वर्षोंसे नहीं देखी जाती थी तबसे जब कि हमारे नन्हें बेटेके उठ जानेसे हमे भारी दुःख हुआ, ऐसा दु:ख जो मेरे हृदयको सदा उदास बना देता है। दिनको कार्ल हमारी रोजकी रोटीके लिये काम करता है स्त्रीर रातको राजनीतिक स्त्रर्थशास्त्रपर श्रपनी पुस्तक समाप्त करनेके लिये काम करता है। श्रत्र जब, कि इस तरहकी पुस्तक इतनी श्रावश्यक हो गई है, निश्चय ही हम किसी दुटपॅज़िये प्रकाशकको पानेमें सफल होवेगे।"

लाजेलके प्रयत्त्तसे एक प्रकाशक मिल भी गया। अप्रैल १८५७को मार्क्स को पत्र लिखते हुये लाजेलने इस बातपर आश्चर्य प्रकट किया, कि बहुत समयसे उसे मार्क्सका पत्र नहीं मिला। मार्क्सको मौन देखकर लाजेलको बहुत दुःख हुआ। उसकी शिकायत करने पर जो पत्र मार्क्सने लिखा भी, वह भी बहुत छोटा और वेमनसे लिखा हुआ था।

जनवरी १८५८ ई॰ में लाजेलकी पुस्तक "हेराविलातु" की एक कापी लन्दन पहुँची, जिसमें बर्लिनमे उसके ऊपर हुई श्रालोचनाओं श्रीर सम्पतियोंमेसे मी कुछ थीं । मार्क्सने पुस्तकमें विद्वत्ताके मारी प्रदर्शनको पसन्द नहीं किया । उन्होंने कहा, उदाहरणपर उदाहरण मर कर पुस्तकको वडा श्रीर काफी पैसा होनेपर उसको छपाया जा सकता है। लाजेल को श्रमी भी पता नहीं या कि मार्क्स मुक्तसे नाराज है। फर्वरी (१८५८) में उसने मार्क्सको लिखा कि मै त्रापके राजनीतिक अर्थशास्त्रके लिये एक प्रकाशक दुँदनेको तैयार हूँ । मार्क्सने इसे स्वीकार कर लिया । मार्चके अन्त तक लाज़ेलने अपने प्रकाराक फ्रांज डुंकेर से सब बात तै करके प्रतिज्ञानामा भीं तैयार कर लिया स्त्रीर उससे कहीं ऋच्छी शर्तपर, जिन्हें कि मार्क्सने माँगा था। त्राम तौरसे पारिश्रमिक एक फार्मके दो फीडरिख्स डोर (१६-१७ मार्क्सका उस समयका प्रशियाका सोनेका सिक्का) होता था, लेकिन डुंकरने तीन फ्रीडरिख्सडोर देना स्वीकार किया था। पर, प्रकाशक यह शर्त रक्की थी, कि अगर पहले भागकी संतोषजनक विक्री नहीं हुई, तो स्रागे उसे प्रकाशित नहीं करेगा। १८५८ ई० का वड़ा दिन स्राया, जिसके साथ किस्मसके ज्ञानन्दकी जगह मार्क्स-परिवारमें चिन्ता ज्रौर दु:खका स्वागत था। २१ जनवरी १८५६ ई० को ग्रंथका हस्तलेख तैयार हो गया, लेकिन एक पैसा भी घरमें नहीं था, कि हस्तलेखको डाकसे मेजनेके लिए टिकट खरीदा जा सके। मार्क्सने एंगेल्सको डाकखर्चंके लिये पैसा भेजनेके लिए लिखते हुये कहा था: "मैं नहीं समभता हूँ, कभी भी किसी त्रादमीने 'पैसा' के बारेमें लिखा हो, श्रीर उसे स्वयं उसके श्रमावके लिए इतना कब्ट हुश्रा हो । श्रिध-कांश लेखक जिन्होंने इस विषयपर लिखा है, वह अपने शोधके लच्य (पैसे) के साथ सबसे बढिया सम्बन्ध कायम रख सकते थे।"

४. ''राजनीतिक श्रर्थशास्त्रकी त्रालोचना'' (१८४६-६६ ई०)

काममें हाथ लगानेसे पन्द्रह वर्ष पहले मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रके ऊपर एक विस्तृत ग्रंथ लिखनेकी योजना बनाई थी, जिसमें वह उत्पादनके पूँजी-वादी ढंगके मौलिक सिद्धान्तोंको बतलाना चाहते थे। फ्रांसकी मार्च-क्रांन्तिके पहले भी पूर्धोंको जवाब देते समय उनके मनमें इसका ख्याल आया था लेकिन, क्रांन्तिकारी संघर्षोंमें पड़कर उसके लिये वह कुछ नहीं कर सके। उनसे छुट्टी पानेके बाद र अप्रैल १८५१ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था: "इस वक्त में इतना दूर तक चला गया हूँ, मैंने अर्थशास्त्रके सभी नीरस फंम्फ्टोंको खतम कर दिया है। इसके बाद में घरमें बैठकर अपनी किताबको समाप्त करूँगा और स्युजियममें किसी दूसरे विज्ञानमें हाथ लगाऊँगा...ऐडम स्मिथ और

हेविड रिकार्डों (दो अग्रेज अर्थशास्त्री) के समयसे राजनीतिक अर्थशास्त्र विज्ञानने कोई नई मौलिक प्रगति नहीं की है।" एंगेल्सने बहुत प्रसन्न होकर जवाब दिया: "मुक्ते यह सुनकर बडी प्रसन्नता हुई, कि अन्तमें तुम अपने राजनीतिक अर्थशात्रको पार कर गये। वस्तुत: यह काम बहुत देर तक लटका रहा।" श्रीर साथ ही यह भी कहा: "लेकिन जब तक दुम्हारे सामने श्रामी भी कोई ऐसी एक पुस्तक है, जिसे द्वम महत्वपूर्ण समसते हो न्त्रीर जो पढ़ी नहीं गई है, तब तक द्वम अपनी लेखनीको कागज पर नहीं घरोगे।" एंगेल्स जानते थे कि और कठिनाइयोंके अतिरिक्त एक वडी कठिनाई मार्क्सके लिये यह थी कि उन्हें एक-एक कदमको फुँक-फुँककर आगे रखनेकी आदत थी। फुँक-फुँककर पैर रखनेकी आदतको एंगेल्स बेकार नहीं समक्तते थे। श्रीर यही हुआ। १८५१ ई॰ में मार्क्क लिखनेसे मालूमसे होता था, कि उनका यह ग्रंथ समाप्त ही होने जा रहा है, लेकिन उसमे उन्हें अभी और आठ वर्ष लगाने पहे। बृटिश म्युजियममें इस विषयपर जो विशाल सामग्री रखी हुई थी, उसका एकके बाद एक पता लगता गया श्रीर मार्क्स फिरसे श्रपनी पुस्तकपर काम करने लगे। इस प्रकार १८५७-५८ ई० मे ही वह पुस्तक को प्रकाशनके योग्य बनानेके लिए काम करने लगे।

(प्रंथ संत्रेप)—प्रथकी सूमिकामे श्रीर बातोंके साथ मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवादके सिद्धान्तको सत्त्रेपमें कहते हुए लिखा है।

"(हेगेलीय विधान (कानून)-दर्शनकी परीक्षा करते हुये मैं इस निष्कर्ष-पर पहुँचा, स्वयं अपनेमें या मानव-बुद्धिके तथाकथित आम विकाससे न कानूनी सम्बन्धोंको समक्ता जा सकता है, और न राज्यके रूपोंको ही, क्योकि उनकी जड जीवनकी मौतिक स्थितियोंमे निहित है; जिसके पूर्ण योगको १८ वीं शताब्दीके अग्रेज और फ्रेच विद्वानोके उदाहरणोंका अनुगमन करते हुए हेगेलने 'बूर्ज्वा-समाज' की परिभाषामे सिद्धान्त करके कहना चाहा । बूर्ज्वा-समाजके शारीरिक दाँचेको राजनीतिक अर्थशास्त्रमें ही दूँदना होगा। ..मैं जिन सामान्य निष्कर्षोंपर पहुँचा हूँ, और जो मेरे आग्रेके अध्ययनमें पथ-प्रदर्शनका काम करेंगे, उन्हें संद्येपमें निम्न प्रकार कहा जा सकता है : सामाजिक उत्पादनमें मानव-प्राणी

एक दूसरेके साथ निश्चित और आवश्यक सम्बन्धोंमें प्रवेश करता है, और उसका यह प्रवेश करना अपनी इच्छासे विलक्त स्वतंत्र होता है। यह उत्पादक-सम्बन्ध मौतिक उत्पादन-शक्तियोंके विकासकी एक निश्चित ग्रवस्थाके श्रनुसार होते हैं। इन उत्पादक-सम्बन्धोंका आकार सामृहिकरूपेण समाजके आर्थिक ढाँचा ख्रीर भौतिक स्त्राधार बनते हैं, जिनके ऊपर वैधानिक (कानूनी) स्त्रीर राजनीतिक ऊपरी ढाँचा खड़ा है, और सामाजिक चेतनाके निश्चित आकार भी · उसीके श्रनुसार होते हैं। भौतिक जीवनका उत्पादन-प्रकार श्रामतौरसे जीवनके सामाजिक, राजनीतिक स्रोर बौद्धिक प्रक्रियाका निर्णय करता है। मानवप्रासीकी चेतना उसके अपनेपनकी निर्णायक नहीं है, बल्कि इसके विरुद्ध उसका सामा-जिक अस्तित्व उसकी चेतनाका निर्णय करता है। अपने विकासकी एक निश्चित श्रवस्थामें पहुँचकर समाजकी भौतिक उत्पादक-शक्तियाँ तत्कालीन उत्पादक सम्बन्धोंके साथ अथवा तत्कालीन साम्पत्तिक-सम्बन्धोंके साथ विरोधी बन जाती हैं—तत्कालीन साम्पत्तिक सम्बन्ध एक उसी चीजकी कानूनी श्रमिव्यक्ति है. जिसमें कि अबसे पहले वह चलती रहीं। तब यह सम्बन्ध उत्पादक-शक्तियोंके विकासके आकारोंसे उत्पादक-शक्तियोंकी वेड़ीके रूपमें परिण्त हो जाते हैं, जिससे कि सामाजिक क्रांन्तिका एक युग आरम्भ होता है। समाजिक आर्थिक श्राघारके इस परिवर्त्तनके साथ सारा ऊपरी विशाल ढाँचा कम या बेशी जल्दी से बदल जाता है। इन परिवर्त्तनों को देखते हुये स्रादमीको सदा उत्पादनकी श्रार्थिक स्थितियोंमें भौतिक परिवर्तनोंको वैज्ञानिक सद्भताके साथ हृदयंगत करना होगा, श्रीर वैधानिक, राजनीतिक, धार्मिक, कलाकारिक श्रीर दार्शनिक-संचेपमें उनको वैचारिक आकारोंके बीच सदा फर्क करना होगा जिनमें कि पहुँच-कर मानवसत्तार्ये इस विरोधको महसूस कर उनसे लड़ने लगती हैं। जिस तरह हम एक व्यक्तिकी परख उससे नहीं कर सकते, जैसा कि वह अपने बारेमें सोचता है, उसी तरह हम इस प्रकारके परिवर्त्तनके एक युगका उसकी ऋपनी चेतना द्वारा नहीं परख सकते, बल्कि हमें भौतिक जीवनके विरोधोंसे, सामाजिक उत्पा-दक-राक्तियों श्रौर उत्पादनकी स्थितियोंके बीच विद्यमान विरोधसे इस चेतनाकी व्याख्या करनी होगी । समाजका कोई रूप तब तक पतनोन्मुख नहीं होता. जब

तक कि उत्पादनकी सारी शिक्तयों अपने विकासकी अपनी निजी अवस्थाके अनुसार विकसित नहीं हो जातीं, और नये तथा कॅन्ने उत्पादक-सम्बन्ध पुरानों का स्थान तब तक नहीं प्रह्या करते, जब तक कि स्वय पुराने समाजके खोलके भीतर उनके अस्तित्वके लिये मौतिक स्थितियाँ विकसित नहीं हो जातीं। इसी-लिये मानवता किसी ऐसे कामको अपने सामने नहीं रखती, जिसके पूरा करनेकी अवस्थामे वह नहीं है। क्योंकि यदि हम वस्तुका और नजदीक परीच्या करें, तो हमें बरावर यही मिलेगा, कि कोई कार्य अपनेको पूरा करनेके लिये हमारे सामने तब तक उपस्थित नहीं होता, जब तक कि उसे पूरा करनेके लिये पहले हीसे मौतिक स्थितियाँ विकसित अथवा विकासोन्मुख न हो।

"श्राम तौरसे कहने पर (१) एसियाई, (२) क्लासिक (प्राचीन पूनानी)(३) सामन्ती श्रोर (४) श्राधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके ढंग श्राधिक, सामाजिक श्राकारोके प्रगतिशील युगोके नाम हो सकते हैं। पूँजीवादी (बूर्जा) उत्पादक-सम्बन्ध सामाजिक उत्पादनकी प्रक्रियाका श्रन्तिम विरोधी श्राकार—वैयक्तिक विरोधके श्रर्थमे नहीं, बल्कि ऐसे विरोधके रूपमें, जो कि व्यक्तियोंके जीवनकी सामाजिक स्थितियोंसे विकसित होता है—पैदा होता है। श्रस्त, बूर्जी-समाजके ढाँचेके मीतर विकसित हुई उत्पादक शक्तियाँ साथ ही ऐसी मौतिक स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं, जो इस विरोधको खतम करनेवाली हैं: इसिलये समाजके इस रूपके साथ मानवसमाजके प्रारम्भिक इतिहासका श्रन्त होता है।"

अपने इस महान् अंथके रूपमें मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रको एडेम्स सिम्थ, डेविड रिकाडों एवं दूसरे विचारको द्वारा स्थापित बूर्च्या राजनीतिक अर्थशास्त्रने सौदाके मूल्यका निर्धारण उसके उत्पादनमे आवश्यक अमके-समय-की मात्रा द्वारा किया था, वह उत्पादनके बूर्चा इंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन और स्वामाविक आकार मानता था, इसकिए वह समस्तता था, कि मूल्यका सजन मानव अम-शक्तिकी स्वामाविक विशेषता है, जैसा कि वह व्यक्ति-की सरकार अम-शक्ति में पाया जाता है। अपने इस निष्कर्षके कारण उसने अनेक विरोध पैदा कर दिये, जिनका समाधान करनेमें वह असमर्थ रहा। लेकिन इसके विरुद्ध मार्क्सने उत्पादनके बूर्ज्या-ढंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन श्रोर स्वामाविक श्राकार नहीं माना, बल्कि उसे केवल श्रपने पहलेके स्त्राकारोंकी परम्पराश्रोंके उत्तराधिकारी सामाजिक उत्पादनका एक निश्चित ऐतिहासिक श्राकार माना। इस दृष्टिकोण्यसे उन्होंने श्रम-शक्तिकी मृल्य-उत्पादक विशेषताकी पूरी तौरसे परीक्त्रण किया कि किस तरहकी श्रम-शक्ति मृल्य पैदा करती है श्रीर कैसे १ श्रीर क्यों मृल्य इस प्रकारकी श्रम-शक्तिका साकार छोड़ श्रीर कुछ नहीं है।

मार्क्सके इस महान् अन्थके महत्वको उस समय उनके सहकारी श्रीर मित्र भी श्रांच्छी तरह नहीं समभ सके, लेकिन धीरे-धीरे उसकी सच्चाइयाँ प्रकट होने लगीं। पैसे (Money) के सिद्धान्तके बारेमें मार्क्सने जिस तथ्यका प्रतिपादन किया, उसे चूज्वें श्रिश्चर्यशास्त्रियोंने भी चुपकेसे स्वीकार कर लिया, सात वर्ष बाद जर्मन राजनीति-श्रर्यशास्त्रके विश्वकोषने भी मार्क्सका लोहा माना। श्राज तो आधी मानवता मार्क्सके इसी राजनीतिक श्रर्यशास्त्रपर चल रही है।

श्रध्याय १३

मत्रमेद

१. लाजेलसे भगड़ा

एंगेल्सने मार्क्की सम्मतिसे "मो श्रीर राइन" के नामसे एक पम्भूलेट लिखा, निसे लानेल द्वारा फांज़ डुंकरने छुपनाया । आस्ट्रियाके हान्सतुर्ग राज-वंश इतालीकी प्रसिद्ध नदी पोको राइनकी प्रतिरत्नाका मुख्य स्थान कहता था। **त्राजकलके** श्रमेरिकनोंकी तरह राजवंशका भी राज्यका-लोम निस्सीम हो गया था। वह कहता था, कि जब तक इतालीकी भूमिको दाव करके रक्खा नहीं जायगा, तब तक हम जर्मनीकी रचा नहीं कर सकते । उधर फ्रास राइन नदीको अपनी प्राकृतिक सीमा मानता या । लेकिन प्राकृतिक सीमा ही राज्यसीमा हो, यह बहुत कम ही देखा जाता है। एगेल्सने ऋपने पम्फूलेटमें ऋास्ट्रियाके शासकोंके दावेको गलत कहा। पुरानी जर्मन कहावतके अनुसार गदहेके मतलवसे यह बोरीको पीटना था। यदि फाएके लिये राइनका बॉया तट अपने हाथमें करना श्रावश्यक है, तो जर्मनी पोके तटको कैसे छोड़ सकता है । मार्क्सने इस पम्फ्लेट-को पढकर एंगेल्सको लिखा था: "श्रमाधारणतया ठीक: इसका राजनीतिक पहलू मी, जो कि सौरा बहुत कठिन है। पम्फ्लेट बहुत सफल होगा।" लेकिन लाजेल एंगेल्सके विचारोंसे सहमत नहीं था। उसने "इतालियन युद्ध श्रीर प्रशियाके लिये करणीय" के नामसे तुरन्त एक पम्फलेट स्त्रापकर निकाल दिया. निसमें उसने एगेल्सके विचारोका खडन करते, अपने विचारोको रक्खा। दोनोंने एकही तरहकी रियतियोंका श्रपने पम्फुलेटमें उल्लेख किया था श्रीर उनके विचारोंमें मीलिक मतमेद नहीं था, वल्कि मार्क्यके एक साल बादकी रायके अनुसार यह "उन्हीं स्थितियोंसे परस्पर विरोधी निर्याय पर पहुँचना था।" दोनोंके राष्ट्रीय या क्रान्तिकारी विचार एक से थे, दोनों ही सर्वहाराकी मुक्ति ऋपना ऋन्तिम लच्य मानते थे, जिसके लिए बड़े जातीय राज्योंका निर्माण आवश्यक था।

जर्मन होनेके कारण दोनों जर्मन जातीय एकतामें सबसे अधिक दिलचस्पी रखते थे, जिसके लिए जरूरी था कि जर्मनीके मिन्न-मिन्न राजवंश समाप्त कर दिये जायें । दोनों ही जर्मन सरकारोंको पसन्द नहीं करते उनकी हार चाहते थे । युद्धके समय मज्रू-वर्ग अपनेको शासक-वर्गके हाथमें इस्तेमाल करनेके लिए दे दे, यह माव भी उनमें नहीं था । मार्क्स लाजेलको "मजबूत पट्टा" कहते थे और यह भी जानते थे, कि वह बूर्ज्या पार्टीसे कभी नहीं मिल सकता । लेकिन, मार्क्सका सन्देह अभी पूरी तौरसे दूर नहीं हुआ था ।

२. ''डास फौल्क''

दु:ख्यात किंकल फिर मैदानमें उतरा और उसने १ जनवरी १८५६ से एक "साप्ताहिक "डेर हेरमान" निकालना ग्ररू किया । कवि फ्राइलियथके स्रवसार : "देश लौटनेके लिए बेकरार वीरों" का वह बड़ा प्रिय मुखपत्र था। लेकिन. सभी बुर्जा निर्वासित पत्रसे प्रसन्न नहीं थे। मुक्त-त्यापारवादी फीखेरने "डी नोये जाइट" को बचानेके लिए धन-संग्रह करनेकी एक कमेटी बनाई, जिसमें वह सफल रहा श्रीरं एलार्ड विजकाग्पके सम्पादकत्वमें वह श्रव "डास फोल्क" (जनता) के नामसे निकलने लगा। विजकाप्म "डी नीये जाइट" में मफ-स्सिलसे लेख लिखा करता, कहीं ऋष्यापकी करता था। ऋब उसने ऋपना सारा समय इस कामके लिये देनेका निरुचय किया। पत्र निकलनेके थोड़े ही समय बाद लीबननेस्टके साथ मार्क्स मिलकर उसने ऋपने पत्रके लियें लेख माँगा। १८५० ई॰ में जो भागड़ा हुआ या तबसे उन्होंने कमकर शिक्षा लीगसे अपना. कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा था. बल्कि लीबक्नेख्टका लीगके साथ सम्बन्ध जोड़ना भी उन्हें पसन्द नहीं या। मार्क्ष लेख लिखनेके पत्तमें नहीं ये, लेकिन साथ ही वह नहीं चाहते थे, कि किंकेलको अखाड़ेमें अकेला छोड़ दिया जाय, इसलिए उन्होंने लीवननेख्टके पत्रमें सम्पादनमें बीजकाम्पकी सहायता करनेमें सहमति प्रकट की । श्रपने बारेमें कह दिया कि मैं श्रपने श्रीर एंगेल्स द्वारा सम्पादित पार्टी-पत्रके िवाय त्रीर में लेख नहीं लिख्ँगा | ''डास फोल्क'' का खर्च चलाना त्र्यासान नहीं था, यद्यपि एंगेल्स ऋपनी लेखनीसे उसे पूरी सहायता कर रहे थे।

श्राखिर श्रगस्तके श्रन्तमें पत्र बन्द हो गया। मार्क्सने श्रपनी श्रव्यवहारिकतासे पत्रके मुद्रक की बिलकी जिम्मेवारी श्रपने ऊपर ले ली, जिसने मार्क्सके ऊपर पैसेके दावा करनेकी धमकी दी श्रीर श्रन्तमे पाँच पौंड देकर मार्क्सने श्रपना पिंड छुडाया।

३. 'हिर फोग्ट"

१ अप्रैल १८५६ को एक जर्मन निर्वासित कार्ल फोग्ट इतालियन युद्धके प्रति जर्मन जनतात्रिकताका एक राजनीतिक प्रोग्राम जन्दनके निर्वासितोंके पास मेजा, जिसमे उसने स्वीजरलैंडसे एक नये साप्ताहिकके प्रकाशनके लिये लन्दन-वालोके सहयोग माँगा। फोग्ट फोलेड बन्धुत्र्योंका माजा था, जिन्होने जो कि फ्राक्फोर्ट एसेम्ब्रलीके वामपत्नी नेतात्रोंमेंसे ये इस तथा कथित पार्लियामेन्टमें त्रपने मरनेके समय राइखके पाँच रिजेन्टोंमेंसे एक फोय्टको भी बनाया था। फोग्ट इस समय जेनेवामें भूतत्वका प्रोफेसर था। प्रोग्रामकी एक कापी कवि फाइलिप्रथको भी मिली श्रीर उसने फोय्टके बारेमें मार्क्सकी राय पूछी । उन्होंने श्रनुकूल राय नहीं दी । मार्क्सने विस्तारपूर्वक एंगेल्सको बतलाया था : "जर्मनी अ-जर्मन भूमिको त्यागती है। वह आस्ट्रियाका समर्थन नहीं करती। फ्रेंच निरकुशता ऋस्यायी है, ब्रास्ट्रियन निरंकुशता स्थायी । दोनों निरंकुश ऋपनेको लोहूलोहान करते मरना चाहते हैं।...जर्मनीके लिये सशस्त्र तटस्यता। जर्मनीमें मारे जीवन तक किसी क्रातिकारी आ्रान्दोलन नहीं सोचना चाहिए। फोग्ट प्रत्यन्त विश्वसनीय स्रोतोंसे सूचना पाये हैं, जिसके परिणामस्वरूप जैसे ही प्रास्ट्रियाको बोनापार्त ध्वस्त करेगा, पितृभूमिमें कुमार-रिजेन्टके श्रधीन एक उदार-राष्ट्रवादी (नरम) दल खबा हो जायगा श्रीर फोग्ट हो सकता है दरवारी वेद्षक बन जाये।"

जूनके आरंभमें मार्क्स अपने मित्रो और सहानुभूतिकारोंसे "हास फोल्क" ही सहायताके लिये घन जमा करने मान्वेस्टर गये थे। उनकी अनुपिश्यितिमें तीत्रक्नेस्टको एक पम्फ्लेटका गेली प्रूफ मिला, जिसमे फोग्ट पर आक्रमण किया

^{*} Her Vogt

गया था, श्रीर उसके बारेमें व्लिंडके दोषारोप थे। कम्पोजिटर फ्रोगेलेने बतलाया कि पम्प्लेट तो स्वयं व्लिंडने दिया था, श्रीर गेलीमें प्रूफ शोधन भी उसीके हाथ का है। कुछ दिन बाद लीवक्नेख्टने उस पम्प्लेटकी एक छपी कापी पाकर उसे श्राम्यबुर्गमें "श्राल्गेमाइन जाइटुंग" पत्रमें भेज दिया, जिसका कि वह कितने ही व्यांसे संवाददाता रहता श्राया था। पम्प्लेटके साथ मेजे गये श्रपने पत्रमें उसने लिखा था, कि यह एक सम्भ्रांत जर्मन-निर्वासितका लिखा हुआ है श्रीर इसमें उल्लिखित दोषारोप प्रमाणित किये जा सकते हैं।

"अल्गेमाइन जाइटुंग" ने उसे प्रकाशित कर दिया, जिस पर फोग्टने पत्रके कार मानहानिका दावा कर दिया । पत्रने लीवक्नेख्टसे सबूत माँगे । लीवक्नेख्ट-ने न्लिंडसे जब इसके बारेमें पूछा, तो उसने कहा कि उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, श्रीर न मैंने पम्फ्लेट लिखा है। यद्यपि उसे बाध्य होकर इतना मानना म़ड़ा, कि पम्प्लेटकी कुछ बातें मैंने मार्क्सको बतलाई थीं, तथा उनमेंसे कुछको त्र्यर्भहार्टके पत्र "दि फ्रीप्रेस" में छपवाया था। स्राग्सबुर्गमें स्रभी मुकदमा खुला नहीं था, इसी समय १० नवंबर (१८५६) को जर्मन महाकवि शिलेरकी त्रातान्दी मनानेकी तैयारी हुई । इसमें एक श्रीर वैमनस्य उठ खड़ा हुआ : देशके वाहरके जर्मनोंने हर जगह महोत्सवकी तैयारी की थी, लन्दनमें भी उसकी तैयारी हुई, जिसके प्रवन्धको किंकलकी मंडलीने ऋपने हाथमें कर लिया और उसने जन्दनके प्रशियन दूतावासके लोगोंको भी निमंत्रित किया, दूसरी तरफ जर्मन सर्वहारा निर्वासितोंको उससे ऋलग रखनेकी कोशिश की। ऐसी स्थितिमें मार्क्स श्रीर एंगेल्स उसके साथ सहानुभृति नहीं एव सकते थे। उनको श्राश्चर्य हुआ जय फ्राइलिग्रथने किंकलके भाषण्के वाद वहाँ एक कविता पढ़ी। उसके वाद र्किकलके पिट्ठू वेटजीख उपनाम वेटाने कविकी प्रशंसा करते हुये पत्रमें एक लेख छाप दिया, जिसके अन्तमें मार्क्सपर भी आक्रमण किया । मार्क्स और फ्राइलिअथ के बीचके इस सबके कारण वैमनस्य पैदा हो गया, लेकिन दोनोंकी मित्रता श्रकरमात नहीं हुई थी, इसलिये दो-एक पत्रोंकी लिखा-पढीके वाद १८५६ ई० के समाप्त होनेके साथ यह वैमनस्य भी खतम हो गया।

१८६० ई० के नववर्षके समय फोग्टने "श्रल्गेमाइन जाइटुंगके विरुख

मेरी कार्रवाई" के नामसे एक पुस्तक छापी, जिसमें मुकद्मेकी सारी कार्रवाई श्रीर सबृत पूरी तौरसे बड़ी शुद्धताके साथ सम्मिलित किये गये । साथ ही उसने मार्क्सपर भी श्राक्रमण करते हुये अपने एक पहले लेखको उद्धत किया, जिसमे मार्क्सको गुन्डोकी महलीका नेता वतलाया था श्रीर पितृभूमिक लोगोंको तंग करके उनसे पैसे ऍउनेवाला कहनेसे भी आनाकानी नहीं की थी: "एक पत्र नहीं, बल्कि सैकडो पत्र लोगोके पास जर्मनी मेजे गये, जिनमे धमकी दी गई. कि एक निश्चित रकम यदि निश्चित पते और निश्चित तिथि-पर नहीं मेजेंगे, तो इस या उस ऋतिकारी कार्रवाईमें माग लेनेके लिए उनके भेदको खोल दिया जायगा।" भोग्टने, सच्ची बातोंके साथ सोलहो स्त्राना मूठी बातोंको मिलाकर मानर्संके ऊपर, ऐसे कओर ब्रान्तेप किये थे, कि जिनमे क्या उच है क्या भूठ है, इसका पता लगाना मुश्किल था। जर्मनीमें इस पुस्तक्से बढी सनसनी फैली श्रीर मार्क्सके विरोधी सारे वृद्धी-प्रेसने उसका स्वागत किया। "नैशनल जाइटुंग" ने फोय्टकी पुस्तकके श्राधारपर दो लम्बे सम्पादकीय लेख लिखे । जनवरीके अन्तमें जब पत्रकी कापियाँ लन्दन पहुँची, तो वहाँ मार्क्षके परिवार— विशेषकर फाउ मार्क्स-को बहुत धक्का लगा । लन्दनमें फोग्टकी पुस्तक कहीं नहीं मिली, तो मार्क्सने फाइलिय्रथसे पूछा कि तुम्हारे "मित्र" फोम्टने कोई कापी मेजी होगी, उसे देना । फ्राइलिप्रथको यह बहुत खुरा लगा श्रीर उसने कहा, कि फोग्ट मेरा मित्र नहीं है और न मैंने उससे कापी पाई 1

श्रपने रूपर वैयक्तिक आक्रमण्का जवाब देना मार्क्स पसन्द नहीं करते थे, लेकिन इस वक्त वह उसे अत्यन्त आवश्यक सममते थे, साथ ही "नेशनल जाइटुंग" के रूपर मानहानिका दावा करनेका मी उन्होंने निश्चय कर लिया। लास कर अपनी बीबी और लडकियोंके रूपर जो कायरतापूर्ण आच्चेप उस पत्रने किये थे, उसके लिये न कुछ करना वह पसन्द नहीं कर सकते थे। मार्क्सने पहले व्लिंडसे फोस्टके बारेमें किये गये आच्चेपका सबूत माँगा, लेकिन उसने आनाकानी की। एंगेल्सका एगाल था, कि हेर फोस्टपर जो दोष लगाये गये, उन्हें व्लिडने स्वय गदा। इसके बारेमें पूरी जॉच-पदताल करनेके बाद ४ फर्सरी-को मार्क्सने "दि फ्री प्रेस" में एक घोषणा निकाली, कि बिना नामका छुग पम्फ्लेट होलिंगरके प्रेवमें नहीं छुपा, यह कहना गलत है। कार्ल किलंड मूठा है, श्रगर वह इसे अनुचित सममता हो, तो मेरे ऊपर श्रंप्रेजी श्रदालतमें मुकदमा कर सकता है। बिलंड को मुकदमा चलानेकी हिम्मत कहाँ थी, हाँ, उसने "श्रलगेमाइन जाइटुंग" में श्रपना एक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित कराया, जिसमें फोरकी निन्दाकी, श्रौर उसके ऊपर रिश्वत लेनेका श्राचिप किया, साथ ही उक्त पम्फ्लेटका लेखक होनेसे इन्कार किया। मार्क्स इतनेसे जान छोड़ने वाले नहीं थे, उन्होंने मिजिस्ट्रेटके सामने वीहसे यह चक्तव्य दिलवाया, कि वीहेने "डास फोलकमें" छुपने के लिये उस पम्फ्लेटको कम्पोज किया था, श्रोर गैली प्रका संशोधन व्लिंडके हाथों हुआ था, जिसे में पहचानता हूँ। मुफे वक्तव्य देनेसे होलिंगर श्रोर व्लिंडने रोका। पहलेने पैसेका लोम दिलाकर श्रीर दूसरेने भविष्यमें छुपा रखनेके वादेसे। इस इजहारके बाद व्लिंडपर मुकदमा चलाया जा सकता था, लेकिन उसके परिवारके ख्यालसे मार्क्सने वैसा नहीं किया। मार्क्सने वीहेके इजहारकी एक कापी छुई व्लांकके पास मेज दी, जो व्लिंडका मित्र था, जिसमें यह भी लिखा था, कि क्यों मैंने श्रागे कार्रवाई करना छोड़ दिया।

इस तरह फोग्ट-कांडकी जड़ तक पहुँचनेके बाद अब उसका जवाब देना था, लेकिन उससे पहले फाइलियथके साथ मनमुटावका दूर करना आवश्यक था। मानसेने कविके पास वीहेके इजहार और न्लिंडके विरुद्ध अपने वक्तव्यकी कापी भेजी, लेकिन कविने उसका कोई जवाब नहीं दिया। मार्क्सने फिर लिखा: "यदि मैंने किसी तरह तुमको नाराज किया हो, तो मैं किसी समय मी अपनी भूलको खुशीसे माननेके लिथे तैयार हूँ। कोई मी मानवीय बात मेरे लिथे पराई नहीं हो सकती।...हम दोनों अच्छी तरह जानते हैं, कि वर्षों तक हममेंसे हरेकने अपने दंगसे अदयन्त निःस्वार्थ मावसे अपने निजी हितांकी अवहेलना करते हुये अत्यन्त मेहनती और अत्यन्त दुःखपीड़ित वर्गके फोड़को ढोंगियोंके सिरके ऊपर रक्खा। इतिहासके प्रति यह एक जुद़ अपराध होगा, यदि हम

^{* &}quot;Das Volk"?

छोटी-छोटी बातोंमें, किसी गलतफहमीके कारण अलग-अलग वह चलें। पत्रको समाप्त करते हुये मार्क्सने कविके प्रति अपनी गहरी मित्रताके मावको प्रकट किया। फाइलिग्रथने मित्रताके लिये आगे बढ़े हाथको अपने हाथमें लिया जरूर लेकिन पूरी तौरसे नहीं, जैसा कि उसके पत्रके अन्तिम भागसे मालूम होता है, "मविष्यमें भी मैं स्वतन्त्र, केवल अपने अधीन अपनी जानमें उचित कामको करनेके लिये स्वतन्त्र रहना चाहता हूँ।"

फोग्टके ऊपर मुकदमा चलानेके बारेमें लाजेलकी राय नहीं थी और सच-मुच मुकदमा करनेपर प्रशियन अदालतने चन्रतके अपर्याप्त होनेके कारण उसे खारिज भी कर दिया। ऋपीलमे भी वही बात हुई। श्रव मार्क्सको पुस्तकके रूपमें जवाब देनेके सिवा और कोई चारा नहीं था। लेकिन, पुस्तक लिखने तथा फोग्टके उठाये सभी ऋफवाहों श्रीर दोषोंको दूर करनेके वास्ते दुनियाके मिन्न-भिन्न मागोमें बिखरे हुये लोगोसे लिखा-पढ़ी करके सामग्री जमा करना जरूरी या। उसमें काफी समय लगा श्रीर अन्तमें १७ नवम्बर १८६० ई० की हेर फोग्टके नामसे मार्क्सने श्रपनी पुस्तक तैयार की । मार्क्सकी यह कृति तब तक पुन: प्रकाशित नहीं हुई, जब तक कि बोल्शेविक-क्रान्तिके (१६१७ ई०) सफल होनेके कितने वर्षों बाद मास्कोके मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन प्रतिष्ठानने उसे प्रकाशित नहीं किया। पुस्तक छोटी नहीं, बल्कि १६२ घने छुपे हुये पृष्ठोंमें समाप्त हुई थी, जिसे साधारण तौरसे छपनेपर दूनी जगहकी आवश्यकता होती। भाषाके चमत्कारको दिखलानेमें यह एक सुन्दर साहित्यिक कृति है। प्रत्तकका विषय रूखा या, लेकिन उसमें मार्क्सने बड़ी रोन्वकता भर दी है, साथ ही जगह-जगह मुहावरों श्रीर उद्धरगोसे पता लगता है, कि मार्क्का प्राचीन श्रीर श्चर्वाचीन साहित्यसे कितना विस्तृत परिचय था। मार्क्सके इस काममें लोगोने जगह-जगहसे नहतसी ज्ञातच्य वाते मेजी थीं । एक-एक करके अपने ऊपर किये गये सभी श्राचिपोंका मार्क्सने जवाब दे. फोरटके कपर श्राक्रमण किया। फ्रासमें-नकली बोनापार्वके शासनके खतम होनेके बाद जो कागज-पत्र राष्ट्रीय प्रति-रचाको सरकारने प्रकाशित किये, उनमें ऋगस्त १८५६ ई० में फोग्टके हस्ताच्चर-वाली एक रसीद मी मिली, जिसमें तीस चॉदीके सिक्कोंके पानेकी स्वीकृति दी

गई थी। मार्क्सने अपनी पुस्तकमें लिखा था, कि हेर फोग्टको बोनापार्तने अपने पद्ममें प्रोपेगेंडा करनेके लिये पैसा दिया था। इस पुस्तकसे तत्कालीन यूरोपके कई मीतरी पहलुओंपर प्रकाश पड़ता है। लोदर बुखेरने पुस्तकको समसामयिक इतिहासका एक संग्रह ग्रंथ वतलाया था, लाजेलने हरेक दृष्टिसे "मास्टरपीस" कहा था। एंगेल्सने इसे खंडन-मंडनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक माना "१८ वीं बूमियेरसे भी; यद्यपि "१८ वीं बुमेरका" जितना स्थायी महत्व आज भी है, उतना "हेर फोग्ट" का नहीं रहा। आद्येप और खंडन-मंडन करते समय भी मार्क्स कहीं नीचे नहीं उतरे। आउ मार्क्सके अनुसार "हमारा पुराना शत्रु क्ये भी मानता है, कि यह कितात्र एक सुन्दर प्रहसन है।" एंगेल्सने जर्मनीमें पुस्तक छुपवानेकी सलाह दी, लेकिन मार्क्सने लिये भी पचीस पाँड अग्रिम दिया। पुस्तक छुप तों गई, लेकिन जर्मनीमें उसके बेचनेका कोई प्रवन्ध नहीं किया जा सका। मार्क्सने श्राप्तम दिये पैसोंमेंसे कुछ नहीं लौटा। यही नहीं, बल्क प्रकाशकके पार्टनरने धमकी देकर छुपाईके सारे खर्चको मार्क्ससे वस्ल किया—पचीस पाँड अग्रिम देते वक्त मार्क्सने कोई कागज-पत्र नहीं लिखवाया था।

४. घरेलू स्थिनि

फोग्टने फाउ मार्क्स (श्रीमती मार्क्सके) ऊपर जो घृष्णित आच्चेप किये थे, उसके कारण जेनी दृदयको भारी आघात लगा था । कई रातें उन्हें नींद नहीं आई और स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो भी मार्क्सके जवाबकी शुद्ध कापी तैयार करनेमें उन्होंने भारी महनत की । इस कामके समात होते-होते जेनी चारपाईपर पड़ गई । डाक्टरने चेचककी बीमारी बतलाई और बच्चोंको तुरन्त घरसे अलग करनेके लिये कहा । बच्चे लीवक्नेख्टके पास मेज हिये गये और मार्क्स तथा घरकी अनुरक्त नोकरानी लेनचेन देमुथ जेनीकी सेवा-मुश्रुशा करने लगे । वह ज्वालाके मारे तहफड़ाती रहीं, लेकिन मार्क्स एक घंटेके लिये भी पत्नीके पाससे हटनेको तैयार नहीं थे । जेनी एक सप्ताह तक जीवन और मृत्युके भूलेमें भूलती रहीं । खैरियत यही हुई, कि दो बार चेचकका टीका लगा चुकी थीं, इसलिये

परम अनिष्ट नही होने पाया । बीमारीके पजेसे क्रुटनेके बाद भी उन्हें बहुत दिनों तक दुर्जल रहना पडा । डाक्टरने वतलाया खैरियत हुई को बीमारी कि हो गई नही तो जिस तरहका मानसिक परिताप श्रीर ज्ञोम उनके ऊपर पड रहा था, उसके कारण श्रीर कोई भयकर श्राफ्त सिरपर श्राती। फाउ मार्क्सके रोग-मुक्त होनेके साथ ही अत्र अपनी शारीरिक और मानसिक परेशानीके कारण मार्क्स बीमार पढ गये. जिसमे ऋार्थिक चिन्ता मी कारण थी. क्योंकि "हरफोग्ट" में घाटा ही घाटा सहना पडा था श्रीर उघर न्यूयार्क ट्रिब्यून श्रव श्राधा ही पारिश्रमिक दे रहा था। बीमारीसे उठनेके बाद मार्क्सने इघर-उधरसे कुछ पैसा लानेका निश्चय किया, जिसके बारेमे उनकी पत्नीने फाउ वेडेमेयरको लिखा था : "श्रपने वाप-दादों तथा तम्त्राकृ श्रीर पनीरकी भूमि हालेंड तक धावा मारने जा रहे हैं ताकि ऋपने चचासे कुछ प्राप्त करनेकी कोशिश करें।" यह पत्र जेनी ने १६ मार्च १८६१ को लिखा था। इन सारे कष्टोमे तीनों लडकियाँ पिता-माताके स्नानन्दकी सबसे बढ़ी साधन थी। सात सालकी जेनी 'स्नपने बाप जैसी काले वालों, काली आँखों और सॉवले शरीरवाली थी। पन्द्रह सालकी लोरा श्रिधिकतर माँ जैसी थी, उसके वाल घॅघराले तथा भूरे, उसकी पुतलियाँ माँकी तरह चमकीली तथा हरे रंगकी थीं। दोनो वडी लडिकियाँ वडी सुरूप थीं, लेकिन उनमें किसी तरहका व्यर्थका अभिमान छू नहीं गया था। दोनों मॉ-बापको तो प्रिय थी ही, लेकिन सबसे छोटी एलिनोर घरकी प्रिय गुडिया थी, जिसे प्यारसे दूसी कहा जाता था । मॉने उसके बारेमे लिखा था : यह बच्ची उस वक्त पैदा हुई, जन्निक हमारा बेचारा नन्हा एडगर मरा। हमारे हृदयमे उसके प्रति जो प्रेम श्रीर कोमल भाव थे. उन सबको हमने उसकी बहनके ऊपर स्थानातरित कर दिया, स्नार दोनो बड़ी बहने मॉकी तरह उसकी देखमाल करती हैं। साथ ही इतना प्यारके लायक, चित्र जैसा सुन्दर श्रीर स्त्रभावका मधुर वच्चा पाना मुश्किल होगा।...हम सत्र ऊँचे स्वरसे उसके सामने परियोंकी कहानियाँ पढते-पढते थक जाते हैं, लेकिन हमारी बुरी गति हो, अगर नीली चिड़िया या नन्हें हिमश्वेत...की कहानीका एक शब्द भी छोड जाये । इन परियोंकी कहानियोंके सुननेके कारण लड़कीने जर्मन सीख लिया और वह उसे ग्रत्यन्त शद्ध तथा

न्याकरणानुसार बोलती है, श्रीर साथ ही श्रॅंग्रेजी भी यों ही सीख गई है। बच्ची. कार्लको बहुत प्रिय है। उसकी हँसी, उसकी मीठी-मीठी बातें बापकी सारी परे-शानियाँ दूर कर देती हैं। फिर जेनी अपने श्रनुरक्त मित्र तथा नौकरानी लेनचेन की तारीफ करती अपने पतिकी बातको दोहराती हैं: वह कहेगा, कि इसके (लेनचेन) के रूपमें तुम्हें एक मारी निधि मिली है। वह सोलह वर्षोंसे हमारे साथ है, हमारे जीवनके उतार-चढ़ावका उसने बड़ी बहादुरीसे सामना किया।

हालेंडमें मार्क्सका ग्रिमियान सफल रहा। वह वहाँ ग्रिपने चचा फिलिप मार्क्स मिले। फिर बर्लिन गये। इच्छा थी पार्टीका मुखपत्र निकालनेके लिये कुछ भैसा जमा करें। प्रशियाके तख्तपर श्रलहेल्म वैटा था, जिससे जनवरी १८६१में सार्वजनिक चमा प्रदानकी घोषणा की थी, जिसीके कारण मार्क्सको जर्मनी जाने का सुभीता मिला था। लाजेलने बर्लिनमें उनका स्वागत किया। बर्लिनमें मार्क्स को कोई ग्राकर्षण नहीं मालूम हुग्ना। लाजेलने स्वयं पत्र निकालनेका सुभाव स्वया श्रीर सम्पादकके लिये ग्रपने साथ मार्क्स श्रीर एंगेल्सको रखनेका भी प्रस्ताव किया। लेकिन, मार्क्सका लाजेलपर उतना विश्वास नहीं था। प्रशियामें उदारवादका दिखावा चाहे कितना ही किया जाय, लेकिन वह मार्क्स जैसे ज्यादमीको ग्रपने भीतर पचा नहीं सकती थी। लाजेलने भी कोशिश की कि मार्क्सको फिर प्रशियन नागरिकता का श्रिधकार मिल जाये, लेकिन सरकारके जवाब देह मंत्रियोंने उसे स्वीकार नहीं किया।

वर्तिनसे प्रस्थान करके मानर्स अपने मित्रोंसे मिलने कोलोन गये, खासकर जुदिया माँसे मेंट करना वह जरूरी समम्तते थे। मईके आरम्भमें फिर वह लंदन लौट गये। वर्तिनमें रहते वीनाके पत्र "ही प्रेस" से उन्होंने बातचीत की, और पत्रने प्रत्येक लेखका एक पौंड और प्रत्येक रिपोर्टका दस शिलिंग देना स्वीकार किया। इसी समय "न्यूयार्क ट्रिंग्यून" से भी सम्बन्ध बेहतर हो गया। इस तरह रुपयोंकी आमदनी कुछ, वढ़ी जरूर, लेकिन पुराने कर्जे पूरी तरह अदा नहीं हो सके। बीमारी और जर्मनीकी यात्रामें खर्च भी अधिक हो गया।

१८६२ ई० में हालत बेहतर होनेकी जगह वह श्रीर खराब हो गई। 44डी प्रेस" से जो श्राशा थी, वह पूरी नहीं हुई। मार्चमें मार्क्यने एंगेल्सको लिखा था : "मुमे इसकी अधिक पर्वाह नहीं है, कि वह सबसे अच्छे लेखों... को नहीं छापते, लेकिन आर्थिक तौरसे मेरे लिये यह बद्दितसे बाहरकी बात हो जाती है, जब कि वह चार या पाँच लेखोंमें सिर्फ एकको छापते श्रीर उसीका पारिश्रमिक देते हैं। जिससे पैसा पॉतीवाले लेखकके दर्जेंसे भी सुके नीचे गिरना पदता है। " इसी साल "न्य्यार्क ट्रिव्यन" से सम्बन्धविच्छेद हो गया, कारण शायद श्रमेरिकाका ग्रह-युद्ध था। यद्यपि यह युद्ध मार्क्सके लिये वैयक्तिक घाटे-का कारण हुन्ना, लेकिन राजनीतिक सम्मावनान्त्रोंके वढ़ जानेके कारण वह फिर अपने वैयक्तिक कर्ष्टोंको भूल गये। मार्क्सने अमेरिकन यह-युद्धके वारेमें उत्तरी राज्योके श्रांतिम विजयपर श्रपना पूरा विश्वास मकट किया, श्रीर सितम्बर में अपने मित्रको लिखा था, "नहाँ तक यकियों (अमेरिकनों) ना सम्बन्ध है, मैं ऋब भी पूरी तरह विश्वास रखता हूँ, कि वे (उत्तरी राज्य) विजयी होंगे। जिस तरह वह लडाइयाँ लड रहे हैं, वह इतने दिनों तक घोखा-धर्डीसे शासन करनेवाले बूर्ज्या-गण्राज्यके लिये बिल्कुल स्वामाविक है। दिल्लिणी रियासतीका शासन कुलीनशाही है श्रीर युद्ध करनेके लिये कुलीनशाही ज्यादा ऋनुकूल है, खास करके दिख्यी रियासतोंकी कुलीनशाही, जहाँपर कि सारा उत्पादक श्रम निगर (हन्शी) करते हैं, श्रीर चालीस लाख गोरे पेशेसे छुटेरे हैं। लेकिन यह सब होते हुये भी मैं श्रपने सिरकी बाजी लगानेके लिये तैयार हूं, कि श्रन्तमें इन पट्ठोंको सबसे बुरे दिन देखने होंगे।" मार्क्सका निचार अन्तमें सच निकला ।

श्रार्थिक कठिनाइयाँ बहुत बढ़ चुकीं थीं, पानी नाक तक आ गया था।
मार्क्सने ४८ वर्षकी उमरमें किसी रेलवे कम्पनीकी नौकरी मी करनी चाही थी,
लेकिन लिखावट अच्छी न होनेके कारण उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली।
आर्थिक अवस्था जैसे-जैसे खराब होती गई, वैसे-वैसे मार्क्सको वार-वार वीमार
पडना पडा। पुरानी पेटकी वीमारीके अतिरिक्त अब जहरवादके फोड़ेका भी
आक्रमण हुआ, जो कि कई वर्षों तक पिंड छोड़नेके लिये तैयार नहीं था।
वीबीका स्वास्थ्य भी विल्कुल खराब हो चुका था। लडकियोंके।पास कपड़ा और
जूता नहीं था, कि स्कृल पढनेके लिये जायं। उनकी सहेलियाँ उस वक्त

इंगलैंडकी महान प्रदर्शनी देखने जाया करती थीं, लेकिन अपनी गरीबीके कारण मार्क्षकी लड़कियाँ मन मारे घरमें बैठी रहतीं। बड़ी लड़की लौरा अब इस अवस्थाकी हो गई थी, कि अपनी स्थितिको समसे, इसलिये वह धुल-धुलकर मरी जा रही थी, बाप-माँको बतलाये बिना एक बार उसने रंग-मंच पर जानेके लिये शिचा लेनी भी शुरू की थी।

अन्तमें अवस्था यहाँ तक बुरी हो गई, कि मार्क्सने अपना सारा फर्नीचर घरके मालिकके लिये छोड़ देनेका निश्चय किया और यह मी कि अपने कर्जें देनेवालोंको दिवालिया होनेकी स्चना दे दें, दोनों लड़कियोंको अपने मित्रोंके द्वारा किसी परिवारमें गवर्नेंस रखवा दें, अनुरक्त लेनशेन देमोथको कोई और काम दिलवा दें और अपनी छोटी लड़की तथा वीबीके साथ गरीबोंके लायक किसी कोठरी में चले जायं।

लेकिन, एंगेल्सने मार्क्सके इस निश्चयको प्रा होने नहीं दिया। १८६० ई॰ के वसन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये श्रीर एरमेन तथा एंगेल्स फर्ममें उनको अच्छा स्थान मिल गया, जिससे आगे वह पार्टनर भी बन सकते थे। लेकिन, इसी समय ग्रमेरिकन गृह-युद्धके हो जानेके कारण व्यवसाय की हालत अन्छी नहीं रही और उन्हें स्वयं अपना खर्च कम करना पड़ा। तो भी एंगेल्सने मार्क्स की सहायता करके उनको उनके इरादेसे वाज रक्खा । १८६३ ई० के आरंभिक महीनोंमें एंगेल्सको भी एक भारी दुःखका सामना करना पड़ा। दस वर्षोंसे वह एक त्राइरिश तक्ली मेरी वर्न्सके साथ पति-पत्नीके तौरपर किन्त समाजके मुहर विना रहते श्राये थे। इसी साल मेरी मर गई। एंगेल्सको भारी मानसिक श्राघात लगा। मार्क्को इसके बारेमें लिखते हुये उन्होंने कहा था: "मैं श्रपने भावोंको बिल्क्सल ही वर्णित नहीं कर सकता। बेचारी लड़की पूरे दिलसे मुफे प्यार करती थी।" एंगेल्सको त्र्याशा थी, कि मार्क्षके लिये चान्त्वना ग्रधिक शन्दोंमें प्रकट करेंगे, लेकिन जो शन्द नवावमें मिलें, वह थोड़े और निर्वल थे, जिसके बाद घरकी श्रार्थिक कठिनाइयोंका रोना था। एंगेल्सको मार्क्सका यह वर्ताव बरा लगा । एंगेल्सने भी पत्रका जवाव कछ देरसे ही देना ग्रच्छा समभा श्रीर मानसेने भी कुछ श्रीर दिल ठंडा हो जाने तक श्रपने मित्रको लिखनेकी

जल्दी नहीं की । फिर मार्क्सने चिट्ठी लिखते वक्त "हृदयहीन होने" से इन्कार करते हुये यह स्वीकार किया, कि मैंने उचित सहानुभूति प्रकट करनेमें कोताही से काम लिया । एगेल्सको सबसे वही शिकायत यह थी, कि श्रीमती मार्क्सने उनके इस दु:खमें एक भी सहानुभूतिका शब्द नहीं लिख भेजा । इसपर मार्क्सने लिखा: "स्त्रियाँ विचित्र जन्तु हैं, उनमें श्रत्यन्त बुद्धिमान भी । सबेरे मेरी स्त्री मेरीकी मृत्यु श्रीर तुम्हारे दु:खके लिये इतनी रो रही थी, कि वह श्रपने दुर्भाग्य को विलक्षल भूल गई, जो कि उसी दिन ऊपर पढ़ा था, लेकिन शामको वह श्रनुभव करने लगी, मानो तब तक दुनियामे कोई जानता ही नही, दु:ख क्या है, जब तक कि घरमें कर्ज उगाहनेके लिये श्रमीन न श्रा जाय, या वच्चोंके खिलानेकी चिन्ता न हो।"

एंगेल्सने अपने सारे मानोंको मूलकर दुरन्त लिखा: "कोई आदमी नर्षों तक एक स्नीके साथ रहनेके बाद, हो नहीं सकता, कि वह उसकी मृत्युपर मारी दुःख न अनुभव करे। मैं अनुभव करने लगा, कि उसके साथ मेरी जवानी भी कब्रमें दफना दी गई। जिस समय मैंने दुम्हारा पत्र पाया, उस समय तक अभी वह दफनाई नहीं जा चुकी थी। साफ कहूँ, दुम्हारा पत्र एक सप्ताह तक मेरे सिरमें चक्कर काटता रहा, मैं उसे भुला नहीं सकता था। खैर, दुम्हारे अन्तिम पत्रने सब ठीक कर दिया। और मैं दिलसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ, कि मैंने मेरीके साथ अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं खो दिया।" यह प्रथम और अन्तिम मनमुद्राव था, जो कि इन दोनो मित्रोंके सारे जीवनमे एक दूसरेके प्रति देखा गया।

एगेल्सने दौड-धूप करके एकसौ पौड इकट्ठा करके दिया, जिससे मार्क्स रियति कुछ सुधरी श्रीर उन्हें श्रपने घरको छोड दूसरी जगह जानके लिये मज्यूर नहीं होना पडा। इस प्रकार १८६३ ई० का साल किसी तरह गुजर गया, जिसके श्रन्तमें मार्क्सकी माँ मर गई, लेकिन माँसे शायद बहुत थोडा ही बहुत दायमागका मिला। हाँ, विलहेल्म वोल्फने श्राठ या नौ सौ पौड मार्क्सके लिये छोड़े थे, जिससे उनको बड़ी सहायता मिली। विलहेल्म वोल्फ १८६४ ई० में मरा, जिसका मार्क्स श्रीर एगेल्सको बहुत दुःख हुआ। मरते समय

वोल्फ्की अवस्था अभी ५५ साल हीकी थी। वह कुछ ही वर्षों के निर्वासित जीवनके बाद मैन्चेस्टरमें कुछ कारबार करने लगा था और मरनेसे कुछ ही समय पहले बापकी वरासतमें से भी कुछ सम्पत्ति उसे मिली थी। वोल्फने अपने धनका उपयोग इससे बढ़कर अच्छा नहीं सममा, कि उसे अपने गुरुके चरणों में मेंट कर दें। मार्क्चने पीछे अपने अमर अंथ "डास किपटाल" के प्रथम भागको "अविस्मरणीय मित्र, और सर्वहाराके बहादुर, ईमानदार और भद्र अप्रदूत" कहकर विल्हेल्म वोल्फ्को समर्पित किया था। १८६३ ई० के साथ मार्क्चके जीवनसे सारी किठनाइयाँ और चिन्तायें यद्यपि समाप्त नहीं हो गई, लेकिन वह फिर उसी मात्रामें कभी नहीं लौटों। इसका एक कारण यह भी था, कि सितम्बर १८६४ ई० में एंगेल्स अब अपने फर्ममें पार्टनर हो गये थे और तबसे वह और अधिक परिमाण्यमें लगातार सहायता देने लगे थे।

४. लाजेल आन्दोलन

जुलाई १८६२ ई० में लाजेल लन्दन स्राया। यह वह समय था, जब कि मार्क्स-पितार भीषण स्रार्थिक कष्टमें पड़ा हुस्रा था, तो भी मार्क्स-पत्नी शिष्टा-चार-प्रदर्शन करनेमें किसी तरह पीछे नहीं रहना चाहती थीं। लाजेलको घरकी स्थितिका कोई पता नहीं था। कई स्प्ताहों तक लाजेलकी मेहमानी होती रही स्रीर जानेके समय ही उसे वास्तविकता का पता लगा। फिर उसने वर्षके स्रन्तमें पन्द्रह पौंड देनेकी बात कहते हुये यह भी बतलाया कि एंगेल्स या किसी दूसरे की जमानत पर मेरे खातेसे मार्क्स हुएडी भी ले सकते हैं। मार्क्सने बोर्क-हाइम की सहायतासे चार सौ थालर लेना चाहा, इस पर लाजेलने एंगेल्सकी जिम्मेवारी चाही, जिसका साफ मतलब था कि वह मार्क्स पर विश्वास नहीं करता है। मार्क्सने यह बहुत बुरा लगा, लेकिन एंगेल्सने उन्हें समभाया स्रीर जमानत देना स्वीकार कर लिया। उस समय तो लेनदेन हो गया, लेकिन स्रन्तमें यही मार्क्स स्रीर लाजेलमें गलतफहमीका एक भारी कारण बना। राजनीतिक मतभेद भी उठ खड़ा हुस्रा था, जिसके कारण १८६३ ई० के स्रारम्भमें मार्क्सने लाजेलके साथ पत्र-व्यवहार वन्द कर दिया था। लाजेल

श्रपने शुरु मार्क्सनी हेरेक बातका मूल्य समक्तता था, लेकिन श्रपनी कमजोरियों-के कारण वह उन्हें असन्तर कर बैठा। मार्क्स अतिमानव नहीं ये--श्रीर दुनियामे दोगी ही अतिमानव हो सकते हैं। मार्क्स साफ कहते थे, कि मानवके लिये सम्भव कोई भी बात मेरे लिये पराई नहीं है। लाजेल मार्क्स श्रीर एगेल्स-के जीवनमें प्राप्त अनुयायियोंने अत्यन्त चमत्कारिक व्यक्ति था, लेकिन वह अपने गुरुद्वयके मौलिक सिद्धान्त-ऐतिहासिक मौतिकवाद-को अच्छी तरह कमी न समक्त पाया। हेगेलके वारेमे कहा जाता है, कि शैय्या पर पडे हुये उसने अपने शिष्योंके वारेमें कहा था उनमेरी केवल एकने मुक्ते समस्ता, श्रीर उसने भी गलत समभा । लाजेलने मार्क्सके मूल्य-सिद्धान्तके एक ही श्रंशको स्वीकार किया, जो कि उसके वैधानिक और दार्शनिक दृष्टिसे दुनियाके देखनेके लिये अनुकूल या : स्राम सामाजिक अम-समय-जो कि मूल्यका निर्णय करता है, स्रपनी मेहनतकी पूरी उपज कमकरको प्राप्त करनेके लिये आम सामाजिक उत्पादन आवश्यक कर देता है। लेकिन मार्क्षके लिये मूल्य-सिद्धान्त उत्पादनके पूँजीवादी ढंगकी सभी पहेलियोंका हल या। मूल्य श्रीर श्रतिरिक्त मूल्यके निर्माणकी ऐतिहासिक प्रक्रिया के तौरपर यह कुंजी थी, जोकि अनिवार्यतया समाजकी पुंजीवादी व्यवस्थाको समाजवादी व्यवस्थामे बदलकर रहेगी। लाजेल उस मेदको नहीं देख सका, जो कि उपयोग-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्ति श्रीर विनिमय-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्तिके परिणामस्वरूप होती है। श्रमका सौदेके रूपमें मौजूद उसका दोहरा स्वरूप मार्क्स लिये "मौलिक बात" थी, जिसके ऊपर ही राजनीतिक अर्थशास्त्रका समसना निर्भर करता था।

मार्क्स श्रीर लाजेल दोनोकी मृत्युके बाद एंगेल्सने लाजेलके ढगकी सराहना की थी। १८८६-८७ ई० में युक्तराष्ट्र श्रमेरिकामें सर्वहारा-श्रान्दोलन बढ़ने लगा किन्तु उसके प्रोग्राम गलत-सलत थे। उसी समय एगेल्सने श्रपने मित्र सोर्गको लिखा था: "श्रान्दोलनमें नये-नये दाखिल होनेके लिये किसी देशमें सबसे पहला बड़ा कदम जो उठाना है, वह है कमकरोका एक स्वतन्त्र राजनीतिक दलके रूपके संगठित करना, जैसे भी हो उसके लिये एक निश्चित कमकर पार्टी तैयार करना।" श्रागे एगेल्सने बतलाया, कि ऐसे दलने जिस प्रोग्रामको

स्वीकार किया है, अगर उसमें गड़बड़ी, बहुत बुटियाँ हों, तो भी कोई पर्वोह नहीं, क्योंकि यह ग्रनिवार्य है श्रीर वह दोष कुछ समयके लिये ही होते हैं।" इसी समय त्रमेरिकाके दूसरे पार्ध-मित्रोंको भी उन्होंने लिखा था, कि मार्क्स-चादी विद्धान्त कैथलिक चर्चकी तरह निर्मान्त होनेका दावा नहीं करता, विस्क नह विकासकी प्रक्रियाकी व्याख्या करता है। मजूर-वर्गके प्रथम सक्रिय करनेके -समय विचारोंकी गड़बड़ी ग्रनिवार्यतया होती है। उसे श्रीर भी जटिल बनानेके ंलिये ऐसे विचारोंको कमकरोंके गलेके नीचे नहीं उतारना चाहिये, जिन्हें कि उस समय वह पचा नहीं सकते और जिन्हें पीछे वह स्वयं अपनी इच्छासे स्वी-कार करेंगे।" अपनी बातोंके समर्थनमें एंगेल्सने अपने ख्रीर मार्सके जर्मनीके कार्यकारी वर्षोंके समयके मनोमावको बतलाते हुये कहा: "१८५८ ई० के न्वसन्तमें हम जर्मनी लौटकर जनतंत्रतावादी पार्टीमें शामिल हो गये, क्योंकि मजूर-वर्गके कानोंमें अपनी वात पहुँचानेका वही एकमात्र साधन थी। यद्यपि ःहम पार्टीके ग्रात्यन्त ग्रागे बढ़े हुये ग्रांग थे, लेकिन तो भी हम उसके एक हिस्से ·ही थे" "नोये राइनिशे जाइटुंग" जिस तरह कम्युनिस्ट घोषणापत्रका जिक करनेसे अपनेको बचाता रहा, उसी तरह एंगेल्सने अमेरिकन साथियोंको भी ·वतलाया, कि उसे तुरत्तका श्रपना शास्त्र तुम्हें नहीं बना लेना चाहिये, क्योंकि -मार्क्सके दूसरी कितनी ही साधारण कृतियों की तरह अमेरिकन कमकरों के लिये इस समय उनका समक्तना मुश्किल है। कमकर पहले-पहल आ्रान्दोलनमें आ रहे हैं। अब भी वह सैद्धान्तिक वातोंमें वेसूल-सालके तथा अत्यन्त पिछड़े हैं: हमें प्रतिदिनके व्यावहारिक त्रान्दोलनको त्रागे बढानेके लिये सहारा लेना चाहिये, जिसके लिये हमें एक बिल्कुल नये साहित्यकी आवश्यकता है। जब एक बार न्त्रमेरिकन कमकर थोड़ा बहुत ठीक रास्तेपर चल पढ़ेंगे, तो घोषणापत्र उनपर प्रभाव डाले विना नहीं रहेगा लेकिन इस समय बहुत ही कम कमकरोंपर प्रभाव 'डाल सकेगा।

लाजेलका मतभेद अपने गुरुओंसे रहा, लेकिन ३ सितम्बर १८६४ को लाजेलकी मृत्युकी खबर पाकर फाइलियथने जब एंगेल्सको ३ सितम्बर १८६४ को उसके बारेमें तार दिया, तो दूसरे ही दिन एंगेल्सने जवाब दिया: "तुम समक्त हो, कि इस खबरने मुक्ते कितना हैरान कर दिया। निजी तौरसे लाजेल कुछ भी रहा हो, साहित्यिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोग्रासे कुछ भी रहा हो, लेकिन राजनीतिक तौरसे वह निश्चय ही जर्मनीके अत्यन्त बढ़िया दिमागों मेंसे एक था। हमारे लिये इस समय वह अत्यन्त अनिश्चित मित्र था और यह भी बहुत कुछ निश्चित है, कि मिन्ध्यमें वह निश्चित शत्रु होता, लेकिन जो कुछ हो, यह देखकर हमें बहुत कष्ट हो रहा है, कि चरमपंथी दलके कम या बेशी सक्षम पुरुषोंको जर्मनी किस तरह नष्ट कर रही है। कारखानेवालों और प्रगतिशील स्थार कितना आनन्द मना रहे होगे।—आखिर, जर्मनीमें लाजेल ही एक ऐसा आदमी था, जिससे वह डरा करते थे।

मार्क्सने कुछ दिनों बाद ७ सितम्बरको लिखा था: "पछले कुछ दिनों लाजेलकी मृत्यु मुक्ते बढी बुरी तरहसे परेशान कर रही है। आखिर, वह पुराने गारदोंमेंसे एक या और हमारे शतुश्रोंका शतु: जो सब कुछ होते भी मुक्ते इसका बहुत अपस्थीस है, कि पिछले कुछ वर्षोंमे हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं थे, यद्यपि दोष उसका था।" कौंटेस हाट्जफेल्टके पास सहातुम्तिका पत्र लिखते हुथे मार्क्सने कहा था: वह युद्धमें अचिलेसकी तरह तरुए मरा। कुछ सालो बाद लाजेलके उत्तराधिकारी श्वाइटजेरको पत्र लिखते हुथे मार्क्सने कहा था: लाजेलकी सेवा अमर है।

अध्याय १४

प्रथम इन्टर्नेशनल (१८६४ ई०)

१. इन्टर्नेशनलकी स्थापना

प्रथम इन्टर्नेशनलकी स्थापनाके वारेमें मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठानने जो सामग्री प्रस्तुत की हैं, उससे निम्न वार्ते मालूम होती हैं।

३१ फर्वरी १८६४ को एक कमेटीने पैरिसके कमकरोंको लन्दन-विश्व-प्रदर्शनीमें ऋपना प्रतिनिधि मेजनेके लिये लिखा था। दो लाख कमकरोंने मिलकर दो सौ प्रतिनिधि खने, जिनमेंसे पहला दल १९ जलाईको श्रीर श्रंन्तिम दलं १५ अन्तवर १८६२ को पैरिससे लन्दनके लिये खाना हुआ। "विकिंग मैन" (कमकर मनुष्य) पत्रकके सम्पादकके सुभाव पर फ्रेंच कमकरोंके स्वागतके लिये जुलाईमें लन्दनमें एक कमेटी वनाई गई। ५ श्रगस्तको वहाँके फीमेसन हालमें एक बैठक हुई, लेकिन वृद्वी वैठक होनेके कारण लन्दनके मजदर परि-षद (देड कोंसिल) ने उसमें भाग नहीं लिया । फ्रेंच-प्रतिनिधियोंमेंसे कुछ ने, जिसमें इमारती कमकर तोलें भी शामिल था, लन्दनकी मजदर सभाश्रोंसे सम्बन्ध स्थापित किया । फ्रेंच-प्रतिनिधियोंके दो दुकड़े हो गये, जिनमें बोना-पातीं दलके विरोधी अलग हो गये, तोलें आदि इसीमें थे। २ जलाई १८६३ को सेन्ट जेम्स हालमें एक समा हुई, जिसमें लन्दन मजदूर सभाश्रो एवं श्र-बोनापातीं फ्रेंच कमकरोंके प्रतिनिधि शामिल हुये। २३ जुलाईमें लन्दन-मजदूर समाने फ्रेंच-प्रतिनिषियोंके साथ त्रोल्डवेलीके "वेल्डन" (घंटासराय) में एक श्रिधिवेशन किया। पाँच सदस्योंकी एक कमेटी नियुक्त की गई, जिसे फ्रेंच कमकरोंके पास श्रपील तैयार करनेका काम सौंपा गया। १० नवम्बरको धवैल इन"की दूसरी बैठकमें यह अमिमापण (अपील) "स्वीकार किया ग्या, जो ५. दिसम्बर १८६३ के मधुच्छत्र के मं पकाशित हुआ । फ्रेंच कमकरोंका जवाव ग्रानेमें ग्राठ महीने लगे । जवाबको सेन्ट मार्टिन हालकी एक सार्वजनिक सभामें

[#] Beehive

२८ िवतम्बर १८६४ को पढ़ा और उसपर बहस की गई। मार्स्स उस समय मचपर मौजूद थे। लेकिन उन्होंने उसमें भाषण द्वारा भाग नहीं लिया। मार्स्स एकेरियसको बोलनेके लिये प्रस्ताव किया। एक अस्थायी कमेटी जुनी। गई, जिसमे क्मेन कमकरोंकी ओरसे प्रतिनिधित्व करने के लिये एकेरियस और मार्क्स जुने गये। इसी समामें अप्रेज और फेंच अमिमाप्रणोंके आधारपर, सचना और बहसके लिये इन्टर्नेशल एसोसियेशन को एक अतर्राष्ट्रीय सगठनके तौरपर निर्माण करनेका निश्चय किया गया। इस एसोसियेशनके नियमो-पनियम तैयार करनेके लिये जो सबकमेटी बनी उसमे मार्क्स भी रक्से गये। नवम्बर, १६१८ के बाद आस्ट्रियन पुलिसके दस्तावेज कागज पत्रोके देखनेपर पता लगा, कि जार्ज एकेरियसने आस्ट्रियन पुलिसको जेनरल कौसिलकी शुप्त रिपोर्ट मेजी थीं। मार्क्सने उस समय भी उसपर सन्देह प्रकट किया था।

इस प्रकार इन्टर्नेशनल वर्किंग मेन्स एसोसियेशन (ग्रन्तर्राष्ट्रीय कमकर समा) लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालकी एक बड़ी समार्मे लाजेलकी मृत्युके कुछ सप्ताहों बाद २८ सितम्बर १८६४ को स्थापित किया गया। इन्टर्नेशनलका सर्वहाराके संघर्षमे बहुत ऊँचा स्थान है। शोषयामें कोई हाथ न रखने तथा सारी शोषितों को स्वतन्त्र करनेकी स्वामाविक भावनाके कारण सर्वहारामें अन्तर्राष्ट्रीय वैमन-स्य श्रीर मगड़ेके मावोंके पैदा होनेका कारण नहीं है, इसलिये खले श्रीर साफ दिलसे यदि किसी वर्गका अन्तर्राष्ट्रीय संगठन एक ही उद्देश्यके लिये हो सकता है, तो सर्वहारा ही का । श्रीर यह प्रथम इन्टर्नेशल दुनियाके सर्वहारों का इस तरहका पहला सगठन था। यह देख ही चुके हैं, कि फासके दो लाख कमकरोंने अपने प्रतिनिधियोंके ज्ञननेमे भाग लिया या. इसलिये इन्टर्नेशनल की स्थापनाके विचार त्रारम्म ही से बहुत न्यापक ये । उत्पादनका पॅजीवादी तरीका विरोधका कारण नहीं, बल्कि उसका स्वरूप ही है, वह आधुनिक राज्यों को बनाने और विगाबने दोनोका ।काम करता है। सौदेके फैलाव और वाजारी के विस्तारके लिये एक श्रोर वह राज्योकी सीमाश्रोको नष्ट करता है, तो दूसरी श्रीर छोटे राज्योकी सींपाश्रोंको नष्ट कर उन्हें नये रूपमे सगठित करता है। व्या-पारिक प्रतियोगिता श्रीर बाजारोंकी छीना-भारीके कारण वह राज्योंमे भीपण

वैमनस्य श्रीर संघर्ष पैदा करता है। व्यापक परिमाण्में इतने बड़े युद्धों को कराना उसीका कामहै। जब तक उत्पादनका पूँजीवादी ढंग मौजूद रहेगा, जब तक चढ़ती हुई टेक्नीकके साथ कल-कारखाने केवल नफेके लिये बाजारके वास्ते भारी परिमाण्में माल पैदा करते रहेंगे, तब तक लड़ाइयोंसे मुक्ति नहीं हो सकती; तथा मानव भ्रातृमाव केवल जीमसे कहनेकी बात रहेगी। बड़े पैमाने के उद्योग-धन्धे एक श्रोर शान्ति श्रोर स्वतन्त्रताके गीत गाते हैं, तो दूसरी श्रोर राष्ट्रोंको नयेसे नये हथियारोंसे सज्जित होकर खूनी लड़ाइयोंके लिये तैयार करते हैं।

दुनियामें युद्ध श्रीर श्रशान्तिका कारण यह विरोध तभी नष्ट होगा, जन कि उत्पादनका यह ढंग खतम हो जायेगा। सर्वहारा अपनी मुक्तिका प्रयत्न श्रपनी राष्ट्रीय सीमाश्रोंके भीतर ही करते हैं, लेकिन सभी सर्वहारे एक नावमें बैठे हुये हैं, सबको एक तरहसे शोषणासे मुक्त हो स्वच्छन्द श्रीर सुखी जीवन बितानेकी लालसा है, श्रीर सो भी लाभ-श्रुभके श्राधार पर नहीं; इसलिये सर्व-हारोंके राष्ट्रीय संगठनोंके अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में परिणत होनेमें इसके सिवाय कोई भारी क्कावट नहीं है, कि पूँजीपतियोंके राष्ट्रीय दलाल सर्वहाराका नेतृत्व करते उन्हें भूल-भुलैया में डाल अपने उद्देश्यसे दूर रखते हैं--जैसा कि इंगलैंड की मजदूर पार्टी ग्रौर श्रमेरिकाके मजदूर-संगठन कर रहे हैं। लेकिन, सर्वहारा के लिये मुक्ति-का रास्ता अपने अन्तर्राष्ट्रीय वर्ग-सहयोगसे ही होकर जाता, इसलिये यह गुमराह करने वाले चिरकाल तक सफल नहीं हो सकते । सर्वहारा की अन्तर्राष्ट्रीय भावनाको पूँजीवादी और उनके समर्थक राष्ट्रीयता-विरोधी बत-लाते हैं। वह कहते हैं, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादी अपने दिलमें कभी राष्ट्रीय भावना नहीं रख सकता। विरोधोंके ही समागमको वह अपने भीतर चारों श्रोर देखते हैं, इसीलिये उनको यह समभमें नहीं त्राता, कि सच्ची राष्ट्रीयता श्रीर श्चन्तर्राष्टीयताके भावोंमें कोई विरोध नहीं है। मानव-बंधुताका अपने देश-भाइयोंके प्रेमके साथ कोई विरोध नहीं है। अगर इस तरहका भाई-चारा न हो, तो एक देशके सर्वहारोंको दवानेके लिये दूसरे देशके सर्वहारोंको उनके मालिक इस्तेमाल कर सकते हैं।

कम्युनिस्ट घोषणा पत्र ने दुनिया मरके सर्वहारोंको एक हो जानेका सन्देश दिया था, इसलिये यदि उसके प्रकाशित होनेके सोलह वर्ष बाद इटर्ने-शनलकी स्थापना हो, तो यह कोई विचित्र बात नहीं थी। घोषणाके प्रकाशित होनेके स्नास-पास ही फासमें कान्ति, इगलैडमे चार्टिस्ट-स्नान्दोलन जैसा जर्बदस्त संघर्ष, श्रीर जर्मनी तथा इतालीमें राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके लिये सशस्त्र विद्रोह हुये। उसके बाद ही सर्वहारा एक स्वतन्त्र शक्तिके तौर पर युद्धके मैदान में उतरे। सभी जगह यह संघर्ष असफल रहे, लेकिन उसी अर्थमे, जिस तरह की प्रथम साल बदकर जमीकन्द अपनेको घरतीके मीतर सबा असफल सा जान पहता है, पर, अगले साल वह और अधिक शक्ति दिखलाते हुये दूना-तिशुना रूप धारण करता है, सर्वहारोका कोई प्रयत्न विफल नहीं कहा जा सकता. बल्कि यह असफलवाये उसको आगेके लिये और शक्ति प्रदान करती हैं, अपने भूलांसे सीख लेनेका मौका देती हैं। फाउमे क्रान्तिके असफल होनेके बाद कमकर-वर्गमे जो निराशा श्रीर श्रवसाद पैदा हुन्ना, उसके कारस, समूह रूपेस कुछ करना असम्भव था। लेकिन, अपने विरोधियोके प्रति तीव रोष तो उनमे था ही । उनके एक मागको लुई ब्लाकने श्रपनी श्रोर खीचा । उसके सामने कोई वास्तविक समाजवादी प्रोग्राम नहीं था। वह त्रातकवादीके तौर पर पड्-यंत्र श्रीर श्रतिसाहस द्वारा राजशक्ति पर श्रिधिकार करना चाहता था। प्रधीं भी कमकरोंको उटोपियन हवाई किला दिखलाकर वास्तविक सधर्षसे पथभ्रष्ट करना चाहता था। "१८वीं बूमेरमे" मार्क्यने लिखा या, कि किस तरह प्रृघीं का ग्रान्दोलन पुराने संसारको बदलनेके वास्तविक सामुदायिक प्रयत्नोको छोड वैयक्तिक प्रयत्न और हृदय-परिवर्तन द्वारा सर्वहाराको मुक्त करना चाहता था-जैसा कि उससे सौ वर्ष बाद आज भी कुछ गाधीवादी करना चाहते हैं, चाहे वह प्रयत्न तनमें द्वारा हजार बार असफल साबित हुये हो । शुमराह करने के लिये, जनताकी चीएा स्मृतिसे फायदा उठानेमे चालाक कब पीछे रह सकते हैं ? इंगलैडमें चार्टिस्ट-श्रान्दोलनके खतम हो जाने पर वहाँ भी फाएकी तरह ही पथभ्रष्टता देखी गई । रातर्टं ग्रोवेन जैसा महामना उटोपियन समाजवादी ग्रव मी वहाँ जिन्दा था। यद्यपि वह बहुत बृद्धा था, किन्तु उसके ग्रनुयायी अमशः

एक स्वतंत्र-विचारक धार्मिक सम्प्रदायके रूपमें परिणत हो गये, जैसा कि गांधी के अनुयायी आजकल दीख रहे हैं। श्रोवेनके अनुयायियोंके साथ-साथ किंग्स्ले और मीरिसका ईसाई समाजवाद भी फैलने लगा। अंग्रेज मजदूर सभायें भी अपने तुरन्तके हितोंकी ओर ही ध्यान देती, राजनीतिक संघर्षींसे अलग रहना चाहती थीं। पीछे तो जब इंग्लैंड के मजदूर-संगठनों और मजदूर-सभाओंकी बागडोर वहाँकी हिजड़ी भ्रष्ट नेताशाहीके हाथमें चला गया, तो उसने उन्हें और गुमराह करके दुनियाके सफल सर्वहारोंके विरोधी नहीं तो तटस्थ रखने का पूरा प्रयत्न किया।

लेकिन, जैसा कि मार्क्सने वतलाया है, श्रार्थिक संकट सर्वहाराको प्रबुद्ध त्तथा लड़ाकू बनानेके लिये मुख्य कारण होते हैं। जिस साल १८५७ ई० में भारतमें स्वतन्त्रता-युद्ध लड़ा जा रहा था, उसी समय दुनियामें एक जबर्दस्त च्यापारिक संकट ग्राया था । उसके दो साल बाद १८६० ई० उत्तरी श्रीर दित्त्ग्। श्रमेरिकन राज्योंके गृह-युद्धने भी इस संकटमें श्रागमें धीका काम दिया। १८५७ ई० के व्यापारिक संकटने फ्रांसमें मजदूरोंको बेकार ऋौर किसानोंको अनाजकी सस्तीके कारण पामाल करना शुरू किया । इसे वह चुपचाप सह नहीं सकते थे। पूँजीवादी सरकारको भय लगा कि कहीं इस फ्रोधाग्निकी बलि हम न चढ़ जायँ। ऐसे समय हमेशा पुँजीवादी भीतरसे लोगोंका ध्यान हटाने, तथा ऋसाधारण राजनीतिक स्थिति पैदा करनेके लिये श्रपने विरोधमें लगनेवाली क्रांतिकी शक्तिको विदेशी युद्धमें डालनेकी कोशिश करते हैं। साथ हीं बोनापातीं सरकारने देशमें भी कमकरोंके भावोंको दमन द्वारा दवाना चाहा। यद्यपि उसने मजदूर-सभार्ख्रोंके संगठित करनेकी त्रानुमति दे रक्खी थी, लेकिन वह कोई भी। राजनीतिक त्राधिकार देनेके लिये तैयार नहीं थी। राजनीतिक संगठनोंके विरोधी कानून बनाकर फ्रींच सरकारने १८५३ से १८३६ ई० के बीचमें ३६०६ मजदरोंको सजा दी, श्रीर ७४६ संगठनोंके जपर संगठन-विरोधी-कानूनका प्रयोग किया। फ्रेंच बुर्ज्वाजीने शाम ग्रौर दाम दोनोंसे काम लिया—कैंद किये हुये कम-करों में बहुतों के दंड उसने माफ कर दिये, और १८६२ ई० में लन्दनमें

होनेवाली महान् प्रदर्शनीमें फ्रेंच कमकरों द्वारा प्रतिनिधियोंके मेजे जानेका समर्थ भी किया।

हम देख चुके हैं, कि फ्रेंच मजूरोंने अपने दो सौ प्रतिनिधि चुनकर लन्दन मेजे थे। इसके लिये एक सौ पचास पेशोंके पचास पोलिंग (बोट देने के) स्टेशन कायम किये गये थे। जो प्रतिनिधि लन्दन गये, उनकी यात्राका खर्च कुछतो चन्देसे पूरा किया गया और कुछ सरकारी श्रीर म्युनिसिपैलिटीके खजानेसे दिया गया—सरकारी खजाने श्रीर म्युनिसिपैलिटीमेंसे प्रत्येकने बीस-वीस हजार फ्रांक प्रदान किये थे। इस उदारतासे फ्रांसके बूर्जा समस्तते थे, किं मजदूर हमारे कृतज्ञ होंगे। लेकिन, मजदूरोंने उनकी आशा पर पानी फेर दिया, जब कि १८६३ ई० के चुनावोंमे पेरिस मे सरकारी उम्मीदवारोंको केवल पहले १८५७ ई० वाले चुनावमें सरकारी उम्मीदवारोंको १ लाख ११ हजार श्रीर उनके विरोधियोंको ६६ हजार वोट मिले थे। सगठन-विरोधी कानूननको दीला करनेसे मजदूरोंके मावोंमें कुछ परिवर्तन श्राये, इसके लिये वोनापार्तने मई १८६४ में एक कानून बनाया। इंगलैंडमे इस तरहका एक कानून १८२५ ई० में ही पास हो चुका था। इंगलैंडके मजदूरोने, जब ऋषिक मजूरी श्रीर कामके घटेकी कमीकी माँग की, तो वहाँके पूँजीपतियोंने फास, वेल्जियम, जर्मनी श्रीर दूसरे देशोंसे सस्ती विदेशी श्रम-शक्ति (मजूरों) को ले श्रानेकी धमकी दी । इसी समय अमेरिकन यह-युद्धके छिड जानेसे कपासकी आमदनी रक गई श्रीर मैन्चेस्टर तथा लकाशायरके क्पडेके कारखानोके मजदूरोंमें भारी वेकारी फैल गई। इगलैंड प्रधान-मन्त्री पामर्स्टन नहीं चाहता था, कि स्रमेरिकन गृह-युद्धमे दास-प्रथाके जन्नर्दस्त हामी तथा सन्नसे श्रिधिक प्रतिक्रियावादी दिल्ली रियासते हार खाये, इसलिये वह उनके पक्तमे होकर युद्धमें दखल देना चाहता था, लेकिन इसी समय सेन्ट जेम्स हालमे जान ब्राइटकी अव्यक्तामे एक जबर्दस्त समा हुई, जिसने पामस्टेनके इरादेका जबर्दस्त विरोध किया। १८६४ ई० के वसन्तमे इतालीका मुक्तिदाता गेरीवाल्दी जब लन्दनमे स्त्राया. तो उसका जबर्दस्त स्वागत किया गया। इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि कम-

करोंमें अन्तर्राष्ट्रीयताकी भावना जग रही थीं । १८६२ ई० में महान् प्रदर्शनीके समय अँग्रेज कमकरों और फ्रेंज कमकर-प्रतिनिधियोंका जो मेल-मिलाप हुआ, वह उसी अन्तर्राष्ट्रीय भावनाका स्वक था।

जैसा कि हम वतला चुके हैं, २८ सितम्बर १८६४ को प्रोफेसर वीसली अ की श्रभ्यज्ञतामें फ्रेंच प्रतिनिधियोंका स्वागत करनेके लिये लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालमें एक सभा दुई । दोनों देशोंके कमकर वर्गने आपसमें भाईचारा स्थापित किया। इसी समामें इन्टर्नेशनल (ग्रन्तर्राष्ट्रीय) कमकर एसोसियेशन (समा) के नियमोपनियम बनानेके लिये एक कमेटी बनाई गई, इसका मी जिक्र हम कर चुके हैं। इस कमेटीमें कार्ल मार्क्स भी सम्मिलित हुये थे, जिनका नाम तत्का-लीन श्राखनारोंने सभी मेम्नरोंके श्रान्तमें छापा था। इस मीटिंगमें मार्क्सने सिकय भाग नहीं लिया या, लेकिन भाषण करनेवालोंमें उन्होंने इकेरियसका नाम दिया था। ग्रभी मार्क्सको ऋपना वैज्ञानिक कार्य ऋघिक महत्वका मालूम होता या, तव भी ऋन्तर्राष्ट्रीय संगठनकी इस प्रथम मावनाको वह विल्कुल महत्व-हीन नहीं समभते। उसी समय उन्होंने वेडेमयर श्रीर श्रपने दूसरे मित्रोंको लिखा था : हालमें जो इन्टर्नेशनल कमकर-कमेटी वनाई गई, वह महत्वहीन वेमहत्वकी नहीं है। इसके श्रॅंग्रेज मेम्बर मुख्यतः मजदूर सभाश्रोंके मुखिया हैं, ब्रर्थात् लन्दनके मजदूर-स्वामी, जिन्होंने गेरीवाल्दीके स्वागतके लिये जबर्दस्त संगठन किया ग्रीर सेंट जेम्स हालमें विशाल समाकी, जिसने पामर्स्टन-को उत्तरी राज़्येंकि विरुद्ध लड़ाई घोषित करनेके इरादेसे वाल रक्खा। जहाँ तक फ्रांसीसियोंका सम्बन्ध है, कमेटीके मेग्वर बहुत महत्व नहीं रखते, लेकिन वह पेरिसके कमकरोंके साजात् प्रतिनिधि हैं। उन इतालियन एसोसियेशनोंसे भी सम्बन्ध स्थापित किया गया है. जिन्होंने कि हाल ही में नेपल्समें श्रपनी कांग्रेस की थी। यद्यपि वर्षोंसे में वरावर किसी संगठनमें माग लेनेसे इन्कार करता रहा हूँ, लेकिन इस बार इसीलिये स्त्रीकार किया, कि यहाँ कुछ वास्तविक भलाइ करनेकी संभावना है।

^{*} Beesly

मार्क्सका नाम कम महत्व समभकर अंग्रेज अखवारोंने कमेटीके मेम्बरोंकी स्चीके श्रन्तमें छापा था, लेकिन वही इस संगठनके प्रधान नेता बन गये श्रीर बिल्कुल स्वामाविक रीतिसे यह इसीलिये हुन्ना, कि मजदूरोंके दर्शनका प्रधान-श्राचार्य श्रीर उनके संगठन श्रीर संघर्षके श्रेष्ठ पय-प्रदर्शक वही हो सकते थे। कमेटीने नये मेम्बरोंको भी बोडा गया श्रीर इस प्रकार उनकी संख्या पचास हो गई। इनमे त्राधी सख्या श्रॅमेज कमकरोंकी थी, बाकीमे सबसे मजबूत टोली वर्मनोकी थी, जिनमें मार्क्स, इकेरियस, लेस्नेर, लाखनेर, फान्डर थे, जो सभी विद्युत कम्युनिस्ट लीगके मेम्बर रह चुके थे । कमेटीमे फासके ६ इतालीके ६, पीलन्द श्रीर स्वीवर्लेंडमेंसे प्रत्येकके २-२ मेम्बर थे। कमेटीने प्रोग्राम श्रीर नियमोपनियम बनानेके लिये एक सब-कमेटी नियुक्त की, जिससे मार्क्स भी चुने गये, लेकिन बीमारी तथा निमत्रणोके पीछे पहुँचनेके कारण वह इस सब-कमेटीकी बैठकोंमें शामिल नहीं हो एके। एव-कमेटीने मार्क्सके बिना अपने कामको करना चाहा । मेजिनीके प्राइवेट-सेक्रेटरी मेजर वोल्फ, अँग्रेज वेस्टन श्रीर फ़ासीसी लुबेज कोशिश करके हार गये, पर काम करनेमे सफल नही हुये। श्चन्तमे मार्क्सको हस्तावल देना पडा। उनके दिमागमे तो यह सभी बाते पहलेसे ही सोची श्रीर स्पष्ट थीं । उन्होंने दूसरे मसौदेको बेकार श्रीर उनकी बातोसे पूरी तौरसे मुक्त कर मजदूर-वर्गके लिये एक श्रिममाषण वैयार किया, जिसका ' ख्याल सेंट मार्टिन हालकी मीटिंगमें नहीं श्राया था। इस श्रमिमाषण द्वारा १८४८ ई० में प्रकाशित कम्युनिस्ट घोषगापत्रके बादके मजदूर-वर्गके इतिहास-पर प्रकाश डाला गया । इस अमिमाष्यामे १८४८ ई० के बादके सोलह वर्षों के मजदूर वर्गके इतिहासको भूमिकाके तौरपर रक्खा गया। सब-कमेटीने मार्क्सके तैयार किये ग्रमिमापणको तुरन्त स्वीकार कर लिया, हाँ केवल जहाँ-तहाँ श्रध-कार श्रीर कर्त्तव्य, सत्य, नैतिकता श्रीर न्याय नैसे कुछ वाक्य जोड दिये। लेकिन, जैसा कि एंगेल्सके पास भेजे अपने पत्रमें मार्क्सने लिखा था: मैंने इन शब्दों-को ऐसी जगह रख दिया है, कि जहाँ यह कोई नुकसान न कर सकते। मार्क्स-ने "उद्घाटन श्रमिमाषण श्रीर श्रस्थायी नियम तैयार किये थे, उन्हें कमेटीने मी बड़े उत्साहके साथ स्वीकार कर लिया। मार्क्सके इस ग्रामिलेखकके बारेमें

पीछे प्रोफेसर बीसलीने घोषित किया था, कि मध्य-वर्गके विरुद्ध मजदूर-वर्गके यत्तका एक दर्जन पन्नोंमें इतना श्रत्यन्त जन्नर्दस्त श्रीर प्रभावशाली प्रतिपादन इससे पहले कभी नहीं लिखा गया। ब्रारंभमें ही इसमें इस बातका उल्लेख किया गया था, कि १८६४ ई० के बीचके सोलह वर्षोंमें मजदूर-वर्गके दुःख श्रीर कठिनाइयाँ कम नहीं हुई, यद्यपि इन्हीं चीलह वर्षोंमें श्रीद्योगिक विकास श्रीर व्यापारिक प्रसार जितना हुन्ना, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। श्रमि-भाषणमें अपनी बातकी पुष्टिके लिये सरकारी नील-पुस्तिकान्त्रों त्रीर वित्त-मन्त्री (ग्लेड्सटन)के भाषणोंमें दिये हुये आंकड़ोंसे की थी। ग्लेडसटनके अनुसार अधन श्रीर शक्तिकी मतवाला बनानेवाली वृद्धि" का फायदा केवल सम्पत्तिवाले वर्गने उठाया। इसका एक ही अपनाद यह था, कि इंगलैंडके कमकरोंका एक बहुत छोटा सा माग कुछ श्रिधिक बेतन पाने लगा, यद्यपि चीजोंके दाम बढ़ जानेके कारण उसका वास्तविक मूल्य उतना नहीं बढ़ा. जितना कि दिखलाया जाता था। त्रागे कहा था : सभी जगह मजदूर-वर्गका भारी जनसमूह दु:खों श्रीर कधोमें उससे कहीं श्रधिक गहरा श्रीर व्यापक रूपमें हूचा, जितने कि ऊपरी वर्गवाले सामाजिक स्तरमें ऊपर उठे। युरोपके सभी देशोंको देखनेसे इस त्रकाट्य सत्यसे कोई पत्तपातहीन शोधकता इन्कार नहीं कर सकता। इसे सिर्फ वही लोग इन्कार कर सकते हैं, जिनका कि दूसरोंके दिलमें धोखेवाली ऋाशा जगानेमें ऋपना स्वार्थ सधता है। मशीनों की पूर्णता और उद्योग तथा कृषिमें साइन्सके उपयोग, अथवा संचार-यातायातके साधन और उपाय नये उपनिवेश श्रीर प्रवासनं, नये बाजारों पर विजय अथवा मुक्त-व्यापार, ये सभी बातें मिलकर भी मजूर-वर्गके कष्टको खतम करनेमें सफल नहीं हो सकतीं। बल्कि इसके विरुद्ध रिथतियोंके क्रुठे ब्राधारपर श्रमकी सजनात्मक शक्तिका हरेक नया विकास सामाजिक विरोधको बढाता तथा सामाजिक भगडोंको तीव्रतर करता है। स्त्रार्थिक प्रगतिके मतवाला बनानेवाले इसी कालमें भुखमरी ब्रिटिश साम्राज्यकी राजधानीमें एक सामाजिक प्रतिष्ठानके दर्जे पर पहुँच गई । काल इतिहासके पन्नोंमें "पुँजीके" बहुत तीव गतिसे लौटने तथा श्रौद्योगिक एवं

व्यापारिक संकटके नामसे मशहूर सामाजिक महामारीके विस्तृत प्रहार श्रीर भारके प्रभावका काल है।

"अभिभाषण्में १८५० ई० के बादवाली शतान्दीमें नजदूर वर्गके आन्दो-लनकी असफलताओंका मी जिक्र किया गया था, लेकिन साथ ही उसकी अस-फलता का दो सफलता ख्रोंका भी जिक्र किया गया था : इंगलैंडमें दस घटेके काम के लिये कानूनका बनाना जिसका कि प्रमाव अप्रेपेज सर्वेहारोपर पडा" इसलिये दस घटा जिल (विधेयक) केवल एक ज़बी व्यवहारोपयोगी सफलता ही नही थी, विलक वह सैद्धान्तिक विजय भी थी, क्योंकि यहाँ पहली बार बूर्ज्जांबीके राजनीतिक श्रर्थशास्त्रको मजूर-वर्गकी राजनीतिक श्रर्थनीतिने पराजित किया। "इससे भी वड़ी विजय को-न्रोपरेटिव (सहयोगी) त्रान्दोलनकी हुई । मजदूरोंने सहयोगके सिद्धान्तके स्राधारपर कल-कारखाने खोले श्रौर उन्हें सफलतापूर्वक चलाया। इस महान सामाजिक वजर्नेका मूल्य बहुव मारी है :" बहस करनेकी जगह इन सहयोगी (सहकारी) कल-कारखानों ने "सिद्ध कर दिया, कि कमकरोंके एक वर्गको काम देनेवाले मालिकोंके एक वर्गके न रहनेपर भी वह पैमानेपर श्राधु-निक साइन्सके कानूनोंके अनुसार उत्पादन सम्भव है। धन उत्पादन करनेके लिये मजदूरोंके हथियारोको कमकरोंके ऊपर शोषक प्रभुताके हथियारोंके तौरपर इजारेदारीकी ऋायश्यकता नहीं। मजूरी-अम मी दास-अम तथा किसानी ऋर्ध-दासता सर्प (Scoydorm) की तरह एक अस्थायी तथा गौए रूप है, जिसे कि सहकारी श्रमके सामने ज़ुप्त होनेके लिये वाध्य होना पढेगा---यह सह- कारी श्रम श्रपने कठिन कामको स्वेच्छासे खुशीके साथ बिना दिक्तके कर सकता है।" तो मी, सहकारी श्रम, जो कि समय-समयके प्रयत्नो तक ही अपनेको सीमित रख ससता है-पूँजीके हजारेदारीको तोंड नहीं सकता। "शायद इसी-लिये उच्च वर्ग, अपने विचारोंके लिये हृदयसे।"

त्रागे त्रिमिमापण्में लिखा गया या, कि कमकरों में फिर चेतना वढी है, जिसको हम इगलैंड, फास, जर्मनी श्रीर इतालीमें मजदूर वर्गीय-श्रान्दोलनके पुनर्जागरणके रूपमें हम देख रहे हैं श्रीर साथ ही मजदूरोंको राजनीतिक तौरसे पुन.सगठित करनेके प्रयत्नके रूपमें देख रहे हैं। "मजदूरोंके पास सफलताकी

एक कुंची-संख्या मौजूद है। लेकिन तराज्में संख्याका वजन भारी होता है, जब कि वह एक संगठनमें एक जूट तथा एक सचेतन लच्यकी ख्रोर ले जायें।" पिछले तजर्बेसे मालूम होता है, कि सभी देशों के कमकरों के बीच माईचारे की जो ख्रावश्यकता है, उसकी उपेचा और अपनी मुक्ति के लिये किये जाने वाले सभी संघपों में कन्चे से कन्धा मिलाकर उनके खड़े होने के उत्साहको रोकने का फल सदा उनके अपने एक दूसरे से असंबद्ध प्रयहों में ख्राम तौरसे असकल होने का कारण बनता है। इसी विचारने सेन्ट मार्टिन हालकी मीटिंगको इन्टर्नेशनल कमकर एसोसियेशनके कायम करने की प्रेरणा दी। अभिमाष्णका अन्त भी "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" की तरह ही निम्न वाक्यों द्वारा किया गया था: "सभी देशों के सर्वहारों, एक हो जाओ।"

इन्टर्नेशनल के अस्थायी नियमोंका भी इसी तरह गम्भीरतापूर्वक गुम्फन किया गया था: मजूर-वर्गकी मुक्ति स्वयं कमकरोंका अपना करणीय है। मजूर-वर्गकी मुक्तिका संघर्ष विशेषाधिकार रखनेवाले एक नये वर्गको स्थापित करनेका संघर्ष नहीं है, बल्कि यह वर्ग-शासनको विल्कुल उठा देनेका संघर्ष है। कमकरों की आर्थिक पराधीनता उन लोगोंके कारण है, जो कि अमके हथियारों जीवनके सोतोंपर एकाधिकार रखते हैं। इसका परिणाम सब तरहकी गुलामी: सामाजिक कप्ट, बौद्धिक सुसंडीपन और राजनीतिक पराधीनता है। इसलिये मजदूर-वर्गकी आर्थिक मुक्ति वह बड़ा लक्ष्य है, जिसके साधन सभी राजनीतिक आन्दोलनोंको पास होने चाहिये। अब तक इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके सारे प्रयत्न इसलिये विफल हुये, कि प्रत्येक देशके मिल्न-मिल्न मजदूर वर्गके समूहों और मिल्न-मिल्न देशोंके मजदूर वर्गोंके बीच एकताका अभाव था। मजदूरोंकी मुक्ति न स्थानीय कृत्य है, और न राष्ट्रीय, बल्कि यह सामाजिक कृत्य है। यह ऐसा कृत्य है जो कि उन सभी देशोंके सामने है, जहाँ आधुनिक समाज मौजूद है। इसको सफलतापूर्वक तभी पूरा किया जा सकता है, जब कि सभी देशोंके बीच बाकायदा सहयोग हो।

इन्टर्नेशनलका नेतृत्व एक जनरल कौंसिल (महापरिषद्) के हाथमें थी, जिसमें भिन्न-भिन्न देशोंके कितने ही मजदूर शामिल थे। लेकिन, जब तंक कि जेनरल कौंसिल चुनी नहीं गई तब तक सेन्ट मार्टिन हालकी समा द्वारा नियुक्त कमेटी ही इस कामको करती रही । जेनरल कौंसिलका कृत्य था: मिल-मिल देशोके मजदूर वर्गीय संगठनोंके बीच अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करना, प्रत्येक देशके कमकरोंको दूसरे देशोके कमकरोंके कामोंके सम्बन्धमें सूचना देना, मिल-मिल देशोंके मजूर-वर्गीकी स्थितिके सम्बन्धमें आकंके जमा करना, सभी मजूर-वर्गीय संगठनोंके सामान्य हितोंके प्रश्नों पर विचार करना, अन्तर्राष्ट्रीय मगडा उठ खडा होनेके समय सभी सम्बद्ध संगठनोंकी ओरसे एक ही साथ काम करना, इन्टर्नेशनलके कामके बारेसे नियमपूर्वक रिपोर्टे प्रकाशित करना और इसी प्रकारके और काम ।

जेनरल कौंसिलका निर्वाचन काग्रेसके हाथमें या, जो कि वर्षमें एक वार हुआ करेगी, नहीं कौंसिलके स्थान और दूसरी काग्रेसकी जगह और समयका निर्ण्य करेगी। आनश्यकता पड़ने पर जेनरल-कौंसिल नये।मेम्बर क्वाप्ट कर (जोड) सकती थी, और बरूरत पड़ने पर अगली काग्रेसके स्थानको बदल सकती है, किन्तु वह उसे स्थिगत नहीं कर सकती। मिन-मिन्न देशोंके मजदूर-संगठन इन्टर्नेशनलसे सबद्ध होने पर भी अपनी संगठन-सम्बन्धी स्वतन्त्रताको कायम रख सकते हैं। कोई भी स्वतन्त्र स्थानीय सगठन जेनरल-कौंसिलसे सीचे सम्बन्ध स्थापित कर सकता था, लेकिन आम तौरसे यह स्वीकार किया गया था, कि राष्ट्रीय आधार पर उनका संगठन अधिक उपयोगी होगा।

इन्टर्नेशनल यद्यपि एक बड़े दिमागकी उपन नहीं थी, लेकिन उसके पीछे, एक बड़ा दिमाग—मार्क्षका दिमाग—काम कर रहा था, इसमें सन्देह नहीं।

२. प्रथम कान्फ्रेंस (लन्दन)

यद्यपि मार्क्स इस समय नार-नार नीमारीका कष्ट मोग रहे ये और अपने वैज्ञानिक कार्यको पूरा करनेके लिये भी वह अधीर ये, लेकिन तन भी वह इन्टर्नेशनलके लिये समय और शक्ति देनेमे कभी नहीं नहीं करते थे। जल्दी ही यह सको मालूम होने लगा, कि इन्टर्नेशनलके वास्तविक "मुखिया" मार्क्स है। इसके लिये उन्हें अपनेको आगे बढानेकी जरूरत नहीं थी। मार्क्सको सस्ती

प्रसिद्धिके प्रति ऋपार घृणा थी। पर, इस अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलनको ठीकसे संचालित करनेके लिये त्रावश्यक सभी गुण त्रासाधारण मात्रामें मार्क्सके ही पास मीजूद थे। ऐतिहासिक विकासके कानूनको बड़ी गहराई तक श्रीर साफ-साफ देखनेकी चमता उसमें थी, ग्रीर वह पूरी शक्तिके साथ लच्यकी स्रोर विना इधर-उबर भटके उस महान् संगठनको ले जा सकते थे। लेकिन, साथ ही उनका रास्ता कंटकाकीर्ण था। मेम्बरोंमें वैयक्तिक भागड़े श्रीर वाद-विवाद उठ खड़े होते थे, विशेषकर 'इतालियन श्रीर फ्रेंच सेम्बरोंमें, जिनके दूर करनेमें मार्क्सको बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी। श्रंग्रेज मेम्बरोंके साथ उन्हें कम कठिनाईका सामना करना पड़ता था। उस वक्तके श्रंभेज कमकर काफी श्रागे बढ़े हुये थे। उन्होंने ऋमेरिकन ग्रह-युद्धमें दिल्ला रियासतोंका पत्त लेनेसे श्रपनी सरकारको बाज रक्खा, श्रीर जब अब्राहम लिन्कन दुबारा श्रमेरिका का राष्ट्र-पति निर्वाचित हुन्रा, तो उसके पास उन्होंने ऋभिनन्दन भेजा। मार्क्सने इस श्रमिनन्दनको तै।यार किया, जिसमें नये प्रेसीडेन्ट लिन्कनको "मजूर वर्गका (ऐसा) पुत्र" सम्बोधित किया गया था, जिसे एक दासताबद्ध जातिके मुक्त करनेके लिये भव्य संघर्ष करनेका काम सौंपा गया था। लिन्कनने भी इस श्रिभिनन्दनका ऐसी गर्भजोशीके साथ जवाब दिया. जिसे सननेके लिये लन्दनके पँजीवादी पत्र तैयार नहीं थे।

र६ जून १८६५ को जेनरल-कोंसिलके सामने मार्क्सने एक श्रिमभाषण "मूल्य, दाम श्रीर लाम" के नामसे पढ़ा, जिसका वैज्ञानिक मूल्य कहीं श्रिष्ठिक था। इसका उद्देश्य था कोंसिलके कितने ही मेम्बरोंके इस विचारका खंडन करना, कि मजूरीकी श्राम चृद्धि मजूरोंके लिये किसी वास्तविक कामकी नहीं होगीं, इसिलये मजदूर-सभायें हानिकारक हैं। इस विचारका श्राधार यह गलत धारणा भी कि सौदेका मूल्य मजूरीके ऊपर निर्भर करता है, श्रीर यदि पूँजी-पित श्राज चारकी जगह पाँच शिर्लिंग मजूरी देगा, तो कल वह बढ़ती हुई माँग के पूरा करनेके लिये मालको चारकी जगह पाँच शिर्लिंग वेचेगा। मार्क्सने बतलाया कि यद्यपि वह बहुत ही उथले किसिमका तर्क है, श्रीर वह बस्तुर्श्रोंके बिल्कुल श्रमधान रूपको लेता है, लेकिन तब भी इसमें जो श्रर्थशास्त्रीय प्रश्न

स्राते हैं, उनकी व्याख्या करना श्रासान नहीं है। लेकिन, मार्क्सने एक घटेके भीतर इस गंभीर प्रश्नकी वडी सुन्दर व्याख्या करदी।

इन्टर्नेशनलको पहली सफलता दिखलानेका मौका मताधिकारके सुधारके लिये बढते हुये आन्दोलनके सम्बन्धमे प्राप्त हुई। १ मई १८६५ को मार्क्तने एगेल्सको स्चित किया: "सुधार लीग हमारा काम है। बारह (छ मजूर-वर्ग और छ मध्य-वर्गके प्रतिनिधियों) मेम्बरोमेंसे सारे मजूर-वर्गीय प्रतिनिधि हमारी जेनरल-कौंसिलके मेम्बर हैं, जिनमे इकेरियस भी है। हमने मजूरोकी आंखोंमे धूल भोंकनेके मध्य-वर्गके सारे प्रयत्नको निष्फल कर दिया। अगर इस प्रयत्न द्वारा इंगलैंडमे राजनीतिक मजूर वर्गीय-आन्दोलन। पुनर्जन्ममे सफलता हुई, तो हमारे एसोसियेशन (इन्टर्नेशनल) ने युरोपियन मजूर-वर्गके लिये उससे कहीं अधिक काम कर लिया, जोकि किसी दूसरे तरीकेसे सम्मव हो सकता था, और सो भी बिना अपने बारेमे हल्ला-गुल्ला किये वर्गर। यहाँ इसमें सफलताकी पूरी संभावना है।" ३ मईको एंगेल्सने जवाब दिया: "बहुत थोड़ से समयसे और बहुत योडा प्रयत्न करके इन्टर्नेशनल एसोसिये-शनने वस्तुतः एक जबर्दस्त स्थान अपने लिये बना लिया।"

१८६५ ई० मे बुरोल्समे इन्टनेंशनलकी प्रथम कांग्रेस करनेकी बात सोची गई थी। फ्रासके मेम्बर अपनी सारी शक्ति वैयक्तिक क्ष्माडोंमें लगा रहे थे। इर था कि बुरोल्सकी कांग्रेसमें भी वही रागिनी न अलापी जाय। बड़ी मुश्किल से मार्क्सको इसमें सफलता प्राप्त हुई, कि बुरोल्समें सार्वजनिक कांग्रेस करनेकी जगह लन्दनमें एक आन्तरिक कान्फ्रेस की जाय, जिसमे मुख्य-मुख्य कमेटियोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हो और जिसका काम भावी कांग्रेसके लिये प्रारंभिक विचार-विनिमय करना हो। कान्फ्रेस २५-२६ सितम्बर १८६५ को लन्दनमें हुई। इसमें जेनरल कौस्लिके प्रतिनिधि, उसके समापति ओडेगर, जेनरल सेक्रेटरी क्रेमर, मार्स्स और ईन्टर्नेशनल उनके दो सहायक इकेरियस और युग (लन्दनमें रहनेवाला एक स्विस घडीसान, जो कि अंग्रेजी, फ्रेंच और वर्मन एक समान बोल सकता था) शामिल हुये। फ्रासके प्रतिनिधि तोले, फ्रीवुर्ग और लिमूसिन थे, जोकि सभी आगे इन्टर्नेशनलको छोड देने वाले थे, लेकिन

उनके साथ १८४८ ई० का मार्क्सका पुराना मित्र शिली अश्रीर एक दूचरा फ्रेंच कमकर वर्लिन मी थे—वर्लिन पीछे पेरिस-कमूनके समय शहीद हुआ। इसी तरहसे स्वीनलेंड, वेल्जियम मी प्रतिनिधि श्राये। कान्फ्रेंसकेसामने सबसे पहले खर्चचलानेके लिये पैसेका सवाल था। पता लगा, इन्टर्नेशनलकी प्रथम वर्षकी कुल श्रामदनी ३३ पौंड थी। मेम्बरी चन्देके बारेमें कोई निश्चय नहीं हो सका, लेकिन यह स्वीकार किया गया, कि प्रचार तथा दूसरे खर्चोंके लिये एक सौ पचास पौंडका फंड उगाहा जाय, जिसने श्रस्ती पौंड इंगलैंडमें, चालीस पौंड फांसमें श्रीर दस-दस पौंड बेल्जियम तथा स्वीजलैंडमें जमा किया जाय। इंगलैंडकी स्थितपर जेनरल-सेक्रेटरी केमरने ‡ श्रपनी रिपोर्ट दी। फीड्रर्ग खौर तोलेंने बतलाया, कि फांसमें इन्टर्नेशनलका श्रच्छा स्वागत हो रहा है। वेकेर श्रीर दुपलेंने स्वीजलैंडके बारेमें संतोषजनक रिपोर्ट दी। जेनरल-केंसिलकी श्रोर पुरलेंने स्वीजलैंडके बारेमें संतोषजनक रिपोर्ट दी। जेनरल-केंसिलकी श्रोर पुरलेंने स्वीजलैंडके बारेमें संतोषजनक रिपोर्ट दी। जेनरल-केंसिलकी श्रोर मार्क्टन प्रस्ताव किया, कि इन्टर्नेशनलकी पहली कांग्रेस १८६६ के सितम्बर या श्रक्त्वरमें जेनेवामें की जाये। स्थानके बारेमें सभी एक मत हुये, लेकिन समयके बारेमें फीच प्रतिनिधियोंके जोर देनेपर उसे मईका श्रन्तिम सप्ताह रक्खा गया।

कान्फ्रेंसकी निजी बैठकें पूर्वाङ्गमें युंगकी श्रध्यच्चतामें हुश्रा करतीं श्रीर श्रपराह्नहमें श्रोड्गेरकी§ श्रध्यच्चतामें बहुत कुछ सार्वजनिक बैठकें होतीं । पूर्वाह्न हमें जिन प्रश्नोंपर ऊहापोह करके कोई निर्याय किया जाता, उनके ऊपर शामकी समाश्रोंमें बहुस होती। इन समाश्रोंमें मुख्यतः कमकर शामिल होते।

३. श्रास्ट्रिया-प्रशिया-युद्ध (१८६५ ई०)

स्त्रास्ट्रिया श्रीर प्रशिया दोनों ही जर्मन (इवाश) जातियाँ हैं । जर्मनी स्त्रमी पूरी तौरसे एक राष्ट्र नहीं वन पाया या श्रीर मिन्न-मिन्न राजवंशोंके सुमीतेके लिये वह श्रलग-श्रलग राज्योंमें बँटा हुन्ना था । प्रशिया जर्मन-राज्योंमें सबसे शक्तिशाली श्रीर वड़ा था । उसकी इच्छा रहती थी, कि सारे जर्मनीको एक राज्यमें वदल दिया जाय, लेकिन, श्रास्ट्रियाका राजवंश हान्सवर्ग श्रपनेको

^{*} Schily. † varlin. ‡ Cremer, § Odgler.

पवित्र रोमन साम्राज्यका उत्तराधिकारी श्रीर समी जर्मन जातियोंका संरच्छ मानता था, इसिलये वह नहीं चाहता था, कि प्रशियाका होहेन्जुलर्न जैसा हल्का राजवंश सभी जर्मनोंका मुखिया बन जाये, इसिलये वह वरावर पुरियाके मनोरथको विफल करनेका प्रयत्न किया करता था। ऐसी स्थितिमे श्रास्ट्रिया श्रीर पुशियाके बीचमें संघर्ष होना स्वामाविक था। इस समर्थके बारेमें कहनेसे पहले मानर्सकी घरेलू कठिनाइयोंके बारेमें कुछ कहना जरूरी है।

(मार्क्स परिवार)--३१ जुलाई (१८६५ ई०) को मार्क्सने एंगेल्सको स्चित किया, कि पिछले दो महीनोंसे हमारा परिवार बन्धक रखकर जी रहा है: "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, कि इस चिट्ठीको लिखने की जगह मुक्ते श्रपनी श्रॅगुली काट डालना अधिक श्रन्छा या। यह सनमुच ही श्रसहा है, कि श्रादमी श्रपने जीवनका श्राघा परवशतामें विताये। मेरे दिलको सिर्फ यही समम्प्रकर सतीष है, कि द्वम श्रीर मैं दोनों मागीदार हैं—मेरा काम है अपना समय सिद्धान्त तथा पार्टी-सम्बन्धी कामोंके लिये देना । सुके मालूम होता है, कि इस घरमे रहना हमारी श्रीकातसे बाहर है। इस साल श्रीर सालोकी अपेचा हम कुछ अच्छी तरह रहे, लेकिन अपने बच्चोंका सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये इसके सिवाय अवसर देनेका कोई ऐसा रास्ता नहीं था, जिसमें कि वह अपना भविष्य सुरिचत कर सके। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, उन्होंने जो कुछ अव तक भुगता है, उसको देखते इससे थोडा सा सतीय हुआ । मैं समभता हूँ, तुम मेरी इस वातसे सहमत होगे, कि शुद्ध कारबारकी दृष्टिसे देखनेपर भी पूरी तौरसे सर्वहारा जैसा पारिवारिक जीवन उपयक्त न होगा, यद्यपि जहाँ तक मेरी स्त्री श्रीर मेरा सम्बन्ध है, यह श्रन्छा होता, श्रथवा यदि लडकियाँ नहीं हमारे लड़के होते।" एंगेल्सने तरन्त अपने मित्रके पास सहायता मेजी। लेकिन, कई वर्षों तक मार्क्स आर्थिक चिन्तात्रोसे मुक्त नहीं हो सके।

उसी साल (१८६५) के ५ अक्तूबरको लॉदेर बुखेरक का एक पत्र मिला बिसने मार्क्सकी ऋार्थिक कठिनाई दूर करनेके लिये एक नया रास्ता वतलाया।

^{*} Lother Bucher.

बुखेर पहले राजनीतिक निर्वासित था, जो पीछे जर्मनी लौटकर प्रशियन सरकार का नौकर हो गया। उसने प्रस्ताव किया, कि "स्टाटसान्जाइगेर" नामक मासिक पत्रमें मार्क्स लेख लिखें, खास तौरसे मालवाजारकी गतिविधिके सम्बन्धमें मासिक रिपोर्ट दिया करें, जिसके लिये काफी पारिश्रमिक दिया जायगा। बुखेरने फाउ मार्क्स श्रीर तरुण महिलाश्रों, विशेषकर सबसे नन्हींका श्रीमनन्दन करते पत्रको समाप्त करते हुये लिखा था: "तुम्हारा श्राज्ञाकारी श्रीर सम्मान-पूर्ण सेवक।" मार्क्सने श्रपना सारा क्रांतिकारी जीवन प्रशियन सरकारके भिन्ना माँगनेके लिये नहीं विताया था। उन्होंने बुखेरके प्रस्तावको माननेसे इनकार कर दिया। कहा जाता है, बुखेरने यह प्रस्ताव महामंत्री विस्मार्ककी रायसे किया था, यह मालूम ही है, कि प्रशियाके नेतृत्वको श्रागे बढ़ाते सारी जर्मनीको एक राज्यमें परिखत करनेका काम विस्मार्कने किया था। बुखेर मार्क्सको इस प्रलोमन हारा खरीदना चाहता था। मार्क्ससे निराश हो बुखेरने डाँ० डूरिंगके सामने वही प्रस्ताव रक्खा जिसने उसे मंजूर किया।

श्रार्थिक कठिनाइयों से भी ज्यादा परेशानीकी बात यह थी, कि इन्टर्नेशनलके कामों में फूँसे रहनेके कारण मार्क्सका वैज्ञानिक कार्य रक गया था, साथ ही
स्वास्थ्य श्रिषक श्रीर श्रिषक खराब होता जा रहा था। १० फ्वेरी १८६६ को
एंगेल्सने उन्हें लिखा था: "तुम्हें सचसुच कुछ ऐसा करना चाहिये, जिसमें
इस कारवंकल (जहरबाद) से छुट्टी मिले।...कुछ समयके लिये श्रपने रातके
कामको बन्द कर दो श्रीर श्रिषक नियमित जीवन विताश्रो।" १३ फ्वेरीको
मार्क्सने श्रपने मित्रकों जवाब देते हुये लिखा: "कल मैं फिर एक बुरे फोड़ेके
मारे पीठके बल पड़ गया, जो कि उस्संधिमें निकला है। श्रगर मेरे पास श्रपने
परिवारके लिये पर्याप्त पैसा होता श्रीर मेरी पुस्तक खतम हो गई होती, तो मैं
इसकी बिल्कुल पर्याह नहीं करता, कि मैं श्राज कबिस्तानमें पहुँचूँ या कल।"
एक सप्ताह बाद दूसरी भयंकर सचना मिली, जिसे सुनकर एंगेल्सने श्रपने मित्र
को जोर देकर कहा, कि कुछ सप्ताह कामसे विश्राम लेकर मारगेट चले जाश्रो।

^{*} Staatsanzeiger.

मारगैटमें पहुँचकर मार्क्स बहुत जल्दी प्रकृतिस्थ हो गये। उन्होंने अपनीः लड़की लौराको लिखा था: "मैं वन्तुतः इस बातसे वहुत खुश हूँ, की कि होटलमें न जा मैं एक निजी घर में ठहरा हूं । होटलमें रहने पर मुक्तें स्थानीय राजनीति, घरेलू दुराचार-कथात्रों श्रीर पड़ोसियों की ऊटपटाँग वार्तोंसे परेशान होना पडता। तो मी मैं नहीं कह सकता हूँ, कि मै किसीकी पर्वाह नहीं करता और कोई मेरी परवाह नहीं करता, क्योंकि आखिर यहाँ मेरी घर माल-किन है, जो कि खरमेकी तरह बहरी है, और उसकी लडकीकी आवाज सदा फटी-फटी सी रहती है। जो भी हो, वे अब्छे लोग हैं, मेरा ध्यान रखते हैं और वीचमें दखल नहीं देते। मैंने चहलकदमी करनेकी ब्रादत डाल ली है। दिनका श्रिषिक भाग मैं खुली हवामें घूमता रहता हूँ, श्रीर १० वजे सो जाता हूँ । मैं कुछ नही पढ़ता, लिखता भी कम, घीरे-भीरे मैं निर्वाणकी रियतिमें पहुँचनेकी कोशिश कर रहा हूँ, जिसे कि वौद्ध धर्म मानव-श्रानन्दकी पराकाष्टा मानता है।" इस पत्रके नीचे एक छोटा सा चुटकी लेनेका नाक्य लिखा हुआ था, जिससे त्रानेवाली घटनाकी पूर्वसूचना मिलती है: "वह छोटा रौतान लाफार्य अब भी मुक्ते अपने पूर्वावादसे परेशान कर रहा है। मैं समकता हूँ, वह तक संतुष्ट नहीं होगा, जब तक कि मैं उसकी खोपड़ीमें कुछ सममकी बात नहीं डाल देता।" मार्क्स अभी मारगेटहोंमें थे, इसी समय जर्मनीके ऊपर मुँडराते युद्ध-बादलोंमें पहली विजली चमकती दिखाई पढी। 🗆 अप्रैलको विस्मार्कने श्रास्ट्रियाके विरुद्ध इतालीके साथ एक श्राक्रमणात्मक मित्रताकी संघि की, श्रीर दूसरे दिन उसने गैरमानिक-डीट (जर्मन जातियों की पार्लियानेन्ट) से कहा, कि श्राम मताधिकारके श्राधारपर निर्वाचित एक जर्मन पार्लियामेन्ट बुलाई जाय, जो कि जर्मन सरकारोंके पास रखनेके लिये लीगके एक सुधारपर विचार करे। मार्क्सने इसके गरेमें अपने विचार प्रकट करते हुये कहा था: "मालूम होता है जर्मन वृद्धींजी थोडा सा विरोध करनेके बाद विरमार्कके प्रस्तावकी स्तीकार कर लेगी, क्योंकि आखिर वृद्यांजीका वास्तविक धर्म तो गेनापार्त-वाद है।"

इसी समय अपने नये नित्र हनोवरवासी डॉ॰ कुगेल्मानको लिखे पत्रमें भी

उन्होंने इन्हीं विचारों-को प्रकट किया। बहुत तरुणाहँसी ही कुगलमान मानर्ष श्रीर एंगेलसका समर्थक था। उसने बड़े प्रयत्नसे उनकी सारी कृतियोंका संग्रह किया था; लेकिन, उसका मान्सिके साथ सालात् परिचय १८६२ ई० में ही हो पाया, जिसमें फाइलिग्रथ का हाथ भी था। कृगेलमान जल्दी ही मार्न्सिका विश्वासपात्र हो गया। उसके नाम मार्न्सिन बहुत से ऐतिहासिक श्रीर सैद्धान्तिक महत्वके पत्र लिखे।

किसी भी वास्तविक परिस्थितिको अच्छी तरह देखे बिना किसी भी निर्णय का प्रकट करना बहुत मुश्किल है। मार्क्स और एंगेल्स का संबंध इस समय जर्मनीसे टूट चुका था, त्रीर वर्षोंसे वहाँकी घटनात्र्योंका पूरा पता नहीं था। इसीलिये एंगेल्सने प्रशियाकी सैनिक योग्यताका ठीकसे मूल्यांकन नहीं कर पाया । जन मुशियाकी विजयकी खन्नर उन्हें मिली, तो उन्हें स्त्रपनी इच्छाके विरुद्ध वास्तविकताको स्वीकार करना पड़ा । २५ जुलाईको एंगेल्सने इसी बातको स्वीकार करते हुये लिखा था: "जर्मनीकी स्थिति इस समय मुक्ते बिल्कुल सीधी सी मालूम होती है। जनसे विस्मार्क ने प्रशियन सेनाके साथ ऋपनी योजनाको परा किया. श्रीर इतनी जबर्दस्त सफलता प्राप्त की, तबसे जर्मनीमें "घटनाश्री-का विकास" इतने निर्णायक रूपसे हुन्ना, कि दूसरोंकी तरह हम भी चाहे पसन्द करें या न करें इन तथ्योंको पक्के होनेको स्वीकार करना होगा ।...कमसे कम इसका एक अच्छा पहल भी है, वह यही कि यह स्थितिको आसान बना देता है, और छोटी-छोटी बक्वासोंको हटाकर क्रान्तिको ऋपना काम करनेके लिये त्रासानी पैदा कर देती है। जो भी हो, जर्मन पार्लियामेन्ट, पुशियन चेम्बर (भवन) से बिल्कुल त्रलग चीज है। त्रव सभी छोटे-छोटे राज्योंकी विशेषतायें त्रान्दोलनमें घसिट त्रायेंगी, निकृष्टतम स्थानीयताको मजबूत करने-वाले प्रभाव नष्ट कर दिये जायेंगे, श्रीर पार्टियाँ केवल स्थानीय होनेकी जगह वस्तुतः राष्ट्रीय वन जायेंगी।"

कोयनिग्यात्जकेश युद्धने त्यास्ट्रियाके खिलाफ त्र्यपना फैसला दे दिया, वर्मनी श्रव एक शक्तिशाली बृक्वां-सामन्तशाही राज्य था।

^{*} Koniggrati

४. जेनेबा-कांग्रेस (१८६६ ई०)

मईमें इन्टर्नेश्नेनलकी प्रथम कांग्रेसके किये जानेका निश्चय किया गया था। लेकिन उस समय जर्मनी श्रीर श्रास्ट्रियाके युद्धके कारण उसे सितम्बर तकके लिये स्थगित करना पड़ा । श्रपने श्रस्तित्वके दूसरे वर्षमें इन्टर्नेशनलने श्रीर तेजी से प्रगति की । जेनेवा उस समय युरोपके आन्दोलनका एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। स्वीजलैंडके जर्मन-माषामाषी तथा फ्रेंच-इस्तालियन भाषा-भाषी दोनों भागोंके कमकरोंने अपने पार्टी-संगठन कायम किये थे। जर्मन-स्विस "बेर वोरबोटे" नामक एक मासिक प्रकाशित होता था, जिसका सम्पादक तपा हुआ क्रान्तिकारी बेकर था। इस पत्रमें प्रथम इन्टर्नेशनलके बारेमें जाननेकी बहुत महत्वपूर्ण सामग्री मौजूद है। पत्र जनवरी १८६६ में निकलना शुरू हुआ। बेल्जियमसे "ला त्रिबृत दु पिन्न" नामक एक दूसरा पत्र निकाला जाता था, निसे मार्क्स नेनेवाके दोनों पत्रकी तरह ही इन्टर्नेशनलका अपना पत्र मानते थे। फ्रांसमें भी इन्टर्नेशनलने काफी प्रगति की थी। मार्क्स श्रीर एंगेल्स रूसी जारशाहीको प्रति-क्रान्तिका जबर्दस्त श्रीर शक्तिशाली गढ़ मानते थे, इसलिए वह रूसके प्रभावका विरोध करते थे। फ्रेंच प्रतिनिधि इससे सहमत नहीं थे। फर्वरी १८६६ में इन्टरनेंशनलुके फ्रेंच मागने जेनरल-कौंसिलके पोलिश प्रश्नको काग्रेसके कार्यक्रममें रखनेका जबर्दस्त विरोध किया। वह कहते थे : कैसे पोल एकताको पुन: स्यापित करनेके द्वारा कोई रूसी प्रमावके विरोध करने-की बात सोच सकता है, जब कि एक श्रोर रूस श्रपने यहाँ किसान श्रर्घ-दासोंको मुक्त कर रहा है, जब कि पोल अभिजात्य-वर्ग और पादरी वैसा करनेसे इन्कार करते हैं। आस्ट्रिया-पुशियाकी लड़ाईमें भी इन्टनेंशनलके फ्रेंच मेम्बरोंने जेनरल-कौंसिलमें बड़ी कठिनाइयाँ पैदा नीं। इसी सिलसिलेमें उन्होंने मार्क्स "बड़े श्रब्धे मित्रों" लाफार्ग श्रीर लोगोंके ऊपर मी व्यग किया या-ये दोनों पीचे मार्क्यके दामाद बने, यद्यपि उस समय वह "मुघोंके धर्मवृत" बने हुये थे। लेकिन इन्टर्नेशनलकी शक्तिका सबसे बड़े आधार फास नहीं बल्कि अंग्रेजी

[#] Longuet

मजूर-संघ थे। मार्क्सको ऋँग्रेज मजद्रोंकी उस विशाल समासे बड़ी प्रसन्नता हई, जो कि सेन्ट मार्टिन हालकी बैठकसे कुछ सप्ताह पहले इन्टर्नेशनलके नेतलमें मतदानके स्थारके पद्ममें हुई। मार्च १८६६ में विहुग (उदार) ग्लेड्सटनके उदार मंत्रिमंडलने सम्पितदानके सुधारके सम्बन्धमें एक जिल (विधेयक) उपस्थित किया, लेकिन वह सुधार ग्लेड्डसटनके अपने दलके कुछ श्रादिमयोंको बहुत उग्र मालूम हुन्ना श्रीर वह टोरियोंकी श्रोर चले गये, जिसके कारण उदार सरकार ट्रट गई श्रीर उसके स्थानपर डिजराइलीका टोरी मंत्रिमंडल कायम हुन्ना। डिजराहलीने उक्त सुधारोंके सवालको त्रानिश्चित कालके लिए स्थगित रखना चाहा, जिसपर जबर्दस्त आ्रान्दोलन शुरू हो गया। ७ जुलाईको मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था :- "लन्दनमें मजद्रोंके प्रदर्शन बड़े श्रद्भुत हैं । जो हमने १८४६ ई० के बाद अब तक इंगलैंडमें जो देखा, उनसे तुलना करने-पर यह केवल इन्टर्नेशनलका काम है। उदाहरणार्थ टेफलगार स्क्वायरके प्रदर्शनका नेता लुकरेफ्ट हमारी कौंतिलका सेम्बर है । "ट्रेफलगार स्क्वायर" में थीस हजार श्रादिमयोंकी समामें लुकरेफ्टनेक व्हाइटहाल गार्डेन्समें एक प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव किया, "जहाँ हमने एक बार राजाके सिरको काट फेंका था।" थोड़े ही समय बाद साठ हजार ब्रादिमयोंका एक बड़ा प्रदर्शन हाइड पार्कमें हुन्ना, जिसने कि गरीब-गरीब विद्रोहका रूप धारण कर लिया।

इंगलैंडकी मजदूर समाग्रोंने अपने आन्दोलनको आगे बढ़ानेमें इन्ट-नेशनलकी सेवाओंको स्वीकार किया, वह दिल खोलकर इन्टनेशनलकी आर्थिक सहायता भी करती थीं। पाँच हजार मेम्बरोंवाली चमारोंकी सभा पाँच पौड वार्षिक चन्दा देती थी, नौ हजार मेम्बरोंवाली बढ़इयोंकी सभा दो पौंड और वीनसे चार हजार मेम्बरवाले ईट जोड़नेवाले एक पौंड वार्षिक देते थे।

लेकिन, इंगलैंडमें सुधार-श्रान्दोलनने मजदूरोंकी लड़ाकू प्रवृत्तिका दम घोट दिया। दिवर्कमेन्स एडवोकेट (कमकरीका वकील) साप्ताहिक १८६५ ई० में इन्टर्नेशनलका पत्र माना गया था लेकिन श्रात्र फवेरीमें उसने श्रापना नाम

[#] Lucraft.

The Commonwealth दि कामन वेल्थ ही नहीं बदल दिया, बल्कि बूर्जी मतदान-सुधारकोकी सहायता प्राप्त करनेके लिये उसने इन्टर्नेशनलको भी भुला दिया।

मार्क्य जैनेवा-काग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि उस वक्त वह अपने शोध-कार्यमें बहुत व्यस्त थे। उन्होंने लन्दनसे जानेवाले प्रतिनिधियोंके लिये एक वक्तव्य तैयार किया, जिसमें कमकरोंके वीचमें तुरन्तके सहयोग एवं वर्गके तीरपर मजदूरोंके संगठनकी तुरन्तकी आवश्यकतात्रोंके लिये काम करनेपर जोर दिया। इस वक्तव्य (मेमोरेंडम) का महत्व प्रोफ्रेसर वीसलीके "उद्घाटन अमिमायण के वारेमें कहे गये शब्दों में था: इसमें थोड़े से पन्नोंमें पहलेसे भी अधिक अब्बे दग और पूरी तौरसे अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी तुरन्तकी मांगोंको संचेपमें कहा गया है। जेनरल-कौंसिलके अध्यक्त ओड्गेर उसके जेनरल-सेक्रेटरी केनर तथा एकेरियस और युंग कौंसिलके प्रतिनिधियोंके तौरपर जेनेवाकाग्रेसमें सम्मिलित हुये।

काग्रेस ३-८ सिवस्वरको हुई । उसमे साठ प्रतिनिधि श्राये थे । मार्क्स इस काग्रेसके कामको श्राशासे श्राविक बेहतर कहा था, यदापि "पेरिसके मद्रपुरुषों" के वारेमे उनकी मारी शिकायत थी : "उनके दिमाग लोखले" पूषनीवाक्योंसे मरे हुये हैं । वह साइन्स की वार्ते वधाइते विलक्कल ही श्राञ्च हैं । वह सभी क्रान्तिकारी कार्रवाइयों श्रार्थात् वर्ग-संघर्षसे उत्पन्न होनेवाले एकताबद्ध सामा- जिक श्रान्दोलनों—जो राजनीतिक सापनो (उदाहरणार्थ कामके दिनकी कान्ती सीमा) द्वारा किये जा सकते हैं—को तुच्छ दृष्टिसे देखते हैं । स्वतन्त्रता श्रीर सरकार-विरोध श्रार्थात् श्राधिकारीय व्यक्तिवादके विरोध—के वहाने ये मद्र- पुष्टि —जिन्होंने कि घोर श्रान्धाइन्धी स्वेच्छाचारकों सोलह वर्षों तक सिर मुकाकर सहन किया श्रीर श्रव भी सहन कर रहे हैं, एवंबस्तुत : एक महे वूर्जा श्रार्थिक-व्यवस्था प्रधोंवाद का उपदेश करते हैं ।"

प्रतिनिधियोम इन फ्रेचोंकी संख्या एक-तिहाई होनेसे काफी मजवूत थी। यद्यपि अन्तमें उन्हें कोई लाम नहीं हुआ, लेकिन वात वघाडनेमें वह पीछे नहीं रहे। उन्होंने प्रस्ताव रक्खा कि केवल शारीरिक काम करनेवाले कमकर ही इन्टर्नेशनलके मेम्बर स्वीकार किये जायें, श्रीर दूखरे हटा दिये जायें, किंद्र वह स्वीकृत नहीं हुन्ना । उनके धार्मिक प्रश्नों-सम्बन्धी प्रस्तावको भी नहीं स्वी-कार किया गया । सबसे ज्यादा खराव तथा तोलें और फ्रीबर्ग द्वारा उपस्थिति जो प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था। उसमें "भ्रष्टताका विद्धान्त" घोषित करते हुये स्त्रियोका स्थान घरके भीतर बतलाया गया था। उसका विरोध बर्लिन तथा दूसरे फ्रेंच प्रतिनिधियोंने स्वयं किया। लेकिन उसके साथ जेनरल कौंसिलका भी एक प्रस्ताव स्वीकार करके उसके विषदंत तोड़ दिये गये। इसमें शक नहीं फ्रेंच प्रतिनिधियोंने पूर्घोवादकी कुछ बातें घुसानेमें सफलता पाई। जेनरल-कौंसिलका नया चुनाव हुआ । उसका हेडक्वार्टर लन्दनमें रक्खा गया । कांग्रेसने भौं िरालपर सारी दुनियाके मजूर-वर्गकी स्थितिके विवरण-सहित आँकड़े तथा इन्टर्नेशनलकी दिलचस्पीकी सभी बावोंपर चमवानुसार रिपोर्ट निकालनेका काम सीपा था। लर्चके लिये निश्चय किया गया था कि इन्टर्नेशनलका प्रत्येक मेम्बर २० साँतीम (.३ फ्रांक) वार्षिक चन्दा दे, एक अथवा हेढ पेन्स सभी मेम्बरींको स्रपनी सदस्यता-कार्डके शुल्कके स्रतिरिक्त देना चाहिये। प्रोग्राम-सम्बन्धी उसके निर्णय महत्वपूर्ण थे, जिनमें मजूरोंकी रहा श्रीर मजदूर-सभाश्री-के बारेमें निर्णय किया गया था। वयस्क स्त्री-पुरुष (१८ वर्षसे ऊपर के) कमकरोंके लिये अधिकसे अधिक प्रतिदिन आठ घंटा काम होना चाहिये। रातके कामका विरोध किया गया । लियोंको चिर्फ रातके ही कामसे नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य श्रीर सदाचारके लिये हानिकारक सभी कामोंसे श्रलग रहनेकी माँग की गई। मजदूर-सभाश्रोंके बारेमें कहा गया, कि उनका काम केवल उचित ही नहीं बल्कि आवश्यक है। मजदूर समार्ये (ट्रेड यूनियन) सर्वहारा-की एकमात्र शक्ति, अर्थात् पूँजीवादके केन्द्रीकृत सामाजिक शक्तिके विस्स इस्तेमाल करनेकी एकमात्र साधन है, त्रीर जब तक कि उत्पादनका पँजीवादी दंग मौजूद है, तब तक मजदूर समाश्रोंके बिना कोई काम करना सम्मव नहीं। यही नहीं बल्कि मजदूर-समार्थे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धोंको स्थापित करके अपनी कार्रवाइयोंको समष्टित कर सकती है।

सन मिलाकर जेनेवा-कांग्रेसके निर्ण्योंसे माक्सँको बहुत स्त्राशा बँधी। १३

श्रक्त्वर १८६६ को कुगेलमान्को उन्होने लिखा था: लन्दन मजदूर-परिषद्≉ (जिसका मन्त्री हमारा प्रेसीडेट श्रोडगर है) इस समय एक सुम्नावपर विचार कर रही है, कि वह श्रपनेको इन्टर्नेशनलका श्रंग घोषित करे। यदि इस प्रस्तावको उसने स्त्रीकार कर लिया, तो एक वर्षमें यहाँका मजदूर-नर्ग हमारे नियंत्रयामें श्रा जायेगा, श्रीर हम श्रान्दोलनको श्रीर ज्यादा श्रच्छी तरहसे श्रागे ले चल सकेगे।" लेकिन कौंसिलने इस प्रस्तावको उकरा इन्टर्नेशनलके साथ बहुत मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम करनेको स्त्रीकार किया।

अपने जन्मके प्रथम वर्षमें भी इन्टर्नेशनलके नेता आगेके लिये बड़ी सफलताकी आशा रख सकते थे, लेकिन साथ ही वह यह भी समम्म सकते थे, कि यह सफलतायें कुछ निश्चित सीमाओं के भीतर ही हो सकती हैं। मार्क्षको तब भी एक व्यवहारवादी आदर्शवादीके तौर पर काग्रेस कामोंसे संतोष हुआ। जेनेवा-काग्रेसके समय ही बालटिमोरमें अमेरिकन मजदूरोंकी काग्रेस हुई, जिसने आउ घंटे कामके दिनकी माँग घोषित करते हुये कहा: पूँजीवादकी वेडीसे पूर्ण तौरसे मजदूरोंको मुक्त करनेके लिये इस माँगका पूरा होना सबसे जरूरी और पहला काम है।

^{*} Trade Council

अध्याय १४ ''कपिटाल'' (१८६६-७८ ई०)

१. प्रसव वेदना

मार्क्स वर्षोंसे अपने अमर यंथ "डास कपिटाल" (पूँजी) के लिखनेमें लगे हुये थे। इसके लिये उन्हें वर्षों तक करीव-करीव रोज दस-दस घंटे व्रिटिश म्युजियममें संग्रहीत ग्रंथों, विवरणों ग्रीर ग्राँकड़ोंमें डूबा रहना पड़ता था। श्रव वह समय नजदीक आ गया था, जब कि इस दीर्घकाल-व्यापी अमके प्रथम फलको प्रकट किया जाय । इसी व्यस्तताके कारण वह जेनेवा-कांग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि वह कमकरोंके हितके लिये कांग्रेससे भी श्रिधिक इस ग्रंथके महत्वको समभते थे। इस समय वह "कपिटाल" के प्रथम जिल्दकी प्रेस-कापी श्रन्तिम तौरसे तैयार कर रहे थे । इसकी सामग्री यद्यपि वर्षोंसे जमा की जा रही थी, लेकिन लिखना १ जनवरी १८६६ से शुरू हुआ। इतनी श्रिधिक "प्रसव-वेदना" के कारण लिखनेका काम बड़ी तेजीसे हुन्ना। यह प्रसव-वेदना साधारण मनुष्यकी गर्भावस्थाके महीनोंसे दूने वधों तक चलती रही श्रीर कैसी ग्रार्थिक तथा दूसरी कठिनाइयोंके बीच मार्क्सने इस कामको जारी रक्खा, यह हम वतला खुके हैं। कई बार मार्क्सने ग्रंथ समाप्तिका काल निश्चित किया, लेकिन हर समय अवधि बढ़ती गई। १८५१ ई० में ''पाँच सप्ताह" में समाप्त होनेकी वात कही, लेकिन १८५९ ई० में ग्रामी भी "छ सप्ताह" की देरी थी। मार्क्स ग्रपनी कृतिके स्वयं जबर्दस्त ग्रालोचक ये, इसलिये उसमें जान-बूमकर कोई त्रुटि नहीं रहने देना चाहते थे। एंगेल्स जल्दी समाप्त करनेके लिये कितना ही जोर देते, लेकिन उसका कोई फल न होता। १८६५ ई० के अन्तमें काम यद्यपि खतम हो गया, लेक्नि जो हस्तलेख ऋमी तैयार हुआ या, उसे केवल मार्क्स ही प्रेस में देने लायक बना सकते थे, यहं काम एंगेल्सके मानका भी नहीं था। जनवरी १८६६ से मार्च १८६७ तक लगकर मार्क्सने "कपियल"

की प्रथम जिल्दको प्रेसके लिये सुन्दर दगसे उसी रूपमें तैयार किया, जिस रूपमें कि वह आज हमारे सामने है। करीब दो शताब्दियोके परिश्रमस्वरूप जो प्रसुर सामग्री जमा हुई थी, उसका प्रथम भाग इस जिल्दके रूपमें सर्वतोमग्र रूपेया मानस्वैन तैयार किया। सवा वर्षमें लगाकर पालिश करनेका काम जिस वक्त पूरा कर रहे थे, उसी समय मानस्वैका स्वास्थ्य ही नहीं खराब या, बल्कि (फर्वेरी १८६६ ई०) वह मयंकर बीमारीमें भी पढ़ गये थे। कर्जके बोमके कारण चिन्ताये अलग बहुत बढ़ी हुई थीं और इसी बीचमें उन्हें इन्टर्नेशनलकी जैनेवा-काग्रेसके लिये भी कठोर परिश्रम करना पर्खा।

नवम्बर १८६६ में इस्तलेखका पहला बढल हाम्बुर्गमें प्रकाशक श्रोटो माइज्नेरके पास मेजा गया, जिसने इससे पहले प्रशियन सैनिक समस्याके रूपर एंगेल्सकी एक छोटी सी पुस्तकको प्रकाशित किया था। श्रप्रैल १८६७ में पुस्तकके बाकी हस्तलेखको मार्क्स श्रपने साथ हाम्बुर्ग ले गये। मार्क्सको माइज्नेर "मला श्रादमी" मालूम हुन्ना। थोडी सी वातन्त्रीतके बाद सब शतें निश्चित हो गईं। मार्क्स तब तक जर्मनीमें रहनेके लिये उत्सुक थे, जब तक कि लाइपिका (जहाँ पुस्तक छुन रही थी) से प्रथम प्रूप श्रा जाये। इसी बीचमें वह अपने मित्र कुगेलमानसे मिलने हनोवर गये, जहाँ उनका वडा स्वागत-सत्कार हुन्ना। कुगेलमान-परिवारमे उन्होंने कुछ स्पताह वहे श्रानन्दके साथ बिताये, जिसके बारेमें उन्होंने लिखा था: "जीवनके रेगिस्तानमे एक श्रायन्त श्रानन्दमय श्रोर श्रवकूल हरियावल।"

हनोवरके शिच्चित लोगोने मार्क्स साथ जिस तरहका सन्मान श्रीर सहातु-भूति दिखलाई, वैसी श्रभी तक उन्हें नहीं मिली थी, इसिलये ४६ वर्षकी श्रवस्थामे मार्क्सको उससे बहुत प्रस्कता होनी ही चाहिये थी। २४ श्रप्रैलके पत्रमे उन्होने एगेल्सको लिखा था, "तुम जानते हो, शिच्चित वृद्वांबीके वीच हम दोनोकी प्रसिद्धि उससे कहीं श्रिषक है, जितना कि हम सोचते हैं।" २७ श्रप्रैलके पत्रमे एगेल्सने जवाव देते मार्क्सकी श्रमर कृतिका जिक्र करते हुये लिखा था: " मैं हमेशा श्रनुभव करता था, कि यह सौरी किताव, जिस पर कि तुम इतने लम्बे श्रसेंसे काम कर रहे थे, तुम्हारे सभी दुर्माग्योंका कारण है कि उन दुर्माग्यों पर काबू पानेमें तुम तब तक समर्थ नहीं होगे, जब तक कि तुमने इस भारको ह्या नहीं दिया। इसके न पूर्ण करनेने शारीरिक, बौद्धिक श्रीर श्राधिक तौरसे तुम्हें बहुत नीचे की श्रोर घसीटा। मैं श्रच्छी तरह समभता हूँ, कि श्रव जब कि श्रन्तमें उससे मुक्ति ले ली, तो तुम श्रपनेको एक दूसरा ही श्रादमी समभो। विशेषकर श्रव जब तुम दुनियामें फिर लौटोगे, तो देखोगे, कि यह उस तरहकी श्रवसाद करनेवाली चीज नहीं है, जैसा कि पहले थी।" इसी पत्रमें एंगेल्सने श्रपने बारेमें लिखा कि मैं जल्दी ही "सौरे त्यवसाय" से श्रपनेको मुक्त करनेमें सफल हूँगा, क्योंकि श्रव फर्ममें पार्टनर होनेके बाद जिम्मेवारियाँ बहुत बढ़ जानेसे मेरी हालत मुश्किल हो गई है।

७ मईकी चिट्ठीमें मार्क्सने लिखा था: "मुक्ते पक्की आशा और विश्वास है, कि इस वर्षके अन्त तक में आदमी बन जाऊँगा, कमसे कम इस अर्थमें, कि अपनी आर्थिक स्थितिको पूरी तीरसे सुधार करनेमें समर्थ हो मैं अन्तमें अपने पेरों पर खड़ा हो सकूँगा। तुम्हारे बिना में कमी अपनी कृतिको पूरा नहीं कर सकता था। में तुम्हें विश्वास दिलाता हुँ, कि मेरी आत्मापर सदा यह ख्याल एक बड़े बोक्की तरह रहता है, कि तुम अपनी अद्भुत योग्यताको बनियापनमें बरबाद कर रहे हो, उसे मेरे लिये वेकार रख रहे हो और इस सबके ऊपर मेरी सारी दुखदायक परेशानियोंके लिये कष्ट उठा रहे हो। लेकिन मार्क्स अपने पत्रके अनुसार वर्षके अन्तमें क्या अपने जीवनमर अपनेको आर्थिक तौरसे निश्चिन्त नहीं बना सके। हाँ, अब विपदाओंने जैसे कठोर रूपमें उनका पीटा करना छोड़ दिया।

मान्संको उनका पिता 'हृदयहीन' कहता या, दूसरे कितने ही मिलनेवाले भी उन्हें रूखे स्वभावका समभते ये। लेकिन, इस हृदयहीन पुरुषके पास कितना महान् हृदय था, यह अपने एक समर्थक खान-इंजीनियर सिगफीड गेयर—जो कि किसी समय अमेरिका चला जानेवाला था—के नाम लिखे उनके एक पत्रसे मालूम होगा: "तुम मेरे बारेमें बहुत बुरे तौरसे सोच रहे होगे, श्रीर खास करके इसलिये जब में तुग्हें कहता हूँ कि तुम्हारे पत्र मेरे लिये बड़े आनन्दकी चीज ही नहीं ये, बल्कि जिन कठिनाइयों से सर समयमें वह मिले थे,

उन्होंने मुक्ते वास्तविक सान्त्वना दी। यह ज्ञान मेरी नडी चृतिपूर्ति करनेवाला था. कि हमारी पार्टीके लिये एक योग्य तथा उच्च विद्यान्तोवाला श्रादमी प्राप्त हुन्ना है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे पत्र मेरे लिये वैयक्तिक तौरसे मित्रताके ऐसे गर्मागरम शब्दोंमें सदा लिखे होते थे। ऐसे ब्रादमीके लिये, जो कि सरकारी दुनियाके कठोर संघर्षमे लगातार लगा हुन्ना हो । श्रच्छा तो, तुम पूछोगे कि तब मैंने क्यों नहीं तुम्हें जवाब दिया ! इसीलिये कि मैं लगातार कबके किनारे मेंडरा रहा या और जब कि अपनेमें काम करनेकी समतावाले समयके एक-एक मिनटको मै श्रपनी उस पुस्तकको समाप्त करनेमे लगानेके लिये मजबूर था. जिसके लिये मैंने अपने स्वास्थ्य. अपने आनंद और अपने परि-नारको बलिदान कर दिया। मैं त्राशा करता हूँ, कि इस व्याख्याको त्रीर श्रिषिक बढ़ानेकी श्रावश्यकता नहीं है। तथाकथित 'व्यावहारिक' पुरुषों श्रीर उनकी बुद्धिपर मैं हॅसता था। त्रगर मेरा चमड़ा बैलके जैसा (मोटा) होता. तो भी यह स्वामाविक था, कि मैं मानवताके दुःखोंकी तरफसे पीठ फेरकर केवल अपने चमड़ेका ख्याल न करता। लेकिन, मेरी वह अवस्था नहीं है, इसलिये अगर अपनी पुस्तकको कमसे कम हस्तलेखके रूपमें बिना पूरा किये मै मर जाता, तो मैं अपनेको अत्यन्त अन्यावहारिक समक्तता।" मार्क्सको किन भावनास्त्रोने "कपिटाल" (पूँजी) को पूरा करनेके लिये अठारह वर्षों तक घोर न्तपस्याका जीवन बितानेके लिये मजबूर किया, यह उपरोक्त पक्तियोंसे स्पष्ट है।

हनोवरमें रहनेके समय वहाँके एक एडवोकेट वार्नेबोल्डने यह सूचना उनके पास पहुँचाते वतलाया, कि विस्मार्क आपकी महान् प्रतिमाको जर्मन-जनताके उपयोगके लिये इस्तेमाल करना चाहता है। मार्क्षका ख्याल था: "इस पट्टेके बौद्धिक चितिजमे अपने सोचनेके तरीकेकी यह विशेषता है, जो कि यह हरेक आदमीको अपने जैसा समस्तता है।"

विस्मार्कसे तो कोई सम्बन्ध स्यापित नहीं हो सका, लेकिन जब मार्क्स जर्मनी

[#] Warnebold.

से लन्दन लौट रहे थे, तो स्टीमरमें उन्हें एक जर्मन-तरुखी मिली, जो विस्मार्क-की सम्बन्धी थी। लड़की मरदाना, करीव-करीव सैनिक रोव-दावकी थी। जब उसे मालूम हुआ, कि उसका सहयात्री भी लन्दन जा रहा है, तो उसने उनसे रेलवे-ट्रेनके बारेमें जानकारी हासिल करनी चाही। मालूम हुआ, उसे अपनी टेन पानेके लिये कुछ घंटों तक प्रतीचा करनी पड़ेगी। मार्क्सने उसका दिल वहलानेके लिये इन घंटोंको साथमें हाइड-पार्कमें टहलते त्रितानेकी इच्छा प्रकट की । कुगेलमानको उन्होंने इसके बारेमें लिखा था : "मालूम हुन्ना कि उसका नाम एलिजावेथ फान पुरकामर* था, श्रीर वह विस्मार्ककी भांजी थी, जिसके साथ अभी वर्लिनमें वह कुछ रुप्ताह रही थी। उसे सारी सेना-सूची कंठाग्र थी, क्योंकि उसका परिवार हमारी चेनाको सम्मानित भद्र पुरुषोंको प्रदान करता है ।...वह बहुत बड़ी श्रानन्दी श्रीर सुशिचिता लड़की थी, लेकिन श्रन्त-स्तल तक म्राभिजात्यवर्गीय थी। उसे यह जानकर कम म्राश्चर्य नहीं हम्राः कि वह लाल हाथोंमें पड़ गई है।" लेकिन तरुखीको जान पड़ता है इस जान-कारीसे कोई खेद नहीं हुन्ना । उसने मार्क्सकी इस कुपाके लिये उन्हें श्रपने पत्रमें दिलसे घन्यवाद दिया । यही नहीं उसके माता-पिताने भी अपनी लड़कीके प्रति इस "हृदयहीन" की विशाल-हृदयताकी बात मुनकर उन्हें वहुत घन्यवाद मेजा।

लन्दन पहुँचकर मार्क्स अपनी पुस्तकके प्रुफ्त शोध कर मेजते रहे, लेकिन मुद्रककी मुस्तिथे उनको कई मर्ति मुँसुलाना पड़ता था। १६ अगस्त १८६७ के मिनसारके दो बजे एंगेल्सको मार्क्सने अमी-अभी अन्तिम प्रुफ्त देखकर समाप्त करनेकी स्चना देते हुये लिखा था: "सो यह जिल्द अब समाप्त हो गया। यह सम्भव हो सका, इसके लिये में केवल तुम्हें धन्यवाद दूँगा। तुम्हारे विल-दानोंके विना, तीनों जिल्दोंके लिए विशाल मात्रामें जो कार्य करना पड़ा, उसे में शायद कमी नहीं कर सकता था। मैं हृदयसे धन्यवाद देते हुये तुम्हारा आलिंगन करता हूँ। अभिनन्दन, प्रेमपूर्वक मेरे प्रिय मित्र!"

[#] Puttkamer.

२. प्रथम जिल्द

"कपिटाल" मार्क्स की श्रमर श्रौर वैज्ञानिकतापूर्ण कृति है, जिसे पढ़नेका धैर्य बहुत कम लोगोंको होता है। उसके प्रथम भागको संच्वेपसे यहाँ देना भी वाछनीय नहीं है, लेकिन कुछ शब्द इसके बारेमें यहाँ लिखने जरूरी हैं। १८५६ ई॰ में "राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना" मार्क्सने लिखी थी, जिसमे मालों (पएयो) श्रीर पैसेके स्वभावके बारेमें लिखा गया था। "कपिटाल" की प्रथम जिल्दके प्रथम ऋष्यायमें उसीको संदोपसे लिखा गया है। जर्मन प्रोफेसर प्रथम श्रध्यायको "रहस्यवादकी वात" कहकर नाक-भौ सिकोडते थे। मार्क्सने यहाँ कहा था: "पहली नजर डालनेपर माल श्रासानीसे सम्भी जाने-वाली एक मामूली सी चीज मालूम होती है। किन्तु, इसका विश्लेषस् करने पर मालूम होता है, कि यह श्रत्यन्त दुरूह वस्तु श्रतिमौतिक सूच्मताश्रों श्रीर धर्मशास्त्रीय चालाकियोंसे भरी हुई चीन है। जहाँ तक उपयोग-मूल्यके रूपमें यह पाई जाती है, इसमें कोई भी रहस्यवाद जैसी वात नहीं है।...काष्ठका श्राकार बदल जाता है, जब हम उसकी एक मेज बनाते हैं, तो भी मेज कान्ठ ही, एक साधारण तौरसे प्रत्यन्त देखी जानेवाली चीज रहती है। पर जैसेही यह माल (सौदा) के रूपने प्रकट होती है, वैसे ही यह सर्वातिरिक्त† तथा साथ ही अप्रत्यस्वकरणीय वन जाती है। वह अपने चारों पैरोंके वल पृथिवीपर हदता-पूर्वक केवल खड़ी ही नहीं होती, बल्कि दूसरे मालोंके सम्बन्धमें उलटे सिर खडी होती है, श्रीर श्रपरिचितके लिये उसका काष्ठका सिर उससे कहीं विचित्र मन-मानापन विकसित करता है, जितना कि बिना मानवी सहायताके वह नाचना श्रारम्म करके करता है।"

पहली जिल्दके पहले अन्यायके वर्णविन्यास भ्रौर लिखावट लेखनकलाकी हिन्दि स्रिहितीय है। मार्क्स पहले मालके वारेमे कहते हैं, फिर आगे यह वत-लाते हैं कि किस तरह पैसा‡ पूँजी (किपटाल) के रूपमें परिण्त होता है। अगर समान मूल्योको मालके परिचार (परिभ्रमण) में समान मूल्यपर विनि-

se Commodities. † Trancendental ‡ Money.

मय किया जाता है, तो कैसे पैसेवाला ब्रादमी उनके मूल्यपर मालोंको खरीदकर उन्होंके मूल्यपर बेंचते भी ऋपने दिये मुख्यसे ऋधिक मूल्य प्राप्त करता है ? इसलिए वर्त्तमान सामाजिक सम्बन्धोंमें वह मालको मालके बाजारमें ऐसे विचित्र स्वभावका पाता है. कि उसका उपमोग नये मूल्यका स्रोत बन जाता है। यह माल है श्रम-शक्ति, जो जीवित कमकरके रूपमें मौजूद है। कमकरके श्रपने जीवन श्रीर परिवारको कायम रखनेके लिये कुछ मात्रामें खाद्य वस्तुश्रोंकी न्त्रावश्यकता होती है-उसका परिवार कमकरके मरजानेके बाद न्त्रागे भी -संजीव अम शक्तिके बने रहनेकी गारंधी करता है। खाद्य वस्त स्त्रादिकी इस -मात्राके पैदा करनेके लिए जो अम-समय त्रावश्यक है, वही अम-शक्तिका मूल्य है। तथापि, मजूरीके रूपमें यह मूल्य जो दिया जाता है, वह उस मूल्यसे बहुत न्तम है, जिसे कि अम-शक्तिका खरीदार कमकरसे निचोड़नेमें समर्थ होता है। उसकी मजूरीके रूपमें मूल्यकी जगह लेनेवाले श्रावश्यक श्रम-समयके ऊपर श्रीर श्रिधिक जो कमकरका श्रितिरिक्त श्रम है, वही श्रितिरिक्त-मूल्यका ऐसा स्रोत है, जो कि लगातार बढ़ते हुवे पूँजी-संचयनका स्रोत है। कमकरका मुफ्तमें लिया यह श्रम समाजके सभी श्रम न करनेवाले मेम्बरोंमें बाँटा जाता है, श्रीर वह -सारी सामाजिक व्यवस्था इसीपर त्राधारित है, जिसमें हम रहते हैं।

(१) पूँजीवाद—जिना मज्रि दिये (मुप्तका) श्रम निश्चय ही श्राष्ट्रनिक चूर्जा-समाजका केवल श्रपना गुण (निशेषता) नहीं है । जब तक
दुनियाम सम्पित्तमान श्रीर सम्पत्तिहीन वर्ग मीजूद है, तब तक सम्पत्तिहीन
वर्गको हमेशा मुप्तका श्रम करना पड़ेगा, जब तक कि समाजके एक मागके
हाथमें उत्पादनके साधनोंकी इजारादारी है, तब तक कमकर चाहे स्वतन्त्र हो
या श्रस्ततन्त्र, उसे उससे कहीं श्रिषक समय तक काम करना पड़ेगा, जितना कि
उत्पादन-साधनोंके स्वामियोंसे खाद्य-बस्तु श्रादिको प्राप्त कर श्रपना श्रस्तित्व
कायम रखनेके लिये समयकी श्रावश्यकता है । मज्री-श्रम उस मुप्त श्रमव्यवस्थाका केवल एक विशेष ऐतिहासिक रूप है, जो कि समाजके वर्गोंके रूपमें
विमाजित होनेके समयसे मीजूद रहती चली श्राई है, श्रीर जिसे ठीकसे समभनेके लिये, इसी रूपमें उसकी परीन्ता करनी होगी ।

अपने पैसेको पूँजीके रूपमें परिण्त करनेके लिये पैसेवाले श्रादमीको वाजारमें स्वतन्त्र कमकरोंको प्राप्त करना होगा—स्वतन्त्र दोहरे अयोंमें, सबसे पहले यह, कि वे अपनी अम-शक्तिको मालके तौरपर वेचनेमें स्वतन्त्र हैं, श्रीर दूसरे यह कि उनके पास वेचनेके लिये और कोई चीज नहीं है। स्वतन्त्र इस अर्थमें भी कि स्वतन्त्र रूपसे अपनी अम-शक्तिके प्रयोगके लिये आवश्यक कोई साधन उनके पास मौजूद नहीं है। यह ऐसा सम्बन्ध है, जिसका आधार प्राक्तिक नियम नहीं है, क्योंकि प्रकृति न एक ओर मालो, पैसेके स्वामियोंको पैदा करती; और न दूसरी ओर उनको पैदा करती है, जिनके पास अपनी अम-शक्तिके सिवा और कुछ नहीं है। इसके साथ ही यह बात भी है, कि इतिहासके सभी कालोंके लिये एक सा सामाजिक सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वह ऐतिहासिक विकासके एक लम्बे कालका परिणाम-अनेक आर्थिक परिवर्तनों और सामाजिक उत्पादनके पुराने रूपोंकी सारी परम्पराओंके पतन और विलोपकी उपन है।

पूँजीका श्रारम्म स्थान है मालका उत्पादन । माल-उत्पादन, माल-प्रित्रमण् श्रीर विकित माल-परिश्रमण्, व्यापार—ये उन स्थितियोंको पैदा करते हैं, जिनके मीतर पूँजी विकित होती है । श्राष्ट्रनिक पूँजीका इतिहास श्राष्ट्रनिक विश्व-व्यापार श्रीर श्राष्ट्रनिक विश्व-व्यापार श्रीर श्राष्ट्रनिक विश्व-वाजारके पैदा होनेसे सोलहवीं सदीमे श्रुरू होता है । गंवार श्रर्थशास्त्रियोंका यह समकता केवल श्रम मात्र है, कि श्रत्यन्त प्राचीन कालमें एक समय परिश्रमी पुरुषार्थीं पुरुषों की एक छोटीसी मंडली थी, जिन्होंने , धनको जमा किया श्रीर दूसरी श्रोर श्रालसी श्रीर निठल्ले श्रादमियोंका एक मारी समुदाय था, जिनके पास वेचनेके लिये श्रपना देह छोड़ श्रीर कोई चीज नहीं रह गई थी—यह वेकारकी बात है । इसी तरह श्रमकचरे ज्ञानके साथ बूर्ज्य-इतिहासकार श्रर्थ-उत्पादनके सामन्तवादी ढंगके विलोप श्रीर कमकरकी स्वतन्त्रताका वर्णन करते हैं, लेकिन साय ही सामन्तवादी ढंगके विकासका पूँजीवादी ढंगमें विकसित होना नहीं वतलाते । उनका यह श्रादिम धन-संचयका वर्णन गएसे वटकर नहीं है । दास श्रीर श्रर्थदासकी तरह कमकर न श्रव उत्पादन-साधनकी वस्तुश्रोमें परिगणित किया जाता, न वह श्रपने लिये काम करनेवाले किसान या शिल्पकारकी तरह उत्पादन-साधनका रखनेवालाही

रह जाता है। श्रॅंग्रेजी इतिहासके श्राधारपर मार्क्स वतलाते हैं कि कैसे वहुसंख्यक जनसमूहको लगातार कितने ही हिंसात्मक श्रीर पाशविक उत्पीड़नों द्वारा उत्पादन साधनों, भूमि श्रीर अन्तसे वंचित किया गया। उन्होंने इसे प्रारम्भिक संचयनवाले अध्यायमें वतलाया है। इस प्रकार श्राहार श्रादिमें स्वावलम्बी वनानेवाले सारे साधनोंसे वंचित करके ऐसे स्वतंत्र कमकरोंकी सुष्टि की गई, जिनको पूँजीवादी उत्पादन-शैलीकी आवश्यकता थी। पूँजी इस प्रकार रोम-रोममें खून श्रीर कीचड़से लतपथ होकर संसारमें खाई, जैसे ही वह अपने संसारमें खड़ी हुई, वैसे ही उसने अपनी अम-शक्तिके उपयोगके लिये आवश्यक साधनोंसे कमकरके विलगावको केवल कायम ही नहीं रस्खा, बल्कि इस विलगावको लगावार बढ़ते हुये पैमानेपर पुनः उत्पन्न किया।

मुफ्त अमके पुराने रूपोंसे इस अम-शक्तिका मेद इसी बातका परिणाम है. . कि पूँजीका गमनागमन ऋसीम है ऋौर ऋतिरिक्त-श्रमके लिये पूँजीकी जठराग्नि कभी न तृप्त होनेवाली है। जिन समाजोंमें किसी मालका उपयोग-मूल्य, उसके विनिमय-मूल्यसे अधिक महत्व खता है, उनमें आवर्यकताओं के विस्तृत चक्कर के भीतर कम या बेशी अतिरिक्त-श्रम सीमित रहता है. लेकिन उत्पादन के इस ढंगकी प्रकृति परिणामतः त्रविरिक्त-श्रमके लिये त्र्रसीम माँग नहीं पैदा करती। जब मालका विनिमय-मूल्य उपयोग-मूल्यसे ऋषिक महत्व रखता . है तब स्थिति बिलकुल भिन्न हो जाती है। पराई अम-शक्ति द्वारा माल-उत्पादन करनेके ऋतिरिक्त श्रमको चूसने ऋौर श्रम-शक्तिको शोषण करनेमें पूँजी-शक्ति, निष्ठ्रता श्रीर प्रभुता की दृष्टिसे सीघे जबर्दस्ती लिये गये बेगार-श्रमपर श्राधारित उत्पादनके सभी पुराने ढंगोंको मात करती है। पूँचीके लिये मुख्य वस्तु न श्रमकी प्रक्रिया है श्रीर न उपयोग-मूल्योंका उत्पादन, बल्कि उसका मुख्य लत्त्य है उपयोग, विनिमय-मूल्योंका उत्पादन, जिनसे कि लगे मूल्यसे-अधिक मात्रामें मूल्य निचोड़ा जा सके। पुँजीपविकी अविरिक्त-मूल्यकी प्यास कभी नहीं तृप्त हो सकती। विनिमय-मूल्योंका उत्पादन ऐसी किसी सीमाको नहीं स्वीकार करता, जो कि तुरन्तकी आवश्यकवाओंकी पूर्तिके द्वारा उपयोग-मूल्योंके उत्पादनसे बनाई जाती है।

जिस प्रकार माल उपयोग श्रौर विनिमय-मूल्योंका सम्मिश्रण है, उसी तरह माल-उत्पादनकी प्रक्रिया, श्रम-प्रक्रिया श्रौर मूल्य खजन करनेवाली प्रक्रिया-का सम्मिश्रया है। मूल्य-सुजन करनेकी प्रक्रिया उस जगह तक चलती रहती है, जहाँ मजुरीके रूपमें चुकाये गये श्रम-शक्तिके मूल्यका स्थान समान मात्रावाला मूल्य लेता है। इस स्थानसे परे वह अतिरिक्त-मूल्य उत्पादन करनेकी प्रक्रिया उपयोग करनेकी प्रक्रियाके रूपमें विकसित होता है। वह श्रम-प्रक्रिया भ्रीर उप-योग करनेकी प्रक्रियाके सम्मिश्रण्के तौरपर पूँजीवादी उत्पादनकी प्रक्रिया, माल-उत्पादनका पूँजीवादी रूप बन जाता है। अम-प्रक्रियामे अम-शक्ति स्त्रीर उत्पा-दन-साधन दोनो मिलकर काम करते हैं। वही उपयोग करनेकी प्रक्रियामें पूँजी-का अश स्थिर श्रीर चल पूँजीके रूपमें प्रकट होता है। स्थिर-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामे उत्पादन-साधनों, कच्चे मालों, सहायक सामग्री, उत्पादनके हथियारों---के रूपमे परिण्त हो अपने मूल्यको नहीं बदलती। चल-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामें श्रम-शक्तिके रूपमें परिवर्तित होती है, श्रीर उसका मूल्य बदल जाता है: वह अपने निजी मूल्यको पैदा करती है, फिर मूल्य से अधिक श्रीर ऊपर श्रतिरिक्त-मूल्य पैदा करती है, जो कि परिस्थितियोंके श्रानुसार मात्रामें वडा या छोटा हो सकता है।

(२) श्रतिरिक्त मृत्य—इस तरह विवेचन करनेके बाद मार्क्सने श्रतिरिक्त-मृत्यके परीक्षणमें हाथ लगाया। श्रतिरिक्त-मृत्य दो रूपोमें प्रकट होता है, सापेक्त-श्रतिरिक्त-मृत्य श्रीर परम-श्रतिरिक्त-मृत्य। इन दोनों प्रकारके मृत्योने पूँजीवादी उत्पादनके ढगके इतिहासमें भिन्न-भिन्न किन्तु निर्णायक पार्ट श्रदा किये हैं।

परम अतिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जब कि पूँजीपित कमकरसे उस समयसे आगे काम करवाता है, जिसकी कि उसे अपनी अम-शक्तिके पुनस्त्यादनमें आवश्यकता होती है। अगर पूँजीपितिका वस चलता, तो वह अपने कामका दिन चौबीस घटोका रखता, क्योंकि जितना ही बडा कामका-दिन होगा, उतना ही अधिक अतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जा सकेगा। लेकिन दूसरी ओर कमकरका यह समकता विल्कुल उचित है, कि अपनी मज्रीके उत्पादनकी

आवश्यकतासे अधिक और ऊपर जितना भी घंटा, हमें काम करनेके लिये मजबूर किया जाता है. वह अन्यायपूर्वक हमारा निचोड़ना तथा अत्यधिक अम-समयके र्गिये अपने स्वास्थ्यका खोना है। पूँजीपति और कमकरके बीचमें कामके दिनकी न्तम्बाईके सम्बन्धमें संघर्ष उसी दिनसे आरम्म हुआ, नब कि ऐतिहासिक तौरसे प्रथम बार स्वतन्त्र कमकर बाजारमें दीखे जाने लगे। वह संघर्ष आज तक चला ब्जा रहा है। पूँजीपति लाम-शुभके लिये लड़ता है, चाहे वह व्यक्तिगत तौरसे भलेमानुस हो।या गुग्हा । अपने सहयोगी दूसरे पूँजीपतियोंके साथ उसकी जो अतियोगिता है, वह उसे मजबूर करती है, कि मनुष्यकी बर्दाश्तकी सीमा जहाँ तक है, वहाँ तक कामके दिनको बढ़ानेके लिये हरेक तरहकी सम्भव कोशिशें करें | दूसरी त्रीर कमकर त्रपने स्वास्थ्यको कायम रखने तथा काम करने, खाने, स्रोनेके श्रतिरिक्त दूसरे मानवीय जीवनके कामोंमें लगानेके लिये प्रतिदिन कुछ · न्स्वतन्त्र धंटोंको बचानेके लिये लड़े । मार्क्सने बड़े शक्तिशाली शब्दोंमें इंग्लैंड-के मजदूर वर्ग श्रीर पूँजीपति वर्गके बीचके पचास साल तक चलते बड़े पैमानेके उद्योगके पैदा होनेके समयसे यह-युद्धका वर्णन किया है। प्रकृतिं श्रीर 'रीति-रिवाज, श्रायु श्रीर पुरुषस्त्री भेद तथा दिन श्रीर रातने सर्वहाराके शोषणके ऊपर जितनी रोक लगा रक्खी थी, उन्हें तोड़ फ़ेंकनेकें लिये बड़े पैमानेकें उद्योग-धंधेने पूँजीपतियोंको तब तक मजबूर किया, जब तक कि दोनोंका संघषे इस तरह चलता रहा, जब तक कि दस घंटा-बिलने कानूनका रूप नहीं धारण न्कर लिया। इस कानूनको पूँजीपतियोंके साथ संघर्ष करके मजदूर वर्गने जीता। पूँजी अत्यन्त शक्तिशाली सामाजिक बाघा है, वह अपने साथ स्वतन्त्र ठेका करके कमकरोंको अपने और अपनी जाति वालोंको मृत्यु और दासताके रूपमें वैचनेके लिये मजवूर करती है।

सापेन् श्रितिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जुब कि श्रम-शक्तिके उत्पादनके लिये श्रावश्यक श्रम-समय कम करके उसे श्रितिरिक्त-श्रममें लगाया जाता है। श्रम-शक्तिका मूल्य उन उद्योग-धन्घोंमें श्रम-शक्तिकी उत्पादकताकी चृद्धि द्वारा किया जाता है, जिनकी उपज श्रम-शक्तिके मूल्यको निर्धारित करती है। इस मतलबसे उत्पादन-शैलीमें लगातार मारी परिवर्त्तन-श्रम-प्रक्रियाकी

टेक्नीक श्रीर समाजवादी स्थितियोंमें क्रान्ति उपस्थित करना श्रावश्यक है। इसके श्रागे मार्क्स बड़े पैमानेके उद्योगके भीतरकी बहुत सी वातो—सहकारिता, श्रम श्रीर माल-निर्माणके विभाजन, मशीन श्रादिका—कितने ही श्रध्यायोंमें वर्णन करते हैं।

मार्क्सने सिर्फ यही नहीं बतलाया, कि मशीन श्रीर बड़े पैमानेके उद्योग-धन्वेने पहलेके इतिहासमे पाये जानेवाले पहलेके उत्पादनके दंगोंकी अपेचा श्रिषिक दुःख श्रीर दाखिय ही पैदा किया, बल्कि वह साथ ही पूँजीवादी समाज-के लगातार भारी परिवर्त्तनोके कारण श्रीर श्रिधिक ऊँचे सामाजिक रूपके लिए. रास्ता तैयार करते हैं। फैक्टरी-सम्बन्धी कानून उत्पादन-प्रक्रियांके अप्राकृतिक रूपके प्रति समाजकी प्रथम सचेतन और बाकायदा प्रतिक्रिया थी। जब समाज कारलानों और फैक्टरियोंमें अमको कानूनबद्ध करता है, उस समय यह केवल पॅजीके शोषण-सम्बन्धी अधिकारोंमें दखल देना जैसा मालूम होता है। लेकिनः परिस्थितियाँ जल्दी ही समाजको इसके लिए मजनूर करती हैं, कि वह घरेलू, श्रमको भी कानूनबद्ध करे, मातापिताके श्रधिकारोंमे दखल दे। इस प्रकार बड़े पैमानेका उद्योग-घन्धा पुरानी पारिवारिक व्यवस्था तथा तदनुकूल पारिवारिक श्रमके साथ पुराने पारिवारिक सम्बन्धोको खतम कर देती है। "पूँजीवादी व्यवस्थाके द्वारा पुरानी पारिवारिक व्यवस्थाका विलोपन चाहे कितना ही मयकर श्रौर घृणास्यद कृत्य क्यो न जान पडे, किन्तु उत्पादनकी सामाजिक प्रक्रियामें स्त्रियों, तरुणों श्रीर बच्चोंको घरेलू चेत्रसे वाहर निकल एक निर्णायक पार्ट अदा करनेका ऋषिकार दे वहे पैमानेका उद्योग परिवारके उच्चतर रूप तथा स्त्री-पुरुष के सम्बन्धके वारेमें एक नया आर्थिक आधार पैदा करता है। वस्तुतः यह उसी तरह वेवकूफीकी बात है, जैसे कि खिस्तानी-जमीनिक परिवारके रूपको परम मान लिया जाय या. प्राचीन रोमन रूप ग्रयवा प्राचीन ग्रीक रूप ग्रयवा उसके प्राच्य रूपको परम सत्य मान लिया जाय। यह रूप विकासकी ऐतिहासिक सीढियोंको वतलाते हैं। यह मी उसी तरह स्पष्ट है, कि स्नी-पुरुषो श्रीर भिन्न-मिन त्रायुवाले मजूरोंका इस प्रकार एकताबद्ध होना उपयुक्त स्थितियोगें मानव-प्रगतिके स्रोतके रूपमें परिख्त हो सकता है, यद्यपि अपने अनियंत्रित प्रशुता-

पूर्ण पूँजीवादी रूपमें (विसमें कि कमकर उत्पादन प्रक्रियाके लिये जीते हैं, न कि उत्पादन-प्रक्रिया कमकरों के लिये) यह अध्याचार ख्रीर दासताका गन्दा स्रोत है। "कमकरको नीचे गिराकर जो मशीन अपना पुछल्ला बनाती है, वह साथ ही ऐसी सम्भावनाको भी पैदा करती है, जिसमें कि समाजकी उत्पादक-शक्तियाँ इतनी हद तक वढ़ जायँ, कि बिना किसी अपवादके समाजके सभी व्यक्ति-मानव-प्राणीके।योग्य विकासकी एक सी सम्मावनाख्रोंका उपभोग कर सकें। यह एक ऐसी वात है, जिसे कार्यरूपमें परिण्यत करनेमें सभी पुराने समाज ख्रसमर्थ थे।

परम-श्रतिरिक्त-मूल्य श्रीर सापेत्त-श्रतिरिक्त-मूल्यके उत्पादनका परीव्रण करनेके बाद मार्क्वने राजनीति अर्थशास्त्रके इतिहासमें पहले-पहल आये मन्त्रीके बुद्धिवादी सिद्धांतक। प्रतिपादन किया । मालका दाम उसका पैसेके रूपमें प्रकट किया जानेवाला मूल्य है, श्रीर मज़री अम-शक्तिका दाम है। अम स्वयं मालके बाजारमें नहीं स्राता, बल्कि वह सजीव साकार कमकरके रूपमें स्राता है। कमकर **अपनी अम-शक्तिको वेचनेके लिये रखता है, श्रीर अम** मालकी अम-शक्तिके उपभोगके रूपमें ही केवल प्रकट होता है। अम मूल्योंका द्रव्य श्रीर श्रान्तरिक परिमाण है। लेकिन, वह स्वतः त्रपना कोई मूल्य नहीं रखता। तो भी, अम मज़रीके रूपमें अपना पारिश्र मिक पाते दिखाई पड़ता है, क्योंकि कमकर अपनी मजूरीको श्रम पूरा कर लेनेके बाद ही पाता है। जिस रूपमें मनूरी मिलली है, वहीं ज्ञपने भीतर कामके दिनके विभाजनके चिन्होंको सुपत या नमुपत श्रम-समयके रूपमें भली-भाँति छिपाये रखता है। दासोंके लिये इससे निल्कुल उल्डी वात थी। दास सभी समय-उस समय भी जब कि वह अपनी खाद्य-वस्तुके मुल्यके उत्पादनके लिये ही काम करता होता या-श्रपने मालिकके लिये काम करता होता था। जान पड़ता था उसका सारा श्रम मुफ्तका है। लेकिन मन्द्र दास-अमके प्रति इस घारणाके विरुद्ध मजूरी-अमका सारा अम---जिसमें सुफ्त श्रम वाला ग्रंश भी शामिल है- नमुस्त सा मालूम होता है। दास-श्रमके बारेंसे 'सम्पत्ति-सम्बन्ध इस तथ्यको ढाँक देता है, कि दास अपने अमके इछ समयमें ग्रपने लिये काम करता है। मजूरी-श्रम-व्यवस्थामें यह पैसेका सम्बन्ध ही है, जो कि इस तथ्यको ढॉक देता है, कि मजूरी पाने वाला कमकर कुछ समय सुफ्तमे काम करता है। इसिलिये हम मूल्य तथा अम-शक्तिके दामके मजूरीके रूपमें या स्वयं अमके मूल्य और दामके रूपमें परिणत होनेको निर्णायक महत्त्वको समक्त सकते हैं। इसी दिखलावेके ऊपर पूँजीपतियो और कमकरों दोनोंकी सारी कानूनी धारणाये आधारित हैं। उत्पादनके पूँजीवादी देंगके समी रहस्यापादन तथा पूँजीवादी उत्पादन द्वारा स्वतन्त्रताका भ्रम पैदा करना और गॅवारू राजनीतिक अर्थशास्त्रकी कमकरोंके प्रति समी बेहूदिगयाँ यही हैं वे चीचे हैं, जो कि वास्तिवक अवस्थाका क्षिपाकर हमें उत्दी दिशामें मटकाना चाहती हैं।

मजूरीके दो मुख्य रूप हैं: समयके अनुसार मजूरी और कामके अनुसार मजूरी (खंड-मजूरी)। कामके दिनको अस्थायी तौरसे कम करने पर मजूरी कम हो जाती है, लेकिन स्थायी तौरसे उसे कम करने पर मजूरी बढ जाती है। जितना ही बढा कामका दिन होगा, उतनी ही मजूरी कम होगी। कामके अनुसार मजूरी या खंड-मजूरी समयानुसार मजूरी का ही एक परिवर्तित रूप है। पूंजीवादी उत्पादन-प्रक्रियाके लिये यही सबसे अनुकूल मजूरीका रूप है। यह पूंजीपतियोंके वास्ते इसलिये अधिक सुमीतेका है, क्योंकि तत्र उन्हें देख-रेखकी आवश्यकता नहीं रह जाती, और साथ ही मजूरी काटने के लिये कई वहाने उन्हें मिल जाते हैं। वूसरी ओर कामके अनुसार मजूरीका ढंग कमकरोंके लिये बहुत असुविधायों पैदा करता है: अधिक काम करनेकी लालचसे अधिक परिश्रम करके कमकर अपनेको बुरी तौरसे यका देता है। इस प्रयक्षमें उसकी मजूरीकी कम होनेकी नौवत आती है। मजूरोंके मीतर अधिक पैसा कमानेके लिये जो होड होती है, उसके कारण उनकी एकताको नुकसान पहुँचता है। इसके कारण पूँजीपतियों और कमकरोंके वीच मेंट—सरदार आदि बैसी कोंकें आ मौजूद होती हैं, जो कि कमकरोंकी मजूरीका काफी माग अपने पाकेटमें डालती हैं।

श्रविरिक्त-मूल्य श्रीर मजूरीके बीचके श्रापसी सम्बन्ध, उत्पादनकी पूँजीवादी शैली पूँजीपितके लिये केवल पूँजीको ही नहीं, बल्कि कमकरके लिये गरीबीको भी लगातार पुनरुत्पादित करती रहती है। एक श्रीर पूँजीपित-वर्ग है, जिसके पार सभी खाद्य-सामग्री, सभी कच्चा-माल श्रीर सभी उत्पादन-साधन हैं, श्रीर दूसरी श्रोर कमकर-वर्ग-मानवताका विशाल जनसमूह है, जो कि श्रपनी श्रम-शानितको पूँजीपतियोंके हाथमें खाद्यकी उस मात्राके वास्ते वेंचनेके लिये मजबूर है, जो कि श्रपिक-से श्रपिक इतना ही कर सकती है, कि कमकरको काम करनेकी रिथतिमें कायम रक्खे श्रीर सर्वहारोंकी एक नई पीढ़ीको पैदा करानेमें सहायक हो। लेकिन पूँजी केवल श्रपनेको फिरसे उत्पन्न ही नहीं करती, बल्कि वह श्रपने परिमाणको लगातार बढ़ाती भी जाती है।

(२) पूँजी संचयन-मार्स्सने पहली जिल्दके ऋन्तिम भागमें "संचयन-की प्रक्रिया" की व्याख्या की है। पुँजीसे केवल अतिरिक्त मूल्य ही नहीं पैदा होता, विलक्ष ऋतिरिक्त मूल्यसे पूँजी भी पैदा होती है। जो ऋतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जाता है, हर साल उसका एक भाग सम्पत्तिमान् वर्गोंमें बाँटा जाता है जिसे वह आयके तौर पर उपभोग करते हैं। लेकिन, इस विभाजित ऋति-रिक्त मुल्यका दूसरा भाग पूँजीके रूपमें भी संचित होता रहता है। इस प्रकार जो मुफ्त-अम लाभ-शुभके रूपमें कमकरोंसे छीना गया है, वह आगे उनसे और भी मुफ्त श्रम छीननेके लिये साधन वन जाता है; श्रीर उत्पादनके प्रवाहमें त्रारम्भमें जो पूँजी लगाई गई थी, वह प्रत्यच्वतः संचित पूँजीकी व्रलनामें एक नगएय मात्रामें रह जाती है; ऋर्यात् ऋतिरिक्त-मूल्य ऋथवा ऋतिरिक्त-उपज, जो कि फिरसे ऐसी पुँजीके रूपमें परिख्त की जाती है (जो चाहे त्रारम्भर्मे संचित करनेवालेके हाथमें काम कर रही हो, या दूसरेके हाथमें) वह धाचात् तौरसे संचितकी हुई प्ँचीकी वुलनामें नगएय सी मालूम होती है। माल-उत्पादन श्रीर माल-परिभ्रमणुके त्राधार पर स्थापित वैयक्तिक सम्पत्तिका कानून श्रपनेको विल्कल उलटे रूपमें अपने आन्तरिक और अनिवार्य इन्हात्मकताके कारण परिएत कर देता है। माल-उत्पादनके कानून वैयक्तिक असमें सम्पत्ति-श्रिधि-कारको उचित बतलाते जान पड़ते हैं। समान ऋघिकार बाले मालिक एक दूसरेके मुकाबिलेमें खड़े होते हैं। दूसरे मालको केवल अपने मालकी विक्रीसे ही वह प्राप्त कर सकते हैं श्रीर श्रपना माल केवल अम द्वारा ही उत्पादित करा सकते हैं। प्ँजीपतिके पद्धमें सम्पत्ति श्रव दूसरेके मुफूत-श्रम या उसकी उपजको मार लेनेका ऋषिकार दीख पस्ती है, श्रीर कमकरोकी तरफ देखने पर उनकी उपजके उटा लेनेकी ऋसंमवनीयता सी दीख पड़ती है।

पूँजीवादी संचयनका साधारण नियम निम्न प्रकार है: पूँजीकी इिक्रमें इसका चल ग्रंश ऋर्थात् वह भाग भी शामिल है जो कि श्रम-शक्ति में बदला है। अगर पूँजीकी बनावट अपरिवर्तित रहे, यदि उत्पादनके साधनोंकी कुछ मात्राको सदा उसे गतिशील रखनेके लिये उतनी ही मात्रामे श्रम-शक्तिकी **आवश्यकवा हो, तो यह स्पष्ट है, कि अम-शक्तिकी आवश्यकवा पूँजीकी वृद्धिके** अनुपातसे बढ़ेगी, जितनी ही जल्दी पूँजी बढ़ेगी, कमकरोंके जीवनयापनके लिये धनकी त्रावश्यकता भी उतनी ही जल्दी बढ़ेगी। निस प्रकार सीघा-सादा युनस्त्पादन स्वयं लगातार पूँजी संबन्धको युनस्त्पादित करता है, इसी प्रकार पूँजीका संचयन बढी मात्रामें पूँजी-संबन्धको पुनरु-पादित करता है। एक श्रोर पूँजीपति अथवा बहे पूँजीपति बढ़ते हैं श्रीर दूसरी ओर अधिक संख्यामें मजूरी-कमकर बढ़ते हैं। इस प्रकार पूँचीके संचयनका अर्थ है सर्वहाराकी भी एछि। मान लो, यह युद्धि कमकरोंके लिये अत्यन्त श्रनुकूल श्रवस्थामे होती है : उनकी श्रपनी अतिरिक्त उपजका अधिक भाग-जो कि वरावर बदता हुआ पूँजीके रूपमें परिवर्तित होता है--अनके पास वेतनके साधनोंके रूपमे लौटता है, श्रीर इस प्रकार वह अपने-अपने भोगकी वस्तुओंको बढ़ा सकते हैं, कपदा सामान आदि श्रिधिक उदारतासे श्रापने लिये खरीद सकते हैं। तथापि किसी तरह भी पूँजी-पतियोंकी तरफ उनकी परतंत्रताका सम्बन्ध नहीं बदलता, उसी तरह जैसे एक दासको कितना ही श्रन्छी तरह खिलाया-पहनाया जाय, वह दास छोड़ श्रीर नहीं हो सकता । कमकरोंको हमेशा कुछ परिमाणमें मुफ्नका अम देना ही पड़ेगा । हो सकता है मुफ्त अम मात्रा कम होती जाय, लेकिन यह मात्रा उतनी दूर तक कम नहीं हो सकती, जिसमें कि वह उत्पादनकी प्रक्रियाके प्रजीवादी रूपको भारी खतरेमें डाल दे। त्रागर मनूरी इस सीमासे ऊपर उठी, तो लाम-शुमका भ्राकर्षण बोमिल हो जायगा श्रीर पूँजीका संचयन सुस्त होते-होते वह यहाँ तक पहॅच जायगा, कि मजूरी पुनः उसके उपयोगकी आवश्यकताओंके अनुकूल तल-पर गिर जायेगी।

तथापि तभी, जंब पूँजीका संचयन अपने स्थिर-अंशों और चल-अंशोंके चीचके सम्बन्धमें विना किसी परिवर्त्तनके होता है, तो वह ऐसी सोनेकी जंजीर न्होगा, जिसे कि मजूरी-कमकर अपने लिये स्वयं गढ़ते हैं। वास्तविक तौरसे देखने पर संचयनकी प्रक्रियाके साथ-साथ पूँजीकी सजीव बनावटमें एक बड़ी कांति पैदा होती है। श्रमकी बढ़ती हुई उत्पादकता उत्पादन-साधनोंके समृहको उससे ऋषिक शीमताके साथ बढ़ाती है, जितनी शीमतासे कि अम-शक्तिका समृह उनमें सम्मलत होता है। प्ँजीके संचयनके अनुपातसे अम-शक्तिकी माँग -बढ़ती नहीं बल्कि अपेचाकृत घटती है। जो पूँजीका संचयन होता है, वह अपने -संचयनसे प्रथक एक दूसरे रूपमें उसी प्रभावको पैदा करता है, क्योंकि पूँजीवादी प्रतियोगताके कान्तके कारण बड़े पूँजीपित छोटे पूँजीपितयोंको निगलते जाते हैं। तब संचयनकी प्रक्रियासे जो ऋषिक पूँजी तैयार हुई है, उसे ऋपनी मात्रा-की अपेद्धा बराबर कम से कम कमकरोंकी आवश्यकता होती है। उसी समय 'पुरानी पूँजी जो कि नई बनावटमें पुनरुत्पादित हुई है--- श्रपने पहलेके रक्खें हुए कमकरोंमें से ऋधिकाधिककी छँटनी करती है। इस प्रकार वहाँ कमकरोंका एक सापेच ऋतिरिक्त-समूह पैदा होता है--सापेच पूँजीके उपयोगकी श्रावश्य-कताके ख्यालसे-श्रीर इस प्रकार श्रीद्योगिक रिजर्व-सेना तैयार हो जाती है, 'जिसे बुरे या मंदीके समय श्रपनी श्रम-शक्तिके मूल्यसे कम मजूरी मिलती है, साय ही उसे लगातार नौकरी भी नहीं मिलती, और जो काम न मिलनेके समय सार्वजनिक सहायताकी सुहताज होती है! इसके साथ ही वह हर समय काममें लगे कमकरोंके प्रतिरोधको निर्वल बनानेमें सहायता करती उनकी मजूरीके तलोंको नीचे गिराती है।

(४) सर्वेहारा—यह श्रौद्योगिक रिजर्व-सेना (बेकार मजूर) पूँजी
-संचयनकी इस प्रकिया श्रथवा पूँजीवादी श्राधारपर धनकी बृद्धिकी श्रावश्यक
उपज है, जो साथ ही यह उत्पादनके पूँजीवादी ढंगके रत्तक पुर्जेका काम करती
है। श्रमकी उत्पादकताके विकासके साथ तथा पूँजीके संचयन द्वारा, श्रमके
उत्पादनके विकासके साथ पूँजीके एकाएक विस्तारकी शक्ति भी बढ़ती है,
जिसके लिए तुरन्त नई बाजारों श्रथवा उत्पादनकी नई शाखाओं कामपर

क्तगानेके लिये, दूसरे चेत्रोंमें उत्पादनके काममें वाघा डाले विना कमकरोंके भारी समूहकी जरूरत होती है। त्राधुनिक उद्योग-धन्येकी उल्लेखनीय घारा छोटे-स्रोटे टूटनोंके साथ श्रीसत कार्यप्रवर्णता, वड़े जोरके साथ उत्पादन तेजी श्रीर मन्दीके दशवार्षिक चक्करका रूप-श्रीद्यगिक रिजर्व सेनाके लगातार निर्माण, उसके कम या वेशी काममें खपने श्रीर पुनर्निर्माणपर श्राधारित है। सामाजिक दंग, काममें लगी पूँजीका परिणाम, उसकी दृद्धिका विस्तार श्रीर शक्ति, श्रीर इसलिए कमकर जनताके परम विस्तार और उसके श्रमकी उत्पादकता जितनी ही श्रिषक बढ़ती है, उसीके श्रनुसार श्रपेदाकृत मात्रासे श्रिषक जनसंख्या श्रथवा श्रौद्योगिक रिजर्वसेना बढ़ती है, इसका तुलनात्मक श्राकार-प्रकार धनकी दृद्धिके -साथ बदता जाता है। कार्यरत श्रीद्योगिक सेनाकी श्रमेद्या जितनी ही श्रिधिक न्त्राद्योगिक रिजर्व सेना (वेकार मजदूर) होंगे, उतने ही श्रिषिक कमकरोंके वह भाग होंगे, जिनकी गरीबी अपने अमके उत्पीडनके उत्तटे अनुपातमें है। श्रीर अन्तमें जितना ही अधिक मजूर-वर्गका लाबेकार भाग अधिक होगा, उतना ही चडी श्रीद्योगिक रिजर्व सेना, श्रीर उनकी संख्या श्रिषिक होगी, जिनको कि सरकारी तौरसे मिखमंगा या दरिद्र ववलाया जाता है। पूँजीवादी संचयनका यह परम सामान्य कानून है।

उपरोक्त कानूनके श्रनुसार पूँजीवादी संचयनके विकासका ऐतिहासिक सुकाव देखा जाता है। पूँजीके सचयन श्रीर केन्द्रीकरणके साथ-साथ दृढ़ता-पूर्वक श्रागे बढ़ते हुये पैमानेपर श्रम-प्रक्रियाके सहकारी रूपकी निम्न प्रकार दृखि होती है: उत्पादन सजग हो साइन्सके देक्नीको का उपयोग, जमीनका सगिठित श्रीर सम्मिलित कर्षण, उत्पादनके साधनोका उस रूपमें परिवर्तित करना, जिसमे कि वह केवल मिलकर ही लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जा सके, श्रीर सामाजिक श्रमके सथुक्त उत्पादन-साधनोंके रूपमें इस्तेमाल करके उत्पादन साधनोंके खर्चको कम करना। श्रव उन महासेठोंकी संख्या लगातार कम होती जाती है, जो कि इस श्रीद्योगिक परिवर्त्तनकी प्रक्रियाके सभी लामों पर हाथ साफ करते इजारादारी करते हैं। महासेठोंकी संख्याकी कमीके श्रनुसारही दिखता उत्पीहन, दासता, पतन श्रीर शोषणका परिमाण बढ़ता है, लेकिन उसके साथ

मजदूर वर्गका चोम अपने परिमाख में बढ़ता मजूर बगका हो मजूर-वर्गको उत्पा-दनकी पूँजीवादी प्रक्रिया की बनावटकी चहायताचे प्रशिचित, एकजूट और संगठित करता है। अंतत: पूँजीकी इजारादारी, उसके नीचे बढ़े उत्पादनके ढंगके लिये वेड़ी बन जाती हैं। उत्पादन-साधनोंका केन्द्रीकरख और अमका समाजी-करख बढ़ते-बढ़ते उस सीमापर पहुँच जाता है, जब कि वह पूँजीवादी खोलके भीतर अपनेको बन्द नहीं रख सकता। उसी समय पूँजीवादी वैर्याकक सम्पत्ति-की अन्तिम बड़ी आ जाती है, और लूटनेवाला स्वयं छुट जाता है।

वैयक्तिक अमके आधारपर वैयक्तिक सम्पत्ति पुनः स्थापित होती है, लेकिन वह पूँजीवादी युगकी सफलताओं के आधारपर ही स्वतन्त्र कमकरों के सहयोग और और भूमि तथा उत्पादन-साधनोंमें उनकी सम्मिलत सम्पत्तिके रूपमें अम द्वारा उत्पादित-आधारपर। यह स्वामाविक है, कि उत्पादनके सामाजिक दंगपर आधारित पूँजीवादी सम्पत्तिका सामाजिक सम्पत्तिके रूपमें व्यवहारतः परिवर्तित करना उतना कठिन और दुष्कर काम नहीं है, जितना कि वैयक्तिक अमपर आधारित विखरी हुई सम्पत्तिका पूँजीवादी सम्पत्तिके रूपमें परिवर्तित करना। पहली अवस्थामें विशाल जनसमूहको थोड़ेसे छुटेरोंके ह्रस्तगत सम्पत्तिको अमरी अवनाई, दूसरी अवस्थामें विशाल जनसमूह थोड़े से छुटेरोंके ह्रस्तगत सम्पत्तिको अपनी वनायेगा।

३. द्वितीय और तृतीय जिल्द

यह नतला चुके हैं, कि मार्क्सने अपने महान् अंथकी तीनों जिल्दोंका हस्तलेख अपने जीवनमें ही तैयार कर लिया था, लेकिन उसके एक भागको अथम
जिल्दके रूपमें प्रेरके लिये तैयार करनेमें उनका एक वर्षके आधिकका समय लगा
था। जिना प्रेस कापी तैयार किये ही वह दूसरी और तीसरी जिल्दके हस्तलेखको
छोड़ गये थे। यदि एंगेल्स जैला योग्य सहकारी और उत्तराधिकारी न मिलता,
तो नाकी दोनों जिल्दोंको छापेका मुँह देखना—विशेष कर मार्क्स इच्छाके
अनुरूप—नहीं हो उकता था। इसमें शक नहीं, यदि मार्क्स स्वयं अपने हाथसे
इस कामको कर जाते, तो वह वाकी दोनों जिल्दों मी प्रथम जिल्दकी तरह ही

स्वेतोमद्र रूपसे हमारे सामने होतीं। लेकिन, मार्सका जीवन आगेके सोलह वर्षोंमें एक श्रोर जहाँ श्रध्ययन तथा दूसरे कामोमें व्यस्त या, दूसरी श्रोर उनका स्वास्थ्य सुघरनेकी जगह गिरता ही जा रहा था, जिसके कारण वह इस कामको नहीं कर सके। मार्क्सकी छोड़ी हुई सामग्री कितने ही स्थलों पर श्रस्त-व्यस्त श्रीर संकेत रूपमें थी। इसे १८६१ से १८७८ ई० तकके समयमें बीच-बीचमें विराम लेते हुये मार्क्सने जमा किया था। मार्क्सका कमी ऋपने महान् ग्रंथके चारेमें यह ख्याल नहीं था, कि वह एक निर्म्नान्त कम्युनिस्ट बाइबलका स्थान लेगा । वह यही आशा रखते थे, कि इसको देखकर आगे आनेवाले मनीषी और भी वैज्ञानिक अनुसन्धान करते सत्यके पास पहुँचनेकी कोशिश करेंगे। दूसरी श्रीर तीसरी जिल्दे वस्तुतः पहली जिल्दके श्रावश्यक परिशिष्ट तथा विकास है, तो मी सारी मार्क्सीय शास्त्रशैलीको सममनेके लिये उनकी स्त्रनिवार्य स्त्रावश्यकता है। पर, बाकी दोनों जिल्दों तक न पहुँच सकनेवाले पहली जिल्दके सहारे मार्क्सीय तत्वसे वंचित नहीं रहते। पहली जिल्दमें मार्क्सने राजनीतिक श्रर्थ-शास्त्रके मूल प्रश्न-भनकी उत्पत्ति कैसे, लामका स्रोत क्या-की विवेचना की है। मार्क्यके अनुसन्धानके पहले इस प्रश्नका उत्तर परस्पर मिन्न दो तरीकोसे दिया जाता था। पूँजीवादी दुनियाके "वैज्ञानिक" समर्थक पूँजीवादी धनकी व्याख्या करते सत्यपर पर्दा डालनेकी कोशिश करते कहते हैं : हरेक मालिकको श्रपनी पूॅजीको खतरेमें डालनेकी खतिपूर्ति, कारबारके "बौद्धिक प्रवन्ध" के इनाम श्रादि उत्पादक कामोंके लिये पूँजी देनेकी उदारताकी च्तिपूर्ति, मालोंके दामोंमें बराबर बुद्धिका परिखाम यह घन है। इन व्याख्याकारोंका उद्देश्य सदा यही रहा है, कि मगवान् या पूनर्जन्मके माननेवालोंकी तरह मुद्रीभर लोगोको घनाट्यता श्रीर विशाल जनसमुदायकी गरीबीको उचित ठहराया जाये।

मार्क्ससे पहलेके बूज्वी-समाजके ऋगलोचक जितने भी समाजवादी सम्प्रदाय थे, वह पूँजीपतियोंके घनको घोखायडी, कमकरोंसे चोरी ऋादि कहकर छुट्टी ले लेते थे।

प्रथम जिल्दमें मुख्यत: मूल्यके कानून श्रीर उसके कारण पैदा हुई मजदूरी श्रीर श्रितिरिक्त-मूल्य श्रर्थात—इस बातकी व्याख्या की गई है, कि कैसे मजूरी-

श्रमकी उपज श्रपनेको स्वामाविकरूपेण विना हिंसा या जालसाजीके एक श्रोर मजूरी-कमकरकी कौड़ियोंमें श्रोर दूसरी श्रोर पूँजीपतियोंके लिये श्रप्रयास लब्ध श्रपार धनके रूपमें परिणत करती है। "कपिटाल" की प्रथम जिल्दका सबसे वहा ऐतिहासिक महत्व है, यह दिखलाना कि शोषण केवल तभी खतम किया जा सकता है, जब कि श्रम-शक्तिकी विक्री श्रर्यात, मजूरी-व्यवस्थाका खातमा कर दिया जाय।

द्वितीय जिल्द-"कपिटाल" की दूसरी जिल्दमें मार्क्स प्रसंगवश वतलाते हैं, कि पूँजीवादी जीवनका अत्यावश्यक अंग है पावना । यही उत्पादन श्रीर मालके बाजार पूँजीके इन दो रूपोंके बीच एवं वैयक्तिक पूँजीके अनियमित से दिखाई पढ़नेवाले संचारके बीच जोड़नेवाली शृंखला है। यही उत्पादनका समाजमें उत्पादन ग्रौर उपभोगका स्थायी प्रचार (परिभ्रमण्) सारे समाजके तीर पर वैयक्तिक पुँजियोंकी गड़बड़ीमें इस स्थायी प्रचारको बरावर गतिशील वनाये रखता है। वह इस प्रकार काम करता है, कि पूँजीवादी उत्पादन के लिये त्रावश्यक स्थितियाँ खतरेमें न पहें : उत्पादनके साधनोंका उत्पादन कमकर-वर्गको कायम रखने श्रीर पुँजीपति-वर्गके बरावर श्रिधकाधिक धनी होनेको कायम रला जाये—अर्थात समाजकी सभी पूँजीके अधिक बढ़ते हुये संचयन श्रीर कार्यरत होनेके कायम रख जाये । दूसरी जिल्दमें मार्क्स इस बातकी खोज करते हैं, कि कैसे वैयक्तिक पूँजीकी ऋसंख्य विषयस्य गतियोंसे एक सम्पूर्ण पूंजी विकसित होती है, कैसे सम्पूर्ण (जीको इस गमनागमन, बाजारकी तेजीके वर्षोंके अतिरिक्त, घन श्रीर आर्थिक संकटके वर्षोंके ध्वंसके बीच, वह श्रागा-पीछा करता, पुनः-पुनः ठीक अनुपातमें पहुँचता है। किन्तु उसका यह काम श्रीर श्रधिक जबर्दस्त श्रीर भारी परिमाणमें लीटकर उसी तरफ चल पहता है ? किस तरह इससे और भी अधिक शक्तिशाली और भारी आकारोंमें उस चीनका विकास होता है, जो कि त्राजकलके समाजके लिये—समाजके त्रपने अस्तित्व को कायम रखने और श्रपनी श्राधिक प्रगतिका केवल साधनमात्र है ! वह

[#] Credit.

उसको मी विकसित करता है, जो कि इसका लच्य है, अर्थात् पूँजीका लगातार बढ़ते हुये संचयन । मार्क्सने अन्तिम इल यहाँ नहीं बतलाया है, लेकिन अर्थशास्त्री ऐडम स्मिथके बादके सौ वर्षोंमे पहली बार उन्होने सम्पूर्ण पूँजीको निश्चित नियमोकी मजबूत नींव पर स्थापित किया है।

ऐसा होने पर भी पूँजीपति ऋपने कंटकाकीर्यं मार्गको पूरी तौरसे नहीं पार कर सकता, क्योंकि यद्यपि लाम पैसेके रूपमें लगातार बढते हुये परिमाण्में बना रहा है, तो भी समस्या उठ खडी होती है, कि लूटको बॉटा कैसे जाय ! पूँजी-पतियोंके बहुतेरे भिन्न-भिन्न समुदाय लूटपर श्रपना-श्रपना दावा पेश करते हैं | कारखाना-मालिक के अतिरिक्त व्यापारी अपना दावा रखता है, अप्रण देनेवाला पूँजीपति श्रीर भूमिपति भी इसमे हिस्सा बॅटाना चाहते हैं। हरेकने मजूरी-कमकर के शोषस और उसके मजूरों द्वारा पैदा किये मालोके वेंचनेमे हाथ बॅटाया है, इसिलये उनमेंसे प्रत्येक लाभ-शुममें श्रपना हिस्सा मॉगता है। यह वॅटनारा जितना देखनेमें सीधा-साथा लगता है, न्यवहारमे वह उससे कहीं ग्राधिक पेचीदा है, क्योंकि कारखानेवालोंमें स्वयं कारखानोंसे तुरन्त प्राप्त लाभोके श्रनुसार भारी मतमेद है। उत्पादनकी एक शाखामें माल पैदा किये जाते श्रीर दुरन्त वेचे जाते हैं, तथा थोड़ेसे समयके मीतर प्ॅ् जी श्रीर उसके साथ सामान्य श्रातिरिक्त-मूल्य व्यवसायमें लौट त्राता है। ऐसी स्थितिमें कारबार श्रीर लाम वडी तेजीसे होते हैं। लेकिन, उत्पादनकी दूसरी शाखात्रोंमें उपन वर्षों तक क्की रहती, लम्बे समयके बाद ही लाभ देती है-जैसे भारी उद्योग-धन्वेमे । उत्पादनकी कुछ शाखात्रोंमें मालिकको श्रपनी पूँ जीके अधिकतर भागको उत्पादनके निर्जीव साघनो, इमारतो, कीमती मशीनों ब्रादि-श्रर्थात ऐसी चीनोमें लगाना पडता है, जो कि लाम बनानेके लिये चाहे कितनी ही आवश्यक क्यो न हों, लेकिन स्वयं लाम नहीं प्रदान करती। उत्पादनकी दूसरी शाखात्रोंमे ऐसी शाखाये भी हैं, जिनमे ऐसी चीजोमे मालिकको अपनी बहुत थोडीसी पूँजी लगानी पडती है श्रीर उसका श्रिधिकाश माग वह उन कमकरोंके काममें लगानेमे खर्च करता है, जिनमें से हरेक पूँजीपतिके लिये सोनेका श्रग्डा देनेवाली परिश्रमी वत्तक है।

इस प्रकार वैयक्तिक पूँजीपितयों के बीच लाम कमानिकी प्रक्रियामें मारी मतमेद खड़ा हो उठता है। चूर्जा-समाजकी इष्टिमें यह मतमेद पूँजीपित श्रौर कमकरके बीच होनेवाले विलक्ष्य "विनिमय" की श्रपेक्षा बहुत श्रिषक उरन्तका "श्रन्याय" (श्रनौचित्य) है। उनके सामने केवल यही समस्या है, कि कैसे ऐसा प्रक्रम किया जाय, जिसमें लूट्का विमाजन "उचित" रूपसे हो सके श्रौर हरेक पूँजीपित "श्रपने माग" को पा ले। सबसे बढ़कर बात यह एक ऐसी समस्या है, जिसे बिना किसी सजग श्रौर व्यवस्थित योजनाके श्रनुसार हल करना है, ज्यों कि श्राजकल समाजमें उत्पादन जैसे ही वितरस्यों मी श्रराजकता है। सामाजिक उपायके श्रथमें बस्तुतः यहाँ कोई "वितरस्य" है ही नहीं, श्रौर जो कुछ होता है, वह है केवल विनिमय, मालका परिश्रमस्य, क्रय श्रौर विक्रय।

त्तीय जिल्द-"कपिटाल" की तीसरी जिल्दमें मार्क्स इस सवालका जनाब देते हैं, कि कैंसे अनियमित मालका विनिमय प्रत्येक वैयक्तिक शोषकको श्रीर शोषकोंके प्रत्येक भिन्न समुदाय : सर्वहाराकी श्रम-शक्ति द्वारा उत्पादित धनमें भाग प्राप्त करने देता है, जो कि पूँजीवादी समाजकी दृष्टिमें पूँजीपित या पूँजी-का "ग्रिधिकार" माना जाता है। प्रथम जिल्दमें मार्क्सने पुँजीकी उत्पत्तिकी विवेचना करते हुये लाम कमानेके रहस्यको खोला। दूसरी जिल्दमें उन्होंने कारखाने श्रीर बाजारके बीच, समाजके उत्पादन श्रीर उपमोगके बीच पूँजीके गमनागमनका वर्णन किया। इस तीसरी जिल्दमें उन्होंने सारे पूँजीपति-वर्गके बीच लामके वितरस्का विवेचन किया है। वह हर वस्त पूँजीवादी समाजके तीन मौलिक रिद्धान्तोंको त्र्याघार मानते हुये ऐसा करते हैं : प्रथम, यह कि पूँजीवादी समाजमें जो कुछ घटित होता है, वह खेच्छाचारी शक्तियोंके परि-्णामस्वरूप नहीं, बल्कि निश्चित तथा नियमपूर्वंक काम करनेवाले नियमोंके अनुसार होता है, चाहे वह नियम स्वयं पूँजीपतियोंको अज्ञात हों। द्वितीयतः, यह कि पूँजीवादी समाजके ऋाधिक सम्बन्ध हिंसा, लूट और घोला-घड़ीपर श्राधारित नहीं है, श्रीर तृतीयतः, सारे समाजकी गतिविधि पर नियंत्रण करने-चाली यहाँ कोई सामाजिक बुद्धि काम नहीं कर रही है। पूँजीवादी अर्थशालकी

समी घटनाओं श्रीर समी सम्बन्धोको पूँजीवादी समानके विनिमय-यत्रके श्राधार पर—श्रर्थात् उससे उत्पन्न होनेवाले मृल्य श्रीर श्रतिरिक्त मृल्यके कानूनके श्राधार पर—मार्क्स एकके वाद सुव्यवस्थितरूपसे नंगा करके रख देते हैं।

तीनों जिल्दोंवाले इस महान् ग्रंथको पूरी तौरसे लेनेपर पहली जिल्दने मूल्य, मजूरी श्रीर श्रितिरक्त-मूल्यके कानूनका प्रति विवेचन, तथा श्राजकलके समाजके श्राघारको नंगा करके रख दिया है, श्रीर दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने इन श्राघारोंके ऊपर खडी इमारतको दिखलाया। दूसरी तरहसे कहनेपर पहली जिल्दने सामाजिक शरीरके हृदयको दिखलाया है, जो कि सजीव रसको पैदा करता है। दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने सामाजिक शरीरमें किस तरह रक्तका संचार श्रीर शोषया होता है, इसे वतलाया है। दूसरी श्रीर तीसरी जिल्दोंने पूंजीवादी दुनियामें नियमपूर्वक होनेवाली तेजी-मन्दीके संकटके वारेमे पूरी श्रान्तिहरू देनेका प्रयत्न किया है।

४. "कपिटाल" का स्त्रागत

एगेल्सने प्रथम जिल्दके तैयार हो जानेके वाद मान्सेके वारेमें जो आशा प्रकट की, कि अब "तुम जिलकुल दूसरे ही आदमी वन जाओने" वह आंशिक रूपसे ही पूरी हुई। मार्क्सके स्वास्थ्यमें जो सुधार हुआ, वह भी स्थायी नहीं जोनेवामें जाकर रहनेका विचार सिर्फ इस खनालसे किया था, कि वहाँ सस्तेमे रहा जा सकता है। लेकिन, वह लन्दनके ब्रिटिश-मुजियमको कैसे छोड़ सकते थे ! उनको आशा थी, कि शायद "कपिटाल" का अभेनी अनुवाद यहाँ रहते प्रकाशित हो सके, इससे भी उन्होंने लन्दनसे जानेका स्थाल छोड़ दिया। परिवारके व्यक्तियोंके जीवनमें जो परिवर्तन हुये, उनसे उन्हें स्वीप जरूर हो सकता था। १८६६ ई० के अगस्तमें मार्क्सकी द्वितीय कन्या लीराका व्यक्ति विकरसाशास्त्रके विद्यार्थी पावल लाफार्गके साथ होना निश्चित हो गया, लेकिया यह तै कर लिया गया था, कि व्याहसे पहले लाफार्गको अपनी वैद्विकल कार्की

की पढ़ाई खतम कर देनी होगी। लीयेगमें विद्यार्थी-काँग्रेसमें भाग लेनेके कारण पैरिस युनिवर्सिटीने लाफार्गको दो सालके लिये निकाल दिया था। इन्टर्नेशनलके सम्बन्धमें वह लन्दन आया। पहले वह पृधोंका अनुयायी या त्रीर तोलेंके कार्डको वहाँ रख त्रानेके शिष्टाचारके श्रतिरिक्त मार्क्से साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, लेकिन होनी कुछ दूसरी ही थी, जैसा कि मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था: "पहले इस नौजवानने मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित किया, लेकिन देर नहीं हुई कि उसने वापकी अपेक्षा वेटीको अधिक आकर्षक पाया। वह एक भृतपूर्व प्लान्टर-परिवारकी एकमात्र सन्तान है श्रीर उसकी श्रार्थिक श्यिति काफी अच्छी है।" मार्क्क वर्णनानुसार लाफार्ग सुन्दर, बुद्धिमान, कर्मठ, शरीरसे सुविकसित और सुहृदय, किन्तु थोड़ा सा विगड़ा हुआ था। लाफार्ग क्यूबा-द्वीपके सन्तियागो शहरमें पैदा हुन्ना था, लेकिन जब स्त्रमी वह नौवर्षका ही था, तभी उसके पिता-माता उसे फ्रांस ले श्राये। उसकी दादी मुलाटो थी, ऋर्यात् दादीके द्वारा निम्रो-रक्त उसके शरीरमें वह रहा था, जिसे लाफार्ग खुले तौरसे स्वीकार करता था। लेकिन इसका असर उसके चमड़ेपर बहुत हलका सा, तथा श्राँलोंमें श्रधिक सफेदीके सिवा श्रौर कुछ नहीं था। उसमें कुछ जिद्दीपन भी था, जिसके कारण कभी-कभी मार्क्स कुछ रंज श्रीरं मजाक करते हुये उसे "नियो खोपड़ी" कह देते थे। ससुर-दामादका सम्बन्ध हमेशा बहुत ग्रन्छा रहा । मार्क्सके लिये लाफार्ग केवल उनकी प्रिय पुत्री लौरा-के ग्रानन्दमें सहायक दामाद ही नहीं था, वल्कि वह उनके वौद्धिक दायभागका विश्वासपात्र रक्तक तथा योग्य श्रीर मेहनती सहायक भी था।

इस समय मार्क्सकी मुख्य परेशानी अपनी किताबके बारेमें थी। २ नवम्बर १८६७ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था: "मेरी पुस्तकके भाग्य में क्या है यह मुक्ते खिन्न कर देता है। में कुछ नहीं चुन और देख पाया। जर्मन बड़े अच्छे पट्ठे हैं। अंग्रेजों, फ्रेंचों और बल्कि इतालियनोंके भी लग्गू-भग्गूके तौरपर इस चेत्रमें उनकी सफलताओं से निस्सन्देह वह मेरी कृतिकी उपेचा करनेका अधिकार

^{*} Liege.

रखते हैं। वहाँके हमारे मित्र नहीं जानते, कि कैसे आ्रान्दोलन करना चाहिये। इस बीच हमें रूसी चालको देखते प्रतीचा करनी होगी। रूसी कूटनीति श्रीर सफलताका रहस्य धैर्य है, लेकिन हम केवल एक बार ही जिन्दगी पानेवाले गरीवी प्राणी हैं, इस बीचमें मुखमरीके शिकार हैं।" "कपिटाल" की प्रथम जिल्दके प्रकाशित हुये दो ही महीने हुये थे। इतने बीचमे पुस्तककी वास्तविक श्रीर पूरी समालोचना करना संभव नहीं था, तो भी एंगेल्स श्रीर कुगेलमानने भरसक उसके वारेमें प्रचार करनेकी हरेक कोशिश की। कितने ही पत्रोसे "कपि-टाल" के बारेमें पहले हीसे सूचना प्रकाशित करनेमें भी उन्होने सफलता पाई। एक जीवनी-सम्बन्धी विज्ञापन छपानेका भी प्रबन्ध किया गया, जिसको रोकते हुये मार्क्सने लिखा था : "मैं समक्तता हूँ, इस तरहकी बात हितकी जगह अनिष्ट ज्यादा कर सकती है। जो भी हो मै इसे साइन्सके श्रादमीकी प्रतिष्ठाके प्रति-कूल सममता हूँ । उदाहरणार्थ बहुत दिन पहले मेयरके विश्वकोषने सुमसे जीवनी-सम्बन्धी नोट माँगे थे, अपेन्तित सूचना देनेकी बात तो अलग रही, मैंने उनके पत्रका जवाब तक नहीं दिया। हरेक स्त्रादमीकी अपनी रुचि होती है"। एंगेल्सने जो जीवनी-सम्बन्धी लेख लिखा था, अन्तमें वह योहान याको-बीके पत्र "डी जुकुन्ट" में प्रकाशित हुआ, उसे पीछे लीबक्नेस्टने "डेमोक्राटिशे-वोखेन्न्लाट" # मैं पुनः प्रकाशित किया।

पीछे "कपिटाल" की कुछ अच्छी समालोचनाये छपी, जिनमें एक लीववन् नेस्टके उक्त पत्रमे छपी। लाजेलके शिष्य श्वाइटजेरने "सोजियाल डेमोकाट ।" में अपनी आलोचना प्रकाशित की, योजेफ डीटजगेनने भी एक आलोचना छपाई। श्वाइटजरकी आलोचनासे मार्क्सको यह संतोष हुआ, कि उसने किताबको पूरी तीरसे पढा और उसके महत्वको समका या। डीटजगेनका नाम मार्क्सने यहाँ पहली बार सुना और उसके सत्तम दार्शनिक दिमाग को उन्होंने पसन्द किया।

१८६७ ई॰ में ही एक "विशेषज्ञ" ने भी मार्क्सके इस ग्रंथपर कलम चलाई

² Demo Kratishes Wochenblatt † Sozial demokrat

श्रीर यह था प्रोफेसर युगेन ड्र्रिंगक्ष मार्स्ससे निराश होनेके बाद जिसे विस्मार्स्सने श्रपनी नौकरीमें रक्खा.या। ड्र्रिंगने मेयर्सके विश्वकोषके एक परिशिष्टमें ''कपिटाल'' की श्रालोचना छपाई। मार्क्स इस श्रालोचनासे श्रसंतुष्ट नहीं हुये। एंगेल्स ड्रिंगकी श्रालोचनाको उतनी श्रच्छी दृष्टिसे नहीं देखते थे। पीछे ड्रिंगने ग्रंथको बुरी तरहसे लथाड़ा।

कि फ्राइलिय्रथके साथ १८५६ ई० से मार्क्का मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था, यद्यपि कभी-कभी उसमें मामूली गड़बड़ी भी हो जाती थी। किवने बहुत सालों ठक एक जर्मन बैंककी लन्दन शाखामें काम किया था। प्रायः साठ वर्षकी ख्रवस्थामें बैंकके बन्द हो जानेपर बुढ़ापेमें उन्हें ख्रपने मित्रों ख्रौर साहित्य-प्रेमियों द्वारा संचित की जानेवाली निधिसे जीवनयापनके प्रबन्ध होनेकी ख्राशा थी ख्रौर वह जर्मनी जानेके लिये तैयार थे। "कपिटाल" की प्रति पाकर किवने उसके लिये धन्यवाद तथा तक्स लामागके साथ लौराके व्याहका हृदयसे ख्रिमिनन्दन मेजा। पुस्तकको पढ़कर भी उसने हर्ष प्रकट किया, ख्रौर कहा कि इसकी सफलता यद्यपि तुरन्त ख्रौर सनसनी पैदा करनेवाली नहीं होगी, लेकिन वह बहुत गहरी ख्रौर स्थायी वस्तु होगी। मार्क्का पुराना साथी रूगे कम्युन्तिका ख्रव जबर्दस्त विरोधी था। मार्क्क साथ भी उसका सम्बन्ध बहुत दिनोंसे विगड़ा हुख्रा था, लेकिन उसने ग्रंथको युगप्रवर्त्तक, बड़ी चमत्कारिक ख्रौर ख्राँखोंको चौंधिया देनेवाली कृति कहनेमें संकोच नहीं किया। मार्क्न उसकी विद्वत्ता गम्भीरता ख्रौर उसकी कुशाग्र बुद्धिकी सराहना की।

"किपटाल" जर्मन भाषामें लिखा गया श्रीर उसीमें वह पहले-पहल प्रका-शित हुआ। इसे शायद, श्राकस्मिक घटना नहीं कहना होगा, कि प्रथम जिल्द के छपनेके दूसरे ही साल उसके रूसी श्रनुवादके तैयार होनेके बारेमें १२ श्रम्त्वर १८६७ को कुगेलमानने मार्क्सको स्चित किया : पितरबुर्गके एक प्रकाशकने रूसी श्रनुवादको छपाना शुरू किया है, वह उसमें देनेकें लिये मार्क्सका फोटो माँग रहा है। रूस, उसके शासन श्रीर समाजकी मार्क्स हमेशा कई। श्रालोचना किया करते थे श्रीर एक तरह वह रूसियोंसे निराश से थे,

[#] Eugene Duhring

लेकिन रूरी ही उनकी इस महान् श्रमरकृतिके प्रथम कदरदान निकले । मार्क्स के दिखलाये मार्गके अनुसार उन्होने ही पहले-पहल दुनियामें कम्युनिस्ट राज्य कायम किया। "कपिटाल" ही नहीं बल्कि मार्क्सनी पुस्तक "श्रर्थशास्त्रकी श्रालोचना" की बिकी भी रूस जितनी श्राधक कही नहीं हुई । रूसी "कृपिटाल" १८७२ ई० मे प्रकाशित हुन्ना। त्रानुवादक दानियलसन त्रापने उपनाम "निकोलाई-स्रोन" के नामसे ज्यादा प्रसिद्ध था। "कपिटाल" के महत्वपूर्ण ऋध्यायोके अनुवादमे एक सहसी तस्य क्रान्तिकारी लोपातिनने मदद की थी, जिसका मार्क्से १८७० ई० में परिचय हुआ था। यद्यपि मार्क्सके राजनीतिक विचार रूसी शासकोको मालूम थे, लेकिन तो भी उन्होने पक्के वैज्ञानिक दगसे लिखे होनेके कारण ग्रंथको प्रकाशित करनेकी आज्ञा दे दी। २७ मार्च १८७२ में पुस्तक प्रकाशित हुई। और २५ मई तक तीन हजारके संस्करणकी एक हजार कापियाँ विक गईं । इसी समय फ्रेंच अनुवाद छुपने लगा था श्रीर द्वितीय सस्करखर्में जर्मन मृल-ग्रंथ भी दो भागोंमे निकाला जाने लगा था। फ्रेंच ऋतु-वाटमें ज॰ रायको मार्क्सने स्वयं काफी सहायता करते शिकायत की थी : श्रनुवाद सुधारनेसे कम समय लगता, यदि मैं स्वय उसे फ्रेचमें कर डालता। इससे एक बात जरूर हुई कि "किपेटाल" का फ्रेंच अनुवाद उतना ही प्रामा-शिक है, जितना कि जर्मन मूल । जर्मनी, रूप श्रीर फाएकी श्रपेचा इगलैंडमें "कपिटाल" की प्रथम जिल्दको कम सफलता मिली। सिर्फ एक छोटी सी श्रालोचना "सट्डें रिब्यू" # में निकली, जिसमे कहा गया था, कि मार्क्स श्रत्यन्त रूखी श्रर्थशास्त्रीय वार्तोको भी सुन्दर रूपसे रखनेकी प्रतिमा है। दूसरी लम्बी श्रालोचना एगेल्सने एक श्रौर पत्रिका † के लिये लिखी, लेकिन "श्रत्यंत रूखा" कहकर उसे सम्पादकने लौटा दिया। पीछे प्रोफेसर बीसलीके प्रयत्नसे पत्रिकाने उसे स्वीकार किया। मार्क्स अपने जीवनमें "कपिटाल" के ऋँग्रेजी अनुवादको नहीं देख सके।

^{*} The Saturday Review † The Fortnightly Review

श्रध्याय १६

इन्टर्नेशनलका मध्याह्व

"कपिटाल" के प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेके थोड़े ही समय बाद २-८ सितम्बर १८६७ को लोजानक में इन्टर्नेशनलकी द्वितीय कांग्रेस आधिवेशन हुई, लेकिन जेनेवाकी प्रथम कांग्रेसके मुकाबिलेमें यह नीचे स्तरकी साबित हुई।

१. पश्चिमी यूरोपमें

इन्टर्नेशनल को कार्यचेत्रमें आये तीन साल हो रहे थे, लेकिन जुलाईमें जेनरल कौंसिलने कांग्रेसमें काफी संख्यामें प्रतिनिधियोंके भेजनेकी जो अपील की थी. उसमें पहले जैसी बात नहीं थी। श्रपने यहाँकी प्रगतिकी रिपोर्ट करनेमें भी कितने ही देशोंने ढिलाई की । सिर्फ स्वीजलैंड श्रीर बेल्जियमने इसमें तत्परता दिखलाई थी। वेल्जियममें माशियान में हड़तालियोंकी हत्या की गई थी। जिसके कारण वहाँके सर्वहारामें उत्तेजना फैली हुई थी। १८४८ ई॰ से पहले सामाजिक समस्यात्रोंके बारेमें जर्मनी की ऋधिक दिलचस्पी थी, लेकिन श्रव उसका सारा ध्यान राष्ट्रीय एकताकी स्त्रोर लगा हस्त्रा था। फ्रांसमें भी इन्टर्नेश-नलकी प्रगति नहीं हो पाई. लेकिन १८६७ ई० के वसन्तमें पैरिसके पीतलके कमकरोंमें उत्तेबना फैली, जब कि मालिकोंने तालाबन्दी की, किंतु कमकर श्रपने संवर्षमें त्रान्तमें विजयी हुये। त्रापीलमें त्रीर देशोंकी स्थितिका वर्गन करते हुये इंगर्लैंडके मनदूर-त्रान्दोलनकी शिथिलताकी शिकायत की गई, तो भी जनताके दवावके कारख अनुदार प्रधानमंत्री डिजराइलीके अपने पूर्वगामी ग्लेडस्टोनके विग (उदार) मंत्रिमएडलकी अपेद्धा भी अधिक विस्तृत मताधिकार देनेके लिये मजबूर होना पड़ा। श्रव नगरके हरेक घरका प्रत्येक माड़ेदार माडेकी रकमका कुछ ख्याल किये त्रिना वोटर स्वीकार किया गया था। युक्तराष्ट्र अमे-रिकाका जिक्र करते हुये इस बात पर सन्तोष प्रकट किया गया, कि वहाँके कम-करोंने कितनी ही रियासतोंमें ऋाठ घंटेके कार्य दिन मनवानेमें सफलता पाई।

^{*} Lausanne † Mar chienne

जेनरल-कौंसिलके प्रतिनिधिके तौरपर इकेरियस श्रीर दुपो काग्रेसमें शामिल हुये। युंगकी श्रनुपस्थितिमें काग्रेसकी श्रम्यन्तता दुपोंने की। प्रतिनिधियोंकी संख्या ७१ थी, जिनमें जर्मन प्रतिनिधि थे कुगेलमान, एफ० ए० लॉगेक छुडिवग बुखनेर श्रीर लाडेनडोर्फ—लाडेनडोर्फ श्रम्ब्या बुब्वन-जनतन्त्रतावादी, लेकिन कम्युनिज्मका सख्त विरोधी था। जर्मनोसे कहीं श्रिषक सख्या फ्रेंच श्रीर हत्तालियन प्रतिनिधियोंकी थी, जिनमे पूधोंके श्रमुयायी प्रधानता रखते थे। काग्रेसमें माक्सैन कोई भाग नहीं लिया। उसके प्रस्ताव श्रीर निर्णय भी परस्पर विरोधी हुये। सद्धान्तिक निर्णयोकी श्रमेन्चा काग्रेसके व्यावहारिक कार्य श्रिषक लामदायक थे। इसी समय "शान्ति श्रीर स्वतन्त्रता लीगके" नामसे एक बूर्जिन संगठन कायम हुश्रा था, जिसकी प्रथम काग्रेस इन्टर्नेशनलकी काग्रेसके थोड़े ही समय जाद होने जा रही थी। उसने कमकरोंका सहयोग भी माँगा था, जिसके बारेमें काग्रेसका सीधा-सादा जवाब था: जहाँ-कहीं भी उसके द्वारा हमारे हितों-को श्रागे बढाया जा सकता हैं, हम खुशीसे दुम्हारा समर्थन करेंगे।

कांग्रेसके समाप्त होनेके कुछ ही दिनों बाद एक घटना घटी, जिसका परि-याम बहुत व्यापक हुआ। १८ सितम्बर (१८६७) के दोपहरको हथियारवन्द सिनिफिनो (श्रायरलैंडके देशमक्तो) ने एक जेलखानेकी गाड़ीको घेर लिया, जिसमे दो सिनिफिन बन्दी ले जाये जा रहे थे। गाडीके दरवाजेको तोडकर पुलिसके एक सिपाहीको गोली मार श्रपने साथियोको छुडा लिया। श्रसली श्रादमियोंको पकडनेमे श्रग्रेज सरकार कमी सफल नहीं हुई। कानून श्रौर व्यवस्थाके नामपर कितने ही दूसरे निरपराध श्रादमियो को पकड़कर उनपर हत्याका मुकदमा चलाया गया। कोई ठीक सबूत नहीं मिल सका, तो भी उन्हें मृत्युद्दड देकर फॉसीपर चढा दिया गया। इसके कारण इगलैंडमें वडी सनसनी फैली श्रौर दिसम्बरमें कमकरो श्रौर निम्न-मध्यम-वर्गके मोहल्ले क्लेकेनवेलके जेलखानेकी दीवारको सिनिफिनोने उड़ा दिया, जिससे बारह श्रादमी मारे गये श्रौर सैकडों घायल हुये। इन्टर्नेशनलका इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। उसने

[&]amp; Lange.

क्लेरफेनवेलकी दुर्घटनाको एक वेवक्सीकी वाल कहकर िलनिफेनोंके लिये अधिक हानिकारक वतलाया, क्योंकि इसके कारण अंग्रेज मजदूरोंकी सहानुभृति वह लो सकेंगे। लेकिन अंग्रेज सरकारने सिनफिनोंके साथ उसी तरह साधारण चोर-डाक् अपराधियोंकी तरह वर्ताव किया, जिस तरह हम भारतमें अभी थोड़े ही दिनों पहले देख चुके हैं। इस अमानुषिक वर्तावको देखकर मार्क्सको जो चोभ हुआ, उसे जून १८६७ के एंगेल्सको लिखे पत्रमें उन्होंने प्रकट किया: "यह जुगुन्सनीय सुअर अपनी अंग्रेज मानवताकी रोखी वधाइते हैं, जब कि वह अपने राजनीतिक वन्दियोंके साथ हत्यारों, जालसाजों, अपाकृतिक व्यभिचारियोंकी अपेचा वेहतर वर्ताव नहीं करते"। एंगेल्सको आयर्लेंडके क्रान्तिकारियोंके प्रति और भी अधिक सहानुभृति थी, जिसका एक कारण यह भी या, कि उनकी मृतिया मेरीकी वहन एलिजावेथ वर्न्स (एंगेल्स-पत्नी) एक जबर्दस्त आइ-रिश देशभक्त थी।

श्रायलेंडकी स्वतन्त्रताके प्रति मार्क्सकी भी जबर्दस्त सहानुभृति थी। त्रिना काफी श्राय्यम श्रीर मननके मार्क्सकी कोई प्रवृत्ति हो नहीं सकती थी। श्राय- लेंडकी परतन्त्रताके इतिहासका गम्भीरतापूर्वक श्रध्ययन कर वह इस नतीजेपर पहुँचे थे, कि श्रायलेंडकी स्वतन्त्रताके जिना इंगलेंडका मज्द्र-वर्ग स्वतन्त्र नहीं हो सकता, जिसका स्वतन्त्र होना यूरोपीय सर्वहाराकी स्वतन्त्रताके लिये श्रावश्यक है। इंगलेंडमें सामन्ती नर्भीदारों श्रीर पूँजीवादी विनयोंका श्रज्य गठवन्धन था, श्रायलेंडकी भृमिका वहुत वहा भाग अंग्रेज जमींदारों हो हाथमें था, जिनका जमा हुआ पैर उखादना सर्वहारा-स्वतन्त्रताके लिये श्रावश्यक था। उनको विश्वास था, कि श्राहरिश लोगोंको जैसे ही स्वतन्त्रता मिलेगी, जैसे ही वह श्रपनी विधान-सभायें श्रीर सरकार निर्वचित्त करेंगे, वैसे ही विदेशी अंग्रेज जमींदार दूषकी मक्सीकी तरह वहाँसे निकाल दिये जायेंगे। क्योंकि इन विदेशी जमीं-दारोंके प्रति श्राहरिश जनताकी जबर्दस्त धृणा थी। अंग्रेज पूँजीपतियोंके लिये श्रायलेंड कारखानोंके लिये सबसे सस्ते दामसे कन श्रीर दूसरी चीजें प्रदान करता था, श्रीर श्रपने सस्ते मजदूरोंको देकर इंगलेंडके मजदूरोंकी माँगोंको कमजोर करनेमें सहायता करता था। उनकी गरीवी, निरद्यता और सस्तेपनके

कारण अंग्रेज मजदूर उनके साथ समानताका वर्ताव नहीं करते । उन्हें सफेद चमडेवाला नीगर समभते थे । यह मेदमान अमेरिका तकमे दोनों देशोसे गये मजदूरोंमे मिलता था, जहाँ आइरिश उतनी हीन अवस्थामे नहीं थे । इंगलैंडमें सर्वहारा-क्रान्तिके स्त्रपातके लिये यह आवश्यक था, कि आइरिश लोगोंके इंगलैंडके जुएसे निकाला जाय । इसीलिये इन्टनेंशनल हमेशा खुलकर आय-लैंडका पत्त लेती और इगलैंडके मजदूरोपर जोर देता, कि वह अपने पडोसी-देशकी स्वतन्त्रताको सहानुमृतिकी हिष्टसे देखें और उसमे सहायता करें ।

पिछले वर्षोंमे मार्क्सने स्रायलैंडके प्रश्नपर बरावर ध्यान दिया | जब तीन सिनिफनोको मेन्चेस्टरमे मृत्युद्गड दिया गया, तो इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिल-ने अंग्रेज-सरकारके पास आवेदनपत्र मेजनेके लिये संगठन किया, लेकिन अग्रेज शासक क्यो उसे मानने लगे १ उन्होने उन्हें फॉसीपर चढा दिया। इसपर इन्टर्नेशनसने इसके विरुद्ध जबर्दस्त समाये कर इस फॉसीको कानृनी हत्या घोषित की। जिसके कारण अग्रेज सरकार नाराज हो गई श्रीर मौकेसे फायदा उठाकर फ्रेंच सरकारने भी इन्टर्नेशनलपर आक्रमण किया। इससे पहले तीन साल तक बोनापार्तने इन्टर्नेशनलके मामलेमे कोई हस्तचेप नही किया था। वह चाहता था, कि इन्टर्नेशनलके ब्रान्दोलन द्वारा फासके पूँजीपित उसके प्रतिकृत घवरा जायं । पैरिसमें इन्टर्नेशनलका अपना व्यूरो था । जेनेवा-कांग्रेसने अपनी कार्यवाही बहीको स्वीजरलैंडमें उत्पन्न किन्तु इंगलैंडके नागरिक वन गये एक स्विस पुरुषके हाथ जेनरल-कौंसिलके पास मेजा था। फ्रांसकी सीमापर उसे स्त्रीन लिया गया श्रीर विरोध करनेपर फ्रेंच-सरकार कानमे तेल डाले पढी रही। इसपर ऋग्रेज विदेश-विभागने ऋपनी प्रजाके साथ ऐसे वर्तावके लिये विरोधः प्रकट किया, तब छुटेरोंको कागज-पत्र लौटानेके लिये मजबूर किया गया । बोना-पार्तको इन्टर्नेशनल कैसे पसन्द ग्रा सकता था ? १८६६ ई० में मजदूरोंने श्रनेक हड़तालेंकी श्रौर उत्तरी बर्मनी लीगके साथ लुग्बम्बुर्गको लेकर भगड़ा उठ खड़ा हुआ । उस समय पैरिसके मजदूरोंने वर्तिनके मबदूरोंके साथ भाईचारा का सम्बन्ध स्थापित किया । यह सब बातें थीं, जिससे बोनापार्त ग्राट इन्टर्नेशनलके खिलाफ कुछ करनेके लिये तैयार हो, विनिफन-पड्यत्रका

उसे केन्द्र कहा | िस्तिमतं अंग्रेजोंके लिये कड़नी यूँट थे | इस ग्रहाने न्नोनापार्तने एक श्रोर इन्टर्नेशनलको ध्यस्त करना चाहा श्रीर दूसरी श्रोर अंग्रेजों को खुश करना । िनना वारंटके रातको इन्टर्नेशनलके न्यूरोंके बीस मेम्बरींक चरों पर पुलिसने छापा मारकर गिरफ्तार किया । ६-२० मार्चको मुकदमा चला-कर पन्द्रह मेम्बरींको श्रपराधी करार दे उनमेंसे हरेकको सी फांकका खुरमाना कर, न्यूरोंको बन्द कर दिया गया । फैसलेकी श्रपील बेकार साबित हुई । मुकद्में के फैसलेक बाद नये मेम्बरींका न्यूरों स्थापित किया गया, लेकिन २२ मईको नये न्यूरोंके नी मेम्बर भी श्रदालतमें पेश किये गये, जिनके मुकद्मेंके पैरवी चिलिनने बड़ी योग्यतासे की, किन्तु उन्हें तीन महींनेकी सजा मिले बिना नहीं रही । फ्रेंच सरकारकी यह तत्परता बतलाती है, कि पैरिसके मजदूरोंमें इन्टर्नेश-नलका प्रमाव बद चला था।

बेल्जियममें भी वहाँकी सरकारने मजदूरोंगर प्रहारका मौका हाथसे जाने नहीं दिया । वहाँके न्याय-मन्त्री दे बाराने । पार्लियामेन्टमें इन्टर्नेशनलके खिलाफ जहर उगलते हुये उसे दबानेकी घमकी देते कहा, कि इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस बुशेल्समें नहीं होने पायेगी । लेकिन बेल्जियमके मेम्बर उसकी धमकीसे नहीं डरे श्रीर उन्होंने खुला पत्र लिखकर मन्त्रीको जवाब दिया, कि चाहे न्याय-मन्त्री पसन्द करें या न करें इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस बुशेल्समें :होके रहेगी।

२. मध्य-युरोपमें

१८६६ ई० में जो मन्दी श्रीर श्रार्थिक संकट पूँबीवादी देशों में श्राया था, उसके कारण वहाँ चारों श्रोर हड़तालें होने लगी थीं । इन हड़तालों के संगठन करने में यद्यपि जेनरल-कौंसिलका साद्यात् हाथ नहीं या, लेकिन उसकी सहातुमूर्ति हड़तालियोंके साथ थी श्रीर जहाँ तक होता था सलाह-मशौरे श्रीर दूसरी तरहसे वह उनकी सहायता करती थी। सबसे बड़ी बात उसने यह की थी, कि भिन्न-भिन्न देशों के मजदूरों में एकता स्थापित करके हड़ताल तोड़नेवाल सस्ते मजूर पूँजी-

[#] De Bara.

पितयोंको विदेशसे पाने नहीं दिया था। उन्होंने मजदूरोंको वतलाया, कि द्वाम अपनी मजूरीको ठीक स्तरपर तभी कायम रख सकते हो, जब कि अपने विदेशी सायियोंके मजूरी-सम्बन्धी संघर्षमें सहायता करो। इसके कारण जहाँ हस्ताल तोडनेमें पूँजीपितियोंको कठिनाई हो रही थी, वहाँ इस अन्तर्राष्ट्रीय माईचारेसे कमकरोंकी हिम्मत बढ़ी हुई थी। इसीलिये सच हो या मूठ शासक सबकी जिम्मेवारी इन्टर्नेशनलपर थोपते थे। प्रत्येक हस्ताल इन्टर्नेशनल द्वारा चालित हस्ताल मानी जाती, और हरेक हस्तालके बाद इन्टर्नेशनलकी शांकि और बढ़ जाती।

वृद्धीं जीने हड़तालों को तोड़ने तथा मजदूरों को पत्तिहिन्मत करने में कोई क्र नहीं उठा रक्खी। उन्होंने कमकर-परिवारों को उनके क्वार्टरों निकाल वाहर किया, दूकानों को उघार लीदा देने से रोका। त्वीजलैंड के पूँजीपतियोंने तो यहाँ तक धृष्टता की, कि अपने आदमी लन्दन में जरूर पता लगाया. कि इन्टर्नेशनल को पैसे कहाँ से मिलते हैं। मार्क्सने व्यंग करते हुए कहा था: "अगर यह मले तथा पक्के किस्तान यदि ईसाइयत के आरम्भिक दिनों ने रहते, तो इन्होंने रोममें धर्मदूत पालके वैंक-एकोंटके वारेमें जाँच करवाई होती।" सारी कोशिश करनेपर मी जानेल त्वीजलैंडमें मकान बनानेवाले मजदूरोंने जो हड़ताल की थी, वह टूट नहीं सकी और मजूर इन्टर्नेशनल के पत्ताती वने रहे। अन्तमें जब उनकी विवय हुई तो उन्होंने एक बड़ा जलूस निकाला और बावार के चौरत्तेपर बड़ी समा करके अपना विजयोत्सव मनाया। उन्हें सभी देशों से तहा- यता मिली थी। उनके संघर्षका अमाव एटलान्टिक पार युक्तराष्ट्र अमेरिकामें भी दिखाई पड़ा, जहाँपर एफ० ए० जोरने द्वारा इन्टर्नेशनल अपनी जड जमा रही थी—सोनें इंट्रिट ई॰में देशसे राजनीतिक शरणार्थी हो निकल कर और अब न्यूयार्कमें संगीतका अध्यापक था।

हबताली आन्दोलनने जर्मनीमें भी इन्टर्नेशनलके लिए रास्ता साफ निया। अभी तक वहाँकी छिट्-फुट् टुकड़ियाँ इन्टर्नेशनलको नानती थीं। लाजेलके

[×] Sorge.

वाद उसके ऋनुयायियोंका नेतृत्व धीरे-धीरे श्वाइट्लेरके हाथमें गया, जो कि उत्तरी जर्मन पार्लियामेन्टके लिए एल्बरफेल्ट वर्मेनों से मेम्बर जुना गया, जब कि उसका पुराना प्रतिद्वनद्वी तथा मार्क्का एक योग्य शिष्य लीवक्नेस्ट स्टोलवेर्ग-श्नीवेर्ग से चुना गया। १८५६ ई० की शरदमें लीवक्नेस्टने सेक्शन जनता पार्टी कायम करनेमें भाग लिया था। लीगने समाजवादी नहीं, बल्कि उपवादी-जनतांत्रिक प्रोग्राम स्वीकार किया था और १८६८ ई० से लाइपजिगसे "डेमो-काटिशे बोखेनब्लाट"‡ के नामसे अपनी पार्टीका मुखपत्र निकालना शुरू किया था। श्वाइट्जेर "म्रल्गेमाइनेर ड्वाशेर स्त्रर्बाइटेर्वेराइन" नामके स्त्रपने दलके पत्रका सम्पादक था। श्वाइटजेर श्रीर लीबननेख्टमें बरावर नोंक-भोंक रहती थी। यद्यपि उसके गुरु लाजेलका मार्क्सके साथ बहुत श्रन्छा सम्बन्ध नहीं था, लेकिन लाजेल मार्क्सके कामके महत्त्वको समभाता था। श्वाइटजेरने जर्मन कमकरोंमें ''कपिटाल'' की प्रथम जिल्दका प्रचार करनेमें लीवक्नेखटसे भी ग्रन्छा काम किया था । ग्राप्रेल १८६८ ई० में उसने मार्क्स भी कुछ सलाह माँगी थी। यद्यपि निजी तौरसे श्वाइटजेरका सम्बन्ध उतना ऋच्छा नहीं कहा जा सकता, लेकिन मार्क्स मी श्वाइट्जेरके मजदूर-श्रान्दोलनके "समसदारी श्रीर जोर" के साथ नेतृत्व करनेकी सराहना की, श्रीर जेनरल-कौंसिलमें सदा वह श्वाइट्जेरका जिक पराये आदमीकी तरह नहीं करते। उसे जर्मनीके मजदूर-नेतात्रोंमें सबसे अधिक योग्य और कर्मठ मानते थे। १८६८ ई० के अगस्तके अन्तमें हाम्वर्गमें अलोमाइनेर ड्वारोर अर्रवाइटेरवेराइन" (श्वाइट्जेरके मज-दूर संगठन) का वड़ा ऋधिवेशन हुआ, जिसमें इन्टर्नेशनलसे सम्बद्ध करनेका प्रस्ताव श्वाइट्जेरने स्वयं रक्खा। उसका संगठन इन्टर्नेशनलके उद्देश्योंके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट कर सकता था, उससे सन्वन्ध करनेमें उसे गैर कानूनी होना पड़ता । अधिवेशनने मार्क्को मुबद्द वर्गके लिए उनकी वैज्ञानिक सेवाग्रोंके लिये जर्मन कमकरोंका धन्यवाद स्वीकार करनेके लिये निमंत्रित किया, लेकिन मार्क्स बुशेल्य-कांग्रेसकी तैयारीमें व्यस्त होनेसे नहीं स्त्रा सके। इस

[#] Elberfeld-Barmen. † Stollberg Schneeberg. ‡ Demokratisc hes Wochenblat. \$ Allgemeiner Dentscher Arbeiter verein.

प्रकार लाजेलके समयसे चले आते विल्गावकी खाई श्वाइट्जेरके प्रयत्नसे वहुत कुछ मिट गई, लेकिन मार्क्स शिष्य लीवक्नेस्ट और श्वाइट्जेरकी प्रतिद्विता अव भी उसी तरह जारी रही । मार्क्स श्वाइट्जेरको कई पत्र लिखे, विशेषकर १३ अक्टूबर १८६८ के पत्रमें इसी वातका समर्थन मिलता है । बडे अधिवेशनके कुछ दिनों वाद नूरेम्वेगेमें जर्मन कमकर संगठनोंके एसोसियेशनकी कांग्रेस हुई और इसने भी बहुमतसे इन्टर्नेशनलके नियमोंको अपना राजनीतिक मोप्राम स्वीकार किया, और ''डेमोकाटिश वोखेनब्लाट'' को उसका पत्र स्वीकार किया । कुछ स्प्वाह पीछे ''डेमोकाटिश वोखेनब्लाट'' ने बडे-बड़े अक्रोंमें घोषित किया, कि स्ट्रगटमें जर्मन जनता-पार्टीकी कांग्रेसने नूरेम्वेगेक प्रोग्रामको स्वीकार करनेका निश्चय किया है । श्वाइट्जेर और लीवक्नेख्टक के तंगठन नियमों और प्रोग्रामोंमें एक दूसरेके बहुत नजदीक आ गये, और मार्क्सने दोनोंके वीचमें पहनकर जर्मन मजदूर-वर्गके आन्दोलनको एक करनेकी कोशिश भी की, किन्तु उसमें स्कलता नहीं हुई । आन्दोलन जितना ही बढ़ता गया, उतना ही मार्क्स को संगठनकी ओर विशेष ध्वान देनेकी आवश्यकता थी, आपसी फूटको अधिक बढ़नेसे वही रोक सकते थे ।

३ वकुनिन

हम बतला चुके हैं कि किस तरह रूगेके सम्बन्धसे रूसी क्रांतिकारी मिलाइल वक्किनका मार्क्ससे परिचय हुआ । आगे चलकर वक्किनने अरासकताबादका दूसरा रात्वा लिया, पीछे निराश हो जार और जारशाहीका खुशामदी वनकर जान छुडानेकी कोशिश करनेवाले वक्किनका धमाव कमकरोके एक भागपर उस समय और पीछे भी रहा । ६-१३ सितम्बर १८६८ को ब्रुशेल्समें इन्टर्नेशनलकी तीसरी कांग्रेस हुई । पहले और पीछे भी होनेवाली कांग्रेसोंकी अपेक्षा इस कांग्रेसमें सबसे अधिक प्रतिनिधि आये थे, जिनमें अधिक संख्या वेलिवयनोंकी थी । फ्रेंच प्रतिनिधि पंचमांश थे, इक्किएडके ११, जिनमें जेनरल-कोंतिलके ६ सदस्योंमें एकेरियस, युंग, लेसनेर† तथा मन्द-संधी छुकाफ्ट मी थे।

^{*} Liebknecht † Lessner.

स्वीजलैंडसे प्रतिनिधि त्राये थे, लेकिन जर्मनी त्रपने ३ ही प्रतिनिधि भेज सकी थी, जिनमें कोलोनसे त्रानेवाला मोजेज हेस था। श्वाइटजेरको # भी निमंत्रण मिला था. लेकिन ऋपने किसी मुकदमेके कामसे वह जर्मनी नहीं छोड़ सका, पर एक सन्देश भेजकर उसने इन्टर्नेशनलके उद्देश्योंके साथ अपने संगठनकी सहानुभूति घोषित की, श्रौर वतलाया कि कानूनी बाधाके कांरण हम इन्टर्नेशनलके साथ श्रपनी संस्थाको सम्बन्धित नहीं करा सकते । श्रपनी श्रायुके चौथे सालमें इन्टर्नेशनलकी शक्ति श्रीर घारा पहलेसे भी ज्यादा बढ़ गई थी। यद्यपि मान्सीने इस कांग्रेसके पस्तावोंको तैयार करनेमें माग नहीं लिया था, लेकिन कांग्रेसकी कार्रवाईसे उनको ऋसंतोष नहीं था। हाम्वर्ग ऋौर नूरेन्वेर्गकी कांग्रेसोंकी तरह इस कांग्रेसने भी ऋन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी ऋोरसे ऋपने लिए किये मार्क्सके वैज्ञानिक कार्यकी सराहना करते हुये धन्यवाद दिया। जेनेवाके प्रतिनिधियोंके चोर देनेपर इन्टर्नेशनलने युद्धके बादलोंको सिरपर मॅंडराते देख उसके विरुद्ध स्त्राम हड़तालका प्रस्ताव स्वींकार किया था, जिसे मार्क्सने मूर्खतापूर्ण वतलाया, पर "शान्ति स्वातंत्र्य लीगसे" सम्बन्ध-विच्छेद करनेके निर्णयको पसन्द किया। लीगकी द्वितीय कांग्रेस कुछ ही समय पहले वर्न (स्वीजलैंडमें) हुई थी, जिसमें उसने इन्टर्नेशनलसे मित्रता करनेका प्रस्ताव किया था लेकिन इन्टर्नेशनल-ने उसको कड़ा जवाब देते हुए प्रस्ताव किया कि लीगको बन्द कर देना चाहिये श्रीर उसके मेम्बरोंको इन्टर्नेशनलके मिन्न-मिन्न भागोंमें सम्मिलित हो जाना चाहिये। बकुनिन लीगकी प्रथम कांग्रेसमें सम्मिलित हुन्ना था, बुरोल्सकी कांग्रेस-के कुछ ही महीने पहले इन्टर्नेशनलमें शामिल हुआ था। जब इन्टर्नेशनलने लीगके विलाफ त्रपना प्रस्ताव पास कर दिया, तो उसने लीगकी बर्न-कांग्रेसमें त्रव सभी राज्योंके खतम करनेका प्रस्ताव करते हुये उसके ध्वंसपर सभी देशोंके "स्वतंत्र उत्पादक एसोसियेशनों (समात्रों) के फेडरेशन (संघ)" की स्थापना करनेका समर्थन लिया। लेकिन, वहाँ उसकी बात नहीं चली। अपन बकुनिनने योहान फिलिप, वेकेर तथा दूसरे कितने ही ग्रल्पमतमें रहे व्यक्तियोंके साथ

Schweitzer.

मिलकर ''समाजवादी जनतत्रता (अन्तर्राष्ट्रीय) मैत्रीक्षके'' नामसे एक दूसरा इन्टर्नेशनल खड़ा किया, जिसने बिना किसी शर्तके इंटर्नेशनलमें सम्मिलित होनेका निश्चय किया। बकुनिनके एलाएंस (मैत्री) की स्थापनाकी घोषणा बेकरने "हेर फोरबोटेके" सितम्बर अकमे प्रकाशित कर इसका उद्देश्य घोषित करते हुए कहा, कि फास, इताली और स्पेनमें - जहाँ कि "मैत्री"का प्रमाव है-वह इंटर्नेशनलका श्रंग बनकर रहेगी। तीन महीने बाद १५ दिसम्बर १८६८ को बेकरने जेनरल-कौंसिलसे प्रार्थना की, कि "मैत्री" को इटर्नेशनल स्वीकार कर ले । लेकिन, इसी बीचमें फ्रेंच और बेल्जियन फेडरल कौंसिलने इस प्रार्थनाको श्रस्वीकार कर दिया था । एक सप्ताह नाद २२ दिसम्बरको बक्कनिनने जेनेवासे मार्क्सको लिखा: "मेरे प्रिय मित्र, मै इस समय सदासे ऋच्छी तरह श्रीर साफ तौरसे जानता हूँ, कि तुम श्रार्थिक क्रांतिके महान् पथका श्रनुसरण करते हमें भ्रपने साथ चलनेके लिए निमनित करते उन लोगोंकी निंदा करते हुए कितने ठीक रास्तेपर थे, जो कि अशातः श्रीर कमी-कभी पूरी तौरसे राज-नीतिक साहसोंकी पगडडियोंमे हमारी शक्तियाँ बरबाद कर रहे थे। इस वक्त मैं श्रव वही काम कर रहा हूँ, जो कि तुम पिछले बीस सालसे कर रहे थे। वर्न कांग्रेसमें बूर्ज्वांचीके साथ मेरे पक्के श्रीर सार्वजनिक सम्बंध विच्छेदके बादसे कमकरोकी दुनियाके सिवाय मेरा अब न कोई दूसरा समाज है और न कोई दूसरा वातावरस । मेरी पितृभूमि ख्रब इंटर्नेशनल है, जिसके प्रधान-संस्थापकोमें तुम हो । इस प्रकार मेरे प्रिय मित्र, तुम देखते हो कि मैं तुम्हारा शिष्य हूं, जिसका मुक्ते श्रमिमान है। मेरे अपने मनोमाव श्रौर वैयक्तिक सम्मतियोंके बारेमें यह बात है।" हो सकता है उस समय यह शब्द वक्किनिनके हृदयसे निकले हों।

बकुनिनने कितने ही सालो नाद प्र्यो और मानसँके नीचमें व्रलना करते हुये लिखा था: "मानसँ एक नहुत गम्मीर और संनीदा अर्थशास्त्रीय विचारक है। प्र्यों की अपेद्धा उसको एक सबसे जन्नर्दस्त सुमीता यह मी है, कि वह

^{*} Alliance.

न्वस्तुतः एक भौतिकवादी है। पूर्धोंने पुराने विज्ञानवादकी परम्पराख्नोंसे अपनेको मुक्त करनेकी बहुत कोशिश की, तो भी वह अपने सारे जीवनमें वैसा ही विज्ञानवादी बना रहा, किसी च्रण वह बाइबलकी स्रोर मुकता तो दूसरे च्रण -रोमन कानूनकी स्रोर (जैसा कि मैंने उसकी मृत्युसे दो महीने पहले कहा था), वह सदा सिरसे पैर तक एक शास्त्रान्ती (वेदान्ती) रहा। उसका यह वड़ा दुर्माग्य था, कि उसने कमी प्राकृतिक विज्ञानका ऋष्ययन नहीं किया ऋौर न उसके ढंगको अपनाया। उसके पास एक मजबूत नैसर्गिक बुद्धि थी, जो उड़ती 'हुई उसे ठीक रास्ता वतला जाती, लेकिन ऋपनी वृद्धिके बुरी ऋौर विज्ञानवादी न्त्रादतोंके कारण वह अन पथभ्रष्ट हो पुन:-पुन: अपनी पुरानी गलतियोंमें पड़ जाता । इस प्रकार प्र्घों एक स्थायी परस्पर निरोधोंका समूह वन गया, यद्यपि 'एक शक्तिशाली प्रतिमावान श्रीर झान्तिकारी विचारकके तौरपर वह लगातार विज्ञानवादके मायावादसे लड़ता रहा, पर उसे हटानेमें सफल नहीं हुन्ना।" चकुनिनने मार्क्षके बारेमें लिखा या, "विचारकके तौरपर मार्क्स ठीक रास्तेपर है। उसने इस रिद्धान्तको जमा दिया कि इतिहासमें सभी धार्मिक, राजनीतिक श्रीर वैधानिक विकास श्रार्थिक विकासोंके कारण नहीं बल्कि उनके कार्य है। यह बहुत बड़ा श्रीर लामदायक विचार है, लेकिन इसका सारा श्रेय मार्क्सको नहीं है। उससे पहले भी बहुतोंने इसका कुछ पता पाया था और ग्रंशतः इसको च्यक्त भी किया था, लेकिन अन्तिम इसका श्रेय मार्क्सको देना ही पड़ेगा, न्योंकि उसने इस विचारको वैज्ञानिक तौरसे विकसित किया और इसे अपने सारे त्रार्थिक विचारोंका त्राघार बनाया। दूसरी त्रोर मार्क्सकी ऋपेचा पूर्वो स्वतन्त्रता के विचारको ग्रिधिक ग्रन्छी तरह समम्तता श्रीर पसन्द करता था। जिस समय सिद्धान्तों श्रीर शेखचिल्ली शाहियोंके स्राविष्कारमें नहीं लगा रहता था, उस समय प्रृषोंके पास क्रान्तिकारीकी प्रामाणिक निसर्गंज बुद्धि होती थी। वह शैतान-को मानता ग्रीर श्रराजकताकी घोषणा करता था। यह विल्कुल सम्भव है कि मार्क्स पूर्वोकी अपेद्या भी वेहतर बुद्धिपूर्वक स्वातन्त्र्य व्यवस्थाको विकितत करे, लेकिन उसके पास पूधों जैसी निसर्गे बुद्धि नहीं है। एक जर्मन श्रीर यहूदी होनेके कारण वह सिरसे पेर तक अधिकारवादी है।"

वकुतिनने प्र्धांके अराजकतावादमें मार्क्सवादी ऐतिहासिक मौतिकवादकी पुट डालकर अपना एक नया पंथ खडा किया। प्र्धांसे बकुतिनका अध्ययन अधिक विस्तृत था, वह मार्क्सको उसकी अपेक्षा अच्छी तरह जानता था, लेकिन उसने जर्मन-दर्शनका अध्ययन नहीं किया था और न पश्चिमी युरोपके वर्ग-संघर्षका गहराईसे अध्ययन किया था। अर्थशास्त्रमें तो वह पूरा मकुवा था, जो कि उसके लिये प्र्धांके प्राकृतिक विज्ञानके अज्ञानसे भी अधिक हानिकारक था।

१८४८ के गर्मियोंमें-जब कि बकुनिनके साथ मार्क्सका परिचय अभी बहुत दिनोंका नहीं या, "नोये राइनिशे जाइटुंग" में वकुनिनपर आच्चेप किया गया, कि वह रूसी सरकार का एजेन्ट है। यद्यपि इसका पूरा प्रमाण न होनेके कारण यह त्राच्चेप हटा लिया गया त्रीर पीछे वर्लिनमें मिलनेपर मार्क्स त्रीर बकुनिनकी पुरानी मित्रता फिर कायम हो गई, श्रौर प्रशियन सरकार द्वारा निष्कासित होनेपर "नीये राइनिशे जाइट्ंग" ने उसका पच् भी लिया था, लेकिन गेल्शेविक-क्रान्तिके वाद जारशाहीके दफ्तर जन खुले, तो मालूम हुन्ना कि "नोये राइनिशे जाइटुक्" का १८४८ ई० वाला श्रारोप गलत नहीं था। प्राप्त श्रोलोंपिके सुमावपर बकुनिनने जारके पास उस समय अपना "प्रायश्चित्त नामा" मेजा था, जब कि आस्ट्रियन सरकारने उसे पकड़कर जारशाही पुलिसके हायमे दे दिया। इस प्रायश्चित-पत्रको १५ सितम्बर १८५१ को बक्कनिनने लिखकर खतम कर तुरन्त ही जारके पास मेज दिया था। जारने अपने युवराज-को उसे पढनेके लिये दे दिया श्रीर फिर दु:स्यात श्रोखराना (खुफिया पुलिस) के दफतरमें दाखिल कर दिया गया । लेनिनप्रादमें केन्द्रीय अभिलेखागारमे १६१६ ई॰ में मिलने पर "प्रायश्चित" को दुरन्त ही प्रकाशित कर दिया गया। १४ फर्वरी १८५७ का लिखा जारके नाम वकुनिनका एक पत्र मी मिला था, जिसे भी प्रकाशित कर दिया गया। इन दोनों ऋमिलेखों द्वारा बकुनिन यही चाहता था, कि उसको कड़ा दराइ न दिया जाय । उसने अपराध स्वीकार करने नाले पापीके तौरपर अपनी पार्थना जारके सामने रखा। १४ फर्वरी १८५७ वाला पत्र तो "प्रायश्चित" से भी मद्दा है : "िकस नामसे में अपने अतीत जीवनको पुकारूँ ? मृगतृष्णा श्रीर निष्फल प्रयत्नोंचे श्रारम्म करके उउना श्रन्त श्रपराघी

में हुआ !...में श्रपनी भूलों, श्रपनी कुटिंग्यों श्रीर श्रपने श्रपराधोंपर लानव भेजता हूँ...।" जारशाहीके चरणोंमें पड़े इस पुराने पापीका दिखलाया राज-नीतिक मार्ग किस तरहका होगा, इसे कहनेकी श्रवश्यकता नहीं, लेकिन जिस तरह त्रोत्स्की, राय या दूसरे पथपतितोंके श्रनुपायी श्राजभी मिल सकते हैं, उसी तरह बुकुनिनके भक्तोंका भी श्रमाय नहीं है।

१८६७ ई० की शरद्में ब्रकुनिन जेनेवामें जाकर रहने लगा। वहाँ उसने अपनी स्थापित की हुई शुप्त समाके पद्धमें "शान्ति-स्वातंत्र्य लीगको" करनेकी कोशिश की। उसमें असफल होनेके बाद इन्टर्नेशनलके साथ सम्बन्ध जोड़नेकी कोशिश की। मार्क्सके दिलमें अब भी क्रान्तिकारी ब्रकुनिनके लिये सहातुभूति थी। वह दूसरोंके आद्येपोंसे उसकी रद्धा करनेका प्रयत्न करते थे। ब्रकुनिनने समाजवादी जनतंत्रता मैत्री (एलायन्स) के लिये जिस दिन जेनरल-कौंसिलको पत्र लिखा, उस समय तक उसने बेकेरकी मेजी हुई प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया था और इस अस्वीकृतिमें मार्क्सका बड़ा हाथ था।

वकुनिनने श्रव भी श्राशा नहीं छोड़ी श्रीर २२ जूनको उसके संगठनने घोषित किया, कि श्रव मैत्रीको वन्द कर इसके भिन्न-भिन्न विभागोंको इन्टर्नेशनल का विभाग वन जाना चाहिये। जेनेवा-विभाग, जिसका नेता बकुनिन था, इन्टर्नेशनलमें जेनरल-कौंसिलके एकमतसे ले लिया गया। बकुनिनने श्रपनी श्रुत सभाको भी तोड़ देनेकी बात की थी, लेकिन वह किसी न किसी रूपमें मौजूद रही। १८६६ ई० की शरद तक बकुनिन कभी जेनेवा-सरोवर, कभी जेनेवा श्रीर कभी वेवे श्रथवा क्लारेन्समें रहता था। फ्रेंच इतालियन भाषी स्विस कमकरोंपर उसका काफी प्रभाव था। जनवरी १८६६ में बकुनिनकी प्रेरणांसे उन्होंने एक संयुक्त फेडरल कौंसिल बनाई श्रीर उसकी श्रोरसे काफी प्रभावशाली "ला एगालेते" (समानता) नामक एक साप्ताहिक निकाला, जिसमें बकुनिन, वेकेर, एकेरियसं, बर्लिन तथा इन्टर्नेशनलके दूसरे प्रमुख सदस्थोंके लेख निकला करते थे।

४- चौथी कांग्रेस (१८६६ ई०) इन्टर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस ५ श्रीर ६ सितम्बर (१८६६ ई०) को

बाजेलमें * हुई, बिसमें इन्टर्नेशनलके पाँचवे वर्षके कामोका लेखा-जोखा लिया गया। इस समय भी युरोपमें कमकरोंका वर्ग-संवर्ष चल रहा था, इन्टर्नेशनलकी शक्ति और प्रभाव कम होनेकी जगह बढ़ता जा रहा था। बूर्व्वाजी और उनकी सरकारोने अब इन्टर्नेशनलको खूनी पंजेसे दबानेका निश्चय कर लिया। इंगलैंड मे भी इड़ताली खनको श्रीर सेनाके साथ खुनी मुठमेड़ हुई। ल्वारकी खानवाले इलाकेमे शरावी सिपाहियोंने रिकामेरीके । पास खूनकी होली खेली और बीस श्रादिमयोको मार डाला, जिनमें दो स्त्रियाँ श्रीर एक बच्चा भी था। वेल्जियम की सरकार इंगलैंडकीसे भी त्रागे थी, निसके नारेमें मार्क्सने लिखा था : "पृथ्वी श्रपनी कच्चापर श्रपनी वार्षिक यात्राको उससे श्रिषक निश्चिततापूर्वक नहीं पूरा करती, जितना कि वेल्जियम सरकार अपने कमकरोके वार्षिक खूनकी होलीको।" "१८६८ ई॰ के वसन्तमें नये मताधिकारके अनुसार इंगलैंडमें प्रथम चुनाव हुआ, लेकिन थैलीशाहोके सामने एक मी कमकर पार्लियामेन्टके लिये नहीं चुना गया। ग्लेड्स्टोनका मंत्रिमराडल फिर शासनाल्ड हुत्रा, लेकिन उसके दलने निर्वाचनके समयकी वातोंका कुछ भी न ख्याल कर आयलैंडके साथ समभौता या मजदूरोकी शिकायतोको दूर करनेकी कोई कोशिश नहीं की। १८६६ ई० में वर्मियममें इंगलैंडकी मजदूर-समात्रों (ट्रेडयूनियनो) की नार्षिक काग्रेस हुई, जिसमें अपील की गई, कि ब्रिटेनके सभी मजूर-संगठनोंको इन्टनेंशनलके साथ सम्बन्धित हो जाना चाहिये, यह इसीलिये नहीं, कि वह मजूर-वर्गके हितोंका समर्थक है, बल्कि इसलिये भी कि इन्टर्नेशनलके सिद्धान्त ही दुनियाके लोगोंके बीच स्थायी शान्ति कायम कर सकते हैं। १८३६ ई० की गर्मियोमें इंगलैंड श्रीर युक्तराष्ट्र ऋमेरिकामे लढाई छिड़नेका डर पैदा हो गया था । मार्क्वने उस समय युक्तराष्ट्र की राष्ट्रीय मजदूर संघके लिये एक ऋमिमाषण तैयार किया, जिसमें लिखा था: "युद्धका रोकना अन यह तुम्हारी नारी है। युद्धका अनिवार्य परिशाम होगा अटलान्टिकके दोनो किनारोंके बढते हुये मजदूर-वर्गीय आन्दोलनोका पीछे हटना।" फ्रासमें मजदूर-वर्गकी गतिविधिसे परेशान हो पुलिस इन्टनेशनलके नथे समर्थकोका दमन कर रही थी। जर्मनीमे अवस्था कुछ भिन्न थी, क्योंकि राष्ट्रीय

^{*} Basie, † Ricamarie.

प्रश्नको लेकर वहाँ मन्त्रोंमें फूट पड़ गई थी। १८६६ ई० के बाद आस्ट्रिया-दुगरीमें मन्त्र-आन्दोलन जड़ पकड़ता आगे भी वढ़ रहा था।

सब मिलाकर बड़ी अच्छी स्थिति थी. जब कि सितम्बरके प्रथम सप्ताहमें वाजेलमें इन्टर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस वैठी। उसमें ७८ प्रतिनिधि नौ देशोंसे श्राये ये । जेनरल-कौंसिलके चार प्रतिनिधि थे-एकेरियसक यंग† एपलगर्थ‡ श्रीर लुकफूट। फांसके २६, वेल्जियमके ५, जर्मनीके १२, श्रास्ट्रियाके २, स्त्रीजलैंडके २३, इतालीके ३, स्पेनके ४ ऋौर युक्तराष्ट्रके १ प्रतिनिधि ये। लीवक्नेस्ट ग्रौर मोजेज हेस मी ये, ग्रौर वकुनिन भी। समापतिका पद वुंगने र्सेमाला । कांग्रेसके सामने सबसे बढ़ी सैद्वानिक समस्या थी जमीनकी समिनित मिलक्षियत, तथा दायभागके अधिकारका प्रश्न । पहला प्रस्ताव ब्रुशेल्स-कांग्रेसने ंती कर लिया था, इसलिये उसके बारेमें बहुत बहस-मुवाहिसेकी जरूरत नहीं पद्में। २४ वोटोंसे कांग्रेसने निश्चय किया, कि समाजको भूमिपर सम्मिलित मिलकियत कायम करनेका अधिकार है, और ५३ वोटोंसे यह भी तै किया कि -सारे समाजके हितके लिये ऐसी कार्रवाईकी जरूरत है। दायभागके उत्तराधिकार-के बारेमें जेनरल-कौंक्लिने एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें मार्क्सी समर्थ ले जनीका थोड़ेसे शन्दोंमें वहूत से मार्वोको प्रकट करनेका चमत्कार देखनेमें श्राता है: दूसरे सारे वूर्जा-विवानोंकी तरह उत्तराधिकारके विधान (कानून) भी उत्पादन-साधनोंमें निजी सम्पत्ति पर श्राधारित समाजके श्राधिक संगठनक कानृती परिणाम है। उत्तराधिकार-सम्बन्धी कानृत कारण नहीं विल्क कार्य-ह्यार्थिक संगटनोंका कान्ती परियाम है। दाखेंको दायभागमें पानेका श्रिधि-कार दासताका कारण नहीं या, विलक दासता दासोंके दायभागमें पानेके श्रिषिकारका कारण थी। यदि उत्पादन-साधनोंको निजी सम्पत्तिकी जगह संम्मिलित सम्पत्ति बना दिया जाय, तो सामाजिक महत्वके तौरपर दायमागका ऋषिकार लुप्त हो जायगा, क्योंकि तन ग्रादमी ऋपने उत्तराधिकारियोंको उतना ही दायमागके तौरपर छोड़ सकेगा, जो कि श्रपने जीवनमें उसके पास है।

[#] Eccarius. † Gung. ‡ Appleanth.

इसिलिये मन्त्र-वर्गका प्रधान लच्न्य है उन संस्थान्नोंको तोड देना, जो कि बहुतों के अमके फलको लूटनेके लिये ऋारिक शिक्तिको चन्द हायोमें देती हैं। किन्द्र, उससे पहले सामाजिक क्रांतिके ऋारम्म करनेके तौरपर दायमागके कान्त्नको उठा देनेकी घोषणा उसी तरह फज्लकी होगी, जिस तरह खरीदारो श्रीर विकेताश्रोंके बीच शर्वनामेके कान्त्नको तब उठा देनेकी घोषणा, जब कि आजकलकी माल-विनिमयकी व्यवस्था जारी है। ऐसी घोषणा सिद्धान्तमे गलत श्रीर व्यवहारमें प्रतिक्रियाकारी होगी। दायमागके श्रीधकारमे तभी फेर-फार उसी संक्रान्ति कालमें किया जा सकता है, जब कि एक श्रीर समाजका वर्तमान श्राधिक श्राघार हटाया नहीं गया है, श्रीर दूसरी श्रीर समाजको पूरी तौरसे स्पान्तरित करनेके लिये आवश्यक कार्रवाइयोंको पूरा करनेके वास्ते मजूर वर्गके पास काफी शक्ति श्रा चुकी है। संक्रान्तिकालीन कार्रवाईके तौरपर जेनरल-कौसिल मृत्यु करके बढाने श्रीर दायमागके श्रिधकारोंको सीमित करनेको परिवारके दायमागके श्रिधकारसे श्रलग सिफारिश करती है।

लेकिन, जिस कमीशनको यह सवाल सपुर्द किया गया था, उसने दायमाग श्राधिकारके उठा देनेको मजूर-वर्गकी मौलिक माँग घोषित की। इसका समर्थन बकुनिनने किया। वस्तुतः बकुनिनका ही यह प्रस्ताव भी था। लेकिन, श्रन्तिम फैसला इसके वारेमें कुछ नहीं हो सका, क्योंकि उसके पच्चमे काफी प्रतिनिष्ठित नहीं थे। तो भी इस प्रस्तावके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये गये थे, उनसे भूमि-सम्बन्धी प्रस्तावका प्रमाव भिन्न-भिन्न देशोमें देखा गया। प्रस्तावको फ्रेंच, इतालियन, स्पेनिश, पोलिश श्रीर रूपी माषाश्रोमें श्रनुवादित करके खूव वाँटा गया। लन्दनमें "भूमि श्रीर श्रम-संघकी" एक बढ़ी समामें स्थापना करते नारा लगाया गया "भूमि लोगोंके लिये!"

मार्क्स बाजेल-काग्रेसकी कार्रवाइयोंसे बहुत संतुष्ट हुये। उस समय वह अपनी बड़ी लड़की जेनीके साथ स्वास्थ्य-सुधारके लिये जर्मनीमें यात्रा कर रहे थे। २५ सितम्बरको उन्होंने हनोवरसे श्रपनी लड़की लौराको लिखा: "मुक्ते यह जानपर प्रसन्नता हुई, किंरुवाजेल-काग्रेस समाप्त हो गई। उसके निष्कर्ष अपेसाइत श्रक्ते हैं।" वकुनिन मी काग्रेसकी कार्रवाईसे मार्क्स श्रिक

निराश नहीं हुन्ना । कहा जाता है, वकुनिन ग्रपने दायभागके उत्तराधिकारवाले प्रस्ताव द्वारा मार्क्सको हराना चाहता था, लेकिन यह शत समसामयिक ग्रिमि- लेखोंसे गलत सावित होती है।

वक्किनिनकी आर्थिक अवस्था खराव हो गई थी। उसकी बीबीको बच्चा होनेवाला था। उसने लोकार्नोमें वसकर वहाँसे मार्क्यके "कपिटाल" की प्रथम जिल्दका रूरीमें अनुवाद करनेका निश्चय किया। उसके एक मक्तने एक रूसी प्रकाशकको भी ठीक कर लिया और अनुवादके परिश्रमिकके तौरपर निश्चय किये गये बारह सौ लवलोंमेंसे तीन सौ बक्किननके पास पहुँच भी गये। बक्किननको रूसी एजेन्ट कहनेवालोंको ऋव भी कमी नहीं थी, जिसका जवाव वह भी "जर्मन यहदी" कहकर देता था, यदापि लाजेल श्रीर मार्क्को वह श्रपनाद वतलाता था। रुसी क्रान्तिकारी विचारक हेर्चेन बक्तनिनके पद्ममें था, लेकिन वह यह पसन्द नहीं करता था, कि छोटे-मोटे "जर्मन यहदियों" पर श्राक्रमण किया जाय ग्रीर मार्क्षको ग्रळता रक्ता जाय । २८ ग्रक्तूबरको बकुनिनने इसका कारण वतनाया, कि मैं क्यों मार्क्सपर ब्याक्रमण करनेसे ब्रापनेको रोकता हैं: "बाहे कितनीही बरी चालें उसने हमारे साथ चलीं कमसे कम में समाज-वादके लिये उसकी जबर्दस्त सेवाछोंकी उपेसा नहीं कर सकता. जिसे कि उसने ग्रन्तेंद्रस्टि, शक्ति ग्रीर निःस्वार्थ मायसे प्रायः पचीस वर्षों तक किया है। इसमें निस्सन्देह वह हम सबसे ग्रागे बटा-चढा है। वह इन्टर्नेशनलका एक संस्थानक, विलक मुख्य संस्थापक था और मेरी दृष्टिमें यह एक ऐसी जबर्दस्त सेना है, निसको में सदा स्वीकार करूँगा, चाहे मार्क्सने हमारे खिलाफ कुंछ भी किया हो।" लेकिन बकुनिनका मार्क्क ऊपर सीधे आक्रमण न करनेकी एक कारण यह भी था, कि इन्टर्नेशनलके तीन-चौर्याई लोग मार्क्सके कपर ग्राचेन करनेपर उसके विरोधी हो जाते।

वकुनिन और मार्क्क अनुयायियोंका क्तगड़ा बढ़ता ही गया। १८ फर्वरी (१८७० ई०) के एक पत्रमें बकुनिनपर कुछ पैसे-कौड़ीके मामलेमें सन्देह प्रकट किया गया, जिसका सनृत बकुनिनके एक अनुयायी कतकोफके आधारपर दिया गया या। कतकोफ अपनी जवानीमें बकुनिनका अनुयायी रह चुका था, लेकिन पीछे प्रतिक्रियावादियों के दलमें मिल गया। मार्क्सने इस आहोपको ठीक न कहकर लिखा: "पैसा उधार लेकर काम चलाना रूसियों में साधारण सी बात है।" बकुनिनका विरोध यद्यपि वढ़ रहा था, लेकिन मार्क्सको इसका सन्तोप था, कि इन्टर्नेशनल अब रूसी क्रान्तिकारियों में जड़ पकड़ रही है—यह भी उल्लेखनीय बात है, कि इसी समय (१८७० ई० में) लेनिनने जन्म लिया था, जिन्हें कि मार्क्सका सबसे योग्य उत्तराधिकारी होनेका सीमान्य प्राप्त होनेवाला था।

इसी साल ४ अप्रैलको ला शो-दे-फोंद् में फोंच-इतालियनमाधी स्विस फेडरेशनकी द्वितीय वार्षिक कांग्रेस हुई। बकुनिन मैत्रीकी जेनेवा शाखाने इन्टर्नेशनलमें सन्वन्धित था। उसने कांग्रेससे मॉग की, कि फेडरेशन इन्टर्नेश-नलको स्वीकार करे और इमें भी फेडरेशनमें दो प्रतिनिधि मेजनेकी आजा दी जाय। ऊतिनने इसके बारण कांग्रेसमें फूट पढ़ गई। बकुनिनके पक्तें १८ बोट और विपत्तमें २१ आये। अल्पमत पक्ते निर्णयको स्वीकार नहीं किया, विसके कारण दो कांग्रेस वन गई।

४. श्रायलैंड और फ्रांस

१८६९-७० ई० के जाड़ोंमें फिर मार्क्सका स्वास्थ्य खराव हो गया, लेकिन स्त्रव लगातार पीछा करनेवाली आर्थिक कठिनाह्यों नहीं रह गई थीं। ३० जून (१८६९) को एंगेल्सने "सौरे व्यवसाय" से छुट्टी ले ली थीं, इससे छः महीने पहले उन्होंने मार्क्स पूछा था, कि ३५० पाँड वार्षिक के काम चल जायेगा या नहीं। एंगेल्सने अपने फर्मके साथ ऐसा बंदोबल्स किया था, कि जिसमें पाँच-छः वघाँ तक यह रमक मार्क्सको बराबर मिलती रहे। एंगेल्सने इस प्रवन्यसे पाँच-छ ही वर्ष नहीं, बल्कि अपने अन्तिम समय तकके लिये मार्क्स आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो गई थीं। इस समय दोनो मित्रोका ध्यान आइरिश-समत्यामें लगा हुआ था। एंगेल्सने आइरिश-आन्दोलनके ऐतिहासिक।विकासका

A La Chauxde Fords † Utin

विस्तारपूर्वक ग्रध्ययन किया था। मार्क्कने इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिलपर जोर दिया था, कि वह आइरिश-आन्दोलनका समर्थन करे, अनियमित तौरसे दंडित सिनिफ्नोंकी आम माफीकी माँग करे, जिनके साथ कि जेलमें बहुत दुरा वर्ताव किया जा रहा था। जेनरल-भौतिलने ब्राहरिश जनताकी श्रपने ऋघि-कारोंके लिये लड़नेमें हदता, उदारता और हिम्मतकी सराहना की। उसने ग्लेडस्टोनकी नीतिकी निन्दा की, जिसने कि निर्वाचनके दिये हुये वचनकी तोड़कर आइरिश देशमक्तोंको आम माभी देनेसे इन्कार कर दिया. और उसके लिये ऐसी शर्ते पेश कीं, जो कि आयर्लेंडवालोंके लिये अपमानजनक थीं। ग्राइरिश-ग्रान्दोलनेमें मार्क्सी सबसे बड़ी लड़की जेनी भी भाग ले रही थी। उसकी सफलताको देखकर मार्क्को बड़ी प्रसन्नता हुई । इंगलिश पत्र त्रायलैंड-वासियोंके ऊपर होते वर्वरतापूर्ण अत्याचारों पर भीन रहना चाहते थे। जेनी मार्क्सने बन्दी सिनफिनोंके ऊपर होते अत्याचारों का वर्णन कई लेखोंमें लिख-कर विलियमके नामसे रोकफोर्टके पत्र "मार्सेड" में छपाया-१८५० वाली शदाब्दीमें मार्क्सने भी विलियमके नामसे लेख लिखे थे। जेनीके लेख बढ़े जोरदार थे। वह फ्रेंच पत्रमें निकलकर यूरोपमें इंगलैंडकी भारी बदनामी कर रहे थे। इसपर ग्लेड्स्टोनको मजबूर हो सिनफिनोंको जेलसे मुक्त करना पड़ा। "मार्रेड" नकली बोनापार्तका जबर्दस्त विरोधी था। बोनापार्त इन्टर्नेशनलके मेम्बरोंचे बहुत नाराज था। उसने बम-षडयन्त्रमें भाग लेनेका दोष लगाकर उन्हें फॅंसाना चाहा । लेकिन षड्यन्त्रको साबित करना जब श्रसम्भव हो गया, तो वह दोष तो हटा लिया गया । पुलिसने इन्टर्नेशनलके सेम्बरोंके पास एक गुप्त-संकेत वाले कागज-पत्र पकड़नेकी घोषणा की। तामकार शार्ते† ने इस ग्रदालतके सामने ग्रपने साथियोंकी श्रोरसे जबर्दस्त सफाई दी। तब मी ध जुलाईको नोनापार्वी सरकार एक सालके जेल और एक ।साल नागरिक अधि-कारसे वंचित करनेका दंड दिलानेमें सफल हुई, यद्यपि उसके थोड़े ही समय बाद वह सरकार सदाके लिये खतम हो गई। शातेंने पीछे पेरिस-कम्यूनके मेम्बरके तौरपर बहुत काम किया।

[#] Marseillaiz † Chatuin

श्रध्याय १७

पेरिस कम्यून

१. सेदाँकी पराजय (१८७० ई०)

१८४८ ई० की जर्मन-क्रान्तिके असफल होनेके बाद प्रशियन सरकारने जनताकी शिक्तको दूसरी त्रोर करनेके लिये सभी जर्मनोंकी एकताके त्रान्दोलन को बढ़ाना शुरू किया। वस्तुतः यह एकता का प्रयत्न नहीं, बल्कि सभी जर्मन राज्योंपर प्रशियाका प्रमुत्व कायम करना था। जहाँ तक सारे जर्मन माषा-माषियोंकी एकताका सवाल है, इसमे मार्क्स, श्रीर एंगेल्स, लाजेल श्रीर स्वाइट-जेर, लीबवनेस्ट श्रीर वेचल पूरी तौरसे सहमत थे। लेकिन कोनिग्रात्जमेश-श्रास्ट्रियाको हराकर प्रशिया जिस जबर्दस्त शक्तिको प्राप्त कर लिया या उसे वह श्रव प्रतिक्रान्तिके लिये इस्तेमाल करनेको तैयार थी। उसे देखकर उन्हें यह मानना पढ़ा, कि ऐसी स्थितिमें राष्ट्रीय क्रान्तिकी सम्मावना नहीं है। उन्होंने यह भी समभ्रा कि प्रशियाकी इस सफलतासे वर्ग-संघर्षके लिये स्थिति श्रीर श्रमुकूल होगी, इसलिये मार्क्स श्रीर एंगेल्स, तथा लाजेलके उत्तरा-धिकारी श्वाइटजेरने "उत्तर-जर्मन-लीग" को स्वीकार किया, जिसे कि प्रशियानने स्थापित किया था। लेकिन, लीवक्नेस्ट श्रीर वेवेल उत्तर-जर्मन लीगकी श्रपेत्वा वृहत्तर जर्मनीके ही समर्थक रहे, १८६६ ई० के बाद भी उत्तर-जर्मन लीगके ध्वसके लिये काम कर रहे थे।

इस निर्ण्यके बाद १८७० ई० मे फास श्रीर प्रशियाके बीच होनेवाली लड़ाईके प्रति भी उनका दृष्टिकोण निश्चित हो चुका था। उन्होंने इस युद्धके दुरन्तके उन कारणोंके बारेमे अपनी कोई राय नहीं दी, जो कि थे: बिस्मार्क स्पेनेके सिंहासनपर एक होहेनजोलेर्न राजकुमारको बैठाना चाहता था श्रीर बोनापार्न श्रपने वंशके राजकुमारको श्रथवा बोनापार्त जर्मनीके खिलाफ फास-श्रास्ट्रिया-इतालीका एक सयुक्त मोर्चा बनाना चाहता था। बोनापार्त श्रास्ट्रियाको

^{*} Koniggratz

त्रपनी ग्रोर खींचकर जर्मनीकी राष्ट्रीय एकताके विरुद्ध काम कर रहा था, इस-लिये वह मानते ये कि जर्मनी जो कार्रवाई कर रही है, वह अपनी प्रतिरचाके लिये है। २३ जुलाईको इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिलकी अोरसे प्रकाशित होने-चाले अभिभाषणको मार्क्सने तैयार किया या, जिसमें कि घोषित किया गया कि १८७० ई० की युद्ध-योजना १८५१ ई० के कुप-द-एता (राजविराजीका) एक न्त्रधरा हम्रा रूप है, लेकिन यह द्वितीय साम्राज्य (नकली बोनापार्ती वंश) के लिये मौतकी रस्सी होगी, जिससे वह उसी तरह खतम होगा, जिस तरह कि उनका श्रारम्भ हुआ । तो भी यह भूलना नहीं चाहिये, कि यह युरोपकी सरकारें -तथा शासक-वर्ग ही थे जिन्होंने कि बोनापार्तके एक पुनः स्थापित साम्राज्यके लिये अठारह वर्षों तक पाशविक प्रहसन खेलना सम्भव कर दिया। जहाँ तक जर्मनीका सम्बन्ध है, यह युद्ध प्रतिरच्चात्मक है, लेकिन जर्मनीको इस स्थितिमें डालने में किसने मजबूर किया ? किसने छुई बोनापार्तको जर्मनीसे युद्ध करनेके लायक बनाया प्रशियाने कोनिग्रातज्ञ के युद्धसे पहले विस्मार्कने बोनापार्वके साथ मिलकर पहुर्यंत्र रचा और कोनियातूनके वाद विस्मार्कने कठोर दासतामें पड़े फ्रांसके विरुद्ध स्वतन्त्र जर्मनीकी स्थापना नहीं वृहिक द्वितीय साम्राज्यकी सारी चृणित चालों श्रीर धोखा-घड़ियोंको इस तरह इस्तेमाल किया, कि वोनापार्तीय शासन-व्यवस्था राइनके दोनों किनारोंपर स्थापित हो गई | इसका परिस्थाम युद्ध छोड़कर श्रीर क्या हो सकता था ! यदि जर्मन मजदूर-वर्ग वर्तमान युद्धके पक्के प्रतिरत्वात्मक रूपको छोड़कर उसे फ्रेंच जनताके विरुद्ध युद्धके रूपमें परिखत होने देता है, तो विजय और पराजय दोनों एक समान खतरनाक होगी। तयाकथित स्वतन्त्रताके लिये युद्धोंके कारण जर्मनीकी भोगी सारी तकलीफें ग्रौर दु:ख ग्रीर भी जनर्दस्त रूपमें बढ़ेंगी। इसमें मार्क्सने यह भी लिखा था, कि बोनागर्ती त्राक्रमणुके विरुद्ध अपनी रत्नाके लिये अपने अधिकारके तौरपर जर्मन जो भी सहानुभृति पानेकी श्राशा रखते हैं, वह उन्हें नहीं मिल सकेगी, यदि उन्होंने प्रशियन सरकारको कसाकों (जारशाही सैनिकों) से सहायता मांगनेका श्रवसर दिया।

[#] Koniggratz

इस श्रिमिमाषग्रसे दो दिन पहले २१ जुलाईको उत्तर-जर्मन राइखस्टाग (पार्लियामेन्ट) ने बारह करोड डालर युद्धके खर्चके लिये स्वीकार किये। लाजेलके श्रमुयायियोने पार्लियामेन्टमें इसके पत्तमें बोट दिया, लेकिन लीव-चनेस्ट श्रीर वेवेलने किसी श्रोर बोट नहीं दिया। श्रपने लोगोंमें मी कितनोने उनके इस श्राचरग्रको पसन्द नहीं किया।

प्रशियाकी सेनाश्चोंका प्रतिरोध बोनापार्तकी सेना नहीं कर सकी, श्रीर सेदॉकी लडाईमें उसकी घोर पराजय हुई। लुई बॉनापार्त बन्दी बना श्रीर दितीय साम्राज्य ध्वस्त हो गया । पैरिसमें वृज्वी गर्गराज्यकी घोषग्। हुई । पैरिसके पहलेके देपुतियो (पार्लियामेन्ट सदस्यों) ने गग्धराज्यकी बागडोर श्रपने हाथमें त्ते अपनेको राष्ट्रीय प्रतिरच्चा सरकार घोषित किया। जर्मनोंके लिये अब यह लडाई राष्ट्रीय प्रतिरत्नाका युद्ध नहीं रह गया । प्रशियाके राजाने उत्तर-जर्मन-लीगके नेताके तौरपर अनेक बार घोषित किया था, कि हम फ्रेंच जनताके विरुद्ध नहीं, बल्फि फ्रेंच सम्राट्की सरकारके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। पैरिसकी नई सरकार जर्मनीको च्विपूर्ति देनेके लिये तैयार थी, लेकिन विस्मार्क पैसेसे सन्तुष्ट नहीं या, वह तो फ्रासकी भूमि अलसेस श्रीर लोरेनको चाहता था. जिसके लिये उसने युद्धको जारी रखना जरूरी समभा । इन्टर्नेशनलने वेकार ही इतने दिनों तक प्रयत्न नहीं किया । उसका प्रमाव कमकर जनतापर होना जरूरी था। ५ सितम्बरको बुन्वविक कमेटीने मजदूर-जनताको फ्रोच गण्राज्यके साथ सम्मान सहित शान्तिके पद्ममे तथा अलसेस और लोरनेके हडपनेके विरुद्ध प्रद-र्शन करनेकी अपील की। इस अपीलमें कमेटीके नाम लिखे मार्क्षके पत्रका कुछ श्रश भी उद्धत किया गया था। श्रापीलपर दस्तखत करनेवाले सैनिक श्रिय-कारियों द्वारा गिरफ्तार हो वेडी डालकर ६ सितम्बरको लोल्बेनके किलेम पहॅ-चाये गये । योहान याकोवी को भी राजवन्दी बनाकर वहीं भेज दिया ग्रना, क्योंकि उसने कोनिस्तवेगमें फ्रेच भूमागके हृद्धपनेका विरोध किया था: "कुछ टिनो पहले हम लोग प्रतिरत्तात्मक युद्ध लड़ रहे थे, अपनी प्रिय पितृभूमिके लिये धर्मयुद्ध लडाई कर रहे थे, लेकिन आज यह विजयका युद्ध यूरोपमें जर्मनिक जातियोंकी सर्वप्रसता स्थापित करनेका युद्ध है।" प्रशियाके सैनिक

अधिकारियोंने चारों श्रोर अत्याचार श्रीर दमनकाः राज्य स्थापित कर दिया। जिस दिन बुन्सविक कमेटीके सेम्बरोंको जर्मनीमें गिरफ्तार किया गया, उसी दिन इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौसिलने मार्क्स ग्रीर कुछ ग्रंशमें एंगेल्स द्वारा तैयार किये श्रिमिमाष्णुको प्रकाशित किया, जिसमें प्रशियाकी श्रमुचित महत्वा-कांचा श्रीर देश-विजयकी भावनाकी सख्त निन्दा की गई। प्रशियाका दावा था कि अल्सेस और लोरेन पराने समयमें जर्मन साम्राज्यके अंग थे। इसपर श्रमिमाष्ण्ने लिखा था: "यदि प्राने ऐतिहाधिक श्रधिकारीके साथ यूरोपके नक्शेको फिरसे बनाया जाय, तो हमें यह न भूलना चाहिये कि जहाँ तक कि उसके प्रशियाके भूभागका सम्बन्ध है ब्रांडेनवर्गका निर्वाचक (शासक) किसी समय पोलिश गग्राज्यका सामन्त था।" ग्रामिभाषणमें उन लोगोंका भी सुँह-तोड़ जवाब दिया गया था, जो कहते थे कि प्रशियाकी भौतिक गारंटीके लिये श्रलसेस श्रीर लोरेनका हमारे हाथमें रहना श्रावश्यक है। एंगेल्सने सैनिक हिन्दि इसपर विवेचना करते <u>ह</u>ुये वतलाया था, कि यदि राष्ट्रोंके भीतर सीमार्त्रों के निर्धारित करनेमें सैनिक सुमीतेका ख्याल रक्खा गया. श्रीर इस सिद्धान्त-को मान लिया गया, तो श्रास्टियाको वैनिसके प्रदेश तथा मिनसियों रेखा * तकको लेनेका अधिकार होगा और फ्रांसको पेरिसकी रत्नाके लिये राइन नदीकी माँग करनेका हक होगा। पैरिस को निश्चय ही उत्तर-पश्चिमसे श्राकमण होनेका उससे कहीं ज्यादा खतरा है. जितना कि वर्लिनको दक्तिण-पश्चिमसे ! श्रगर सैनिक ख्यालसे राष्ट्रीय सीमान्त निर्घारित किये जाने लगे, तो भिन्न-भिन्न दावोंका ग्रन्त नहीं होगा, क्योंकि हरेक सैनिक स्थिति ग्रवश्य कहीं पर कमजोर होती है, श्रीर उसके लिये श्रीर अधिक भूभागको अपनेमें मिलाकर सदा मजबूत करनेकी इच्छा की जा सकती है। अन्तमें, इस तरीकेसे स्थापित की गई सीमार्ये कभी अन्तिम नहीं हो सकतीं, क्योंकि उन्हें विजेताओं द्वारा पराजितोंपर जनर्रस्ती लादा जायगा, श्रीर इस प्रकार वह नये युद्धोंका बीज वोयंगी।"

त्र्राभिमाषण्मं फ्रांसके बारिमे लिखते हुये कहा गया था, कि गण्राज्यने

^{*} Mincio Line

विंहासनको फेका नही, विल्क केवल खाली उसकी पीठको अपने हाथमें ले लिया है। सामाजिक सफलताके तौरपर नहीं, बिल्क राष्ट्रीय प्रतिरक्ताके उपायके तौरपर घोषित किया गया है। गण्राज्य एक अस्थायी सरकारके हाथमें है, जिसमें दुःख्यात ओलियाँ-पद्मी और कितने ही बुद्धा गण्यादी सम्मिलित हैं। उनमें वह लोग भी मौजूद हैं, जिन्होंने कि १८४८ के जूनके विद्रोहका विरोध किया था। विभागोका वंटवारा भी बुरी तरहसे हुआ है। सेना और पुलिस जैसे महत्वपूर्ण विभाग ओलियानियोके हाथ हैं और बात बनानेवाले विभाग नामधारी गण्यादियोके हाथमें। नई सरकारने जो पहले कदम उठाये हैं, उनसे साफ है कि उसने द्वितीय साम्राज्यसे उसकी ध्वंसराशिको नहीं, बल्कि उसके मजदूर-कर्गके प्रति भयको दायमागमे पाया है।

इस प्रकार फ्रेंच मजदूर-वर्ग अत्यन्त कठिन स्थितिमें हैं। शत्रुके दरवाजों पर होनेके समय नई सरकारको उखाइ फेंकना दुस्साहसपूर्ण मूर्खता होगी। फ्रेंच कमकरोंको अपने नागरिकताके कर्त्तंच्य पालन करने होंगे, लेकिन उन्हें १७६२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंको अपनेपर काबू नहीं करने देना चाहिये, चोखा नहीं खाना चाहिये, जैसा कि फ्रेंच किसानोने प्रथम साम्राज्यकी राष्ट्रीय स्मृतियोंमें घोखा खाया था। उन्हें अतीतको दोहराना नहीं, विक मविष्यका निर्माण करना है। उन्हें धैर्य और इदतापूर्वक गण्यराज्यने जो स्वतन्त्रता प्रदान की है, उसके साधनोंको अपने वर्गको अच्छी तरह संगठन करनेमें लगाना चाहिये। उन्हें फासके पुनरुद्धार और हमारे संयुक्तकरणीय—सर्वहाराकी मुक्ति—के लिये भीम जैसी शक्ति प्रदान करना होगा। गण्यराज्यका माग्य उनकी शक्ति और बुद्धिपर निर्मर करता है।

इस अभिमाषण्ने फ्रेंच कमकरोमें एक नया जोश पैदा किया। उन्होंने अस्थायी सरकारके विरुद्ध संघर्ष करनेका ख्याल छोड अपने नागरिक के कर्त्तंच्य पालन किये विशेषकर राष्ट्रीय गारदके रूपमें संगठित पेरिसके सर्वहारोने फ्रेंच राजधानीकी वीरतापूर्ण प्रतिरक्ताके लिए मुख्य तौरसे माग लिया। १७६२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंसे उन्होंने अपनेको अन्धा नहीं होने दिया और वर्गके तौरपर बड़ी तत्परतासे अपना संगठन किया। जर्मन कमकरोंने भी अपने करणीयको

पूरा करने में कम योग्यताका परिचय नहीं दिया। दमन और जबर्दस्त खतरेकी पर्वाह न करके लाजेली और आइजेनाख दोनों कमकर-समूहोंने फ्रेंच गण्राज्यसे सम्मानपूर्ण सन्ध करनेकी माँग की, जब दिसम्बरमें उत्तर-जर्मन-पार्लियामेन्ट फिर युद्धके नये खर्चपर बोट देनेके लिये इकट्ठा हुई, तो दोनों समूहोंके प्रतिनिधियोंने अपना वोट खिलाफ दिया। लीबक्नेख्ट और वेवेलने विशेष तौरसे बड़ी निर्भयताका परिचय दिया, जिसके कारण पार्लियामेन्टके सत्रके खतम होने-पर दोनोंको भारी देशद्रोहके मुकदमेमें फँसा दिया गया।

उस सालके जाड़ोंमें मार्क्सके ऊपर फिर कामोंकी भीड़ थी। अगस्त्में डाक्टरोंने उन्हें समुद्रके किनारे मिजवाया था, लेकिन वहाँ उन्हें जन्नदेस्त कामका सामना करके चारपाईपर पड़ा रहना पड़ा । उस महीनेके अन्तमें जब लन्दन लौटे, तो उनके स्वास्थ्यमें बहुत सुधार नहीं हुन्ना था। जेनरल-कौंसिलके म्रिधि-कांश लोग पैरिस चले गये थे, इसलिए उसकी अन्तर्राष्ट्रीय लिखा-पढ़ीकी सारी जिम्मेवारी मार्क्सने ऋपने ऊपर ले ली थी। १४ सितम्बरके ऋपने पत्रमें उन्होंने कूगेलमानको लिखा था, कि ३ बजे सबेरेसे पहले मुक्ते चारपाईपर जानेका मौका नहीं मिलता, लेकिन साथ ही यह आशा प्रकट की थी कि एंगेल्स लंदनमें वसनेके लिए त्रा रहे हैं, इसलिये मुक्तें कुछ त्राराम मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं कि मार्क्स त्राशा रखते थे कि फ्रेंच गर्गाराज्य प्रशियाकी विजयके युद्धके साथ सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सकेगी। १३ दिसम्बरको मार्क्सने कूगेलमानको लिखा था: "जान पड़ता है जर्मनीने केवल बोनापार्त, उसके जेनरलों श्रीर उसकी सेनाको ही नहीं बल्कि उसके साथ सारी साम्राज्यवादी व्यवस्थाको भी निगल लिया, जो कि राइनके वृत्तोंवाले देशके हरेक गाँवों श्रीर गढ़ोंमें घर कर रही है।" प्रशियन विजेता जिस तरहका कठोर वर्ताव पराजित फ्रेंच लोगोंके साथ कर रहे थे, उससे बड़ा ज्ञोम हो रहा था। यह ठीक है कि ऋँग्रेजोंने यही काम भारत, जमैका आदिमें किया है, लेकिन फ्रेंच हिन्दू, चीनी या निग्री (हन्शी) नहीं है श्रौर न प्रशियन भगवान्के भेजे श्रॅंग्रेज । यह होहेनजुलेर्न वंशका विचित्र विचार है, कि ऋपनी स्थायी सेनाके हारकर छिन्न-भिन्न हो जानेपर जो लोग श्रपनी मितरज्ञाका प्रयत्न जारी रखते हैं, वह श्रपराधी

हैं।" फ्रेडरिक विलियमको भी यही विचार प्रथम नेपोलियनके युद्धमें सता रहे थे।

विस्मार्कने पेरिसपर बमबारी करनेकी धमकी दी थी, जिसे मार्क्सने ऋठी चाल बतलाई: "सम्भवताके सभी कानूनोंके अनुसार इस तरहकी कार्रवाई पेरिसका बहुत ज्यादा विगाड नहीं कर सकती । मान लो कुछ बाहरके मोर्चे उडा दिये गये, कुछ जगहोपर प्रतिरत्ताकी पंक्ति टूट गई, तो इससे कितना फायदा होगा, जब कि हम जागते हैं कि घिरे हुये लोगोकी सख्या घेरनेवालोसे कहीं श्राधिक है १ पैरिसको पराजित करनेके लिए एक ही वास्तविक उपाय है श्रीर वह है उसे मुखे मारना।" मार्क्स कोई सैनिक विशेषज्ञ नहीं थे, लेकिन पैरिसकी बमबारीके बारेमें जो बात उन्होने कही थी, वही सलाह रूनक छोड़कर विस्मार्कके सभी प्रधान जेनरलोने दी थी। जब बिस्मार्कने बहुत उदारताका नाट्य करते हये कहा कि फ्रेंच सरकार प्रेस श्रीर पार्लियामेन्टमें विचारोको स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करनेमें बाघा डाल रही है, तो मार्न्सने १६ जनवरी १८७१ के "डेली न्यून" में इसे "बर्लिनका व्यंग" कहते हुये वतलाया था, कि पुलिस-राज्य द्वारा गला घटते जर्मनीसे यह त्रावाज निकल रही है: "फ्रांस-त्रीर सीमायसे उसकी सारी ही आशायें अपने लिए खतम नहीं हो चुकी हैं—इस समय केवल श्रपनी ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रवाके लिये नहीं, वल्कि नर्मनी श्रीर युरोपकी स्वतन्त्रताके लिये लड़ रहा है।" सेदॉकी पराजयके बाद अब इस लडाईके बारेमें मार्क्स श्रीर एगेल्सका क्या रख या, यह ऊपरके वाक्यसे मालूम होगा।

२. फाँसमे गृह-युद्ध

२८ जनवरी १८७१ को पैरिसने आ्रात्मसमर्पण किया। विस्मार्क और जूले भावेने† मिलकर आ्रात्मसमर्पणकी शर्तों के वारेमें जो समस्तीता तैयार किया था, उसमें यह साफ तौरसे मंजूर कर लिया गया था, कि पैरिसके राष्ट्रीय गारवको अपने हथियार रखनेका अधिकार होगा। राष्ट्रीय एसेम्बलीका जो निर्वाचन हुआ, उसमें राजवादी-प्रतिगामियोका बहुमत था। उसने पुराने पड्यंत्री थियेरा

^{*} Roon, † Gules Favre. ‡ Thiers.

को गण्राज्यका राष्ट्रपति चुना । श्रव्येस श्रीर लोरेनको हाथसे देने श्रीर पाँच मिलियाईन (श्रव) फांक ल्तिपूर्ति स्वीकार करनेके वाद राष्ट्रीय एसेम्बलीन पैरिसको निःशस्त्र करनेका निश्चय किया, क्योंकि वृच्ची थियेर श्रीर प्रतिक्रियावादी लमीदार हथियारबद्ध पैरिसको क्रांतिसे कम गयङ्कर नहीं समभते थे । १८ मार्चको थियेरने राज्यकी सम्पत्तिका बहाना करके राष्ट्रीय गारदकी तोपोंको जन्त करना चाहा, यद्यपि उन्हें राष्ट्रीय गारदने धिरावेके समय श्रपने खर्चपर ढाला या श्रीर २८ जनवरीको उन्हें राष्ट्रीय गारदकी सम्पत्ति स्वीकार किया गया था । विनये थियेरके प्रयत्नको गारद स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं हुझा, उसके खिलाफ को सेना मेजी गई, वह बिगड़कर जनताकी श्रोर हो गई, श्रीर इस प्रकार ग्रह-युद्ध श्रारम्म हो गया ।

३. कम्यूनकी स्थापना

पैरिस श्रव दो दलोंमें विभक्त हो गई: एक श्रोर थियेरकी सरकार हथियार चमकाने लगी, जिसकी पीठपर जर्मन विजेता थे, श्रीर दूसरी श्रोर पैरिसकी साधारण जनता थी, जिसने २६ मार्च (१८७१ ई०) को कम्यूनके नामसे श्रपनी सरकार स्थापित की। कम्यूनके श्रधीन पैरिसके कमकरोंने श्रद्भुत साहर श्रीर बलिदानका परिचय दिया, जब कि थियेरके वेरसाई दलने कानून श्रीर व्यवस्थाके नामपर कायरतापूर्ण पाशविकता दिखलानेमें हद कर दी।

मार्क्वने १२ श्रप्रेलको क्गेलमानको लिखा था: "कैसा पक्का श्रोर जबर्दस्त उत्साह, कैसी ऐतिहासिक श्रात्मप्रेरणा श्रोर कैसा श्रात्मत्याग ये पैरिसवाले दिखला रहे हैं। छ महीनेकी भुखमरी श्रोर ध्वंसके बाद—जिसको लानेमें प्रकट शबुकी श्रपेचा भीवरी विश्वास्वावियोंका हाथ ज्यादा रहा—वह विद्रोहके लिए उठ खहे हुये, मानो फ्रांस श्रीर चर्मनीके बीच कोई लड़ाई ही नहीं हुई है, मानो प्रशियाकी संगीनें श्रस्तित्व नहीं रखतीं, मानो शबु पैरिसके फाटकोंपर मौजूद नहीं है। इतिहासमें इतने मध्य रूपका कोई उदाहरण नहीं मिलता। श्रगर पैरिसवाले पराजित होंगे, तो श्रपनी 'भलमनसाहत' के कारण ही। जब सेवा श्रीर राष्ट्रीय गारदके प्रतिक्रियाबादी श्रंश मैदान छोड़कर हट गये,

तो उन्हें तुरन्त वेरसाईके ऊपर कूच करना चाहिये था, लेकिन उनकी सदाश-यताकी भावनाने उन्हें ग्रह-युद्ध छेडने नहीं दिया। मानो पैरिसको निहत्था करनेका प्रयत्न करके थियेरने वैसी कोशिश नहीं की। चाहे पैरिसवाले विद्रोहमें पराजित भी हों, तो भी जूनके विद्रोहके बादसे हमारी पार्टीका ख्रत्यन्त यशस्वी काम यही होगा।" तुलना करो इन स्वर्गपर ख्राक्रमण करनेवाले तीनोंकी प्रशिया-जर्मन पवित्र-रोमन-साम्राज्यके मक्त दासोंसे।

मार्क्सने यहाँपर पैरिस कम्यूनको "अपनी पार्टी" का काम बतलाया है। उनका यह कहना श्रयुक्त नहीं था, क्योंकि कम्यूनका मेरदराड पैरिसका मजदूर-वर्ग था, विशेषकर इन्टर्नेशनलके पैरिएके सदस्य कम्यूनके सबसे निर्मय श्रीर योग्य योद्धा थे, यद्यपि कौंसिलमें वह ऋल्पमतमें थे। बूर्जाजी उस समय इंट-नेंशनलके नामसे चिद्रती थी, श्रीर युरोपके सभी देशोमे सभी गड़बढियो श्रीर संघर्षोंका कारण उसे मानती थी। पैरिसके पुलिसके ऋखवारने १६ मार्चको एक पत्र छापकर यह दिखलानेकी कोशिश की, कि इंटर्नेशनलको कम्यूनका श्रेय नहीं देना चाहिये, जिसपर मार्क्सने "टाइम्स" मे पत्र छपनाकर कहा कि वह उक्त पत्र सूठी जालसाजीका नतीजा है। मार्क्स जानते थे कि इटर्नेशनलने कम्यूनको नहीं बनाया, लेकिन उसके आरम्मसे ही इटर्नेशनल उसका अभिन्न श्रंग हो गया था। कम्यूनकी कौंसिलमें ब्लाकेके अनुयायियोका बहुमत था। उसके बाद ब्राल्यमत यद्यपि इन्टर्नेशनलसे संबंध रखता या, लेकिन उसके विचार श्रधिकतर पृथोंके थे, इस प्रकार दोनों ही पद्म मार्क्सके समर्थक नहीं थे। कम्यूनके कालमें मार्क्सने उसके अल्यमतके साथ संबंध कायम रखनेकी कोशिश की । मार्क्यके पत्रके जवाबमें (जो कि लोक-कार्य-विभागके एक प्रति-निधि ल्यूफाकेलके पास सुरिच्चत रहा) २५ अप्रैलको लिखा गया : "मुक्ते वडी खुशी होगी, यदि स्राप यथासम्मव सुक्ते स्रपनी सलाहसे सहायता करे, क्योंकि इस समय लोक-कार्य-विभागमें जो भी सुघार मैं करना चाहूँ, उसके लिए मै पूरी तौरसे जिम्मेवार हूं। तुम्हारे पिछले पत्रकी एक या दो पंक्तियाँ इस बातको बतलानेके लिए काफी थीं, कि तुम सभी लोगों श्रीर सभी कमकरों, खासकर जर्मन कमकरोंको यह समभानेके लिए हर सम्भव तरीकेसे प्रयत्न

करोगे कि पैरिस कम्यूनकी बाबा ब्रादमके जमानेवाली जर्मन-कम्यूनसे कोई समानता नहीं है। जो भी हो, इसके वारेमें हमारे उद्देश्यके लिये आप अच्छी सेवा करेंगे |" मार्क्सने इस पत्रका क्या जवाव, क्या सलाह दी थी, इसका पता नहीं । फ्रेंकल श्रीर वर्लिन द्वारा मेबा गया दूसरा पत्र भी खो गया, लेकिन उसके जवावमें १३ मईको मार्क्सने जो लिखा था, उसके कुछ ग्रंश निम्न प्रकार हैं: "पत्रवाहकसे मैंने वात की है। क्या यह श्रव्छा विचार नहीं होगा, कि वेरसाइके लुच्चे के लिए ऐसे विश्वास्थाती कागजोंको एक सुरिच्चत स्थानमें रख दिया जाय १ इस तरहकी सावधानीकी कार्रवाईसे कोई हानि नहीं हो सकती । त्रोदोंसे एक पत्र मुक्ते मिला है, जिससे मालूम होता है, कि पिछले म्युनिसिपल चुनावमें इंटर्नेशनलके चार मेम्बर विनयी हुए । श्रव मुफस्तिलमें भी घटनायें घटने लगी हैं, बद्यपि दुर्भाग्यसे उनका प्रभाव स्थानीय तथा शान्तिपूर्ण है। हमने द्वनियाके सभी कोनोंमें जहाँपर भी हमारे संबंध हैं—कितने ही सौ पत्र श्रापके वारेमें लिखे हैं। ग्रस्तु, ग्रारम्भसे ही मजूर-वर्ग कम्यूनके पत्तमें है। ग्रॅंग्रेज वूरवां ग्रखवार भी प्रारम्भिक शत्रुताके भावको श्रव छोड़ चुके हैं। समय-समय-पर उनके कालमोंमें एकाथ अनुकूल लेख घुसेड़नेमें मैं सफल हुआ हूँ । सुभे जान पड़ता है, कि कम्यून महत्त्वहीन विवरणों स्त्रीर वैयक्तिक क्रगड़ोंमें अपना बहुत सा समय बरबाद कर रही है। यह स्पष्ट है कि उसमें सर्वहाराके अतिरिक्त दूसरोंके प्रभाव भी काम कर रहे हैं। लेकिन इससे कोई हर्ज नहीं, यदि श्रांतिम समयमें तुम अपनेको ठीकठाक कर सको।" अन्तमें मार्क्सने इस जल्दी कार्रवाई करनेकी ग्रावश्यकतापर यह कहते जोर दिया, कि तीन दिन पहले फ्रांकफोर्ते (माइन तटीय) में जर्मनी श्रीर फ्रांसके बीच सन्धि हो चुकी है। कम्यूनकी . दवा देनेके लिए ग्रव विस्मार्क मी थियेरकी तरह ही उत्सुक है, विशेषकर इस ख्यालसे कि संधिपर हस्ताच् होनेके साथ ही युद्धकी च्वतिपूर्तिकी अदायगीका काम शुरू हो जायगा । मार्क्सने कम्यूनके पास ऋपने सलाहं-मशौरेके पत्रों द्वारा दिये, लेकिन कम्यूनके भीतर सीधे माग लेनेकी इच्छा नहीं प्रकट की, जैसा कि उन्होंने पीछे कम्यूनकी श्रसफलताके. बाद किया । कम्यूनकी जिम्मेवारी उन्होंने # Canaille.

अपने ऊपर ली, लेकिन वह चाहते थे कि स्वयं जा वहाँ अधिनायक बननेका ख्याल छोड़ स्थानीय लोगोंको सब काम अपनी इच्छा अनुसार करने देनअ चाहिये।

२८ मईको कम्यूनके अन्तिम योद्धा मैदानमे गिरे । मार्क्स कम्यूनकी रोज-रोजके जीवनको कितनी बारीकीसे देख रहे थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि उसके दो दिन बाद उन्होने जेनरल-कौंखिलके सामने "फ्रासमें एह-युद्ध" के नामसे एक श्रिमिमाषरा पेश किया। यह मार्क्सकी लेखनीसे निकली ऋत्यन्त चमत्कारिक कृतियोंमे से है, श्रीर श्राज तक कम्यूनके बारेमे जितनी जिल्दें निकली हैं, उसके मीतर यह हीरेकी तरह चमकता है। जंगलके बीचसे अपने पथको ढुँढ निकालना, कूड़े-करकटके बीचसे वास्तविक तत्वको चुनना मान्सँका ही काम था। अमिमाषण्के दो, चौथे और अन्तिम अनुच्छेदमे पहिले घटना-क्रमका वर्णन किया गया है, उसमें उन सच्चाइयोंका प्रकाश किया गया है, जिसके एक वाक्यका भी पीछे कभी खंडन नहीं हुन्ना। पैरिस कम्यूनको मार्क्स मानव-इतिहासकी ऋदितीय घटना मानते थे। इतिहासमे यही पहली बार सर्व-हारोने एक बड़े नगरके शासनको हाथमें लेकर अपनी स्क श्रीर साधनोके अनुसार मीषण शत्रुओसे लडते हुये राज्य चलानेकी कोशिश की यी। २६ मार्चे से २८ मई तक ऋद्मुत वीरता और निःस्वार्थताके साथ इस ऐतिहासिक श्रीर महान शासन तजर्वेको उन्होने कर दिखाया था । भविष्यमें सर्वहाराके स्थायी शासन दुनियाके बहे-बहे देशोंमें कायम होंगे। एक समय सारे विश्वमें वर्गहीन समाज स्थापितं करके सर्वहारा अपना शासन स्थापित करेंगे, लेकिन यही हमेशा कहना पहेगा, कि दो महीनेके पैरिस कम्यूनका शासन इतिहासकी इस प्रकारकी पहली घटना है । अपने इस निबन्ध द्वारा मार्क्सका काम कम्युनके विस्तृत इतिहास लिखनेका नहीं था। वह अपनी लेखनी द्वारा कम्यूनके सम्मानकी प्रतिरत्ना करना चाहते थे, जिसे कि शत्र कलकित करनेका प्रयत्न करते थे। इसे खडनात्मक रूपमें कम्यूनके वकीलके तीरपर मार्क्सने लिखा था। "प्रत्येक कान्तिमें कान्तिके वास्तविक प्रतिनिधियों विल्कुल भिन्न त्राचरणवाले लोग अपनेको दसरोंकी पक्तिमें घुसेड देते हैं। इनमेंसे कुछ पहिलेकी कातियोंके

श्रवशेष हैं, जिनके साथ उनका पूरा गठवंघन है। ऐसे लोग वर्तमान क्रांतिको समक्षनमें श्रसमर्थ हैं, लेकिन श्रपनी प्रिस्ट हिम्मत श्रीर उच्च चित्रवल या शायद केवल परंपराके कारण साधारण जनतापर उनका श्रव भी काफी प्रभाव है। दूसरे ऐसे लोग भी होते हैं, जो कि केवल हल्ला-गुल्ला करनेवाले हैं, जो विद्यमान सरकारके विरुद्ध वर्षों उसी तरहकी वकवास दोहराते रहते हैं। इस प्रकार सूठे दोगोंसे उन्हें प्रथम श्रेणीके क्रांतिकारी होनेकी ख्याति मिल जाती है। १८ मार्चके बाद ऐसे लोग भी वहाँ प्रकट हुये, कितनी ही बार इन्होंने प्रधान पार्ट भी श्रदा किया। जहाँ तक उनसे हो सका, उन्होंने उसी तरह मजूर-वर्गकी वास्तविक कार्रवाईमें बाधा डाली, जैसा कि पहलेकी सारी क्रांतियोंके पूरे विकासमें डाला था।" मार्कने बतलाया कि ये लोग श्रानिवार्यतथा श्रा मौजूद होनेवाली द्धराइयाँ थीं। श्रयर समय मिला होता, तो ऐसे लोगोंसे कम्यूनने छुटी ले ली होती, लेकिन उसे तो केवल दो महीनेका समय मिला था।

त्रभिमाष्यके तीसरे त्रनुन्छेदमें कम्यूनके ऐतिहासिक रूपकी विवेचना की गई थी, जिसका खास महत्व हैं। मार्क्सने सहमदिशिताके साथ कम्यून श्रीर उस जैसी मालूम होनेवाली दूसरी ऐतिहासिक संस्थाओं के वारेमें मध्ययुगीन कम्यूनसे प्रशियाकी पौर (म्युनिस्पिल) व्यवस्थाके मेदको वतलाया: "केवल एक विस्मार्क...केवल (उसके जैसे) मनोमाव पैरिस कम्यूनको १७६१ ई० के पुराने फ्रेंच म्युनिस्पिल संविधानके श्रनुकरण करनेकी चाह रखनेका श्रेय देनेकी बात कह सकते हैं। प्रशियन पौर म्युनिस्पिल-व्यवस्थाने श्रपने पौर शासन-प्रशनमें केवल प्रशियन राज्य-मशीनका एक मामूली सा पुर्जा बननेका रूप लिया था।" मार्क्सने वतलाया कि यह कम्यून वरतुतः एक राजनीतिक दाँचा था, जो कि श्रासानीसे श्रपनेको वढ़ा सकता था, जब कि सभी शासनेक दाँचे केवल मुख्यतः दमनकारी रूप रखते थे: "इसका वास्तविक रहस्य यह था, कि वह सारतः मजूर-वर्गकी सरकार थी श्रीर उत्पादक श्रीर हड़पक वर्गोंके वीचके संपर्धसे पैदा हुई थी। यह श्रान्तिम राजनीतिक दाँचा श्राविष्टृत हुआ था, जिसके श्रपीन श्रमकी श्रार्थिक मुक्ति हो सकती थी।

यद्यपि कम्यूनके प्रोग्राम श्रीर कार्रवाइयाँ विस्तारपूर्वक नहीं तैयार हुई थीं, लेकिन उसने श्रपने दो महीनेके जीवनमें व्यवहारतः राज्य-संचालनके लिये जो कुछ किया था, उत्तके आधारपर मार्क्न व्वलाया, कि कम्यूनने ऐसी नीतिका श्रनुसरण किया, जिसका एक मुख्य उद्देश्य राज्यका ध्वंस था-राज्य श्रपने श्रत्यन्त भ्रष्टाचारपूर्ण (द्वितीय साम्राज्यके) रूपने समाजके शरीरपर एक "जोकसी बृद्धि" से अधिक कुछ नहीं या, जो कि सनाजनी शक्तिको चूसकर उसके स्वतन्त्र विकासमें नाघा डाल रहा था। कन्यूनकी पहली डिग्री (घोषणा) द्वारा स्थायी सेनाको हटाकर उसकी जगह हथियारवन्द जनताको स्थापित किया गया। कम्यूनने ऋव तक सरकारकी केवल हथियार बनी पुलिस-शक्तिको समी राजनीतिक अधिकारोंसे बंचित करके उसे कम्यूनके लिये जवाब्देह श्रीजारके रूपमें परियात कर दिया । पुरानी चरकारके मौतिक हथियार-स्वरूप स्थायी छेना श्रीर पुलिसको खतम करनेके वाद कम्यून उसके दमनके श्राघ्वात्मिक हथियार-पादरियोंकी शक्तिको,तोड़ने चली। उठने ऋपनी घोषणा द्वारा चम्निक मालिक के तौरपर समी चर्चोंको खतम कर उनकी सम्पत्ति र्झान ली। उसने समी शिखा-संस्थात्रोंको जनताके लिये निःशुल्क खोल दिया, त्रौर राज्य तथा चर्चकी स्रोरसे ऐसी संस्थाओं में होनेवाली सारी वाघाओं से हटा दिया । अन्तमें कम्यूनने पुरानी नौकरशाहीको जब-मूलसे खतम कर दिया, जब कि उसने जजों (न्यायाधीशों) सहित सभी सरकारी श्रफ्तरोंको निर्वाचित तथा किसी समय भी वर्जास्त कर देने का नियम बना राज्यके नौकरोंका सर्वाधिक वेतन छ हजार फाक (वार्धिक) निश्चित कर दिया। कम्युनिस्ट-घोषणापत्रमें मान्तीने यद्यपि सर्वहारा-क्रान्ति द्वारा बूर्ज्या-राज्यकी राजनीतिक संस्थात्रों श्रौर शासन-यंत्रके खतम करनेकी वात उठा देनेकी बात लिखी थी, लेकिन वहाँ उन्होंने इसे घीरे-घीरे होनेकी नात कही थी। पैरिस कम्पूनके तजर्नेने बतला दिया कि क्रान्तिनी सफलताके लिये पुराने शासन-यन्त्रका—पुरानी नौकरशाहीका—दुरन्त खातमा बहुत जरूरी है। क्रान्ति-की बात तो छोड़िये, हमारे भारत जैसे देशमें कुछ अधिक सुधार करनेमें भी श्राग्रेजोंके समयसे चली श्राती नौकरशाही आज सबसे जबर्दत्त भाषा दील पढ़ रही है। क्रान्तिके लिये इस शासन-यंत्रका तुरन्त उखाड फेकना चरुरी है. यही समफतर जून १८७२ में कम्युनिस्ट-घोषणापत्रके नये संस्करणके प्राक्कथनमें मार्क्स और एंगेल्सको अपनी पुरानी राय बदलनी पड़ी और कहना पड़ा कि विनयी कमकर राजशक्ति पर अधिकार करके पहले ही से तैयार राज्य-यन्त्रका अपने उद्देश्यके लिये इस्तेमाल नहीं कर सकते। इस बातको जारकी नौकरशाहीको हटाकर सोवियतों (जन-निर्वाचित पंचायतों) के रूपमें नये शासन-यंत्रको स्थापित करके रूसी-कान्तिने सफलता पाई, इसे ब्राज सभी जानते हैं।

त्रपने त्रभिभाष्यका उपसंहार करते हुये मार्क्सने लिखा था : "कमकरी श्रीर उनके कम्यूनकी पेरिस हमेशा नये समाजके यशस्वी सन्देशवाहकके तौर-पर सदा याद की जायगी । उसके शाहीद मजदूर-वर्गके विशाल हृदयमें प्रतिष्ठा-पित रहेंगे। उसके ध्वंसकर्ता ग्रमी ही इतिहास द्वारा घूणास्पद सावित हो गये हैं। वह ऐसे अभिशापसे आभिशप्त हैं, जिस अभिशापसे उनके पादरियों और पुरोहितोंकी प्रार्थनायें उन्हें मुक्त नहीं कर सकतीं ।" श्रमिभाषणका प्रभाव तुरन्त देला गया, जब कि चारों श्रोरसे मार्क्सपर बागबाणकी वर्षा होने लगी। मार्क्सने क्गलमानको इसके वारेमें लिखा था: "इस (ग्रामिमापरा) ने शैतानके क्ल्हे-पर ठोकर मारी है। इस चए लन्दनमें सबसे ऋधिक. गाली खानेवाले और घमकाये जानेवाला त्रादमी होनेका सम्मान सक्ते प्राप्त है। यह मेरे लिये श्रन्छ। है, बीस सालके लम्बे श्रीर उना देनेवाले दलदलमें रहनेवाले मेंढक जैसे वेकारसे एकान्तवासके बाद इसने मेरे लिये श्रव्हा किया। सरकारी पत्र "श्रॅंडवर्यर" सुम्मपर मुकदमा चलानेकी धमकी तक दे रहा है। आवें वह यह भी कोशिश करके देख लें।" जैसे ही यह ववंडर शान्त हुआ, मार्क्सने दोषित किया कि श्रमिमापणका लेखक मैं हूँ। श्रागे चलकर मार्क्वके ऊपर श्राद्वेप किया गया, कि उन्होंने कम्यूनकी सारी जिम्मेवारी लेकर इन्टर्नेशनलको खतरेमें डाल दिया, लेकिन मार्क्स कम्यूनको इन्टनेंशनलसे ब्रह्म करके देख नहीं सकते थे, ब्रौर न वह इतिहासको भुठलाना चाहते थे।

४. इन्टर्नेशनल श्रीर पेरिस कम्यून

पेरिस कम्यूनके बाद इन्टर्नेशनलके शत्रुश्चोंकी संख्या और बढ़ गई। दुनियामें चारों श्रोरके प्रतिक्रियावादी उसे खुलकर गालियाँ देने लगे, जिसका

एक यह फायदा जरूर हुआ, कि उसके कारण इंगलैंडके अखबारोमे जेनरल-कौंसिलको जवाब देनेका मौका मिला, जो घाटेका सौदा नहीं था। इन्टर्नेशनलके लिये एक बडी समस्या श्रौर उठ खबी हुई थी, कम्यूनके नप्ट कर दिये जानेपर उसके लिये काम करनेवाले वहुसंख्यक लोग वेल्जियम, स्वीजलैंड विशेषकर लन्दनमे भाग गये। इन्टर्नेशनलके पास पैसेकी शक्ति नहीं थी श्रीर इन शरणार्थियोंको सहायता करनेके लिये पैसे जमा करनेके वास्ते वहत मेहनत करनी पडती थी। कई महीनो तक उसका सारा प्रयत्न इसी स्रोर लगा रहा। स्रव सर-कारोने भी इन्टर्नेशनलको खतम करनेका बीबा उठाया। युरोपके सभी देशोंमें उसके खिलाफ सरगर्मीसे काम होने लगा। कोशिश यह भी की गई, कि सभी देशोंकी सरकारें मिलकर एक साथ हमला कर दे, श्रीर वर्ग-चेतना रखनेवाले सर्वहारोंको दवा दे, लेकिन श्रापसके विरोधी स्वार्थोंके कारण सभी सरकारे एकताबद्ध नहीं हो सक्षीं । ७ जून १८७१ को फ्रेंच सरकारकी स्रोरसे जूले फांब्रेने दूसरी सरकारोंके पास परिपत्र भेजा था, लेकिन बिस्मार्क तकने भी उसकी श्रोर कोई ध्यान देनेकी श्रावरयकता नहीं समसी, यद्यपि वह जानता था कि जर्मन समाजवादी जनतां-त्रिकताके लाजेलीय श्रीर श्राइजेनाख दोनो दल कम्यनके समर्थक थे। कुछ समय बाद रपेनकी सरकारने भी इसके लिये सरगर्मी दिखलाई. श्रीर उसके विदेश-मन्त्रीने सभी सरकारोंके पास परिपन्न भेज कर कहा : "यह काफी नहीं है कि सरकारे अलग-अलग इन्टर्नेशनलके विरुद्ध आवश्यक कडे उपाय काममे साये, श्रीर श्रपने-श्रपने देशोंमे उसके विमागोके खिलाफ कडा कदम उठाये। सभी सरकारोको एकताबद्ध हो इस पापको खतम करनेके लिए एकताबद्ध होना चाहिये। शायद् इसका कुछ प्रमाव पडता, लेकिन अग्रेज सरकारने इसका उत्तर बढ़े उपेचापूर्वक दिया और लार्ड ग्रेनविलने कहा: "इस देशमें इन्टर्नेशनलने अपने कामोको सुख्यत: हडवालोंमे चलाह देने तक सीमित रक्खा है. ग्रौर ऐसी कार्रवाईको समर्थन करनेके लिये उसके पास बहत ही सीमित फएड है। इन्टर्नेशनलकी क्रान्तिकारी योजनायें केवल उसके विदेशी मेम्बरोंकी नाय हैं। ब्रिटिश कमकरोसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, जिनका कि ध्यान मुख्यत: मज्रीके सम्बन्धमें रहता है। विदेशी इंगलैंडमें देशके कानूनकी दृष्टिसे

वही श्रिषकार रखते हैं, जो कि ब्रिटिश प्रजाजन, इसलिये उनके खिलाफ विना दूसरे कारखोंके कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।"

यद्यपि शत्रश्चोंने मिलकर इन्टर्नेशनलके निरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़नेका मौका नहीं पाया, लेकिन यूरोपके मिन मिन्न देशोंमें उसकी शासाम्रोंको दमनका सामना करना पड़ा था। इस दमनसे भी ज्यादा इन्टर्नेशनलके लिये बुरी बात हुई कि इंगलैंड, फ्रांस श्रीर जर्मनीके जिस मजदूर-वर्गपर उसका बहुत ज्यादा भरोसा श्रीर श्रिमिमान था, उसमें श्रव शिथिलता पैदा होने लगी थी। फ्रांसमें यियेर ग्रौर फान्नेकी राजवादी-प्रतिगामी राष्ट्रीय एसेम्नलीने इन्टर्नेशनलके विरुद्ध जनर्दस्त कानून पास किया, जिसने फ्रेंच मजदूर-वर्गको लुंज बना दिया, यह इस कारण भी कि इससे पहले ही खुनकी होती खेलकर उसे दनाया जा चुका था इन कताइयोंने इतने हीसे सन्तोष नहीं किया. बल्कि स्वीजलैंड श्रीर इंगलैंडकी रुकारोंसे वहाँ भागकर शरण लेनेवाले कम्यूनियोंको लौटानेकी माँग की । इसके बाद इन्टर्नेशनलके जेनरल-कौंसिलका सम्बन्ध फ्रेंच कमकरोंसे टूट गया। उसते उनके प्रतिनिधिके वौरपर कम्यूनमें भाग लेनेवाले इन्टर्नेशनलके पुराने मेम्बरीं तथा कुछ नये व्यक्तियोंको भी ले लिया। लेकिन, यद्यपि इसका उद्देश्य था कम्यूनको सम्मानित करना, लेकिन इसके कारण त्रापसमें जो संबर्ध उठ खड़ा हुन्रा, उसके कारण इन्टर्नेशनलको बहुत नुकसान पहुँचा । नवम्बर १८७१ तक र्फेच शरणार्थियोंके इस त्-द् मै-मैसे परेशान होकर मार्क्सको लिखना पड़ा "टनके पत्तमें श्रपने करीब पाँच महीनोंको खर्च करने झौर श्रमिमाष्यमें उनके सम्मानके लिये लड़नेका मुक्ते यह पारितोषिक मिल रहा है।"

एक तरफ फ्रेंच शरणाधियोंकी यह दशा थी, दूवरी तरफ अँग्रेज कमकरी भी इन्टर्नेशनल से अपना हाय खींच लिया। जुकाफ, ओडनेर जैसे जेनरल कींसिल के प्रमुख मेम्बर्यने मार्क्क फ्रांसमें ग्रह-युद्धवाले अमिमाश्यके कारण कौंसिल से इस्तीका दे दिया। अब अँग्रेज मन्त्र-समाओंका लच्म या पूँजीवादी समावके आधारपर मन्त्रेंकी हालतमें सुधार करना, जिसके लिये वह कोई उर्ध अनितकारी संघर्ष करनेके लिये तैयार नहीं थे। इंगलैंडका मन्त्र-वर्ग इन्टर्नेश-नलकी सहायता तब तक हो चाहता था, जब तक कि उसके दवान से सुधार

बिल पास हो जाये | जब सुधार-बिल पास हो गया, तो मजूर-नेताश्रोंने पार्लिया-मेन्टमें अपने लिये जगह वनानेके लिये उदार-दलियोंकी खशामद करनी शुरू की। इंगलैंडके मजर-वर्गके इन्टर्नेशनलचे ऋलग हो जानेपर मार्क्यने साफ तौरसे कह दिया था, कि इन्होंने उदार-मंत्रालयके हाथमे अपनेको बेच दिया। १८७०-७१ ई० में इंगलैंडकी मजर-सभाओं श्रीर मजर-वर्गके अधिकाश भाग तथा उनके सभी नेताओंने जो रास्ता ऋष्तियार किया. तो "वही रफ्तार वेदगी जो पहले थी सो अब भी है।" मजूर-सभात्रोंके नेता १८७१ ई० में ही कहने लगे थे--जैसा कि उनमेंसे एकने रायल-कमीशनके सामने गवाही देते हुये कहा था-कि हडताले कमकरों और उनके मालिकों दोनोंके पैसे और शक्तिकी केवल मुर्खतापूर्ण बरबादी है। इंगलैंडके जिन कमकर संगठनोंने ऋव मी इन्टर्नेशनलके साथ ऋपना सम्बन्ध बनाये रक्खा था, उन्होने भी भाँग की, कि हमारे लिये एक खास फेडरल कौंसिल कायम की जाये। मार्क्सको अन्तमे इसे मानना पहा । पेरिस कम्यूनके पतनके बाद नई क्रान्तिकी सम्मावना दर हो गई थी, इसलिये मार्क्स अन जेनरल-कौंसिलके प्रति उतनी लगन नहीं दिखला सकते थे। फेडरल कौसिलकी स्थापनाके बाद, जहाँ तक इंगलैंडका सम्बन्ध था, इन्टर्नेशनल का बाकी बचा ग्रयर भी खतम होने लगा। उधर बकुनिनः भी अपनी नेताशाही कायम करनेके लिये चाले चल रहा था।

श्रध्याय १८

इन्टर्नेशनलकी अवनित

१. अवसाद

१८६६ ई० में बाजेलकी कांग्रेसने पेरिसमें इन्टर्नेशनलकी दूसरी कांग्रेस खुलानेका निश्चय किया या, लेकिन वहाँकी राजनीतिक स्थिति ऐसी नहीं थी, कि पेरिसमें कांग्रेस की जाती, इसलिये खुलाई १८७० ई० में जेनरल-कोंसिलने मयेन्सक में कांग्रेसका अधिवेशन करनेका निश्चय किया। प्रशिया और फांसकी लड़ाईने मयेन्समें भी कांग्रेसको होने नहीं दिया। मिन्न-मिन्न देशोंकी सरकार जो दवाव डाल रही थीं, उससे मालूम हो रहा था, कि वहाँसे प्रतिनिधियोंका आना सम्भव नहीं होगा। इसपर जेनरल-कोंसिलने यही निश्चय किया, कि श्रिक्त होगा। इसपर जेनरल-कोंसिलने यही निश्चय किया, कि श्रिक्त हुत कम संख्यामें कांग्रेस बुलानेका ख्याल छोड़ दिया जाय। इस कान्फ्रेंसमें बहुत कम संख्यामें लोग (खुल २३) उपस्थित हुये थे। कार्क्स १७-२३ सितम्बर तक रही। इन प्रतिनिधियोंमें ६ वेल्जियम, २ स्वीजलैंड और १ स्पेनसे आये थे। इन्टर्नेशनलके ऊपर जो जवर्दस्त आक्रमण शत्रुओंकी ओरसे हो रहे थे, उससे कार्कस्को बचाना था।

लन्दन-कार्केसने वाजेल-कांग्रेसके कार्यको जारी रखते हुये कुछ प्रस्तान स्वीकृत किये, जिनका मतलन या स्वतन्त्र एसोसियेशनो ह्यौर स्वावलम्बी शालाह्योंका जेनरल-कौंसिलके हाथमें पूर्णतथा केन्द्रित एक संगठन रूप देना जेनरल-कौंसिलको यह भी श्रिषकार दिया गया, कि वह श्रगली कांग्रेस-य उसकी जगहपर कार्केस करनेके स्थान द्यौर समयका निश्चय स्वयं करें। स्वीजलैंड श्रन इन्टर्नेशनलका प्रधान श्रवलम्ब रह गया था, लेकिन नहीं मी पैरोंके नीचेसे जमीन खिसकने लगी, जन "जर्मन-माथी शाला" जेनेवामें

Mayence

इन्टर्नेशनलकी सबसे पुराना श्रीर सबसे मजबूत संगठनमें फूटमें पकड़कर १८७१ ई० में "स्विस कमकर पार्टीका" निर्माण हुआ। १८७२ ई० में मार्क्ष श्रीर एंगेल्सने इन्टर्नेशनलको खतम सा सममकर उसके साथ सहयोग देना छोड़ दिया। १८७४ ई० में एंगेल्सने स्वीकार किया, कि इन्टर्नेशनलका समय अब खतम हो गया है—एक नये इन्टर्नेशनलके—समी देशोंकी समी सर्वहारा पार्टियोकी मैत्री—पुराने इन्टर्नेशनलके स्थानपर आनेके लिये मजदूर-वर्ग-आन्दोलनको ऐसी ही आम पराजयकी हुई आवश्यकता है, जैसी कि उसने १८४६-१८६४ ई० के बीचके समयमे खाई थी।

२. हेग-कांग्रेस (१८७२ ई०)

जेनरल-कौंसिलके ५ मार्च (१८७२ ई०) वाले परिपत्रने सूचित किया, कि वार्षिक काग्रेस सितम्बरके ब्रारम्भमें होगी; किन्तु इसी वीचमे मार्क्स ब्रीर एगेल्सने तै किया कि जेनरल-कौिसलका आफ्रिस न्यूयार्कम हटा दिया जाय। कुछ लोगोंका कहना हैं, कि मार्क्स और एगेल्सने इस तरह इन्टर्नेशलकी अन्त्येष्ठि करके छुट्टी लेनी चाही, लेकिन यह बात गलत मालूम होती है, जब कि हम देखते हैं, कि आगे भी वह भरतक इन्टर्नेशनलका समर्थन करते उसे जीवित रखना चाहते थे। कुगेलमानको २६ जुलाईके पत्रमें मार्क्यने जो लिखा था, उससे भी इसी वातकी पुष्टि होती है : "इन्टर्नेशनल कांग्रेस (हेगमें २ ितम्बरको शुरू होनेवाली) इन्टर्नेशनलके लिये जीवन श्रीर मरणका सवाल है। उससे त्रालग होनेसे पहले मैं कमसे कम ध्वसकारी शक्तियोंसे उसकी रचा करना चाहता हूँ।" यह विनाशकारी शक्तियाँ लन्दनमें जेनरल-कौंतिलके रहनेपर बहुत खतरनाक सानित हो रही थीं, इसीलिये मार्क्स और एगेल्सने मुख्य-कार्या-न्तयको न्यूयाकंमे ले जानेका प्रयत्न किया। इकेरियस श्रीर युग वर्षोसे मार्क्सके बहुत विश्वासपात्र सहकारी रहते चले आये थे, लेकिन अब उनका भी सम्बन्ध विगडने लगा, श्रीर मई १८७२ में मार्क्स श्रीर इकेरियसका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया, जत्र कि इकेरियसने इन्टर्नेशनलके जेनरल-सेक्रेटरीके साप्ताहिक वेतन पन्द्रह शिलिंगको दूना करनेकी इच्छा प्रकट की। इकेरियसने समका था, कि

मेरे विना काम नहीं चलेगा, इसिलये मजबूर होकर मेरी माँग माननी पड़ेगी। इकेरियसकी जगह पर अंग्रेज जान हेलसको जेनरल-सेक्रेटरी निर्वाचित किया गया। इसी समय युंगका एंगेल्ससे मनसुयन हो गया। हेल्स यद्यपि इन्टर्नेशनलके खिलाफ इकेरियसके प्रयत्नोंको विफल करनेमें समर्थ हुआ क्योंकि उसे अंग्रेज मजदूर-वर्गका समर्थन प्राप्त था, लेकिन पीछे वह स्वयं खुलकर जेनरल-कौंसिलका विरोध करने लगा, जिसपर अगस्तमें उसे अपने पदसे हटा दिया गया। जेनरल-कौंसिलके फेंच सदस्योंपर ब्लाकेकी विचारधाराका अधिक प्रमाव था। मार्क्सको डर लगने लगा था, कि कहीं ब्लाकीय जेनरल-कौंसिलपर अधिकार न कर लें।

हेग-कांग्रेस २-७ सितम्बर १८७२ को हुई, जिसमें ६१ प्रतिनिधि शामिल हुये थे, श्रीर श्रव भी बहुमत मार्क्क पद्धमें था। इन प्रतिनिधियोंमें जर्मन न थे : वर्तहार्ड वेकार (ब्रन्सविक) क्रतीं (स्टुटगार्ट) डीट्जगेन (ड्रेसडेन) क्गेलमान (केल) मिलके (विलिन) रीटिंगहाउजेन (मुनखेन), शो ! (बुरटे-म्वेर्ग) श्रीर शूमाखेर (सोलिंगेन)। इतालियन ब्क्रुनिनवादियोंने श्रपने प्रति-निधि कांग्रेसमें नहीं भेजे । उन्होंने रिमिनीमें श्रगस्तमें श्रपनी कान्प्रेंस कर, जैनरल-कौंसिलसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेका निश्चय किया। स्पेनके ५ प्रतिनि-धियोंमें लाफार्गको छोड़कर बाकी बक्कनिनके ऋतुयायी थे। इस प्रकार ब्लांके बुकुनिन श्रीर मार्क्के समर्थकोंका यहाँ जो सम्मिलन हुस्रा, उसमें स्रारम्म हीमें वड़े वाद-विवाद उठ खड़े हुये, जब कि प्रतिनिधियोंके प्रमाण्यत्र (मेंडेट) के शरेमें पूछताछ शुरू हुई। लाफार्यको प्रतिनिधि न रखनेके लिये बड़ी जबर्दस्त कोशिश की गई। चौथे दिन कांग्रेसकी बास्तविक कार्रवाई शुरू हुई, जिसमें जेनरल-कौंसिलकी रिपोर्ट पढ़ी गई। रिपोर्टको मार्क्सने स्वयं तैयार किया या श्रीर उन्होंने उसे जर्मनमें पढ़ा। उसके श्रंग्रेजी श्रनुवादको सेक्सटनने फ्रेंचको लांग्वे ¶ श्रीर हत्तको (फुलेमिश) को अश्रीलने पदा। इन्टोंशनलके विरुद जो जुलम किये गये, पैरिस कम्यूनको जिस तरह खूनी हाथोंसे दन्नाया गया,

^{*} Cuno † Milke ‡ Schen \$ Rimini. ¶ Languet.

चर्मनीमें बिस तरह देशद्रोहके मुकद्मे चलाकर कमकरोंको दवानेकी कोशिश की गई, इन सबकी रिपोर्टमें श्रान्छी खबर ली गई। इसके बाद रिपोर्टने संचेपमें हालैंड, देन्मार्क, पोर्तुगाल, श्रायलैंड, स्काटलैंडमें के भीतर प्रवेश करने श्रीर न्यूयार्क, श्रास्ट्रेलिया, न्यूबीलैंड श्रीर बूनोग्रायरसमें श्रपने कामकी प्रगतिको बतलाया । रिपोर्टको काग्रेसने बड़ी प्रसन्नताके साथ स्वीकार किया, श्रीर मुक्तिके लिये धर्वहारा-संघर्षमें जो शहीद या उत्पीड़ित हुये, उनके प्रति सम्मान श्रीर सहानुभूति प्रकट की । श्रागे मार्क्सने एक लम्बे भाषगामें जेनरल-कौंसिलके पहिलेके अधिकारोंको कम करनेकी जगह उसे बढ़ानेकी माँग करते कहा, कि जेनरल-कौंसिलको केवल लेटर-बक्स बना देनेकी जगह उसे बिलकल उठा देना बेहतर होगा । मार्क्सके विचारको ६ के विरुद्ध ३६ वोटोंसे स्वीकार किया गया, १५ ने किसी ऋोर वोट नहीं दिया। इसके बाद एंगेल्सने प्रस्ताव रक्खा, कि जैनरल-कौंसिलका केन्द्र कमसे कम एक सालके लिये लन्दनसे न्यूयार्कमें बदल दिया जाय । प्रस्तान एकाएक रक्खा गया था, जिसपर कितने ही प्रतिनिधियोंको आरचर्य हुआ, किन्तु अन्तमें बेनरल-कौंसिलके स्थान-परिवर्त्तन २३ के विरुद्ध २६ वोटोसे स्वीकार किया गया श्रीर ६ तटस्थ रहे। जब न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्त्तन करनेका प्रस्ताव श्राया, तो पक्तमें ३० ने वोट दिये। काग्रेसके श्रतिम श्रीर छठवे दिन तक चलनेवाली बहसमें भाग लेने रॉवियेर# वेलॉ† श्रीर दूसरे ब्लॉकानुयायी जेनरल-कौंसिलके न्यूयार्कमें स्थानान्तरिक करनेके निश्चयके बाद कॉंग्रेसको छोड़ गये श्रीर उन्होंने एक पुस्तिका प्रकाशित करके घोषित किया, कि "इंटर्नेशनल खतम हो गई, वह क्रातिके मारे अवलातिक महासागर पार भाग गई। 177

वकुनिनका व्यवहार भी बहुत बुरा रहा, इसिलये काग्रेसके श्रन्तिम दिन उसके रूपर विचार किया गया, श्रीर श्रन्तमे ७ के विरुद्ध २७ वोटोंसे वकुनिन-को इन्टर्नेशनलसे निकाल देनेका प्रस्ताव स्वीकृत हुन्ना, ६ तटस्य रहे।

^{*} Ranvier † Vaillant

३. इन्टर्नेशनल का अन

मार्क्स द्वीर एंगेल्पने इन्टर्नेशनलको जीवित रखनेकी यद्यपि बहुत कोशिश की, किन्तु हेग-कांग्रेसके साथ प्रथम इन्टर्नेशनलका इतिहास खतम हो गया। श्रमेरिकामें इन्टर्नेशनलको मजबूती के साथ पैर जमानेका मौका नहीं मिला, क्योंकि वहाँ भी श्रापसी विवाद उठ खड़े हुये। जेनरल-कौंखिलका सबसे बड़ा श्राधार सोगें था, जिसे श्रमेरिकन स्थितिका पूरा पता था, इसीालेथे उसने न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्चनका पहले विरोध किया था। पीछे वही जेनरल-सेक्रेटरी चुना गया श्रीर उसने उसके लिये काम करनेका पूरा प्रयत्न भी किया। लीवकनेस्ट भी स्थानपरिवर्चनके विरुद्ध था। उसने इसे हमेशा गलत कहा, लेकिन उस समय वह वेवेलके साथ इतेरद्धसडुर्गं में बन्दी था।

जेनरल-कोंसिल न्यूयार्कमें चले जानेका प्रभाव इंगलैंडमें भी बुरा पड़ा । प्रसित्त करेंसिल ने क्रिटिश फेडरल कोंसिलमें मार्क्स निव्ह निन्दाका प्रस्ताव यह कह करके रक्खा, कि उन्होंने इंगलिश मज़र-वर्ग नेतात्रोंके ऊपर बुरे ब्राचिप किये हैं । निन्दाका प्रस्ताव स्वीकृत हुन्ना, लेकिन इस संशोधनको स्वीकार नहीं किया गया, कि मार्क्सने खुदगर्जांके लिये ऐसा किया था । हेल्सने मार्क्सने इन्टनेंशनलसे खारिज करनेका भी प्रस्ताव किया था । एक दूसरे मेम्बरने हॉग-कांग्रेसके निश्चयोंको रद करनेका प्रस्ताव रक्खा । हेल्स ब्राव इकेरियस ब्रोर युंगका जबर्दस्त सहकारी बन गया था । युंग तो कुळु समय बाद मार्क्स ब्रोर एंगेल्सका जवर्दस्त विरोधी हो सब-कुळु करनेके लिये तैयार था । मार्क्स ब्रौर एंगेल्सके विरोधियोंने नई इन्टनेंशनल-कांग्रेस बुलानेकी ब्रसफल कोशिश की, लेकिन व्रिटिश फेडरल कोंसिलमें भी ब्रापसमें बहुत मतमेद हो गया था ।

न्यूयार्ककी जेनरल-कोंसिलने इन्टर्नेशनलकी छुठी कांग्रेस ८ सितम्बरको जेनेवामें बुलाई, जो कि इन्टर्नेशनलके लिये मृत्युका प्रमाणपत्र सावित हुई। बक्किनने इससे पहले १ सितम्बरको ऋपनी विरोधी कांग्रेसका ऋषिवेशन किया था। जिसमें हेल्स और इकेरियस इंगलैंडके प्रतिनिधि बनकर गये थे। उनके

[@] Hubertusburg.

श्रतिरिक्त बेल्जियम, फास श्रीर स्पेनके ५-५, इतालीके ४, हालैंडका १ श्रीर ६ जूरा-पार्टीके प्रतिनिधि सम्मिलित हुये थे। मार्क्सीय कांग्रेसमें अधिकतर स्विस प्रतिनिधि थे, जिसमेंसे अधिकाश जेनेवा निवासी थे। जेनरल-कौसिल स्वय श्रपना कोई प्र'तिनिधि नहीं मेज सकी। इंगलिश, फ्रेंच, स्पेनिश वेलिज-यम श्रीर इतालियन कमकरोके कोई प्रतिनिधि नहीं थे श्रीर जर्मनी तथा ग्रास्टियाके केवल एक-एक प्रतिनिधि थे। मार्क्सने साफ तौरसे स्वीकार किया. कि काग्रेस केवल तमाशा रही। मार्क्स श्रीर वकुनिनके रास्तोंका श्रव सीघा सघर्ष था। बुक्तिनका प्रभाव ग्राव भी रूसके कमकर-ग्रान्दोलनमें वैसा ही बना रहा, जबिक मार्क्सका त्रारम्भ होते प्रभावको धक्का लगा । बकुनिन स्त्रीर बकु-निनवादियोंके विरुद्ध एंगेल्स और लाफार्गने "समाजवादी जनतात्रिकता मैत्री तथा अन्तर्राष्ट्रीय कमकर एसोसियेशन" नामसे एक पुस्तिका लिखी, जिसके सम्पादन तथा एक-दो ऋन्तिम पृष्ठोके जोडने मरका काम मार्क्सने किया था। इस पुस्तिकाके कारण यद्यपि वक्कनिनको हमेशाके लिये मैदान छोडमेके लिये मजब्र होना पडा, लेकिन उसके श्रनुयायियोंपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बक्तिनने मैदान छोडते समय लिखा था: "तरुणोंको त्रागे बढ़ना चाहिये। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, सभी जगह विजयी प्रतिक्रियावादके विरुद्ध. .पत्थर लढकाना जारी रखनेके लिये मेरे पास न ताकत है, श्रीर न शायट श्रावश्यक विश्वास । इसलिये मै संघर्षसे हट रहा हूँ श्रीर मैं श्रपने योग्य समसामयिकोंसे केवल एक-एक बात मॉगता हूं: विस्मरस । अवसे मै किसीको परेशान नहीं करूँगा, श्रीर न कोई मुक्ते परेशान करे।" जूराके कमकरोंको सम्बोधित करके लिखे विदाईके पत्रमे उसने मार्क्सपर तीव त्र्याचेप करते हुये कहा था, कि मार्क्सका समाजवाद विस्मार्ककी कूटनीतिसे कम प्रतिक्रियावादका केन्द्र नहीं है. इसलिये उसके विरुद्ध कमकरोको मयकर संघर्ष जारी रखना होगा। शायद बकुनिनके अनुयायी अब भी पूँजीवादकी सायामे पलते अपने गुरुकी परम्पराको कायम रखना चाहते हैं, लेकिन इतिहासका फैसला विल्कुल दूसरा ही है। प्रतिक्रियावाद मार्क्यके समाजवादके पास नहीं फटक सकता, हाँ, वह मार्क्सवाट के विरोधियोंको अपने लपेटमें लिये त्रिना नहीं रह सकता । त्रकुनिन १ जुलाई

१८७६ को वेर्न (स्वीजलैंड) में मरा। श्रादमीके पतनकी पराकाष्टा जितनी त्रोत्स्कीके लिये कही जा सकती है, उतनी वक्कुनिनकी नहीं, किन्तु जारके सामने घुटना टेककर प्रायश्चित करनेवाले इस भूतपूर्व क्रान्तिकारीको स्टिपर उठानेवाले लोगोंकी संख्या तब तक कुछ बनी ही रहेगी, जब तक कि पूँजीवादकी काली छाया भूमरडलके किसी भी कोनेपर मौजूद है।

श्रध्याय १६

जीवन-संघ्या

१. बीमारी

१८५३ ई॰ में कम्युनिस्ट लीगकी समाप्तिके बाद मार्क्सने भ्रापनेको लेखन श्रीर श्रध्ययनमें लगा दिया था, जोकि सर्वहाराके लिये भारी महत्वका काम था। इन्टर्नेशनलके भी मरगासन होनेके बाद १८७८ ई० से अब फिर उन्होने उधरसे अपना हाथ सदाके लिये खींच लिया। पेरिस-कम्यून मार्क्सके लिये बहुत आशा लेकर आई थी. लेकिन उसके पतनका प्रमान मार्क्सके ऊपर बहुत बुरा पडा । १८७३ ई॰ के शरद्में ही उनको बीमारीने घेरना शुरू किया श्रीर बाजवक्त लकवा मारनेका सख्त खतरा भी पैदा हो गया था। दिमागी श्रवस्था ऐसी उनके मनमें लिखनेकी बिल्कुल इच्छा नहीं रह गई थी। एगेल्सके मित्र डा॰ गम्पर्टं ने मैन्चेस्टरमें कई सप्ताह मार्क्सकी चिकित्सा की, जिससे स्वास्थ्य-में कुछ सुधार हुआ । डा॰ गम्पेर्टकी सलाहसे वह स्वास्थ्य सुधारनेके लिये कार्लस्त्राड (जर्मनी) में १८७४,१८७५ श्रीर १८७६ ई० के तीन वर्षों तक जाते रहे । इसके बारेमें मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की एलिनोर (दूसी) ने लीवक्नेख्टके पास मेजे अपने पत्रमें लिखा था :...कार्लस्वाड हम पहली बार १८७४ ई॰ में गये। उन्निद्रता श्रीर पेटकी शिकायतके कारण मूर (मार्क्स) को वहाँ मेजा गया था। वहाँके पहले निवाससे उनको काफी फायदा हुआ था. इसलिये श्रमले साल १८५७ ई० में वह अकेले वहाँ गये। फिर श्रमले साल १८७६ ई॰ में मै उनके साथ थीं, क्योंकि पिछले साल मेरे न रहनेका श्रमाय उन्हें खटकता था। कार्लस्त्राडमें बहुत सनग रहकर उन्होंने श्रपनी चिकित्सा की श्रीर डाक्टरने जो कुछ बतलाया, उसीके श्रनुसार सब काम किया। वहाँ हमने बहुतसे मित्र बनाये । सहयात्रीके तौरपर मूर बड़े ही स्त्रानन्दी पुरुष

[#] Gumpurt

थे, हमेशा प्रसन मन रहते, और चाहे कोई सुन्दर दृश्य हो या वियरका एक खास, हरेक चीजमें आनन्द लेनेके लिये तैयार थे। अपने विस्तृत इतिहास ज्ञानसे रास्तेमें आनेवाले हरेक स्थानको अधिक सजीव और स्पष्ट करके वह हमारे सामने रखते थे।...१८७४-७५ ई० में लाइपिजगमें हमने एक-दूसरेको अन्तिम बार देखा। वहाँसे लीटते समय हम विगेनका चक्कर काटने गये, जिसे मूर सुके दिखलाना चाहते थे, क्योंकि यहाँ ही उन्होंने मेरी माँके साथ अपना मधुमास विताया था। इसके अतिरिक्त इन दोनों याआओंमें हम ड्रेसडेन, वर्लिन, प्राग, हाम्बुर्ग, नूरेनवेगींमें भी गये थे।"

१८७७ ई॰ में मार्क्स स्वास्थ्यके ख्यालसे बाड नोयेनारक गये। कार्ल स्त्राड वह नहीं जा सके, क्योंकि जर्मनी और श्रास्टिया दोनोंकी सरकारें उनके विरुद्ध त्राज्ञा निकालनेवाली थीं। पेटकी तकलीफ स्रवं भी मौजूद थी और यकावट हद दर्जेंकी थी, जिसके कारण सिरदर्द श्रीर उनिद्रताकी तकलीफी वरावर बनी रही। यदि मार्क्स अपनेको पूर्ण विश्राम देनेके लिये तैयाँ होते, तो शायद स्वास्थ्यमें कुछ सुधार होता। लेकिन उनका दिमाग जीवित रहते कैसे निष्क्रिय रह सकता था। एंगेल्सने कहा था: "जिस आदमीने हरेक चीजका उसके ऐतिहासिक आरम्भ और विकासकी स्थितियोंके पता लगाने के लिये परीचर्या किया. निश्चय ही उसके लिये प्रत्येक नया उठनेवाला प्रश्नी नये प्रश्नोंकी माला खड़ा कर देता था। तृतीय जिल्द (कविटाल) के बारेमें पहलेसे अधिक पूर्णताके साथ विवेचन करनेके लिये मार्क्सने प्राचीन इतिहास कृषिशास्त्र, रुसी और अमेरिकन वर्मीदारी-सम्बन्ध, भूगर्भशास्त्र आदिका विशेष तौरसे ऋष्ययन किया । समी जर्मन वंशीय ऋौर नई-लातिनवंशीय माषास्रोंकी धुगमताके साथ वह पढ़ते थे ! फिर उन्होंने पुरानी स्लाव, रूसी और सर्वियन भाषात्रोंको सीला।" यह उनके दिनके कामका विर्फ श्राधा,मागः या यद्यपि सक्रिय राजनीतिसे वह हट गये थे, लेकिन अब भी यूरोप और अमे रिकाके मजदूर-ग्रान्दोलनोंमें उनकी उसी तरह दिलचस्पी थी ग्रीर मिन्न-मिन

[#] Bad Neuenahr

देशोंके प्रायः समी मजदूर-नेताश्चोंके साथ उनका पत्रव्यवहार था । लडाके सर्व-हारा बराबर उनसे सलाह लेते श्रीर मार्क्स उन्हें निराश नहीं करते थे।

२. मित्रों की दृष्टिमें मार्क्स १. लाफार्गकी दृष्टिमें

पावल लाफार्गका जिक्र हम पहले कर चुके हैं। वह १५ जनवरी १८४२ को कुनामें पैदा हुआ था। बचपनसे ही मॉ-नाप उसे पेरिस ले आये, जहाँ उसकी शिक्ता-दीक्ता हुई। तब (१८५१ ई०) से थोड़े समयके निर्वासनके श्रतिरिक्त वह पैरिसमें ही रहा, जहाँ १६११ ई॰ मे उसकी मृत्य हुई। मार्क्सकी लब्की लौरासे इसका न्याह हुआ था, यह हम बतला आये है। लाफार्ग पेरिस युनिवर्सिटीके मेडिकल कालेबका विद्यार्थी था, लेकिन राजनीतिमें भाग लेनेपर उसे युनिवर्सिटीसे निकाल दिया गया । अपनी डाक्टरीकी शिचा समाप्त करनेके बाद वह पैरिस लौटा श्रीर वहाँके समाजवादी श्रान्दोलनके प्रमुख नेताओं में हो १८७१ ई॰ मे पैरिस कम्यूनमें भी उसने भाग लिया । कम्यूनके समाप्त कर, टेनेपर वह स्पेन भाग गया. श्रीर वहाँ कितने ही समय तक मार्क्वादके प्रचार्स लगा रहा। १८८२ ई॰ में वह फिर फाउ लौटा और जूल ग्विदे (१८४५८ १६२१ ई०) के साथ उसने फ्रांसमें समाजवादका सैद्धान्तिक नेतृत्व किया श्रीर राजनीति. श्रर्यशास्त्र श्रीर दर्शनपर उसने कितनी ही स्वतंत्र प्रस्तके श्रीर पुस्तिकाएँ लिखीं। ऐतिहासिक मौतिकवादपर उसका विशेष श्रिधिकार था। मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी कई पुस्तकोके उसने फ्रेचमें श्रतवाद किये। लेनिन-की नजरोंमें लफार्ग "मार्क्सवादके विचारोके प्रचार करनेवालोंमे एक वहत ही साघन-सम्पन्न श्रीर श्रत्यन्त प्रतिभाशाली" पुरुष था।

लाफार्गने अपने चसुरका संस्मरण लिखा है, जो मार्क्सके व्यक्तित्वपर, बहुत श्रन्छा प्रकाश डालता है। उसके कुछ अश निम्न प्रकार हैं:

"पहली बार मैने फर्बरी १८६५ में कार्ल मार्क्षको देखा। २८ सितम्बर १८६४ को सेन्ट मार्टिनहालमे इन्टर्नेशनलकी स्थापना हुई। मैं पेरिससे इस अभिनव संगठनके कार्यकी प्रगतिकी खबर लेकर आया था। मेशिये तोलें...ने सुमे एक परिचयपत्र दिया था।"

"मैं उस वक्त २४ वर्षका था। पहली मुलाकातके समय जो उनका प्रमान मेरे ऊपर पड़ा, उसे मैं जीवन मर नहीं मुला सकता। उस समय मानसिका स्वास्थ्य खराव था, श्रीर वह "किपटाल" की प्रथम जिल्दके लिये कड़ी मेहनत कर रहे थे (जो दो साल बाद १८६७ ई० में प्रकाशित हुआ)। उन्हें इसकी बड़ी चिन्ता थी, कि शायद वह उसे समाप्त न कर सकें। वह तरुस-जनीका बहुत स्वागत करते थे। कहा करते थे—'मुभे आदिमयोंको सिखलाकर तैयार करना है, जिससे मेरे चले जानेपर वह कम्युनिच्म प्रचारको जारी रख सकें।"

"कार्ल मार्क्स उन दुर्लम आदिमियोंमें थे, जोकि विज्ञान श्रीर सार्वजनिक जीवन दोनोंमें प्रथम पंक्तिके योग्य होते हैं। इतनी धनिष्ठताके साथ इन दोनों चेत्रोंसे उनका सम्बन्ध था, कि हम उन्हें समस्त नहीं सकते, यदि एक ही साथ उन्हें साइन्सके श्रादमी श्रीर समाजवादी योद्धा दोनों नहीं समस्त लेते कि उनका कहना था): 'साइन्स (विज्ञान) स्वार्थी श्रानन्दके लिये नहीं होता चाहिये। जो इतने सौमाग्यशाली हैं कि श्रपना समय साइन्सके श्रनुसरस श्रीर श्रानुसंवानमें लगा सकते हैं, उन्हें सबसे पहले श्रपन ज्ञानको मानवताकी सेवामें लगाना चाहिये।' उनका बहुत थ्रिय वचन था 'दुनियाके लिये काम करों ।

"मार्क्षने अपने कार्यचेत्रको अपनी जन्मभूमि ही तक सीमित नहीं रखा है चह कहा करते थे 'मैं दुनियाका नागरिक हूँ | जहाँ मी हूँ मैं वहीं काम करता है हूँ 1..."

"पहली बार जब मैंने उन्हें मेट्लेन पार्क रोडमें उनके अध्ययन-कल्में देखा, उस समय वह मुफे एक अदितीय और अनयक समाजवादी आन्दोलक के तौरपर नहीं, बिल्क विद्वान्के रूपमें मालूम हुये। सम्य दुनियाके सभी मालो से पार्टीके साथी उनके अध्ययन-कल्में समाजवादी विचारपाराके आचार्यसे राय लेने आते थे। वह कमरा अब ऐतिहासिक बन गया है। जो कोई मार्क्सके बैक्कि जीवनके अन्तरंग पहलूको समक्ता चाहता है, उसे इस कमरेसे परिचित होना चाहिये। वह पहली मंजिलपर था। बगीचेकी और खुलनेवाले एक चौहे जंगलेसे उसमें काफी प्रकाश आता था। आग जलानेके स्थानकी दोनों तर्फ और जंगलेके सामने मी किताबदानोंसे कमरा मरा हुआ। था। किताबदानोंके

कपर श्रवनारो श्रीर हस्तलेखों के पैकेट छत तक गॅजे हुये थे। जंगलेकी एक तरफ दो मेजे थीं, जिनपर भी उसी तरह फुटकर पत्र, श्रवनार श्रीर किताकें भरी हुई थीं। कमरेके बीचमें सबसे श्रिषक प्रकाश रहता या, वहीं पर ३ फुटलम्बी, २ फुटचौड़ी सीधी-सादी लिखने की मेज श्रीर एक लकडीकी श्रारामकुर्सी थी। एक किताबदान श्रीर इस कुर्सीके बीचमे जंगलेकी श्रीर मुँह किये चमडेसे दंका एक सोफा था, जिसपर विश्राम करनेके लिये समय-समय मार्क्स लेट जाया करते थे। श्रागदानके ऊपरवाले छज्जे पर श्रीर भी किताबें थीं, जिनके बीच-जीचमें सिगार, दियासलाईके बक्स, तम्बाकुका डब्बा, पेपरवेट, श्रपनी लड़कियों, बीबी, फ्रेडरिक एंगेल्स श्रीर विलहेल्म वोल्फके फोटो थे।

मार्क्स बहुत ज़्यादा तम्बाक् पीते थे। उन्होंने मुक्तसे कहा था: 'कपिटाल उतना भी पैसा नहीं ले ऋायेगा, जितनेकी कि इसके लिखते समय मैंने सिगार पी डाले।' दियासलाइयोके इस्तेमालमें तो वह बहुत ही फज्लखर्च थे। वह ऋपने पाइप या सिगारफो जलाते वक्त ऋक्सर भूल जाते। जल जानेके बाद भी वह एकके बाद एक दियासलाइयाँ जलाकर उसे सुलगाते हुये थोड़े ही समयमे एक पूरी दियासलाईकी डिजिया खतम कर देते।

"वह श्रपनी कितानों श्रौर कागजोंको ठीकठाक करके रखनेके लिये किसी— को कभी इजाजत नहीं देते थे—वस्तुतः यह ठीकठाक करना नहीं, बल्कि गड़-बड़ी पैदा करना था। कितानें जो देखनेंमें श्रस्त-व्यस्त रक्खी मालूम होती थीं, वह िर्फ बाहरी तौरसे ही, नहीं तो हरेक चीज श्रपने ठीक स्थानपर थी, श्रौर बिना ढूँढनेका प्रयत्न किये वह जिस कितान या हस्तलेखको चाहते, उसे हाथसे उठा लेते थे। बातचीत करते समय भी वह श्रक्सर स्त्रयं कितानमेंसे तत्सम्बन्धित वाक्य या तसवीर दिखानेके लिये रकं, जाते। श्रपने श्रध्ययन-कच्छे वह एक हो गये थे, वहाँ कितानें श्रौर कागज-पत्र उसी तरह उनकी श्राज्ञाका श्रनु-सरण करते थे, जैसे उनके शरीरांग।

"वह अपनी किताबोंको ठीकसे रखनेमें बाहरी।एकरूराताका बिल्कुल ध्यान नहीं करते थे, एक ही पॉलीमें पास-पास क्वातों (चारपेची), अठपेची जिल्हें तथा छोटी-छोटी पुस्तिकार्ये रक्खी रहतीं। वह अपनी पुस्तकोंको आकारके अनु- सार नहीं, बल्कि विषयके श्रनुसार लगाते थे। उनके लिये कितावें शौकीनीकी चीज नहीं, बल्कि बौद्धिक हथियार थीं। वह कहा करते थे 'ये मेरी दासियाँ हैं, इन्हें मेरी इच्छानुसार सेवा करना होगा।' वह पुस्तकोंके रूप, जिल्दु कागज या छपाईकी सुन्दरताका जरा भी ख्याल न रखते ये-वह पन्नोंके कोने मोड़ देते, वाक्योंके नीचे पेन्सिल खींच देते श्रीर हाशिये को पेन्सिलके निशानों से ढाँक देते । वह अपनी पुस्तकोंपर नोट नहीं लिखा करते थे, किन्तु प्रश्न-चिन्ह या त्राश्चर्यचिन्ह किये बिना नहीं रहते थे।...पेन्सिलके निशान करने का उनका तरीका ऐसा था, कि उससे वह बड़ी आसानीसे अपेक्तित वाक्यको टूँद निकालते थे। कुछ वर्षोंके अन्तरसे अपनी नोटबुकों श्रीर किताबोंमें चिन्ह किये वानयोंको अपनी स्मृति ताजा करनेके लिये फिरसे पढ़नेकी उनकी आदत थी--- उनकी स्मृति असाधारण तीव और निर्भान्त थी। बहुत वचपनसे हीः श्रपरिचित भाषाके पद्योंको कंठस्य करनेकी हेगलकी हिदायतके श्रनुसार उन्होंने श्रपनी स्पृतिको श्रम्यस्त किया था। हाइने श्रीर गोयये उन्हें कंटस्य ये श्रीर बातचीतमें श्रनसर उनका उद्धरण देते ये। कवियोंकी कृतियोंको वह लगातार यदा करते । सभी यूरोपीय भाषात्र्योंके कवियोंकी कृतियोंको जुनकर वह लगातार पढ़ा करते थे।...

" अपनेको विश्राम देते वह कमरेके एक छोरसे दूसरे छोर तक टहलां करते, जिसके कारण जंगला और दरवाजेके बीचके कालीनका तार-तार हो एक पगडंडी वन गई थी, जो उसी तरह विल्कुल स्पन्न थी जैसे किसी घासके मैदानकी पगडंडी। कभी-कभी वह सोकापर लेटकर उपन्यास पढ़ते। वह अनसर दो ट तीन उपन्यास एक साथ शुरू किये रहते और उन्हें बारी-वारीसे पढ़ते — डारिवन की तरह वह उपन्यास पढ़नेके वहे प्रेमी थे। १८ वी शतान्दीके उपन्यासोंको वह स्यादा पसन्द करते थे, और फील्डिंगकी "टॉम जोन्ज" विशेष तौरसे उन्हें प्रिय था। आधुनिक उपन्यासकारोंमें उन्हें सबसे अधिक पसन्द थे पाल दें काक, चार्ल लीवर, ज्येष्ट दूमा और सर वास्टर स्काट—स्काटकी 'ओल्ड मोर्टेकिये' स्वार्ल लीवर, ज्येष्ट दूमा और सर वास्टर स्काट—स्काटकी 'और डा प्रेमिये' स्व

^{*} Old Mortality.

को वह मास्टरपीस सममति थे। साहसयात्राश्चों श्चीर व्यंगात्मक कहानियोंको पढनेकी उन्हें विशेष रुचि थी। सेवाते श्चीर वालजक को वह उपन्यासके महान् श्चाचार्य मानते थे...बालजकके साथ उनका इतना गहरा सम्मानका भाव था कि वह "लाकमदी ऊमेन" के की समालोचना लिखना चाहते थे।...

"मार्क्स युरोपकी सभी प्रमुख भाषाये पढ़ सकते थे, श्रीर उनमेसे तीन— बर्मन, फ्रेंच श्रीर इंगलिशमें इतने सुंदर दगसे लिख सकते थे, कि जिसे देख उन भाषाश्रोंसे परिचितोंके दिलमें सम्मान पैदा होता। वह कहा करते थे: 'जीवन-संघर्षमें विदेशी भाषा हथियारका काम देती है।' उन्हें भाषाश्रोके सीखने की बढी प्रतिभा थी, जिसे उनकी लडकियोने भी दायभागमें पाया था। पचास वर्षके हो चुके थे, जब कि उन्होंने रूसी सीखना श्रुरू किया।...छ महीनेके मीतर उन्होंने इतनी प्रगति कर ली, कि रूसी कवियों श्रीर लेखकों खास करके पुश्किन, गोगल श्रीर श्चेदरिनकी कृतियोंको मूल भाषामे पढ़कर श्रानन्द ले सकते थे।...

मानसिक विश्रामके लिये कविता श्रीर उपन्यास पढनेके श्रितिरिक मार्क्षका गिण्तिके लिये श्रत्यिक प्रेम था। श्रलज्ञा उन्हें हार्दिक सतोष देता था... श्रपनी पत्नीकी श्रान्तिम बीमारीके दिनोमें श्रपने वैज्ञानिक कार्योंको वह यथापूर्व... नहीं कर सकते थे। पत्नीके दुस्सह कष्टोंके विचारसे श्रपनेको वचानेके लिये वह गिण्तिसे हूच जाते थे। श्रातिरिक दुस्सह पीडाके इस कालमें उन्होंने "श्रन-न्तलव कलन"। पर एक निवन्ध लिख डाला था, जो कि जानकार गिण्तिशोके मतानुसार प्रथम श्रेगी के महत्वका है।...

मार्क्षके पुस्तकालयमें एक हजारचे ऋषिक जिल्दें थीं, जिन्हें ऋपने छनु-संघानके जीवनमें उन्होंने बढी मेहनतचे जमा किया या और जो उनकी ऋावश्यक-ताऋोंके लिये ऋपर्याप्त थीं । ऋनेक वर्षों तक वह लगातार ब्रिटिश म्युजियमके वाचनालयमें जाया करते थे ।

"यद्यपि वह सदा बहुत देरसे सोने जाते थे, लेकिन सबेरे ८ श्रीर ६ के

[#] La Comedie humaine. † Infinitisimal calculus.

बीच सदा उठ खड़े होते । काली काफीका एक प्याला पीकर वह दैनिक पढ़ते, फिर अपने अध्ययन-कचमें चले जाते, जहाँ वह रातके दो-तीन बजे तक काम करते--वीचमें सिर्फ खानेके समय उठते श्रीर (जब मौसिम श्रन्छा होता) तो हेमस्टेडहीथमें टहलने जाते । दिनमें सोफापर एक या दो घंटे सो जाते । जवानी में सारी रात पढ़ने-लिखनेमें बिता देनेकी उन्हें ऋादत थी। मार्क्सके लिये काम एक बीमारी थी और वह उसमें इतने लीन हो जाते कि अपना भोजन भी भूल जाते थे। त्रक्सर उन्हें बार-बार बुलाया जाता, तब वह नीचे उतरकर भोजन-शालामें त्याते और मश्किलसे अन्तिम कौर खतम करते ही वह फिर अपनी मेजकी श्रोर लौट पड़ते। वह श्राल्यमोजी थे श्रीर मूख उन्हें कम लगती थी, जिसको उत्तेजित करनेके लिये वह बहुत मसालेदार श्रधिक तली चीजों—हैम, भूनी मछली, मुख्जा श्रीर श्रचार खाया करते थे। दिमागकी जबर्दस्त मेहनत के लिये उनके पेटको दश्ड भोगना पड़ता। सचमच इसके लिये ही उनका सारा शरीर बलिदान हुन्ना । चिन्तन उनके परम न्नानन्दकी वस्तु थी । शारी-रिक न्यायाममें केवल चहलकटमी वह करते थे। वह धंटों टहल सकते थे श्रीर दात करते तथा पाइप-सिगार पीते जरा भी थकावटका परिचय दिये पहाड़ोंपर भी चढ़ जाते थे। कहा जा सकता है, ऋपने ऋध्ययन-कच्चमें टहलते समय भी वह ग्रपना काम करते थे। टहलनेके समय जो विचार उनके दिमागरें श्राता, उसे कागजपर उतारनेके लिये थोड़ी देर वह ऋपनो मेजपर बैठ जाते थे।...

"मार्क्षके हृदयको जानने श्रीर उनके प्रेमको... श्रन्छी तरह देखनेके लिए उन्हें श्रपने परिवारके बीचमें, इतवारकी शामको श्रपनी मित्रमंडलीके बीच देखना चाहिये था। ऐसे समय वह बड़े ही श्रानन्दी साथी, हाजिर-जवाबी, श्रन्तुत-मजाकी दिखाई पड़ते—उनका टहाका हृदयके श्रन्तस्तमसे श्राता था।...

"वह वन्चोंके लिये भद्र, कोमल श्रीर दूसरोंके भावोंका सम्मान करनेवाले पिता ये। वह श्रवसर कहा करते थे: 'वन्चोंको श्रपने माता-पिताको शिवित करना चाहिये।' उनकी वेटियाँ उन्हें वहुत प्यार करती थीं, श्रीर वाप श्रीर उनके वीचके सम्बन्धमें कहीं पैतृक-शासनका चिन्ह भी नहीं मिलता था।... उनकी लहकियाँ उनहें मित्र जैसा समक्षतीं श्रीर साथ खेलुके साथी जैसा वर्ताव

करतीं। वह उन्हें बापू नहीं, बिल्क 'मूर' कहकर सम्बोधित करतीं। श्रपेद्धाकृत श्रपिक श्यामल रंग श्रीर श्रावनूस जैसे काले बालों तथा दादियों के कारण उन्हें यह नाम मिला था। १८४४ ई० में मी, जब कि ३० वर्षके भी नहीं हुये थे, कम्युनिस्ट लीगके उनके साथी मेम्बर उन्हें 'बापू मार्क्स' कहा करते थे। वह श्रपने बच्चों के साथ घंटों खेला करते थे।"

२. लीबक्तेख्ट की नजरोमें

लीवक्नेख्ट २६ मार्च १८२६ में (मार्क्षे सात साल पीछे) पैदा हन्ना था। उसने श्रध्यापक बननेकी तैयारी की थी. लेकिन तरुणाईमें ही क्रान्तिने श्रपनी त्रोर खींच लिया। २२-२३ सालकी उमरमे १८४८-४९ ई० की जर्मन-क्रांतिमें उसने भाग लिया, जिसके असफल होनेपर उसे भागकर लन्दन चला जाना पडा, जहाँ वह मार्क्सके प्रभावमें आया। १८६२ ई॰ में वह जर्मनीमें लौटकर मजदूर-स्रान्दोलनमें जुट पडा। जर्मन-मजदूरोंके दूसरे प्रमुख नेता न्नागस्ट वेवल (१८४०-१९१३ ई॰) के साथ मिलकर लीवननेख्ट १८६९ ई॰ मे सामाजिक-जनतात्रिक पार्टी कायम की श्रीर पार्टीके पत्र "फोक्स्टाट" (जन-राज्य) श्रौर पीछे "फोरवैट्से" (श्रव्रगामी) का सम्पादन किया। दूसरे पत्र का सम्पादन करते हुये ७ ऋगस्त १६०० को उसकी मृत्यु हुई । फास-प्रशिया-युद्ध के समय वह राइखस्टाग (पार्लियामेन्ट) का समाजवादी सदस्य या। श्रारुतेस-लोरनके हृडपनेके खिलाफ तथा युद्धके खर्चके विरुद्ध वोट देनेके कारण बिरमार्कने उसे जेलमें डाल दिया। वह जन्मजात जननेता, प्रतिमाशाली वक्ता श्रीर कमकरोंके लिये लेखों श्रीर पुस्तिकार्थ्योंके लिखनेमें दच लेखक या। लीवननेख्टने १८६६ ई० में कार्ल मार्क्सकी जीवनी प्रकाशित की थी, जिससे मार्क्सके जीवनके वैयक्तिक पहलूपर कितना ही प्रकाश पड़ता है:

"मैं १८५० ई० की गर्मियोंमें स्वीजलैंडसे लन्दन पहुँचा।...मार्क्स-परिवार से उन्हीं गर्मियोंमें लन्दनके नजदीक कहीं...मिला, मुक्ते याद नहीं ग्रीनविचमें या हेम्पटनकोर्टमें।...

१८५० ई० से १८६२ ई० तक प्राय: बारह वर्षों तक लीवक्नेस्ट लन्डनमें रहा। वहाँ वह मार्क्सके परिवारका एक व्यक्ति हो गया था। बच्चोके प्रति मार्क्षके प्रेमके बारेमें लीवननेख्टने लिखा है: "मार्क्स मजबूत श्रीर खर स्वभाववाले सभी व्यक्तियोंसे प्रेम करते थे, बच्चोंसे तो उन्हें श्रसाधारण प्रेम था। वह ऐसे श्रस्यन्त कोमल पिता थे, बो कि श्रपने बच्चोंके साथ घंटी बच्चा चन सकता था। रास्तेमें मिलनेवाले श्रपरिचित बच्चों, विशेषकर श्रसहाय श्रीर गरीव बच्चोंके प्रति चुम्बककी तरह उनका मन खिच जाता था। सैकड़ों बार गरीबोंके मोहल्लेमें घूमते समय श्रलग हो चिथड़ेमें लिपटे दरवाजेपर बैठे किसी बच्चे के छोटे से हाथमें एक या श्राचा पेन्स खलने, तथा उसके बालोंको सहलानेके लिये वह हमारा साथ छोड़कर चले जाते।...

"शारीरिक कमजोरी श्रीर श्रमहायावस्था हमेशा उनके हृदयमें सहानुभृति पैदा कर देती।...एक शामको उनके साथमें ख्रोम्नीवसके ऊपर सवार हो हैम्पटेड रोडकी त्रोर जा रहा था। वहाँ... ग्रडडेपर हमने लोगोंकी भीड़ देखी, जिसके भीतरसे एक स्त्री चिल्ला रही थी-'खन! खन'! मार्क्स विजलीकी तरह नीने उतरकर चले श्रीर मैं उनके पीछे-पीछे था। मैं उन्हें पकड़कर रोकना चाहता था, जो नंगे हाथोंसे बन्दककी गोली पकड़ रखने जैसा प्रयत्न था। एक चर्णमें ही हम मीड़में पहुँच गये। लोगोंकी भीड़ हमारे पीछे घेरे हुई थी। 'क्या बात है ? — जो बात थी, वह जल्दी ही स्पष्ट हो गई। एक शराबी श्रीरतने श्रपंते पतिसे भगड़ा कर लिया था। पति उसे घर ले जाना चाहता था श्रीर वह मनाइ रही थी, ऐसी चिल्ला रही थी, मानों भृत चढ़ा हुन्ना हो ।...हमने देखा, कि वहाँ हमारे दखल देनेकी कोई जरूरत नहीं है। भगड़नेवाले दम्पतीने भी इसे देखा श्रीर तुरन्त ही उन्होंने श्रापक्षमें शान्ति स्थापित कर ली, फिर वह हमारी श्रोर टूट पड़े। चारों श्रोरकी भीड़ 'सारे विदेशियों' के विरुद्ध भयानक कॉर्ड करनेके लिये तैयार दील पड़ी । स्त्री लास वौरसे मार्क्सके खिलाफ स्नागवंगूला हो गई थी। उसने उनकी मध्य चमकती काली दाढीपर त्राक्रमण करना चाहा मैंने व्यर्थ ही तूफानको शान्त करनेका प्रयत्न किया। अगर लड़ाईके मैदानमें उसी समय दो मजबूत कान्सटेबल न त्रा गये होते, तो हम भीतर दलल देनेकी उदाराशयताका बहुत महिंगा मोल चुकाते । जरा भी बाल बाँका हुये बिना निकृत कर श्रोम्नीवस पर बैठ घरकी श्रोर रवाना होते समय हमने अपने आस्यकी

सराहा । इसके बाद इस तरहके दखल देनेके प्रयत्नमे मार्क्स श्रिष्ठिक सावधान रहा करते ।

यदि कोई विज्ञानके इस नायकके मावोकी गम्भीरता श्रीर बचपनका पूर्ण श्चान प्राप्त करना चाहता "तो मार्क्सको अपने बच्चोके भीतर देखनेकी जरूरत थी। श्रपने छट्टीके चाणों या टहलनेके समय उन्हें वह साथ लिये-लिये फिरते श्रीर उनके साथ ऋत्यन्त हर्षोन्मत्त हो खेल खेलते. बच्चोके बीच बच्चे जैसे मालूम होते । हेम्प्स्टेडहीथर्मे हम अक्सर 'घोडसवार' का खेल खेलते : मैं छोटी-छोटी बन्चियोमेसे एकको अपने कन्चेपर उठाता और मार्क्स दूसरेको । फिर हम दोनो कदम श्रीर कुदान करते एक दूसरेसे होड करते-कमी-कमी घोडसवारोंके बीच छोटी लढाई भी हो जाती। लढिकयाँ लढकोकी तरह ही अनियत्रित स्वभावकी थीं, और बिना रोये मार सह सकती थी। मार्क्सके लिये बच्चोंका सत्सग बहुत श्रावश्यक था-उनके द्वारा वह श्रपनी थकावट भूल कर ताजगी श्रनुभव करते। जब उनके अपने बच्चे वड़े हो गये या मर गये, तो उनका स्थान नातियों और नातिनोने लिया। नन्ही जेनीने १८७० वाली दशाब्दीके आरम्भ-मे लाग्वेसे व्याह किया। लाग्वे पैरिस कमूनके शरणार्थियोमेसे था। इनके कई मनमुखी बन्चे घरमें थे। सबसे वडा जीन या (जानी)... अपने नानाका वहत प्रिय था। उनके साथ वह जो चाहे सो कर सकता या, यह वह जानते थे। एक दिन जब मै लन्दन गया हुआ था, जानी...के दिमागमें एक चमत्का-रिक विचार पैदा हुआ: मूर (मार्क्स) को श्रोम्नीवस (वग्गी) वनाया जाय। कोचवानकी गद्दीपर अर्थात मार्क्सके कन्धोपर वह स्वय वैठा श्रीर एंगेल्स तथा में बगी के घोड़े बने। जब हम ठीक तरहसे जुट गये तो मेटलेंडपार्क रोडमें मार्क्सके कुटीरके पीछेकी छोटी सी फुलवाडीमें एक जबर्दस्त दौड़—मैं कहना चाहूंगा भयंकर दौड—शुरू हुई । शायद रिजेन्ट पार्कम एगेल्सके घरमें यह हम्रा हो। .. घोड़े दौड़े जा-म्रो । म्रन्तर्राष्ट्रीय पुकार थी, जर्मनमें, इगलिशमे श्रीर फ्रेचमे—गो श्रॉन ! क्षि विता !» हुर्रा । मूरको भी इतना दौडना पडा, कि उनके चेहरेसे पसीना चूने लगा। यदि एगेल्स या मैं अपनी गति कुछ धीमा

[#] Go on! Plus wita

करना चाहते तो निष्ठुर कोचवानका कोड़ा तुरन्त हमारी पीठपर पड़ता : तुम बदमाश घोड़े ! आँ अवाँ इत्यादि । अन्तमें ऐसी हालत हुई, कि मार्किके लिये श्रीर आगे बदना मुश्किल हो गया । फिर चोनीचे समभौतेकी बात चली और अन्तमें विराम-सन्धि स्वीकृत हुई ।"

३. विरोधी

जीवनकी श्रन्तिम दशाब्दियोंमें मार्क्स श्रव पहलेकी श्रपेक्त लोगोंमें प्रसिद्धि श्रीर सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते ये, तो भी वह श्रलग-थलग रहना पसन्द करते थे। उनके श्रपने घरमें श्रव लोगोंका श्राना-जाना बहुत था। शरणार्थी हमेशा उनसे सहायता श्रीर सलाह पाये बिना नहीं रहते थे। शार्ल लॉग्वेने १८०२ ई० में मार्क्सकी लड़की जेनीसे व्याह किया था, लेकिन योग्य होते हुये भी श्रपने श्वसुर-कुलसे उसकी वैसी वैयक्तिक या राजनीतिक घनिष्ठता नहीं स्थापित हुई जैसी कि लाफार्गकी। सबसे छोटी लड़की एलिनोर एक फ्रेंच लेखक लिजागरेको व्याही जानेवाली थी, लेकिन मार्क्सको वह श्रव्छा नहीं लगता था। श्रक्तमें कुछ श्रागा-पीछा करनेके बाद यह व्याह नहीं हो सका।

"कपिटाल" की बुरी ख्रालोचना करनेवालों में झूरिंग भी एक था, जिसकी ख्रपने समाजवादका बड़ा श्रमिमान था। २४ मई १८७६ को एंगेल्पने मार्कको लिखा था: "यह साफ मालूम होता है कि इन लोगोंके दिमागमें दुम्हारे उनर नीचतापूर्ण आक्रमण करनेके कारण झूरिंग ख्रजेय हो गया है । यदि हम उसकी तैद्धान्तक खुराजातोंकी खिल्ली उड़ायें तो यह उसके उन्पर हमारा वैयक्ति चदला छोड़ और कुछ नहीं होगा।"...किन्तु अन्तमें एंगेल्सको झूरिंगकी औष्ट्रान देना ही पड़ा, और उन्होंने ''फोरवेर्ट" में १८७७ ई० के ख्रारम्मसे कई लेख उसके विरुद्ध लिखे, जो "कपियाल" के बाद मार्क्ववादका एक बड़ा ही सुन्दर और सबल ग्रंथ सावित हुआ। (मई १८७७ में) गोथामें जो पार्टीकी कांग्रेस हुई, उसमें एंगेल्सके इन लेखोंके विरुद्ध बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ और उनके पार्टीके मुखपत्र "फोरवेर्ट्य" में छापे जानेका विरोध किया गया। किन्तु अन्तमें समस्तीता हो किसी तरह बला टली।

[#] En avant.

१८७७ ई० में गोथा-काग्रेसने यह मी निश्चय किया, कि उसी सालके सितम्बरमें घेन्तमें होनेवाली विश्व-समाजवादी-काग्रेसमें पार्टीके प्रतिनिधि बनकर लीबक्नेस्ट मेजे जायं। इस कांग्रेसको वेल्जियमके साथियोंने बुलाया था, जिनका मन श्रव श्रराजकवादसे भर गया था श्रीर वह हाग-काग्रेसमें हुई फूटको मिटाने-की कोशिश करना चाहते थे। बक्रनिनके अनुयायियोने अपनी कांग्रेसें १८७३ (जेनेवा) में, १८७४ ई० (ब्रुशेल्स) में श्रीर १८७६ ई० (बेर्न) में की थीं, लेकिन प्रतिनिधियोंकी सख्यासे मालूम हो रहा था, कि उनका सगठन कम-जोर होता जा रहा है। लीवक्नेख्ट कमी बक्कनिनका मित्र नहीं रहा, लेकिन बाजेल-काग्रेसके समय वह उतना आगे नहीं बढ़ सका। दूसरी ओर जूल ग्विदे (फ्रांस), चालों चाफियेरो (इताली), कैसर दे पेपे (बेल्जियम) श्रीर पॉल अखेलराद (रूस) हॉग-कांग्रेसके समय और उसके बादमें भी देर तक बक्किनन के जबर्दस्त समर्थक रहे। पीछे जब बड़े उत्साही मार्क्सवादी बन गये, तब भी वह यह स्वीकार करते थे, कि हमने मार्क्स सहमत श्रीर बकुनिनके सम्मिलित विचारोंके आधारपर प्रगति की है। वक्कनिनका अराजकवाद दिनपर दिन गिरता ही गया । उसके सैद्धान्तिक विचार ही श्रंडबड नहीं थे, बल्कि व्यवहारत: भी आधुनिक सर्वहारोंके द्वरन्तके किसी हितके प्रश्नमें वह कोई सहायता नहीं दे सकते, जिसके कारण बकुनिनवाद एक आशा और विश्वासहीन सम्प्रदायसे आगे नहीं बद सका। १८७६ ई० में बर्नमें १८७७ ई० में घेन्तमें विश्व-सामाजवादी-काग्रेसका बुलाना इस वातका स्वूत या, कि अराजकवाद जनताको श्रपनी श्रोर करनेमें बिल्कुल श्रायफल रहा । यह काग्रेस ६-१५ सितम्बर तक घेन्तमें हुई, जिसमें ४२ प्रतिनिधि शामिल हुये। इसके ११ अराजकवादी प्रतिनिधियों में गुइन्त्रोमक श्रीर क्रोपत्किन (रूसी) मी थे। इसके पुराने समर्थको में से बहुत से ऋब समाजवादी पच्चकी ऋोर मिल गये, जिनमें वेलिजयन प्रति-निधियोंके श्रतिरिक्त अंग्रेब हेल्स भी था। इस पक्षके नेता लीवक्नेख्ट, ग्रोलिच श्रीर फ्रेंकेल थे।

[#] Guillaume.

त्रराजकवादी भी त्रपनी कमजोरियोंको समस्तते थे, इसिलये उन्होंने बहस-मुबाहिसेसे कड़वाहट पैदा करनेकी जगह त्र्यधिकतर समस्तीता करनेका प्रयत्न किया. किन्तु समस्तीतेका कोई परिणाम नहीं निकला।

इसी समय रूस श्रीर तुर्कीकी लड़ाई शुरू हो गई। मार्क्सने श्रपने विचार लीबक्नेख्टको लिखे पत्रोंमें ऋपनी सलाह दी थी। ४ फर्वरी १८७८ के पत्रमें मार्क्सने लिखा था: "हम निश्चित तौरसे तुर्कोंके पत्तमें हैं, जिसके दो कारण हैं: सबसे पहले इसलिये कि हमने तुर्क-किसानों ऋर्थात् तुर्क-जनसाधारसका श्रध्ययन करके देखा, कि वह यूरोपीय किसानोंके श्रत्यन्त सक्तम श्रीर चरित्रवलमें बहुत पनके प्रतिनिधि हैं। दूसरी बात यह, कि रूसकी पराजय सामाजिक परिवर्त्तनको बहुत जल्दी ला सकती है, क्योंकि इस सामाजिक परिवर्तनके तत्व रूसमें सभी जगह मौजूद हैं। इस परिवर्त्तन द्वारा सारे यूरोपका भी परिवर्त्तन शीघ गतिसे होगा।" तीन महीने पहले मार्क्सने सोर्गेको लिखा था: "यह संकट यूरोपीय इतिहासका एक नया मोड़ है। मैंने मौलिक स्रोतों, सरकारी श्रीर गैर सरकारी दोनों (सरकारी स्रोत बहुत थोड़े से लोगोंको प्राप्य हैं, मैंने उन्हें पीतरखुर्गके मित्रोंकी सहायतासे प्राप्त किया) के श्रध्ययन से रूसी स्थितियोंका श्रध्ययन किया है। रूस बहुत दिनोंसे क्रान्तिके देहलीपर खड़ा है, श्रीर वहाँ स्भी श्रावश्यक तत्त्व तैयार हैं। तुकाँने केवल रूसी सेना श्रीर रूसी कोश ही नहीं, विलक व्यक्तिगत तौरसे रूसी राजवंश (जार, युवराज श्रीर छ दूसरे रोमनोफों) को भी लथाइते विस्फोटको जल्दी कर समयमें वर्षोंकी कमी कर दी। रूसी विद्या-थियोंका मूर्खंता पूर्णं खिलवाड़ अपने भीतर व्यर्थका है, लेकिन वह एक निदान है। रूसी समाजके सभी श्रंग श्रार्थिक, नैतिक श्रीर बौद्धिक तौरसे छिन्न-मिन होने की अवस्था में हैं।"

मार्क्सकी मृत्युके पाँच साल पहले लिखे गये इन पंक्तियोंसे मालूम होता है, कि ग्रधिक ग्रथ्ययन ग्रीर गम्भीरतापूर्वक विचार करनेके बाद मार्क्स इस नतीजेपर पहुँचे थे, कि रूसमें क्रान्तिकी सम्मावना उससे कम नहीं है, जितनी कि पिएचमी यूरोपमें। ग्रस्त तुर्कीकी पीठ ठोकनेवालोंके विश्वासधात तथा ग्रपनी वेवकृषियोंके कारण रूस-तुर्क-युद्धके परिणामस्वरूप रूसमें क्रान्ति नहीं होने

पाई, श्रीर न पश्चिमी यूरोपमे उसका विस्तार हुआ | इसके विरुद्ध श्रव विस्मार्कने बर्मनीमे कमकरोपर दमन शुरू किया । संगठनकी फूट श्रीर शिथिलताके कारण पार्टीकी किस ग्रोर बिचे बर्जी भी श्रपनी श्रादतके श्रनसार इस दमनमे साथ छोड़कर भागने लगे। जर्मन पार्लियामेन्टमे चुने गये समाज-वादी मेम्बरोमे घोर फुट पड गई। उनमें एक पत्तका नेता मेक्स कैजेर* था। उसके एक भाषणपर कार्ल हर्शने जवर्दस्त श्राक्रमण किया. जिसका राइखस्टागके समाजवादी गिरोहने विरोध किया, क्योंकि कैजरने उनकी अनुमतिसे उक्त भाषण दिया था। कार्ल हर्श एक तरुण पत्रकार था, जो लीवक्नेस्टके जेलमें रहनेके सालोमें उस पत्तकी ऋरिसे ऋरि बढ़ा था। पीछे वह पेरिसमें माग गया. जहाँसे जर्मनीमें त्राम चमादानके बाद लौटा। त्रात्र उसने फिर जर्मन-पार्टीके लिये काम करना शुरू किया। १८७८ के दिसम्बरके मध्यमें "डी लाटेनें" के नामसे एक साप्ताहिक पत्र ब्रेदा (वेल्जियम) से निकालने लगा । हर्शपर मार्क्ष और एगेल्सका पूरा विश्वास था। वह उसके पत्रके लिये लेख लिखनेको भी तैयार थे। पार्टीकी तरफसे जरिचसे पत्र निकालनेका निरुचय हम्रा। वहाँ रहनेवाले पार्टीके तीन मेम्बर श्रम्म, कार्ल होखवेर्ग श्रीर एडवर्ड वेर्नस्टाइन उसके संचालक नियुक्त किये गये। बहत देर करके जुलाई १८७६ में वह "सामाजिक विज्ञान और सामाजिक राजनीतिका वर्षपत्र" के रूपमें निकला। वर्षपत्रके लेखो उसमें विशेष करके होखवेर्ग± श्रीर अम्म द्वारा लिखे तथा वेर्नस्टाइन द्वारा कुछ पंक्तियाँ जोहे 'समाजवादी आ्रान्दोलनकी आलोचना' नामक लेख को पढकर मार्क्स श्रीर एगेल्स बहुत चुन्च हुये। इसके बाद हर्शने भी उसके साथ सम्बन्ध रखनेसे इन्कार कर दिया। होखवेर्गने लन्दन जाकर मार्क्स तो नहीं लेकिन एंगेल्सने मुलाकात की. लेकिन उसकी विचार-संबंधी गडवड़ीका एंगेल्सके कपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। १९ सितम्बर १८७६ में मार्क्को सोर्गेके पास पत्र लिखते हये कहना पढा था, कि यदि नये पार्टीके नये पत्रकी यही रफ्तार रही,

^{*} Dic Laterne. † Das Jahrbuch fur Sozialvisenschaft and sozial pobitio. † Hoch berg.

तो हमें खुलकर उसके विरुद्ध लिखना पड़ेगा। आगे इसकी जरूरत नहीं पड़ें क्योंकि वर्षपत्रको तीनों और आगे नहीं चला एके। जूरिचके 'सोजियार हैमोकाट'' (समाजवादी जनतांत्रिक) के सम्पादनका भार फोलमरने ले लिया लेकिन वह अच्छी हालतमें नहीं निकल रहा था। जर्मन समाजवादियोंको कितनी कठिनाईके भीतर काम करना पड़ता था, इसे मार्क्स अच्छी तरह समें भते थे, इसीलिये ५ नवस्वर १८८० के पत्रमें उन्होंने सोगेंको लिखा थाः ''जिन लोगोंको दूसरे देशोंमें अपेचाइत शान्ति और निश्चिन्तताका जीवन वितानेका अवसर मिला है, उन्हें अत्यन्त कठिन परिस्थितियोंमें और मारी बिलदानके साथ जर्मनीमें काम करनेवालों में रहा है, बूद्वांजीको खुश करनेका कारण वननेके लिये कठिनाइयाँ उत्यन्त करनेका आधिकार नहीं है ।''

कुछ सप्ताह बाद श्रापि काहे खतम करके शान्ति स्थापित हुई । २१ दिसम्बर १८८० को वोलमरने सम्पादक पदसे इस्तीफा दे दिया, श्रीर जर्मन पार्टी ने नेताश्रोंने उसकी जगह कार्ल हिर्श को नियुक्त किया । यह मार्क्स श्रीर एंगेल्सका संतुष्ट करनेका प्रयत्न था । हिर्श उस वक्त लन्दनमें रहता था उसको राजी करने तथा मार्क्स श्रीर एंगेल्सके साथ परिस्थितियोंपर पूरी तौरसे विचार करनेके लिये बेबल स्वयं लन्दन श्राया । वह श्रपने साथ बेर्नस्यइनको मी लेता गया था । कार्ल हिर्शने लन्दनमें रहकर काम करनेकी बातें कहीं। वर्षपत्रके कारण वेर्नस्यइनके खिलाफ जो माव पैदा हुये थे, उन्हें दूर हटानेकी कोशिश वेवेलने की। इसमें उसे कितनी सफलता हुई, यह इसीसे मालूम होगा कि वेर्नस्यइनका पत्रका श्रस्थायी सम्पादक नियुक्त कर दिया गया—श्रीर श्रन्तमें बेर्नस्यइनका पत्रका श्रस्थायी सम्पादक नियुक्त कर दिया गया—श्रीर श्रन्तमें बेर्नस्यइनका एवेया ठीक रहा, लेकिन हम जानते हैं, पीछे मार्क्स वास्तिक उत्तराधिकारी लेनिनको इस श्रवसरवादी समाजवादीके ग्रहती वास्तिक उत्तराधिकारी लेनिनको इस श्रवसरवादी समाजवादीके ग्रहती जवाब देनेके लिये कलम उठानी एई।

[#] Hirsch.

फासमें भी बहुत से उतार-चढ़ावके बाद पार्टीके काममें सुगन्नुगाहट शुरू हुई । शुइदे श्रव काममें जुट पडा था । वह पेरिससे "एगालिते" (समानता) पत्र निकालने लगा था । १८८० ई० के वसन्तमे ग्विदे लन्दन गया । वह तस्य समाजवादी पार्टीके निर्वाचन-प्रोगाम तैयार करनेमें मार्क्स, एगेल्स श्रीर लाफार्गसे सहायता लेना चाहता । जो प्रोग्राम तैयार हुआ, उसे मार्क्सने फ्रेंच कमकरोंकी सुक्तिके लिये मारी कदम बतलाया । मार्क्स इतने सतुष्ट थे, कि उन्होंने अपने दोनो फ्रेंच दामादो को आम ख्मादानके तुरन्त ही बाद फ्रास लौटनेके लिये सहमति प्रकट की । लाफार्गने लौटकर शुइदेके साथ काम करना शुरू किया, श्रीर लाग्वेने एक प्रभावशाली पत्र "ला जुस्तिस" (न्याय) को सेंमाला।

रूसमें स्थित खराब थी, लेकिन मार्क्स हिन्दमें वह अधिक आशापद थी। उनके "किपटाल" का वहाँ ज्यादा प्रचार हुआ। उसके महत्वको और देशोसे अधिक रूसमे माना गया—विशेषकर विज्ञान और साहित्यके च्रेत्रमें तक्योंने उसका दिल खोलकर स्वागत किया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि अभी इस समय लेकिन दस वर्षके वालक थे। उन्हें "किपटाल" में हाथ लगानेके लिये चार-पाँच सालोंकी और देर थी। तो भी वहाँके दो प्रमुख राज-नीतिक दल—जन-इच्छा पार्टी और काली वितरण पार्टी—मार्क्स विचार-धाराको विल्कुल पसन्द नहीं करते थे। दोनो पार्टियाँ अपना सबसे वहा लच्य किसानोको अपनी ओर खीचना समक्ती थीं, और इसमें वह पूरी तौरसे वकु-निनवादी थीं। मार्क्स और एगेल्सने इसपर एक मुख्य प्रश्त उठाया था: क्या रूसी किसान सगतक्ष—जो कि सूमिकी प्राचीन सम्मिलित प्रमुताके अत्यन्त विकृत रूप हैं—सूमिके प्रमुत्वके उच्चतम कम्युनिस्ट रूपमें सीघे विकसित हो सकती है, अथवा उन्हें सबसे पहले उसी तरहके विघटनकी प्रक्रियासे शुजरना पड़ेगा, जो कि पश्चिमी यूरोपीय देशोके ऐतिहासिक विकासके दौरानमें देखा गया है ? इसका जवाब मार्क्स और एगेल्सने वेरा जासुलिच द्वारा कम्युनिस्ट

^{*} Russian Peasant Community

घोषणापत्रके नये अनुवादमें निम्न शब्दोंमें दिया था: "यदि रूसी क्रान्तिने पश्चिममें कमकरोंकी एक ऐसी क्रान्तिकी पूर्व-सूचना दी, जिसमें कि दोनों क्रांतियाँ एक दूसरेकी पूरक वनें, तो रूसकी वर्तमान सम्मिलित सम्पत्तिका रूप कम्युनिस्ट विकासके आरम्भ स्थान का काम दे सकेगा।" इन्हीं विचारोंके कारण मार्क्स जन-इच्छा (नरोद्नया वोल्या) पार्टीका बहुत समर्थन करते थे, जिनकी आतंकवादी नीतिके कारण जारका इधर-उधर खुलकर घूमना बन्द हो गया था और वह एक तरहका बन्दी जीवन बिताता था। मार्क्स काला-वितरण-पार्टीके जबर्दस्त विरोधी थे, क्योंकि वह सभी तरहके राजनीतिक और क्रांतिकारी कार्रवाइयोंको छोड़कर अपनेको प्रोपेगेंडा तक ही सीमित रखती थी—अखेलराद और जेखानोफ जैसे मार्क्सवादी प्रचारक यद्यपि काला-वितरण-पार्टीसे सम्बन्ध रखते थे, लेकिन जवानी जमा खर्च और अकर्मण्यताको मार्क्स पसन्द नहीं कर सकते थे।

मृत्युके दो साल पहले जून १८८१ ई० में मार्क्सने इंगलैंडमें भी कुछ नई सुगतुगाहर देखी, जब कि हिंडमेनकी पुस्तक "इंगलैंड सबके लिये" प्रकाशित हुई, श्रीर जो जनतांत्रिक फेडरेशनके प्रोग्रामके तौरपर लिखी गई थी। फेडरेशन की शाखायें इंगलैंड श्रीर श्रायलैंडके कितने ही स्थानोंपर स्थापित हुई थीं। वह श्रर्ध-वूर्जा श्रीर श्रर्ध-सर्वहारा उग्रवादी सभाश्रोंको मिलाकर बना था। पुस्तकके श्रम श्रीर पूँजीवाले श्रध्यायोंमें मार्क्षके "कपिराल" से बहुतसे सीघे उद्धरण श्रीर कितने ही विचार लिये गये थे। तो भी हिंडमेनने मार्क्सका नाम नहीं लिया था, जिसके लिये उसका बहाना था कि मार्क्सका नाम यहाँके लोगोंको पसन्द नहीं है, श्रीर श्रॅंग्रेज विदेशियोंसे सीख लेना पसन्द नहीं करते। मार्क्स ऐसे श्रादमीके साथ श्रपना सम्बन्ध कैसे कायम रख सकते थे ?

४. पत्नी-वियोग (१८८१ ई०)

१८७८ ई० के वाद त्वास्थ्यकी खरात्रीके कारण मार्क्स कुछ काम नहीं कर सकते थे। इसी समय मार्क्स-पत्नी जेनीका स्वास्थ्य बहुत विगड़ चला, जिसका वड़ा बुरा प्रभाव मार्क्सपर पड़ना जरूरी था। श्रपनी सास (जेनी) के त्रारेमें लाफार्गने लिखा है:

"मार्क्स केवल १७ वर्षके थे, जब कि उनकी मॅगनी हो गई थी, लेकिन दोनोको नौ वर्ष तक इन्तिजार करना पड़ा, तब १८४३ ई॰ में उनका व्याह हुआ। उसके बाद वह फिर एक दूसरेसे तब तक अलग नहीं हुये, जब तक कि श्रपने पितसे कुछ ही समय पहले फ्रांउ मार्क्सका देहान्त नहीं हो गया। जेनी यद्यपि एक जर्मन सामन्त-परिवारमे पैदा हो पाल-पोसकर बडी हुई थीं, लेकिन उनके जैसा समानताका भाव रखनेवाला व्यक्ति मिलना मश्किल था। सामा-जिक भेद और ऊँच-नीचका भाव उनके लिये अस्तित्व नहीं रखता था। उनके घरमे, उनकी मेजपर, कामके अपने मोटे-फोटे कपड़ोमें कमकरोका उतनी ही नम्रता श्रीर खुले दिलसे स्वागत होता था, जितना कि किसी इयक या प्रिन्सका। सभी देशोंके बहुतेरे कमकर उनका ऋातिथ्य प्राप्त करते थे। सुके निश्चय है, उनका वह इतनी सादगी श्रीर श्रक्तत्रिम स्नेहके साथ स्वागत करती थीं, कि वह कमी ख्यालमें भी नहीं ला सकते थे, कि हमारी स्वागत करने वाली महिला माताकी त्रोरसे त्रर्गाइलके ड्यूककी सन्तान है, उसका भाई प्रशियाके राजाका राज्य-मन्त्री रहा है। यह बाते एक ज्ञाएके लिये मी उनके दिमागमें नहीं आ सकती थीं। सामन्ती सब बाते अपने कार्लका अन-गमन करते समय वह छोड ग्राई । उन्होने जो यह त्याग किया, उसका कभी उनके दिलमें अफ़्तोस नहीं हुआ-उन दिनोमें मी जबकि अभावका पहाइ उनके ऊपर गिरता रहा।

"उनमें गम्मीरता श्रीर सदा प्रसन्न रहनेका स्वमाव या । श्रपने मित्रोके लिये उन्होंने जो पत्र लिखे हैं, वह एक सजीव तथा मौलिक दिमागकी श्रिषकार-पूर्ण उपज तथा उनकी सुलम लेखनीके स्वरस निकले मावोद्रेक हैं ।...जान फिलिप वेकरने इनमेंसे कुछको प्रकाशित किया है । निष्ठुर व्यगकार (किव) हाइने मार्क्सके परिहासोंसे उरता था, लेकिन फाउ मार्क्सनी तीक्ण श्रीर माव-पूर्ण बुद्धिका वह बहुत बढा प्रशंसक था । जब मार्क्सनी परिसमें रहते थे, तो वह उनके घरमें बराबर श्रतिथि बनता था । मार्क्स श्रपनी पत्नीमी बुद्धि श्रीर विवेककी इतनी कदर करते थे, जैसा कि १८६६ ई० में उन्होंने मुक्से कहा था, 'मैं अपने सभी हस्तलेखोंको उसके सामने पेश करता हूँ श्रीर उसके

फैसलेको बहुत मूल्यवान् समभता हूँ।' मार्क्सकी कृतियोंको प्रेसमें मेजनेसे पहले यह उनकी कापी उतार लेती थीं।

"फाड मार्क्स वहुत सन्तानें हुईं । उनमेंसे तीन श्रत्यन्त छोटी उमर हीमें मर गये ।...उस समय जब कि १८४८ ई० की क्रान्तिके बाद लन्दनमें शरणार्थींके तौरपर सोहो स्वायरकी डीन स्ट्रीटकी दो कोठिरियोंमें रहते थे, मैं उनकी तीन लड़कियोंको ही जान सका हूँ । १८६५ ई० में जब मैं पहले-पहल मार्क्स मिला, तो सबसे छोटी लड़की (श्राजकल श्रीमती एवलिंग) एक बड़ी ग्रानन्दी बच्ची थी, जो देखनेमें लड़कीकी श्रपेद्धा ज्यादा लड़के जैसी मालूम होती थी। मार्क्स श्रक्सर कहा करते थे—मेरी पत्नीने एलिनोरको दुनियामें लानेके समय लिंगके शारेमें मूल कर दी। दूसरी दो लड़कियाँ बड़ी सुन्दरी श्रीर सुशीला थीं—एलिनोरसे उलटी। सबसे बड़ी लड़की जेनी (श्राजकल मदान लांग्वे) श्रपने वापकी तरह ही (श्रपेद्धाइत साँवले रंग, काली श्राँखों श्रीर काले बालों-वाली थी। उससे छोटी लौरा (वर्त्सान मदाम लाफार्ग) श्रपनी माँ जैसी रंग में सफेद, गालोंसे लाल श्रीर सुनहले पुँघराले वालोंवाली थी।...

"मार्क्स श्रीर उनकी पत्नी पारस्परिक निर्मरताके बन्धनोंसे धनिष्टतया श्राबद्ध ये। जेनीका सोंदर्य मार्क्सके लिये श्रानन्द श्रीर श्रिममानकी चीज थी। क्रान्तिकारी समाजवादीके तौरपर उनके भिन्न-भिन्न जीवनोंके साथ श्रद्धट रूपसे सम्बद्ध गरीबीको सहन करनेमें जेनीकी कोमलता श्रीर भक्ति उनके लिये बड़ा सम्बल सिद्ध हुश्रा। जिस बीमारीकी भीषण यातनाने काउ मार्क्सको कब्रमें पहुँ-चाया, उसने उनके पतिकी श्रायुको भी कम कर दिया। उनकी दीर्घ श्रीर यातनापूर्ण बीमारीमें मार्क्स शारीरिक श्रीर मानसिक दोनों तरहसे विशीर्ण हो गये।...उन्हें नींद नहीं श्राती थी!..."

१८७८ ई० के रारद्में मार्क्सने सोर्गेको लिखा था, कि मेरी पत्नी बहुत बीमार है। एक साल बाद फिर लिखा था: "मेरी पत्नी अन भी खतरनाक रूपसे बीमार है और में ठीक तरहसे अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता हूँ।" पहले बीमारी का पता नहीं लगा, किन्तु काफी समयके बाद यह मालूम हो गया, कि मार्क्स-पत्नी श्रसाध्य नासूरसे पीडित हैं, जो कि धीरे-धीरे श्रीर भयंकर यातनाके बाद मौतके मुख में डाले बिना नहीं छोड़ेगा। चेनीने जीवन भर मार्क्स लिये जिस तरह श्रपनेको मुलाकर सब कुछ सहा था, उनके जीवनकी श्रन्तिम घडियों- में मार्क्सने भी उसी तत्परतासे पत्नीकी पार्टी नहीं छोड़ी। परिवारकी सारी चिन्ताश्रो श्रीर विपत्तियोंके बोक्तोंसे दबी जाती चेनीने हमेशा पतिके सामने मुस्कुराते हुये श्रानेका प्रयत्न किया था। इतिहासमें जेनी जैसी पत्नी बिरले ही महान् विचारकोंको प्राप्त हुई।

१८८१ ई० की गर्मियोंमें, जब कि बीमारी काफी बढ चुकी थी, जेनीने हिम्मत करके ऋपनी विवाहिता लडकियोंसे मिलनेके लिये पेरिसकी यात्रा की । बीमारी छूटनेकी त्राशा नहीं थी, इसिलये डाक्टरोंने यात्राके खतरेसे रोकनेकी कोशिश नहीं की । मदाम लाग्वेको पत्र लिखते हुये २२ जून १८८१ को मार्क्स ने ऋपनी यात्राके बारेमे लिखा था: "तुरन्त जवाब दो, क्योंकि मामा तब तक यहाँसे नहीं प्रस्थान करेगी, जब तक जान न ले, कि तुम लन्दनसे क्या चीज लाना पसन्द करती हो। तम तो जानती हो, कि वह ऐसी वाते पसन्द करती है।" यात्रा श्रन्छी तरह सम्पन्न हुई, लेकिन लौटने पर मार्क्पर पार्श्व-शूल (फुफ्फुर) की सूजन) का जबर्दस्त आक्रमण हुआ, जिसके साथ खाँसी और निमोनिया भी मिल गई। यह वड़ी खतरनाक वीमारी यी, लेकिन अपनी लड़की एलिनोर श्रीर परममका लेनचेन डेमथके स्वार्थत्याग श्रीर सेवाश्रोंसे वह उस समय वच गये। एलिनोरके लिये यह बड़े परेशानीके दिन थे। उसने लिखा था: "१८८० ई॰ की शरदमें मेरी प्यारी माँ इतनी बीमार हो गई, कि वह अपनेको चारपाईसे खडा नहीं कर सकती थी। इसी समय मूर भी फ़ुफ़ुस-शोथके भयकर श्राक्रमण्से पीड़ित हुआ । यह इतनी भयंकर इसीलिये हो उठी, कि उसने सदा स्रपनी वीमारी की उपेचा की थी। डाक्टर (हमारे श्रेष्ठ मित्र डनकिन) का विचार था, कि अवस्था बिल्कल निराशाजनक है। भयंकर समय या। सामनेके बड़े कमरेमें हमारी माँ पडी हुई थी, श्रीर पीछेवाले छोटे कमरेमें मूर। वह दोनों जो एक दसरेके इतने घनिष्ठ थे, ऋव एक ही कमरेमें नहीं रह सकते थे।

"हमारी भली पुरानी लेनचेन (तुम जानते हो, हमारे लिये वह क्या थी १)

श्रीर में दोनों की देंखमाल करते थे। डाक्टरने कहा था, कि हमारी सेवा-सुश्रूषाने मूर के प्राण बचा लिये। जो भी हो, मैं श्रच्छीं तरह जानती हूँ, किं न तो हेलेन (लेनचेन) श्रीर न मैं ही तीन स्पताह तक कभी चारपाईंपर गई। हम रात दिन खड़ी रहतीं, श्रीर जब कभी पूरी तौरसे श्रशक्त हो जातीं, तो बारी-बारीसे एक-एक धंटा श्राराम करतीं। मूर एक बार फिर श्रपनी बीमारीसे उठ खड़ा हुश्रा। मैं उस प्रातःकालको भूल नहीं सकती, जब कि उसने माँके कमरेमें जानेके लिये श्रपने पास काफी शक्ति पाई। दोनों फिर एक साथ तस्या हो गये— वह एक प्यारी तस्या श्रीर वह एक प्यारा तस्या, दोनों मानों एक साथ जीवनमें प्रवेश कर रहे थे। उनका यह मिलन बीमारीसे कंकाल मात्र एक बूढ़े श्रादमीं श्रीर मरती हुई एक ऐसी बुढ़िया स्त्रीका मिलन नहीं था, जो दोनों श्रपने जीवन में एक दूसरेसे श्रन्तिम बिदाई ले रहे थे।

"मूरका स्वास्थ्य बेहतर हो गया, यद्यपि वह श्रभी बल नहीं प्राप्त कर सका था, तो भी वह देखनेमें मजबूत मालूम होता था।...इसी समय २ दिसम्बर १८८१ को माँ मर गई। उसने श्रपने श्रान्तम शब्द—श्रंग्रेजीमें यह उल्लेखनीय है—ग्रपने कार्लको सम्बोधित करके कहे थे। जब हमारे प्यारे जेनरल (एंगेल्स) श्रापे, तो उन्होंने कहा जिसने मुक्ते करीब-करीब कृद्ध कर दिया—"मूर भी मर गया।"

"...(मेरी माँ) एक महीने तक नास्त्रकी भयंकर यातनाको सहती मरखासन्न पड़ी रही, तो भी उसकी सुन्दर प्रकृति, असीम हाजिरजवाबी-जिसे कि
तुम खूव अच्छी तरह जानते हो—एक च्राणके लिये भी उससे अलग नहीं हुई।
उसने लड़केकी तरह अधीर होकर उस समय (१८८१ ई०) हो रहे जर्मनीकें
निर्वाचनके परिणामोंको पूछा, और हमारी विजयोंको सुनकर बड़ी प्रसन्न
हुई। अपने मृत्युके समय तक वह प्रसन्त-हृदय रही और मजाक करते हुये
हमारे दिलमें पैदा हुई आशंकाओंको हयनेकी कोशिश करती थी। भयंकर
यातनामें पड़ी रहने पर भी वह हँसी करती—वह डाक्टर और हम सबकी हँसी
उड़ाती, क्योंकि हम बीमारीके बारेमें इतनी विकलता अनुभव करते थे। करीवकरीव अन्तिम च्रण तक वह पूरी तौरसे होशमें रही। वोल सकने से पहिले उसका

श्रन्तिम शब्द 'कार्ल' सम्बोधित करते निकला और उसने हमारे हाथोंको दचाकर सुस्कुरानेकी कोशिश की।"

४. मार्क्सका निधन (१८८३ ई०)

मार्क्की लड़की एलिनोरने भ्रपने पिताके श्रन्तिम समय के बारेमें लीव-क्नेस्टको लिखा था: "१८७७ ई० में मूरको फिर कार्लस्वाड जाना था, लेकिन जब पता लगा, कि जर्मनी श्रीर श्रास्ट्रियाकी सरकारे उन्हें निकाल बाहर करने-का इरादा रखती हैं, तो यात्राके लम्बेपन श्रीर खर्चका ख्याल करके वह फिर कार्लस्वाड नहीं गये। ..हम बर्लिन गये, जिसका मुख्य उद्देश्य था मेरे पिताके विश्वासपात्र मित्र तथा मेरे मामा एडगर फान वेस्टफालेन से मुलाकात करना। इम कुळ ही दिनों वहाँ रहे। मूरको प्रस्त्रता हुई, जब कि हमने सुना कि पुलिस हमारे होटलमे तीसरे दिन—हमारे स्थान छोड़नेसे ठीक एक घटा बाद—हूँदने श्राई थी।...

"मॉके प्राणोंके साथ मूरके भी प्राण चले गये। उसने जीवनको कायम रखने के लिये बहुत समर्थ किया, क्योंकि वह अन्त तकका योद्धा अन जीर्थिशीर्थ पुरुष था। उसका स्वास्थ्य निगडता ही गया। अगर वह स्वायों होता, तो सभी चीजोंको छोड देता, किन्तु उसके लिये वाकी सभी चीजोंसे जो ऊपर थी—वह थी अपने आदर्शके प्रति ईमानदारी। वह अपनी महान् इतिको पूरा करनेकी कोशिश कर रहा था, इसिलये अपने स्वास्थ-लामके लिये उसने दूसरी यात्रा करना स्वीकार किया। १८८२ ई० के वसन्तमे वह पेरिस और अर्जात्वी गया, जहाँ मै उसे मिली और हमने जेनी और उसके वच्चोंके साथ सचमुच ही कुछ मुखमय दिन विताये। इसके बाद मूर फासके दिल्लामें और अन्तमे अल्जियरकी ओर गया। अल्जियर, मीस और कानेसके निवासके सारे समयमे उसे बुरे मौसिमका सामना करना पड़ा। अल्जियरसे उसने मेरे पासं लम्बे पत्र लिखे, जिनमेसे बहुतोंको मैने खो दिया, क्योंक मूरके कहनेपर मैने उन्हें चेनीके पास मेज दिया, और उसने बहुत कमको मेरे पास लौटाया।

[#] Argentevil

"श्रन्तमें जब मूर घर श्राया, तो वह बहुत बीमार या। हमें श्रव श्रत्यन्त-श्रानिष्टका डर होने लगा। डाक्टरकी स्वलाहसे उसने शरद श्रीर जाडोंको बाइट द्वीपके वेन्टनरः (कस्वे) में विताया। मैं इसका जिक्र करना चाहूँगी, कि उस समयके मूरकी इच्छानुसार मैंने जेनीके सबसे छोटे लड़के जीन (जोनी) के साथ इतालीमें विताया। १८८३ ई० के वसन्तमें श्रपने साथ बॉनीको लिये में मूरके पास लौटी। जानी श्रव भी मूरके नातियोंमें विशेष प्रिय था। मुक्ते लौट जाना पड़ा, क्योंकि मुक्ते पढ़ाने के काममें लगना था।

"श्रीर श्रव श्रन्तिम भीषण प्रहार हुन्ना: जेनीकी मृत्युकी खबर श्राई । जेनी पहिलौठी श्रीर मृरकी प्रिया पुत्री एकाएक (द जनवरीको) भर गई । हमें उस समय मृरके पत्र मिले थे, यह उस समय मेरे सामने हैं उनमें वह लिखता है : 'जेनीका स्वास्थ्य बेहतर है श्रीर तुम (हेलेन श्रीर में) को मय खानेकी जरूरत नहीं।' जिस पत्रमें मृरने उपरोक्त बात लिखी थीं, उसके एक घंटा बाद जेनीके मरनेका तार हमें मिला। मैं तुरन्त बेन्टनोर गई।

"ग्रपने जीवनमें मेंने बहुत से शोकपूर्ण बंदोंका सामना किया है, लेकिन कोई इस जैसा शोकपूर्ण नहीं था। में महस्स कर रही थी, कि में ग्रपने पिताके पास मृत्युदं हिल्ये जा रही हूँ। उत्सुकतापूर्ण लम्बी यात्रामें में ग्रपने दिमागकों यह सोचनेमें परेशान कर रही थी, कि कैसे इस खतरको उसे हूँ। मुक्ते इसे कहनेकी जरुरत नहीं थी, चेहरेने मेरा मेद खोल दिया—मूरने तुरन्त कहा हमारी जेनी मर गई!' ग्रीर इसके बाद उसने मुक्ते तुरन्त पेरिस जाकर बच्चों की सहायता करनेके लिये कहा। में उसके साथ रहना चाहती थी—लेकिन वह किसी बातको सुननेके लिये कहा। में उसके साथ रहना चाहती थी—लेकिन वह किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं था। में मुश्किलसे ग्राधवंद्र वेन्टनरमें रह पाई थी, फिर तुरन्त पेरिसके लिये रवाना होनेके बारते लन्दनकी शोकपूर्ण यात्राके लिये तैयार हो गई। मूरने जो कुछ बच्चोंके बारेमें कहा था, मेंने वह किया।

"में अपनी वहाँकी यात्राके वारेमें नहीं कहूँगी-में काँपते हृदयसे उस समय

[#] Ventnor

की याद भर कर सकती हूँ—वह मानसिक यातना, वह सासत—श्रीर कुछ, उसके बारेमे नहीं। यही पर्याप्त है—मै लौट श्राई श्रीर मूर घर लौटा मरनेके लिये।...

"अन, चूंकि मूरके दिल्लामें प्रवासके वारेमे कुछ और वात द्वम चाहते हो। हमने—मै और वह—१८८२ ई० के आरम्भमें कुछ, सप्ताह जेनीके साथ अरजात्वीमें विताये। मार्च और अप्रैलमें मूर अल्जियरमे था, मईमें मोंतेकार्ल, नीस, कानेसमें। जुनके अन्त तथा सारी जुलाई वह फिर जेनीके साथ या, उस समय लेनचेन भी अरजांत्वीमे थी। अरजांत्वीसे लौराके साथ मूर स्वीजलैंड, वेवे आदि गया। सितम्बरके अन्त या अक्त्वरके आरम्ममें वह इंगलैंड लौटा और फिर दुरन्त ही वेन्टनोर गया, जहां जानी और मै उसके पास गये।

"और अब दूसरे बच्चोंके वारेमें तुम्हारे प्रश्नोंके लिये—हमारा नन्हा एडगर (मूश) १८७४ ई० में पैदा हुआ था—पर मैं इसे निश्चयपूर्वक नहीं कह सकती—और वह १८५५ ई० के अन्तमे मरा। नन्हा फ्रॉक हाइनरिख ५ नवम्बर १८४६ को पैदा हुआ और वह जब मरा, तो दो वर्षका था। मेरी नन्ही बहन फ्रांसिस्का १८५१ ई० मे पैदा हुई, और करीव ११ महीनेकी हो शैशवमे ही मर गई।"

प्रिया पत्नीके मरने (२ दिसम्बर १८८१) के बाद मार्क्स (मृत्यु १४ मार्च १८८३) के १५ महीनोके समयमें फिर दोनों मित्र अधिकतर एक दूसरेसे अलग रहने लगे। अलग रहनेका एक फायदा यह हुआ, कि अब फिर उनके बीचमे पहलेकी तरह पत्र-व्यवहार शुरू हो गया, जिसमें जीवनकी दुःखपूर्ण घड़ियोका मार्मिक वर्णन मिलता है और पता लगता है कि इस शक्तिशाली पुरुषको मी, सभी मनुख्योंके माग्यमें जीवनका जो निष्ठुर विघटन बदा है, उसका सामना करना पड़ा। इस समय भी अभी मार्क्सको अपनी वाकी शक्ति अपने जीवन-उद्देश्यको पूरा करनेमें लगानेका ख्याल था। १५ दिसम्बर १८८२ को उन्होंने सोर्गेको लिखा था: "पिछ्जली बीमारीसे मैं डबल लुंब हो निकला हूँ इमानसिक तीरसे लुंब अपनी पत्नीके मरनेके कारण और शारीरिक तीरसे इस-

लिये कि बीमारीके कारणने फुफ्फुस-शोय श्रीर स्वासनालीकी बढ़ी हुई खरखरा-हटको मेरे साथ लगा दिया। श्रयने स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनेके प्रयत्नमें सुफे श्रयने समयका कुछ नाग हाथसे खोना पड़िया।" लेकिन, जो समय मार्सको देना पड़ा, वह जीवनके श्रन्तिम चुणों तक का था। वह फिर श्रपने स्वास्थ्यका सुधार नहीं कर सके।

सितम्बर (१८८२ ई०) में बन वह गेनेवा-सरोवरसे लौटे थे, तो काफी मजबत मालम होते थे श्रीर श्रक्सर हेम्प्सटेडहीथ टहलने जाया करते थे। वह उनके घरसे ३०० फुट ऊँचा था, तो भी चलनेमें उन्हें भारी थकावट नहीं मालूम होती थी । श्रव उन्होंने फिर श्रपने काममें लगनेका इरादा किया । डाक्टरोंने उन्हें जाड़ोंमें लन्दनमें रहनेसे मना कर दिखाणी समुद्रतट पर रहनेकी ग्रानुमति दी थी । नवम्बरमें लन्दनकी धुन्द बढ़ने लगी, तो वह फिर वेन्टनर गये, लेकिन वहाँ भी बदली श्रीर धुन्द उसी तरहकी मिली, जैसी कि पिछले जाड़ोंमें ऋत्जियर और मोतेकालोंमें मिली थी। फिर उन्हें सदी लग गई, ताजी हवामें स्वास्थ्यकर चहलकदमी करनेकी जगह वह अपने घरमें रहकर अधिक श्रीर श्रधिक कमजोर होनेके लिये मजबूर हुये । श्रव लिखने-पढ़नेका कुछ भी काम करना असम्मव था, यद्यपि साइन्तकी प्रत्येक प्रगतिकी स्रोर उनका ध्यान लगा रहता था। जन फ्रांसमें तस्या कमकरोंकी पार्टीमें फिर हलचल शुरू हुई, तो वह ग्रत्यन्त ग्रसंतुष्ट हो श्रपने दोनों दामादोंके बारेमें कह उठे: "लांवे चरम पूधनवादी श्रीर लाफार्ग चरम बकुनिनिस्ट। शैतान उन्हें ले जाये।" इसी समय मार्क्षके भुँहसे वह वाक्य निकला था. जिसे समाजवादके विभीषण दोहराया करते हैं : 'जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, निश्चय ही मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ।' यह कहनेकी ग्रावश्यकता नहीं कि मार्क्स किसी तरहके रूढ़िवादके विरुद्ध ये, ग्रीर वह लकीरका फकीर किसीको देखना नहीं चाहता था।

११ जनवरी १८८३ को अपनी ज्येष्ठा पुत्री जेनीके मरनेका जबर्दस्त प्रहार मार्क्सके हृदयपर पड़ा । उसके साथ ही सदी-खाँसी और कंटनालीकी असह पीड़ा आरंभ हुई । अत्र उन्हें कुछ भी निगलना सुरिकल हो गया । "भीपण्से भीपण् पीड़ाओंको जो वेपवाहीसे सहन करते रहे, अत्र उन्होंने अधिक ठीस श्राहारके लेनेका प्रयत्न फिर न करके दूध पीना श्राच्छा समक्ता, जिसे कि वह तमाम जीवनमें नापसन्द करते रहे।" फर्वरीमें एक फेफड़ेमें गाँठ निकली। कोई दवा श्रव काम नहीं कर रही थी—पन्द्रह महीनोंसे दवाइयाँ लेते-लेते श्रव श्रारीपपर उनका प्रमाव नहीं पड रहा था। दवाश्रोंने बल्कि मूखको बन्द श्रीर पाचनशक्तिको कम कर दिया। वह दिन-दिन युलते जा रहे थे, लेकिन डाक्टर निराश नहीं थे, क्योंकि पीछे गलेकी शिकायत श्रीर खाँसी दूर होनेसे निगलना श्रासान हो गया। लेकिन, यह केवल ऊपरी दिखावा था। मार्क्स पास मृत्यु दिंदोरा पीटकर नहीं श्राना चाहती थी। १४ मार्च १८८३ के श्रपराह्म जुपचाप श्रारामकुसींपर बैठे मार्क्सको विना किसी पीडाके मृत्युने श्रपने कोमल हाथोंसे श्रनन्त निद्रामें सुला दिया।

एगेल्सको अपने आजीवन वन्धुके प्रति जितना प्रेम था, उसके कारण उन्हें जो दु:ख हुआ, उसे आसानीसे समभा जा सकता है। वुद्धके शब्दोमें वह भी कह सकते थे "कुतोत्थ लब्भा" (वह—मृत्युसे छुटकारा—कहाँ मिलनेवाला है)। एंगेल्सने कहा था: "डाक्टरोका कौशल शायद एक असहाय व्यक्तिके जीवनको एकाएक नहीं, बल्कि इंच-इंच करके मरनेके लिये, तथा डाक्टरी पेशेके वशको बढ़ाते कुछ और सालो तक घसीटकर ले जाना सम्भव कर देता। लेकिन, हमारे मार्क्स कभी इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अपने सामने इतनी मात्रामें अपूर्ण कामको देखना, उसे समाप्त करनेकी तरसानेवाली इच्छाका वर्दाश्त करना तथा यह सममना कि मैं कभी उसे नहीं कर सकूँगा—यह उससे हजार गुना कडवा होता, जितना कि कोमल मृत्युने उन्हें ले कर किया, एपिकुरुकी तरह वह कहा करते थे: 'मरनेवालेके लिये मृत्यु कोई दु:खकी बात नहीं, बल्कि उनके लिये दु:खकी बात है जो वच रहते हैं।' इस महान् प्रतिमाको डाक्टरी विचाके मारी यश...के लिये धुलानेसे हजार गुना वेहतर है, जो कि हम उन्हें उस कबनकी और ले जा रहे हैं, जहाँ उनकी पत्नी पढ़ी है।'

इस प्रकार १४ मार्च १८८३ को मेटलैंड पार्कम मार्क्स लडकीके शब्टोंमे :
..तुम जानते हो कि मैटलेंड पार्कम अपने शयनकत्त्रसे अध्ययनकत्त्मे गये,
आरामकुर्सीपर बैठे और शान्तिके साथ सो गये।

"जैनरल (एंगेल्स) ने उस कुर्सीको जीवनभर अपने पास रक्खा, फिर अब वह मेरे पास है।"

१५ मार्च १८८३ को एंगेल्सने अपने अमेरिकन मित्र सोर्गेको लिखा था : "कल श्रपराह्नमें ढाई बजे उनसे मिलनेके सबसे श्रच्छे समय में उन्हें देखने गया। सबकी आँखोंमें आँस थे. जान पड़ता था प्रलय आ गई। मैंने पूछताछ करते बातकी सच्चाई तक पहुँचनेकी कोशिश की. जिसमें कि सान्त्वना दे सक् । हल्कासा रक्तसाव हन्त्रा था, श्रीर एकाएक सर्वनाश श्रा मौजद हन्त्रा। हमारी भली पुरानी लेना-जिसने उससे कहीं बेहतर सेवा-सश्रम की, जितनी कि माँ ऋपने बच्चेके लिये करती है-ऊपर गई और फिर नीचे आई। 'वह श्रर्षनिद्रित हैं'-उसने कहा और यह भी कि 'मैं ऊपर जा सकता हूँ ।' जब हम भीतर गये, तो वहाँ लेटे पड़े थे. सोये थे फिर कभी न जागनेके लिये। नाड़ी श्रीर साँस बन्द हो गई थीं, इन दो मिनटोंके भीतर बिना पीड़ाके शान्तिपूर्वक वह अनंतिनद्रामें चले गये।...मानवताके पास अब एक सिर कम है, लेकिन सचमुच त्राजका वह त्रत्यन्त महत्वपूर्ण सिर था। मजदूर-वर्गका स्नान्दोलन श्रपने मार्क्सका श्रनुसरण करेगा, लेकिन उसका वह केन्द्रविन्दु चला गया, जिसकी स्रोर निर्णायक च्लॉमें स्रपनी इन्छासे फ्रेंच, रूसी, स्रमेरिकन स्रौर जर्मन ऐसी सफ्ट निर्भ्रान्त सलाहको पानेके लिये सदा आते ये, जिसे केवल एक प्रतिमा श्रीर पूर्ण श्रिधिकार रखनेवाला ही दे सकता था।"

६. अन्तिम विश्राम-स्थान

मृत्युके तीन दिन बाद १७ मार्च सनीचर के दिन (१८८३ ई०) कार्ल मार्क्सको उनकी सती पत्नी जेनीकी कब्रमें लिटा दिया गया। एक श्रोर यह महान् प्रतिमा दुनियासे विदाई ले रही थी, दूसरी श्रोर उसी समय उसका बास्त-विक उत्तराधिकारी १३ वर्षका हो रहा या, यद्यपि श्रमी उसे यह नहीं मालूम था, कि मार्क्सकी ज्योति उसके हृदय श्रीर मस्तिष्कमें समाने जा रही है। मार्क्स के कामको पूर्णता तक पहुँचाना उसीके हायमें बदा था। उसीने मार्क्स श्रादशाँको दुनियाके एक छठे हिस्सेपर सजीवरूपसे सफलतापूर्वक स्थापित किया,

किन्तु इस दूसरी महान् प्रतिमा (लेनिन) के बारेमे हम अन्यत्र कहनेवाले हैं। मानर्सकी इच्छाके अनुसार परिवारने इस अन्त्येष्टि-कियाको बहुत सीषे-सादे-ढंगसे किया। किवस्तानमें मार्क्सके थोड़ेसे मित्र पहुँचे जिनमें एंगेल्स, लेस्लेर, लोखनेर (कम्युनिस्ट लीगके जमानेके उनके दोस्त), फ्राससे दोनो दामाद लाफार्ग और लाग्वे, तथा जर्मनीसे उनके शिष्य लीवक्नेस्ट उपस्थित थे। साइन्सके दो प्रमुख अप्रदूत रसायनशास्त्री शोरलेमेर और प्राण्शास्त्री रेलेकेस्टर मौजूद थे। एंगेल्सने अंग्रेजीमें विदाईका माषण दिया, जो कि उसी तरह मानवताकी एक मधुर थाती और पथ-प्रदर्शनके लिये मारी सहारा है, जिस तरह लेनिनकी कब्रपर स्तालिन के मुँहसे निकले शब्द:

१४ मार्चके अपराह्ममें पौने ३ बजे जीवित महानतम चिन्तकने चिन्तन छोड दिया। दो मिनट अर्केला रहनेके बाद जब हम मीतर गये, तो देखा, कि वह कुर्सीपर आरामसे, किन्तु सदाके लिये सोये हैं।

इस च्रतिका मात्राकन करना असम्मव है, जो कि इस पुरुषकी मृत्युके साथ यूरोप और अमेरिकाके लडाके सर्वहारा और ऐतिहासिक विज्ञानने उठाया है। जल्दी ही हम उस विच्छेद (मेदन) को काफी अनुमव करेंगे, जिसे कि इस जबर्दस्त पुरुषकी मृत्युने पैदा किया है।

"जैसे डारविनने प्रकृतिमे विकासके नियमके कानूनका आविष्कार किया, उसी तरह मार्क्सने मानव-इतिहासमें विकासके कानूनका आविष्कार किया : यह सीघा-सादा तथ्य, जो कि पहले वादोके जङ्गलमे छिपा हुआ था—िक मानव प्राणीको सबसे पहले खाने, पीने, वास और पहननेकी जरूरत होती है, इसके पहले कि उसका ध्यान राजनीति, साइन्स, कला और धर्मकी ओर जाये। इसी-िलये जीवनके नजदीकके भौतिक साधनोका उत्पादन अवएव लोगोंके आर्थिक विकासकी सीढ़ी या काल वह आधार है, जिसके ऊपर राज्य-सस्थायें, कानूनी सिद्धान्त, कला और लोगोंके धार्मिक विचारमी विकसित हुये हैं।

"लेकिन, इतना ही नहीं, मार्स्सने आजकलके पूँजीवादी उत्पादनके दग,

[&]quot;लेनिन", जिसे लिखा जा चुका है।

उससे उत्पादन श्रीर वृद्वी समाज-स्यवस्था उत्पादन के विकासके विशेष कान्त्रका श्राविष्कार किया। श्राविरिक्त-मूल्यके श्राविष्कारके साथ ही उन्होंने उस श्रन्थकारपर एकाएक प्रकाश डाला, जिसमें कि वृद्वी श्रीर समाजवादी दोनों ही प्रकारके दूसरे श्रर्थशास्त्री मटक रहे थे।

"इस तरहके दो श्राविष्कार किसी एक जीवनके लिये पर्याप्त थे। सचसुच वह सौभाग्यशाली है, जो कि इनमेंसे एकको भी दूँद निकालनेमें सफल हो। लेकिन मार्क्सने जिस किसी चेत्रमें श्रनुसन्धान किया (ऐसे चेत्र बहुत थे श्रोर उनमेंसे कहीं भी मार्क्सका श्रनुसन्धान पल्लवग्राही नहीं था।) उन्होंने स्वतन्त्र श्राविष्कार किये—गिंशतके चेत्रमें भी।

"वह एक साइन्सके पुरुष ये, लेकिन इससे ही उनका व्यक्तित्व पूरा नहीं होता। मार्क्सके लिये साइन्स एक सजनात्मक ऐतिहासिक श्रीर क्रांतिकारी शक्ति थी। सैद्धान्तिक साइन्सके इस या उस च्रेत्रमें ऐसे नये श्राविकारसे उनको श्रानन्द जरूर प्राप्त होता था, जिसके व्यावहारिक फल शायर श्रमी दिखाई नहीं पढ़ रहे हैं। किन्तु श्रीर भी बड़ा नया श्राविकार था, जो एक क्रान्तिकारी दंगसे श्रीदोगिक विकासको, सारे ऐतिहासिक विकासको लेते, तुरन्त प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ विजली साइन्सके च्रेत्रमें श्राविकारिक विकास श्रीर श्रीतम समयमें मार्सेल देपरेजके कामको वह बहुत दिलचस्पीके साथ देख रहे थे।

"चूँकि सबसे ऊपर मार्क्स एक क्रांतिकारी थे। जीवनमें उनका महान् लच्य था पुँजीवादी समाज श्रीर उसके द्वारा पैदा की गई राज्य-संस्थाश्रोंको उत्तर फेंकनेमें सहयोग देना, श्रीर उस श्राधुनिक सर्वहाराकी मुक्तिके प्रयत्नमें सहयोग देना, जिसके लिये उन्होंने पहले-पहल उसकी मुक्तिके लिये श्रावश्यक स्थितियोंका श्रान प्रदान किया। इस संघर्षमें उनका श्रमली रूप दिखाई पड़ता था। वह वड़े उत्साह तथा ऐसी सफलताके साथ लड़ते रहे, जो कि बहुत कमको मिली है—पहले १८४२ ई० में "राइनिशे ।जाइटुंग", पेरिसमें १८४४ ई० में "फोरवाई", १८४७ ई० में "इवाशे-शृजेलेर जाइटुंग", १८४८-४६ ई० में "नोये राइनिशे जाइटुंग", १८५२-६१ ई० में "न्यूयार्क द्रिन्यून"—श्रीर फिर बहुत सी खंडनात्मक कृतियाँ, पेरिस, ब्रुशेल्स श्रीर लन्दनमें संगठन-सम्बन्धी काम श्रीर श्रन्तमें इन सबसे बढकर महान इन्टर्नेशनल कमकर-एसोसियेशन सचमुच यही श्रकेला जीवनका श्रिमान करने लायक काम होता, चाहे उसके निर्माताने श्रीर कुछ भी नहीं किया होता।

"श्रीर इसीलिये मार्क्स श्रपने युगके सबसे श्रिषक घृषित श्रीर श्रत्यिक गाली पानेवाले पुरुष थे। निरकुश श्रीर गण्तंत्री दोनो प्रकारकी सरकारोंने उन्हें श्रपने देशसे निकाल बाहर किया, टोरी श्रीर चरम जनतात्रिक बूर्ज्या भी उन्हें कलंकित करनेके श्रिमियानमें होड लगाये रहे। उन्होंने इस सबको मकडी के जालेकी तरह एक श्रोर बुहार दिया, उपेच्चित किया। श्रीर मजबूर होनेपर ही जवाब दिया। वह साइबेरियन खानोसे यूरोप होते श्रमेरिकाके कलिफोर्नियाके तट तक करोड़ों क्रांतिकारी कमकरों द्वारा सम्मानित स्नेहपात्र हो उन्हें शोकाकुल करते मरे। मैं यह कहनेकी हिम्मत रखता हूँ, कि यद्यपि उनके बहुतसे विरोधी थे, लेकिन वैयक्तिक शत्रु मुश्किलसे कोई था।

"उनका नाम शताब्दियों तक जीता रहेगा, श्रौर उसी तरह उनकी कृतियाँ भी"। मार्क्षकी समाधि लन्दनके हाईगेटकी कब्रोके जंगलमे है, जिसका पता लगाना श्रासान काम नहीं है। १६३२ ई० में इन पक्तियोंके लेखकने मानवता-के उस परम पुनीत तीर्थकी यात्रा करते हुये निम्न पंक्तियोंको लिखा था:

"६ नवम्बरको श्री एलिस मेरे साथ हुये। ऋषि मार्क्सी समाधि देखने जाना था। टैक्सी करके हम लोग हाईगेटके उस कबिस्तानपर चले, जहाँ संसारका वह महान् उद्धारक श्रीर तत्ववेत्ता श्राखरी नींद ले रहा है। जानेपर मालूम हुश्रा, कि वहाँ इस नामके दो कबिस्तान हैं—एक रोमन कैथिलकोके लिये श्रीर दूसरा दूसरोंके लिये। रोमन कैथिलक कबिस्तानमें भला उस घोर नास्तिकको कहाँ जगह मिल सकती थी हम लोग दूसरे कबिस्तानकी श्रोर गये। फाटकपर फूल विक रहे थे। हम तो देवताके स्थानपर जा रहे थे, इसलिये श्री एलिससे कहा कि फूल ले लीजिये। कबिस्तानके सिपाहीसे पूछा। वह उस त्रायकर्त्ताकी कबसे वाकिफ नहीं था। दूसरे (श्रादमी) ने बतलाया—मैं जानता हूं। थोड़ी देरमें छोटी-छोटी (यानी गरीजोंकी) कब्रोंको पारकर हम उस कब्रके

सामने पहुँच गये। गरीबीके उद्धारकको गरीबोंके बीच ही सोना चाहिये, श्रीर सो मी एक गरीब ही गड्डेमें। श्रास-पासकी कहोंसे इतना ही फर्क है, कि सिरहाने किसीने काँच जड़े गौखेमें कुछ नकली फूल श्रीर शायद लाल मंडा रख दिया है। इसी चार हाथ लंबी दो हाथ चौड़ी जमीनके नीचे—जिसके ऊपरी भागमें सिर्फ गच की हुई चौकोर मेखला मात्र है—कार्ल मार्क्स, उनकी स्त्री, उनका नाती एक श्रीर...चार प्राची लेटे हुये हैं। गरीबोंके हितके लिये श्रपने जीवनमें वह यातनायें सहता रहा, दरबदर फिरता रहा श्रीर श्राज यह ऐसी गुमनाम जगहमें सोया पड़ा है, जबिक मनुष्य जातिके एक पंचमांशने उसको श्रपना गुरु मान लिया है, श्रीर बाकी जगहोंमें भी यदि उसकी दवाको समस्त्रकर पूछा जाय, तो तीन-चोथाई लोग उसकि होंगे।"

लीवक्नेख्टने आजसे आधी शताब्दी पहले लिखा था :

"हम समाजवादी-जनतांत्रिकोंके पास न सन्त हैं श्रीर न सन्तोंकी समाधियाँ, लेकिन करोड़ों मानव श्रद्धा श्रीर कृतज्ञताके साथ उस पुरुषकी श्रोर देखते हैं, जो कि लन्दनके उत्तरके इस कित्रस्तानके भीतर विश्राम कर रहा है। श्राजसे एक हजार वर्ष बाद—उस समय जब कि मजदूर वर्गकी मुक्तिके प्रयत्नके लिये जिस बर्जरता श्रीर संकीर्ण हृदयताका मुकाबिला करना पह रहा है, श्रतीतकी श्रविश्वसनीय कथा बन जायेगी—स्वतन्त्र श्रीर भद्र मानव उस समय भी नंगे सिर इस समाधिके पास खड़े होकर श्रपने बच्चोंको कहेंगे: 'यहाँ सोया है कार्ल मार्क्स !'

मार्क्सके महान जीवनसे इतिहासमें यदि दिमाग श्रीर विशाल हृदयतामें किसीकी कुछ तुलना की जा सकती है, तो वह बुद्ध ही हो सकते हैं। उनके मृत्युस्थानके बारेमें भी कहा गया था: "श्रद्धालु कुलपुत्रके लिये यह...स्थान दर्शनीय...है।...श्रद्धालु यहाँ...श्र्यांचेंगे दर्शनार्थ।"

समाधिके ऊपर संगमर्भरकी पट्टीपर निम्न श्रमिलेख उत्कीर्ग है:

"जेनी फान वेस्टफालेन प्रिया पत्नी कार्ल मार्स्सकी
जन्म १२ फर्नेरी १८१४
मृत्यु २ दिसम्बर १८८१
श्रीर कार्ल मार्स्स्त अप्ता १४ मार्च १८८३
श्रीर कार्ल मार्स्स्त मृत्यु १४ मार्च १८८३
श्रीर हेरी लांग्वे
उनका नाती
जन्म ४ जुलाई १८७८, मृत्यु २० मार्च १८८३
श्रीर हेलेन डेमुथ
जन्म १ जनवरी १८२३, मृत्यु ४ नवंबर १८६०"

७. हेलेन डेमुथ

हेलेन हैं मुश्के रूपमें सर्वहारा साकार बनकर मार्क्स साम वना रहा !
हेलेन जिसे लेनचेनके नामसे भी पुकारा जाता था, श्रायुमें मार्क्स पांच वर्ष जेनी वेस्टफालेनसे नौ वर्ष छोटी थी । वह एक किसानकी लड़की थी श्रीर जेनी के मार्क्स व्याह करनेसे पहले ही छोटी उमरमे ही वेस्टफालेन सामन्त-परिवारों में नौकरानी बनकर आईं । हेलेनका जेनीके साथ बड़ा प्रेम हो गया था । व्याहके बाद वह फाउ मार्क्सको छोड़नेके लिथे तैयार नहीं थी । वह जेनीके साथ मार्क्सके परिवारमे चली आई । उसके बादसे श्राजीवन वह मार्क्स परिवारमे चली आई । उसके बादसे श्राजीवन वह मार्क्स परिवार परिवारका एक व्यक्ति बनकर रही और अपने सर्वस्वत्यागमें वह सामन्ती युगके किसी अत्यन्त त्यागमूर्ति स्वामिमक स्त्री से भी बढ़कर थी । जब परिवार पेट-मर खाता, तो हेलेन भी तुप्त रहती थी । जब दाने-दानेके लाले पड़ते, तो वह भी कभी शिकायत नहीं करती । घरकी वह नौकरानी नहीं, बल्कि परिवारकी माता और प्रवन्धिका, रसोंईदारिन, घरकी वह नौकरानी नहीं, बल्कि परिवारकी माता और प्रवन्धिका, रसोंईदारिन, घरकी वह नौकरानी नहीं, बल्क परिवारकी माता और उनके लिये फाउ मार्क्स सहायतासे कपड़ा सीती । वह यहकी चौकीदारिन थी और साथ ही उसकी मालकिन भी । मार्क्स वच्चे उसे मां-की तरह प्यार करते थे, और वह भी अपने प्रेमके कारण उनके ऊपर मां जैसा की तरह प्यार करते थे, और वह भी अपने प्रेमके कारण उनके ऊपर मां जैसा

प्रभाव रखती थी। मार्क्स श्रीर उनकी पत्नी दोनों उसके साथ श्रापने प्रिय मित्रकी तरह वर्ताव करते थे। मार्क्स हेलेनके साथ शतरंज खेला करते श्रीर कितनी ही वार इस किसान-पुत्रीसे बुरी तौरसे हारते। हेलेनका परिवारके प्रति श्रान्धा-पच्पात था—वहाँ जो कुछ होता वह स्व ठीक था, मली वात छोड़कर वहाँ कोई दूसरी वात नहीं की जा सकती। मार्क्सकी जरा भी श्रालोचना हुई कि भिड़का छुचा छू दिया। जिन लोगोंका मार्क्स-परिवारके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था, उसके लिये हेलेनका इदय सदा स्वागतके वास्ते तैयार था। मार्क्स श्रीर उनकी पत्नीके मरनेके वाद वह एंगेल्सके पास चली गई, तहस्साईसे ही उसका एंगेल्सके साथ परिचय था श्रीर मार्क्स-परिवारको तरह ही एंगेल्सके साथ उसका प्रेम था।

लीवक्नेख्टने लेनचेन (हेलेन) के बारेमें लिखा है: "जबसे मार्क्स-परिवार स्थापित हुन्ना, तबसे ही लेनचेन मार्क्सकी, एक लड़कीके शब्दोंमें वर्व-श्रेष्ठ त्र्रथोंमें घरकी त्रात्मा, सभी कार्मोकी करनहारी बन गई। क्या कोई भी ऐसी चीज थी, जो उसे न करना पड़ता हो? क्या ऐसी कोई चीज थी, जिसे वह त्रानन्दपूर्वक न करती हो? इसके लिये में उसकी उन त्रत्यन्त नापसन्दको भी करनेके लिये मजबूर उन बहुत सी रहस्यमय यात्रात्रोंकी याद दिलाऊँगा, जोकि वह हितकारी, तीन पीतलकी घंटियोंबाले "चचा" के पास जानेके लिये करती थी। वह सदा प्रसन्नमन हँसती श्रोर सहायता करनेके लिये तैयार रहती। यही नहीं वह कुछ भी हो जाती थी, श्रोर मूरके शत्रु उसे बड़ी भयंकर घृणाकी हिटसे देखते थे।

"अगर फाउ मार्क्स खस्य न होती, तो लेनचेन माँकी जगह काम करती— दूसरे समयोंमें भी बच्चोंके लिये वह दूसरी माँ थी और उसका वड़ा ही मजबूत और दृद मनोबल या, जिसका होना वह आवश्यक समकती थी।

"लेनचेन, जैसा कि हमने कहा, एक प्रकारसे श्रिधनायकताका वर्ताव करती थी। घरके सम्बन्धके बारेमें ठीक तरहसे वतलानेके लिये में कह सकता हूँ: घरमें लेनचेन श्रिधनायक (डिक्टेटर) थी, फ्रांड मार्क्स श्रीर मार्क्स मेमनेकी तरह इस श्रिधनायकताको शिरोधार्य करते थे। कहा जाता है, श्राने सेनककी श्रांखोमें कीई भी वहा श्रादमी नहीं है। निश्चय ही मार्क्स भी लेनचेनकी श्राखोमें वैसे ही थे। लेनचेनने उनके लिये श्रानको बलिदान कर दिया वह उनके, फ्रांठ मार्क्स श्रीर प्रत्येक वच्चेके लिये श्रावश्यक तथा सम्मव होनेपर सौ बार कुर्जान हो सकती थी—स्चमुच उसने ऐसा ही किया श्राने जोवनको बलिदान दिया। किंद्र मार्क्स उसपर प्रमाव नहीं डाल सकते थे। वह उनके सभी मूडों श्रोर कमजोरियोको जानती यी श्रीर उन्हें श्रपनी कानी श्रॅगुलीपर नचाती थी। मार्क्सका मूड किसी समय चाहे कितना ही चिड़चिड़ा हो, चाहे वह ऐसे तूमानी कोधमें पड़े हों, कि दूसरा हरेक श्रादमी उनसे श्रलग रहनेमें ही खैरियत समकता हो, लेकिन लेनचेन सीचे सिहकी मॉदमें चन्नो जाती। श्रगर वह शुर्राते, तो वह जनदस्ती लेकिटेकसके वाक्योंको उनके सामने पढ़ती श्रोर विंह पालतू मेमना बन जाता।"

मार्क्स पुत्री प्रिलानोरने लेनचेन बारेमें लिखा है: "हेलेन...मेरे माता-पिताके पास उनके विवाहसे द्वारन्त बाद पेरिस जानेके पहले आई या पीछे, यह मैं नहीं बतला सकती। मैं इतना ही जानती हूं, कि मेरी नानीने इस तरुए। लडकीको मेरी मॉके पास यह कहकर मेजा कि सबसे बिद्या चीज जो मेज सकती हूं, वह मेरी ईमानदार पिय लेनचेन है। और ईमानदार प्रिय लेनचेन हमारे माता-पिताके साथ सदा बनी रही। कुळ समय बाद उसकी छोटी बहना मरियम भी आ गई।"

लीववनेख्टने लेनचेनके मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी कबके भीतर जगह पानेका जिक्र करते हुये लिखा है: "पारिवारकी कबमें केवल मृत पुत्र श्रीर नातियोंने ही स्थान नहां, बिल्क उस मक्त लेनचेन, हेलेन, डेमुथने भी स्थान पाया, जो कि खूनका सम्बन्ध न होनेपर भी परिवारकी थी। उसे परिवारकी कबमे रखना होगा, इसका निर्णय फाड मार्क्सने ही कर लिया था, जिसे उनके वाद, मार्क्सने भी स्वीकार किया। एंगेल्स श्रीर एकहार्टने मिलकर भक्त लेनचेनके प्रति इस कर्त्तन्यको पूरा किया। ." लीवनेख्टके मॉगनेपर एलिनौरने श्रपने माता-पिता के बारेमें लिखने हुये कहा था: "लेनचेनको न भूलना !" इसपर लीवक्नेख्ट लिखता है: "मैं लेनचेनको नहीं भूला, उसे कभी नहीं भूल सकता। क्या वह

स्त्रचमुच मेरे लिये चालीस सालों तक मित्र नहीं थी १ क्या लन्दनके शरखार्थी दिनों में सचमुच अनसर वह मेरे लिये 'भाग्य' नहीं बनी १ कितनी बार उसने मेरा पाकेट खाली रहनेपर मुक्ते ६ पेन्स देकर नहीं सहायता की, यह ऐसे समय जब कि मार्क्सके परिवारकी स्थिति बहुत हीन नहीं होती, यदि वह हीन होती तो लेनचेनको कुळु मिलनेवाला नहीं था। कितनी ही बार जबकि मेरी दर्जीकी कला प्रयीप्त नहीं होती तो वह मेरे कुळु अत्यन्त आवश्यक कपड़ोंको—जिन्हें उस समय आर्थिक कठिनाइयोंके कारण नया बनाने की कोई सम्भावना नहीं होती—वह बड़े कला पूर्ण दंगसे रफू करके कुळु सप्ताह और पहनने लायक अना देती।

"अब मैंने लेनचेनको पहले-पहल देखा, उस समय वह २७ वर्षकी थी। यद्यपि उसे सुन्दरी नहीं कहा जा सकता, तो भी वह बहुत आकर्षक चेहरेवाली, हर्टी-कर्टी तथा प्रियदर्शना थी। उसके लिये प्रेमियोंकी कमी नहीं थी। उसे वार-बार व्याहका अच्छा अवसर मिला, किन्तु बिना किसी तरह की शपथ लिये उसके ईमानदार हृदयके वास्ते साधारण सी बात थी, कि वह मूर, फ्रांड मार्क्स और बच्चोंके साथ बनी रहे। वह बनी रही—उसकी जवानीके वर्ष बीत गये। अभाव और दिस्ता, सौभाग्य और दौर्मांग्य में वह बनी रही। उसका पहला विश्राम उस समय आया, जबिक मृत्युने उस स्त्री और पुरुषको मार गिराया, जिनके साथ उसने अपने माग्यको जोड़ दिया था। उसने एगेल्सके यहाँ विश्राम पाया और उसके यहाँ ही अन्त तक अपनेको बिल्कुल भूलकर वह मरी। अब वह परिवारकी कबमें आराम ले रही है।

मार्क्सके सम्बन्धमें

मार्क्षके मौलिक सिद्धान्तों—दार्शनिक मौतिकवाद, इन्द्रवाद, इतिहासकी मौतिक व्याख्या, आर्थिक सिद्धान्त—मूल्य, अतिरिक्त-मूल्य, समाजवाद और वर्ग-संधर्षका बहुत संज्ञिप्त और तुन्दर विवेचन उनके उत्तराधिकारी लेनिनने किया है, जिसे हम "लेनिन" में देंगे। अपनी दोनों वेटियों जेनी और लौराके जाय पहेलीके रूपमें मार्क्स निग्न प्रश्नोत्तर कराते थे:

तुम्हारा प्रिय गुण-सादगी मनुष्यमें तुम्हारा प्रिय शुण-शक्ति (बल)। स्त्रीमे तुम्हारा प्रिय गुण---निर्वलता । तुम्हारी मुख्य विशेषता-लच्यके प्रति एकात भक्ति । सुखके बारेमें तुम्हारा विचार-लडना । दु:ख़के बारेमें तुम्हारा विचार--ग्रात्मसमर्पण । श्रत्यन्त त्याच्य तुम्हारे लिये दुर्गुण—चुद्रता। सबसे बुरा जिस दुर्गुयाको तुम मानती—दास-मनोच्च । तुम्हारी घृणाकी वस्तु—मार्टिन टपर । प्रिय व्यवसाय-कितानका कीडा बनना । कवि-शेक्सपियर, एशिलस, गोयथे। गद्य-लेखक-दिदेरो। नायक-स्पार्टेक्स, केपलेर । नायिका-ग्रेशेन। फूल—हेफनी। रंग--लाल। नाम-लौरा, जेनी। थाल-मछली। प्रिय सूत्र-कोई मानबोचित वात मेरे लिये पराई नहीं । प्रिय ब्रादर्श-वाक्य-हरेक चीजपर सन्देह करो ।

श्रध्याय २०

एंगेल्स (१८५०-६५ ई०)

१. योग्य सहकर्मी

एंगेल्सके बारेमें हम देख चुके हैं, कि वह मार्क्स लिये एक प्राख दो शारीर जैसे थे। मार्क्स लड़िक्याँ उन्हें। द्वितीय पिता मानतीं श्रीर प्यारसे "जेनरल" कहकर पुकारतीं। वह मार्क्स विहिश्चर प्राण थे। बहुत सालों तक जर्मनीमें दोनोंके नाम एक साथ लिये जाते थे श्रीर इसमें शक नहीं इतिहासमें सदा उनका नाम साथ-साथ लिया जायगा। जब एंगेल्सने मैन्चेस्टरसे १८७० ई० में विदाई ले लन्दनमें श्राकर रहनेका निश्चय प्रकट किया, तो मार्क्सके परिवारमें कई दिनों तक इसकी चर्चा रही श्रीर मार्क्स तो श्रागमनके दिन बच्चोंकी तरह श्रधीर होकर एक-एक घड़ीकी प्रतीचा कर रहे थे। फिर वह श्रम घड़ी श्राई, दोनों मित्रोंने सारी रात चुक्ट श्रीर शराब पीने तथा बातें करनेमें विता दी। तबसे १८८३ ई० में मृत्युके समय तक लन्दनमें रहते शायद ही कोई दिन बीतता, जबिक एक या दूसरेके घरमें दोनों न मिलते।

मार्क्स एंगेल्सकी रायको सबसे ज्यादा मानते। एंगेल्स उनके लिये सबसे योग्य सहकारी थे। एंगेल्स मानो उनके लिये सारी जनता थे। यदि एंगेल्सको उन्होंने मना लिया, तो सारी दुनिया मान लेगी—मार्क्सका यह विश्वास था। एंगेल्सकी रायको बदलकर अपनी बात मनवानेके लिये छुंगेटी-छोटी बातोंके वास्ते, वह तथ्योंको दुँदते कितनी ही जिल्दें पढ़ जाते। मार्क्सको अपने मित्रका मारी अभिमान था। लाफार्गने लिखा है: "उन्होंने अपने मित्र (एंगेल्स) के सभी नैतिक और बौद्धिक गुर्गोंको बड़ी प्रसन्तासे दोहराया और सुफें एंगेल्सको दिखलानेके लिये मैन्चेस्टरकी एक विशेष यात्रा की। एंगेल्सके ज्ञान की मारी गम्मीरताकी वह बड़ी प्रशंसा करते थे और उनके साथ कोई दुर्घटना न हो जाये, इसके लिये बड़े चिन्तित रहते थे। एक दिन मार्क्सने उनसे कहा—

"मैं सदा काँपता रहता हूँ । देशके आरपार पागलों जैसे घोड़ा दौड़ानेमें कहीं यह नीचे न गिर जाये।"

२. मेन्वेस्टरमें (१८४० ई०)

एगेल्सके जीवनकी कुछ वार्ते हम पहले वतला चुके हैं। सिक्रय साहित्यिक श्रीर राजनीतिक जीवनसे श्रलग होकर श्रपने पिताके व्यवसायमें लग जानेके लिये एंगेल्सका मजबूर होना मार्क्सको श्राधिक सहायता देनेके ख्यालसे था। यह समस्ते थे, कि वैयक्तिक महत्वाकाज्ञाको दवाकर यदि मैं इस महान् तत्व-दर्शीको श्राधिक चिन्तासे मुक्त कर सक्रूं, तो यहं मेरे जीवनका सबसे वहा काम होगा। इसी ख्यालसे वह १८५० ई० में मैन्चेस्टर लीट गये श्रीर वहाँ श्रपने पिताकी एरमेन श्रीर एगेल्स कपका मिलमें क्लर्क तौरपर काम करने लगे। उसी साल दिसम्बरमें श्रपने बच्चेके मरनेपर एंगेल्सकी सहानुभूतिके पत्रका जवाव देते हुये जेनी मार्क्सने लिखा था:

"मेरा पित श्रीर हम सभी तुम्हारी श्रनुपस्थितिको बहुत महसूस करते हैं श्रीर श्रमसर हमारे मनमें चाह होती है, कि तुम हमारे साथ होते। तो भी, मैं यह जानकर प्रसन्न हूँ, कि तुम चले गये श्रीर श्रव एक वहें कपास-राजा बननेके रास्तेमें हो।..." एगेल्सको श्रपने पिताके लिये श्रांत उपयोगी बननेकी सलाह देते जेनीने फिर लिखा है: "श्रमीसे श्रपनी कल्पनामें तुम्हें ज्येष्ठ एगेल्सके छोटे मागीदार फ्रेडरिक एंगेल्सके रूपमें देख रही हूँ, लेकिन सबसे श्रच्छी बात यह है, कि कपासके व्यापारी होते हुये भी तुम पुराने फिट्ज बने रहोगे।... श्रीर स्वतन्त्रताके पवित्र उद्देश्यसे मुंह नहीं मोडोगे।... बच्चे चचा एगेल्सके वारेमे बहुत बड़बढाते रहते हैं, श्रीर छोटा टिल तुम्हारी सिखाई हुई गीतको बहुत श्रच्छी तरह गाता है।..."

अगले बीस वर्षों के लिये एंगेल्स मार्क्स आॅबोंसे ओमल हो गये। दोनों मित्र कभी ही कभी कुछ समयके लिये मिलते। लेकिन, इससे इतिहासको एक बड़ा फायदा उन पत्रोका यह हुआ, जो कि दोनोंके बीच प्रायः रोज ही आते-जाते रहते थे, जिनमें तात्कालिक जीवनकी कितनी ही बातोंके साथ-साथ साहित्यिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा दूसरे विषयों पर भी विचार-विनिमय होता रहता था। जैसे ही अर्थशास्त्र, दर्शन या किसी और विषय पर कोई विचार एकके दिलमें आता, वह तुरन्त ही उसके बारेमें दूसरेको लिखकर उसकी राय पूछता। इस प्रकार विचारोंको स्पष्ट करनेमें उन्हें बड़ी सहायता मिलती।

मेन्चेस्टरमें पिताके मिलमें काम करते एंगेल्सने पढ़ने-लिखनेको छोड़ नहीं दिया, विशेष कर सैनिक इतिहास ख्रीर विश्वानपर उनका अध्ययन बड़ी गम्भीरताके साथ होता रहा। प्राकृतिक विश्वान और तुलनात्मक भाषाशास्त्र भी उनके दिलचस्य विषय थे। १८५२ के मार्चमें अपने रूसी माषाके अध्ययन विश्वान से उन्होंने कम समय निकालनेकी शिकायत की: "मैंने रूसीको चौदह दिनों देखा-भाला और व्याकरण काफी अच्छा हो गया। दो या तीन महीने और देने पर मुक्ते आवश्यक शब्दावली मालूम हो जायगी और तब मैं कुछ दूसरी बात करना आरम्भ करूँगा। मुक्ते इस वर्ष स्लाव माषाओंको अवश्य खतम कर देना है, और वह वस्तुतः उतनी अधिक कठिन नहीं है।...बकुनिन इसीलिये कुछ अधिक महत्वका बन गया है, क्योंकि दूसरा कोई रूसी नहीं जानता। पुरानी वृहत्तर-स्लावकी चालको—कि पुरानी स्लाव सामूहिक सम्पत्ति-अधिकारको साम्यवादमें परिवर्तित किया जा सकता है, और रूसी किसान जन्मजात कम्युनिस्ट समक्ते जाने चाहिये—फिर बड़े पैमानेपर फैलाया जायगा।

हम देख चुके हैं, कि इतालियन-युद्धके समय १८५६ ई० में एंगेल्सने "पो ग्रीर राइन" नामक पुस्तिकाको विना नामके प्रकाशित कराया था, जिसे मार्किन बहुत पसन्द किया था। इतालियन-युद्धकी समाप्तिके बाद एंगेल्सने सवाय, नाइस ग्रीर राइन, पुस्तिका लिखी, फिर १८६५ ई० में "प्रशियन सैनिक समस्या ग्रीर जर्मन मजुर पार्टी" के नामसे एकं पुस्तिका लिखी।

३. पिताके स्थानपर (१८६० ई०)

१८६० के मार्चके अन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये। १८६४ ई० के सित-म्बरमें अब वह पिताके फर्ममें पार्टनर (मागीदार) वन गये थे, जिसका अर्थ था उनके ऊपर कामकी और जिम्मेवारी और समयकी और कमी हो गई। मई १८६० में ही मार्क्सको पत्र लिखते हुये एगेल्सने कहा था: "मै अपने सहमागी-के साथ कंट्राक्टको ऐसा कठिन बनाना चाहता हूँ, जिसमें वह खुशीसे मुक्ते छोड दे। लेकिन, वह नहीं हो सका। पार्टनर बन जानेसे, अब एंगेल्सकी आम-दनी बढ़ गई थी, जो कि उस समय कम महत्वकी बात नहीं थी। लेकिन एंगेल्स श्रपने पत्रोंमें इस तरहके जीवनसे बरावर श्रसतोष प्रकट करते थे, जिससे मार्क्स भी सहमत थे, लेकिन वैसा करना गुनाह वेलज्जत नहीं था।" उन्होंने एक पत्रमे लिखा था: "मै किसी चीजकी उतनी चाह नहीं रखता, जितना कि इस सौरे व्यापारसे छुट्टी पानेको, जो कि समयकी वरवादीके साथ-साथ मुक्ते पूर्णतया पूरा भ्रष्ट कर रहा है। जब तक इसमें हूं, मैं किसी चीजके लिये भी उपयुक्त नहीं हूं। खासकर जबसे मैं पार्टनर हो गया, तबसे श्रीर बहुत हुरा हो गया, क्योंकि जिम्मे-वारियाँ अधिक वढ गई हैं। यदि अधिक आमदनीका ख्याल न होता, तो मैं फिर क्लर्क होना पसन्द करता ।" लेकिन, जब-जब व्यवसायसे हटनेका ख्याल उनके दिमाग मे स्राता, तव-तव उनके दिमागमें यह परेशानी भी उठ खडी होती, कि तब मार्क्को श्राधिक सहायता कैसे पहुँचाऊँगा। कुछ वर्षों बाद उन्होने व्यवसाय छोडनेका निश्चय जरूर कर लिया था, लेकिन फिर वही चिन्ता उपस्थित हुई । इसीलिये वह चाहते थे कि व्यवसाय छोडनेसे पहले मार्क्स श्रपने ग्रंथों द्वारा श्रार्थिक तौरसे स्वतन्त्र हो जायें।

एंगेल्सके आतमत्यागको मार्क्स अच्छी तरह समक्तते थे। अपने पत्रोमे वह आशा करते रहते थे, कि एकाघ सालमें अपने पैरोंपर खड़े होनेकी संमावना है, किन्तु साथ ही वह यह मी कहते थे: "तुम्हारे विना में अपनी कृति (किपटाल) को नहीं पूरा कर पाये होता। मैं तुन्हें विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरे दिमागपर पहाडकी तरहका एक मार सदा पड़ा रहता है: खासकर मेरे ही लिये तुमने अपनी अद्भुत प्रतिमा को वेकार होने और व्यापारमे मुर्चा खाने दिया।"

१८६५ ई॰ में अपनी मारी आर्थिक कठिनाइयोके बारेमें कहते हुये मार्क्तने लिखा था: ''इन सभी स्थितियोंमें एक ही ख्याल मुक्ते सहारा देता है, वह यह कि हम दोनों एक व्यवसायी कम्पनी हैं, जिसमें मैं सैद्धातक बातोंके लिये समय देता हैं..."

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसे से ही मार्क्सको सहायता नहीं करते थे, बल्क १८५१ ई० के क्रारम्मरे "न्यूयार्क ट्रिन्यून" के लिये मार्क्षको लेख लिखने लगे थे, त्रीर जिसका भी उद्देश्य था कुछ पैसे कमाना, उसमें भी एंगेल्स मदद करते थे। अभी मार्क्का इंगलिश भाषापर अधिकार नहीं था, इसलिये एंगेल्स उनके लेखोंका ऋनुवाद कर देते । जब समयामाय या किसी श्रीर कारणसे मार्क्स लेख न लिख पाते, तो एंगेल्ड स्वयं लेख लिख देते । श्रपने श्रीर कामोंके श्रतिरिक्तं बह प्रति रुप्ताह एक-दो ऐसे लेख लिख दिया करते थे, जो मार्क्यके हस्तान् के साय द्रिव्यून में मेन दिये नाते । १८५७ के ६ श्रप्रेत्तको श्रपने एकलीते पुत्रके मर जानेपर मार्क्सने लिखा था : "बेचारा मूश (एडगर) श्रव नहीं रहा :...मैं कभी इसे नहीं भूलूँगा, वो कि तुम्हारी मित्रताने इस मयंकर समयमें हमारी सहा-यता की |..." एक सप्ताह बाद फिर मान्स्ने लिखा थाः " जबसे प्रिय बच्ची मरा घर, हाँ, विलकुल श्रस्त-व्यस्त श्रीर निर्जन है।...यह कहना श्रसंप्रव हैं। कि कैसे चारों त्रोर हम वच्चेके त्रमावको अनुभव करते हैं । सुके सभी प्रकारके दुर्माग्योंको फेलना पड़ा, लेकिन केवल अभी में समक्त पाया हूँ, कि वास्तविक दुःख क्या है।...इन दिनों जिन मयंकर यातनात्र्योंके मीतरसे में गुजरा हूँ, उन्हारे श्रीर उम्हारी मित्रताके ख्यालने मुक्ते चहारा दिया श्रीर श्राशा दिलाई कि इम अभी भी खाय मिलकर दुनियामें कुछ वौद्धिक काम कर खकेंगे।"

१८५७ ई० में एंगेल्सकी सख्त वीमारीकी खबर पाकर मार्क्सने लिखा या "हमारे सभी दुर्मांग्यांके होनेपर भी तुम्हें निष्ट्रिंचत रहना चाहिये, कि में श्रीप् मेरी पत्नी तुम्हारे स्वास्थ्यकी श्रवश्याके पिछले वर्णनको सुनकर श्रापशीतीका बहुत कम ध्यान रखते हैं।" मार्क्सने एंगेल्सपर जोर दिया, कि स्वास्थ्यके लिये समुद्रके किनारे जाना चाहिये। एंगेल्सने भी श्रपने मित्रकी सलाह स्वी-कार की। यद्यपि मार्क्सने "ट्रिब्यून" के लिये लेखका ख्याल छोड़ देनेके लिये कहा था, लेकिन समुद्रतरसे भी उन्होंने मार्क्सके पास लेख लिखकर मेजिं श्रफ्तोस प्रकट किया, कि मैंने तुम्हारे पास शरावका एक श्रव्छा वक्स नहीं मेजा। एंगेल्स शरावके प्रेमी थे। उनके तहखानामें वरावर श्रच्छी शरावकी चोतलें मरी रहतीं श्रीर उनको वरावर ध्यान रहता कि मार्क्षके घरमें चाहे श्रीर किसी चीवका श्रमाव हो, लेकिन शरावकी कमी न होने पाये।

मार्क्य अपनी कृतियोंकी सबसे वड़ी कसीटी एंगेल्सको मानते । उनकी सलाहों से बराबर फायदा उठानेके लिये तैयार रहते थे । जून १८५६ को उन्होंने "राजनीतिक अर्थशास्त्र आलोचना" के बारेमें एंगेल्सको लिखा था : "सबसे पहले यह कहने दो, कि मुक्ते यह जानकर बढ़ी प्रसन्तता हुई, कि तुम प्रथम भागको पसन्द करते हो । इस विषय में केवल तुम्हारा ही फैसला मेरे लिये महत्व रखता है ।" १८६७ के जूनमें "किपटाल" की कुछ शीटोंको मेजते हुये मार्क्य लिखा था : "मुक्ते विश्वास है कि इन चार शीटोंसे तुम संतुष्ट होगे । तुम्हारा सन्तोष...मेरे लिये वाकी सारी दुनियासे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है । एंगेल्स अपनी राय हॉमें हॉ मिलानेके लिये नहीं दिया करते थे । उनकी आलोचना गुया-दोषको दिखलाते होती थी, जिसको पाकर मार्क्स अक्सर अपनी कृतियोंमें फैर-बदल करते थे ।

"कपिटाल" की प्रथम जिल्दके अन्तिम प्रूफको देख लेनेके बाद १६ अगस्त १८६७ को मार्क्सने एंगेल्सको निम्न पत्र लिखा था:

"प्रिय फ्रेंड, श्रन्तिम पूफ-शीटका संशोधन अभी-अभी समाप्त किया। परिशिष्ट—छोटे अन्तरोमें तवा चार पूफ शीटोंके हैं।

"प्राक्तयनको कल संशोधित कर लौटा दिया। इस प्रकार यह जिल्द समाप्त हो गई। यह केवल तुम्हारी सहायता यी, जोकि यह संभव हो सका। मेरे लिये तुमने जो ब्राह्मत्याग किया, उसके विना में तीनों जिल्दोंके लिये विशाल कामको कमी नहीं पूरा कर सकता था। मैं कुनज्ञतापूर्ण हो तुम्हारा ब्रालिंगन करता हूँ।

"शोषित प्रकृती दो शीटें यहाँ साथ हैं। "श्रत्यन्त सघन्यवाद पन्द्रह पौड पाया। "श्रमिनन्द्रन, मेरे प्रिय स्तेही मित्र— "तुम्हारा, का० मार्न्स ।"

४. वृश्यिक मनमुटाव (१८६३ ई०)

मार्क्स श्रीर एंगेल्सकी श्राजीवन घनिष्ठ मित्रताके लम्बे श्रर्सेमें सिर्फ एक ही बार (जनवरी १८६३) ऐसा श्रवसर श्राया, जनकि दोनोंके मनमें कुछ दुर्भाव पैदा हुश्रा।

मैन्चेस्टरमें रहते एंगेल्सका परिचय वर्न्स नामक एक ब्राइरिश प्रिय परिवार-के साथ था। परिवारकी एक लड़की मैरीके साथ उनका प्रेम हो गया। दोनों कानूनी तोरसे विवाह किये विना पति-पत्नीकी तरह एक साथ रहते रहे। मेरी सुन्दर तथा साथ ही नड़ी समम्तदार स्त्री थी। एंगेल्सपर उसका बहुत स्नेह था। वर्षों साथ रहनेके बाद ६ जनवरी १८६३ को एकाएक मैरीकी मृत्य हृदय-रोगसे हो गई। पिछली ही शाम एंगेल्स उसके साथ थे, वह बिल्कल स्वस्थ थी। उसकी मृत्युसे एंगेल्सके हृदयको भारी धक्का लगा। एंगेल्सने जब अपने दुःखको प्रकट करते इसके वारेमें मार्क्सको लिखा, तो मार्क्सका उत्तर उस तरहका नहीं श्राया, जैसा कि उन्हें श्राशा थी। इसे कहनेकी श्रावश्यकता नहीं, कि मार्क्सके लिये ग्रत्यधिक भावुकतापूर्ण वाक्यावलीका लिखना वैसे भी कठिन था। मार्क्सने कुछ वाक्योंमें मैरीके मरनेपर शोक प्रकट करते हुये, फिर श्रपने घरकी कठिनाइयोंको लिख डाला । एंगेल्सको यह बात बहुत खटकी । छ दिनों तक मनमें सोचते हुये उन्होंने कोई जवात नहीं लिखा। फिर पत्रमें मार्क्यके इस "ठंडे" व्यवहारके लिये शिकायत करते हुये कहा: मेरे सभी मित्रोंने...मेरे दुखमें उससे कहीं अधिक सहानुसति और सौहाद्रमरी स्थितिके बारेमें प्रकट की. जितना कि मैं तुमसे आशा करता था।"

मार्क्षको श्रव श्रपनी गलती पूरी तौरसे मालूम हुई श्रीर उन्होंने बहुत-बहुत . जमा माँगते हुये एंगेल्सको पत्र लिखते हुये वतलाया । ''उस समय मेरे घरमें श्रन्न नहीं था, लड़की जेनी बीमार थी श्रीर उधार देनेवाले सामान नीलाम करानेके लिये घरमें पहुँचे हुये थे । यही कारण था, जो मैं एकान्तचित्तसे मेरीके मरनेपर श्रपने मार्वोको प्रकट नहीं कर सका।''

एंगेल्सके लिये मार्क्की मित्रता प्राखोंचे भी ऋषिक मूल्यवान् थी। उन्होंने

तुरन्त मार्क्को च्रमा करते हुये लिखा: "तुम्हारी सन्चाईके लिये मैं तुम्हे धन्ययाद देता हूँ तुम स्वयं समभ सकते हो, कि तुम्हारे पहलेवाले पत्रने मेरे ऊपर क्या प्रमाव डाला ? कोई आदमी किसी स्त्रीके साथ इतने दिनों तक जीवन विताते हुये उसकी मृत्युसे भयंकर रूपसे दुखी हुये विना नहीं रह सकता । मैंने अनुमव किया, कि उसके साथ मैं अपनी जवानीके आन्तम अवशेषोको दफना रहा हूँ । जब मुक्ते तुम्हारा पत्र मिला, तब अभी वह अपनी कबमें नहीं गई थी । मैं तुम्हें बतलाता हूँ, कि तुम्हारा पत्र सारे सप्ताहमर मेरे दिमागमें धूमता रहा, मैं उसे मूल नहीं सकता था । कोई पर्वा नहीं, तुम्हारे पिछले पत्रने सब ठीक कर दिया और मुक्ते प्रसन्तता है कि मेरीके साथ-साथ मैंने अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं लो दिया।"

मार्क्सने भी अपने जवाबमें उसी तरह लिखा : "अब बिना किसी बाहरी दिखलावेके तुमसे कह सकता हूँ, कि इन पिछले कुछ हप्तोंमें जितनी कठिनाइयोंसे मैं गुजरा, उनके होते भी किसी चीजका बोक उसे पासंग भी नहीं मालूम हो रहा था, जितना कि हम दोनोंकी मित्रताके टूटनेका भय।"

१८६४ ई० के अन्तमें मेरी बर्न्सकी वहन लिजी एंगेल्सकी पत्नी बनी और १८७८ ई० में लिजीके मरनेके समय तक दोनोने बड़े आनन्दपूर्वक जीवन विताया | लिजी एंगेल्स बड़ी ही समम्मदार महिला थी | वह अपने पतिके आदर्शोंको मानती थी | साथ ही वह आयरिश स्ववन्त्रताके योद्धाओ—सिन-फिनों—की आजन्म पत्त्पातिनी रही | दोनोको कोई संतान नहीं हुई, लेकिन उन्होंने लिजीकी मतीजी मेरी एलेन (पम्पस) को अपने यहाँ रखकर वेटीकी तरह पदाया-लिखाया था ।

४. मित्रके पास

१८६८ ई० के अन्तमें एगेल्सको फिर व्यवसायसे मारी विरक्ति होने लगी। उनके पार्टनर गाटफीड एमेंनने भी इस धार्तपर काफी पैसा देना स्वीकार किया, कि एगेल्स अपने हिस्सेको वेचकर अलग उसी तरहके व्यवसायको न खोले। एगेल्सको इसका कोई ख्याल भी नहीं हो सकता था। उनको केवल यही चिंता थी, कि पैसा इतना मिले, जिसमें वह श्रीर खर्चों के श्रितिरिक्त मार्क्सको प्रति-वर्ष ३५० पाँड दे सकें—कमसे कम पाँच-छ सालां के लिये। पाँच-छ, सालां के बाद क्या होगा, यह एंगेल्सको मालूम नहीं था, लेकिन उन्हें श्रासा थी, कि तब भी कमसे कम डेद सी पाँड वह प्रतिवर्ष दे सकेंगे। ३५० पाँड वार्षिक पर्याप्त होगा या नहीं, यह पूछुनेपर मार्क्सने उसे पर्याप्त कहा। श्रान्तमें १ खुलाई १८६६ को एंगेल्सने श्रपने पत्रमें लिखा: "हुर्स! श्राज में मधुर व्यापारसे पिंड छुड़ा एक स्वतन्त्र मनुष्य हूँ।...गाडफीड (एमेंन) ने सभी बातें मान लीं। इसी (मार्क्सनी सबसे छोटी लड़की एलिनोर, जो कि उस समय एंगेल्स दम्मतीके साथ कुछ सप्ताहसे रहती रही थी) श्रीर मैंने श्रपने प्रथम मुक्ति-दिनस को श्राज सुवह देहातमें एक लम्बी चहलकदमी करते हुये मनाया।...

"हिसाब-किताव श्रीर वकील कुछ सप्ताहं श्रीर सुमे बाँवे रहेंगे—लेकिन इसका श्रर्थं श्रव पहले जैसी समयकी भारी चृति नहीं होगी।..."

मार्क्षने इसके जवाबमें लिखा था: "बन्धनसे तुम्हारी मुक्तिके लिथे सबसे अच्छे अभिनन्दन! इस घटना के सम्मानमें एक श्रीर ग्लास पान लिया, किन्तु प्रशियन सैनिकोंकी तरह सबेरेसे पहले नहीं, विलेक शामको देरसे।..."

एंगेल्सकी पत्नी लिजीके सम्बन्धी भी अन्तमें राजी हो गये और १८७० के सितम्बरके अन्तमें अपने ससुरालवालों मेनचेष्टरसे विदाई ले एंगेल्स लन्दन चले आये। अब दोनों मित्र आपसी सलाहसे कामका बँटवारा कर काममें लग गये। मार्क्सने अपने जिम्मे मौलिक अर्थशास्त्रीय और दार्शनिक सिद्धान्तोंपर कलम चलानेका काम लिया। और एंगेल्सने इन सिद्धान्तोंके प्रकाशमें तत्का-लीन महत्वपूर्ण समस्याओंके हल और खंडन-मंडनको सँमाला।

(१) सामयिक लेख-समस्यात्रोंपर एंगेल्सने बहुत भारी संख्यामें लेख . श्रीर पुरितकार्ये लिखीं। उनमेंसे बहुतोंका केवल ऐतिहासिक महत्व नहीं, बल्कि श्राजकलकी समस्यात्रोंमें उपयोग हो सकता है, जैसे "घरोंका प्रश्न" जो कि १८७२ ई० में कई लेखोंके रूपमें निकला, जिसमें पूषों श्रीर मूलवेगेंर छोटे चिपके निम्न कूर्जा-श्रनुयायियोके विचारोका खडन किया गया है। एंगेल्सने लिखा है: "घरोंकी समस्या कैसे हल की जाय ? वैसे ही जैसे कि आजकल समाजमें कोई दूसरा सामाजिक प्रश्न हल किया जाता है: मॉग श्रीर पूर्विके क्रमशः ऋार्थिक तालमेल द्वारा । यह ऐसा दल है, जोकि नये तौरसे उसी सवाल को पैदा करता है, श्रीर इसलिये वह हल नहीं है। सामाजिक क्रांति कैसे इस प्रश्नको हल करेगी ? वह प्रत्येक अवस्थामें मौजूदा परिस्थितियोंपर ही केवल निर्मर नहीं करती, बल्कि उसका सम्बन्ध और भी दूर तक पहुँचनेवाले प्रश्नोंसे है, जिनमें एक अत्यन्त मौलिक प्रश्न है नगर और गॉवके बीचके विरोधो का खतम करना ।... एक बात निश्चित है : 'यदि उनके बुद्धिपूर्वक उपयोगको स्वीकार किया जाय, तो वास्तविक घरोंकी कमीको तुरन्त पूरा करनेके लिये बड़े शहरोंमें अभी भी रहनेके लिये काफी मकान मौजूद हैं। यह आसानीसे हो सकता है, यदि वर्तमान स्वामियोंसे उन्हें लेकर श्रीर वेघरवाले या पहले घरोमें श्रत्यिषक भरे हुये कमकरोंको इन धरोंमें वसा दिया जाय। राजनीतिक शक्तिः को जैसे ही सर्वहारा श्रपने हायमें ले लेंगे, तुरन्त सार्वजनिक हितके उद्देश्यसे इस तरहकी कार्रवाई उसी तरह श्रासानीसे की जा सकती है, जैसे वर्तमान राज्य द्वारा दूसरेकी सम्पत्तिको हाथमें लेना और घरमें बसाना।"

(१) द्वरिंग-खंडन-मार्क्सनाद्पर यह बहुत ही सुन्दर पुस्तक है, जिसमें आचेपोंका जवाब देते हुये मार्क्सके सिद्धान्तोका स्पष्टीकरण किया गया है। इस पुस्तकके दूसरे सस्करण के प्राक्तथनमें एंगेल्सने लिखा है:"

"बहाँ तक इन पुस्तकमें विवेचन और दृष्टिकोण्की प्रणालीके विकासकी व्याख्याका सम्बन्ध है, उनका श्रेय बहुत अधिक मान्संको है और बहुत थोड़े परिमाण्में मुक्ते भी। हम दोनोंके बीच यह बात तैसी थी, कि विना मार्क्षके ज्ञानके मेरी यह व्याख्या प्रकाशित न हो। छुपनेसे पहले मैंने सारे इस्तलेखको उनके सामने पढ़ा और अर्थशास्त्रपर दसनें अनुच्छेदको तो मार्क्सनेही लिखा। मैंने इतना ही किया, कि उसे थोड़ा छोटा कर दिया। विशेष विषयोंमें हम एक दूसरे की सहायता करनेके आदी हैं।

(२) इरिंग-खंडन (१८७५ ई०)—एंगेल्स की यह प्रसिद्ध पुस्तक १८७५ ई॰ में "फोरवेटर्स" में वैज्ञानिक परिशिष्टके तौरपर प्रकाशित हुई। श्रीर इसके श्रन्तिम भागको "समाजवाद उटोपियन श्रीर वैज्ञानिक" के नामसे श्रलग भी प्रकाशित किया गया। १८७० वाली शताब्दीके श्रारम्भमें जर्मनीमें समाजवादी जनतंत्रताका काफी प्रचार हो गया और उसकी श्रोर उदारवादी ब्र्वांजी भी खिंचने लगी। ऐसे लोगोंके समाजवाद श्रीर मजदूर-संगठनमें श्रानेमें कोई श्रापत्ति नहीं हो सकती, .लेकिन यह जरूरी है कि उनके पुराने मनोभाव विल्कुल दूर हो गये हों श्रौर उन्होंने सर्वहारा क्रान्तिकारी श्रान्दोलनको श्रन्छी तरह श्रात्मसात् कर लिया हो । फैशनके लिये धर्वहारा वर्गके संगठनमें ऐसे लोगोंके त्राने या समाजवादी वननेसे हानि छोड़ लाम नहीं हो सकता। यूरोन डूरिंग इसी तरहका एक प्रतिभाशाली बूर्जी-नेता था, जिसने समाजवादीकी तरफ ग्रपने सुकावको दिखलाकर तस्यों पर काफी प्रभाव ङालना शुरू किया । उसने बहुत से विषयोंका श्रध्ययन किया था, जो चंचुग्राही पांडित्य-से ग्रिधिक नहीं था। पर उसकी कलममें शक्ति थी। इस प्रकार वह कितनी ही वार गलत-सलत वार्ते कहकर लोगोंको पथ-भ्रष्ट करनेमें सफल होता। एंगेल्सने यद्यपि ग्रपने इस ग्रंथको डूरिंगके विचारोंके खंडनके लिये ही लिखना शुरू किया था, लेकिन अपनेको उतने ही तक सीमित नहीं रक्खा और जिस विषयको भी लिया, उसपर गम्भीरतापूर्वक श्रपने विचारोंको प्रकट करते हुये इस पुस्तकको वैज्ञानिक साम्यवादका एक सुन्दर श्रौर स्पष्ट प्रकरण-ग्रंथ वना दिया। उन्होंने इसमें सारे त्राधुनिक साइन्सकी विवेचना माक्सीय भौतिकवादी दृष्टिकोग्एसे की।

सत्रसे पहले इस पुस्तकमें ऐतिहासिक भौतिकवादके स्रोतोंका अनुसन्धान करते हुये अपने और मार्क्स दारा इस्तेमाल किये गये द्वन्द्वात्मक-अनुसन्धान-प्रणालीका विवेचन कर, उसे विज्ञान तथा दर्शनके च्रेत्रमें उचित स्थान दिलाया। इस ग्रंथमें पुराणके भीतर नवीनके उगनेके द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तका उदाहरण दिया गया है, और यह मी कि इसके परिणामस्वरूप विकास अथवा परिपक्वतार्की एक निश्चित मंजिलमें पहुँचकर पुरानेका स्थान नवीन अनिवार्य-तया ग्रहण करता है। एंगेल्सने इस सिद्धान्तकी व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकारकी

भौतिक, प्राकृतिक और प्राणिशास्त्रीय विज्ञानों एवं इतिहास, दर्शन स्त्रादिके स्त्रेतों के उदाहरखोंसे की है:

द्रन्द्वात्मकता (द्रन्द्ववाद) वस्तुश्रों श्रीर उनके विचारों, उनके श्रापसी सम्बन्धमें सारतः श्रपने परिणाममें श्रपनी गति, श्रपने जन्म श्रीर मृत्युमें उप-रोक्त प्रक्रियाये द्रन्द्ववादकी श्रपनी व्यवहार-प्रणालीके उतने प्रकारके पुष्टीकरण हैं। प्रकृति द्वन्द्ववादकी कसौटी है।...

"इसीलिये विश्व, उसके विकास और मानव-जितके विकास तथा मानव-मिस्तिष्कमें इस विकासके प्रचेपायकी ठीक तौरसे प्रतिमूर्ति केवल द्वन्द्वान्मक तरीकेसे ही त्राम क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं, प्रगतिशील श्रथना प्रतिगतिशील परि-चर्तनोंके रक जानेका लगातार घ्यान रखते ही द्वन्द्वात्मक तरीकेसे निर्मित की जा सकती है।" वस्तुतः 'द्वन्द्ववाद प्रकृति' मानव-समाज और विचारमें गति और विकासके विश्वजनीन नियमके साइन्सके "सिवा और दुक्क नहीं है।" त्राचार, सत्य और न्यायके सनातन नियमोंकी दुहाई देनेवालोपर आचेप करते हुये एगेल्सने लिखा है:

"हम यहाँ उस प्रयत्नकी श्रोर ध्यान श्राक्तम्ट करना चाहते हैं, जो कि हमारे ऊपर एक प्रकारके श्राचारिक मतवादको सनातन, श्रन्तिम, क्टस्थ, श्राचारिक नियमके वहानेसे लादा जाता है, कि श्राचारिक नियम विधानमें वह स्थिर सिद्धात निहित है, जो कि इतिहास श्रीर वैयक्तिक लोगोंके मेदोके प्रभावसे परे हैं। इसके विरुद्ध हम मानते हैं, कि चहाँ तक सभी श्राचारिक वादोंका सम्बन्ध है वह श्रन्ततः किसी विशेषकालमें एक समाजमे प्रचलित कुछ श्रार्थिक स्थितियों के श्रस्तित्वकी एक गवाही है।"

"श्रीर जैसे चूंकि श्रव तक समाज वर्ग-विरोधमे चलता श्रा रहा है, इसिलये श्राचार, नियम सदासे एक वर्ग-श्राचार रहा है। इसने या तो शासकवर्गके प्रमुत्व श्रीर हितोंको उचित ठहराया, श्रयवा जैसे ही उत्पीटित वर्ग काफी शक्ति, शाली हो गया, उसने इस प्रमुता श्रीर उत्पीटितोंके भावी स्वायोंके विवद्ध विद्रो-हका प्रतिनिधित्व किया।...जो कि उनके सभी दु ल श्रीर विलासके प्रकट,

दिखता और समृद्धिके असहा विरोधोंके साथ अमकी उपजोंके वितरणके वर्तमान दंगमें क्रान्तिके लिये अधिक सुरिक्ति होने नहीं देते, तो यह धारणा (चेतना) अन्तमें फैलकर रहेगी, कि वितरणका यह दंग अन्यायोचित है, न्यायको अन्तमें हावी होना पड़ेगा, नहीं तो हम दुर्गतिमें पड़ वहाँ चिरकाल तक रहेंगे।...

"दूसरी शब्दोंमें यह हुन्रा: श्राधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके तरीकेकी उत्पादक शक्तियाँ तथा उसपर श्राधारित ग्राधुनिक पूँजीवादी वितरण-व्यवस्था स्वयं उत्पादन-व्यवस्थासे इतना विरोध रखती है, कि उत्पादन श्रीर वितरणके ढंगमें ऐसी क्रान्ति होनी श्रानिवार्य हो गई है, जो कि सभी वर्ग-विमेदों को नष्ट करे, श्रान्यथा सारा श्राधुनिक समाज पतनके खड़ुमें गिरेगा। यह वास्तविक भौतिक सध्य हैं, जो कि शोपित सर्वहाराके मनमें श्रीर श्राधिक सफ्ट करते जा रहे हैं, कि यह उन किताब की हों के न्याय श्रीर श्रान्याय-सम्बन्धी ज्ञानकी नहीं, बल्कि साजवादकी विजयके विश्वासकी नींव बनते हैं।"

दूरिंगने कितने ही वूर्वा-उदारवादियोंकी तरह जोर देकर कहा था, कि वर्गगुलामीका कारण राजनीतिक शक्ति मुख्य कारण हैं, आर्थिक स्थितियाँ वर्गमेदके गीण कारण हो सकती हैं। इसके जवाबमें एंगेल्सने वतलाया, कि किस तरह
प्रचीन लोगोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ: आम तौरसे जबदेंस्ती लूट्ट
हारा नहीं बल्कि आरम्भिक कबीलाशाही कम्यून (संघ) में कुछ चीजोंके आमावके कारण वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ, इसलिये विनिमयकी आवश्यकता
पड़ी, और उपयोगकी जगह विनिमयके लिये मालका उत्पादन शुरू हुआ।
इसके द्वारा वितरणके तरीकेमें भी परिवर्त्तन हुआ, और व्यक्तियोंकी सम्पत्तिमें
असमानता पेदा हुई। बाहरी हिंसात्मक स्वेच्छाचारिताके होते भी शताब्दियों
तक पुराण-साम्यवाद कायम रहा, लेकिन महान् उद्योगकी उपजोंकी होड़ने
अपेदावृत्त थोड़े समयमें वह खतम हो गया।

त्रुर्ज्ञा-क्रांतिके वारेमें एंगेल्सने वतलाया, कि उसने सभी सामन्ती वेड़ियोंकी तोड़ फेंका: किन्तु, हेर दूरिंगके सिद्धान्तके अनुसार राजनीतिक स्थितियोंके अनु- कूल श्रार्थिक-व्यवस्थाके तालमेल द्वारा नहीं ..' बल्कि उससे उलटे पुराने जीर्या-शीर्य राजनीतिक कृडे-करकटको श्रलग हटाकर ऐसी राजनीतिक स्थितियोंके निर्माया द्वारा हुई, जिसमें कि नवीन "श्रार्थिक-व्यवस्था" मौजूद रहते विकसित हो सके। श्रपनी श्रावश्यकताश्रोंके श्रनुक्ल राजनीतिक तथा कानूनी वातावरयामें, वह इतने श्रद्भुत चमत्कारके साथ विकसित हुआ, कि १७८६ ई० मे बूर्जा-जीने करीब-करीब उस स्थानको प्राप्त कर लिया, जो कि पहिले सामन्तोंका था। श्रव बूर्जाजी केवल सामाजिक रूपसे ही श्रिषिकाधिक फबूल नहीं होती जा रही है, बल्कि वह एक सामाजिक बाधा बन रही है, उत्पादक कार्रवाइयोंसे श्रिषका-धिक श्रलग होती, पुराने सामन्तवर्गकी तरह श्रिषकाधिक केवल मालगुजारी लेनेवाला वर्ग बनती जा रही है। इस क्रान्तिमें उसने श्रपनी स्थितिको टीक करते हुये किसी तरहका बलात्कार किये, श्रद्ध श्रार्थिक तरीकेसे एक नये वर्ग-सर्व-हारा-का स्वन किया।

इस प्रकार मालूम होगा, कि "हूरिंग-खडन" में एगेल्सने केवल हूरिंगकार तत्कालोपयोगी खडनमर नहीं किया, बल्कि मार्क्सवाद के सिद्धान्तोंकी सरलन् श्रीर सफ्ट विवेचना की है।

६. साक्सीके बाद-(१मन्३-६४ ई०)

(१) "कपिटाल" का सम्पादन—हम देख चुके हैं, कि मार्क्स अपने महान् ग्रंथ "कपिटाल" (पूँजी) को तीन जिल्दों में तैयार किया था; बिनमें केवल प्रथम जिल्दको ही वह प्रेसके लिये तैयार करके अपने सामने छुपा देखाये थे, वाकी दो जिल्दे अपने पेशी रियतिमें नहीं थीं, कि उन्हें प्रेसमें दिया वा सकता। मार्क्सकी मृत्युके समय (१८८३ ई०) में एंगेल्स ६३ सालके हो चुके थे, लेकिन सौमायसे अभी उन्हें बारह साल और जीना था। दुनियाँके म्वीहारा-संगठनो और नेताओकी अपन एगेल्सको ओर नजर लगी, इसलिये उनका समय उनको सलाह देने और दूसरे कार्मों लगता था, तो भी उन्होंने. अपने अवशिष्ट जीवनका उद्देश्य रक्खा था—शत्रुओके मार्क्सवादपर होते हारका विफन्न करना तथा "कपिटाल" के बाकी दोनों जिल्दोको ठीक करके

प्रकाशित करना । १८६४ ई० में "कपिटाल" की तीसरी जिल्दके प्राक्कथनमें श्रंगेल्सने स्वयं लिखा है:

"पहली बात यह है, कि मेरी आँखोंकी कमजोरी है, जो कितने ही वर्षों से आल्यतम मात्रामें भी लिखनेमें मुक्ते अपने समयका उपयोग करने नहीं देती, और आजकल भी कभी-कभी कृतिम प्रकाशन ही लिखनेका मौका देती है।... इसके अतिरक्त दूसरे भी काम ये, जिनसे में इन्कार नहीं कर सकता था, जैसे कि मार्क्स और मेरी अपनी पहेलीकी कृतियोंके नये संस्करण और अनुवाद, संशोधन, प्राक्कथन, परिशिष्ट, जिनके लिये अक्सर विशेष अध्ययन आदिकी आत्रश्यकता पड़ती थी। सबसे ऊपर इस ग्रंथकी प्रथम जिल्दके अँग्रेजी संस्करण का सवाल था, जिसके लिये अन्तिम जिम्मेवार में हूँ और जिसने मेरा बहुत सा समय लिया। जिस किसीने पिछले दस वर्षों अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी साहित्यकी प्रकांड बृद्धि, विश्रेप कर मार्क्स और मेरी पहलेकी कृतियोंके बहुसंख्यक अनुवादोंको देखा होगा, वह मुक्ते सहमत होगा..., कि कुछ परिमित संख्यामें ही धेसी भाषायें हैं, जिनमें कि मैं किसी अनुवादककी सहायता कर सकता हूँ। यह काम संशोधनकी माँग माननेके लिये मुक्ते मजबूर करता है।

"किन्तु, साहित्यकी यह वृद्घि स्वयं श्रन्तर्राष्ट्रीय मजूर-श्रान्दोलनकी वृद्घिकी साची है, जिसने यह नई जिम्मेवारियाँ मेरे ऊपर लादीं। हमारे सार्वजनिक जीवन के प्रथम दिनोंसे ही समाजवादियोंके राष्ट्रीय श्रान्दोलन श्रीर कमकर-जनताके बीच समस्तीता करनेका काफी मार मार्क्स श्रीर मेरे कन्धोंपर पड़ा।...इस बोम्को श्रपने मृत्युके समय तक मार्क्सने उठाया। उनके बाद बराबर बदते हुई कामको केवल मुक्ते करना पड़ा।

"इसी बीच भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय मजूर पार्टियोंके बीच सीघा सम्बन्ध स्था-पित होना आम हो गया और सीमाग्यसे वह अधिकाधिक होता जा रहा है। तो भी, मेरे सैद्धान्तिक अध्ययनोंको ख्यालमें रखते हुये जितना मुक्तसे बन सकता है, उससे कहीं अधिक सहायता अब भी माँगी जाती है।...हमारे इस उथल-पुथलवाले समयमें १६ वीं शताब्दीकी तरह सार्वजनिक कार्योंके सम्बन्धमें थ्यौरी (वाद) गढ़नेवाले केवल प्रतिक्रियावादियों के दलमें ही देखे जाते हैं। इसी कारण ये भद्रपुक्त वेदवाले वैज्ञानिक नहीं, बल्कि सिर्फ प्रतिक्रियावादके समर्थक हैं।

"चूंकि मै लन्दनमें रहता हूँ, इसके कारण जाड़ोंमें पार्टियोंके साथ मेरा सम्बन्ध केवल पत्र-व्यवहारका रहता है, जबकि गर्मियोंमे मेरा अधिकाश समय वैयक्तिक मेट-मुलाकातमें चला जाता है।

"यह तथ्य तथा कितने ही देशोंमें हदतापूर्वक आगे बढ़ते आन्दोलनके अनुगमन करनेकी आवश्यकता, और उससे मी कहीं तेजीके साथ बढ़ती पार्टी-मुखपत्रोंकी सख्या मुक्ते इस बातके लिये मजबूर करती है, कि इतनी सामग्री सुरित्त्त रक्खूं, जिससे कि सालके जाड़ोंके महीनोंमें बाधा न खड़ी हो।

"जब त्रादमी सत्तरसे ऊपरका हो जाता है, तो उसके मस्तिष्कके जोड़नें वाले तन्तु कुळ बुरी सी लगनेवाली सुस्तीके साथ काम करते हैं, श्रीर श्रादमी पहलेकी तरह श्रासानी श्रीर शीव्रताके साथ कठिन सैद्धान्तिक समस्याश्रोंकी बाधाको सुलक्षा नहीं पाता। जिसका नतींचा यह होता है, कि एक जाड़ेका काम, यदि उस समय पूरा नहीं हुआ, तो श्रिषिकतर श्रगले जाड़ेमें करना पड़ता है।

'यह वात खास करके अत्यन्त कठिन पंचम अनुन्छेदके बारेमे हुई।

"पाठक निम्न बार्तोंसे देखेंगे, कि तृतीय जिल्दके सम्पादनका कार्य द्वितीय जिल्दकी त्रपेक्षा वस्तुतः मिन्न या। तृतीय जिल्दके लिये प्रथम मसौदेके सिवा त्रीर कोई चीज मौजूद नहीं थी, श्रीर वह भी बहुत श्रपूर्ण था।

"मिन्न-मिन्न अनुन्छेदोंके आरिमक माग आम तौरसे अन्छी तरह साव-षानीके साथ विस्तारित अथवा शैलीके तौरपर पालिश विये हुये भी थे, लेकिन आदमी जितना ही आगे बढता है उतना ही देखता है कि वह अधिकतर टॉचेके रूपमें तथा विश्लेषण अपूर्ण था।..."

इस प्रकार हम देख रहे हैं ; कि ग्रामर प्रथ "कपियल" की ग्रांतिम दोनों महत्पूर्ण जिल्दोंका उद्धार करते उन्हें मार्क्षके विचारोंके ग्रानुसार ही रखनेका व्यहान् काम एंगेल्सने किया, श्रीर केवल वही कर भी सकते थे, क्योंकि वहीं श्राप्त-मार्क्स थे।

(२) "परिवारकी उत्पत्ति" (१८८४ ई०)—मार्क्की मृत्युके अगले खालकी गर्मियोंमें एंगेल्सकी पुस्तक "परिवार, वैयक्तिक सम्पत्ति और राज्यकी उत्पत्ति" प्रकाशित हुई । मार्क्कवाद्के सम्भानेके लिये एंगेल्सका यह श्रंथ ज्यद्भुत सहायक है । प्रथम संस्करणके प्राक्कथनमें एंगेल्सके स्वयं लिखा है : "यह एक अर्थमें एक वसीयतको कार्यस्पमें परिण्त करना है ।.. कार्ल मार्क्त अपने सामे यह मार्वी काम रक्खा था, कि मोर्गेनके अनुसन्धानोंके परिण्यामोंको कुछ निश्चित सीमाओंमें वह अपने सिद्धान्तोंके प्रकाशमें ...रक्कें...—हमारे भौतिकवादी इतिहास-सम्बन्धी परीच्यके प्रकाशमें रक्कें, और इस प्रकार उसके पूर्ण महत्वको सफ्ट करें, क्योंकि मोर्गेनने अपने तरीकेसे ४० वर्ष पहले मार्क्स खारा आविष्कृत इतिहासकी मौतिकवादी धारणाका अमेरिकामें नये तौरसे पता जगाया, और वर्वरता तथा सभ्यताकी तुलना द्वारा वह भी उन्हीं मुख्य तथ्योंपर पर्हुंचा, जिसपर कि मार्क्स पहुँचे ।..."

मोर्गनने ग्रमेरिकाकी ग्रादिम जातियों के समाजके गम्भीर ग्रध्ययनके बाद ग्रापना ग्रंथ " प्राचीन समाज " लिखा, जिसमें उसने जन (क्ष्मीला) श्रीर गरिवारके विकासको दिखलाया। एंगेल्सने इतिहासकी भौतिकवादी दृष्टि का प्रयोग करते हुये भिन्न-भिन्न मंजिलोंसे होते मानव-समाजके विकासको इस पुस्तकमें दिखलाया ग्रीर वतलाया, कि सभी दूसरी सामाजिक संस्थाओंकी तरह परिवार भी ग्रपने विकासका एक लम्बा इतिहास रखता है, ग्रीर वह विकास समाजके विकास एवं वैयक्तिक सम्पत्तिकी वृद्धिके साथ हुन्ना है। परिवारका स्वसे पुराना रूप जांगल-ग्रवरथाके ग्रमुरूप था, जिसमें यूथ-विवाहका रवाज था।

समाजके विकासकी अगली सीदी था वर्तर-समाज, जिसमें परिवार जोड़ेका परिवार था, जिसमें प्रत्येक आदमीकी एक मुख्य स्त्री और प्रत्येक स्त्रीका एक मुख्य पति होता था। इस समाजमें नजदीकी सम्बन्धियोंके बीचमें व्याह अधि-काधिक निपिद्ध होता गया, लेकिन जब तक समाज जनताके रूपमें संगठित रहा, तब तक आधुनिक अथोंमें माने जानेवाला समाज अस्तित्वमें नहीं आया। उस समय परिवार साम्यवादी रूपका था, जिसमें कि सभी या अधिकांश स्त्रियाँ एक जनसे आती थीं, जब कि पति भिन्न-भिन्न जनतोंसे। इस ग्रहस्थीमे स्त्री पुरुषकी दासी नहीं, विलेक प्रमुख स्थान रखती थी। एंगेल्सने एशेर राइटका इस विषयमें उद्घरण दिया है: "आम तौरते स्त्री-माग घरना शासन करता।. मंडार सम्मिलित थे...चाहे पुरुषके कितने ही बच्चे हों अथवा जो मी सामान घरमे हो, उसे किसी समय हुकुम दिया जा सकता था, कि अपना कम्बल ले रास्ता नापे, और ऐसी आधाके वाद वह इन्कार करनेका प्रयत्न नहीं कर सकता था। घर उसके लिये कांटा बन जाता और...उसे अपने जन (कबीले) की ओर लौटना पडता, अथवा जैसा कि अक्सर होता है किसी दूसरे जनमे जाकर नया वैवाहिक सम्बन्ध आरंभ करना पड़ता। स्त्रियां और समी जगहोकी तरह कत्रीलों (जनतो) मे बडी शक्तिशालिनी थी। समयकी आवश्कता होनेपर वह 'सीग तोड फेकने' में भी आनाकानी नहीं करतीं—सरदारके सिरपर सींग उसका विशेष चिन्ह होता था—जिसे तोडकर उसे भाटोकी पक्तिमें लौटा देतीं।

जनके संगठनके बारेमें एंगेल्स कहते हैं: "यह जन-सविधान श्रपनी बच्चों जैसी सादगी में एक श्रद्भुत संविधान है! न सैनिक हैं, न मिलिस्या न पुलिस, सामन्त हैं न राजा, न रिजेट (उपराज) न दंडनायक या न्यायाधीश, न जेल हैं न कानूनके मुकद्मे—श्रीर समी बाते सुद्यवस्थितरूपसे चल रही हैं। सभी भगाई श्रीर मामले तत्सम्बन्धी सारे समूह, जनो या कत्रीलो श्रयवा जनतो द्वारा श्रपने भीतर ही तै कर लिये जाते हैं। केवल चरम श्रवस्थामें श्रीर श्रमवाद-रूपेण खूनके बदले खूनका खतरा पैदा होता है—श्रीर हमारा मृत्युदंड उसी खूनके बदलेके सम्य रूपके सिवा श्रीर कुछ नहीं है। जनोमें कोई गरीव या श्रमावप्रस्त सामूहिक ग्रहस्थी नहीं हो सकती थी। इद्ध, बीमार श्रीर युद्धमें वेकार हुये श्रादमीके प्रति जन श्रपनी जिस्मेवारीको मानते थे। वहाँ सभी समान श्रीर स्वतन्त्र थे—स्त्रियाँ मी।"

लेकिन, यह जन-संस्थार्ये अपने-अपने कवीलेके मीतर ही ऐसी स्थिति रखती थीं। एक कवीला दूसरे कवीलेका शत्रु था, और जैसे-जैसे वैयक्तिक सम्पत्ति बदती जाती थी, वैसे ही वैसे सबसे पहले दायभागके कान्नोंमें परिवर्त्तन हुन्ना, पैतृक कातृत तथा वापकी सम्पत्ति पर वेटेके अधिकारका विकास हुन्ना, जिसके कारण विशेष परिवारोंकी शक्ति त्रिधिक बढ़ी। जैसे-जैसे उत्पादनके साधन विकसित होते गये, अर्थात् धन-उत्पादन करनेका तरीका अधिक और श्रिषिक श्रमकी माँग करने लगा, जन-समाजके वाद (दासताकी प्रथा) प्रचलित हुई । परिवार पहले पितृसत्ताके रूपमें ऋर्यात् ऋादिम साम्यवादी जन-समाजसे होते तीसरी मंजिलपर पहुँचा । पितृसत्ताके समाजमें श्रमकी मांगके कारण श्रारंभ हुई दासताने ऋव दासतामूलक समाजका जन्म दिया, श्रीर उसके साथ परिवार पितृसत्ताके रूपसे बहुत कुछ वर्त्तमान रूप ले चला, जिसके महत्वके बढ़नेके साथ जन-संस्था श्रिधिकाधिक कमजोर होती गईं श्रीर उसके भीतरसे श्राधुनिक समाज ग्रपने प्राचीन रूपमें प्रकट हुम्रा, जिसमें कि सम्पत्तिशाली वर्ग सम्पतिहीन वर्गोंके शोषखपर गुजारा करता है, श्रीर समाजमें शोषितका स्थान दास, श्रर्ध-दास या मजूर-दासके रूपमें रह गया है । मोर्गनने इन सभी परिवर्त्तनोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिको मुख्य कारण माना है : "सम्पत्ति (वैयक्तिक) वह तत्व थी, जो कि परिवर्त्तनकी माँग कर रही थी। पौर जीवन श्रीर संस्थात्रोंका विकास, प्राकारबद्ध नगरोंमें सम्पत्तिका ढेर लगना, ख्रीर उसके द्वारा जीवनके ढंगमें बड़े परिवर्त्तन वह चीजें थीं, जिन्होंने कि जन-संस्थाओंके उखाड़ फेंकनेके लिये रास्ता तैयार किया।"

समाजमें स्त्रिगोंकी स्थिति, राज्य तथा और विषयोंपर भी एंगेल्सने अपनी लेखनी द्वारा बहुत र मौलिक तथ्योंका विश्लेषण किया।

(३) फ्वारवास (१८८८ ई०)—हेगेलीय दर्शनके तत्कालीन प्रतीक फ्वारवासकी विचारधाराका विवेधन और खंडन एंगेल्सने अपनी इस पुस्तकमें किया है, जो कि १८८८ ई० में प्रकाशित हुई। फ्वारवासकी विज्ञानवादकी ओर कमानोंकी आलोचना करनेके बाद इस ग्रंथमें एंगेल्सने बहुत ही स्पष्ट और सारगर्भित शैलीमें इतिहासकी मौतिकवादी धारणाकी इस ग्रंथमें व्याख्या की है। एंगेल्सकी अन्तिम कृति थी मार्क्सके "१८४८-५०ई० से फ्रांसमें वर्ग-संवर्ष?"

की भूमिका। इस ग्रंथको उन्होंने अपनी मृत्युसे केवल पाँच महीने पहले लिखा था। अब वह ७५ साल (जन्म २८ नवम्बर १८२० ई०) के हो रहे थे, लेकिन अब भी उनकी बुद्धि उसी तरह प्रखर और गम्भीर थी। उन्होंने अपनी इस कृतिमें १८५० से १८६५ ई० तकके यूरोपीय समाबके इतिहासका सिंहाव-लोकन किया है।

७. मृत्यु

१८६३ ई॰ मे जरिच-काग्रेसमें ऋन्तिम बार एगेल्स सार्वजनिक मचपर **ब्राये । वह माष्णिसे ब्रिधिक लेखनीके धनी थे । वैसे वह वीना श्रीर वर्लिनकी** कांग्रेसोंमें भी शामिल हुये थे। १८६५ ई० के मार्चमें उनके गले में नास्र (कैन्सर) हो गया, श्रौर जैसा कि इस घातक बीमारीका स्वभाव है, पाँच महीने तक यंत्रणा देते उसने ६ त्रागस्त (१८६५ ई०) को उनके प्राण हर लिये। एगेल्सने प्रथम श्रेगीकी प्रतिभा श्रीर योग्यता पाकर भी हमेशा श्रपनेको पीछे रखना चाहा । मरने के बादके लिये भी मेरी लाशको जलाकर राख समदमें फेंक देना-कहकर उन्होने साबित कर दिया कि उन्हें किसी प्रकारकी महत्वाकाचा नहीं थी। लेकिन, इतिहास उनको महत्वहीन नहीं सममता। मार्क्सके साथ एगेल्सका नाम सदा के लिये जुट गया श्रीर श्राच एकके सामने उपस्थित होने पर दूसरा स्वतः उपस्थित हो जाता है। उनकी चिताके पास उनके घनिष्ट मित्र जमा हुये। मार्क्सकी पत्री एलिनोर उस समय एगेल्सके प्रिय समुद्रतट ईंघ्टबोर्न-पर पहुँची। उसने २७ अगस्त को एक नाव किराया करके महान् एंगेल्सकी मरमको ले जाकर समुद्रमें डाल दिया । मार्क्सकी हिंह्डयाँ अन भी लन्दनके हाइगेट कबिस्तानमे मौजूद हैं, उनके शिष्य लेनिन श्रीर प्रशिष्य स्तालिनके शवोंको सबीव से रूपमें आज मी मास्कोंके लालमैदानके समाधि-मन्दिरमें देखा जा सकता है, लेकिन एगेल्स अब केवल अपनी कृतियोंने ही जीवित हैं-जो उन ऋश्यियों से भी ऋधिक मूल्यवान और अभर हैं, इसे कहने-की ग्रावश्यकता नही।

परिशिष्ट वर्षपत्र

सन्	स्थान	घटना-विवरण			
१८१८ मई ५	द्रीर (ट्रेन्स)	कार्लं मार्क्सका जन्म			
१८२४	57	पिता हाइनरिख मार्क्स इसाई वने			
१८३५ अगस्त २५	55	ट्रीर कालेजकी पढ़ाई समाप्त			
₹ ८३५-३६	बोन	कानूनकी पढ़ाई श्रीर जेनीसे सगाई			
१⊏३६-४१	व्रलिन ,	कानून-दर्शन-इतिहासके विद्यार्थी, प्रथम लेख (कंविता श्रादि)			
१ ८३८	द्रीर	पिता मरे			
१८४१	जेना	डाक्टरकी उपाधि			
१ ⊏४२-४३	कोलोन	"राइनिशे-जाइटुंग" का संपादन			
१८४३	द्रीर	ज़ेनी फान वेस्टफालेनसे विवाह			
१८ ४३-४५	पेरिस	निर्वासित जीवन श्रीर लेखन श्रादि			
रदार४	33	''जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र'' का संपादन;			
•		एंगेल्ससे पहली मुलाकात, ऋर्यशास्त्र			
'१८४५	200-	त्रीर दर्शनका विशेष ऋध्ययन			
१८४५-४८	बुशेल्स	पेरिससे निष्कासन			
1040 4.80	**	एंगेल्सके साथ काम : "पवित्र			
इंद्र४७	37	परिवार" "जर्मन विचारधारा" कम्युनिस्ट लीगमें सम्मिलित, ऋति :			
		कम्युनिस्ट लागम ताम्मारात, हात र "दर्शनकी दिखता"			
रैद४६	33	"कम्युनिस्ट लीग" का पुनः संगठन, बुशेल्ससे निष्कासन, "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" का प्रकाशन			

सन्	स्थान	घटना विवरण		
१८४८-४ ६	कलोन	"नोये राइनिशे जाइटुंग" का संपादन		
१८४६	77	जूरी द्वारा मार्क्स मुकदमेसे वरी, कलोनसे निष्कासन		
くころを-ビジ	लन्दन	निर्वासित जीवन श्रौर महान् कार्य		
१८५०	मेन्चेस्टर	एंगेल्स व्यवसायमें लगे		
ग्द्रप्र	लन्दन	"न्यूयार्क ट्रिच्यून" में लेख शुरू (१८६१ तक)		
श्यप्र	22	सबसे छोटी लड़कीकी मृत्यु		
श्च्यस्	53	भारतपर लेख		
श्च्यप्र	73	एकमात्र पुत्र एडगर (मूश) की		
१ ८ ५७-५८	>>	मृत्यु नवीन ऋमेरिकन साइक्लोपीडियाके लिये काम		
१८५६	>3	"राजनीतिक श्रर्थशास्त्रकी श्रालो- चना" का प्रकाशन		
१८६०	>>	"हेर फोग्ट" लिखना		
रद्धर-६२	75	"बी प्रेस" (वीना) को लेख		
श्यहर	23	जर्मनी की यात्रा, लाबेलसे मेंट (बर्लिन)		
१ ८६३	77	लाजेल द्वारा कमकर पार्टीकी स्थापना		
" जनवरी	27	एगेल्ससे च्चिक मनमुटाव		
१८६४ सितंत्रर २८	35	प्रथम इंटर्नेशनलकी स्थापना, इसी साल लाजेल वोल्फकी मृत्यु		
१८६५	13	लाजेलके संगठनसे सम्बन्ध-विच्छेद, "मूल्य, दाम श्रीरलाम" पर ग्रमि-		

परिशिष्ट

सन्	स्थान	घटना विवरण
		भाषण (२६ जून), श्रास्ट्रिया
		प्रशिया-युद्घ, घोर स्त्रार्थिक कघ्ट
१ ८६६	3 7	जेनेवामें इन्टर्नेशनली प्रथम कांग्रेस
१⊏६७	77	'कपिटाल' की प्रथम जिल्द प्रकाशित
१८६८))	बुशेल्समें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस
१८६८-६६	33	पश्चिमी श्रीर मध्य-यूरोपमें हड़ताल श्रान्दोलनकी वृद्धि
१८६८	लन्दन	बुशेल्डमें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस,
		बकुनिनसे सम्बन्ध विच्छेद
१८६६-६६	>>	पश्चिमी और मध्य युरोपमें हड़ताल
		की वृद्धि
१८६६ सितम्बर ५,	ę »	वाजेलमें इंटर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस
१८६६-७०	"	मार्क्सका स्वास्य खराव
१८६९ जून ३०	33	एंगेल्स व्यवसाय त्याग
१८७० सितम्बर	33	एंगेल्स सदाके लिये लन्दनमें
१८७०	. 33	फ्रेंच-प्रशियन-युद्ध
" श्रप्रैल २२	सिम्विकं (रूस)	लेनिन का जन्म
१८७१	22	त्रात्मसमर्पेष (जनवर्श २८)
		पेरिस कम्यून (२६ मार्च-२८ मई)
_		"फ्रांसमें ग्रह-युद्घ" का लिखना
१८७२ सितम्बर ३	22	हेगमें इंटनेंशनलकी कांग्रेस, एग्स-
		टर्डममें मार्क्का माष्या, इन्टर्नेशनल
		े की जेनरल कौतिल न्यूयार्कमें स्था-
		नान्तरिक
१८७३	17	बकुनिनके खिलाफ पुस्तिका, कड़ी बीमारी

सन्	स्थान	घटना-विवरण			
१८७५	33	"गोथा मोप्रामकी त्र्रालोचना"			
१८७६	53	बकुनिनकी मृत्यु			
१८७७	27	'हूरिंग-खंडन' में एंगेल्सकी सहायता			
१८७८	"	बर्मनीमे समाजवाद-विरोधी कानून- की घोषणा			
१८-७६-८३	33	मार्क्स खब्त बीमार			
१८७६ दिसम्बर १	१ गोरी	स्तालिनका जन्म			
श्द्रदर दिसम्बर २	लन्दन	जेनी मार्क्सकी मृत्यु			
१८८२	त्राल्जियर, फ्रास	स्वारय्यके लिये यात्रायें, प्रियपुत्री			
		बेनीकी मृत्यु, बेनेवा सरोवर (सितम्बर)			
१८८३ मार्च १४	लन्दन	मार्क्की मृत्यु			
१८८३ मार्च १७	77	श्चन्त्येष्टि-क्रिया			
श्यम्		"कपिटाल" दूसरी जिल्द प्रकाशित			
१८८४	लन्दन	एंगेल्सकी पुस्तक ।"परिवारकी उत्पत्ति" प्रकाशित			
श्ददर्भ		"कपिटाल" दूसरी जिल्द प्रकाशित			
श्चदद	>>	एंगेल्सकी पुत्तक "प्यारवाल" प्रका-			
१ 5६४	>>	शित "क्षियल" की तीसरी जिल्द प्रकाशित			
१८६५	22	एगेल्स मार्चमें बीमार श्रीर २७ श्रगस्तको मृत ।			
१६१७	रूस	साम्यवादी क्रांति श्रीर प्रथम कमकर राज्यकी स्थापना			



मार्क्स के दर्शन की उपयोगिता और सार्थकता इससे सिद्ध है कि आज रूस, चीन आदि देशों के साथ एक विशाल भू भाग की मानवता मार्क्स के दर्शन का अनुसरए। करके सुख और व्यापक सम्पन्नता के मार्ग पर उत्साह से अग्रसर है।

यह हर्ष और सन्तोष का विषय है, कि हिन्दी के एक महान विचारक, लेखक और मनीषि ने इस पुम्तक मे विश्व के इस महान दार्शनिक का जीवन और दर्शन हिन्दी जगत के सामने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसा व्यापक प्रन्थ है जिसमे पाठक को न केवल मार्क्स के जीवन तथा कार्यशीलता की फॉकी मिल सकेगी वरन् वह मार्क्स के मानव-हित सम्बन्धी सिद्धान्तों तथा दर्शन को समफ सकेगा। मार्क्स के सम्पूर्ण साहित्य तथा उन पर लिखे गये साहित्य का मन्यन करके अकथ परिश्रम के बाद जो अमृत राहुल जी ने प्रस्तुत किया है, उसको पाठक जगत कृतज्ञता से स्वीकार करेगा इसकी हमे आहा है।